प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल

बिमल
चरण
लाहा

अनु०
राम कृष्ण द्विवेदी

उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,
लखनऊ

प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल

●

HISTORICAL GEOGRAPHY OF ANCIENT INDIA

●

मूल लेखक—

बिमल चरण लाहा

BIMAL CHURN LAW

एम० ए०, एल०, एल०, बी०,

पी० एच० डी०, डी०, लिट्०

भूमिका लेखक—

प्रोफेसर लुई रेनो

अनुवादक—

राम कृष्ण द्विवेदी

प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद–2

उत्तर प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी

लखनऊ

प्राक्कथन

शिक्षा आयोग (1964-66)की सस्तुतियो के आधार पर भारत सरकार ने 1968 में शिक्षा संबधी अपनी राष्ट्रीय नीति घोषित की और 18 जनवरी, 1968 को संसद के दोनो सदनों द्वारा इस सबंध मे एक सकल्प पारित किया गया। उस संकल्प के अनुपालन मे भारत सरकार के शिक्षा एव युवक सेवा मत्रालय ने भारतीय भाषाओ के माध्यम से शिक्षण की व्यवस्था करने के लिए विश्वविद्यालय स्तरीय पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण का एक व्यवस्थित कार्य-क्रम निश्चय किया। उस कार्य-क्रम के अतर्गत भारत सरकार की शतप्रतिशत सहायता से प्रत्येक राज्य मे एक ग्रथ अकादमी की स्थापना की गई। इस राज्य मे भी विश्वविद्यालय-स्तर की प्रमाणिक पाठ्य पुस्तके तैयार करने के लिए हिन्दी ग्रथ अकादमी की स्थापना 7 जनवरी, 1970 को की गई।

प्रमाणिक ग्रथ निर्माण की योजना के अतर्गत यह अकादमी विश्वविद्यालय स्तरीय विदेशी भाषाओ की पाठ्य पुस्तको को हिंदी मे अनूदित करा रही है और अनेक विषयो मे मौलिक पुस्तको की भी रचना करा रही है। प्रकाश्य ग्रथो मे भारत सरकार द्वारा स्वीकृत पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जा रहा है।

उपर्युक्त योजना के अतर्गत वे पाडुलिपियाँ भी अकादमी द्वारा मुद्रित कराई जा रही हैं जो भारत सरकार की मानक ग्रथ योजना के अतर्गत इस राज्य मे स्थापित विभिन्न अभिकरणो द्वारा तैयार की गई थीं।

प्रस्तुत पुस्तक मूल रूप मे अग्रेजी मे डा० बी० सी० लाहा ने लिखी थी। यह बहुत ही विद्वतापूर्ण और प्रमाणिक सदर्भ ग्रथ है। विद्वान् लेखक ने प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक स्थानों की पुरानी और आधुनिक स्थिति अनेक स्रोतों से सग्रह की है। संस्कृत के महाकाव्यों, पुराणो आदि से पुराने नामो के बारे मे सूचनाएँ मिलती हैं। फिर शिला लेखो, ताम्र पत्रो, अभिलेखों आदि से भी इन स्थानो के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी प्राप्त होती है। विशाल बौद्ध और जैन साहित्य में भी उनका उल्लेख मिलता है और अनेक विदेशी लेखको के सस्मरणो से भी उनकी जानकारी प्राप्त होती है। इन सारे बिखरे हुए स्रोतों से सामग्री सकलन करना, उनके परस्पर विरुद्ध लगने वाले अशो की विसंगति

का कारण खोजना और सुविचारित निष्कर्षों पर पहुँचना बहुत कठिन कार्य है। डा० बी० सी० लाहा ने बडी सूझ-बूझ और कुशलता के साथ इन प्राचीन भौगोलिक नामो का इतिवृत्त भी बताया है और आधुनिक नामो से उनको पहचानने का भी प्रयत्न किया है। इस विषय मे अब भी निरतर शोध जारी है। इसलिए कुछ स्थानो के बारे मे नई जानकारी के आलोक मे थोडा बहुत मतभेद होने की सभावना है, परन्तु फिर भी यह पुस्तक विद्वानों मे प्रमाणिक रूप मे अब भी उतना सम्मान पाती है जितना किसी अन्य समय पाती थी। उसका अनुवाद श्री रामकृष्ण द्विवेदी ने किया है। उत्तर-प्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी लेखक और अनुवादक दोनो ही विद्वानो के प्रति आभारी हैं। आशा है कि इस पुस्तक के प्रकाशन से प्राचीन भारतीय एव पुरातत्व के गभीर अध्ययन को बल मिलेगा।

डा० रामकुमार वर्मा के कार्य-काल मे ही यह पुस्तक प्रेस में दे दी गई थी। प्रकाशित अब हो रही है। इसे मुद्रणोचित रूप देने मे भाषा एवं विषय-सपादन का कार्य डॉ० यू० एन० राय ने किया है।

हजारी प्रसाद द्विवेदी
अध्यक्ष
शासी मडल
उत्तर-प्रदेश हिंदी ग्रथ अकादमी

"शिक्षा तथा समाज कल्याण मत्रालय, भारत सरकार की विश्वविद्यालय ग्रथ
योजना के अतर्गत उ० प्र० हिदी ग्रथ अकादमी द्वारा प्रकाशित"

श्री बिमल चरण लाहा डी ला सोसायटे आशियाटीके डी पारीस के अवैतनिक सदस्य, रायल एशियाटिक सोसायटी ऑव ग्रेट ब्रिटेन व आयरलैंड के सदस्य; रायल एशियाटिक सोसायटी, लंकाशाखा के अवैतनिक सदस्य, रायल एशियाटिक सोसायटी ऑव बगाल के फेलो एव ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया; हिस्ट्री ऑव पालि लिटरेचर, ज्याँग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म्; ज्याँग्रेफिकल एसेज, द मगधाज इन ऐश्येंट इडिया आदि ग्रथो के लेखक थे।

भूमिका

श्री बिमल चरण लाहा की कृतियाँ, जिनकी गणना करना प्राय· असभव है, अधिकांशतया भारत के प्राचीन ग्रथो मे सनिहित भूगोल, इतिहास और समाज-विषयक प्राय सभी ठोस सूचनाओ के युक्तियुक्त वर्गीकृत सकलन प्रस्तुत करती है। साहित्यिक एव धार्मिक स्रोतो मे प्रारभिक तथ्यो के प्रति की गयी विकृतियो पर जब हम विचार करते है, तब यह प्रयास सुगम नही प्रतीत होता है। लेखक-गण अपने समक्ष विद्यमान इन तथ्यों को एक पौराणिक परिवेश देने का लोभ-सवरण नही कर पाये है।

एकमात्र ईर्मा कारणवश इन तथ्यों का विश्लेषण एव वर्गीकरण अत्यावश्यक है। अध्ययन की अनेक दृष्टियों के बावजूद कभी-कभी अपरिपक्व कृति, समन्वय एव किसी प्रणाली के प्रति बिना किसी पूर्वाग्रह के स्रोतों का सकलन अपरिहार्य बन जाता है। श्री बिमल चरण लाहा के रूप मे इस कार्य को सपादित करने के लिए एक अध्यवसायी एव सुयोग्य लेखक मिला है, जिसमें प्रकल्पना-शील और इस कार्य का बीडा उठाने का उत्साह है। उन्होंने विशेष रूप से बौद्ध स्रोतो पर ध्यान दिया है जो इस विषय में अधिक मुखर है।

प्रस्तुत ग्रथ मे एतद्विषयक उनकी पूर्वकालिक कृतियो का सार समाविष्ट है और साथ ही बहुत सारी नूतन सामग्री भी प्रस्तुत की गयी है। सक्षेप मे उसमे वेदो से लेकर सबसे बाद के पुराण तक, तथा भारतीय विद्या के सूत्रपात के समय से आजकल ज्ञात उन सभी सूचनाओ की उपेक्षा किये बिना जैन एव बौद्ध आगम-ग्रथो, महाकाव्यो, स्मृतियो और सस्कृत पुरालेखों तथा यूनानी इतिहास या भूगोल-वेत्ताओ, चीनी तीर्थयात्रियों एव अरब यात्रियों के विवरणों से प्राप्त सूचनाओ का समाहार है, जिनके अभिनव अन्वेषण के परिणामस्वरूप प्राय· अलग-अलग ग्रथ बन जाते है। इसमे इस सपूर्ण लिखित सामग्री का समावेश हुआ है।

श्री बि० च० लाहा ने यह कामना व्यक्त की है कि यह पुस्तक पेरिस की एशियाटिक सोसायटी के तत्वावधान मे प्रकाशित हो। सोसायटी प्रसन्नतापूर्वक इसका स्वागत करती है।

लुई रेनो

लेखक का वक्तव्य

प्राचीन भारत के एक क्रमबद्ध और सर्वांगसपन्न ऐतिहासिक-भूगोल की निस्सदेह अत्यधिक आवश्यकता है। पुरालिपि से प्राप्त तथ्य सामग्री पर आधारित इस प्रकार के भूगोल को पूरा करने के उद्देश्य से मैने यह पुस्तक जो मेरे प्राचीन भारतीय भूगोल के सतत् अध्ययन का फल है, प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। मैंने भौगोलिक नामों को वर्णानुक्रम से रखा है और यथोचित वर्ग के अतर्गत् उनका पूर्ण विवरण दिया है। मैने सस्कृत (वैदिक और लौकिक), पालि, प्राकृत, सिंहली, वर्मी, तिब्बती और चीनी मूल ग्रथो का उपयोग किया है और पुरालिपि, पुरातत्त्व, मुद्राशास्त्र, यूनानी पर्यटको और चीनी तीर्थ-यात्रियो के विवरणो जैसे अन्य अनेक स्रोतों से अमूल्य सहायता प्राप्त की है। विषय से सबद्ध आधुनिक साहित्य तथा गवेषणाओ पर भी यथोचित ध्यान दिया गया है। इस दिशा मे सर एलेग्जेडर कनिघम, सर विलियम जोस, लास्सेन, वीवियन द सेंट मार्टिन, स्टानिस्लास जूलियन, बुकेनन हैमिल्टन, मैकेजी, सर आरेल स्टाइन, किर्फेल, दे, एस० एन० मजुमदार, राय चौधरी तथा अन्य विद्वानो के अनुसधान अवधारणीय हैं परतु, इन्हे पूर्ण तथा अद्यतन बनाने के लिए इनका सावधानी से पुर्ननिरीक्षण आवश्यक है। मेरे पिछले प्रकाशनो ने इस विस्तृत ग्रथ के प्रणयन मे मुझे अत्यधिक सहायता दी है। निस्सदेह, यह कार्य कठिनाइयो से पूर्ण है, परतु मैने इन्हे दूर करने की भरसक चेष्टा की है। मैने अपने विषय-प्रतिपादन को क्रम-बद्ध, पूर्ण विशद्, तथा उपयोगी बनाने मे कोई प्रयत्न उठा नही रखा है। पाठको के निर्देश के लिये इस पुस्तक मे तीन रेखा-मानचित्र दिये गये है। यदि यह पुस्तक प्राचीन भारतीय भूगोल के अनुसधान मे प्रवृत्त भूगोल-वेत्ताओ के लिए अत्यधिक सहायक हो, तो मैं अपने परिश्रम को पुष्कल रूप से पुरस्कृत समझूंगा। पुस्तक की प्रस्तावना के लिए मै प्रो० लुई रेनो का अत्यधिक आभारी हूँ। पेरिस की 'द सोसाएती आशिआतिक' ने इस पुस्तक को अपना प्रकाशन बनाना स्वीकार कर मुझे अपना चिर ऋणी बना दिया है।

43 कैलास बोस स्ट्रीट,
कलकत्ता–6, भारत
1 अगस्त, 1954

बि० च० लाहा

संक्षेपण

आर्क्० स० इ०	आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव इंडिया
आर्क्० स० रि०	आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट
आर्क्० स० इ० रि०	आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट ऑव इंडिया, रिपोर्ट
अ० भ० ओ० रि० इ०	अनल्स ऑव भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट
आर्क्० स० वे० इ०	आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव वेस्टर्न इंडिया
आर्क० स० वे० स०	आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव वेस्टर्न सर्किल
अ० हि० इ०	अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया-
इं० ऐं०	इंडियन ऐंटिक्वेरी
इं० हि० क्वा०	इंडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टर्ली
इं० क०	इंडियन कल्चर
एपि० इं०	एपिग्रेफिया इंडिका
एपि० क०	एपिग्रेफिया कर्नाटिका
ए० ज्यॉ० इं०	ऐंश्येंट ज्यॉग्रफी ऑव इंडिया
ऐं० इं० हि० ट्रे०	ऐंश्येंट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन
ए० रि० आर्क्० स०	ऐनुअल रिपोर्ट ऑव द आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे
क्वा० ज० मि० सो०	क्वार्टली जर्नल ऑव मिथिक सोसायटी
का० इं० इं०	कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकेरम
कैं० हि० इं०	कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया
ज० ए० सो० बं०	जर्नल एशियाटिक सोसायटी बंगाल
ज० रा० ए० सो०	जर्नल रायल एशियाटिक सोसायटी
ज० रा० ए० सो० बं०	जर्नल रायल एशियाटिक सोसाइटी बंगाल
ज० पं० हि० सो०	जर्नल पंजाब हिस्टॉरिकल सोसाइटी
ज० बां० ब्रां० रा० ए० सो०	जर्नल बांबे ब्रांच ऑव रायल एशियाटिक सोसायटी
ज० बि० उ० रि० सो०	जर्नल बिहार उडीसा रिसर्च सोसायटी
ज० इं० हि०	जर्नल इंडियन हिस्ट्री

ज० यू० पी० हि० सो०	जर्नल ऑव यू० पी० हिस्टॉरिकल सोसायटी
ज० इ० सो० ओ० आ०	जर्नल इडियन सोसाइटी ऑव ओरियंटल आर्ट
तु०	तुलनीय
ने० बु० लि०	नेपालीज बुद्धिस्ट लिटरेचर
पृ०	पृष्ठ
पृ० सं०	पृष्ठ सख्या
पा० टि०	पाद टिप्पणी
पा० टे० सो०	पालि टेक्स्ट्स सोसायटी
पो० हि० ऐ० इ०	पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव ऐश्येंट इडिया
बु० स्कू० ओ० अ० स्ट०	बुलिटिन ऑव द स्कूल ऑव द ओरियटल ऐड अफ्रीकन स्टडीज़
म० एपि० रि०	मद्राम एपिग्रेफिकल रिपोर्ट
मे० आर्क० स० इ०	मेमायर्स ऑव आर्कयॉलॉजिकल सर्वे ऑव इडिया
सा० इ० इ०	साउथ इडियन इन्स्क्रिप्शस
सै० बु० ई०	सैक्रेड बुक ऑव द ईस्ट
स०	सख्या

विषयानुक्रम

प्रस्तावना

1. स्रोत

प्राचीन भारत के क्रमबद्ध भूगोल के पुनर्लेखन में वैदिक साहित्य, ब्राह्मण-ग्रथो, उपनिषदो, धर्म-सूत्रो एव धर्मशास्त्रो द्वारा हमे कुछ सहायता प्राप्त होती है। ऋग्वेद मे उल्लिखित भौगोलिक नामो मे केवल नदियो के नामो का ही सुगम एव निश्चित समीकरण सभव है। प्राचीन भारत-विषयक भौगोलिक सूचनाओ के हेतु महाकाव्यो एव पुराणो को भी समृद्ध कोश के रूप मे स्वीकार किया गया है। उनमे कुछ ऐसे भी अध्याय है जो न केवल भारत के विभिन्न भू-भागो का ही वरन् उसकी नदियो, पर्वतो, झीलो, वनो, मरुस्थलो, नगरो, देशो एव जातियो का भी अपेक्षाकृत अधिक यथार्थ विवरण प्रस्तुत करते है। महाभारत के तीर्थ-यात्रा, दिग्विजय एव जम्बूखण्ड-विनिर्माण पर्व तथा रामायण का किष्किन्ध्या काण्ड भौगोलिक सूचनाओ से सपन्न है। पुराणो के भुवन-कोष, जम्बूद्वीप वर्णन, कूर्मविभाग खण्ड, बृहत्संहिता, पराशरतन्त्र और अथर्वपरिशिष्ट मूल्यवान भौगोलिक सूचनाओ के सकलन के लिए समानरूप से महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन भारतीय भूगोल के अध्ययन के लिए पाणिनि की अष्टाध्यायी (IV, 1-173; 178, IV, 2-76; IV, 2-133, V 3-116–117 आदि), पतञ्जलि का महाभाष्य, कौटिल्य का अर्थशास्त्र और योगिनीतन्त्र कुछ कम उपादेय नही है।

विभिन्न पुराणो के भौगोलिक विवरण न्यूनाधिक समान है और एक पुराण के विवरण की पुनरावृत्ति प्राय दूसरे मे की गयी है। कुछ दशाओ मे किसी विशद् विवरण को एक लघुत्तर विवरण के रूप मे सक्षिप्त किया गया है। वायु, मत्स्य एव मार्कण्डेय पुराणो की सूची बृहत् है, जब कि विष्णु पुराण की बहुत सक्षिप्त। देशो एव जातियो की पौराणिक तालिकाएँ महाभारत मे भी कभी-कभी अधिक विस्तृत रूप मे प्राप्त होती है। महाभारत के भीष्मपर्व मे (श्लोक सख्या, 317-78) दिया गया भारत देश का विवरण पुराणो के ब्यौरे के समान है, परतु कुछ स्थितियो मे अतिरिक्त सूचनाएँ भी समाहृत की जा सकती है। स्पष्ट है कि ये तालिकाएँ पूर्वकाल से चले आने वाले किसी परपरागत् विवरण

प्राचीन भारत
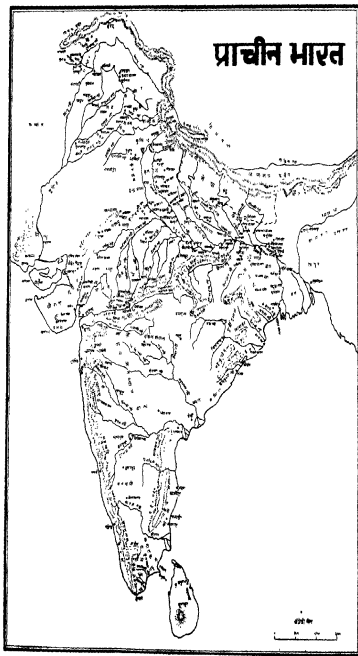
का अनुसरण करके तैयार की गयी है। तथापि यह अवश्य स्वीकार किया जाना चाहिए कि ये विवरण यथार्थत. निर्दोष है। जैसा कि कनिघम ने बतलाया है, कल्पना-तत्त्व नियमत. बाहरी देशो तक ही सीमित हैं और शुद्ध भारतीय स्थान-वृत्तो के प्रति उनके सकेत सामान्यतया सयत है।

विष्णु पुराण मे दी गयी देशो की सूची अतीव सक्षिप्त है। बिना किसी क्रम के ही महाभारत मे अपेक्षाकृत एक विस्तृत सूची प्राप्त होती है। पद्म पुराण की स्थिति भी यही है। फिर भी, भारत के देशो एव जातियो की एक विशद् तालिका मार्कण्डेय, स्कन्द, ब्रह्माण्ड एव वायु पुराणो मे दी गयी है। मार्कण्डेय पुराण में जम्बूद्वीप तथा मेरु के चतुर्दिक् स्थित पर्वतो, वनो एव झीलो का वर्णन दिया गया है। उसमे भारत के नौ खण्डो, सप्तपर्वत-मेखला और बाइस पृथक् पहाडियो का वर्णन किया गया है। इसमे गगा नदी के प्रवाह-मार्ग तथा भारत की प्रसिद्ध नदियो का वर्णन, उनके स्रोतभूत पर्वत-मालाओ के आधार पर वर्गीकरण करते हुये किया गया है। पुराणो से प्राप्त अधिकाश देशो एव जातियो के नाम मार्कण्डेय पुराण के नद्यादि-वर्णना खण्ड से उपलब्ध नामो मे बहुत कुछ साम्य रखते है, किन्तु इसमे ऐसे नामो की भी एक बहुत बडी सख्या है. जो पूर्णत नवीन एव मौलिक हैं। मार्कण्डेय पुराण (अध्याय, 57), जिसमे वस्तुत. दूसरे प्रमुख पुराणो मे वर्णित वास्तविक भौगोलिक सूचनाएँ सनिहित है, के कूर्मविभाग नामक खण्ड मे भारत के देशो एव जातियो की एक सूची है, जिसके चयन का आधार, देश (भारत) की कच्छप के रूप मे की गयी परिकल्पना है जो विष्णु के ऊपर जल पर अवस्थित है और पूर्वाभिमुख है।[1] यह चयन पूर्वकालीन ज्योतिष-ग्रथो तथा पराशर एव वराहमिहिर की कृतियो पर आधृत है। यह अध्याय स्थान-वर्णन के दृष्टिकोण से अमूल्य है। भागवत पुराण मे भी कुछ भौगोलिक सूचनाएँ सनिहित है। इस प्रकार हम यह देखते है कि प्राचीन भारत के भौगोलिक अध्ययन के लिए पुराण वास्तव मे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

असख्य माहात्म्यो का भौगोलिक दृष्टिकोण मे सतर्कतापूर्वक अध्ययन करना आवश्यक है। विशाल माहात्म्य-साहित्य मे—जिसके अतर्गत् पुराणो एव सहिताओ के अश समिलित हैं—विविध तीर्थो की भौगोलिक विशेषताओ के वर्णन प्राप्त होते है। महत्त्वपूर्ण स्थानो की स्थिति-निर्णय के साक्ष्यो की दृष्टि से उनका बहुत अधिक भौगोलिक महत्त्व है। तीर्थो के पौराणिक इतिहास का

[1] यह अवधारणा भारत की भौगोलिक विशेषताओं संबंधी हमारे वर्तमान ज्ञान से पूर्णतः संगत है।

परिशीलन श्रम-साध्य है, किंतु किसी भूगोलवेत्ता के लिए यह कभी एक निष्फल अध्ययन नही होगा।

उत्तरकालीन संस्कृत साहित्य भौगोलिक सूचनाओं से संपन्न है। उदाहरणार्थ, राजशेखर की काव्यमीमासा (पृ० 93) मे भारत के परपरानुगत् पाँच भागो का स्पष्टतया उल्लेख किया गया है। इसमे उत्कल, सुह्म, निषध तथा कश्मीर (अध्याय, 17), अङ्ग, वङ्ग, पुण्ड्र, वाल्हीक, पाञ्चाल और शूरसेन, आदि (अध्याय, 3) के विषय मे उपयोगी भौगोलिक सूचनाएँ प्राप्त होती हैं। रघवश (चतुर्थ सर्ग, श्लोक, 35, 38), श्रीहर्ष द्वारा विरचित नैषधीयचरित (पचमसर्ग, श्लोक, 50, 98), कालिदास के मेघदूत (पूर्वमेघ, श्लोक, 24, 25, 26), दण्डिन् के दशकुमारचरित '(षष्ट उच्छ्वास), बाणभट्ट के हर्षचरित (षष्टम् एव सप्तम् उच्छ्वास) और धोयीकृत पवनदूत (27) का उपयोग हमारे भौगोलिक ज्ञान के लिए किया जा सकता है। कालिदास के भूगोल-ज्ञान का एक स्पष्ट बोध हम उनकी रचनाओं मे प्राप्त कर सकते है।

बुद्ध एव बुद्धोत्तरकालीन भारत का पूर्ण भौगोलिक चित्र प्रस्तुत करने के लिए निस्सदेह पालि साहित्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। लगभग बुद्धकाल से अशोक महान् के समय तक प्राचीन भारत की ऐतिहासिक एव भौगोलिक सूचनाओ का मुख्य स्रोत निश्चय ही प्रारंभिक बौद्ध-साहित्य है, यत्र-तत्र जिसके पूरक जैन एव ब्राह्मण साक्ष्य है। पूर्वकालीन बौद्ध साहित्य मे विशुद्ध ऐतिहासिक या भौगोलिक प्रकार के पाठो या आख्यानो का नितात अभाव है, तथापि यत्किचित ऐतिहासिक या भौगोलिक सूचना जो उससे सकलित की जा सकती है, वह आनुषगिक किंतु अत्यधिक विश्वसनीय है। इस प्रकार बुद्ध के आविर्भाव के पूर्व एव पश्चात् भारतीय इतिहास एव भूगोल के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण अध्याय षोडश् महाजन-पदो के उत्कर्ष एव विपर्यय के इतिहास, भौगोलिक स्थिति तथा अन्य विवरणो के लिए जैनग्रथ भगवती-सूत्र एव महाभारत के कर्ण-पर्व से अनुपूरित पालि-ग्रथ अगुत्तर निकाय हमारी जानकारी का प्रमुख स्रोत है। बाद के युगो के लिए, जब कि हमारे पास प्रचुर अभिलेखीय, पुरातत्त्वीय तथा विशेषत ब्राह्मण साहित्य के साक्ष्य, यूनानी एव लैटिन भूगोलवेत्ताओ के विवरण तथा चीनी यात्रियो के वृत्तात है— पालि एव सस्कृत बौद्ध साहित्य मे सनिहित भौगोलिक सूचनाएं अतीव उपयोगी है।[1] कुछ भौगोलिक सूचनाएं तिब्बती ग्रथो से भी प्राप्त की जा सकती है।

---

[1] द्रष्टव्य, लाहा , ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म् ऐंड ज्यॉग्रेफिकल एसेज, प्रथम परिच्छेद।

पालि पिटको, विशेषतया विनय एव सुत्त मे बौद्धधर्म के क्रमिक प्रसार से सबधित नगरो एव स्थानो के प्रति प्रासगिक उल्लेख प्राप्त होते है। वे मध्यदेश और उसके सीमात पर स्थित प्रदेशो के विषय मे प्रचुर सूचना प्रदान करते है। मिलिन्दपञ्हो और महावस्तु मे—जो क्रमश: पालि और अतिविशिष्ट सस्कृत बौद्ध ग्रथ है—अनेक महत्त्वपूर्ण भोगोलिक सूचनाएँ सनिहित है। पालि भाष्य, विशेषत: बुद्धघोष की टीकाएँ और लका के वृत्तान मुख्यत दीपवस एव महावस बौद्धो के भौगोलिक ज्ञान विषयक सूचनाश प्रदान करते है।

सस्कृत बौद्ध ग्रथो मे, तिथिक्रम मे जो पालि ग्रथो के बाद की रचनाएँ है, कुछ भौगोलिक सूचनाएँ प्राप्त होती है। उनमे काल्पनिक नगरो का, जो यथार्थ जगत् के अग नही है—वर्णन पाया जाता है। उनमे उल्लिखित रत्नद्वीप एव खण्डद्वीप जैसे देशो, बधुमती एव पुण्यवती जैसे नगरो एव त्रिशकु तथा धूमनेत्र जैसे पर्वतो के समीकरण की बहुत कम गुजाइश है, और ये सस्कृत बौद्ध ग्रथो मे प्राप्त विवरणो मे अभिव्याप्त आख्यानात्मक अशो का अभिवर्धन करने मे केवल सहायक है। सस्कृत बौद्ध ग्रथ जो धार्मिक एव दार्शनिक दृष्टिकोणो से अधिक महत्त्वपूर्ण है—किसी ऐतिहासिक या भौगोलिक कोटि की अधिक सूचनाएँ नही प्रकाश मे लाते। महावस्तु मे अधिकतर बुद्ध के जीवन का वर्णन किया गया है। ललितविस्तर एव बुद्धचरितकाव्य मे भी महात्मा बुद्ध के जीवन का ही वर्णन प्राप्त होता है। बोधिसत्वावदानकल्पलता मे महात्मा बुद्ध के विगत जीवन से सबद्ध कई कहानियाँ दी गयी है जब कि अशोकावदान मे अशोक एव उसके युग का वर्णन किया गया है। बहुत कम सस्कृत बौद्ध ग्रथो का अधिक सपुष्टिकारक महत्त्व है। यथार्थत वे भौगोलिक दृष्टि मे विशिष्ट नही है। ये ग्रथ अधिकतर छठवी शती से लेकर बारहवी-तेरहवी शती ई० के मध्य लिखे गये थे। निस्सदेह धर्म के इतिहास के विषय मे उनमे सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण तत्कालीन साक्ष्य सनिहित है, किंतु भौगोलिक दृष्टि से वे सुदूर भूत का वर्णन करते है, क्योकि छठवी, सातवी शती ई० तक प्रमुख भागो एव उपभागो, नगरो, देशो, प्रातो, नदियो, पहाड़ो आदि सहित सपूर्ण भारतवर्ष मे यहाँ के निवासी बहुत व्यापक रूप मे परिचित हो चुके थे। तत्कालीन अभिलेखीय, साहित्यिक एव स्मारको के साक्ष्य नाना भौगोलिक विवरणो की सूचनाओ से परिपूर्ण है। अपिच्, उक्त शताब्दियो मे, भारतीयो ने अपने राजनीतिक, सास्कृतिक एव व्यापारिक बहिपद एव उपनिवेश, न केवल सुवर्णभूमि (अवर बर्मा) मे ही वरन् जावा, सुमात्रा, चम्पा एव कम्बोज मे भी स्थापित किये थे। उनके पुरोहितो एवं धर्म-प्रचारको ने सस्कृत बौद्ध ग्रंथो के साथ पहले ही चीन एवं मध्य-एशिया की यात्रा की थी।

परतु उनमें अपेक्षाकृत अतिव्यापक भौगोलिक ज्ञान एव तद्युगीन दृष्टिकोण का कोई आभास प्राप्त करना दुष्कर है। यहाँ तक कि भारतवर्ष की भी तत्कालीन भौगोलिक सूचनाएँ उनमे पूर्णरूप से निरूपित नही हो सकी है।

आदि जैनग्रंथो मे भौगोलिक एव स्थान-वृत्त सबधी अनेक उल्लेख प्राप्त होते है। अचारांग-सूत्र, भगवतीवियाह-पण्णत्ति, नायाधम्मकहाओ, उवासगदसाओ, अन्तगडदसाओ, अणुत्तरोववैया-दसाओ, पण्हावागरनैम, विवाग-सूय ओववैय-सूत्र, रायपसेनैय-सूय पण्णवणा, जम्बुद्दीवपण्णत्ति, निरयावलिय-सूय, निसीह एव महानिसीह-सूय, कल्प, उत्तराध्ययन और आवश्यक सूत्रो में भौगोलिक सामग्री सनिहित है। जैनियो के छठवे उपाग जम्बुद्दीवपण्णत्ति मे जम्बूद्वीप एवं भारतवर्ष का वर्णन प्राप्त होता है। इसमे जम्बूद्वीप के सात मुख्य खण्डो के अवयवरूप सप्तवर्षो या देशो का वर्णन किया गया है। यद्यपि इसमे हमे जैनियो के पौराणिक भूगोल का वर्णन मिलता है, तथापि इसमे प्राचीन भारत के भूगोल-शास्त्रियो के लिए बहुत कुछ मूल्यवान सामग्री प्राप्य है। निस्सदेह यह भूगोल-विषयक एक रोचक जैनग्रथ है और इसका अध्ययन विविध-तीर्थकल्प के साथ किया जाना चाहिए, जिसकी गणना जैन-शास्त्रो मे नही की जाती। जिनप्रभसूरि के विविधतीर्थकल्प मे तथ्य-मिश्रित आख्यान है। अवितथ भौगोलिक चित्र प्रस्तुत करने के लिए तथ्य को कल्पना से पृथक् करने मे बहुत सतर्कता बरती जानी चाहिए।[1]

अशोक के, एव उडीसा के खण्डगिरि तथा उदयगिरि से प्राप्त अभिलेख भी हमारी प्रचुर सहायता करते है। कभी-कभी मुद्राएँ भी हमे किसी जाति या राष्ट्र-विशेष का स्थान-निर्धारण करने मे सहायक सिद्ध होती है। उदाहरणार्थ, चित्तौड से ग्यारह मील दूर उत्तर मे नागरी नामक एक छोटे मे कस्बे से प्राप्त कुछ ताम्र-मुद्राओ से हमे सिवि जातक मे वर्णित राजा सिवि के राज्य की स्थिति ज्ञात करने मे योग मिलता है।

प्राचीन यूनानी एव लैटिन भूगोल-वेत्ताओ मे मिलेटस-वासी हिकेटियस (ई० पू० 549-486) प्रथम यूनानी भूगोलशास्त्री था जो पारसीक साम्राज्य की सीमा सिन्धु नदी के पार के देशो से परिचित नही था। अपर-सिधु नदी पर स्थित गधारि नामक जाति से उसका परिचय था। सीमात पहाडियो के निवासी अन्य भारतीय जनो के नामो से वह अवगत था (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, प्रथम भाग, 394)। हेरोडोटस (484-431 ई० पू०) ने भारत के विषय मे लिखा

[1] **लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, परिशिष्ट, II.**

है, जिसका अधिकांश हिकेटियस से ग्रहण किया गया था। वह जानता था कि भारत की जनसख्या बडी है।[1] वस्तुत भारत-विषयक उसके अधिकाश उल्लेख धारयद्वसु और जर्जीस के समय के प्रति सकेत करते है (वही, I, 329)। हेरोडोटस के एक अनुच्छेद (IV 44) से ऐसा प्रतीत होता है कि अपने उपरि-प्रवाह से समुद्र तक पजाब एव सिन्धु समेत, सिन्धु नदी की घाटी या तो पारसीको द्वारा अधिकृत कर ली गयी थी, या उनके शासन-क्षेत्र मे मिला ली गयी थी (वही, I, 336)। 325 ई० पू० से 300 ई० की मध्यावधि मे भारत के लघु-राज्यो के विषय मे उसने कुछ सूचना दी है (बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, II)। टेसियस (ई० पू० 398) ने अपने निवास-काल मे भारत पर एक पुस्तक लिखने के लिए सामग्री सकलित की। अभाग्यवश उसका विवरण अनेक कपोल-कल्पनाओ के कारण कलुषित है और भारत तथा उसके निवासियो के विषय मे प्रथम बार पाश्चात्य जगत् के समक्ष अपेक्षाकृत अधिक ठीक विवरण प्रस्तुत करने का कार्य सिकदर के अनुगामियों के लिए शेष रह गया।

यह महान् विजेता अपने साथ अपनी उपलब्धियो को इतिहासबद्ध कराने के लिए वैज्ञानिक व्यक्तियों को लाया था और उन्होंने उसके द्वारा आक्रात देशों का वर्णन किया है। उसके कुछ अधिकारी साहित्यिक-संस्कारों के व्यक्ति थे। उसके साथियों मे तीन ने अपनी कृतियों द्वारा भारत के प्रति यूनानी अवधारणा की अभिवृद्धि की। नियर्कस उनमे से एक था। उसकी पुस्तक मे भारत के विषय मे प्रचुर आनुषगिक सूचनाएँ सनिहित थी (कैं० हि० इ०, I, 398)। सिकदर के भारतीय अभियान के परिणामस्वरूप भारत से सबधित वृत्तात एव सस्करण बहुत बडी सख्या मे लिखे गये। ये सभी ग्रथ लुप्त हो गये है और उनके साराश सक्षेप मे स्ट्रैबो, प्लिनी एव एरियन की कृतियों मे प्राप्त होते है। कुछ परवर्ती लेखकों ने भारत-विषयक सूचना मे यथेष्ट परिवृद्धि की है, जिनमे डायोडोरस, स्ट्रैबो, कर्टियस और सिकदर के इतिहासकारो मे सर्वश्रेष्ठ एरियन तथा जस्टिनस का उल्लेख किया जा सकता है।[2] सिकदर के यूनानी एव रोमन इतिहासकार हमारे भौगोलिक ज्ञान को गन्धार की पूर्वी सीमा झेलम (Hydaspes) के पार पूरब की ओर व्यास नदी (Hyphasis) तक अभिवृद्ध करते है (कैं० हि० इ०, I, पृ० 58-59)।

---

[1] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, भाग 1, पृ० 395.

[2] मैक्रिंडिल, ऍश्यॅट इंडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज़ ऍंड एरियन, पृ० सं० 5 और आगे।

स्ट्रैबो के भूगोल से हमे सुविख्यात अस्सक या अश्मक जाति के विषय मे सूचना प्राप्त होती है। यद्यपि स्ट्रैबो गडराई-देश (Gandarai) का वर्णन करता है किंतु सिकदर के किसी भी इतिहासकार ने गन्धार देश का नामोल्लेख नही किया है। स्ट्रैबो के अनुसार तक्षशिला, सिन्धु एव झेलम (Hydaspes) नदियो के मध्य स्थित था। अच्छे कानूनो द्वारा प्रशासित यह एक महानगर था। उसके अनुसार वरिष्ठ पोरस का केकय देश विस्तृत एव उर्वर था और इसमे कोई तीन सौ शहर थे। कनिष्ठ पोरस के प्रदेश का नाम गडरिस (Gandaris) था। किंतु इस नाम को हम सर्वथा निर्णीत न स्वीकार करे। उसका कथन है कि वह प्रदेश जहाँ सौभूति (Sophytes) शासन करता था, कल्क-युक्त उत्पत्ति वाले खनिज नमक के पहाड के लिए प्रसिद्ध था, जिसमे सपूर्ण भारत के निवासियो की आवश्यकता पूर्ण करने के लिए पर्याप्त नमक निकलता था। और आगे वह कहता है कि सौभूति राज्य मे कुत्ते अपने विलक्षण साहस के लिए विख्यात थे। उसने मूशक (Mousikanos) के राज्य के निवासियो का एक रोचक विवरण दिया है। उसने तथा डायोडोरस ने आक्सीकेनोस (Oxykanos) राज्य के नरेश को पोर्टिकेनोस (Portikanos) नाम से अभिहित किया है। वह लिखता है कि पार्थियनो (Parthians) ने यूक्रेटाइडीज (Eukratides) को बैक्ट्रियाना के एक भाग से वचित कर दिया। उसके अनुसार बाख्त्री-यवनो (Bactrian-Greeks)) की विजय अज्ञात मेनेंटर (दूसरी शती ई० पू० का मध्य) और अज्ञात यूथेडेमस (लगभग 190 ई० पू०) के पुत्र डिमिट्रियस द्वारा प्राप्त की गयी थी। अन्य विवरणो के साथ ही इस प्रकार की ऐतिहासिक-भौगोलिक सूचना उसके भूगोल से प्राप्त होती है।

मेगस्थनीज़ ने जो भारत मे बहुत दिनो तक था, हमे अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक सामग्री प्रदान की है। वह चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार मे राजदूत होकर आया था। उसने स्वयं कहा है कि उसने भारतीयो के सबसे बडे राजा सैंड्रोकोट्टस (Sandrokottos) से बहुधा भेट की थी। एरियन के अनुसार वह राजा पोरस से भी मिला था। उसकी 'इडिका' (Indika) के अशो से हमे भारत, उसके निवासियों, नदियो, प्रदेशो, नगरो एव उनके आकारो, भूमि की उर्वरता, वन्य पशुओ, घोडों और हाथियों, भारतीय वृक्षो और जनो, जातियो, कबीलो और वशो, उद्यमो, भारतीय दार्शनिक, श्रमणो एवं ब्राह्मणो आदि के विषय मे अमूल्य सामग्री प्राप्त होती है।

एरियन, जिसने एक इतिहासकार के रूप में ख्याति अर्जित की थी, सिकंदर महान् के एशियाई अभियान के विवरण का प्रसिद्ध लेखक था। उसने भी भारत

का एक उत्कृष्ट वर्णन प्रस्तुत किया है। उसकी 'इडिका' (Indika) मे तीन खड है। प्रथम खड मे भारत का सामान्य निरूपण प्राप्त होता है जो मुख्यतया मेगस्थनीज एव इरैटोस्थनीज के देश-वर्णन पर आधारित है। दूसरे भाग में क्रीट-निवासी नियर्कस की सिन्धु से पास्टीग्रिस तक की समुद्र यात्रा का विवरण दिया गया है जो स्वय नियर्कस द्वारा ही लिखित उसकी सयात्रा के वृत्तात पर प्रधानत· आधारित है। तृतीय भाग मे यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत किये गये है कि विश्व के दक्षिणी भाग अतीव आतप के कारण आवास-योग्य नही है। अपनी 'इडिका' मे वह सिन्धु नदी के पार पश्चिम मे स्थित प्रदेशो का उल्लेख करता है, जिनमे दो भारतीय जातियाँ अश्टक (Astakenoi) एव अश्वक (Assakenoi) निवास करती थी। उसने सिन्धु के पूर्व मे स्थित प्रदेशो को मुख्य भारत की सज्ञा दी है। उसने भारत के विस्तार, उसकी नदियों तथा जातियो आदि का वर्णन किया है। उसने भारतीय जनता को लगभग सात जातियो मे विभक्त किया है और भारतीयो द्वारा वन्य-पशुओ आदि के शिकार का उल्लेख किया है।

इरैटोस्थेनीज ने एक वैज्ञानिक भूगोल की रचना की। उसने सिकदर के इतिहासकारो के प्रमाण के आधार पर भारत का वर्णन किया है।

प्लिनी ने भारत के भूगोल का वर्णन अपने 'नेचुरल हिस्ट्री' नामक ग्रथ मे किया है, जिसको उसने वेस्पैसियन के पुत्र और उसके साम्राज्य के उत्तराधिकारी टाइटस (Titus) को समर्पित किया है। इस ग्रथ के प्रथम दस खड सभवत: 77 ई० मे प्रकाशित किये गये थे। इस पुस्तक के तीसरे से छठे खड मे भूगोल एव जातिवृत्त का वर्णन किया गया है। उसकी विवेचना आलोचनात्मक नही है, तथापि उसके द्वारा प्रस्तुत आनुषगिक तथ्यो के विचार से यह अत्यधिक महत्त्व-पूर्ण है।

किसी अज्ञात लेखक द्वारा प्रणीत 'पेरिप्लस आंव द इरिथ्रियन सी', अफ्रीका के समुद्र-तट और लाल सागर से पूर्वी द्वीपसमूह ((East Indies) या आधुनिक इडोनेशिया के मध्य होने वाले व्यापार एव वाणिज्य के विवरण की प्रदर्शिका है। वस्तुत सीमावर्ती समुद्रो सहित लाल सागर और फारस की खाडी के लिए यह एक स्थानसूचक पुस्तक है। इन बदरगाहो द्वारा सचालित व्यापार की सामग्री का उल्लेख पेरिप्लस मे किया गया है (डब्ल्यू० एच० शॉफ द्वारा अनूदित, 1912, पृ० स० 284-288)। पेरिप्लस के अनुसार मिश्र के जहाजो द्वारा टिन सोमाली लैंड एव भारत को भेजा जाता था। भारत और मिस्र दोनो से ही आबनूस रोम मे मँगायी जाती थी। शक-आधिपत्य के काल मे भारत के कुछ नगरों को

अस्थायी रूप से 'मिन्नगर' नाम दिया गया था। मारो-शक सत्ता (Indo-Scythian) के पतन के पश्चात् उन नगरो ने अपने प्राचीन नाम एवं स्वाधीनता पुनः प्राप्त कर ली थी। इस परिचय-पुस्तिका मे सिन्धु नदी, सिरास्ट्रेन (सुराष्ट्र) वैरीगाजा (आधुनिक भडौच), माही नदी (माइस), नर्मदा (नैमेडस), अराकोशी (आधुनिक कन्दहार का निकटवर्ती प्रदेश), गडराई (गन्धार), ओज़ेनी (उज्जैन), तगर (आधुनिक टेर), सुप्पार (आधुनिक सोपारा), केल्लियेन (वर्तमान कल्याण) और पाण्ड्य राजधानी (पाण्ड्य) आदि के विषय मे कुछ सूचनाएँ समाविष्ट हैं।

टॉलेमी की 'ज्यॉग्रेफी' एक महत्त्वपूर्ण कृति है। अपनी विषय-सामग्री के लिए टॉलेमी, टायर के मैरिनस (Marinus of Tyre) का ऋणी है। उसकी कृति आठ स्कधो मे विभक्त है। उसके द्वारा दिया गया गगा-घाटी के भारतीय प्रदेश का वर्णन तथा देशो, नगरो, कस्बो, नदियो, पहाड और पहाडियो आदि विषयक उसके विवरण अधिक सतर्कतापूर्वक अध्ययन किये जाने के योग्य है। गगा के पार भारत की स्थिति, मध्यदेश के नगर एव ग्राम, सप्त-पर्वत-मेखला, सिन्धु नदी-समूह, तथा नदियो की घाटियो के आधार पर किया गया भारतीय जन एव जनपदो का वर्गीकरण—कुछ ऐसे विषय है जिनका विवेचन उसने योग्यतापूर्वक किया है। उसकी 'ज्यॉग्रेफी' निस्संदेह प्राचीन भारत के भूगोल-वेत्ताओ के लिए बहुत उपादेय है।

प्राचीन भारत के भूगोल के स्रोत रूप मे चीनी तीर्थयात्रियो के वृत्तात अपार महत्त्व के है। सपूर्ण उत्तरी भारत का पर्यटन करने वाले फा-ह्यान एव य्वान-च्वाड् के विवरण बहुत महत्त्वपूर्ण है. सातवी शती ई० मे भारत आने वाले य्वान-च्वाड् का विवरण अपेक्षाकृत अधिक विशद् एव पूर्ण है। पाचवी एव सातवी शती ईस्वी के मध्य उत्तरी भारत के यथार्थ एव विस्तृत भूगोल के लिए उन दोनो तीर्थयात्रियो के वृत्तात हमारी जानकारी के सबसे महत्त्वपूर्ण साधन है। एक अन्य चीनी तीर्थयात्री आठवी शती ई० मे भारत आया था। उसका नाम ऊ-कांग (U-Kong) था (कलकत्ता रिव्यू, अगस्त, 1922)। अन्य चीनी तीर्थयात्री सुग युन (Sung Yun) और ह्वीसेंग (Hwiseng) के विवरण संक्षिप्त है, और वे पश्चिमोत्तर भारत के केवल कुछ ही स्थानों का वर्णन करते है। इत्सिग, जिसने 673 ई० मे प्राचीन भारत के अनेक विशिष्ट स्थानों का भ्रमण किया था, ने एक विस्तृत विवरण लिखा है। वाग-ह्वेन-त्सी नामक एक दूसरा चीनी यात्री—जैसा कि उसने स्वयं अपने वृत्तात मे लिखा है—643 ई० मे भारत आया था, और उसने महात्मा बुद्ध से सबंधित क्षेत्रो का परिभ्रमण

किया था।[1] वह मगध गया और गृध्र-कूट (Ke-tche-Kiu) पहाडी पर चढा, और वहाँ पर उसने एक अभिलेख उत्कीर्ण करवाया। गया मे स्थित महाबोधि भी वह आया था जैसा कि उसके यात्रा-वृत्तात मे कहा गया है। उसने पच-भारत का पर्यटन किया। तिब्बती एव नेपाली अश्व-सेना के अध्यक्ष के रूप मे उसने मगध की ओर कूच किया, भारतीय सेना को पराजित किया, राजधानी पर अधिकार और राजा को बदी बनाकर, विजयोन्माद मे उसे चीन ले गया। वह स्वय नेपाल और तिब्बत गया था। उसका तिब्बत (Tou-fan) वर्णन रोचक है। इसी चीनी तीर्थयात्री ने अपने अवकाश के क्षणो मे 'एकाउट ऑव द वायेज' (Account of the Voyage) नामक एक पुस्तक लिखी। उस समय प्रचलित मगध के एक कानून का उसने रोचक वृत्तात दिया है। यदि कोई भी व्यक्ति अपराधी होता था, तब उसे डडे से न पीटा जाकर एक आश्चर्य-जनक तौल का सहारा लिया जाता था। गृध्र-कूट पर और महाबोधि मे उत्कीर्ण उसके अभिलेखो का अनुवाद शैवेनीज ने किया है। भारत मे उसके द्वारा देखे गये स्थानो का विवरण भौगोलिक दृष्टिकोण से बहुत अधिक उपयोगी है।

मुसलमान लेखको के भौगोलिक वृत्तान समान रूप से उपयोगी हैं। अल-बेरुनी ने, जो 973 ई० मे आधुनिक खीव के प्रदेश मे था, स्वय विज्ञान और साहित्य के क्षेत्र मे विशिष्टता प्राप्त की थी। भारत के विषय मे लिखी गयी, अपनी पुस्तक 'तहकीक-ए-हिंद' मे उसने यहाँ के भूगोल का वर्णन किया है, जो भूगोल-वेत्ताओ के लिए निश्चय ही कुछ सहायक होगी। जहाँ तक उसकी जानकारी थी, भारत ब्राह्मणधर्मानुयायी था न कि बौद्ध। 11 वी शती ई० के पूर्वार्द्ध मे, लगता है कि मध्य-एशिया, खुरासान, अफगानिस्तान और पश्चिमोत्तर भारत से बौद्ध धर्म के सभी चिन्ह लुप्त हो गये थे। वहाँ पर बौद्ध धर्म-विषयक उसके विवरण स्वल्प है। उस समय भारतीय शिक्षा के दो केन्द्र वाराणसी और कश्मीर थे। उसको य्वान-च्वाङ् के समान भारत यात्रा करने का सुयोग नही मिला था। इस कारण उसके भौगोलिक विवरण उतने अधिक विशद् नही हैं। भारत के विषय मे लिखी गयी अपनी 'इडिया' नामक पुस्तक मे (डॉ० ई० सी० सचाउ का अग्रेजी सस्करण, 18वाँ अध्याय) उसने मध्यदेश, प्रयाग, स्थानेश्वर, कान्यकुब्ज, पाटलिपुत्र, नेपाल, कश्मीर एव अन्य देशो और नगरो, नदियो, पशुओ,

---

[1] **जर्नल एशियाटीक्, 1900, में प्रकाशित, सिलवाँलेवी के निबंध** "Les Missions de Wang-Hiuen-Tse dans l' Inde".**में यह बात कही गयी है। हाल में ही इस निबंध को डॉ० एस० पी० चटर्जी ने अंग्रेजी में अनूदित किया है।**

भारत के पश्चिमी एव दक्षिणी सीमात तथा पश्चिमी सीमा के पर्वतो, द्वीपो और वर्षा आदि का वर्णन किया है। उसने भारत के विभिन्न भागो में दूरी निश्चित करने की हिंदू-पद्धति का भी उल्लेख किया है।

बारहवी शती ई० के सुविज्ञात् कश्मीरी इतिहासवृत्त, कल्हण की राज-तरगिणी का उपयोग सर्तकतापूर्वक किया जाना चाहिए, क्योंकि इसमे भ्राति-मूलक प्राचीन अनुश्रुतियो की बडी सख्या समाविष्ट है। विसेट स्मिथ के मतानुसार यह एक महत्त्वपूर्ण ग्रथ है, क्योंकि इसमे स्थानीय घटनाओ का एक विश्वसनीय विवरण दिया गया है (अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 10)।

प्रसिद्ध वेनिस-यात्री, मार्कोपोलो तेरहवी शती ई० मे मध्य एशिया और दक्षिण भारत आया था। उसका यात्रा-वृत्तात उपयोगी हो सकता है (द्रष्टव्य, रॉयल एशियाटिक सोसायटी, बगाल मे प्रकाशित इट्रोडक्सिंग इडिया, भाग 1 मे, मुद्रित एल० आर० फाकस द्वारा लिखित 'ट्रेवेल्स ऑव मार्कोपोलो' नामक निबध)।

भारत के ऐतिहासिक भूगोल के परिचय के लिए अन्य साधन है, जैसे इपीरियल और प्राविशियल गजेटियरो मे समाविष्ट प्रारंभिक सर्वेक्षण जो वास्तव मे सूचना के बडे कोश है। आर्कयोलॉजिकल सर्वे ऑव इडिया की रिपोर्ट, एपिग्रेफिया इडिका मे आये हुए भौगोलिक उल्लेख, कार्पस इस्क्रिप्शनम् इडिकेरम और एपिग्रेफिया कर्नाटिका मे सर्वाधिक प्रामाणिक एव विस्तृत भौगोलिक ज्ञान सनिहित है। भारतीय जनगणना की रिपोर्ट भी समानरूप से महत्त्वपूर्ण है।

इपीरियल गजेटियर ऑव इडिया मे (नवीन सस्करण, भाग 1, ऐतिहासिक, भारतीय साम्राज्य, पृ० स० 76-87) भूगोल पर डॉ० जे० एफ० फ्लीट की आकर्षक टिप्पणी निस्सदेह शोधकर्ताओ के लिए सहायक सिद्ध होगी। उन्होने भारत के प्रारभिक भूगोल के अध्ययन का महत्त्व बतलाया है और अध्ययन की इस रोचक दिशा के प्रमुख साधनो का निर्देश किया है।

भारतीय पुरातत्त्व-सर्वेक्षण के वार्षिक प्रगति-पत्रो मे इस विभाग द्वारा विभिन्न प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलो पर किये गये उत्खनन के विस्तृत विवरण दिये गये है, और वे भौगोलिक महत्त्व के स्थानो यथा, बेसनगर, भीटा, कसिया, पाटलिपुत्र, राजगृह, सारनाथ, वैशाली और तक्षशिला का सविस्तार भौगोलिक वर्णन करते है। 1907-08 की वार्षिक रिपोर्ट मे ऐहोड़ के स्थान-वृत्त के साथ ही वहाँ के प्राचीन मदिरो का विवरण दिया गया है। 1915-16 की रिपोर्ट मे एम० बी० गर्दे ने पद्मावती के विषय मे एक लेख लिखा है, जो विष्णु पुराण मे उल्लिखित नागो की तीन राजधानियो मे से एक थी और जिनका वर्णन

भवभूति के मालती-माधव मे उस स्थान के रूप मे किया गया है, जहाँ पर काव्य के नायक माधव को उसके पिता ने विदर्भ मे कुण्डिनपुर से भेजा था। पद्मावती की पहचान सिन्ध और पार्वती नदी के संगम पर स्थित आधुनिक पवैय्या नामक स्थान से की जाती है। 1927-28 की रिपोर्ट मे चन्द्रवर्मन के सुसुनियाँ अभिलेख मे वर्णित पुष्करण के समीकरण के विषय में के० एन० दीक्षित का एक लेख प्रकाशित हुआ है। उक्त अभिलेख का पुष्करण (एच० पी० शास्त्री द्वारा, एपि०, इ०, जिल्द,XIII, पृ० 133 मे सपादित) सुसुनियाँ मे 25 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित पोखरन नामक ग्राम से समीकृत किया गया है। 1925-26, 1927-28 और 1928-29 के रिपोर्टो मे राजशाही जिले में स्थित पहाडपुर के उत्खनन के विवरण दिये गये हैं, जब कि 1928-29 की रिपोर्ट मे उत्तर बगाल के बोगरा जिले मे स्थित, प्राचीन पुण्ड्रवर्द्धन नामक स्थान से समीकृत महास्थान के[1] उत्खनन का विवरण दिया गया है।

भारतीय पुरातत्व-सर्वेक्षण द्वारा प्रकाशित, उनके 64 वे ग्रथ, ए० एच० लागहर्स्ट द्वारा लिखित, द बुद्धिस्ट ऐटिक्विटीज ऑव नागार्जनिकोड, मद्रास प्रेसिडेंसी, मे गटूर जिले के पलनाड नाल्लुक[2] मे कृष्णा नदी के दाहिने किनारे पर स्थित नागार्जुन की पहाडी मे उपलब्ध बौद्ध-पुरावशेषो का एक रोचक विवरण दिया गया है। वहाँ के जीर्ण-स्तूपो मे प्राप्त सुदर अध्युचित्रो के अधिकाश दृश्य बुद्ध के जीवन से सबधित सुविज्ञात कहानियो मे चित्रित है। इन वास्तु-चित्रो मे विभिन्न दृश्यो का प्रत्यभिज्ञान करने के लिए लेखक ने कठिन परिश्रम किया है। उसने हमे उस स्थान का एक अत्यधिक सुपाठ्य विवरण और रोचक इतिहास दिया है। अन्वेषण-प्रक्रिया मे प्राप्त प्रमुख भवन और पुरावशेष लेखक के साव-धान मनोयोग से नही बच सके और उसने हमे उनका एक अति सुदर विवेचन प्रस्तुत किया है। इस प्रबध मे सनिहित उसके सतर्क अन्वेषण के लाभकर परिणाम प्राचीन भारत के भूगोल के प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा निश्चय ही प्रशसित होगे।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अडतालीसवे ग्रंथ के रूप मे प्रकाशित एन० जी० मजुमदार द्वारा लिखित, 'एक्सप्लोरेशम इन सिन्ध' प्राचीन भूगोल के प्रति एक महत्त्वपूर्ण देन है। इसमे सिन्ध की जलवायु और उसके प्रख्यात भौगोलिक विशेषताओ का वर्णन प्राप्त होता है। 1927-28, 1929-30 और 1930-31 मे इस स्थान पर किये गये उत्खनन-कार्य का भी उसमें विवेचन है।

---

[1] संप्रति पूर्वी पाकिस्तान में स्थित है।

[2] संप्रति आंध्रप्रदेश राज्य में स्थित है।

II. भारत के विभिन्न नाम

उत्तर मे उत्तुग पर्वत-मालाओ और शेष अन्य तीन ओर से शक्तिमान सागरो एव महासागरो मे परिवेष्टित भारत स्वय एक स्वतत्र भौगोलिक इकाई है। प्राणि एव वनस्पति जगत् , वशों एव भाषाओ, धर्मों एव सस्कृतियो की अपरिमित विविधता सहित उस देश की विशालता उसे उचित ही एक महान् उपमहाद्वीप कहलाने के योग्य बनाती है। इस महान् देश के दूरस्थ भागो ने प्राचीन युग के अन्वेषको एव पर्यवेक्षको के समक्ष अपने को केवल क्रमश. शनै-शनै व्यक्त किया है। इसी कारण प्राचीनतम लेखो मे सपूर्ण देश को लक्षित करने के लिए कोई व्यापक शब्द हमे नही मिलता है। 'इडिया' शब्द सिधु नदी या Indus नाम से व्युत्पन्न है।[1] चीन-निवासी भी शिन-टुह (Shin-tuh) या सिन्धु को ही भारत का प्राचीन नाम जानते थे।[2] ऋग्वेद (VIII 24-27) मे इसको 'सप्तसिन्धव' या नदियो का देश कहा गया है। निस्सदेह यह सज्ञा अवेस्ता वेंडीडाड मे प्राप्त शब्द हप्त-हिंदु के समान है।[3] धारयद्वसु के पर्सीपोलिस और नक्श-इ-रुस्तम के प्रसिद्ध अभिलेखो मे सिधु तथा उसकी सहायक नदियो द्वारा सिंचित सपूर्ण प्रदेश केवल 'हिंदु' नाम से अभिहित किया गया है।[4] हेरोडोटस ने इसे 'इडिया' कहा है, जो पारसीक साम्राज्य का बीसवा प्रात था। तथापि यह विचारणीय है कि वैदिक सप्तसिन्धव और पारसीक 'हिंदु' केवल पश्चिमोत्तर मे स्थित भारत के एक विशेष भू-भाग को ही लक्षित करते थे। परन्तु हेरोडोटस द्वारा प्रयुक्त शब्द 'इडिया' पहले से ही व्यापक अर्थ धारण करता जा रहा था, क्योकि इस यूनानी इतिहासकार ने उन भारतीयो का वर्णन किया है, जो दक्षिण मे पारसीको से बहुत दूर रहते थे और कभी धारयद्वसु के अधीन नही रहे।[5]

वस्तुत सपूर्ण देश का अन्वेषण लगभग चौथी शती० ईसा पूर्व तक हो चुका था। तत्कालीन यूनानी और भारतीय दोनो ही साहित्य दक्षिण भारत मे न केवल पाण्ड्यो के राज्य मे ही वरन् ताम्रपर्णी या लका से भी परिचित थे।[6] उत्तर मे

---

[1] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, पृ०, 324.

[2] लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म्, पृ० XVI, लेग्गे, फा-ह्यान, पृ० 26.

[3] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, पृ० 324.

[4] वही, पृ० 324.

[5] रायचौधरी, स्टडीज इन द इडियन ऐंटिक्विटीज, पृ० 81.

[6] भंडारकर, कार्माइकेल लेक्चर्स, (1918) पृ० 6 और आगे; कैं० हि० इं०, I, पृ० 423 और आगे।

हिमालय से लेकर दक्षिण मे समुद्र तक फैले हुए प्रदेश को अभिहित करने के लिए जनसामान्य को एक व्यापक शब्द की आवश्यकता प्रतीत हुयी। यह शब्द जम्बूद्वीप था, जो उस समय प्रयुक्त होता था। बौद्ध साहित्य मे जंबूद्वीप या तो चार महाद्वीपो मे से एक या अपने केंद्र मे सिनेरु (सुमेरु) पर्वत से युक्त भारत सहित चारो महाद्वीपो के लिए व्यवहृत होता था। जम्बूद्वीप के अगद्वीप नाम से विख्यात एक खण्ड मे वायु पुराण (48, 14-18) के अनुसार म्लेच्छ रहा करते थे।

चाइल्डर्स (पालि डिक्शनरी, पृ० 165) का मत है कि सीहल दीप के समुख जम्बूद्वीप भारत का वाचक था।[1] इस विषय मे निश्चित होना कठिन है। सस्कृत बौद्ध ग्रथो मे हम जम्बूद्वीप के उल्लेख पाते है।[2] अशोक के प्रथम लघु शिला-लेख मे जम्बूद्वीप का उल्लेख प्राप्त होता है[3] जो उस महान् सम्राट् द्वारा प्रशासित विशाल देश को लक्षित करता है। महाकाव्यो एव पुराणो मे जम्बूद्वीप सात समुद्रो द्वारा परिवेष्ठित सात समकेंद्रिक द्वीपो मे से एक बतलाया गया है।[4] इन सात द्वीपो मे से जम्बूद्वीप का ही विभिन्न स्रोतो मे सबसे अधिक उल्लेख किया गया है, और वही एक ऐसा द्वीप है जो अपने सीमित अर्थ मे भारतवर्ष या भारतीय प्रायद्वीप से समीकृत किया जाता है।[5]

जम्बूद्वीप (पालि, जबूदीप) का रोचक विवरण पालि बौद्ध ग्रथो एव भाष्यो मे प्राप्त होता है। जम्बूवृक्ष के नाम पर जबूद्वीप का नामकरण हुआ है (विसुद्धि-मग्ग, I, 205-206, तुलनीय विनयग्रथ I, 127, अट्ठसालिनी, पृ० 298)। मज्झिम निकाय की टीका पपचसूदनी के अनुसार इसे वन कहा जाता था (भाग 1, पृ० 423)। इसको सुदर्शनद्वीप भी कहा गया है, जिसका नाम यहाँ पर उगने वाले सुदर्शन नामक वृक्ष से गृहीत है, जिसकी शाखाएँ 1,000 योजन तक फैलती है (ब्रह्माण्ड०, 37 28-34; 50, 25-27, मत्स्य० 114,

---

[1] लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म्, पृ० XVI, ज्यॉग्रेफिकल-एसेज, पृ० 51.

[2] महावस्तु, III, 67; ललितविस्तर, अध्याय 12; बोधिसत्वावदानकल्पलता, 78 वाँ पल्लव, 9.

[3] रा० कु० मुकर्जी, अशोक, पृ० 110.

[4] लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म्, पृ० XVI, कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रेफी ऑव इंडिया, पृ० XXXVI.

[5] महाभारत, VI 6 13; ब्रह्माण्ड पुराण, 37. 27-46; 43 32.

74-75; महाभारत, VI, 5, 13-15, VI, 7, 19-20)। सर्वोच्च गिरिशृंग सिनेरु—युगन्धर, ईसधर, कारविक, सुदस्सन, नेमिधर, विनतक और अस्सकण्ण नामक सात दिव्य पर्वत मालाओ द्वारा परिवृत था। जम्बूद्वीप एक कमल की भाँति दिखलायी पडता है, जिसका करणिक (बीजकोष) मेरु है और मद्राश्व, भारत, केतुमाल, और उत्तरकुरु वर्ष या महाद्वीप इसकी चार पखुड़ियों के समान हैं।[1] विश्रुत पालि भाष्यकार बुद्धघोष का मत है कि जम्बूद्वीप दस हजार योजन विस्तृत था और इसे महाद्वीप कहा जाता था।[2] जम्बूद्वीप को सिंचित करने के उपरात पाँच बडी नदियाँ गगा, यमुना, सरयू, अचिरवती और मही समुद्र मे गिरती थी।[3] चक्कवत्तिसीहनाद सुत्तात को कहते समय बुद्ध ने भविष्य-वाणी की थी, "जम्बूद्वीप शक्तिशाली और समृद्ध होगा, ग्राम, नगर और राज-धानियाँ इतने समीप होगे कि कौआ एक से उडकर दूसरे मे जा सकेगा।" सुमगलविलासिनी (भाग II, पृ० 449) के अनुसार जम्बूद्वीप मे पाँच सौ द्वीप थे। जम्बूद्वीप मे रमणीक उद्यान, सुखद वाटिकाएँ, रम्य स्थल एव झीले थी, किंतु उनकी सख्या अधिक नही थी। इनके अतिरिक्त वहाँ पर अनेक दुरारोह ढालू चट्टाने, वितरणीय नदियाँ, दुर्गम पहाड और कंटीली झाडियो के गहन निकुज थे।[4] सपूर्ण जम्बूद्वीप से सोना इकट्ठा किया जाता था।[5] अशोक ने सपूर्ण जम्बूद्वीप मे चौरासी हजार विहारो का निर्माण कराया था।[6] यहाँ पर साख्य, योग, न्याय, और वैशेषिक दर्शन पद्धतियाँ, अकगणित, सगीत, औषधि-विज्ञान, चतुर्वेद, पुराणेतिहास, खगोल-शास्त्र, जादू-टोने, वशीकरण, युद्धकला, काव्य और हस्तातरण-लेखन आदि विद्याएं सिखायी जाती थी।[7] यहाँ पर कला और विज्ञान के विषय मे वाद-विवाद होते थे।[8] जम्बूद्वीप का बहुत अधिक महत्त्व था, क्योकि महिद के अतिरिक्त यहाँ पर प्राय गौतम बुद्ध आया करते

[1] महाभारत, VI. 6 3-5 पर नीलकठ की टीका, मार्कण्डेय० 55, 20 और आगे; ब्रह्माण्ड० 35.41; 44-45.

[2] सुमगलविलासिनी, II, 429.

[3] वही, पृ० 17.

[4] अगुत्तर निकाय, I, 35.

[5] पपंचसूदनी, II, 123.

[6] दीपवस, पृ० 49; विसुद्धिमग्ग, I, 201.

[7] मिलिंदपञ्ह, पृ० 3.

[8] थेरीगाथा भाष्य, पृ० 87.

थे।[1] कथावस्तु (पृ० 99) के अनुसार जम्बूद्वीप के निवासी सदाचारी जीवन व्यतीत करते थे। संपूर्ण जम्बूद्वीप सानु द्वारा अनुप्राणित था, जो त्रिपिटकों मे निष्णात किसी उपासिका शिष्या का एकमात्र पुत्र था।[2] चूलवंश मे (जिल्द 1, पृ० 36) जम्बूद्वीप मे स्थित विशाल बो-वृक्ष (Bo Tree) का उल्लेख किया गया है। यहाँ पर भिक्षु और विधर्मी रहा करते थे और विधर्मियों की उच्छृंखलता इतनी अधिक बढ गयी थी कि भिक्षुओं ने सात वर्ष तक उपोसथ संस्कार का अनुष्ठान बंद कर दिया था।[3] यहाँ पर एक बार भीषण दुर्भिक्ष पडा था।[4]

भारतवर्ष जम्बूद्वीप का निर्माण करने वाले नव प्रमुख भागो मे से केवल एक वर्ष या देश था। जैन ग्रंथ जबुद्दीवपण्णत्ति मे जबूद्वीप के अगभूत सात वर्षों का वर्णन है। महाकाव्य और पुराणकारो के अनुसार जम्बूद्वीप पहले सात वर्षो मे विभक्त था। कालातर मे पहले के सात वर्षो मे दो वर्ष और जोड दिये गये और इस प्रकार वर्षो की कुल सख्या बढकर नौ हो गयी।[5] इस प्रकार जैन और ब्राह्मण लेखको के विचारानुसार एक महाद्वीप के रूप मे जम्बूद्वीप बौद्धो को ज्ञात जबुदीप की अपेक्षा अत्यधिक विस्तृत था। जम्बूद्वीप के वर्षो मे भारतवर्ष अधिकाशत. दक्षिण मे स्थित था। महाभारत[6] और पुराणो से समत जबुद्दीवपण्णत्ति मे भी भारतवर्ष का नाम राजा भरत से जो मनु स्वयभव[7]—जिसकी प्रभुसत्ता उसके ऊपर थी,[8] के पुत्र प्रियव्रत का वशज था—से गृहीत मानी गयी है। पौराणिक ममृति-विज्ञान के अनुसार भारतवर्ष नव खण्डो मे विभाजित था, जो समुद्रो द्वारा पृथक् और एक दूसरे के लिए अगम्य थे।[9] परन्तु वर्तमान

[1] दीपवंस, पृ० 65.

[2] धम्मपद कामेंट्री, IV, 25.

[3] महावंस, पृ० 51.

[4] धम्मपद कामेंट्री, III, 368, 370, 374.

[5] लाहा, इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन अर्ली टेक्स्टस ऑव बुद्धिज्म् ऐंड जैनिज्म्, पृ० 1, नोट; लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 119 और आगे; कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रेफी ऑव इंडिया, पृ० 8, 749 और आगे।

[6] महाभारत, भीष्मपर्व, III, 41.

[7] भागवत पुराण, 11, 2. 15 और आगे।

[8] बि० च० लाहा, इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन अर्ली टेक्स्टस ऑव बुद्धिज्म् ऐंड जैनिज्म्, पृ० 14.

[9] कनिंघम, ए० ज्यॉ० इं०, पृ० 751; लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 121; मार्कण्डेय, 575—नवद्वीप।

भारतवर्ष—जैसा कि हम इसे जानते हैं—'न तो देश के भीतर समुद्रो द्वारा अलग है, और न तो एक दूसरे के लिए अगम्य ही'। अतएव यह भारतवर्ष वर्तमान भौगोलिक क्षेत्र पर फैला हुआ हमारा भारत नही है। उसके नव खण्डो मे से आठ, वास्तविक भारतवर्ष के भाग के रूप मे नही निर्दिष्ट है। वे भारतवर्ष के अनेक प्रात नही—वरन् वृहत्तर भारत के प्रात, द्वीप और देश है जो भारतीय प्रायद्वीप को परिवेष्टित किये हुए है।[1] बहुत पहले अल्बेरुनी और अबुल फज्ल-जैसे विद्वानो ने इस तथ्य की भी सूचना दी थी।[2] नवे द्वीप या खण्ड को पुराणो मे समुद्र से परिवेष्टित (सागर-सम्वृत) कुमारी अथवा कुमारिकाद्वीप बताया गया है। इसके पूर्वी सीमात पर किरात और पश्चिमी सीमात पर यवन लोग रहते थे और इसके बीच मे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बिखरे हुए थे तथा यही क्षेत्र असली भारत प्रतीत होता है।[3]

पूर्ववर्ती यूनानी लेखक सिन्धु नदी को भारत की पश्चिमी सीमा मानते थे, किंतु वे काबुल तथा उसकी सहायक नदियो की घाटियो मे स्थित भारतीय सनिवेशो से परिचित थे। अत कुछ लेखक कोफेस (काबुल नदी) को पश्चिम की ओर भारत की दूरतम सीमा मानते है।[4] सभवत. काबुल के समीप निवास करने वाले योनो या यवनो तथा पश्चिमोत्तर सीमाप्रात मे आधुनिक पेशावर एव पश्चिमी पजाब मे रावलपिंडी के आधुनिक जिलो मे (सप्रति पश्चिमी पाकिस्तान मे) स्थित गन्धार जनो को महाभारत और पुराणो मे उत्तरापथ के निवासियो के अतर्गत सम्मिलित किया गया है। इससे यह व्यजित होता है कि एक समय भारत की सीमाओ के भीतर न केवल सिन्धु के ठीक पश्चिम मे स्थित देश वरन् ईरानी अधित्यका के उत्तर-पूर्वी कोने पर स्थित देश भी समिलित थे। आम्राकार लका द्वीप[5] जो मुख्य भारत का अग नही है—भौगोलिक और सास्कृतिक दोनो ही दृष्टियो से इससे घनिष्ट रूप मे सबद्ध है।

---

[1] कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रफी ऑव इंडिया, परिशिष्ट I, पृ० 749-754.

[2] रायचौधरी, ऑप. सिट. पृ० 78, पा० टि० 4.

[3] लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 121.

[4] मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई मैगस्थनीज ऐंड एरियन, पृ० 146.

[5] महानामन् द्वितीय के अभिलेख में आम्रद्वीप (कार्पस इंस्क्रिप्शनम् इंडिकेरम, जिल्द III)

III. भारत का आकार और उसके भाग

प्राचीन भारतीयों को अपने देश के वास्तविक आकार-प्रकार का बहुत यथार्थ ज्ञान था। सिकंदर के ज्ञापको ने इस देश के निवासियो से अपनी जानकारी प्राप्त की और उन्होंने भारत को एक समप्रतिभुज अथवा विषम चतुर्भुज के आकार का बतलाया है, जिसके पश्चिम मे सिन्धु नदी, उत्तर मे पहाड और दक्षिण मे तथा पूर्व मे समुद्र स्थित थे।[1] महाभारत मे भारतवर्ष का आकार चार छोटे समबाहु त्रिभुजो मे विभाजित एक समबाहु त्रिभुज के रूप मे बतलाया गया है।[2] कनिंघम का मत है कि यदि हम भारत की सीमाओ को उत्तर-पश्चिम मे गजनी तक बढा दे और त्रिभुज के शेष अन्य दो बिंदुओ को कन्याकुमारी और असम मे सदिया पर निर्धारित करें तब यह रचना भारत के सामान्य आकार से अच्छी तरह से मेल खाती है (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 6)। सबसे पहले पराशर और वराहमिहिर ने यह बतलाया है कि भारतवर्ष नव खण्डो मे विभक्त है। बाद मे यह धारणा कुछ पुराणो के लेखको ने ग्रहण किया।[3] कूर्मनिवेश खण्ड मे भारतवर्ष का धरातल लेटे हुए पूर्वाभिमुख कूर्म के ऊपरी पृष्ठ के समान उत्तल आकार वाला बतलाया गया है। कुछ पौराणिक अशो से यह व्यंजित होता है कि प्राचीन भारतीय लोग भारत के चतुर्विध स्वरूप से परिचित थे। भारत-विषयक पूर्ववर्ती यूनानी विवरणो मे भी यह व्यक्त होता है। स्ट्रैबो के विवरण से हमे ज्ञान होता है कि सिकदर ने सम्पूर्ण देश का वर्णन ऐसे लोगो के द्वारा कराया था जो इससे सुपरिचित थे। निस्सदेह वे भारतीय थे। थोडे ही समय बाद, पाटलिपुत्र के महान् मौर्य राजाओ के दरबार मे अधिकृत हेलेनिस्टिक राजदूतो ने भी अशत भारतीय स्रोतो से गृहीत सूचनाओ के आधार पर भारतवर्ष के वृत्तान्त लिखे। टालेमी की ज्यॉग्रफी मे कन्याकुमारी मे भारतीय प्रायद्वीप के दो समुद्रतटो के मिलने से बनने वाला न्यूनकोण लगभग सिन्धु नदी के मुहाने से गगा नदी के मुहाने तक सीधी जाने वाली एक तट-रेखा के रूप मे परिवर्तित हो गया है।[4] पूर्वकालीन बौद्धो के अनुसार भारतवर्ष उत्तर मे चौडा है जब कि दक्षिण मे यह किसी बैलगाडी के अगले भाग के आकार का है, और सात समान भागों

---

[1] कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 2.

[2] वही, पृ० 5.

[3] वही, पृ० 6-7.

[4] वही, पृ० 9.

मे विभक्त है।[1] भारतवर्ष का यह आकार इस देश के वास्तविक स्वरूप से बहुत बडी सीमा तक मिलता है, जो कि उत्तर मे चौड़ा है जहाँ हिमालय पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है, और जो दक्षिण मे त्रिभुजाकार है। यह चीनी लेखक फाह-किया-लिह्-तो (Fah-Kai-lih-to) द्वारा दिये गये इस देश के आकार-वर्णन से अद्भुत रूप से मिलता है। इसके मतानुसार यह देश उत्तर की ओर चौडा और दक्षिण की ओर सकीर्ण है। चीनी यात्री युवान-च्वाड्, जो सातवीं शती ईस्वी मे भारत आया—ने इस देश को अर्धचद्राकार बतलाया है जिसका व्यास या चौडा वाला भाग उत्तर मे और छोर दक्षिण मे है। मुख्यतया उसकी यात्राएँ भारत के उत्तरी भाग तक ही सीमित थी जो अर्धचद्र के सदृश कहा जा सकता है विन्ध्य जिसका आधार है, और अपनी दो भुजाओं को दो दिशाओं मे फैलाये हुए हिमालय जिसका व्यास है। भारतवर्ष के आकार के विषय में मेगस्थनीज और डायमेकस का मत है कि दक्षिण समुद्र से काकेशस तक इसकी दूरी 20,000 स्टेडिया[2] से भी अधिक है।[3] मेगस्थनीज के अनुसार भारत की सबसे कम चौडाई 16,000 और इसकी न्यूनतम लम्बाई 22,300 स्टेडिया है।[4] सस्कृत बौद्ध ग्रथो मे हमे भारत के आकार-प्रकार के विषय मे कोई झलक नही मिलती है।

पूर्वकालीन भारतीय ग्रथो के अनुसार हमे भारत के पाँच परपरानुगत भाग ज्ञात है। काव्यमीमासा (पृ० 93) मे यह स्पष्ट उल्लेख है कि प्राच्य देश वाराणसी के पूर्व मे, माहिष्मती (नर्मदा के तट पर मान्धाता से समीकृत) के दक्षिण मे दक्कन या दक्षिणापथ, देवसभा के पश्चिम मे पश्चिमीदेश, पृथूदक (थानेश्वर के लगभग 14 मील पश्चिम मे स्थित, वर्तमान पेहोआ) के उत्तर मे उत्तरापथ स्थित है और गगा-यमुना के सगम तक के अन्तवर्ती प्रदेश को अन्तर्वेदी कहा गया है। उस समय जब काव्यमीमासा लिखी गयी थी, आर्यों ने पहले से ही मध्यदेश की प्राचीन सीमाओ का अतिक्रमण कर लिया था और आर्य प्रदेश वाराणसी तक फैल चुका था।

जैसे ब्राह्मण मतानुयायी आर्यों के लिए वैसे ही बौद्धो के लिए भी, आर्यावर्त्त—

---

[1] दीघ०, II, पृ० 235.

[2] 1 स्टेडिया = 202 गज।

[3] मैक्रिंडिल, ऐंश्यंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज ऐंड एरियन, पृ० 49.

[4] वही, पृ० 50.

जिसका उल्लेख पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (12, 4, 1, पृ० 244) में किया है—धर्मसूत्रों एवं धर्मशास्त्रों मे—पश्चिम मे विनशन (जहाँ सरस्वती नदी विनष्ट होती है) से लेकर पूर्व मे कालक वन तक, तथा उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे पारिपात्र तक फैला हुआ बतलाया गया है। लगभग सभी ब्राह्मण ग्रंथ भारतवर्ष के सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण भाग मध्यदेश या आर्यावर्त्त का वर्णन करते है। ब्राह्मण धर्मावलबी आर्यो या बौद्धों ने अपनी सपूर्ण जीवन-लीला मध्यदेश के आश्रयस्थल पर ही अभिनीत की। पुराणो के भुवन-कोष खण्ड मे प्रदर्शित भारत के पाँच भाग काव्यमीमामा मे वर्णित भागो के समान है। ये भाग निम्नलिखित है—

1 मध्यदेश
2 उदीच्य या उत्तरापथ (उत्तरी भारत)
3 प्राच्य (पूर्वी भारत)
4 दक्षिणापथ (दक्कन), और
5 अपरान्त (पश्चिमी भारत)

पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (8 3 75) मे प्राच्य-भारत देश का वर्णन किया है। प्रारम्भिक ब्राह्मण और बौद्ध ग्रथों मे मध्यदेश अथवा मज्झिम-देश की सीमाओ का उल्लेख एव स्पष्टीकरण किया गया है। बहुत पहले सूत्रो के युग मे आर्यदेश का वर्णन जो वस्तुत उत्तरकालीन मध्यदेश ही है—बोधायन धर्मसूत्र मे किया गया है जो सरस्वती नदी के विनशन प्रदेश के पूर्व, प्रयाग के निकट कही पर स्थित कालक वन क्षेत्र के पश्चिम,[1] पारिपात्र के उत्तर ओर हिमालय के दक्षिण मे[2] जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है स्थित है। इस प्रकार न केवल वर्तमान बगाल का प्रदेश वरन् बिहार भी—जिसमे प्राचीनकाल मे सपूर्ण मगध देश सम्मिलित था —इसकी पूर्वी सीमा के बाहर था। मनु के धर्मशास्त्र में सूत्रों के आर्यावर्त को मध्यदेश कहा गया है। मनु ने इसकी सीमा उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे विन्ध्य तक, और पश्चिम मे विन्ध्य से लेकर पूर्व मे प्रयाग तक निर्धारित की है।[3] सूत्रों का आर्यावर्त्त और मनु का मध्यदेश काव्यमीमामा (पृ० 93) के अनुसार अन्तर्वेदी के नाम से विश्रुत है, जो पूर्व मे वाराणसी तक फैला हुआ है। मध्यदेश की पूर्वी सीमा समय की प्रगति के

[1] कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, इंट्रोडक्शन, पृ० XLI और XLII, पा० टि० 1.
[2] बौधायन, I, 1, 2, 9; वशिष्ठ, I, 8.
[3] हिमवद्-विन्ध्ययोर्मध्यं यत् प्राक् विनशनादपि प्रत्यगेव प्रयागाश्च मध्यदेशः।

भारत के कुछ पर्वत एवं नदियाँ

उत्तर मे हिमालय से लेकर दक्षिण मे विन्ध्य तक सम्पूर्ण उत्तरी भारत को भी द्योतित करता रहा हो। ऐसा प्रतीत होता है कि हर्षचरित के लेखक बाणभट्ट की दृष्टि मे उत्तरापथ मे उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग, पजाब और भारत तथा पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर सीमांत प्रदेश समिलित थे।

काव्यमीमासा (पृ० 93) के अनुसार देवसभा के पश्चिम मे स्थित प्रदेश पश्चात् देश या पश्चिमी देश के नाम से विश्रुत था।[1] पालि ग्रंथ सासनवश (पृ० 11) के अनुसार अपरान्तक का पश्चिमी भाग्त अपर इरावती नदी के पश्चिम मे स्थित था। सर रा० गो० भडारकर के मतानुसार उत्तरीकोकण ही अपरान्त था शूर्पारक या आधुनिक सोपारा जिसकी राजधानी थी। भगवान-लाल इद्रजी के विचारानुसार भारत का पश्चिमी समुद्राचल अपरान्तक या अपरान्तिक के नाम से विख्यात था। महाभारत (भीष्मपर्व, IX, 335, वनपर्व, CCXVII, 7885-6, शान्तिपर्व, XLIX, 1780-82) मे अपरान्त का प्राय. उल्लेख किया गया है। मार्कण्डेय पुराण (अध्याय, 58) के अनुसार अपरान्त सिन्धु-सौवीर प्रदेश के उत्तर में स्थित प्रतीत होता है। दे० रा० भडारकर के अनुसार एरियाके (Ariake) अपरान्तिक था। अशोक के पचम शिलालेख मे अपरान्त का उल्लेख है। ल्यूडर्स की तालिका के 965 वे अभिलेख मे भी इसका वर्णन किया गया है। गौतमी बलश्री के नासिक-अभिलेख से हमे यह ज्ञात होता है कि उसके पुत्र ने अपरान्त के ऊपर अपना आधिपत्य स्थापित किया जो कालांतर मे पश्चिमी भारत के शक-क्षत्रप रुद्रदामन द्वारा पुनः जीत लिया गया जैसा कि 150 ई० मे लिखित जूनागढ़ अभिलेख के साक्ष्य मे प्रकट होता है। और अधिक विवरण के लिए लाहा द्वारा लिखित 'ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 392 और 'इडोलॉजिकल स्टडीज़', जिल्द I, पृ० 53 द्रष्टव्य है।

जैसा पहले सकेत किया जा चुका है काव्यमीमामा के अनुसार दक्षिणापथ वह प्रदेश है जो मान्धाता से समीकृत माहिष्मती के दक्षिण मे स्थित है। कुछ लोगो की धारणा है कि यह प्रदेश राम के सेतु और नर्मदा नदी के मध्य में स्थित है। (हल्टश्, सा० इ० इ०, I, पृ० 58, फ्लीट, इडियन ऐटिक्वेरी, VII, पृ० 245)। धर्मसूत्रो से यह तथ्य सिद्ध होता है कि दक्षिणापथ, सामान्यतया विन्ध्य के एक भाग से समीकृत पारिपात्र के दक्षिण में स्थित है। विनयपिटक के महावग्ग और दिव्यावदान मे दक्षिणजनपद सतकर्णिक नगर के दक्षिण मे स्थित बतलाया

[1] देवसभायाः परतः पश्चाद्देशः, तत्र देवसभा-सुराष्ट्र दसेरक-त्रवन-भृगुकच्छ-कच्छीय-आनर्त ब्राह्मणवाह यवन-प्रभृतयो जनपदाः।

गया है। प्रसिद्ध बौद्ध भाष्यकार बुद्धघोष ने गगा के दक्षिण मे स्थित भू-भाग को दक्कन या दक्षिणापथ बतलाया है (सुमगलविलासिनी, I, पृ० 265)। सुत्त-निपात (पचम भाग के आमुख, विनय-महावग्ग, V, 13, विनयचुल्लवग्ग, XII, 1) मे गगा के दक्षिण और गोदावरी के उत्तर मे स्थित सपूर्ण भू-भाग को दक्षिणापथ कहा गया है। सस्कृत बौद्ध ग्रथो में दक्षिणापथ शरावती नदी और पारिपात्र पर्वत के पार दक्षिण मे फैला हुआ बतलाया गया है।

दमिड–गगा के दोनो ओर जिनके दो सनिवेश थे, तमिलो से समीकृत किये गये है। ये युद्धप्रिय थे और समय-समय पर ये लकाद्वीप को अत्यधिक पीडित करते थे। इन्हे असभ्य (अनरिया) बतलाया गया है। "जिसकी लाठी उसकी भैस" उनकी नीति थी जिसका पालन वे दृढता से करते थे, जिसके परिणाम-स्वरूप वे लका-निवासियो से प्राय सभी युद्धो मे पराजित हुए और उनकी निर्मम हत्या कर दी गयी (महावमटीका, पृ० 482, लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 168 और आगे, लाहा, ज्यांग्रेफिकल एसेज, अध्याय IV,)। बौद्ध स्तूपो के प्रति वे अश्रद्धालु थे (महावमटीका, पृ० 447)।

प्राच्य देश मध्यदेश के पूर्व मे स्थित था, किंतु जैसे समय-समय पर मध्यदेश की पूर्वी सीमा परिवर्तित होती गयी, वैसे प्राच्यदेश की पश्चिमी सीमा घटती गयी। धर्मसूत्रो के अनुसार प्राच्यदेश प्रयाग के पूर्व मे स्थित था। काव्यमीमासा के अनुसार यह वाराणसी के पूर्व मे, जबकि वात्स्यायन सूत्र के भाष्यानुसार यह अङ्ग देश के पूर्व मे स्थित था। पूर्वदेश की पश्चिमी सीमा और भी अधिक सकुचित हो गयी और विनय महावग्ग के अनुसार यह कजगल तक अथवा दिव्यावदान के अनुसार पुण्ड्रवर्द्धन तक फैली हुयी थी।

सस्कृत बौद्ध ग्रथो मे भारतवर्ष के तीन भागो, मध्यदेश, उत्तरापथ, और दक्षिणापथ का उल्लेख किया गया है। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (5 1.77) मे उत्तरापथ का उल्लेख किया है। पतञ्जलि ने भी अपने महाभाष्य मे इसका वर्णन किया है। दण्डिन ने अपने काव्यादर्श (I 60, I.80) मे दक्षिणात्य और अदक्षिणात्य जनो का उल्लेख किया है। अतिम दो भागो के केवल नाममात्र का उल्लेख किया गया है। न तो उनकी सीमाओ का ही स्पष्टीकरण किया गया है और न ही उन देशो या प्रदेशो का कोई वर्णन है, जो उन भू-भागो के अगभूत है। दो अन्य भू-भागो—अपरान्त या पश्चिमी तथा प्राच्य—का नामोल्लेख तक नही है किंतु दिव्यावदान मे दी गयी मध्यदेश की सीमा से उनका आभास मिलता है।

चीनियो ने भी भारतवर्ष का पाँच प्रातो में विभाजन ग्रहण कर लिया था।

सातवी शताब्दी ई० के थग (Thong) वश के शासकीय प्रलेखो मे भारतवर्ष को पॉच भागो वाला देश बतलाया गया है, जिनके नाम प्राच्य, प्रतीच्य, उदीच्य, दक्षिण और मध्य है, और जो सामान्यत पञ्चभारत (Five Indies) के नाम से विख्यात थे (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 11)। पाँच भागो मे विभाजन की चीनी पद्धति स्वल्प रूपातरो के साथ प्रत्यक्ष रूप से पुराणो मे वर्णित हिंदू ब्राह्मण प्रथा मे ग्रहण की गयी थी। आधुनिक भारतवर्ष और निकटस्थ देशो को अपनी सुविधानुसार इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है—

1 उत्तरी भारत जिसमे सरस्वती नदी के पश्चिम मे स्थित वर्तमान सतलुज नदी के इधर के प्रदेश और सिन्धु नदी के उस पार सपूर्ण पूर्वी अफगानिस्तान, निकटवर्ती पहाडी राज्यो सहित कश्मीर और मुख्य पजाब के प्रदेश समिलित है। सिन्धु नदी की सपूर्ण घाटी उत्तरी भारत मे समिलित है।

2 पश्चिमी भारत जिसमे सिन्ध और पश्चिमी राजपूताना (सप्रति राजस्थान मे) कच्छ और गुजरात तथा नर्मदा नदी के निचले प्रवाह के समीप तट का एक भाग समिलित था।

3 मध्य देश (Mid-India or Central India) जिसमे थानेश्वर से लेकर गगा के डेल्टा तक गगा नदी के सपूर्ण प्रदेश और हिमालय पर्वत से लेकर नर्मदा नदी के तट तक के प्रदेश समिलित थे।

4 पूर्वी भारत, जिसमे मुख्य बगाल और असम सहित गगा नदी का सपूर्ण डेल्टा, सबलपुर, उडीसा और गजम के प्रदेश समिलित थे।

5. दक्षिण भारत—बरार, तेलगाना, महाराष्ट्र और कोकण के आधुनिक क्षेत्र तथा हैदराबाद, मैसूर, ट्रावनकोर-कोचीन के पृथक् भूतपूर्व रियासतो सहित दक्षिण-भारत, जिसमे पश्चिम नासिक और पूर्व मे गजम मे लेकर दक्षिण मे कन्याकुमारी तक का सपूर्ण प्रायद्वीप या नर्मदा और महानदी नदियो के दक्षिण मे स्थित सपूर्ण प्रायद्वीप के भाग समिलित थे (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 13-14)।

दक्षिण भारत का आकार एक उलटे त्रिभुज की भाँति है जिसका शीर्ष दक्षिण मे भूमध्यरेखा के 8° उत्तर मे कन्याकुमारी पर स्थित है। प्रायद्वीप के दोनो किनारे पश्चिम मे अरब सागर और पूर्व मे बगाल की खाडी से परिवृत है। त्रिभुज का आधार विन्ध्यपर्वत है, जो इसकी उत्तरी सीमा है। विन्ध्य और सतपुडा पर्वतो के साथ ही अजता और अरावली पर्वतो का उल्लेख किया जा सकता है। अजता के दक्षिण मे हैदराबाद का प्रदेश स्थित है। सतपुडा और अन्य पहाड़ियों के दक्षिण मे दण्डकारण्य नामक एक अभेद्य जगल था। सुदूर दक्षिण

मे तमिल देश, आध्र देश और मलयाल्म क्षेत्र हैं। मलयालम क्षेत्र के उत्तर मे मुख्य प्रदेश है और उसके पार महाराष्ट्र का देश।

भारत के ये परपरानुगत क्षेत्र देश को विविध भागो मे विभाजित करने की किसी नई योजना बनाने मे अत्यधिक सहायक सिद्ध होंगे।

IV. प्राकृतिक विशेषताएँ

भौगोलिक दृष्टि मे भारत की स्थिति बडी लाभकर है। यह पूर्वी गोलार्ध के मध्य मे और दक्षिणी एशिया के केंद्रीय प्रायद्वीप के रूप मे स्थित है। इस प्रकार इसकी सामुद्रिक स्थिति हिंद महासागर के आसपास स्थित देशो मे व्यापार के लिए सर्वथा अनुकूल है। पुनश्च, सुनिश्चित प्राकृतिक सीमाएँ प्रदान करने में प्रकृति किसी अन्य देश की अपेक्षा भारत के अधिक अनुकूल रही है। इसके पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी—तीनो किनारे क्रमश बगाल की खाडी, अरब सागर और हिंद महासागर से प्रक्षालित है। उत्तर, पश्चिमोत्तर और उत्तर-पूर्व में यह देश चीनी तुर्किस्तान और तिब्बत, ईरानी पठार और बलूचिस्तान तथा बर्मा की चिदविन और इरावदी नदियो की घाटियो से एक विशाल प्राचीर द्वारा विभक्त है। विभाजन के पूर्व भारत की सीमाओ के भीतर समिलित पूरा क्षेत्र लगभग 18 लाख वर्गमील था, जो यूरोप के एक तिहाई भाग के आकार से अधिक है। फेनिल तरगो द्वारा प्रताडित इसका समुद्रतट लगभग 3,000 मील से भी अधिक लबा है। यह प्राय अविच्छिन्न है और इसमे ऐसी बहुत कम खाडियाँ या आखात है, जिनका प्रयोग प्राकृतिक बदरगाहो के रूप मे किया जा सकता है।

भारत के आकार की विशालता इसकी प्राकृतिक विशेषताओ की विलक्षणता के बिल्कुल अनुरूप है। हिमालय की गौरवशाली ऊँचाइयो से लेकर अदृश्य रूप मे समुद्र मे विलीन हो जाने वाले निम्न देशो तक, और असम की वर्षायुक्त पहाडियों से सिन्ध के शुष्क मरुस्थल तक परिलक्षित होने वाली अपनी जलवायु-परक विविधता सहित भारत प्राणि एव वनस्पति जगत् के प्रचुर वैचित्र्य से अनुग्रहीत रहा है। इस ऐतिहासाहिक देश में बसने वाली तथा अगणित भाषाएँ बोलने वाली असख्य मानव जातियाँ कुछ कम उल्लेखनीय नही है। सचमुच, भारत सपूर्ण विश्व का प्रतिरूपक है। अन्य देशो की भाँति भारत का इतिहास भी इसके भूगोल द्वारा प्रभावित रहा है। अतएव इसकी कुछ प्रमुख प्राकृतिक विशेषताओ का विशद् अध्ययन आवश्यक है।

अ. पर्वत

उत्तर मे उस पर्वत-प्राचीर में जिसका उल्लेख हमने ऊपर किया है,

हिमालय, हिमालय के पार के पर्वत और उसकी पूर्वी तथा पश्चिमी प्रशाखाएँ समिल्ति है।

हेमवत (पालि हिमवा, हिमालय और हिमवत पदेस, सस्कृत हैमवत्)— इस पर्वत का उल्लेख, जिसे कालिदास ने नगाधिराज (कुमारसम्भव, I) कहा है, ऋग्वेद (X. 121. 4) और अथर्ववेद (XII. 1. 2) मे है। तैत्तिरीय सहिता (V 5 11 1) वाजसनेयि सहिता (XXIV 30, XXV 12) और ऐतरेय ब्राह्मण (VIII 14 3) मे भी इसके प्रति सकेत है। महाभारत (वनपर्व, अ० 253) के अनुसार हैमवत्-क्षेत्र नेपाल-विषय के ठीक पश्चिम मे स्थित था और इसमे मुख्यरूप से कुलिन्दविषय (टालेमी का Kunındrae) समिलित था जिससे उन ऊँचे पहाड़ो वाले क्षेत्र का बोध होता था, जिसमे गगा, यमुना और सतलज के स्रोत स्थित थे। इस प्रकार इसमे हिमालय-प्रदेश और देहरादून के कुछ भाग समिलित माने जा सकते है। भागवत और कूर्मपुराण मे (30 45-48) इसका उल्लेख है। योगिनीतत्र (1 16) मे इस पर्वत का वर्णन है। कालिकापुराण (अध्याय, 14 1) मे भी इसका उल्लेख किया गया है। कालिकापुराण (अ० 14 51) मे पर्वतो के राजा के रूप मे इसका वर्णन किया गया है। महाकाव्यो और पुराणो मे हिमवत को वृषपर्वत और मर्यादापर्वत—दोनो ही कोटि मे रखा गया है। मार्कण्डेय पुराण का लेखक हिमवत को धनुष की प्रत्यचा के समान पूर्वी समुद्र से पश्चिमी समुद्र तक फैला हुआ मानता था (कार्मुकस्य यथागुण., 54, 24, 57, 59)। मार्कण्डेय पुराण का विवरण महाभारत (VI 6 3) और कुमारसभव (I. 1)द्वारा पुष्ट होता है। असम और मणिपुर तक फैला हुआ पूर्वी हिमालय क्षेत्र मोटे रूप से जम्बूद्वीप का हिमवत् सभाग था, जिसके बारे मे अशोक ने अपने तेरहवे शिलालेख मे नाभको और नाभपतियो का प्रथम बार प्रयोग किया है (बरुआ, अशोक ऐड हिज इस्क्रिप्शस, भाग 1, पृ० 101)। जम्बूद्वीप का हिमालय क्षेत्र (पालि मे हिमवतपदेस) पालि विवरणो के अनुसार उत्तर की ओर सुमेरु पर्वत (पालि मे सिनेरु) के दक्षिण ओर तक फैला था। भारत के हैमवत् समाग की दक्षिणी सीमा कालसी वर्ग के शिलालेखो, अशोक के लुम्बिनी, निग्लीव और चंपारण के स्तभो मे सकेतित होती है (वही, पृष्ठ 81-82)। हैमवत पदेस को कुछ लोगो ने तिब्बत, फर्ग्युसन ने नेपाल और रीज डैविड्स ने केंद्रीय हिमालय से समीकृत किया है। प्राचीन भूगोल-वेत्ताओं के अनुसार हिमवंत की सज्ञा उस संपूर्ण पर्वत-माला को दी गयी थी जो पंजाब के पश्चिम मे सुलेमान से होकर पूर्व मे असम एव अराकान, पर्वत-श्रेणियो तक भारत की सपूर्ण उत्तरी सीमा तक फैली हुयी थी। बुद्ध ने शाक्य

और कोलिय-गण को हिमालय भेजा था और उन्होंने उनको हिमालय प्रदेश के विभिन्न पर्वतो की ओर सकेत किया था। कैलास पर्वत हिमालय पहाड का एक भाग था किंतु मार्कण्डेय पुराण मे इसे एक पृथक् पर्वत बतलाया गया है। अल्बेरुनी के अनुसार मेरु और निषध हिमालय की पर्वत-शृखला से सबद्ध थे। हिमालय पर्वत वह स्रोत है जहाँ से दस नदियो का उद्गम हुआ है (मिलिन्द०, 114)। टालेमी ने बताया है कि इमाओस (Imaos=हिमालय पर्वत) गगा, सिन्धु, कोआ (Koa) और स्वात नदियों का स्रोत है। अपदान मे पर्वतराज नाम से भी विश्रुत हिमवन्त (अगुत्तर निकाय, I, 152) के निकट के कुछ अन्य पहाडो का उल्लेख है, यथा कदम्ब (पृ० 382), कुक्कुर या कुक्कुट (पृ० 178), भूतगण (पृ० 179), कोसिक (पृ० 381), गोतम (पृ० 162), पदुम (पृ० 382), भरिक (पृ० 440), लम्बक (पृ० 15), वसभ (पृ० 166), समग (पृ० 436) और सोभित (पृ० 328)। भारतवर्ष की भौगोलिक सीमाओ के अतर्गत हिमालय ही अकेला वर्षपर्वत है (द्रष्टव्य, वि० च० लाहा, ज्याँग्रेफी आँव अर्ली बुद्धिज्म्, 27, 41-42), अधिक विवरण के लिए देखिए, वि० च० लाहा, इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन द अर्ली टेक्स्ट्स आँव बुद्धिज्म् ऐड जैनिज्म्, पृ० 5 और आगे, वि० च० लाहा, ज्याँग्रेफिकल एसेज, पृ० 82, वि० च० लाहा, माउटेस आँव इडिया, पृ० 4 और आगे। ल्यूडर्स की तालिका, क्रम सख्या 834 मे हिमवत पर्वत का नाम आया है। देवपाल के मुगेर दान-पत्र मे केदार का उल्लेख है, जो हिमालय मे अवस्थित है। कालिकापुराण से (अध्याय, 14 31) ज्ञात होता है कि शिव और पार्वती हिमालय पर्वत मे स्थित महाकौशिकी नदी के उद्गम तक गये थे।

विश्व की सर्वोच्च पर्वत-श्रेणी हिमालय की बनावट एक वृत्ताकार चाप की भाँति है जिसका उन्नतोदरत्व, पश्चिम मे सिन्धु और पूर्व मे ब्रह्मपुत्र नदियो के मध्य भारत की ओर उलटा हुआ है। इसमे विभिन्न ऊँचाइयो वाले प्राय तीन समानातर शैल-कूट है, जिनके नाम बृहद् हिमालय (The great Himalaya), लघुत्तर हिमालय (The lesser Himalaya) और बाह्य हिमालय (The outer Himalaya) है। बृहद् हिमालय मे सबसे ऊँची पर्वतश्रेणी समाविष्ट है और यह समुद्रतल से 20,000 फीट अथवा अविरत हिम-सीमाओ से भी अधिक ऊँची है। सौ से अधिक शिखर इस सीमा का अतिक्रमण करते है और उनमे नग्न पर्वत (26,620 फीट), नुमकुम (23,410 फीट), नन्दादेवी (25,645 फीट), त्रिशूल (23,360 फीट), नन्दकोट (22,510 फीट), दुनगिरि (23,184 फीट), बद्रीनाथ (23,190 फीट), केदारनाथ (22,770

फीट), नीलकण्ठ (21,640 फीट), गगोत्री (21,700 फीट), श्रीकण्ठ (20,120 फीट), बन्दरपूँछ 20,720 फीट), सपूर्ण विश्व मे सबसे अधिक ऊँची चोटी-गौरीशृग अथवा ऐवरेस्ट शिखर (29,002 फीट), काचनचगा (28,143 फीट), धौलगिरि (26,795 फीट), मकलु (22,790 फीट), गोसाईथान (26,291 फीट) और नम्च बरवा (25,495 फीट) सबसे अधिक विश्रुत है। गोरीशृग या गोरीशकर, काचनजगा और धौलगिरि नेपाल हिमालय के सर्वोच्च शिखर है जो कुमाऊँ हिमालय की पूर्वी सीमा से यथासभव निम्ना नदी तक फैला है। नम्च बरवा आसाम-हिमालय मे समिलित है जो निम्ना नदी से भारत के सबसे पूर्वी सीमात तक फैला हुआ है। गौरीशकर वास्तव मे नेपाल-तिब्बत सीमा पर स्थित है। यह देवधुग, कोमो ककर, कोमो लुगमा, कोमो-उरी, चेलुगोन और मि-ति-गु-नि-च-पु लोगग आदि अनेक नामो से विश्रुत है। हिमालय के इस शिखर ने अपनी उच्चता और स्थानीय नाम—दोनो के ही सबध मे पूर्णता के लिए किये गये थोडे से प्रयत्न को तुच्छ ही समझा है। इस सर्वोच्च पर्वत-शिखर के वास्तविक अन्वेषक के विषय मे मत-वैभिन्य है। कुछ लोग राधानाथ सिकदार को इसका अन्वेषक होने का दावा करते है, किन्तु अन्य लोगो की धारणा है कि भारतीय सर्वेक्षण विभाग ((Department of Survey of India) के संमिलित प्रयत्नो के कारण इसका अन्वेषण हो सका। भारतवासी तेनजिंग और न्यूजीलैंडवासी हिलारी—जो दोनो ही ब्रिटिश माउट एवरेस्ट अभियान दल के सदस्य थे—1953 मे एवरेस्ट पर्वत के शिखर पर चढने वाले प्रथम व्यक्ति थे।

लघुत्तर हिमालय मे बृहद् हिमालय के दक्षिणी पर्वत-प्रक्षेप और बृहद् हिमालय पर्वतमाला के समानान्तर यथासभव सिवालिक पर्वत की बाहरी श्रेणियो तक फैली हुयी निचली ऊँचाइयो वाली पर्वत मालाएँ समिलित है। इसकी औसत चौडाई 50 मील है। कश्मीर-घाटी के दक्षिण मे, ब्यास नदी के स्रोत के पार पूर्व की ओर बढता हुआ पीरपजल बृहद् हिमालय पर्वत माला मे थोडा और आगे पूरब मे मिलता है। जम्मू मे उधमपुर के निकट से पश्चिम मे शिमला पहाडियो तक फैली हुयी धवलाधर पर्वतमाला पीरपजल के दक्षिण मे स्थित है, ओर बृहद् हिमालय पर्वतमाला मे बद्रीनाथ के निकट मिलती है। बाह्य हिमालय मे वे निचली पहाडियां समिलित है जो सिन्धु से ब्रह्मपुत्र तक फैली हुयी बृहद् हिमालय पर्वत श्रेणी के प्राय समानातर है। पश्चिम में ये सिवालिक पहाडियो के नाम से विख्यात है, जो ब्यास मे गगा नदी तक लगभग 200 मील तक फैली हुयी है, और जिन्हे प्राचीन भूगोल-वेत्ता मैनाक पर्वत के नाम से जानते थे। तराई के

आगे निचले देश की पट्टियाँ है, और सिवालिक के पीछे उत्तर प्रदेश का सुविज्ञात देहरादून जिला स्थित है। हिमालय-पार के क्षेत्र मे हिन्दूकुश, काराकोरम और कैलासपर्वत समाविष्ट है। हिन्दूकुश पर्वत, जिसे प्राचीन भारतीय माल्यवत् और यूनानी, भारतीय काकेशस की सज्ञा से जानते थे—हिमालय के पश्चिमोत्तरी छोर मे प्रारम्भ होता है और पहले भारत को अफगानिस्तान से अलग करते हुए और फिर उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान से होते हुए, दक्षिण-पश्चिम की ओर फैला है।

मुख्य श्रेणी से अनेक पर्वत-प्रक्षेप जैसे आक्सस को कोकचा से अलग करने वाली बदखशा ओर कोकचा पर्वत-माला को कुन्दुज मे विभक्त करने वाली कोकचा निसृत है। पूर्वी खड मे हिन्दूकुश की ऊंचाई 14,000 मे 18,000 फीट के मध्य घटती-बढती रहती है। काराकोरम—जिसे प्राचीन भूगोल-वेत्ता कृष्ण-गिरि के नाम से जानते थे, पश्चिम मे लगातार हिन्दूकुश के साथ है। यह कश्मीर की उत्तरी सीमा है। इसकी क्रोड मे गाडविन आस्टिन (28,250 फीट) की ऊँची चोटी स्थित है। दक्षिण-पूर्व की ओर काराकोरम की एक शैलबाहु का अनुसरण करते हुए हम, मानस-सरोवर पर छाये हुये कैलास पर्वत पर पहुँचते है। आधुनिक भूगोल-वेत्ताओं के अनुसार यह पर्वत पहले ही उठा था और इस-लिए शेष हिमालय से अधिक पुराना है। यह हर्कीनियन (Hercynian Age) युग का है, और इसके उन्नत होने के बाद इसमे अत्यधिक घाटियाँ एव स्तरभ्रश हुये। मानस-सरोवर के पूर्व मे बृहत्तर हिमालय के समानातर लदख श्रेणी नामक एक ऊँची पर्वत माला है। मुख्यतया यह स्फटिक प्रस्तर का बना हुआ और लगभग पचास मील चौडी एक घाटी द्वारा बृहत्तर हिमालय से अलग किया गया है। लदख श्रेणी के पचास मील पीछे उसके समानातर कैलास पर्वत-माला स्थित है। इसमे सयुक्त-शिखरो के अनेक समूह है। इस प्रकार का एक समूह मानस-सरोवर के निकट है और इन समूहों मे कैलास शिखर (22,028 फीट) सर्वोच्च है, जिसे प्राचीन भूगोल-वेत्ता वैद्युतपर्वत कहते थे। ज्ञसकर पर्वत-माला नगा के निकट महान् हिमालय पर्वत माला से दो शाखाओं मे बँट जाती है। इसमे कामेत शिखर (25,447 फीट) सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त और भी अन्य शिखर है, और यह श्रेणी उत्तर-पश्चिम मे सिन्धु नदी के पार तक फैली हुयी है।

सिन्धु नदी की घाटी को बलूचिस्तान की पहाडियो से पृथक् करती हुयी और पश्चिम मे देहरा-इस्माइल खाँ से समुद्रतट तक फैली हुयी एक ऊंची पर्वत-माला भारत के उत्तर-पश्चिम मे है। इस पर्वतमाला के उत्तरी भाग को सुलेमान पर्वत कहा जाता है, जिसे प्राचीन भूगोल-वेत्ता अञ्जन नाम से जानते थे। इसका

दक्षिणी भाग, किरथर पर्वत, मूल नदी की कृश धारा से दक्षिण की ओर समानातर शैल-शिलाओ की एक शृखला मे 190 मील तक फैला हुआ है।

भारत के उत्तर-पूर्व मे घाटीयुक्त पर्वतो का लगभग एक अविराम कूट— जिसकी रचना हिमालय के सदृश है, बिल्कुल बगाल की खाडी तक के समुद्रतट तक फैला हुआ है और बर्मा को भारत मे पृथक् करता है। उत्तर से दक्षिण तक इसमे मिश्मी पर्वत, पटकाई व नाग पहाडियाँ, बरैल श्रेणी, लुशाई पहाडियाँ, और अराकान योमा समिलित है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय मे हमे इन पहाडियो एव पर्वतो का उल्लेख नही प्राप्त होता, क्योकि प्राचीन काल के भूगोल-वेत्ताओ द्वारा इनका अन्वेषण पूर्णरूप से न किया जा सका था। उत्तर-पूर्व मे स्थित पर्वत प्राचीर से पश्चिम मे असम की ओर एक बडी शाखा निकलती है। इस शाखा मे जैन्तिया, खासी और गारो पहाडियो की रचना हुई है।

चूंकि इसका मुख्य शिखर अविरत तुषार-सीमा मे ऊँचा है, अतएव प्राचीन भारत के भूगोल-वेत्ताओ ने सुचित्यरूप मे उसका नामकरण हिमवत या हिमालय किया था। एक विशालकाय धनुष की प्रत्यचा के साथ हिमालय के आकार की तुलना हिमालय के रूप-विषयक हमारे वर्तमान ज्ञान से श्लाघनीय रूप से सगत है। हिमालय की यह ठीक स्थिति और भारतीय मैदानो की ओर उन्मुख इसकी उन्नतता दक्षिण मे आने वाली प्रमुख स्पर्शरेखीय सभग के कारण हो सकती है।

हिमालय से पहले बहुत दूर तक पर्वतमाला के रुख के समानातर बहती हुयी, मुख्य शृखलाओ को काटकर हिमालय मे निकली हुयी नदियाँ, गहरी, टेढी-मेढी कृशधाराओ के रूप मे देखी जाती है। सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियाँ इसके सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है।

भू-वृत्त के आधार पर हिमालय को तीन क्षेत्रो मे विभाजित किया जा सकता है—तिब्बत, हिमालय और अध हिमालय अचल। पुरा एव मध्य जीवकल्पीय युग के प्रस्तरिल तल तिब्बत-अचल मे सुविकसित हैं। हिमालय अचल मुख्यत मणिभ और परिवर्तनशील चट्टानो मे निर्मित हैं। अध हिमालय अचल मे पूर्णतया तृतीय युग के तल सन्निहित है।

एवरेस्ट के उत्तर की ओर राँगबुक हिमनद लगभग 16,500 फीट की ऊँचाई पर समाप्त हो जाता है। कचनजगा समूह में इन हिमनदो की ऊँचाई 13,000 फीट जब कि कुमायूँ मे 12,000 फीट और कश्मीर मे विशेष परिस्थितियो मे 8,000 फीट तक नीचे आ सकती है। हिमालय की वनस्पतियो एव पशुओ का एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन किया जा सकता है। भूमध्यसागरवर्ती यूरोपीय वनस्पतियाँ हिमालय तक आती है। एवरेस्ट अभियानों द्वारा व्यक्त किये गये विचारो से

हिमालय क्षेत्र के वनस्पतिजगत्-विषयक हमारे ज्ञान मे काफी अभिवृद्धि हुयी है। हिमालय का पक्षी-जीवन समृद्ध है। वहाँ की तितलियाँ अपने रूप-सौदर्य एव सुषमा के लिए विख्यात् है। यहाँ नाना प्रकार के अजगर, फणिधर, छिपकली एव मेढक पाये जाते हैं।

भारत का भाग्य-विधान करने मे हिमालय पर्वतकुल का बडा महत्त्व प्रतीत होता है। यह इस देश को एशिया के अन्य भागो मे पृथक् करता है और स्थल पर विदेशो के विरुद्ध एक प्रभावशाली अवरोध के रूप मे कार्य करता है। इसके उत्तर मे कई दर्रे है, जिनको तीन वर्गो मे विभक्त किया जा सकता है, यथा—शिपकी-वर्ग, अल्मोडा तथा दार्जिलिंग-सिक्किम समूह। इनमे भारत एव तिब्बत के मध्य व्यापार होने से सुगमता होती है। उत्तरपूर्व मे वर्मा जाने के लिए कई पृष्ठद्वार है जो असम मे उत्तरी-पूर्वी कोने, मणिपुर राज्य और अराकान से होकर गुजरते है। पश्चिमोत्तर सीमात मे भारत मे प्रवेश करने वाले अनेक दर्रो मे खैबर, कुर्रम, तोची, गोमल और बोलन प्रमुख है।

स्वय अपने को एक चौडे पठार के रूप मे फैलाये हुए वनराजियुक्त पहाडियो का एक समूह भारत के पश्चिम मे खभात की खाडी से लेकर पूरब मे राजमहल तक तिर्यक् रूप मे फैला हुआ है। पहाडियो का यह वर्ग इस देश को दो पृथक् भागो, यथा—उत्तर मे गगा की घाटी तथा दक्षिण मे दक्कन के पठार मे विभक्त करता है। पश्चिम से पूर्व की ओर उनके उत्तरी भाग मे विध्य तथा गया के निकट से गुजरती हुयी राजमहल के निकट समाप्त होनेवाली भारनेर एव कैमूर की सयुक्त श्रेणियाँ समिलित है। दक्षिण मे और उसी दिशा मे प्राय एक समानातर रेखा मे सतपुडा, महादेव पहाडी, मैकाल श्रेणी एव छोटा नागपुर की पहाडियाँ फैली हुयी है। विध्य-श्रेणियो के पार, पश्चिम मे काठियावाड प्रायद्वीप के मध्य मे गिरनार पर्वत जो गुजरात मे जूनागढ के निकट रैवतक नाम से भी विश्रुत है, स्थित है। अरावली श्रेणी जो राजस्थान के आर-पार पश्चिम से पूर्वी दिशा मे जाती है और इस प्रदेश को दो समान भागो मे विभक्त करती है, विध्य माला से दक्षिणी राजपूताना और मध्यभारत (सप्रति मध्यप्रदेश मे) के चट्टानी शैल-कूटो के माध्यम से घनिष्ठ रूप से सबद्ध है। राजस्थान के सिरोही जिले[1] मे

---

[1] **संप्रति, मध्यभारत** (Central india) **प्रांत राज्यपुर्नगठन के पश्चात् (1956) भारत के मानचित्र पर से हट गये है। इसी प्रकार सिरोही राज्य वर्तमान राज्यस्थान में, तथा मध्यभारत, मध्यप्रदेश एवं महाराष्ट्र में बँट गया है। आगे अनुवाद में नये भौगोलिक संदर्भो का ही उल्लेख है।**

आबू का शैलद्वीप जिसे अर्बुद भी कहा जाता है, स्थित है। यद्यपि इसे अरावली श्रेणी का एक अग समझा जाता है, किंतु दक्षिण-पश्चिम मे यह इससे एक घाटी द्वारा पूर्णत विच्छिन्न है। मेगस्थनीज़ एव एरियन के अनुसार आबू पर्वत कैपिटेलिया (Capitelia) से समीकृत किया जा सकता है जो 6,500 फीट ऊँचा है। अरावली श्रेणी के अतर्गत यह किसी अन्य शिखर से कही अधिक ऊँचा है।[1]

पारिपात्र अथवा पारियात्र, ऋक्षवन और विध्य मध्यप्रदेश के पर्वत है। पारिपात्र का प्रथम उल्लेख बौधायन धर्मसूत्र[2] मे प्राप्त होता है। इसमे इसे आर्यावर्त्त की दक्षिणी सीमा पर स्थित बतलाया गया है। स्कदपुराण मे इसे भारतवर्ष के केंद्र कुमारीखण्ड की दूरतम सीमा बतलाया गया है। पार्जिटर ने पारियात्र को वर्तमान विध्यश्रेणी के उस भाग से समीकृत किया है जो मध्यप्रदेश मे भोपाल के पश्चिम, अरावली पर्वत के साथ स्थित है, जिसे टालेमी ने अपोकोपा (Apokopa) से समीकृत किया है।[3]

ऋक्षवत् की पहचान टालेमी के आक्सेटन (Ouxenton) के साथ की गयी है। यह टाउडिन, डोसारन और अडमस, नदियों का स्रोत है। डोसारन का दशार्ण नदी (मध्यप्रदेश मे सागर के निकट वर्तमान धसन) से समीकृत किया गया है, जो टालेमी के अनुसार ऋक्ष से नि सृत बतलायी गयी है। ऋक्ष या ऋक्षवत से उसका आशय नर्मदा के उत्तर मे स्थित वर्तमान विध्य-श्रेणी के मध्यवर्ती क्षेत्र से था।

विन्ध्यपर्वत टालेमी का औडोन (Ouindon) है। यह नेमडोस (Namados) तथा ननगौना (Nangouna) जिनकी पहचान नर्मदा और ताप्ती नदियो से की जाती है, का उद्‌गम-स्थल था। टालेमी के अनुसार औडोन विध्य के केवल उस भाग का नाम था, जहाँ से नर्मदा एव ताप्ती नदियाँ निकलती है। विध्यपर्वत के विभिन्न भाग विभिन्न नामो से जाने जाते है। विंध्यपाद-पर्वत टालेमी द्वारा वर्णित सार्डोनिक्स (Sardonyx) पर्वत है। इसे सतपुड़ा श्रेणी से समीकृत किया जा सकता है जिस से ताप्ती निकलती है।

---

[1] मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज़ ऐंड एरियन, पृ० 147.

[2] बौधायन, 1.1.25.

[3] मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई टालेमी, एस० एन० मजुमदार संस्करण, पृ० 355.

सतपुड़ा वैदूर्य पर्वत है। महाभारत मे यह पयोष्णी (ताप्ती की एक सहायक नदी) और नर्मदा नदियो से संबधित है।[1] नर्मदा के दक्षिण मे स्थित पर्वतो को अब सतपुडा कहा जाता है। मैकाल-श्रेणी मध्यप्रात[2] के गोडवाना मे स्थित प्राचीन मेकल-पर्वत के लिए व्यवहृत है। इस कारण नर्मदा को मेकल-सुता कहा गया है।[3] इसकी पूर्वी चोटी अमरकण्टक, सोमपर्वत और सुरथाद्रि या सुरथगिरि के नाम से भी विश्रुत है।[4] अमरकण्टक तीन बडी नदियो, यथा, नर्मदा शोण, और महानदी का स्रोत है।

चित्रकूट पर्वत को बुदेलखड मे कामतानाथगिरि से समीकृत किया गया है। यह पैसुनी या मदाकिनी नदी के तट पर स्थित एक अकेली पहाडी है। यह सेट्रल रेलवे के चित्रकूट स्टेशन से लगभग चार मील दूर है। कालजर—जिसे बुदेलखड क्षेत्र (उ० प्र०) के बाँदा जिले मे स्थित कालिजर के पहाडी दुर्ग से समीकृत किया गया है, गगा एव विध्यपर्वत के मध्य स्थित था। जैनग्रथो मे भी इसका उल्लेख है (आवश्यक चूर्णि, पृ० 461)।

प्राचीन काल मे मध्यप्रदेश के ये वनाच्छादित पर्वत सपूर्ण देश के एकीकरण के लिए गहन अवरोध थे, क्योकि उस समय चट्टानो एव जगलो की इस चौडी पट्टी को किसी विक्रात सेना को साथ लेकर पार करना सरल नही था।

गयाशीर्ष (गयासीस, गयासीस) गया की प्रमुख पहाडी है। विनय पिटक[5] के अनुसार गया की प्रमुख पहाडी गयासीस वर्तमान ब्रह्मयोनि है। इसकी पहचान महाभारत[6] तथा पुराणो[7] मे वर्णित गयाशीर से की गयी है। प्राचीन बौद्ध भाष्यकारो ने हाथी के सिर (गज-सीस) से इसके आकार की अद्भुत समानता के कारण इसकी नामोत्पत्ति का उल्लेख किया है।

प्राचीन पालि ग्रथो से मगध की पुरातन राजधानी को परिवृत्त करने वाली इसिगिलि (ऋषिगिरि), वेभार (वैहार), पण्डव, वेपुल्ल (विपुल) गिज्झकूट

---

[1] III. 121, पृ० 16-19.

[2] **सप्रति पुराना (Central Province) मध्यप्रांत स्थूल रूप से मध्यप्रदेश में समाविष्ट है।**

[3] **पद्मपुराण, अध्याय 6.**

[4] **मार्कण्डेयपुराण, अध्याय 57.**

[5] **विनय पिटक, I, पृ० 35 और आगे; II, 199.**

[6] **महाभारत, III, 95 9.**

[7] **बरुआ, गया ऐंड बुद्ध गया, I, 68.**

(गृध्रकूट) नामक पाँच पहाडियो के एक समूह का ज्ञान हमे प्राप्त होता है। ये वेपुल्ल के दक्षिण मे स्थित थी। महाभारत मे हमे दो तालिकाएँ मिलती हैं, जिनमें से एक मे इन पहाडियो का नाम वैहार, वाराह, वृषभ, ऋषिगिरि और शुभचैत्यक[1] तथा दूसरी मे पाण्डर, विपुल, वाराहक, चैत्यक, और मातङ्ग[2] दिया गया है। गया के उत्तर और राजगृह के पश्चिम मे गोरथगिरि (वर्तमान बराबर पहाडियाँ) स्थित है[3] जिसका वर्णन अशोक के द्वितीय और तृतीय गुहालेख तथा पतञ्जलि के महाभाष्य मे खलतिक पर्वत के नाम से किया गया है।[4] कोई व्यक्ति गोरथगिरि या गोरधगिरि से मगध की पूर्वकालीन राजधानी गिरिव्रज का दृश्यावलोकन कर सकता है।[5] बेगलर के अनुसार, हजारीबाग जिले के उत्तर मे शुक्तिमत श्रेणी स्थित है।[6] इसकी स्थिति के विषय मे मतभेद है। कनिंघम ने इसे छतीसगढ को बस्तर से अलग करने वाली मेहोआ और काकर के दक्षिण मे स्थित पहाडियो मे समीकृत किया है।[7] पार्जिटर के अनुसार इसे गारो, खासी और तिपरा पहाडियो से समीकृत किया जा सकता है।[8] कुछ लोगो ने उसे पश्चिमी भारत मे स्थित बतलाया है और काठियावाड श्रेणी से इसकी पहचान की है।[9] दूसरो ने इसे सुलेमान पर्वतमाला मे समीकृत किया है।[10] रायचौधरी ने इस नाम का प्रयोग मध्यप्रदेश के रायगढ मे स्थित सक्ति से फैली हुयी पर्वतमालाओ समेत, कुमारी नदी द्वारा सिंचित मानभूम मे डल्मा पहाडियो के लिए तथा सभवत: बावला की सहायक सरिताओ द्वारा सिंचित सथाल परगना क्षेत्र मे स्थित पहा-

---

[1] सभापर्व, अध्याय XXI, श्लोक 2.

[2] वही, XXI, श्लोक 11.

[3] द्रष्टव्य, ज० बि० उ० रि० सो०, खंड 2, भाग 1, पृ० 162 में जैकसन द्वारा गोरधगिरि का समीकरण; बे० मा० बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इन्स्क्रिप्शंस ऑन द उदयगिरि ऐंड खण्डगिरि केव्स, पृ० 224.

[4] I, ii, 2.

[5] महाभारत, सभा०, अध्याय XX, 29-30 : गोरथ गिरम् आसाद्य ददर्शु मगधं पुरम्; तु० बील रिकार्ड ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, भाग 2, पृ० 104.

[6] आर्क० स० रि० VIII, 124-5.

[7] वही, XVII, 24, 26.

[8] मार्कण्डेय पुराण, 285-306, टिप्पणियाँ।

[9] चि० वि० वैद्य, एपिक इंडिया, पृ० 276.

[10] Z. D. M. G. 1922, पृ० 281, टिप्पणी।

डियों के लिए भी किया है।[1] स्टाइन ने कुक्कुटपादगिरि या गुरुपाद पर्वत की पहचान सोमनाथ शिखर से की है। कुछ लोगो ने इसे बोधगया से 100 मील आगे स्थित गुरपा पहाडी से समीकृत किया है।[2] सथाल परगना मे राजमहल पहाडियो से समीकृत अन्तरगिरि, बुद्धगया मे लगभग 26 मील दक्षिण में कलुहा पहाडी से समीकृत मकुलपर्वत, हजारीबाग जिले मे चात्रा से लगभग 16 मील दूर उत्तर मे पाथरघाटा पहाडी जहाँ प्राचीन शिला-सगम या विक्रमशिला-संघाराम था, छोटा नागपुर मे परेशनाथ पहाडी से समीकृत मल्लपर्वत, जिसे यूनानी मलेउम (Maleus) पर्वत[3] कहते थे तथा भागलपुर जिले की बाँका तहसील मे स्थित मेगस्थनीज द्वारा उल्लिखित मदर पहाडी या एरियन की मल्लुस पहाड़ी —पूर्वी भारत की कुछ अन्य उल्लेखनीय पहाडियाँ तथा पर्वत है।

दक्षिण भारतीय पर्वत प्रणाली मे पश्चिमी तथा पूर्वीघाट और नीलगिरि की पहाडियाँ समिलित है। खानदेश में कुण्डैबरी दर्रे से लेकर कन्याकुमारी तक, बिना किसी व्यवधान के लगभग 100 मील तक, समुद्र-तल से औसतन 4 000 फीट ऊँचा पश्चिमी घाट पश्चिमी समुद्रतट के समीप फैला हुआ है। यहाँ से कई शैलबाहु निकलकर दक्कन-पठार के अतर मे फैले हुए है, जिनमे अजता एव बालाघाट पर्वतमालाएँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। समुद्र की ओर ये अतिशय ढालू एव दुरारोह है। नासिक के निकट थलघाट, पूना के पास बोरघाट और नीलगिरि के आगे, पलघाट या कोयबटूर के दर्रो से होकर प्रातरवर्ती भागो से यातायात किया जाता है। दक्षिणी अतराय के आगे कन्याकुमारी तक के पर्वत का क्रम निरतर अन्नमलाई और कार्डमम पहाडियो द्वारा बना हुआ है।

भारत के प्राचीन भूगोल-वेत्ता कोयबटूर के अतराय के ऊपर स्थित पश्चिमी घाट को 'सह्याद्रि' कहते थे। सह्याद्रि पहाडियाँ कन्याकुमारी से ताप्ती नदी की घाटी तक पश्चिमी समुद्रतट के प्राय समानातर फैली हुयी थी। टालेमी ने इसे दो भागो मे विभक्त किया है उत्तरी भाग को ओरुडियन (Oroudian) (जो वैदूर्य पर्वत से समीकृत किया गया है) और दक्षिणी भाग को अडीसाथ्रोन (Adeisathron) कहा जाता था। पश्चिमी घाट से सबद्ध पहाडियो मे त्रिकूट जिससे त्रैकूटक अपना नाम ग्रहण करते है), गोवर्धन (नासिक पहाड़ी),[4] कृष्ण-

---

[1] स्टडीज इन इडियन ऐंटिक्विटीज, 113-120.

[2] ज० ए० सो० बं०, 1906, पृ० 77.

[3] मैक्रिडिल, मेगस्थनीज ऐंड एरियन, पृ० 62, 139.

[4] रैप्सन, आन्ध्र क्वायंस, पृ० XXIX; XLVII, LVI.

गिरि[1] (वर्तमान कन्हेरी), ऋष्यमूक (पम्पा पर प्रलबित, जिसे हापी से समीकृत *किया गया है*) किष्किन्ध्या देश के *माल्यवत्* (जिसे पार्जिटर ने कूपर, *मुद्गल और* रायचूर की निकटवर्ती पहाडियो से समीकृत किया है), प्रश्रवण (गोदावरी एव मन्दाकिनी[2] से सबद्ध) और गोमन्त का उल्लेख किया जा मकता है। ऋष्यमूक और गोमन्त को भी सह्य पर्वत से सबद्ध किया जा मकता है। पार्जिटर ने ऋष्य-मूक को अहमदनगर से तालद्रुग और कल्याणी के आगे तक फैली हुयी पर्वत-शृखला से समीकृत किया है। उन्होने गोमन्त को, नासिक के दक्षिण या दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित पहाडियों से समीकृत किया है।[3] रायचौधरी के अनुसार गोमन्त के उत्तर में वनवासी स्थित था और इसीलिए गोमन्त पहाडी मैसूर क्षेत्र मे स्थित रही होगी।[4]

पूर्वीघाट लगभग 2,000 फीट की औसत ऊँचाई वाली विश्लिष्ट पहाडियों के रूप मे न्यूनाधिक भारत के पूर्वी समुद्रतट के समानातर स्थित है। ये पृथक् पहाडियाँ देश के विभिन्न भागो मे विभिन्न नामो मे विज्ञात् है। इनके उत्तरी छोर पर उन पहाडियो को मलियाह (Maliahs) कहा जाता है, जो समुद्र तक पहुँचती है। गजम, विजगापट्टम और गोदावरी प्रदेशो मे ये मलियाह अधिक विश्लिष्ट है और कुर्नूल जिले मे अतीव विस्तारित है। कूर्नूल मे पूर्वीघाट को नल्लमलाई पहाडियो के नाम से पुकारते है और आगे दक्षिण मे पूर्वीघाट को पलकोण्ड पहाडी की सज्ञा दी गयी है, और पूर्वीघाट का दक्षिणी छोर मद्राम राज्य के कोयबटूर जिले मे नीलगिरि पठार मे मिल जाता है। इस छोर का स्थानीय नाम बिलगिरि रगम पहाडी है। शैवराय पहाडियाँ सलेम जिले की एक विश्लिष्ट पर्वत-माला है।

रामायण[5] से ऐसा प्रतीत होता है कि पूर्वीघाट को महेन्द्रपर्वत कहते थे। महेन्द्र श्रेणी उस सपूर्ण पर्वतमाला के प्रति सकेत करती प्रतीत होती है, जो गजम और सुदूर दक्षिण मे पाण्ड्य देश से पूर्वीघाट की समस्त पर्वत-श्रेणी तक फैली हुयी है। महेन्द्र गिरि या महेन्द्र पर्वत गगा-सागर-सगम और सप्तगोदावरी[6] के बीच मे

---

[1] रामायण VI, 26, 30.

[2] रामायण, आरण्यकाण्ड, 64, 10-14.

[3] मार्कण्डेय पुराण, पृ० 289, टिप्पणी।

[4] स्टडीज इन इडियन ऐंटिक्विटीज, पृ० 133.

[5] किष्किन्ध्या काण्ड, 41, 18-20; लंका काण्ड, 4, 92-94.

[6] भागवत पुराण, X, 79.

स्थित है। गजम के निकट पूर्वीघाट के एक भाग को आज भी महेंद्र पर्वत कहा जाता है। तिन्नेवल्ली जिले में भी एक महेन्द्रगिरि है।[1] पार्जिटर के मतानुसार केवल महानदी, गोदावरी और वैनगंगा के बीच में स्थित पहाडियों के लिए ही महेद्रगिरि सज्ञा का व्यवहार किया जाना चाहिए, और समवत. इसमें गोदावरी के उत्तर में स्थित पूर्वीघाट के कुछ भाग समिल्लित किये जा सकते है।[2] पार्जिटर के विचारानुसार रामायण और पुराणों में वर्णित महेन्द्रगिरि दो विभिन्न पर्वत-मालाएँ है, किंतु रायचौधरी का विचार है कि रामायण के प्रणेता एव पुराणकारो का आशय एक ही पर्वत-माला से था।[3] कुर्नूल जिले में कृष्णा नदी के किनारे स्थित श्रीपर्वत[4] पुष्पगिरि (कुड्डापा के उत्तर में), वेकटाद्रि (मद्रास से लगभग 72 मील दूर उत्तर-पश्चिम में, उत्तरी अर्काट जिले में तिरुपति या त्रिपटी के निकट तिरुमलाई पर्वत), अरुणाचल (कम्पा नदी पर)[5] और ऋषभ[6] (महाभारत के अनुसार पाण्ड्य देश में) महेन्द्र पर्वत से सबद्ध कुछ लघु पहाडियाँ है।

पूर्वी और पश्चिमीघाट दक्षिण में नीलगिरि नामक एक पर्वत-समूह मे मिलते है। पार्जिटर ने प्राचीन मलय पर्वत को ठीक ही नीलगिरि से कन्याकुमारी तक फैले हुए पश्चिमीघाट के एक भाग से समीकृत किया है। कावेरी के आगे, पश्चिमीघाट का दक्षिणी प्रसरण, जिसे आजकल त्रावणकोर पहाडी कहा जाता है, वास्तव में मलयगिरि का पश्चिमी छोर है। क्रमश हर्षचरित[7] और चैतन्य-चरितामृत से सिद्ध होता है कि सुदूर दक्षिण में मदुरा तक फैली हुयी महेंद्र पहाडियाँ मलयगिरि से मिलती थी। मलयपर्वत को श्रीखण्डाद्रि और चन्दनाद्रि भी कहते थे।[8] यही पोडिगेई या पोडिगाई है, जिसे टालेमी ने बेट्टिगो (Bettigo) कहा है। मलय कूट या मलयश्रेणी के शिखर पर अगस्त्य ऋषि का आश्रम था।[9] मलय

---

[1] तिन्नेवली डिस्ट्रक्ट गजेटियर, I, पृ० 4.

[2] मार्कण्डेयपुराण, पृ० 305, टिप्पणी।

[3] स्टडीज इन इंडियन ऐंटिक्वटीज, पृ० 108-109.

[4] अग्नि पुराण,CXIII, 3-4; पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, 290, टिप्पणी।

[5] स्कन्द पुराण, अध्याय III, 59-61; IV9.13.21.37.

[6] महाभारत, III, 85, 21; भागवत पुराण, X, 79.

[7] हर्षचरित, VII.

[8] तु० धोयी कृत पवनदूत।

[9] भागवत पुराण XI, 79.

से सबद्ध दर्दुर[1] नामक पहाड़ी है जिसकी पहचान नीलगिरि या पलनी पहाड़ियो से की जा सकती है।

प्राचीन भारतीय भूगोल-वेत्ता महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमत, ऋक्ष, विन्ध्य, और पारिपात्र नामक पर्वत-समूह को कुलचालो की सज्ञा देते थे।[2] प्रत्येक पर्वत को किसी देश या जाति विशेष से सबधित होने के कारण इन्हे कुलाचल कहा जाता था। इस प्रकार महेन्द्र कलिंगो का सर्वोत्कृष्ट पर्वत, मलय पाड्यो का, सह्य अपरान्तों का, शुक्तिमत भल्लाट[3] जनो का, ऋक्ष माहिष्मती[4] के निवासियो का, विन्ध्य आटव्यो और मध्यप्रदेश की अन्य वन्यजातियो का तथा पारिपात्र या पारियात्र निषादो[5] का पर्वत था।

भागवत पुराण[6] मे कुछ पर्वतो का उल्लेख है जिनका प्रत्यभिज्ञान करना कठिन है। वे निम्नलिखित है : सुरस, शत, श्रुग वामदेव, कुण्ड, कुमुद, पुष्प, वर्ष, सहोस्र, देवानीक, कपिल, ईषाण, शनकेशर, देवपाल और सहस्रस्रोत,।

ब. गुफाएँ

सपूर्ण विश्व मे उपलब्ध होने वाली प्रागैतिहासिक गुहाएँ अधिकाशत आंशिक रूप से मानवीय हाथो द्वारा सँवारी गयी प्राकृतिक गुफाएँ है। उनमे से कुछ मे उपकक्ष बने हुए है और बहुतो की दीवा पे प्राकृतिक विषयो और पशुओ के चित्रों से अलकृत हैं। ये गुफाएं मनुष्यो के लिए जीवन और मृत्यु के अवसर पर आश्रयस्थली के रूप मे काम आयी है। इन गुफाओ मे ही हमारे दूरस्थ पूर्वजो ने हमारी सस्कृति और सभ्यता को विभिन्न रूपो मे विकसित किया। पूर्वकालीन बौद्धग्रंथो मे प्रथम बार धार्मिक एकात स्थलो के रूप मे इन गुफाओ का उल्लेख किया गया है। उपनिषदो मे वर्णित 'गुहा' धार्मिक एकातवास का स्थान नही वरन् हृदय की गुफा का द्योतक है। वन, उन्मुक्त स्थान, सडके, वृक्षो की छाया, विजन घर, श्मशान और गिरि गुहाएँ तापसो के अतिरिक्त मार्गीय पलायन-

---

[1] महाभारत, II, 52, 34; वही, XIII. 165, 32; रामायण, लंकाकाण्ड, 26, 42; रघुवंश IV, 51.

[2] मार्कण्डेय पुराण, 57, 10.

[3] महाभारत, II, 30, 5 और आगे।

[4] हरिवंश०, 38, 19.

[5] रायचौधरी, स्टडीज इन इडियन ऐंटिक्विटीज, पृ० 105-106.

[6] स्कन्द०, V, अध्याय 20.

वादियो, संन्यासियो और परिव्राजको के अस्थायी आवासों और एकान्तवास के स्थलो के रूप में महत्त्वपूर्ण हो गये। उन गुफाओं ने संन्यासियो के चिंतन के लिए उचित स्थानो का काम किया। ये गुफाएँ सचमुच शीत-ताप, वायु और धूप, वन्य-पशुओ और वर्षा के सुरक्षा का साधन थी।[1]

प्राचीन गुफाएँ और कदराएँ अधिकाशत राजगृह नामक प्राचीन नगर के चतुर्दिक् स्थित पहाडियो से सबद्ध थी। उनमे से केवल एक कौशाम्बी के समीप स्थित थी। राजगृह की गुफाओ और कदराओ मे इन्द्रसाल-गुहा और सप्तपर्णी गुफाएँ सबसे अधिक विख्यात है। विनय पिटक के अनुसार मानवीय हाथो के स्पर्श द्वारा सँवारी या मानवीय बुद्धि द्वारा सज्जित किये जाने के बाद कोई भी प्राकृतिक गुफा 'लेण' कही जा सकती है। प्राचीन गुफाओ को गुहा-शिल्प के उदाहरणो के रूप मे ग्रहण करना कठिन है। भारतीय गुफाओं को अशोक के समय से शैल्पिक महत्त्व मिला। उडीसा के राजा खारवेल के समय तक यह महत्त्व निरतर बना रहा। गया नगर से लगभग 20 मील उत्तर खल्तिक या बराबर पहाडियो मे अशोक द्वारा आजीविको को निवेदित चार, नागार्जुनि पहाडियो मे दशरथ द्वारा प्रदत्त तीन तथा उदयगिरि एव खण्डगिरि की युगल पहाडियो मे जैन श्रमणो के लिए समर्पित सभी गुफाओ का उद्देश्य वर्षा मे आवास प्रदान करना था। उनमे से कुछ गुफाएँ मध्ययुग मे दक्षिण भारत मे समाधि के रूप मे प्रयोग की जाने लगी थी। आन्ध्रवशीय सातकर्णियो के समय से भारतीय गुफाएँ विहार और चैत्यो के रूप मे विकसित होने लगी। यह उक्ति कार्ले, भाजा, अजन्ता एलोरा, औरगाबाद, एलीफेंटा ओर बाघ की गुफाओं के विषय मे चरितार्थ होती है। एलोरा का कैलास-मदिर शिला मे तराशा गया एक भव्य मन्दिर है जिसका विकास धार्मिक गुहा-मदिरो की परपरा मे हुआ। भारतीय गुफाओ की तुलना मे लका के 'लेण' जिनके लिए सही अर्थो मे 'गुहा' सज्ञा का प्रयोग उपयुक्त नही है, मानवीय हाथो द्वारा केवल स्पृष्ट और अनगढ ढग मे सँवारी गयी शिलाओं के तिरछे ढालो के अतिरिक्त और कुछ नही है। कुछ महत्त्वपूर्ण भारतीय गुफाओ का सक्षिप्त विवरण देना उपयुक्त होगा।

इन्दसाल गुहा

बुद्धघोष[2] की व्याख्या के अनुसार इस गुहा का नामकरण इसके प्रवेशद्वार पर

---

[1] **विनय चुलवग्ग, VI, 1, 3-4.**

[2] **सुमंगलविलासिनी, III, 697.**

स्थित इदसाल वृक्ष के आधार पर किया गया था। भरहुत के एक प्रतिमा-चित्र में इस वृक्ष के साथ गुहा का भी अकन किया गया है। कालातर मे यह इद्रशैलगुहा के नाम से भी विख्यात हुयी, क्योकि स्पष्टतः यही वह स्थल था जहाँ सकपञ्ह सुत्त नामक प्रसिद्ध पालि-प्रवचन दिया गया था जिसमे देवराज इन्द्र या सक्क ने अपने प्रश्नो का सतोषप्रद उत्तर पाने के लिए बुद्ध का साक्षात्कार किया था। दीघ निकाय मे हम देखते है कि इस गुफा की स्थिति अबसड ग्राम (आम्रवन) के उत्तर मे थोडी दूर पर स्थित वेदियक पर्वत मे बतलायी गयी है।[1] वेदियक पर्वत को अब राजगृह नगर (वर्तमान राजगिर)[2] मे छह मील दूर स्थित गिरयक पर्वत से समीकृत किया जाता है। बुद्धघोष के अनुसार यह दो पहाडियो के मध्य से पहले ही स्थित एक गुहा थी जिसके द्वार पर एक इन्द्रसाल वृक्ष था। वह विशेष पहाडी जिसमे यह सबद्ध थी, वेदियक या वेदिय कही जाती थी क्योकि यह वेदिकाकार नीली-चट्टानो से परिवृत्त थी।[3]

पालि-ग्रथो[4] को देखने मे ज्ञात होता है कि जब बुद्ध ने इस गुहा मे पदार्पण किया, तब यह गुहा पहले असमतल थी, समतल हो गयी, जो सकीर्ण थी, चौडी हो गयी और जो अधकारयुक्त थी, प्रकाशमय हो गयी---जैसे देवताओ की दिव्य शक्तियो द्वारा यह सब हुआ हो। अलौकिकता के इस तत्त्व का पूर्ण समाधान बुद्धघोष ने यह बतला कर किया है कि यह गुफा एक चित्रमय गुहा-वास के रूप मे परिवर्तित कर दी गयी थी जिसके चारो ओर दरवाजो एव खिड़कियो से युक्त एक दीवाल थी, जिसके ऊपर 'चूनम' का पलस्तर था और जो बेलबूटो एव पुष्पीय चित्रो से अलकृत थी।[5] भरहुत के गोलाकार चित्र मे इसे एक पहाडी गुफा के रूप मे चित्रित किया गया है, जिसकी फर्श चट्टानी और भीतर मे डाटदार और मुक्त मुँहवाला एक महाकक्ष है। भीतर की ओर इसमे पालिश की हुयी है। इसके ऊपर इंद्रसाल वृक्ष प्रदर्शित किया गया है। इसमे बदर धानीय-शिलाओ पर बैठे हुए, और चयन की गयी शिलाओ के मध्य से दो रीछ झाँकते हुए प्रदर्शित किये गये है।[6] बोध-गया की पाषाण वेदिका पर इस गुहा का मुख खुला हुआ

---

[1] दीर्घ निकाय, II, 263-4.

[2] कनिघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रेफी ऑव इंडिया, पृ० 540-41.

[3] सुमंगलविलासिनी, III, 967.

[4] दीघ निकाय, II, 269-70.

[5] सुमंगलविलासिनी, III, 697.

[6] कनिघम, स्तूप ऑव भरहुत, XXVII, 4, पृ० 88-89.

प्रदर्शित किया गया है और इसके भीतर एक महराबदार महाकक्ष[1] है जो एक बौद्ध-वेदिका से घिरा हुआ है। पालि-ग्रंथों में दिये गये विवरण से यह अनुमान लगाना कठिन है कि इस गुहा को कभी किसी मानवी हाथ ने सँवारा होगा।

पिप्फलि गुहा

इस एकाकी गुहा का नामकरण इसके प्रवेशद्वार पर स्थित पिप्फलि[2] या पिप्पलि वृक्ष के आधार पर किया गया है। यह गुहा थेर महाकस्सप का प्रिय स्थान थी।[3] इस गुहा का प्रयोग एकांत चिंतन के लिए किया जाता था।[4] फा-ह्यान के अनुसार दोपहर के भोजन के पश्चात् मौन-चिंतन के लिए महात्मा बुद्ध इस शैल-गुहा में निरंतर आते रहे।[5] चीनी यात्री इसे पिप्फल गुफा कहते थे, और मंजुश्रीमूलकल्प के लेखक ने इसे 'पैपल गुहा' की संज्ञा दी है।[6] इस गुहा की स्थिति विवाद का विषय है। अभी तक यह सिद्ध करने के लिए कोई साक्ष्य नहीं है कि यह गुफा कभी किसी मानवीय हाथ द्वारा सज्जित की गयी थी।

सत्तपण्णि गुहा

यह सत्तपण्ण गुहा (सप्त-पर्ण) नाम से भी विख्यात थी। स्पष्टत इसका नामकरण, इसके परिज्ञान में सहायक सप्तपर्णी लता के आधार पर हुआ है। वेभार या वैहार पर्वत से संबंधित सभी अनुश्रुतियाँ—महावस्तु[7] और चीनी यात्री[8] निश्चित रूप से इसकी अवस्थिति उक्त पहाड़ी के उत्तर में बतलाते हैं। बाद के विवरण में इस विशाल गुहा को प्रथम बौद्ध संगीति का स्थान बताया गया है।

---

[1] बरुआ, गया ऐंड बुद्धगया, II, चित्र सं० 55, 73, 73 A

[2] उदानवण्णना (स्यामी संस्करण), पृ० 77.

[3] उदान०, I, पृ० 4.

[4] धम्मपद कामेंट्री, II, 19-21.

[5] लेग्गे, फा-ह्यान, पृ० 85.

[6] पटल 1 iii पृ० 588; मगधानं जने श्रेष्ठे कुशाग्रपुरी वासीनम पर्वतं तत्स-मीपन्तु वराहं नाम नामतः। तत्रासौ ध्यायते भिक्षुः गुहालिनोऽथ पैपले।

[7] जिल्द 1, पृ० 70.

[8] लेग्गे, फा-ह्यान, पृ० 85; वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ, II, 160.

दूसरी ओर, विनय पिटक से ज्ञात होता है कि सगीति की सत्रावधि मे इसके पाँच सौ प्रतिनिधियो के लिए राजगृह और उस समय प्राप्त आवासो, विहारो और कदराओ मे रुकना अपेक्षित था। हमे यह भी बतलाया गया है कि इन आवासो की मरम्मत भी करायी गयी थी, जिससे ये वर्षाऋतु मे आश्रय-स्थलो के रूप में प्रयोग के योग्य हो जाते थे। सिहली ग्रथो के अनुसार केवल सप्तपर्णी गुहा की ही मरम्मत इस उद्देश्य से करायी गयी थी। इस गुहा की स्थिति अब भी संदिग्ध है। फा-ह्यान ने इसको पिप्ल या पिप्फल गुहा से लगभग एक मील पश्चिम में स्थित बतलाया है।[1] कनिंघम ने इसे वैहार पर्वत के दक्षिण की ओर स्थित सोन-भाण्डार-गुहा से समीकृत किया है।[2] इस समीकरण की पुष्टि पालि साक्ष्य दीघ निकाय[3] से होती है जिसमे इस गुफा को इसिगिलि (ऋषिगिरि) के निकट स्थित बतलाया गया है। यद्यपि उक्त पालि वृत्तात मे इस गुहा को वैहार पर्वत मे सबद्ध और इसी के समीप एक ओर स्थित (वेभारपास्से) बतलाया गया है किंतु यह निश्चित रूप मे नही कहा गया है कि उक्त गुहा किस ओर स्थित थी। वर्तमान स्थिति मे भी सोन-भाण्डार-गुहा सगीति के लिए आदर्श स्थान है। उसके अति-रिक्त मानवीय कौशल से निर्मित होने के स्पष्ट चिह्नो से युक्त यह एक सुखकर एव विस्तृत गुहावास है। इतनी अधिक आदर्श स्थिति और सौंदर्ययुक्त अन्य कोई गुहा राजगृह मे नही है।

वराहगुहा

गिज्झकूट पर्वत पर स्थित यह एक प्राकृतिक गुहा (भुकरखात) थी, जो बौद्ध सन्यासियों और परिव्राजको के लिए एक आश्रयस्थल थी। दीघनख नामक परि-व्राजक इस गुफा मे बुद्ध से मिला था।[4] शूकरो के रहने का स्थान होने के कारण स्पष्टत यह वराह-गुफा के नाम से विख्यात हुयी।

पर्वतो मे सभी प्राकृतिक गुफाओ को 'कदरा' कहा जाता था। तिंदुक कदरा

---

[1] **वही, पृ० 84-85.**

[2] **कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रेफी ऑव इंडिया (एस० एन० मजूमदार संस्करण), पृ० 531.**

[3] **महापरिनिव्वानसुत्तान्त (दीघ० II)।**

[4] **मज्झिम निकाय, I, दीघनख सुत्त; मललसेकर, डिक्शनरी ऑव पालि प्रापर नेम्स, II, 1271-1272; पपंचसूदनी, III, पृ० 203, सारत्थप्पकासिनी, III, पृ० 249.**

अपने निकट स्थित तिंदुक वृक्ष के आधार पर लक्षित की जाती थी।[1] तपोदस या उष्ण जल के स्रोतो के समीप स्थित होने के कारण तपोद कदरा का नामकरण हुआ था। गोमत कदरा का नामकरण किस आधार पर हुआ यह अज्ञात है। कपोत-कदरा निश्चय ही कबूतरो का एक प्रिय स्थान थी।[2] उदान[3] ने इसे राजगृह से कुछ दूर पर, जब कि युवान-च्वाङ ने इसे इन्द्रशैल गुहा से लगभग 9 या 10 मील उत्तर-पूर्व मे स्थित बतलाया है।[4]

पालि-धर्मग्रथो मे पिलक्ख वृक्ष (लहरदार पत्तियोंवाला अजीर का वृक्ष--प्लक्ष (Ficus Infectoria) द्वारा लक्षित की जाने वाली पिलक्ख गुहा का उल्लेख प्राप्त होता है। यह वर्षा-जल से धरती मे बना हुआ एक गड्ढा अथवा खोदकर बनाया जाता है। वर्षा ऋतु मे वहाँ एकत्रित हुए जल के कारण यह एक तालाब जैसा प्रतिभासित होता था जो गर्मी मे सूख जाता था। मन्दक नामक कोई परिव्राजक अपने 500 अनुगामियो के साथ ग्रीष्म ऋतु मे इसके ऊपर स्तभो या थूनो पर आश्रित, अस्थायी छत डालकर उसमे रहा करता था।[5]

अब हम शिला मे काटकर बनायी गयी गुफाओ का परिचय देगे, जिनमे से कुछ उडीसा और कुछ दक्षिणी एव पश्चिमी भारत मे स्थित है। पूर्वी भारत मे स्थित गुफाएँ, कलिंग के महान् जैन सम्राट् खारवेल, उनकी मुख्य राजमहिषी, पुत्र तथा अन्य राज्याधिकारियो एव कर्मचारियो से सबधित है। पश्चिमी एव दक्षिणी भारत मे स्थित गुफाएँ सातकर्णि राजाओ के नाम से सबद्ध है। प्राचीन कौशाम्बी से समीकृत, कोसम से लगभग दो मील पश्चिम मे स्थित पभोसा की गुहा को प्राय. इसी युग मे रखा जा सकता है। इसे अहिच्छत्र के राजा आषाढसेन ने काश्यपीयो के तत्कालीन एक धार्मिक सप्रदाय को समर्पित किया था।

उदयगिरि और खण्डगिरि की युगल पहाडियो मे स्थित जैन गुफाओ के दाताओं के धार्मिक विश्वासपरक साक्ष्य, समर्पण अभिलेखो और खण्डगिरि की दो गुफाओ मे तीर्थंकरो की मध्ययुगीन धार्मिक प्रतिमाओ से प्राप्त होते है। सप्रति कोई

---

[1] इस वृक्ष का ठीक-ठीक परिज्ञान नहीं किया जा सकता। यह डायोस्पाइरास इम्ब्रायोप्टेरी या स्ट्राइक्नास नक्स वॉमिका' (Diospyrus empryopteri or Strychnos Nux Vomica) हो सकती है।

[2] उदानवण्णना (स्यामी संस्करण), पृ० 307.

[3] IV, 4.

[4] वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, II, पृ० 175.

[5] पपंचसूदनी, (सिंहली संस्करण), II, पृ० 687.

35 उत्खनित गुहाएँ दृष्टिगत होती हैं। शिल्प एव कला के दृष्टिकोण से खण्ड-गिरि की अनन्तगुफा और उदयगिरि की राणीगुम्फा, गणेशगुम्फा, और जय-विजय गुफाएँ अत्यधिक उल्लेखनीय है। स्वय खारवेल द्वारा खुदवायी गयी हाथी-गुम्फा कृत्रिम रूप से काटकर बढायी गयी एक प्राकृतिक कदरा है। यह किसी बडे शिला-खड का चौडे मुखवाला एक बकिम ढाल है। इसके बाईं ओर दोमजिली मचपुरी गुहा स्थित है। निचली मजिल मे खमोयुक्त एक बरामदा है जिसके पीछे काटकर बनाये गये कमरे है। इसके ऊपरी मजिल उसी नमूने और आकार की है। पहली मजिल के बरामदे मे एक गोलाचित्र है, जिसमे उडता हुआ कोई देव-दूत चित्रित किया गया है। ऊपरी मजिल मे एक ओर ढालू छतवाला एक बरामदा था जो परिकक्ष का काम देता था। किसी पूरी लेण मे अग्रभाग मे खभो या बिना खभोवाला एक बरामदा (Facade) होता था, जिसे 'पासाद', पीछे और एक ओर काटकर बनाये गये कमरे जिन्हे 'कोरा', ओर एक ओर ढालू छत होती थी, जिसे 'जिया' कहते थे—हुआ करते थे। पहली मजिल के बाएं पार्श्व मे राजकुमार वडुख द्वारा प्रदत्त दो गुफाएँ है। प्रागण के सामने एक दीवाल बनी हुयी है। हाथीगुम्फा के निकट कई और छोटी गुफाएँ है। उनमे से एक 'व्याघ्रगुम्फा' नाम से पुकारी जाती है, जो मुँह फुलाये हुए व्याघ्र की आकृति के समान लगती है। सर्पगुम्फा नामक एक दूसरी गुफा के ऊपरी सिरे पर साँप का फन चित्रित किया गया है। प्राय इन्ही कारणो से दो अन्य गुफाओ का नामकरण अजगरगुम्फा और भेकगुम्फा किया गया है। उदयगिरि पहाडी के ढाल पर किसी इमारत की तरह लगने वाली छोटी हाथीगुम्फा नामक एक मजिली गुफा है, जिसके प्रागण मे हाथियो के दो छोटे चित्र बने हुए है। खण्डगिरि वर्ग की अनन्तगुफा मचपुरी गुफा के नमूने पर परिकल्पित एक एकमजिली गुफा है। गुफा के दरवाजो के अलकरण-युक्त महराबो मे विविधि उच्चित्र बने हुए है। उदयगिरि की राणीगुम्फा अतिशय कलापूर्ण ढग से अलंकृत है।

नासिक गुफाएं, जिन्हे पाण्डुलेण कहा जाता है, सडक से लगभग 300 फीट ऊँचाई पर स्थित है। उनका निर्माण हीनयान बौद्धो के भद्रयानिक संप्रदाय के लिए किया गया था। यहाँ हमे प्रायः तेइस गुफाएं मिलती हैं। उनमें सर्वाधिक प्राचीन चैत्यगृहा है। पहली गुफा एक अपूर्ण विहार है। दूसरी गुहा में बाद मे अनेक परिवर्तन हुए है। इसमे दो काष्ठ-स्तम्भ और एक बरामदा है। तीसरी गुफा एक बडा विहार है जिसमे अनेक कोठरियाँ और एक महाकक्ष है। साँची के तोरण की भाँति इसका प्रवेशद्वार शिल्प-सज्जित है। यह गौतमीपुत्र सातकर्णि द्वारा खुदवायी गयी थी। दसवी गुफा भी विहार है। इसमे खमेदार एक बरामदा

है। सत्रहवी गुफा मे 23 फीट चौडा और 32 फीट गहरा एक महाकक्ष है। दो केंद्रीय अठपहल खभो के मध्य स्थित , सामने से आधी दर्जन सीढ़ियाँ चढ़कर इसके बरामदे मे पहुँचते है। इसकी पिछली दीवाल मे खडे हुए बुद्ध की एक प्रतिमा है।

बबई और पूना के मध्य बोरघाट पहाडियो मे कार्ली और भाजा के सुप्रसिद्ध बौद्ध गुहा-मदिर स्थित है। इनमे उत्कीर्ण अभिलेख सिद्ध करते है कि ये नहपाण और उषवदात के समय मे समर्पित की गयी थी। कार्ले गुफा के प्रवेशद्वार पर एक स्तभ है जो अशोक के सारनाथ-स्तभ की भाँति चारो दिशाओ की ओर मुख किये हुए, खुले हुए मुखवाले चार सिहो की आकृतियो से मडित है। इनमे दाहिनी ओर शिव मदिर है और इसके निकट ही धर्मचक्र के प्रतीकमान चक्र से मडित एक दूसरा स्तभ है। इसमे प्रवेश के लिए एक गलियारे के नीचे तीन दरवाजे है। भाजा की पहली गुफा एक प्राकृतिक कदरा है। दूसरी मे छठे नबर तक सभी गुफाएं सादे विहार है। यहाँ पर एक चैत्य है जा गुहा शिल्प के सर्वोत्कृष्ट प्रतीको मे से एक है। चार खभो पर बौद्ध प्रतीक स्पष्ट रूप से देखे जा सकते है। इसकी छत महराबदार है। इसके सामने अलकृत महराब, दोहरी वेदिकाएँ और अनेक लघु विहार है।

महाराष्ट्र मे औरगाबाद से लगभग 16 मील और दौलताबाद से 10 मील पश्चिमोत्तर मे एलोरा की महत्त्वपूर्ण बौद्ध गुहाएँ स्थित है। इनमें तीन विभिन्न धर्मो का प्रतिनिधित्व मिलता है : दक्षिणी वर्ग की चौदह गुफाएँ -बौद्ध, मध्यवर्ग की ब्राह्मण और सबसे उत्तरी वर्ग मे जैन धर्मो से सबधित गुफाएँ है। बौद्ध वर्ग की गुफाओ मे एक वास्तविक मदिर और विशाल चैत्य है, जो अजता के दो महा-कक्षो (सख्या 19 एव 26) की ही तरह एक विशाल चैत्य मदिर है। कुछ बौद्ध गुफाओ मे परवर्ती महायान धर्म के कुछ स्पष्ट चिह्न सनिहित है। तीसरी एक विहार गुहा है। पाँचवी गुफा एक विशाल विहार की तरह है। इनमे ब्राह्मण और जैन धर्मों से सबंधित गुफाएँ भी है। दसवी एक सुदर चैत्य गुफा है। इसका अग्रभाग अतिशय अलकृत है और इस पर की गयी नक्काशियाँ अतीव सुदर है। ग्यारहवी और बारहवी गुफाओं की दीवालो मे कोठरियाँ बनी है और इनमे महायान धर्म के चिह्न दिखाई पडते है।

मध्यप्रदेश मे धार के पश्चिम मे लगभग चालीस मील दूर बौद्ध गुफाओ का एक रोचक समूह बाघ की गुहाएँ स्थित है। इन गुफाओं का उत्खनन गुप्त काल मे किया गया था। नर्मदा की घाटी से उत्तर मे उन्नत एक पहाडी की ढालू-चट्टान मे तराशी गयी ये सभी विहार गुफाएँ है। इन गुफाओ मे यत्र-तत्र प्राप्त बुद्ध की

प्रतिमाएँ स्पष्टतः बाद के समय की है। इनका शिल्प नासिक की गुफाओ के समान नही है।

महाराष्ट्र में औरगाबाद के उत्तर-पश्चिम मे 60 मील दूर पर, बौद्ध शैल-गुफाओं का एक अन्य उल्लेखनीय समूह, अजता की गुफाएँ स्थित है। सभी छब्बीस गुफाओ का निर्माण तथा अलकरण एक साथ एक ही समय पर नही किया गया था। उनमे से केंद्रीय समूह की सात गुफाएँ प्रारभिक शैली की है, जबकि शेष गुफाओ मे प्राचीन काल की सरलता के एकदम विपरीत अलकरण की प्रचुरता परिलक्षित होती है। वी० ए० स्मिथ के अनुसार अजता के अधिकाश चित्रों को अवश्यमेव छठी शताब्दी ई० अर्थात् महान् चालुक्य नरेशो के काल मे रखा जा जा सकता है। 9वी और 10वी गुहाएँ प्राचीनतम है तथा ये दूसरी और पहली शताब्दी ई० पूर्व मे बनायी गयी होंगी। अजता की गुफाएँ चैत्य और विहार शैली की है।

डॉ० फोगेल के अनुसार औरगाबाद की गुफाएँ विहार गुफा-मदिरो के निर्माण शिल्प की दीर्घ-कालीन-विकास-परपरा की चरम सीमा का प्रतिनिधित्व करती है। अपवाद स्वरूप प्राचीन शैली के एक भग्न चैत्य-मदिर को छोडकर ये अज्ञात गुहा-मठ, कालक्रम की दृष्टि, स्पष्टत: अजता की सबसे बाद की गुफाओ के सम-कालीन है। अपनी बढती हुयी प्रधानता के कारण, बुद्ध की अगणित प्रतिमाओं के पार्श्व मे स्थापित की गयी बोधिसत्वों की प्रतिमाएँ इन परवर्ती गुफाओं की एक उल्लेखनीय विशेषता है।

अपोलो बदर से लगभग छह मील उत्तर-पूर्व मे स्थित एलीफैंटा की गुफाओ पर बौद्ध और ब्राह्मण प्रभाव परिलक्षित होता है। इसके प्रमुख महाकक्ष की दीवाल पर त्रिमूर्ति (ब्राह्मण धर्म के त्रिदेव की मूर्तियाँ) नक्काशी गयी है। एक गुफा मे बौद्ध चैत्य बना हुआ है।

यद्यपि अब इन गुफाओं का प्रयोग उन उद्देश्यो से नही किया जाता जिनके लिए ये बनवायी या प्रदान की गयी थी, किन्तु अब भी उनमे भारत के गौरवशाली अतीत की पूरी स्मृतियाँ सँजोयी हुयी है।

स-नदियाँ

भारत की नदियाँ अमरूय हैं, जो वास्तव मे देश का जीवन-रक्त जल का वहन ओर वितरण करने वाली धमनियाँ है। कभी पर्वतमालाओ मे होकर घाटियाँ बनाती हुयी कभी धरती पर और बहुधा अपने तल को बदलती हुयी, ये नदियाँ विविध दिशाओ मे समतल की ओर बहती है। वे विभिन्न तरगिणी और कल-

नादिनी सरिताओं के रूप में बहती है और झरने, झील तथा द्वीप बनाती है।[1] भारत की समृद्धि एक बड़ी सीमा तक उसकी नदी-व्यवस्था पर निर्भर करती है। इन नदियों के तटों और उनके निकटवर्ती क्षेत्रों में हम जातीय सन्निवेशों और शक्तिशाली राज्यों, समृद्धनगर और उर्वर ग्राम, धार्मिक मंदिर और शांत तपोवनों का विकास देख सकते है। भारत की उर्वरता बहुत कुछ इसकी नदियों के कारण है और उनमें से अनेक नदियाँ वाणिज्य और व्यापार का मुख्य पथ भी रही है।

मार्कण्डेयपुराण (LVII-30) में स्वाभाविक रूप से कहा गया है—"सभी नदियाँ पवित्र है, सभी समुद्र की ओर बहती है, संसार के लिए सभी मातृवत् है और सभी पापनाशिनी है।" भागवत पुराण (स्कन्ध, V, अध्याय 20) में कुछ ऐसी नदियों का उल्लेख किया गया है, जिनका समीकरण कठिन प्रतीत होता है। वे निम्नलिखित है—अनुमती, सिनिवाली, कुहू, रजनी, नन्दा, मधुकुल्या मित्रविन्दा, मंत्रमाला, आयुर्दा, अपराजिता, श्रुतविन्दा, सहस्रश्रुति और देवगर्भा।

यह एक रोचक तथ्य है कि वैदिक युग में ही, शनै शनै बढ़ते हुए आर्यक्षेत्र को सप्तसिन्धु, सरस्वती, गंगा या नदियों के नाम से वर्णन करने की प्राय एक परंपरा सी बन चुकी थी। इस प्रकार ऋग्वैदिक आर्यो के संपूर्ण प्रदेश को ऋग्वेद में 'सप्तसिन्धव' (सात नदियों यथा सिन्धु तथा एक अन्य नदी, सरस्वती, कुभा या आम् सहित पंजाब की पाँच नदियों का देश) कहा गया है। जब आर्य-क्षेत्र का विस्तार संपूर्ण भारत में हो गया, तब गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, सिन्धु और कावेरी[2] नामक सात नदियों द्वारा उसे द्योतित किया जाने लगा। बौद्ध मध्यप्रदेश की सात पवित्र नदियों के अंतर्गत बाहुका (बाहुदा), अधिकक्का, गया (फल्गु) सदरिका, सरस्सती, पयाग (गंगा-यमुना का संगम) और बाहुमती की गणना की गयी है।[3] एक अन्य पाठ में गंगा, यमुना, सरभू (सरजू), सरस्वती, अचिरवती, मही और महानदी के नाम उल्लिखित है।[4]

कालिदास ने जो कुछ भी अपने 'रघुवंश' में कहा है, उस पर विचार करना रोचक होगा। सुदूरपूर्व में पूर्वसागर,—वर्तमान बंगाल की खाड़ी—स्थित था

---

[1] ऋग्वेद, X, 75-4.

[2] गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा-सिन्धु-कावेरी-जलेऽस्मिन् सन्निधिम कुरु॥

[3] मज्झिम निकाय, I, पृ० 39.

[4] विसुद्धिमग्ग, I, पृ० 10.

(रघुवंश IV, 32)। इसके तट पर गंगा की निचली घाटी मे रहनेवाले प्राच्य जन सुह्म और बग स्थित थे (वही, IV. 35-36)। यह हिंद महासागर (महोदधि) तक प्रसरित था, जो सुदूर दक्षिण तक फैला हुआ था। इस प्रकार भारतीय प्राय-द्वीप के प्राय. तीनो दक्षिणी छोरो को परिवृत्त करने और इसको विशाल बनाते हुए—यह सुदूर दक्षिण मे फैले हुए हिंद महासागर (महोदधि) तक विस्तीर्ण था। (प्राप तालीवनस्यामेमूपकण्ठम महोदधे—रघुवंश, IV, 34)। सुदूर दक्षिण और दक्षिण-पूर्व में समुद्र तट पर ताड के वृक्षो की विस्तृत वनराजि थी, (वही, IV, 34)। दक्षिण की ओर फैले हुए पूर्वी समुद्रतट पर कलिंग और पाण्ड्य नामक भारत की कुछ सर्वशक्तिशाली जातियाँ रहती थी, (वही, IV, 49)। दक्षिण-पश्चिमी समुद्रतट पर केरल जन रहते थे (वही, IV, 54)। सपूर्ण पश्चिमी समुद्र तट अपरान्त प्रदेश कहा जाता था।

(I) सिन्धुनदी-समूह

ऋग्वैदिक काल से ही भारतीय (Indus) 'इण्डस' को सिन्धु नदी के नाम से जानते थे। इसे सम्भेद और सगम भी कहा जाता था। इसकी गणना दिव्य-गगा की सातधाराओं मे की गयी है। अपने उद्गमस्थल पर सिन्धु दो नदियो की एक सयुक्त धारा है जिनमे एक धारा तो कैलास पर्वत के उत्तर पश्चिम से निकलकर पश्चिमोत्तर दिशा मे प्रवाहित होती है और दूसरी कैलास के उत्तरपूर्व मे स्थित एक झील से निकलकर पहले पश्चिमोत्तर दिशा मे और बाद मे दक्षिणपश्चिम की ओर बहती है। इस सगमस्थल से प्रारम्भ होकर पश्चिमोत्तर मे एक लबी दूरी तय करने के पश्चात् कराकोरम पर्वत-माला से यह दक्षिण की ओर मुड जाती है।

इस स्थान से दक्षिण पूर्व दिशा मे अरब सागर तक प्रायः एक टेढी-मेढी धारा के रूप मे प्रवाहित होती हुयी, यह अपने मुहाने पर दो सुप्रसिद्ध डेल्टाओ का निर्माण करती है। प्लिनी को ज्ञात सिन्धु-समूह मे, सिन्धुसहित अन्य उन्नीस नदियाँ समिलित थी, जिनमे अपनी चार सहायक नदियो सहित झेलम (Hydaspes) सबसे अधिक विख्यात थी। सामान्यतया सिन्धु नदी भारत की पश्चिमी सीमा मानी जाती थी।[1] एरियन हमे सूचित करता है कि सिन्धु नदी कई स्थलो पर झीलो की भाँति फैली हुयी थी, जिसके परिणामस्वरूप समतल धरातल पर उसके तट एक दूसरे से बहुत दूर दिखाई देते थे। सिन्धु उत्तरापथ की प्रसिद्ध सबसे महती नदी थी।

[1] मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 28, 43.

इसके आधार पर सिन्धु-नदी समूह का नामकरण किया गया है। वैदिक आर्यों की दृष्टि मे यह एक अद्वितीय नदी थी, जब कि मेगस्थनीज़ और अन्य ग्रैको-लैटिन लेखको की दृष्टि मे गगा के अतिरिक्त अन्य कोई नदी इसके समान नही थी। ऋग्वेद (X.75) मे कहा गया है कि अपने ओजस् में सिन्धु नदी प्रवाहशील सभी नदियो से बढ-चढ कर है। यह पृथ्वी की प्रपातशील चट्टानो पर से प्रवाहित होती थी और 'गतिशील सरिताओ की राज्ञी' एव अग्रणी थी।

अलबेरुनी के अनुसार चेनाब (चन्द्रभागा) नदी के सगम के पहले तक सिन्धु के केवल ऊपरी प्रवाह को ही सिन्धु नदी कहा जाता था; उस स्थल के नीचे अरोर तक इसे पचनद और अरोर से समुद्र तक के इसके प्रवाह को मिहरन कहा जाता था।[1] धारयद्वमु के बेहिस्तून-अभिलेख मे इसे 'हिन्दु' और वेडीडाड मे 'हेन्दु' (Hindu and Hendu) कहा गया है। सिन्धु नदी के आधार पर उस प्रदेश का जहाँ से यह बहती थी, सिन्धुदेश नामकरण हुआ है।[2]

ऋग्वेद के नदी-स्तुति-सूक्त मे सिन्धु की अनेक सहायक नदियो का वर्णन किया गया है।[3] पश्चिम मे सिन्धु की कुछ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण सहायक नदियो को पहचानना कठिन नही है। कुभा नदी निश्चय ही आधुनिक काबुल नदी है, जिसे एरियन ने कोफेस (Kophes) प्लिनी ने कोफेन (Kophen), टालेमी ने कोआ (Koa), और पुराणों ने 'कुहु' कहा है। पूर्व मे, आधुनिक पजकोरा से समीकृत अपनी दो सहायक नदियो—सुवास्तु या स्वात (एरियन की साओस्तोस नदी, (Saostos) और गौरी (एरियन की गैरोइया नदी, Garroia) तथा एक अन्य नदी जिसे एरियन ने मलमन्तोस कहा है, और जो सभवत इसकी (काबुल) सबसे बडी सहायक नदी कामेह (Kameh) या खोनर (Khonar) से समीकृत की जाती है, को अपने मे मिलाती हुयी यह (काबुल नदी) अटक (सस्कृत, हाटक) के कुछ ऊपर सिन्धु मे मिलती है। वैदिक क्रुमु आधुनिक कुरम नदी है जो ताची नामक अपनी सहायक नदी से आपूरित है। सिन्धु नदी की सहायक गोमती वर्तमान गोमल है। इसकी कुछ अन्य पश्चिमी सहायक नदियाँ है।[4]

---

[1] इंडिया, I, 260.

[2] तु० बील, बुद्धिस्ट रेकार्ड्स ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, पृ० 69; ज० ए० सो० बं०, 1886, II, पृ० 323.

[3] बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 9-10.

[4] अधिक विवरण के लिए बि० च० लाहा की पुस्तक रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 15-16, द्रष्टव्य।

सिन्धु की चार प्रमुख पूर्वी सहायक नदियो मे जो समिलित होकर चन्द्रभागा या चेनाब नाम से बहती है, सबसे पश्चिमी वितस्ता, वितम्सा या झेलम है। दो पहाडी सरिताओ से सगमित होकर चेनाब या चन्द्रभागा किश्तवर के ठीक ऊपर बहती प्रतीत होती है। किश्तवर से रिश्तवर तक इसका प्रवाह दक्षिणोन्मुख है। जम्मू तक बहने के पश्चात् अपने और झेलम के मध्य दोआब बनाते हुए इसका प्रवाह दक्षिण-पश्चिमोन्मुख हो जाता है। यही ऋग्वेद की असिक्णी नदी है; इसी को एरियन ने एकेसिनीज (Akesines), टालेमी ने सन्दबल या सन्दबग (Sandabal या Sandabaga) कहा है। कॉगडा जिले मे बार लाछ दर्रे के विपरीत दिशाओ से चन्द्र और भाग नदियाँ निकलती है। दो सगमित सरिताओ के रूप मे रावी या इरावती, जिसे यूनानी हाइड्राओटीज, (Hydraotis) एड्रीस (Adris) या रोनाडीस (Ronadis) नामा से पुकारते थे, कश्मीर मे छम्बा के दक्षिण-पश्चिमी कोण पर सबसे पहले दिखलायी पडती है। दक्षिण-पश्चिमोन्मुख दिशा मे छम्बा से लाहौर तक प्रवाहशील यह नदी चेनाब या वितस्ता और चन्द्रभागा की सयुक्त धारा मे निकली है। व्यास (विपाशा) रावी के उद्गमस्थल के समीप रोहतग दर्रे पर पीर पजल पर्वतमाला मे निकलती है। हिमालय पर्वतमाला से निकलकर उत्तर-पूर्व और दक्षिण-पूर्व मे बहनेवाली दो सरिताओं के सगमित प्रवाह के रूप मे यह नदी सबसे पहले हमे कश्मीर मे छम्बा के दक्षिणी-पश्चिमी कोण पर दृष्टिगोचर होती है। छम्बा से दक्षिण-पश्चिम दिशा मे बहती हुयी यह नदी कपूरथला के दक्षिण-पश्चिम कोण पर शतद्रु (सतलज) से मिलती है। इसका समीकरण यूनानियो को ज्ञात हाइपैसिस (Hypases) या हाइफैसिस (Hyphasis) नदी मे किया जाता है।

शतद्रु या सतलज का उद्गमस्थल मानस-सरोवर की पश्चिमी झील के पश्चिमी प्रदेश मे है। शतलज, जिसे टालेमी ने जरड्रोस (Zaradros) और प्लिनी ने हेसीड्रस (Hesydrus) कहा है, पूर्व मे सिन्धु नदी की सबसे महत्त्वपूर्ण आप्लाविका है। शिमला पहाडियो और कामेत पर्वत के थोडा पहले यह नदी कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड जाती है, जहाँ से दक्षिण-पश्चिम दिशा मे टेढी-मेढी गति से बिलासपुर मे बहती हुयी उसके उत्तर-पश्चिमी कोण से यह पुन दक्षिण की ओर घूम जाती है और फिर रूपर से उस स्थान तक जहा यह कपूरथला के दक्षिण पश्चिम कोण पर व्यास नदी को आत्मसात करती है, यह पश्चिमाभिमुख होकर प्रवाहित होती है। ये सयुक्त सरिताएँ तब दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है और अलीपुर तथा उच के मध्य चेनाब नदी से मिल जाती है। इन चार या पाँच नदियो की सयुक्त धारा चेनाब नाम से दक्षिण-पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है,

और पंजनद मे सिन्धु नदी से मिलती है। प्राचीन काल मे सिन्ध प्रदेश की सीमा तक इसका एक स्वतत्र प्रवाह था (पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 291, टिप्पणी)।

(II) सरस्वती-दृषद्वती-समूह (मरुभूमि की नदी-पद्धति)

सरस्वती और दृषद्वती उत्तरापथ की दो ऐतिहासिक नदियाँ हैं, जो सिन्धु नदी-समूह से पूर्णत असबद्ध स्वतत्र रूप से प्रवाहित होती है। मनु के अनुमार इन दो पवित्र सरिताओ के मध्य ब्रह्मावर्त्त-प्रदेश स्थित है । पूर्व वैदिक काल की पवित्र सरिता सरस्वती को मिलिन्दपञ्हो मे हिमालय से निकलने वाली नदी कहा गया है। इसका उद्‌गम-स्थल हिमालय पर्वत-श्रेणी मे शिमला पहाडी के ऊपर बताया गया है। दक्षिण की ओर उन्नत धरातल बनाती हुयी यह शिमला और सिरमोर से होकर बहती है। यह पटियाला होकर प्रवाहित होती हुयी, सिरसा मे कुछ दूर राजपूताना के मरुस्थल के उत्तरी भाग मे विनष्ट हो जाती है। सरस्वती के अदृश्य होनेवाले स्थान को मनु ने विनशन कहा है। कही दृश्य और कही पर अदृश्य रहने वाली नदी के रूप मे सरस्वती का ठीक ही वर्णन किया गया है (सिद्धान्त शिरोमणि, गोलाध्याय, भुवनकोष)। थोडी देर के लिए यह चलौर गाँव के समीप बालू मे अदृश्य हो जाती है और भवानीपुर मे पुन प्रकट होती है। बालछापर म यह पुन लुप्त हो जाती है, किन्तु बरावेरा मे फिर प्रकट होती है; पहोआ के निकट इसमे मारकण्डा नदी मिलती है और यह सयुक्त धारा सरस्वती के नाम से ही अत मे सरस्वती के निचले प्रवाह घग्घर या घर्घर मे मिल जाती है। महाभारत[1] मे भी कहा गया है कि अदृश्य होने के पश्चात् सरस्वती नदी तीन स्थानो यथा, चमसोद्‌भेद शिरोद्‌भेद, और नागोद्‌भेद[2] मे पुन प्रकट होती है। आज भी अस्तित्वशाली यह नदी सतलज और जमुना के मध्य बहती है। वैदिक आर्यो को ज्ञान सरस्वती एक ओजवती नदी थी जो समुद्र मे गिरती थी।[3] कात्यायन[4], लाट्यायन[5], आश्वलायन[6] और साख्यायान

---

[1] वनपर्व, अध्याय, 82; नं० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 180 और आगे; पजाब गजेटियर, अम्बाला डिस्ट्रिक्ट, अध्याय 1.

[2] महाभारत, वनपर्व, 82.

[3] मैक्समूलर, ऋग्वेद संहिता, पृ० 46.

[4] XII, 3 20; XXIV, 6 22.

[5] X. 15 1; 18 13; 19 4.

[6] XII 6 2 3.

श्रौतसूत्रों[1] मे इसके तट पर किये गये यज्ञो का बडा महत्त्व और पवित्रता बतायी गयी है।

पुण्यसलिला दृषद्वती यमुना के अधिक निकट बहती है। इसका स्रोत सिरमौर पहाडियो मे खोजा जा सकता है। नहम तक इसका प्रवाह पश्चिम की ओर है और वहाँ से यह दक्षिण की ओर अपना पथ बदल कर अम्बाला और शाहाबाद जिलो मे होकर बहती है। सिरसा मे यह सरस्वती से मिलती हुई प्रतीत होती है। इसके आगे दोनो ही सरिताएँ अदृश्य हो जाती है। पृथूदक नामक प्राचीन नगर (आधुनिक पेहोआ) इसी नदी के तट पर स्थित है। मनुसहिता (II 17) के अनुसार यह नदी ब्रह्मावर्त्त की दक्षिणी और पूर्वी सीमा थी, जब कि इसकी पश्चिमी सीमा सरस्वती नदी थी। महाभारत के वनपर्व मे दृषद्वती और कौशिकी के सगम को अत्यत पुनीत माना गया है। वामनपुराण (34) मे कौशिकी को दृषद्वती की एक शाखा बताया गया है। कनिघम ने दृषद्वती को थानेश्वर के दक्षिण-पश्चिम से बहनेवाली वर्तमान रापि नदी से समीकृत किया है। एल्फिन्स्टन और टॉड के अनुसार यह घग्घर नदी है, जो अम्बाला और सिन्ध मे होकर बहती है। रैप्सन के अनुसार, इसे हम सरस्वती के समानातर प्रवाहित होनेवाली चित्रग, चटाग या चिटाग नदी से समीकृत कर सकते है। ऋग्वेद मे दृषद्वती और सरस्वती के मध्य आपया नामक एक नदी का वर्णन प्राप्त होता है। लुडविग इसे आपगा से समीकृत करने के पक्ष मे है, जो गगा नदी का एक दूसरा नाम है, किन्तु त्सिमर इसे ठीक ही सरस्वती के निकट स्थित बताते है (एल्टिंडिशेज लेबेन, 18)। पिशेल ने इसे कुरुक्षेत्र मे बताया है आपया जहाँ की एक प्रसिद्ध नदी है।[2]

(III) गंगा-यमुना-समूह

गगा भारत की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण पवित्र नदियो में से एक है। प्राचीन बौद्धो को परिज्ञात मध्यदेश की नदियाँ गगा नदी समूह का निर्माण करती है। इसकी सहायक नदियो की सख्या जैसा कि ग्रीक-लैटिन लेखको को ज्ञात थी, उन्नीस थी।[3] यद्यपि वे गगा और सिन्धु को भारत की दो बडी नदियो के रूप मे जानते थे, किंतु गगा को वे सिन्धु से अधिक बड़ी मानते थे। गगा विष्णुपदी,

[1] XIII. 29.

[2] महाभारत, III. 83·68.

[3] मैक्रिंडिल, ऐंश्यंट इंडिया, पृ० 136 और आगे।

जाह्नवी, मन्दाकिनी और भागीरथी आदि विभिन्न नामो से विश्रुत थी।[1] महाभारत मे बिन्दुसर को, जब कि जैनग्रथ जम्बुद्विपपण्णत्ति मे पद्महृद को गंगा का उद्गमस्थल बतलाया गया है। पालि-ग्रथो मे अनोतत्त झील के दक्षिणी मुख को गगा का स्रोत बतलाया गया है। आधुनिक भूगोल-वेत्ताओ के अनुसार भागीरथी सर्वप्रथम गढवाल क्षेत्र मे गगोत्री के समीप दृष्टिगत होती है। देवप्रयाग मे बाई ओर से आकर इसमे अलकनन्दा नदी मिल जाती है। देवप्रयाग से इस सयुक्त प्रवाह को गगा कहा जाता है। देहरादून से हरिद्वार तक इसका अवतरण प्राय वेगपूर्ण है, जिसे गगाद्वार भी कहा जाता है। हरिद्वार से बुलदशहर तक गगा का प्रवाह दक्षिणोन्मुखी, और उसके बाद प्रयाग तक जहाँ यमुना नदी आकर इसमे मिलती है, इसका प्रवाह दक्षिणपूर्वाभिमुखी है। इलाहाबाद के आगे राज-महल तक यह पूर्व दिशा मे और इसके बाद यह पुन दक्षिणपूर्वोन्मुखी होकर बहती है। अलकनन्दा नदी, गगा के ऊपरी प्रवाह का प्रतिनिधित्व करती है। मन्दाकिनी अलकनन्दा की एक सहायक नदी है और इसका समीकरण गढवाल मे केदार पर्वत मे नि सृत होने वाली मन्दाकिनी या कालिगगा से किया जा सकता है। जिस स्थान पर इसमे मन्दाकिनी मिलती है, वहाँ से गगा नदी. गगा-भागीरथी की सज्ञा धारण करती है। फर्रुखाबाद के ठीक पहले गगा मे नुत नामक सहायक नदी मिलती है। फर्रुखाबाद और हरदोई के बीच मे इसमे रामगगा नामक एक अन्य सहायक नदी मिलती है। गोमती (आधुनिक गुम्ती या गोम्ती) वाराणसी (बनारस) और गाजीपुर के बीच गगानदी मे मिलती है। पुराणो मे प्रसिद्ध धूतपापा पूर्वी गोमती की एक सहायक नदी थी। तमसा या पूर्वी टोस आजमगढ़ मे बहती हुयी, बलिया के पश्चिम मे गगा नदी मे मिलती है। गगा की सहायक नदी सरयू छपरा जिले मे गगा मे मिलती है। यह बडी ऐतिहासिक नदी अब घर्घरा (घाघरा) नाम से विश्रुत है। बहराइच जिले मे होकर बहती हुयी कुछ महत्त्वहीन सहायक नदियाँ गोडा जिले मे घर्घरा मे मिलती हैं। आरा जिले की पश्चिमी सीमा पर छोटी गडक नदी घर्घरा (सरयू) मे मिलती है। प्राचीन अयोध्या नगर सरयू-तट पर स्थित था। छोटी गण्डक जिसे हिरण्यवती या अजितवती भी कहते है, गोरखपुर जिले से होकर बहती हुई घाघरा या घर्घरा (सरयू) मे गिरती है। सरयू की बड़ी सहायक नदी अचिरवती बहराइच, गोडा और बस्ती जिलो से बहती हुयी गोरखपुर जिले मे बरहज के पश्चिम मे सरयू या घर्घरा मे मिलती है। ककुत्था, हिरण्यवती या छोटी गण्डक की एक सहायक

---

[1] योगिनीतंत्र, 2, 3, पृ० 122 और आगे; 2. 7. 8, पृ० 186 और आगे।

नदी थी। गण्डकी (आधुनिक गण्डक) गगा की ऊपरी उपनदी है। गण्डक की प्रमुख धारा (प्रमुख गण्डक नदी) आरा जिले मे सोनपुर तथा मुजफ्फरपुर जिले में हाजीपुर के बीच मे गगा मे मिलती है। शतपथ-ब्राह्मण[1] मे वर्णित सदानीरा को कुछ विद्वानो ने गण्डक और अन्य ने ताप्ती से समीकृत करने की चेष्टा की है। कुछ अन्य ने इसे करतोया से समीकृत किया है। महाभारत के अनुसार इसे गण्डकी और सरयू के मध्य स्थित बतलाया गया है। पार्जिटर ने इसे राप्ती नदी से समीकृत किया है।[2] बडी गण्डक, जो गगा की ऊपरी उपनदी है, मुगेर जिले मे घाघरा के पश्चिम मे गगा मे मिलती है। नेपाल मे बाहुमती या बागमती बौद्धो की एक पवित्र नदी है। सात नदियो से इसके सगम पर तीर्थ स्थान स्थित है।[3] कमला नदी गगा की एक उपरली उपनदी है। कौशिकी (आधुनिक कुशी) भागलपुर और पूर्णिया जिले मे होकर बहती है और पूर्णिया जिले मे मानहरी के दक्षिणपूर्व मे गंगा नदी मे मिलती है। रामायण-ख्याति की ऐतिहासिक नदी तमसा (आधुनिक दक्षिण टोंस) ऋक्ष पर्वत मे निकलकर उत्तरपूर्व मे बहती हुयी इलाहाबाद के आगे गगा मे मिलती है। गगा की सबसे बडी निचली सहायक नदी सोन है [जिसे एरियन की सोनोस (Sonos) तथा आधुनिक सोन मे समीकृत किया जाता है] जो जबलपुर मे मेकल पर्वतश्रेणी (मैकाल) से निकलकर उत्तरपूर्व की ओर बघेलखण्ड, मिर्जापुर और शाहाबाद जिलो मे बहती हुयी पटना मे गगा से मिलती है। पाँच सहायक नदिया सोन को आपूरित करती है। एक दक्षिणी उपनदी, पुनपुन्न (आधुनिक पुनपुन) गगा मे पटना के ठीक आगे मिलती है। एक अन्य दक्षिणी उपनदी फल्गु मुगेर जिले मे लक्खीसराय के उत्तर-पूर्व मे गगा मे मिलती है। सकुटि से समीकृत सक्रि नदी मुगेर और पटना के बीच गगा मे गिरती है। पूर्व मे अग और पश्चिम मे मगध की सीमा चम्पा नदी कदाचित् भागलपुर के उपकण्ठ मे स्थित चम्पानगर और नाथनगर के पश्चिम मे स्थित नदी ही है।

गगा नदी को उसके अवर प्रवाह मे पश्चिमी बगाल मे भागीरथी-हुगली और पूर्वी बगाल मे पद्मा-मेघना कहा जाता है। गगा राजमहल और माल्दा के बीच बगाल मे प्रवेश करती है और मुर्शिदाबाद जिले के थोडा इधर ही दो शाखाओ मे बँट जाती है।

---

[1] एगेलिंग, इंट्रोडक्शन टु द शतपथ-ब्राह्मण, सै० बु० ई०, जिल्द XII, पृ० 104.

[2] मार्कण्डेय पुराण, पृ० 194.

[3] स्वयंभू पुराण, अध्याय, V; वराह पुराण, 215.

गंगा की भागीरथी शाखा मे मुर्शिदाबाद जिले मे बसलोई नामक पहली सहायक नदी दाहिनी ओर से मिलती है। अजया नामक एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी बर्दवान जिले मे कटवा नामक स्थान पर भागीरथी मे मिलती है और बर्दवान बीरभूम जिलो के मध्य प्राकृतिक सीमा का निर्माण करती है। भागीरथी के निचले प्रवाह मे दाहिनी ओर से दामोदर नामक सुप्रसिद्ध सहायक नदी मिलती है जो कई धाराओ मे बँटकर मिदनापुर जिले मे हुगली नदी मे मिलती है। दामोदर हजारीबाग जिले मे बगोदर के निकट स्थित पहाडियो से निकलती है और मानभूम तथा सथाल परगना जिले मे बहती हुयी बाद मे बर्दवान और हुगली जिलो मे होकर बहती है। गगा की भागीरथी शाखा की एक अन्य महत्त्वपूर्ण सहायक नदी रूपनारायण बांकुडा, हुगली और मिदनापुर जिलो से बहती हुयी तामलुक के निकट हुगली नदी मे मिलती है। हुगली मे दाहिनी ओर से हल्दी और केशाई नदियो की सयुक्त धाराएँ मिल जाती है। बगाल मे गगा की मुख्य धारा की पहली सहायक नदी पनार नवाबगज के आगे गगा मे मिलती है।

माल्दा जिले मे कमत्री और पूर्णभव पनार की दो सहायक नदियाँ हैं। राजशाही जिले मे आत्रायी (आत्रैयी) और छोटी यमुना परस्पर मिलती है। ये पनार की सहायक नदियाँ भी है। गोलुण्डो मे गगा मे बडी यमुना मिलती है जो पूर्वी बगाल मे बहने वाले ब्रह्मपुत्र के मुख्य प्रवाह के अतिरिक्त और कुछ नही है। इस सयुक्त प्रवाह को अब पद्मा कहते है। यह मेघना के सागरसगम मे फरीदपुर जिले के पूर्व मे मिलती है। फरीदपुर जिले मे पानसा के पहले गगा से निकलने वाली गराई नदी मधुमती नाम मे बहती है और बाकरगंज जिले मे हरिघाटा आरियाल्खाल नदी जो गगा की सहायक नदी है, फरीदपुर कस्बे के आगे पद्मा की दाहिनी ओर से निकलती है, और फरीदपुर की मदारीपुर तहसील तथा बाकरगज जिले मे बहती हुयी खाडी मे गिरती है। आरियालखाल और मधुमती एक छोटी नदी द्वारा जुडी हुयी है जो मदारीपुर कस्बे के थोडा पहले ही आरियाल्खाल से निकलती है और मदारीपुर तहसील मे गोपालगंज के थोडा पहले ही मधुमती मे मिलती है। फरीदपुर जिले के राजनगर मे राजा राजवल्लभ के भवनो एव इमारतो को ध्वस्त करने के कारण पद्मा का निचला प्रवाह कीर्तिनाशा (प्रसिद्ध कार्यों की विनाशक) नाम से विश्रुत हो जाता है।

भागीरथी और पद्मा के अतिरिक्त गगा का जल अनेक अन्य सरिताओं द्वारा समुद्र मे ले जाया जाता है। गंगा के डेल्टा के समुद्रांत छोर ने वनाच्छादित एक विस्तृत दलदली क्षेत्र को घेर कर रखा है जिसे सुन्दरबन कहा जाता है।

गगा की पहली तथा बड़ी पश्चिमी सहायक नदी मुख्य यमुना है, जिसका उल्लेख योगिनीतत्र मे प्राप्त होता है (2-5, पृ० 139-40)। यह हिमालय पर्वतमाला मे कामेत पर्वत के आगे से निकलती है। दक्षिण की ओर गंगा के समानातर बहने के लिए उत्तरी भारत के मैदानो मे प्रवेश करने के पूर्व यह सिवालिक श्रेणी और गढवाल मे बहती हुयी एक घाटी का निर्माण करती है। मथुरा के आगे प्रयाग या इलाहाबाद मे गगा के प्रसिद्ध सगम तक यह दक्षिण-पूर्व दिशा में प्रवाहिती होती है। देहरादून जिले में पश्चिम की ओर से इसमें दो सहायक नदियाँ मिलती है, जिनमें से एक का नाम उत्तरी टॅास है। आगरा और इलाहाबाद के मध्य बाई ओर से इसमे चार सहायक नदियाँ मिलती हैं। इसके तट पर भारत के अनेक तीर्थ-स्थान स्थित है। चीनी यमुना को येन-मौ-ना (Yen-mou-na) कहते है। बौद्धो के अनुसार यह पाँच बडी नदियों मे से एक है। यह शूरसेन और कोशल तथा , और आगे कोशल एव वश मे सीमा का कार्य करती है। यमुनोत्री जो यमुना का स्रोत मानी जाती है कुग्मौली मे आठ मील दूर है। इसकी पहचान यूनानी इरैन्नबोस (Erannaboas) (हिरण्यवाह या हिरण्यवाहु) से की जाती है। स्कन्दपुराण मे वालुवाहिनी नामक इसकी एक सहायक नदी का उल्लेख प्राप्त होता है।

(IV) ब्रह्मपुत्र-मेघना नदी-समूह

आधुनिक भौगोलिक अन्वेषणो के अनुसार ब्रह्मपुर अथवा लौहित्य (रोहित) का उद्गमस्थल मानस सरोवर के पूर्वीक्षेत्र मे है। मानस सरोवर से नम्चा बरवा तक ब्रह्मपुत्र का प्रवाह यथावत् पूर्व की ओर बना हुआ है और नम्चा बरवा मे यह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है और फिर हिमालय-श्रेणी के पूर्वी छोर मे बहती हुयी सदिया नामक उत्तरपूर्वी सीमात जिले मे असम की घाटी मे प्रवेश करती है। सदिया से गारो पहाडियो के पहले तक यह दक्षिण पूर्वाभिमुख होकर बहती है और फिर दक्षिण की ओर बहती हुयी यह गोलुण्डोघाट के कुछ पहले गगा मे मिलती है। दक्षिण तिब्बत की अधित्यका से प्रवाहित होने वाला ब्रह्मपुत्र का प्रवाह त्सागपो (Tsangpo) नाम से विज्ञात है। मानस सरोवर से लगभग 200 मील दूर पर इसमे एक महत्त्वपूर्ण ऊपरी सहायक नदी मिलती है। और आगे इसमे एक अन्य ऊपरी उपनदी मिल गयी है। इसके और आगे, इसमें हिमालय श्रेणी से निकलने वाली तीन अवर सहायक नदियाँ मिलती है। वह बड़ी सहायक नदी जो सदिया जिले मे ब्रह्मपुत्र मे मिलती है उसका नाम लोहित है। बाईं ओर दूसरी महत्त्वपूर्ण सहायक नदी जो लखीमपुर के दक्षिण मे ब्रह्मपुत्र में

मिलती है बड़ी डिहिंग है और आगे बढ़ने पर बाईं ओर पटकई पहाड़ियों से निःसृत दिसरा सिबसागर कस्बे के पश्चिमोत्तर मे, पश्चिमोत्तर और पश्चिम की ओर से बहती हुयी ब्रह्मपुत्र मे मिलती है। लखीमपुर और सिबसागर जिलो के मध्य ब्रह्मपुत्र मजुली नामक एक द्वीप का निर्माण करती है। मणिपुर के उत्तर मे नागा पहाडियो से निकलने वाली धनश्री नामक सहायक नदी ब्रह्मपुत्र मे मिलती है और आगे, बाई ओर ब्रह्मपुत्र मे कलग की दो सरिताएँ इसकी सहायक नदियो के रूप मे नवगाँव जिले मे मिलती है। तेजपुर के पहले और आगे दाहिनी ओर से दो नदियाँ ब्रह्मपुत्र मे मिलती है। गोलपारा जिले मे दामरा के कुछ पहले गारो पहाडियो से बहनेवाली कृष्णाई ब्रह्मपुत्र मे मिलती है। दाहिनी ओर से ब्रह्मपुत्र मे मानस नामक बडी उपनदी मिल जाती है।

गोलुण्डोघाट के कुछ पहले बडी यमुना से सगमित होने के पश्चात् गगा पद्मा का नाम धारण कर लेती है। यह यमुना पूर्वी बगाल मे होकर बहने वाली वर्तमान ब्रह्मपुत्र नदी की मुख्यधारा के अतिरिक्त और कुछ नही है जब कि इसका प्राचीन प्रवाह मेमनसिंह कस्बे मे होकर, असम की सुरमा, बराक और पुइनी नामक तीन नदियों की सयुक्त धारा की प्रतिनिधित्व मेघना मे मिलता है।

ब्रह्मपुत्र की प्राचीनधारा और मेघना का सगम मेमनसिह जिले मे किशोर गज तहसील मे भैरवबाजार के कुछ आगे होता है। बगाल मे प्रविष्ट होने के पश्चात् ब्रह्मपुत्र दो शाखाओं मे विभक्त हो जाती है। ब्रह्मपुत्र की यमुना शाखा मे घोडाघाट के निकट दाई ओर से तिस्ता (त्रिस्रोत) उपनदी के रूप मे मिलती है। और आगे ब्रह्मपुत्र की यमुना शाखा मे, दाई ओर से करतोया नामक एक अन्य महत्त्वपूर्ण उपनदी मिलती है, जो कभी बगाल और कामरूप के बीच की सीमा थी (महाभारत, वनपर्व, अध्याय 85)। रगपुर जिले मे दोमार के पहले करतोया का उद्गमस्थल है। धलेश्वरी जो निचली ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी है, ढाका जिले (पू० पाकिस्तान मे) की एक बहुत महत्त्वपूर्ण नदी है। बहुत चौड़ी होकर मेघना मे मिलने से पूर्व, हबीगज के आगे इसमे लक्ष्या नदी मिलती है। बडी गगा धलेश्वरी की प्रशाखाओ मे से एक है। इचामती जो ढाका जिले की सर्वप्राचीन नदियो मे से एक है, धलेश्वरी और पद्मा के बीच मे प्रवाहित होती है। पहले यह रंपल के निकट ब्रह्मपुत्र मे मिलती थी। आजकल कई चक्कर काटकर यह धलेश्वरी मे मिलती है।

लक्ष्या जो ढाका जिले की सबसे रम्य नदी मानी जाती है, पुरानी ब्रह्मपुत्र से निकली हुयी तीन सरिताओ से बनी है। असम की दूसरी महत्त्वपूर्ण नदी सुरमा, पूर्वी बगाल की प्रसिद्ध नदी मेघना का ऊपरी प्रवाह है। हबीगज के पश्चिम

मे बराक से इसके सगम के पहले इसमे बाई ओर से पाँच सहायक नदियाँ मिलती है। सुरमा मे मिलने के पूर्व, बराक का प्रवाह पश्चिमाभिमुख है। मनु नदी टिपरा पहाडी से निकलती है और उत्तर की ओर बहती हुयी सिल्हट मे बराक से मिलती है। मेघना सामान्यतया ढाका जिले से होकर बहने वाली सुरमा नदी के निचले प्रवाह का नाम है। यह राजाबारी के निकट वेगवती पद्मा मे मिलती है। क्षुद्र ब्रह्मपुत्र नदी जो पहले प्रमुख ब्रह्मपुत्र नदी थी और जो अब ब्रह्मपुत्र नाम से मेमनसिंह कस्बे से होकर बहती है, किशोरगज तहसील मे मेघना मे मिलती है। मुशीगज के थोडा आगे घलेश्वरी मे मिलने के स्थान तक, ढाका और टिपरा जिले के मध्य मेघना का प्रवाह टेढा-मेढा हो जाता है। पद्मा और मेघना की समिलित धारा दक्षिणाभिमुख होकर नोआखाली और बाकरगज जिलो के बीच मेघना नाम से बगाल की खाडी मे गिरती है और सागर-सगम पर कुछ दोआबो का निर्माण करती है। अपने सगम के स्थान पर इन दोनो बडी नदियो का अनिव्यापक प्रसारयुक्त रूप बहुत भयाक्रात करने वाला है।

ब्रह्मपुत्र-मेघना नदी-समूह के पूर्व मे कुछ तटीय नदियाँ है। अपने ऊपरी प्रवाह मे उत्तर मे टिपरा पहाडी और दक्षिण मे चटगाँव जिले मे , तथा निचले प्रवाह मे चटगाँव और नोआखाली जिलो के बीच की सीमा बनाती हुयी, फेनी नदी टिपरा पहाडियो से निकलकर सद्वीप के सामने खाडी मे मिलती है। नफ भी एक सीमा-नदी है, जो चटगाव की काक्स-बाजार तहसील को अराकान जिले से अलग करती है। चटगाँव और चटगाँव-पहाडी के इलाको की तीन मुख्य नदियो मे कर्णफूली सबमे लबी नदी है। यह चटगाँव-पहाडी के इलाको और दक्षिणीपश्चिमी भाग को मिलाने वाली लुशाई पहाडियो से निकलती है और दक्षिण-पश्चिम की ओर चटगाँव-पहाडी के इलाके के मुख्यावास रागामाटी की ओर बहती है। यह पश्चिम की ओर मुडकर हाल्दा के मुहाने तक सीधी बहती है और फिर दक्षिण की ओर घूमकर चटगाँव कस्बे मे होकर बहती है जो इसके दाहिने तट पर स्थित है। रॉगामाटी और चटगाँव कस्बो के बीच कर्णफूली को कई छोटी उपनदियाँ आपूरित करती है। मातामुरी काक्स-बाजार तहसील की एक छोटी भीतरी नदी है जो कुतुबदिया द्वीप के सामने खाडी मे गिरती है।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि मिदनापुर की सुवर्णरेखा पूर्वी भारत की एक महत्त्वपूर्ण नदी है जो मानभूम जिले से निकलती है, तथा जमशेदपुर एवं और आगे दलभूम तथा मिदनापुर से होकर बहती हुयी खाडी मे गिरती है।

(V) लुनी-चम्बल समूह

अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में केवल लुनी ही एक महत्त्वपूर्ण नदी है।

यह अजमेर की पहाडियो से निकलती है और दक्षिणपश्चिमोन्मुखी दिशा मे बहती हुयी राजपूताना[1] और कच्छ प्रायदीप की मीमा पर पहुँचती है। इसके बाद यह नदी सीधे दक्षिण की ओर अपने मुहाने पर एक बडा डेल्टा बनाती हुयी समुद्र मे मिलने के लिए उन्मुख होती है। यह 6 सहायक नदियो द्वारा आपूरित है। दाहिनी ओर लुनी मे एक सोता मिलता है। बाँई ओर से लुनी मे मिलने वाली पहली महायक नदी बन्दी है, जो अरावली पर्वतमाला से निकलती है। बनास एक उल्लेखनीय बाई सहायक नदी है जो वरहाई के दक्षिण मे लुनी मे मिलती है। कच्छ की खाडी की ओर बहती हुयी लुनी मे, सरस्वती नदी बाई ओर से अरावली पर्वतमाला मे निकलकर मिलती है ।

चम्बल या चर्मण्वती इदौर के उत्तरपश्चिम मे अरावली पर्वतमाला से निकलती है और उत्तरपूर्व की ओर पूर्वी राजस्थान मे बहती हुयी यमुना मे मिलती है। कालीसिन्ध विध्यपर्वतमाला मे उत्तर मे बहती हुयी पिपरदा के कुछ उत्तर मे दाहिनी ओर से चम्बल मे मिलती है। पार्वती इदौर की एक स्थानीय नदी है, जो उत्तरपश्चिम की ओर बहती हुयी दाहिनी ओर से चम्बल मे मिलती है। कनिघम के अनुसार यह पुराणो मे वर्णित पारा नदी है। कुनु चम्बल की दाहिनी निचली महायक है और मेज इसकी पहली बाई उपनदी है। चम्बल की एक अन्य महायक नदी बेराच अरावली पर्वतमाला से निकलती है। वह स्थान जहा बेराच मे ढण्ड नदी मिलती है, बनास (सस्कृत वर्णाशा) नाम से विज्ञात है। गगापुर के पूर्व मे बहने वाली चम्बल के पहले गम्भीर यमुना की एक सहायक नदी है। वेत्रवती (आधुनिक बेतवा) पारिपात्र पर्वत से निकलती है। यमुना की ओर इसके प्रवाह-पथ मे अनेक महायक नदियां मिलती है। केन [एरियन के अनुसार कैनस (Cainas)] वेत्रवती के आगे यमुना की एक महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है। पारिपात्र पर्वत से निकलने और अरब सागर मे गिरने वाली क्षुद्र नदियों मे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नदी मही है। यह खभात की खाडी में गिरती है। बसवारा तक इसका प्रवाह दक्षिणपश्चिमाभिमुख है और बाद में यह दक्षिण की ओर मुड कर गुजरात से बहती है। साबरमती पारिपात्र पर्वत से निकलती है और अहमदाबाद से बहती हुयी खभात की खाडी मे गिरती है। विहला और वेगवती सुराष्ट्र मे ऊर्जयन्त पर्वत से सबधित है। काठियावाड़ की भदर नदी अरब सागर मे गिरती है। इसका उद्गम स्थल काठियावाड की मण्डब पहाडियो मे है। दशार्ण वेत्रवती की सहायक नदी है। निर्विन्ध्या विदिशा और उज्जयिनी,

[1] वर्तमान राजस्थान ।

दूसरे शब्दो में कालिदास के अनुसार दशार्णा (धसन) और शिप्रा के मध्य एक नदी है। इसका समीकरण आधुनिक कालीसिन्ध से किया जाता है, जो चम्बल की एक सहायक नदी है। शिप्रा ग्वालियर जिले की एक स्थानीय नदी है, जो सितमन के थोडा आगे चम्बल में मिलती है। यह वह ऐतिहासिक नदी है जिसके किनारे उज्जयिनी का प्राचीन नगर स्थित था। कालिदास ने इसको अमर बना दिया है।

(VI) नर्मदा-ताप्ती समूह

नर्मदा जो मध्य तथा पश्चिम भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण नदी है, मैकल पर्वतमाला से निकलती है और मध्यभारत तथा भोपाल[1] की प्राकृतिक सीमा बनाती हुयी दक्षिण-पश्चिम दिशा मे बहती है। तब यह नदी इन्दौर से बहती हुयी बम्बई के रेवाकण्ठ मे गुजरती है और भडौच मे समुद्र मे मिलती है। चूंकि यह नदी विध्य और सतपुडा की दो बडी पर्वतमालाओ के बीच मे प्रवाहित होती है, यह कई छोटी सहायक नदियो द्वारा आपूरित है। इन्दोर मे प्रवेश करने के पूर्व ही इसमे तेरह सहायक नदियाँ मिलती हैं। इन्दौर मे होकर इसके प्रवाह-पथ मे सात और सहायक नदियाँ—चार बाई ओर से और तीन दाई ओर मे मिलती है। समुद्र तक इसके शेष प्रवाह-पथ मे और कोई सहायक नदी नही मिलती। नर्मदा (टालेमी की नेमेडोस Namados) रेवा, समोदभवा और मेकलसुता-जैसे अन्य नामो से भी प्रसिद्ध है। अतिम नाम इसके स्रोत के प्रति सकेत करने के कारण महत्वपूर्ण है, जो आधुनिक मैकाल पर्वतमाला है जिसमे मेकल के प्राचीन क्षेत्र का नाम सुरक्षित है। मैकाल पर्वतमाला जो स्पष्टत. ऋक्ष का एक भाग है, बडी नदी सोन का भी उद्गमस्थल है। रेवा का स्रोत विध्यपर्वतमाला से मिली हुयी अमरकण्टक पहाडियो में है। मांडला के थोडा पहले नर्मदा और रेवा का सगम होता है, जहाँ से वे दोनो ही नामो से आगे बढती है। महाभारत के अनुसार नर्मदा अवन्ती के प्राचीन राज्य की दक्षिणी सीमा बनाती थी। मत्स्य पुराण (अध्याय 193) के अनुसार जहाँ नर्मदा समुद्र मे गिरती है वह एक तीर्थस्थल है।

महादेव पहाडियों के पश्चिम मे मुल्ताई पठार ताप्ती या तापी नदी का स्रोत है और यह नदी मध्यभारत तथा बरार[2] के पश्चिमोत्तर छोर की प्राकृतिक

---

[1] मध्यभारत और भोपाल दोनों ही अब मध्यप्रदेश में समाविष्ट हैं।

[2] मध्यभारत संप्रति मध्यप्रदेश में ही संमिलित है और बरार महाराष्ट्र प्रदेश में।

सीमा के रूप मे पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है। यह नदी बुरहानपुर से होकर गुजरती हुयी तथा महाराष्ट्र मे प्रवेश करने और सूरत मे समुद्र मे गिरने के पहले मध्यप्रदेश की सीमा पार करती है। मध्यप्रदेश मे ही महादेव पहाडियो से निकलने वाली चार सहायक नदियाँ इसमे मिली है। पूर्वी खानदेश मे इसमे पूर्णा नामक एक बहुत महत्त्वपूर्ण नदी मिलती है। समुद्र मे गिरने के पहले, ताप्ती मे बाई ओर से छह और नदियाँ मिलती है। दाई ओर से इसमें केवल दो सहायक नदियाँ मिलती है। पूर्णा विध्यपर्वतमाला की सतपुडा शाखा मे निकलती है और बुरहानपुर के थोड़ा आगे ताप्ती मे मिलती है। पद्मपुराण (अध्याय XLI.) के अनुसार यह एक प्राचीन नदी है। गिरणा सह्याद्रि या पश्चिमीघाट मे निकलती है और उत्तरपूर्व की ओर बहती हुई खानदेश मे चोपदा के थोडा पहले ताप्ती मे मिलती है। यह दो सरिताओ द्वारा आपूरित है। बोरी पश्चिमी घाट मे निकलती है ओर अमलनेर के कुछ पहले ताप्ती मे मिलती है। पन्झ्रा एक महत्त्वपूर्ण निचली सहायक नदी है, जो पश्चिमीघाट से निकलती है और खानदेश मे शिरपुर के थोडा आगे ताप्ती मे मिलती है।

(VII) महानदी-समूह

महानदी उडीसा की सबसे विशाल नदी है, जो बरार के दक्षिण-पूर्वी कोने पर स्थित पहाडियो से निकलती है। यह सिहोआ से बहती हुयी मध्यप्रदेश मे बस्तर से गुजरती है। सम्बलपुर मे उडीसा मे प्रवेश करने के पहले यह विलासपुर एव रायगढ से होकर बहती है। तब यह दक्षिणपूर्वी दिशा मे प्रवाहित होती है ओर कटक शहर मे गुजरती हुयी फाल्स प्वाइट पर एक विस्तृत डेल्टा बनाती हुयी (बगाल की) खाड़ी मे गिरती है। यह पाँच सहायक नदियों द्वारा आपूरित है। देवी और प्रोची दाई ओर महानदी की दो सहायक नदियाँ है, जो पुरी जिले मे दो त्रिकोणीय नदियाँ बनाती है। गजम जिले के उत्तर मे स्थित पहाड़ियो मे से छोटी महानदी निकलती है और चन्द्रपुर मे खाडी मे मिलती है। वशधरा जो गजम की एक आतरिक नदी है, कलिंगपटम मे खाडी मे मिलती है। लाङ्गूलिनी (आधुनिक लांगुलिया) कालाहण्डी पहाडियो से निकलती है, और दक्षिण की ओर गजम जिले से बहती हुयी शिकाकोले के आगे खाडी मे गिरती है। ऋषिकुल्या गजम जिले की सबसे उत्तरी नदी है जो गंजम शहर से बहती हुयी खाडी मे गिरती है। त्रिसामा (जिसे त्रिमागा या पितृसोमा भी कहा जाता था) और ऋषिकुल्या पुराणो मे दो अलग नदियो के रूप में वर्णित हैं। परंतु ऐसा प्रतिभासित होता है कि वह एक ही नदी है जिसे तीन ऊपरी सरिताओ की संयुक्त धारा

के ऋषिकुल्या नाम को द्योतित करने के लिए त्रिसामा-ऋषिकुल्या का वर्णनात्मक नाम दिया गया है।

करकई का निचला प्रवाह बरबलग, बलसोर जिले से होकर बहती है। सलन्दी क्योझर[1] मे स्थित पहाडियों मे निकलती है और वैतरणी के पहले बलसोर जिले से होकर गुजरती है। कुमारी जो आधुनिक कुमारी मे समीकृत की जाती है मानभूम मे डाल्मा पहाडियों को सींचती हुयी बहती है। पलामिनी (आधुनिक परास) छोटा नागपुर मे कोयल की सहायक नदी है।

वैतरणी जो भारत की अत्यत पवित्र नदियों में से एक है, सिंहभूम जिले के दक्षिणी भाग में स्थित पहाडियों से निकलती है। यह उत्तरपश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर बलसोर जिले से होकर बहती है और धामरा मे खाडी मे गिरती है। जहाँ पर यह उडीसा मे प्रवेश करती है उससे थोडा आगे इसमे दो सहायक नदियाँ मिलती है। हिंदुओं के अनुसार ब्राह्मणी समान रूप से पवित्र है और यह वैतरणी के समान ही बल्सोर जिले में बहती हुयी उत्तर-पश्चिम से दक्षिणपूर्व की ओर बहती है। अगुल के पूर्व मे इसमे टिक्किरा (अन्तशिरा या अत्यागिरा से समीकृत) नामक एक महत्त्वपूर्ण सहायक नदी मिलती है।

(VIII) गोदावरी नदी समूह

गोदावरी दक्षिणभारत की सबसे लबी-चौडी नदी है। यह पश्चिमी घाट से निकलती है। यह महाराष्ट्र मे स्थित नासिक पहाडियों से निःसृत है और आन्ध्रप्रदेश राज्य के एक बडे भाग को काटती हुयी बहती है। यह लगभग 900 मील लबी है। विध्यपर्वतमाला के आगे पूर्वीघाट को काट कर घाटी बनाती हुयी यह दक्षिणपूर्व दिशा मे बहती है। गोदावरी जिले मे अपने मुहाने पर विस्तृत डेल्टा बनाती हुयी यह तीन प्रमुख धाराओं मे बगाल की खाडी मे गिरती है। आन्ध्रप्रदेश मे गुजरते हुए इसके प्रवाह मे दस सहायक नदिया बाई ओर मे और ग्यारह दाहिनी ओर मे मिलती है, जिनमे पूर्णा, कदम, प्राणहिता तथा इन्द्रावती बाई ओर की और मजीरा, सिन्दफना, मनेर और किनरसिनी दाई ओर की महत्त्व-पूर्ण नदियाँ है। पूर्णा सह्याद्रि पर्वत से दक्षिण-पूर्व की ओर महाराष्ट्र के नन्देर जिले की पश्चिमी सीमा पर गोदावरी मे मिलती है। विध्यपर्वत की निर्मल श्रेणी से कदम नदी निकलती है और कोरतल्ला के उत्तर मे गोदावरी मे मिलती है।

---

[1] सम्प्रति उड़ीसा में स्थित है। यह पहले एक रियासत थी। अब एक जिला है।

प्राणहिता गोदावरी की दो ऊपरी सहायक नदियो मे से एक है, जो वैनगगा, वरदा तथा पेनगगा (पेन्नर) की सगमित धाराओ के सयुक्त प्रवाह का प्रतिनिधित्व करती है। उडीसा की कालाहण्डी पहाडियो से इन्द्रवती नदी निकलती है। यह दक्षिण-पश्चिम दिशा मे बहती हुयी भोपाल-पटनम के आगे गोदावरी मे मिलती है। सिदफना गोदावरी की पश्चिमी निचली सहायक नदी है। मजीरा भी एक निचली उपनदी है जो बालाघाट पर्वतमाला से निकलती है और दक्षिणपूर्व तथा उत्तर मे बहती हुयी गोदावरी मे मिलती है। मनेर उत्तरपूर्व में बहती हुयी मन्थनी के पूर्व मे गोदावरी मे मिलती है। बस्तर मे भद्राचलन के सामने किनर-मिनी गोदावरी मे समाहित होती है।

(IX) कृष्णानदी समूह

कृष्णा दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी है, जिसका उद्गम स्थल पश्चिमी-घाट मे है। दक्कन के पठार मे होकर पूर्व की ओर बहती हुयी और एक कृश धारा के रूप मे पूर्वी घाट को भेदती हुयी यह बगाल की खाडी मे गिरती है। यह महाराष्ट्र, मैसूर और आन्ध्रप्रदेश राज्यो मे होकर प्रवाहित होती है। आलमपुर के उत्तरपूर्व मे जगरयपेट के आगे तक कृष्णा नदी हैदराबाद (आन्ध्रप्रदेश) की दक्षिणी प्राकृतिक सीमा बनाती हुयी प्रवाहित होती है। आन्ध्रप्रदेश होकर बहती हुयी उसके प्रवाह मे पद्रह सहायक नदियाँ बाई ओर से और चार दाहिनी ओर से मिलती है। इसका उद्गमस्थल महाबलेश्वर के निकट है। कृष्णा की एक सहायक नदी घोन पश्चिमीघाट से निकलती और कृष्णा मे मिलती है। भीमा जो पुराणा मे एक सह्य नदी के नाम से विख्यात है, दक्षिणपूर्वाभिमुख होकर बहती हुयी मैसूर राज्य के रायचूर जिले के उत्तर मे कृष्णा नदी मे मिलती है। पलर नलगोण्डा के उत्तर मे स्थित पहाडियो से निकली और कृष्णा मे मिली है। मुनर कृष्णा की बिल्कुल पूर्वी ऊपरी सहायक नदी है। यह अमरावती के सामने कृष्णा मे मिलती है। कृष्णा की निचली सहायक नदियो मे तुगभद्रा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। तुङ्गा और भद्रा मैसूर की पश्चिमी सीमा पर पश्चिमीघाट से निकलती है और उनकी सयुक्त धारा तुगभद्रा नाम से प्रवाहित होती है। वरदा, जो तुगभद्रा की एक सहायक नदी है अनतपुर के उत्तर मे पश्चिमीघाट से निकलती है और तुगभद्रा मे मिलती है। हिन्द्री जो तुगभद्रा की अवर उपनदी है, करनूल शहर मे तुगभद्रा मे मिलती है। कोलेरून त्रिचनापल्ली से निकल कर खाडी मे गिरती है। उत्तरी पेन्नर, आन्ध्रप्रदेश के अनंतपुर जिले मे पमिडी तक, उत्तर और उत्तरपूर्व मे बहती है और तब दक्षिणपूर्व की ओर मुड़कर कोरोमण्डल तट पर

नेलोर जिले में बगाल की खाडी में मिलती है। दक्षिण-पेन्नर सेंट डेविड फोर्ट मे बंगाल की खाड़ी मे मिलती है। उसका निचला प्रवाह पोन्नेय्यार नाम से विख्यात है।

(X) कावेरी नदी-समूह

कावेरी जो दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी है, कुर्ग मे पश्चिमीघाट की पहाडियो से निकलती है और दक्षिणपूर्व मे मैसूर से बहती हुयी मद्रास राज्य के तजौर जिले मे बगाल की खाड़ी मे गिरती है। यह अपने मुहाने पर एक विस्तृत डेल्टा बनाती है। इसमे बाई ओर से दस और दाई ओर से आठ उपनदियाँ मिलती है। कावेरी, जो प्राचीनकाल में मोती निकालने के लिए विख्यात थी, प्राचीन चोल राज्य के दक्षिणी भाग से बहती हुयी समुद्र में गिरती थी। चोलो की राजधानी प्राचीन उरगपुर (आधुनिक उरैयुर) कावेरी के दक्षिणी तट पर स्थित थी। कावेरी, मैसूर राज्य मे श्रीरगपटनम, शिवसमुद्रम तथा त्रिचनापल्ली के निकट श्रीरंगम जैसे पवित्र स्थानो से होकर बहती है।

दक्षिण भारत की चार महत्त्वपूर्ण मलय नदियाँ उल्लेखनीय है। वे कृतमाला (कूर्मपुराण की ऋतुमाला ओर वराहपुराण की शतमाला), ताम्रपर्णी (ब्रह्म पुराण की ताम्रवर्णा), पुष्पजा और मुत्पलावर्ती (उत्पलावती) है। ताम्रपर्णी और पाण्ड्य कपाट मोती निकालने के लिए दो प्रसिद्ध नदियाँ है। ताम्रपर्णी एक विशाल मलय-नदी है, जो निश्चय ही पाण्ड्य राज्य की दक्षिणी सीमा के आगे बहती थी। इसे आधुनिक ताम्त्रवरी या ताम्रवरी तथा चित्तर के सयुक्त प्रवाह से समीकृत किया जा सकता है। टालेमी के अनुसार इसके मुहाने पर कोरकै बन्दरगाह स्थित था। कृतमाला को वैगाई से समीकृत किया जा सकता है जो मदुरा (पाण्ड्य राज्य की राजधानी, प्राचीन मधुरा) शहर से होकर बहती है। वैगाई मदुरा जिले की प्रमुख नदी है। यह चुम्बुम और वरुशनद घाटियो को सिंचित करने वाली दो सरिताओ से निकलती है। यह मदुरा शहर से होकर बहती है। आधुनिक भू-चित्रावलियो मे मलय पर्वतमाला से पूर्व की ओर बहने-वाली आठ और पश्चिम की ओर प्रवाहित होनेवाली ग्यारह नदियाँ दृष्टिगोचर होती है।

द. झीलें

प्राचीन या आधुनिक भारत उतनी विस्तृत और प्रभावोत्पादक शोभनीय झीलों की विद्यमानता की गर्वोक्ति नही कर सकता, जितनी एशिया, अफ्रीका,

यूरोप और अमरीका के कुछ भागो में प्राप्त होती है। किंतु जल के लंबे और छोटे फैलाव जिन्हे झील कहा जाता है, भारत मे सर्वथा दुष्प्राप्य नही हैं। आधुनिक काल मे उनमें से कुछ प्राकृतिक धसकन है, जो निकटवर्ती जिलो के जल-निर्गमों द्वारा आपूरित है; कुछ नदी के पेटो मे बाँध बनने से कृत्रिम रूप से निर्मित हैं; और कुछ जैसा एरियन ने बतलाया है, नदियो के प्रवाह के केवल प्रसार मात्र हैं। उसके अनुसार सिन्धु नदी अपनी एकमात्र प्रतिद्वंद्वी गगा के समान कई स्थानों पर झीलो के रूप मे फैली हुयी है।

मध्यदेश मे कुणाल नामक एक झील थी।[1] इस झील की पहचान अभी तक नही की जा सकी है। वैशाली मे मरकट नामक एक झील थी जहाँ बुद्ध गये थे।[2] उत्तरापथ मे अनोतत्त नामक कोई झील थी जहाँ बुद्ध कई बार पधारे थे। यह झील सामान्यतया रावण ह्रद या लग मानी जाती है। हिमालय की सात बडी झीलो मे से यह एक थी।[3] महावस-टीका (पृ० 306) के अनुसार अनोतत्त झील का पवित्र जल राज्याभिषेक के समय प्रयोग किया जाता था।

आधुनिक भारत मे सर्वाधिक सुरम्य झीलें कश्मीर मे पायी जाती है। वुलर, डल और मनसबल झीलें सबसे अधिक रमणीय हैं। वुलर झील का क्षेत्र 12½ वर्गमील है। कुछ लोगो के अनुसार इसका प्राचीन नाम महापद्मसर है। वुलर नाम सस्कृत शब्द 'उल्लोल' का अपभ्रंश माना जाता है, जिसका तात्पर्य कोलाहल पूर्ण या अशान्त है। डल, कश्मीर की राजधानी श्रीनगर के समीप स्थित है। इसका दृश्य सुरम्य है। मुगल सम्राटो ने इसके चारो ओर चबूतरेदार उद्यान लगवाकर इस स्थान की बहुत सौदर्य-वृद्धि की। श्रीवर द्वारा प्रणीत विवरण मे इसका नाम डल बताया गया है। इस झील मे दो छोटे द्वीप है। कश्मीर की अन्य झीलो मे हम श्रीनगर के निकट अचर, कोस नाग, नन्दन सर, नील नाग, सरबल नाग और क्युम का उल्लेख कर सकते है।

गढवाल में कुछ झीलें है। घोन झील महत्त्वपूर्ण है। सुरम्य कोल्लरकहर झील पंजाब की नमक की पर्वतमाला के मध्य स्थित है। सिध के लरकाना (संप्रति पश्चिमी पाकिस्तान मे) जिले की मनचर झील पश्चिमी नर के प्रसार से निर्मित और कई पहाडी सरिताओं द्वारा आपूरित है।

नमक की कई झीलें राजस्थान में विकीर्ण है, जिनमें साँभर, दिदवन और

[1] जातक V. 419; अंगुत्तर IV. 101.

[2] दिव्यावदान, पृ० 200.

[3] अंगुत्तर, IV, 101.

पुष्कर महत्त्वपूर्ण हैं। साँभर जोधपुर और जयपुर(अब राज्य नही वरन् जिले), की सीमा पर स्थित है। पुष्कर झील की पुण्यशीलता बहुत है। सबसे बड़ा पापी भी इसमे स्नान करके अपने पापो का निवारण कर सकता है। राजस्थान मे कुछ कृत्रिम झीले भी है। उदयपुर (उदयपुर अब राजस्थान मे एक जिला मात्र है) मे देबर या जयसमद, राजसमद और पिछोला, किशेनगंज मे गुण्डोलाओ और धोलपुर मे मचकुन्द महत्वपूर्ण झीले है।

उत्तर प्रदेश मे नदियो के पुराने पेटो मे निर्मित कुछ प्राकृतिक झीलें और धसकने प्राप्त होती है। नैनीताल की घाटी मे नाशपाती के आकार की एक झील है। सगरताल एक सुन्दर झील है। झाँसी जिले के तलबहट मे दो छोटे बाँधो द्वारा निर्मित 528 एकड भूमि पर फैली हुयी एक झील है। बलिया शहर (बलिया जिला) के चार मील उत्तर में एक अर्ध-चद्राकार झील है। बस्ती (उत्तरप्रदेश) जिले मे भी कुछ झीले है। बखिरा ताल भारत मे ताजे पानी की सबसे बढिया झील है। अजस्र झीलो मे कुछ यथा, नदौर, रनगढ, नरहर, चिलेर, और ब्योरीताल गोरखपुर जिले मे स्थित है।

ललसरया, सेरहा और ततरिया बिहार के चपारन जिले में स्थित हैं। चटगाँव पहाडी के इलाके की रामक्री; राजशाही और पबना जिले की सीमाओं पर स्थित चलन बिल, बगाल के फरीदपुर जिले का ढोलममुद्र दलदल, नवगॉव जिले की पकरिया , पोट और कलग झीले, असम के गोलपारा जिले की सरम झील और मणिपुर की लोगतक झील उल्लेखनीय हैं।

भारत के सुदूरपश्चिम, गुजरात और महाराष्ट्र मे अहमदाबाद से 37 मील दूर दक्षिण-पश्चिम मे स्थित नल, शोलापुर जिले की करम्बई, कोरेगॉव और पन-गॉव झीले तथा अहमदनगर की भटोदी झील का उल्लेख किया जा सकता है। पचमहल मे गोधरा के निकट एक बाँधी गयी झील है।

मध्यप्रदेश मे भोपाल शहर पुल्ता-पुल-तलाव नामक एक विशाल झील के किनारे स्थित है। यहाँ पर बडा तलाव नामक एक अन्य झील है। महोबा मे किरतसागर और अहल्यासागर नामक दो कृत्रिम झीले है। मैहर मे भी झीले है।

दक्कन पठार के पूर्वी समुद्रतट पर चिल्का नामक झील है। बालू का एक लंबा टीला इसे बगाल की खाड़ी से अलग करता है। चिल्का झील के कई दृश्य अतिशय मनोरम है। कोलैर (कोल्लेरु या कोलर) झील आन्ध्रप्रदेश राज्य की ताजे पानी की अकेली एक प्राकृतिक झील है। यह किस्ना (कृष्णा) जिले में स्थित है, और आकार मे प्रायः चिपटी है। अधिकांश कोरोमण्डल तट प्रबालयुक्त

झीलों से परिवेष्ठित हैं, जिनमे मद्रास के ठीक उत्तर में स्थित पिलिकट झील सबसे बडी है। आन्ध्रप्रदेश (भूतपूर्व हैदराबाद राज्य) राज्य मे कृत्रिम जल-विस्तार हैं, जिन्हें झील कहा जाता है, जिनमे वारंगल जिले के नरसमपेत तालुक में स्थित पखल झील सबसे अधिक विशाल और बड़ी है। महाराष्ट्र के बुलडाना मे दक्कन के पठार के वृत्ताकार धसकन पर लोनर झील है। दक्कन पठार के पश्चिमी तट पर कोचीन के निकट प्रवालयुक्त झीलो की निरतर शृखला, जो प्राय. समुद्र के समानांतर फैली हुयी है और पश्चिमीघाट से निकलने वाली अनेक सरिताओ के जल को आत्मसात कर लेती है—वहाँ की एक उल्लेखनीय प्राकृतिक विशेषता है। इस क्षेत्र मे एनमवकल और मनकोडडी नामक दो ताजे पानी की झीले है।

ई. जंगल

प्राचीन काल मे सपूर्ण भारत में जगल थे। लकडी और इमारती लकड़ियों के लिए वृक्ष काटे जाते थे। बहुत लोग वनो मे पशुओ का आखेट पसद करते थे। जालो के माध्यम से पक्षियो को पकडना एक स्थायी उद्योग था। छठी शताब्दी ईसा पूर्व मे मध्यदेश मे कुछ प्राकृतिक वन (स्वयजातवन) स्थित थे। उदाहरणार्थ कुरु प्रदेश मे कुरुजागल एक वन्य क्षेत्र था, जो सुदूर उत्तर मे काम्यक वन तक फैला हुआ था। उत्तर-पचाल राज्य इसी जगली क्षेत्र मे स्थापित किया गया था। साकेत मे अजनवन तथा वैशाली और कपिलवस्तु मे महावन प्राकृतिक जगल थे। वैशाली नगर के बाहर महावन निरतर हिमालय तक फैला हुआ था। विस्तृत क्षेत्र पर फैले होने के कारण उसे महावन कहा जाता था।[1] कपिलवस्तु मे महावन भी एक प्रसरण मे ही हिमालय की तराई तक फैला हुआ था।[2] कौशाम्बी से कुछ दूर और श्रावस्ती के तट मे पारिलेय्यकवन था जिसमे हाथी रहते थे।[3] रोहिणी नदी के तट पर स्थित लुम्बिनीवन भी एक प्राकृतिक जगल था।[4] वज्जि जनपद मे नागवन, कुसीनारा के मल्लो का शालवन, भर्ग जनपद मे भेसकला-वन, कौशाम्बी मे सिसपावन, कोशल मे सेतव्या के उत्तर मे तथा आलवी के निकट स्थित वन और मोरियो का पिप्फलिवन प्राकृतिक वनो के कुछ प्रकारात्मक

---

[1] सुमंगलविलासिनी, I 309; संयुक्त०, I, 29-30.

[2] सुमंगलविलासिनी, I, 309.

[3] संयुक्त०, III, 95; विनय०, I, 352; उदान, IV, 5.

[4] जातक, I, 52 और आगे; कथावत्थु, 97, 559; मनोरथपूरनी, I, 10[illegible]

दृष्टांत बताये जा सकते हैं।[1] विंध्य पर्वतमाला के चतुर्दिक् स्थित वनों को विंझा-टवी कहते थे जिसके बीच से पाटलिपुत्र से ताम्रलिप्ति जाने का पथ गुजरता था।[2] इसमें मनुष्यों के आवास का लेश भी नही था[3] (अगामकं अरण्ण)। दीपवंस मे विंध्यवन का उल्लेख है, जिसे पाटलिपुत्र जाते समय पार करना पड़ता था (XV. 87)।

वत्स मे (अथवा चेति मे) पारिलेय्यक नामक एक आरक्षित वन था। कौशाम्बी से वहाँ जाने का पथ दो गाँवो से होकर गुजरता था।[4] जैसा कि चीनी यात्री युवान-च्वाङ् ने बतलाया है, प्रयाग से कौशाम्बी जाने का मार्ग किसी जगल से होकर गुजरता था।[5]

देवीपुराण (अध्याय, 74) के अनुसार वहाँ सैंधव, दण्डकारण्य, नैमिष, कुरुजागल, उत्पलारण्य (या उपलावृत-अरण्य) जम्बूमार्ग, पुष्कर और हिमालय नामक नौ पवित्र वन (अरण्य) थे। पार्जिटर के अनुसार, बुदेलखड से कृष्णा तक के सभी जंगल दण्डकारण्य मे समिलित थे।[6] रामायण (उत्तरकाड, अध्याय, 81) के अनुसार यह विन्ध्य और सैवल पर्वतो के मध्य स्थित था। इसके एक भाग को जनस्थान कहा जाता था। रामचंद्र ने यहाँ पर बहुत दिनो तक निवास किया था। उत्तररामचरित (अक 1) के अनुसार यह जनस्थान के पश्चिम मे स्थित था। कुछ लोगो के अनुसार यह नागपुर सहित महाराष्ट्र का ही प्रदेश था। ललितविस्तर (पृ० 316) मे दक्षिणापथ में दण्डकवन का उल्लेख है। कई वर्षों तक यह वन जल कर खाक बना रहा। यहाँ तक कि इसमे घास भी नही उगती थी।

नैमिषारण्य एक पवित्र जगल था जहाँ साठ हजार ऋषि रहते थे। कई पुराणों की रचना यही हुयी थी। यह आधुनिक नीमसार है जो सीतापुर से 20

---

[1] अंगु०, IV, 213; दीघ०, II, 146 और आगे; मज्झिम०, I, 95; वही, II, 91; संयुक्त०, V, 437; दीघ०, II, 316, 164, और आगे।

[2] महावंश, XIX. 6; दीपवंश, XVI, 2.

[3] समंतपासादिका, III, 655.

[4] बि० च० लाहा, इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन अर्ली टेक्स्ट्स ऑव बुद्धिज्म् ऐंड जैनिज्म्, पृ० 39.

[5] वार्टर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, 366.

[6] ज० रा० ए० सो०, 1894, 242; तु० मिलिन्द०, 130.

[7] रा० गो० भंडारकर, अर्ली हिस्ट्री ऑव द दकन, खंड, II.

मील और लखनऊ से 45 मील दूर उत्तरपश्चिम में स्थित है। यह हिंदुओं का एक तीर्थस्थान है जहाँ भारत के सभी भागो से तीर्थयात्री आते रहते हैं। रामायण (उत्तरकाण्ड, अध्याय 91) के अनुसार यह गोमती के बाएँ तट पर स्थित है। कुरुजाङ्गल हस्तिनापुर के उत्तरपश्चिम, सरहिन्द मे स्थित एक वन्य प्रदेश था। महाभारत (आदिपर्व, अध्याय, 26) के अनुसार कुरुओं की राजधानी हस्तिनापुर, कुरुजाङ्गल मे स्थित थी। जैसा हमें वामनपुराण (अध्याय, 32), और महाभारत (आदिपर्व, अध्याय, 201) से ज्ञात होता है, सपूर्ण कुरुदेश इसी नाम से विश्रुत था। महाभारत (वनपर्व, अध्याय, 87) के अनुसार उत्पलारण्य पंचाल मे स्थित था। इसे उत्पलवन भी कहते थे। यहाँ सीता ने लव और कुश को जन्म दिया था। कुछ लोगो ने इसे कानपुर से 14 मील दूर बिठूर नामक स्थान से समीकृत किया है, जहाँ बाल्मीकि का आश्रम स्थित था।

अग्निपुराण (अध्याय, 109) के अनुसार पुष्कर और आबू पर्वत के मध्य जम्बूमार्ग स्थित था। पुष्करवन अजमेर से 6 मील दूर स्थित है। महाभारतकाल मे पुष्कर के निकट और हिमालय मे कुछ म्लेच्छ जातियाँ निवास करती थीं (सभापर्व, अध्याय, 27, 32)

हिमालय मे स्थित वन वन्य-पशुओ से आकीर्ण थे। बताया जाता है कि उनमे बहुत बडी सख्या[1] मे यूथचर हाथी, सरीसृप, अजगर, साँप और पक्षी आदि पाये जाते थे। पर्वतो और पहाडियो की खोह उनके लिए माँदो का कार्य करती थी।[2] गोदावरी नदी के दक्षिणपश्चिम और उत्तरपश्चिम मे इन्द्रवती नदी की शाखा गौलिया के बीच मे कलिगारण्य स्थित था।[3] रैप्सन के मतानुसार यह महानदी और गोदावरी के बीच मे स्थित था।[4]

सोलह महाजनपद

प्राचीन भारत के ऐतिहासिक भूगोल के अति महत्वपूर्ण विषयो में जम्बूद्वीप

---

[1] **मैक्रिडिल, ऐंश्यंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज ऐंड एरियन, पृ० 42.**

[2] **बि० च० लाहा, इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन अर्ली टेक्स्टस ऑव बुद्धिज्म् ऐंड जैनिज्म्, पृ० 64 और आगे।**

[3] **कनिंघम, ऐंश्यंट ज्यॉग्रफी, 591.**

[4] **ऐंश्यंट इंडिया, पृ० 116.**

के सोलह महाजनपदो का विवरण एक है। यहाँ पर उनका एक योजनाबद्ध और संक्षिप्त विवरण देने का प्रयत्न किया गया है।

पालि सुत्त पिटक के अंगुत्तर निकाय[1] मे जंबुदीप के 16 महाजनपदों का वर्णन किया गया है। वे निम्नलिखित हैं—

अङ्ग, मगध, काशी, कोशल, वज्जि, मल्ल, चेति, वंश, कुरु, पञ्चाल, मच्छ, सूरसेन, अस्सक, अवन्ती,[2] गन्धार और कम्बोज।

इनमे से प्रत्येक का नामकरण इसमे बसने वाले या उपनिवेश बनाने वाले जनों के आधार पर किया गया है। इसमे से चौदह महाजनपद मध्यदेश मे ही संमिलित बताये जाते है और शेष दो देश—गन्धार और कम्बोज उत्तरापथ मे स्थित बतलाये गये हैं। दीघ निकाय[3] मे अतिम चार जनपदो को छोड़कर, केवल बारह जनपदो की सूची दी गयी है, जब कि चुल्लनिद्देस[4] मे इस तालिका मे कलिंग जोड दिया गया है और गन्धार के लिए 'योन' शब्द प्रयुक्त होता है। इन्द्रियजातक[5] मे निम्नलिखित जनपदो का वर्णन प्राप्त होता है : सुरट्ठ (सूरत), लंबचूलक, अवन्ती दक्खिणापथ, दण्डकारण्य (दडकिरञ्ञो) कुभवतीनगर और मज्झिमपदेस मे अरजर (अरजरगिरि) का पहाडी इलाका।

यह एक रोचक बात है कि मार्कंडेय पुराण (अध्याय 57, 32-35) के अनुसार मध्यदेश मे मत्स्य, कुशुल, कुल्य, कुन्तल, काशी, कोशल अर्बुद, पुलिन्द, समक, वृक और गोवर्धनपुर देश थे। अवन्ती अपरान्त मे समिलित है।

जैनग्रंथ भगवतीसूत्र (जिसे व्याख्याप्रज्ञप्ति भी कहा जाता है) मे कुछ एक दूसरे प्रकार की सूची दी गयी है। वह इस प्रकार है : अग, बग, (वङ्ग), मगह

---

[1] अगुत्तर०, जिल्द I, पृ० 213; जिल्द IV, 252, 256, 260.

[2] स्पष्ट रूप से प्राचीन बौद्ध ग्रंथों में वर्णित, कम से कम यदि अवन्ती को नहीं तो अस्सक को दक्खिणापथ या दक्कन में स्थित माना जाना चाहिये क्योंकि बौद्ध ग्रंथों में वर्णित दोनों ही संनिवेश मज्झिमदेस की सीमाओं के बाहर थे।

[3] दीघ०, II, पृ० 202-203, अंग-मगध, कासी-कोसल, वज्जी-मल्ल, चेति-वंस, कुरु-पञ्चाल और मच्छ-सूरसेन।

[4] निद्देस, पा० टे० सो० संस्करण, II, पृ० 37, अंगा च मगधा च कलिंगा च कासी च कोसला च वज्जी च मल्ला च चेती च वंसा च कुरु च पञ्चाला च मच्छ च सूरसेना च अस्सका च अवन्ती च योना च कम्बोजा च।

[5] जातक III, 463.

(मगध), मलय, मालव, अच्छ, वच्छ (पालि, वंस) कोच्छ, पाढ (?) लाढ (राढ़), बज्जि (पालि, वज्जि) मोलि (मल्ल?) कासी[1], कोसल, अवह, (अवाह?) और सम्मुत्तर या सुमुत्तर (सुहमोत्तर)। जैन सूची अगुत्तर निकाय मे दी गयी बौद्ध सूची से बाद की प्रतीत होती है।

महावस्तु मे जम्बुद्वीप के परपरागत सोलह महाजनपदो का उल्लेख तो है किंतु इसमें तालिका नही दी गयी है (जम्बुद्वीपे सोडशहि महाजनपदेहि)।[2] परपरानुगत सूची के बिना ललितविस्तर में इसी प्रकार का एक उल्लेख प्राप्त होता है (सर्वस्मिन् जम्बुद्वीपे षोडश जानपदेषु—पृ० 22)। महावस्तु के सतर्कतापूर्ण अध्ययन से ज्ञात होता है कि एक दूसरे सदर्भ मे इसमे सोलह बड़े महाजनपदो की गणना की गयी है।[3] इसमे बताया गया है कि गौतम ने अग, मगध, वज्जी, मल्ल, काशी, कोशल, चेदि, वत्स, मत्स्य, शूरसेन, कुरु, पञ्चाल, सिवि, दशार्ण, अस्सक और अवन्ती के निवासियो मे ज्ञान का प्रसार किया। इसमे और पालि सूची मे अंतर है क्योंकि इसमे गन्धार और कम्बोज का उल्लेख नही किया है, वरन् सिवि और दशार्ण का वर्णन है। गणना का क्रम भी कुछ अलग प्रकार का है।

महाभारत के कर्णपर्व मे विभिन्न जनपदो मे रहने वाले जनो की जातिगत विशेषताओ का एक रोचक विवरण प्राप्त होता है। इसमे निम्नलिखित जातियाँ अपने ही नामो के आधार पर रखे गये अपने विशिष्ट जनपदो मे रहती हुयी बतायी गयी है—कौरव, पञ्चाल, शाल्व, मत्स्य, नैमिष, चेदि, शूरसेन, मगध, कोशल, अङ्ग, गन्धर्व और मद्रकगण।

अङ्ग

अङ्ग जनपद की राजधानी चम्पा थी जो उसी नाम की एक नदी[4] (आधुनिक चान्दन) और गंगा के[5] तट पर विदेह की राजधानी मिथिला[6] से 60 योजन

[1] वेबर के बर्लिन कैटेलाग, जिल्द, II, पृ० 439, सं० 2, सं० 13 के अनुसार कोसी होगा।

[2] जिल्द, II, पृ० 2.

[3] जिल्द, I, पृ० 34.

[4] जातक, संख्या 506.

[5] वार्टस, ऑन युवान च्वाङ्, II, 181; दशकुमारचरित, II, 2.

[6] जातक, VII, 32.

दूर स्थित थी। चम्पा का प्राचीन नाम मालिनी अथवा मालिन था।[1] इसका निर्माण महागोविंद ने किया था।[2] इसकी वास्तविक स्थिति अब भी भागलपुर के समीप चम्पानगर और चम्पापुरी नाम गाँवों से लक्षित होती है। चम्पा शनै-शनैः समृद्धिशाली हुयी और व्यापार के लिए यहाँ से व्यापारी सुवर्णभूमि (अवर वर्मा) की ओर जाते थे। यह भारत के छह बडे नगरो मे से एक थी। यह एक बड़ा शहर था न कि एक गाँव, क्योंकि आनन्द ने बुद्ध से किसी बड़े शहर में परिनिर्वाण प्राप्त करने की प्रार्थना करते समय चम्पा का उल्लेख एक महानगर के रूप में किया था।[3] इसमे प्रहरी-स्तम्भ, प्राचीरें एव तोरण थे।[4] अंग जनपद में 80,000 गाँव थे और चम्पा उनमे से एक था।[5] दीघ निकाय (II, 235) के अनुसार भारत के सात राजनयिक भागो मे, अङ्ग एक था जिसकी राजधानी चम्पा थी। चम्पा मे अशोक के पुत्र महिन्द और उसके पुत्रो एव प्रपौत्रो का शासन था।[6] यही पर बुद्ध ने भिक्षुओ को पादुकाओ का प्रयोग करने की आज्ञा दी थी।[7]

महाभारत के अनुसार अङ्ग मे भागलपुर और मुगेर जिले समिल्लित प्रतीत होते हैं और उत्तर मे यह कोसी नदी तक फैला हुआ था। एक समय अङ्ग जनपद में मगध समिल्लित था और यह सभवत. समुद्र तक फैला हुआ था। महाभारत से ज्ञात होता है कि यहाँ के राजा अङ्ग[8] के नाम के आधार पर इसका नामकरण अङ्ग किया गया था, जो ऐतरेय ब्राह्मण (VIII. 4. 22) मे उल्लिखित अग वैरोचनी से समीकृत किया जाता है। रामायण के अनुसार यही पर कामदेव का अंगदहन होने के कारण, इसका नाम अङ्ग पड़ा है। अगुत्तराप मे स्थित 'आपन' नगर का वर्णन मही नदी के उत्तर में उसके दूसरे तट पर स्थित एक क्षेत्र के रूप मे हुआ है जो स्पष्टत अंग का भाग था (परमत्थजोतिका, II, 437; मललसेकर, डिक्श-

[1] महाभारत, XII, 5, 6-7; मत्स्य०, 48, 97; वायु० 99, 105-6; हरिवंश०, 32, 49.

[2] दीघ०, II, 235.

[3] वही, II, 146.

[4] जातक, संख्या 539.

[5] विनय पिटक, I, 179.

[6] दीपवंस, 28.

[7] विनय, I, 179 और आगे।

[8] आदिपर्व, CIV. 4179 और आगे।

नरी आॅव पालि प्रापर नेम्स, पृ० 22)। मड्डिय से आपन तक जाने का मार्ग अंगुत्तराप होकर था (विनय, I, 243, और आगे; धम्मपद कामेंट्री, III, 363)।

बुद्ध-काल के पूर्व अंग एक शक्तिशाली जनपद था। किसी समय मगध अंग के अधीन था (जातक VI, 272) अङ्ग और मगध के मध्य एक नदी थी जिसमें एक नागराजा रहता था। उसने अंग को पराजित और वहाँ के राजा की हत्या करके उसे अपने अधीन बनाने में मगध के राजा की सहायता की थी। ब्रह्मवड्ढन (वाराणसी का एक अन्य नाम) के राजा मनोज ने अङ्ग और मगध को जीत लिया था। बुद्ध के समय में अङ्ग की राजनीतिक शक्ति इसके हित के लिए समाप्त हो गयी थी। इस युग मे अङ्ग और मगध में निरंतर युद्ध होते रहे (जातक IV. 454-5)। अङ्ग श्रेणिय बिम्बिसार के अधीन था। यह तथ्य इस बात से सिद्ध होता है कि सोनदण्ड नामक एक ब्राह्मण चम्पा मे राजा बिम्बिसार के अनुदानों पर आश्रित था और राजा द्वारा दिये गये उस नगर के राजस्व का भोग करता था (दीघनिकाय, I, 111)।

चम्पा की रानी गग्गरा ने गग्गरापोखरणी नामक एक तालाब खुदवाया था (सुमगलविलासिनी I, पृ० 279)। बुद्ध ने अपनी चम्पा-यात्रा के समय भिक्षुओ के एक विशाल समूह के साथ इसके तट पर निवास किया था (दीघ, I, 111 और आगे)अङ्ग और चम्पा मे उनके कार्यो का विवरण हमे विनयपिटक (I. 312–15)से प्राप्त होता है। अङ्ग जनपद के अस्सपुर नगर मे रहते समय बुद्ध ने भिक्षुओ के प्रति महा और चुल्ल अस्सपुर सुत्तातो का प्रवचन किया था (मज्झिम, I, 281 और आगे)। राजगृह से कपिलवस्तु तक बुद्ध की यात्रा के क्रम मे अङ्ग एव मगध के अनेक गृहस्थ-पुत्रो ने उनका अनुगमन किया था (जातक, I, 87)। अङ्ग के काल-चम्पा नगर मे हिमालय के ऋषि पके हुए भोजन का रसास्वादन करने के लिए आया करते थे (जातक, VI, 256)। कोसलाधिप पसेनदि के पिता महाकोसल के पुरोहित अग्गिदत्त गार्हस्थ्य जीवन का परित्याग करने के पश्चात् अङ्ग और मगध मे रहते थे और उनको दोनों जनपदों के लोग दान दिया करते थे (धम्मपद कामेंट्री, III, 241 और आगे)।

अङ्ग अनेक व्यापारियों द्वारा निवसित एक समृद्धिशाली देश था, जो व्यापारिक मालों से लदे हुए कई सार्थों को लेकर व्यापार करने के लिए सिंधु-सोवीर देश तक जाया करते थे (विमानवत्थु कामेंट्री, 332, 337)।

अशोकावदान (रा० ला० मित्र, नेपालीज बुद्धिस्ट लिटरेचर, पृ० 8) के अनुसार चम्पापुरी के एक ब्राह्मण ने सुभद्रांगी नामक एक पुत्री उपहारस्वरूप राजा बिन्दुसार को दी थी जब वह पाटलिपुत्र पर शासन कर रहा था। ललित-

विस्तर (पृ० 125-126) मे अङ्ग देश की एक लिपि या वर्णमाला का उल्लेख है जिसमे बोधिसत्व ने दक्षता प्राप्त की थी।

मगध

स्थूल रूप से मगध बिहार के आधुनिक पटना और गया जिलों का प्रतिसबधी है। इसका वर्णन सब प्रकार के रत्नो से युक्त एक सुदर नगर के रूप में है।[1] वैदिक ब्राह्मण और सूत्र-युगो मे मगध आर्य एव ब्राह्मण सस्कृति के अंचल के बाहर समझा जाता था और इसीलिए, ब्राह्मण ग्रंथो के लेखक इसे उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। किंतु बौद्धो के पवित्र क्षेत्र के रूप मे मगध सदैव मध्यदेश मे संमिलित रहा है।

इसकी सर्वप्राचीन राजधानी गिरिव्रज या प्राचीन राजगृह थी। इसके अन्य नाम वसुमती,[2] बार्हद्रथपुरी,[3] मगधपुर,[4] वराह, वृषभ, ऋषिगिरि, चैत्यक,[5] बिम्बिसारपुरी[6] और कुशाग्रपुर थे।[7] ऋग्वेद में कीकट नामक एक क्षेत्र का वर्णन प्राप्त होता है जो उत्तरकालीन ग्रथो के मगध के सदृश बतलाया जाता है।[8]

ऐसा प्रतीत होता है कि मगध देश की एक अलग वर्णमाला थी जिसमे बोधिसत्व ने दक्षता प्राप्त की थी।[9] गिरिबज्ज (सस्कृत गिरिव्रज), इसिगिलि, वेपुल्ल (वंकक और सुपन[10]), वेभार, पाण्डव और गिज्झकूट[11] नामक पाँच पहाड़ियो से परिवृत्त था।

बिम्बसार के राज्यकाल मे मगध मे 80,000 गाँव समाविष्ट थे और तपोद

---

[1] दिव्यावदान, 425.

[2] रामायण, I, 32, 7.

[3] महाभारत, II, 24-44.

[4] वही, II, 20, 30.

[5] पो० हि० ऑव एं० इं०, पृ० 70.

[6] बि० च० लाहा, द लाइफ ऐंड वर्क ऑव बुद्धघोष, पृ० 87, टिप्पणी।

[7] बील, द लाइफ ऑव युवान च्वाङ्, पृ० 113.

[8] भागवतपुराण, I, 3, 24, तु० अभिधानचिन्तामणि, कीकटा-मागधाः वयाः।

[9] ललितविस्तर, 125-126.

[10] संयुक्त० II, 191-92.

[11] विमान वत्थु कामेंट्री, पृ० 82.

नदी इस प्राचीन नगर के किनारे बहती थी।[1] मगध के कुछ ग्रामो मे सेनानीगाम[2] जो मगध का एक बहुत अच्छा गाँव था, एकनाला[3] भारद्वाज सहित जिसमे ब्राह्मण लोग रहते थे जिसको कालातर मे बुद्ध ने अपने धर्म मे दीक्षित कर लिया था[4]; नालकगाम जहाँ सारिपुत्त ने जम्बुखादक नामक एक परिव्राजक मुनि को प्रवचन दिया था, ब्राह्मणो द्वारा निवसित खानुमत[5] और सिद्धत्तगाम[6] उल्लेखनीय हैं।

मगध बौद्ध धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था। यहाँ सारिपुत्त और मोग्गलान को बुद्ध ने अपने धर्म में दीक्षित किया था।[7] प्राय. सभी धर्मप्रचारक जो अशोक के धम्मप्रचार के लिए विभिन्न स्थानो को भेजे गये थे, मगध के निवासी थे।[8] बिम्बिमार बुद्ध का एक कट्टर अनुयायी था। जब बुद्ध राजगृह मे थे, उन्होने राजा से वैशाली जाने की अपनी इच्छा व्यक्त की। तब राजा ने बुद्ध के लिए एक सडक बनवायी और राजगृह से गगा तक की भूमि को समतल करवाया।[9]

बिम्बिमार के शासनकाल मे आग लग जाने के कारण राजगृह जलकर राख हो गया था। उस समय नव-राजगृह नामक एक नयी राजधानी का निर्माण करवाया गया। युवान च्वाड् ने बतलाया है कि जब कुशागारपुर या कुशाग्रपुर[10] (सभवत. मगध के प्राचीन राजा कुशाग्र के नाम के आधार पर लक्षित) आग से भस्म हो गया था, तब राजा बिम्बिसार श्मशान मे गये और नये राजगृह नगर का निर्माण करवाया। फाह्यान कहता है कि नये नगर का निर्माण अजातशत्रु ने करवाया था न कि बिम्बिसार ने।

राजगृह मे एक बौद्ध-सगीति हुयी थी।[11] राजगृह मे एक तोरण था जो शाम को बद कर दिया जाता था और कोई भी व्यक्ति यहाँ तक कि राजा भी इसमे

---

[1] विनयपिटक, I, 29; IV, 116-117.
[2] मज्झिम, I, 166-67.
[3] संयुक्त०, I, 172-73.
[4] वही, IV, 251-260.
[5] दीघ०, I, 127 और आगे।
[6] राकहिल, लाइफ ऑव द बुद्ध, पृ० 250.
[7] कथावत्थु, I, 89.
[8] समन्तपासादिका, I, 63.
[9] धम्मपद कामेंट्री, III, 439-40.
[10] पार्जिटर, एं० इं० हि० ट्रे०, पृ० 149.
[11] चुल्लवग्ग, 11वाँ खन्धक।

प्राचीन भारत के महाज नपद
बाह्लीक
कराकोरम पर्वत
काम्बोज
काबुल
कुभा नदी
गांधार
तक्षशिला
केकय
मद्र
हेलमन्द नदी
शतद्रु नदी
सिन्धु नदी
सरस्वती नदी
ब्रह्मावर्त
कुरु
हस्तिनापुर
गंगा नदी
पंचाल
मल्ल
इन्द्रप्रस्थ
विराट
मत्स्य
शूरसेन
सौवीर
लूनी नदी
कोसल
अयोध्या
कौशाम्बी
काशी
वत्स
चेदि
जनकपुर
विदेह
वज्जि
वैशाली
पाटलिपुत्र
मगध
राजगृह
प्राग्ज्योतिष
कामरूप
लौहित्य नदी
पुण्ड्र
किरात जन
वंग
सुह्म
समतट
अंग
उत्कल
अवन्ति
उज्जयिनी
नर्मदा नदी
आनर्त
सुराष्ट्र
भृगुकच्छ
ताप्ती नदी
विदर्भ
महानदी
कलिंग
गोदावरी नदी
अश्मक
कृष्णा नदी
आन्ध्र
पेन्नार नदी
कावेरी नदी
अंग्रेजी मील
० १०० २०० ३०० ४००
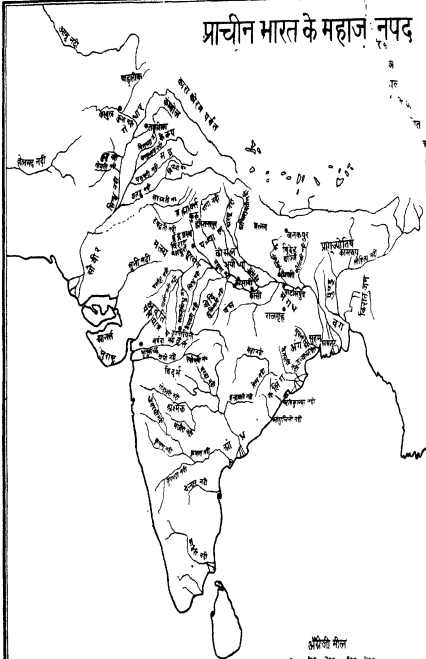
प्रवेश नही कर सकता था।[1] इसमे एक दुर्ग भी था जिसकी मरम्मत एक बार अजातशत्रु के अमात्य वस्सकार ने करायी थी। यथार्थतः राजगृह में 64 फाटक लगाये गये थे।[2]

राजगृह मे स्थित वेलुवन और कलन्दकनिवाप का उल्लेख प्रायः बुद्ध के आवासों के रूप में किया गया है। राजगृह नगर मे या उसके समीप नारदग्राम,[3] कुक्कुटाराम विहार,[4] गृध्रकूट पहाड़ी, यष्टिवन[5], उरुविल्वग्राम, प्रभासवन[6] और कोलितग्राम, सभी बुद्ध या बौद्ध धर्म से घनिष्ट रूप मे सबंधित महत्वपूर्ण स्थान हैं।

अशोक के समय मे पाटलिपुत्र मगध की राजधानी थी। इस नगर के चार पुर-द्वारो से अशोक की दैनिक आय 4,000 कहापण बतलायी जाती है।[7]

प्राचीन बौद्धकाल मे, मगध एक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक एव राजनीतिक केंद्र था और उत्तर भारत के सभी भागो से लोग व्यापार और वाणिज्य-कर्म के लिए इस नगर में एकत्र होते थे। अनेक व्यापारी इस शहर से होकर गुजरते थे या व्यापार के लिए यही रहते थे।

मगध औचित्यपूर्वक अपने एक नागरिक के रूप मे जीवक पर गर्व कर सकता है जो तक्षशिला विश्वविद्यालय से एक चिकित्सक के रूप मे निष्णात् हो जाने के पश्चात्[8] राजा बिम्बिसार का राजवैद्य हो गया था।[9] मगध-नरेश बिम्बिसार द्वारा भेजे जाने पर उसने अवन्ती के राजा प्रद्योत को पाण्डुरोग से मुक्त किया था।

गंगा, मगध तथा लिच्छवियो के गणराज्य के मध्य की सीमा थी। मगधवासियो और लिच्छवियो, दोनो के ही इस नदी पर समान अधिकार थे।[10] अङ्ग

---

[1] विनयपिटक, IV, 116-17.

[2] बि० च० लाहा, राजगृह इन ऐंश्येंट लिटरेचर, पृ० 8 और आगे।

[3] रा० ला० मित्र, ने० बु० लि०, पृ० 45.

[4] वही, पृ० 9-10.

[5] महावस्तु, III, 441.

[6] रा० ला० मित्र, ने० बु० लि० पृ० 166.

[7] समन्तपासादिका, I, 52.

[8] विनय टेक्स्ट्स, सै० बु० ई०, II, 174.

[9] विनय पिटक, II, 184-85.

[10] दिव्यावदान, पृ० 55.

और मगध के बीच होकर बहनेवाली चम्पा नदी दोनों जनपदो के बीच की सीमा थी।[1]

अङ्ग एव मगध के दोनो जनपदो मे यदा-कदा युद्ध हुआ करते थे।[2] एक बार वाराणसी के राजा ने अङ्ग और मगध दोनों का जीत लिया था।[3] एक बार मगध जनपद अङ्ग की सत्ता के अधीन हो गया था।[4] कोसलाधिप पसेनदि और मगध-नरेश अजातसत्तु मे एक युद्ध हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप लिच्छवियो की सहायता से अजातसत्तु ने मगध-निवासियो पर भी अपनी सत्ता का प्रसार कर लिया था। अजातसत्तु के राज्यकाल मे मगध और वैशाली के वज्जियो का संघर्ष भी प्रारंभ हुआ। बिम्बिसार और अजातसत्तु के काल मे मगध का इतना उत्कर्ष हुआ कि सदियों बाद, अशोक के कलिगयुद्ध तक, वस्तुत. उत्तर भारत का इतिहास मगध का इतिहास है।

मगध ने वैवाहिक और अन्य प्रकार की संधियों के माध्यम से न केवल उत्तरी पडोसियों से वरन् गन्धार महाजनपद के साथ मैत्रीपूर्ण सबध बनाये रखा जिसके राजा पकुस्साति ने उसके पास राजदूत और एक पत्र भेजा था।

काशी

काशी सोलह महाजनपदो मे एक था। वाराणसी काशी-जनपद की राजधानी थी। यह पुरी अन्य विभिन्न नामो यथा-सुरुन्धन, सुदस्सन, ब्रह्म-वड्ढन, पुप्फवती, रम्म और मोलिनी से विज्ञात थी।[6] यह बारह योजन विस्तृत थी।[7] वाराणसी को वरुणा नदी के तट पर स्थित बतलाया गया है।[8] यह नगर समृद्ध, विस्तृत और जनाकीर्ण था।[9] यह कपटी और कलहप्रिय व्यक्तियो द्वारा नही उत्पीडित था।[10]

---

[1] जातक, IV, 454.

[2] वही, IV, 454-55.

[3] जातक, V, 315 और आगे।

[4] जातक, VI, 272; दीघनिकाय, I,—सोनदण्ड सुत्तांत।

[5] संयुक्त निकाय, I, 83-85.

[6] जातक, IV, 119-20; IV,. 15.

[7] वही, VI, 160.

[8] महावस्तु, III, 402.

[9] दिव्यावदान, पृ० 73.

[10] वही, पृ० 98.

एक जन के रूप में काशी का सर्वप्राचीन उल्लेख अथर्ववेद के पैप्पलाद संस्करण मे प्राप्त होता है। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (कीलहार्न सस्करण, जिल्द, II, पृ० 413) मे काशेयक वस्त्र का उल्लेख किया है। काशी नगर वरणावती नदी के तट पर स्थित बतलाया गया है।[1] रामायण के अनुसार काशी एक राज्य था, न कि नगर।[2] वायुपुराण के अनुसार, काशी का राज्य गोमती नदी तक फैला हुआ था। बुद्ध के पूर्व, काशी एक महान् राजनीतिक सत्ता थी। सपूर्ण उत्तर भारत मे यह सर्वशक्तिशाली राज्य था।[3] कभी काशी का आधिपत्य कोशल के ऊपर हो जाता था और कभी कोशल काशी को जीत लेता था, किंतु बुद्ध के समय मे इसकी राजनीतिक शक्ति समाप्त हो गयी थी। कुछ काल तक यह कोशल और कुछ समय तक मगध के राज्य में समाविष्ट था। काशी पर अधिकार करने के लिए कोशल के पसेनदि और मगध के अजातसत्तु मे लड़ाइयाँ हुयी थी। अत मे काशी को पराजित करने के अनंतर इसे मगध-राज्य मे मिला लिया गया था। कोसल जन को पराजित करने के पश्चात् अजातसत्तु उत्तर भारत का सबसे शक्तिशाली राजा बन गया था।[4]

वाराणसी नगर बुद्ध के पदार्पण से पवित्र हो गया था। वह यहाँ अपने श्रेष्ठ मत का प्रवचन करने आये थे। यही पर वाराणसी के निकट मृगवन मे उन्होंने धम्मचक्क-विषयक अपना प्रथम उपदेश दिया था, (मज्झिम, I, 170 और आगे, सयुक्त, V, 420, और आगे, कथावत्थु, 97, 559, सौन्दरनन्दकाव्य, III, श्लोक, 10-11, बुद्धचरित काव्य, XV, श्लोक 87; ललितविस्तर, 412-13)। बुद्ध ने अपने जीवन का एक बडा भाग वाराणसी में व्यतीत किया और यही पर उन्होंने कुछ अत्यत महत्त्वपूर्ण प्रवचन दिये थे तथा अनेक व्यक्तियो को अपने धर्म मे दीक्षित किया था (अङ्गुत्तर, I, 110 और आगे, 279-280; III, 320-322, 392-399 और आगे, सयुक्त०, I, 105-106, विनय टेक्स्टस, I, 102-108, 110-112)।

वाराणसी व्यापार और वाणिज्य का एक बड़ा केंद्र था। इस नगर के धनी व्यापारी, व्यापारिक माल से लदे हुए जहाजो-सहित विस्तृत समुद्र के पार जाया

---

[1] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, पृ० 117.

[2] आदि काण्ड, XII, 20.

[3] जातक, III, 115 और आगे; विनय टेक्स्टस, भाग II, पृ० 30 और आगे; जातक, I, 262 और आगे।

[4] संयुक्त० I, 82-85.

करते थे (तु० महावस्तु, III, 286)। एक धनी व्यापारी व्यापार करने के उद्देश्य से वाराणसी आया था (महावस्तु, 166-167)। श्रावस्ती और वाराणसी तथा वाराणसी और तक्षशिला के मध्य व्यापारिक संबंध थे (धम्मपद कामेंट्री, III, 429; I, 123)। वाराणसी के लोग कलाओ और विज्ञानो को सीखने के लिए तक्षशिला जाया करते थे (जातक, II, 47)।

कोशल

प्राचीन बौद्धकाल मे कोशल एक महत्वपूर्ण जनपद था। प्राचीन कोशल जनपद दो भागो मे विभाजित था जिनके मध्य सरयू नदी विभाजक रेखा थी. उत्तर की ओर स्थित भाग को उत्तर कोशल और दक्षिणी भाग को दक्षिण कोशल कहा जाता था (रा० ला० मित्र, ने० बु० लि०, पृ० 20)। बुद्ध ने अपना अधिकाश समय कोशल की राजधानी श्रावस्ती मे बिताया था। उन्होने कोशल के साला नामक एक ब्राह्मण गाँव मे कई प्रवचन-मालाएँ दी थी और ब्राह्मण-गृहस्थो को इस नूतनमत मे परिवर्तित कर लिया था (मज्झिम, I, 285 और आगे)। कोशल के नगरविन्द नामक एक अन्य ब्राह्मण गाँव के ब्राह्मणो को बुद्ध ने अपने मत मे दीक्षित कर लिया था (मज्झिम० III, 290 और आगे)। वेनागपुर नामक ब्राह्मण-गाँव के ब्राह्मण गृहस्थो ने भी बौद्धमत को स्वीकार कर लिया था (अगुत्तर, I, 180, और आगे)। कोशल के बावरी नामक एक प्रसिद्ध अध्यापक ने अस्सक राज्य मे गोदावरी नदी के तट पर एक आश्रम का निर्माण किया था। वह एक अन्य ब्राह्मण के साथ अपने किसी विवाद को तय कराने के लिए बुद्ध से मिला था जिस समय वे कोशल मे थे (सुत्तनिपात, 190-192)। निकटवर्ती सत्ताओ के साथ कोशल के वैवाहिक संबंध थे। कोशल के एक राजकुमार ने वाराणसी के राजा की एक पुत्री से विवाह किया था (जातक, III, 211-213)। पसेनदि के पिता महाकोसल ने अपनी पुत्री का विवाह मगध-नरेश बिम्बिसार के साथ किया था (जातक, II, 237, IV, 342 और आगे)। महाकोशल और बिम्बिसार के पुत्रो, क्रमश. पसेनदि और अजातसत्तु मे एक भयकर युद्ध हुआ था। किंतु दोनो ही नरेशो ने एक प्रकार का समझौता कर लिया। अजातसत्तु ने पसेनदि की पुत्री वाजिरा से विवाह कर लिया और फलत. काशी पर उसका अधिकार हो गया (सयुत्त, I, 82-85; जातक, IV, 342 और आगे)। कपिलवस्तु के शाक्य, कोशल के राजा पसेनदि के अधीन हो गये थे (डायलाग्स आव द बुद्ध, भाग III, पृ० 80)।

श्रावस्ती और साकेत कोशल की राजधानियाँ थी। महाकाव्यो और कुछ

बौद्ध ग्रथो के अनुसार, अयोध्या सबसे पुरानी और तदनतर साकेत दूसरी राजधानी थी। बुद्ध के काल मे अयोध्या एक महत्त्वहीन नगर हो गया था (बुद्धिस्ट इडिया, पृ० 34)। किंतु साकेत और श्रावस्ती भारत के छह महानगरो में से दो थे (तु० महापरिनिब्बान सुत्तांत)। कुछ लोगो का विचार है कि साकेत और अयोध्या एक ही थे, किन्तु रीज डेविड्स ने यह बतलाया है कि बुद्ध के समय मे दोनो ही नगरो का अस्तित्व था। साकेत और श्रावस्ती के अतिरिक्त खास कोशल मे सेतव्य और उकट्ठ जैसे अन्य छोटे नगर थे। श्रावस्ती मे बुद्ध ने स्त्रियो को बौद्ध सघ मे प्रवेश करने की आज्ञा दी (मज्झिम, III, 270 और आगे)। महाश्रेष्ठी अनाथपिण्डिक और अति उदारमना महिला विसाखा-मिगारमाता, श्रावस्ती के निवासी थे। अनाथपिण्डिक ने अपने जेतवन का दान बुद्ध को दिया था। बुद्ध ने एक बार वहाँ पर निवास किया था (महावस्तु, III, 101)।

श्रावस्ती में प्रसिद्ध भिक्षु-भिक्षुणियों की एक विशाल संख्या थी (धम्मपद कामेंट्री, II, 260 और आगे, 270 और आगे, वही, I, 115, थेरगाथा, पृ० 2; थेरीगाथा, पृ० 124)।

वज्जिगण

वज्जिगण, आठ प्रसघक कुलो मे (अट्ठकुल) सम्मिलित थे जिनमे से विदेह, लिच्छवि और वज्जिगण प्रसिद्ध हुए। अन्य प्रसघक कुल सभवतः ज्ञात्रिक, उग्र भोज और ऐक्ष्वाकुगण थे। आठवाँ कुल अज्ञात है। वज्जि (वृज्जि) का उल्लेख पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (IV 2,131) मे किया है। कौटिल्य ने वृज्जिको और लिच्छवियों मे अतर माना है। वृज्जिक केवल सघ का ही नाम नही, वरन् इस सघ के एक प्रसघक कुल का नाम भी था। लिच्छवियो की भाँति वज्जिगण भी प्रायः वैशाली से सबंधित थे, जो न केवल लिच्छवियो की राजधानी वरन् सपूर्ण महासघ की महानगरी थी। इसकी विशालता के कारण ही इसे वैशाली कहा जाता था।[1] इसमे तीन विषय (जिले) थे। इसे बिहार के मुजफ्फरपुर जिले मे बसाढ़ से समीकृत किया जा सकता है। बुद्ध के समय मे यह नगर तीन प्राचीरो से परिवेष्टित था, जो परस्पर एक गावुत पर स्थित थी, और तीन स्थानो पर इनमे प्रहरियों के अट्टालकयुक्त (बुर्जदार) तोरण और भवन थे। लिच्छवियो द्वारा आमन्त्रित किय जाने पर बुद्ध यहाँ पर एक बार पधारे थे। यह नगर प्रमुदित, ऐश्वर्यपूर्ण, समृद्ध एवं जनसकुल, आकर्षक एव आनंदपूर्ण

---

[1] पपंचसूदनी, II, पृ० 19.

था। इसमें अनेक इमारतें, कँगूरेदार भवन, प्रमदवन और पुष्कर[1] विजय-तोरण और छाये हुये प्रांगण आदि थे। यह नगरी सौंदर्य में वस्तुत अमरावती को लज्जित करती थी।[2] खाद्यान्नो से यह सुपूरित थी। भिक्षाएँ सुलभ थी और खलिहान प्रचुर थे। कोई भी व्यक्ति भिक्षाटन से ही या लोगो के प्रसाद से अपना जीविकोपार्जन कर सकता था।[3] वैशाली के निवासियों ने एक यह नियम बनाया था कि वहाँ के व्यक्तियो की पुत्रियाँ गणभोग्या होनी चाहिये और इसलिए उनका विवाह नही किया जाना चाहिये।[4]

एक सड़क वैशाली से राजगृह को और दूसरी वैशाली से कपिलवस्तु को जाती थी। अनेक शाक्य वारागनाएँ बुद्ध से दीक्षा ग्रहण करने के लिए यहाँ आई थी जिस समय वे महावन मे निवास कर रहे थे।[5] बौद्ध धर्म के इतिहास मे वैशाली मे आयोजित बौद्ध सगीति महत्वपूर्ण है।[6] वैशाली के लिच्छवियो ने बुद्ध एव बौद्ध सघ को कई चैत्य प्रदान किये थे। वैशाली की प्रसिद्ध नगरवधू आम्रपाली ने भी अपना आम्रकुज बौद्धसघ को दान दे दिया था।[7]

बुद्ध का कार्यक्षेत्र न केवल मगध और कोशल तक ही सीमित था, वरन् वैशाली तक भी था। उनके कई प्रवचन या तो यहीं पर अम्बपाली के आम्र-कुज मे या महावन के कूटागारशाला में दिये गये थे।

वज्जियों ने सघ या गण का निर्माण किया था। दूसरे शब्दो मे, वे सघटित पौरसघ द्वारा प्रशासित होते थे।[8] लिच्छवियो मे परस्पर सौहार्द्र और ऐक्य था।[9] बुद्ध ने यह भविष्यवाणी की थी कि जब तक लिच्छविगण कर्मठ, अध्यवसायी, उत्साही और सक्रिय रहेंगे, तब तक समृद्धिश्री उनके अनुकूल रहेगी, न कि विपत्ति। उन्होंने यह भी भविष्यवचन किया था कि यदि लिच्छविगण विलासी

---

[1] **विनय टेक्स्टस, सें० बु० ई० II, 171; लेफमन द्वारा संपादित ललित-विस्तर, अध्याय III, पृ० 21.**

[2] **महावस्तु, I, 253 और आगे।**

[3] **विनय टेक्स्टस, II, पृ० 117.**

[4] **बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता, 20वाँ पल्लव, पृ० 38**

[5] **विनय टेक्स्टस, II, 210-11; III, 321 और आगे।**

[6] **वही, III, 386 और आगे।**

[7] **लाहा, महावस्तु, पृ० 44.**

[8] **मज्झिम, I, 231.**

[9] **बुद्धिस्ट सुत्ताज, सें० बु० ई०, जिल्द, XI, पृ० 3-4.**

एवं आलसी हो जायेंगे तब निश्चय ही वे मगध-नरेश अजातसत्तु से पराजित होंगे।[1]

मगध एवं वैशाली के राजनीतिक सबध मैत्रीपूर्ण थे। अजातसत्तु वैदेहीपुत्र नाम से यह प्रकट होता है कि बिम्बसार ने एक लिच्छवि-कुमारी से विवाह करके लिच्छिवियो के साथ वैवाहिक सबध स्थापित किया था।[2] कोशल-नरेश प्रसेन-जित् के साथ भी लिच्छवियो का मैत्रीपूर्ण सबंध था।[3]

मगध-नरेश अजातसत्तु ने वज्जि-सत्ता को नप्ट करने का सकल्प किया था। अजातसत्तु और लिच्छवियो मे युद्ध के प्रारम्भ का प्रत्यक्ष कारण गगा के समीप स्थित एक बदरगाह था जिसके अर्धभाग पर अजातसत्तु और शेष अर्ध पर लिच्छवियो का अधिकार था। यही निकटवर्ती पर्वतोपकठ मे बहुमूल्य रत्नो की एक खान थी। अजातसत्तु ने देखा कि अति शक्तिशाली लिच्छविगण दुर्दात हैं। इसलिए उसने अपने मत्री सुनीध और वस्सकार को उनमे फूट डालने के लिए भेजा। वस्सकार लिच्छवि-राजकुमारो मे विभेद उत्पन्न करने मे सफल रहा। इस प्रकार लिच्छवि अजातसत्तु द्वारा नप्ट किये गये।[4]

मल्ल—मल्लो का जनपद दो भागो मे विभक्त था जिनकी राजधानियाँ कुशावती या कुशीनारा तथा पावा थी। कुशीनारा को गोरखपुर जिले के पूर्व मे छोटी गडक के तट पर स्थित कसिया और पावा को कसिया से बारह मील उत्तर-पूर्व की ओर पडरौना नामक गाँव से समीकृत किया जा सकता है। मल्लो का शालवन जहाँ बुद्ध की मृत्यु हुयी थी, सभवत: गडक मे समीकृत हिरण्यवती के समीप स्थित था।[5] जब मल्लो का सविधान राजतत्रात्मक था, तब उनकी राजधानी का नाम कुशावती था किन्तु बुद्ध के समय मे जब राजतत्रात्मक सविधान की जगह उनका सविधान गणतत्रात्मक हो गया, तब इसका नाम बदल कर कुशीनारा हो गया। महापरिनिब्बान-सुत्तात मे कुशीनारा को एक उपनगर बतलाया गया है, किंतु बुद्ध ने इसके प्राचीन वैभव का वर्णन करते हुये इसे अपने निर्वाण

---

[1] संयुत्त० II, पृ० 267-68.

[2] सयुत्त० II, 268; सुमंगलविलासिनी, I, 47; पपंचसूदनी I, 125; सारत्थपकासिनी, II, 215; दिव्यावदान, पृ० 55.

[3] मज्झिम० II, पृ० 100-101.

[4] दीघ निकाय, II, 72 और आगे।

[5] स्मिथ, अ० हि० इं० 167, टिप्पणी।

की प्राप्ति का स्थल चुना। उन्होने स्वयं कहा है कि कुशीनारा प्राचीन कुशावती थी।[1]

मल्लो का सघराज्य था। मल्लो एव लिच्छवियों का सबध कुल मिला कर मैत्रीपूर्ण था, किंतु कभी-कभी उनमे संघर्ष भी हो जाते थे।[2] मल्लो मे भी बौद्ध धर्म के अनेक अनुयायी हुए।[3]

चेदि—प्राचीन चेदि देश यमुना के निकट स्थित था। यह स्थूल रूप से आधुनिक बुदेलखड और समीपस्थ क्षेत्रो को द्योतित करता है। चेदि देश की राजधानी सोत्थिवती नगरी थी जो सभवत. महाभारत की शुक्तिमती नामक नगरी से समीकृत की जा सकती है।[4] सहजाति और त्रिपुरी चेदि राज्य के अन्य महत्वपूर्ण नगर थे।[5] काशी मे चेदि तक का मार्ग असुरक्षित था।[6] वेस्सन्तर के जन्मस्थान जेतुत्तरनगर से 30 योजन दूर पर चेतराष्ट्र स्थित था।[7] बौद्धधर्म का यह एक महत्वपूर्ण केंद्र था।[8] चेदियों के बीच रहते हुये, अनुरुद्ध ने अर्हत पद प्राप्त किया था।[9] बुद्ध अपने मत का प्रचार करने के लिए चेदि गये थे।[10]

वंस—वसो या वत्सो के जनपद की राजधानी कौशाम्बी थी, जो इलाहाबाद के समीप आधुनिक कोसम से समीकृत की जा सकती है। सुसुमारगिरि के भर्गों का राज्य इसके अधीन था।[11] कौशाम्बी नगर कुशाम्ब नामक एक यती के आश्रम-स्थल पर बसाया गया था।[12] वत्सजन काशी के किसी राजा के

---

[1] दीघ, II, पृ० 146-47.

[2] तु० बन्धुल की कहानी; लाहा, सम क्षत्रिय ट्राइब्स ऑव ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 160-61.

[3] विनय टेक्स्टस, III, 4 और आगे; II, 139; साम्स ऑव द ब्रदेरन, 80, 90.

[4] महाभारत, III, 20, 50 और XXV, 83, 2.

[5] अंगुत्तर, III, 355.

[6] जातक, संख्या, 48.

[7] जातक, VI, 514-15.

[8] अंगुत्तर, III, 355-56, V, 41 और आगे; 157-61.

[9] वही, VI, 228 और आगे।

[10] दीघ, II, 200, 201, 203.

[11] भंडारकर, कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 63; जातक, सं० 353.

[12] लाहा, सौन्दरनन्द-काव्य बंगला, अनुवाद, पृ० 9.

वंशज[1] बतलाये जाते है। कौशाम्बी उन महानगरो मे से एक बतलाया गया है जहाँ बुद्ध को महापरिनिब्बान प्राप्त करना चाहिये। जटिलो के नेता बावरी के अनुयायी कौशाम्बी नगर गये थे।[2] पिण्डोल भारद्वाज कौशाम्बी मे स्थित घोषिताराम मे रहते थे। वह कौशाम्बी-नरेश उदेन (उदयन) के राज-पुरोहित का पुत्र था।[3] कौशाम्बी-नरेश उदेन और पिण्डोल भारद्वाज मे धार्मिक विषयो पर एक वार्ता हुयी थी।[4] जब बुद्ध घोषिताराम मे थे, उन्होने धम्म, विनय आदि विषयो पर प्रवचन दिया था।[5]

कुरु—कुरु नामक एक जनपद था और यहाँ के राजा भी कुरु नाम से पुकारे जाते थे।[6] प्राचीन साहित्य मे उत्तर एवं दक्षिण कुरु नामक दो कुरु प्रदेशो का वर्णन प्राप्त होता है। बुद्ध ने कुरुओ के प्रति कुछ गभीर प्रवचन कम्मासधम्म नामक एक कुरु-नगर मे किये थे। थेर रट्ठपाल एक कुरु-भद्र था, कोरव्य-नरेश से जिसके धार्मिक-विवाद का उल्लेख मज्झिम निकाय मे प्राप्त होता है।[7] कुरुओ की उत्पत्ति के विषय मे यह कहा जाता है कि जबुद्वीप के मान्धाता नामक एक चक्कवत्ती नरेश ने पुब्ब विदेह (पूर्व विदेह) अपरगोयान् और उत्तरकुरु देशो पर विजय प्राप्त की थी। उत्तरकुरु से लौटते समय वहाँ के निवासी बहुत बडी सख्या में मान्धाता का अनुगमन करते हुये जबुद्वीप आये ओर वह स्थान जहाँ पर वे बस गये, कालातर मे कुरुराष्ट्र के नाम से विख्यात हुआ।[8] बुद्ध के अनेक धार्मिक प्रवचनो को सुन कर कुरुदेश के अधिकतर निवासियों ने वौद्धमत ग्रहण कर लिया था।[9]

प्राचीन कुरु देश मे कुरु-क्षेत्र या थानेश्वर समाविष्ट बतलाया जाता है।

---

[1] हरिवंश, 29-73; महाभारत, XII 49, 80.

[2] सुत्तनिपात कामेंट्री, II, 584.

[3] साम्स ऑव द ब्रेदेरन, पृ० 110-111.

[4] संयुक्त० IV, पृ० 110-112.

[5] विनय टेक्स्टस, III, पृ० 233.

[6] पपचसूदनी, I, 25.

[7] मज्झिम०, II, 65 और आगे।

[8] पपचसूदनी, I, 225-26.

[9] अंगुत्तर०, V, 29-32; संयुत्त० II, 92-93, 107 और आगे; मज्झिम, I, 55 और आगे, 501 और आगे; II, 261 और आगे; दीघ०, II, 55 आगे।

इस प्रदेश मे सोनपत, अमीन, करनाल और पानीपत, संमिलित थे और यह उत्तर में सरस्वती तथा दक्षिण मे दृषद्वती के मध्य स्थित था। कुरुप्रदेश 300 लीग विस्तृत था और इसकी राजधानी इन्द्रप्रस्थ 7 लीग विस्तृत थी।[1]

बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता[2] मे निश्चित रूप से यह बतलाया गया है कि हस्तिनापुर कुरु राजाओं की राजधानी थी। हस्तिनापुर के राजा अर्जुन की यह आदत थी कि वह उन संतो की हत्या करवा देता था जो उसके प्रश्नो का उत्तरों द्वारा समाधान नही कर पाते थे।[3] हस्तिनापुर का एक अन्य राजा सुधनु जो सुबाहु का पुत्र था, सुदूर देश की एक किन्नरी मे प्रेमाविद्ध हो गया था और वह उसको साथ लेकर राजधानी मे लौटा, जहाँ पर राजकार्य मे वह अपने पिता का बहुत दिनो तक सहयोग करता रहा।[4]

पंचाल—पंचाल देश उत्तर और दक्षिण दो भागो मे विभक्त था। भागीरथी इनके मध्य की विभाजक रेखा थी। वैदिक ग्रथो मे प्राच्य पंचाल एवं उसके पश्चिमी भागो का उल्लेख प्राप्त होता है।[5] शतपथ ब्राह्मण मे पचालो को क्रिवि कहा गया है। दिव्यावदान (पृ० 435) के अनुसार उत्तर पचाल की राजधानी हस्तिनापुर थी किंतु कुम्भकार जातक मे काम्पिल्य नगर (कम्पिल्लनगर) इसकी राजधानी बतलायी गयी है।[6] महाभारत (138, 73-74) के अनुसार उत्तर पचाल की राजधानी अहिच्छत्र थी जिसे बरेली जिले मे आधुनिक रामनगर से समीकृत किया जाता है। दक्षिण पचाल की राजधानी काम्पिल्य थी जिसकी पहचान फर्रुखाबाद जिले के आधुनिक कंपिल से की जा सकती है। कभी उत्तर पचाल कुरुराष्ट्र मे संमिलित रहता था[7] और इसकी राजधानी हस्तिनापुर होती थी, किंतु कभी यह काम्पिल्यराष्ट्र का एक अंग होता था।[8] कभी काम्पिल्यराष्ट्र के राजा उत्तर पचालनगर मे अपना दरबार करते थे, किंतु कभी उत्तर पंचालराष्ट्र

---

[1] जातक, संख्या, 537.

[2] तृतीय पल्लव, 116; 64वाँ पल्लव, पृ० 9.

[3] महावस्तु, III, 361.

[4] वही, II, 94-95.

[5] वैदिक इंडेक्स, I, 469, संहितोपनिषद्ब्राह्मण।

[6] कावेल, जातक, III, 230.

[7] जातक, संख्या, 505.

[8] वही, 323, 513, 520.

के नरेश काम्पिल्य मे अपना दरबार करते थे।[1] विशाख, जो पचाल-नरेश की लड़की का लड़का था, अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् राज्याधिकारी हुआ था। उसने धम्म पर बुद्ध का प्रवचन सुनने के पश्चात् सन्यास ले लिया था।[2]

पचाल मूलत. दिल्ली से पश्चिम और उत्तर मे हिमालय की तराई मे चबल तक का प्रदेश था। स्थूल रूप से यह आधुनिक बदायूं, फर्रुखाबाद और निकटवर्ती जिलो को द्योतित करता है।

मत्स्य—मत्स्य देश में वर्तमान जयपुर का क्षेत्र समिल्ति था। इसमे भरतपुर के एक खड सहित वर्तमान अलवर का सपूर्ण प्रदेश समाविष्ट था। ऋग्वेद[3] के अनुसार मत्स्य देश इन्द्रप्रस्थ के दक्षिण या दक्षिणपश्चिम मे और शूरसेन के दक्षिण मे स्थित था। मत्स्यो के राजा विराट की राजधानी होने के कारण, इसकी राजधानी का नाम भी विराटनगर या बैराट था।

शूरसेन—यमुना-तट पर स्थित मथुरा शूरसेनो की राजधानी थी। वर्तमान् मथुरा नगर से 5 मील दक्षिण पश्चिम की ओर स्थित महोली मे मथुरा का समीकरण किया जाता है। इसे मद्रास मे वैगाई नदी के नट पर स्थित पाण्ड्य राज्य की दूसरी राजधानी मदुरा या मधुरा मे पृथक् समझना चाहिये। इन्होंने धनजय कोरब्ब और पुण्णक यक्ख के पाँसे के खेल को देखा था।[4] प्राचीन यूनानी लेखको ने शूरसेन देश को सूरसेनोइ (Soursenoi) और इसकी राजधानी को मेथोरा (Methora) कहा है। कई शताब्दियों तक बौद्ध धर्म मथुरा मे प्रबल रहा। महाकच्चायन ने मथुरा में जाति-विषय पर एक प्रवचन दिया था।[5] मथुरा से वेरञ्जि की ओर जाते समय बुद्ध ने एक पेड के नीचे विश्राम किया था, जहाँ पर अनेक गृहस्थों ने उनकी पूजा की थी।

राम के भाई शत्रुघ्न ने मथुरा की स्थापना की थी। शत्रुघ्न के एक पुत्र का नाम शूरसेन था जिसके नाम पर इस देश का नाम पडा है।[6] कस द्वारा यादवो को

---

[1] जातक, संख्या 408; पो० हि० एं० इं०, पृ० 85.

[2] साम्स ऑव द ब्रेदेरन, पृ० 152-153; तु० थेर-थेरी गाथा (पा० टे० सो०) पृ० 27.

[3] VII, 18, 6; तु० गोपथ-ब्राह्मण, I, 2, 9 बिब्लियोथेका इंडिका सीरीज, पृ० 30, रा० ला० मित्र संस्करण।

[4] कावेल, जातक, I, 137.

[5] मज्झिम निकाय, II, 83 और आगे।

[6] कनिंघम, एं० ज्यॉ० इं०, पृ० 706.

आक्रांत करके मथुरा का अधिपति बनने की और श्रीकृष्ण द्वारा उसकी हत्या की महाकाव्य एव पुराणो से उल्लिखित कहानी का वर्णन न केवल पतञ्जलि ने किया है, वरन् घट-जातक[1] में भी उसका वर्णन किया गया है।

जब मेगस्थनीज़ ने शूरसेनो के विषय में लिखा था तब मथुरा अवश्य ही मौर्य साम्राज्य का एक भाग रहा होगा। कुषाणों के आधिपत्य-काल मे यह पुन. बौद्ध-धर्म एव सस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र हो गया था। बुद्धो एव बोधिसत्त्वो की अनेक प्रतिमाएँ यहाँ से प्राप्त हुयी है।[2]

अस्सक—अस्सक जम्बुद्वीप का एक महाजनपद था जिसकी राजधानी पोतन या पोतलि थी। पोतन महाभारत (I, 77. 47) मे वर्णित पौदन्य था। सुत्त-निपात (V. 977) मे दक्षिणापथ मे स्थित एक अन्य अस्सक देश का वर्णन प्राप्त होता है। अलक या मूलक के समीप अस्सक देश मे गोदावरी नदी के तट पर बावरी ब्राह्मण रहता था। दन्तपुर-नरेश कालिंग और पोतन-नरेश अस्मक के सबध मैत्रीपूर्ण नही थे, किन्तु बाद मे वे प्रेमभाव से रहने लगे थे।[3] अस्सक देश के एक राजा को महाकच्चायन ने दीक्षा दी थी।[4] राजा खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख से हमे यह ज्ञात होता है कि खारवेल ने पश्चिम की ओर अस्सक या असिक नगर मे सत्रास उत्पन्न करने के लिए एक विशाल सेना भेजी थी। चुल्लकालिंग जातक का अस्सक और हाथीगुम्फा अभिलेख मे उल्लिखित असिक नगर सभवतः, सुत्तनिपात का अस्सक ही है, जो गोदावरी के तट पर स्थित है। अस्सक, सस्कृत अश्मक या अश्वक का वाचक है जिसका उल्लेख असग ने अपने सूत्रालकार मे सिधु नदी की घाटी मे स्थित एक देश के रूप मे किया है।

अतएव असग का अश्मक, यूनानी लेखको का अस्सकेनस-राज्य ही प्रतीत होता है, जो सरस्वती के पूर्व मे, समुद्र से 25 मील दूर, स्वात की घाटी मे स्थित था। मार्कण्डेयपुराण एव बृहत्सहिता के लेखको ने अश्मको को पश्चिमोत्तर मे स्थित बतलाया है। प्राचीन पालिग्रथो मे अस्सक को सदैव अवन्ती से सबद्ध बतलाया गया है। कौटिलीय अर्थशास्त्र के भाष्यकार भट्टस्वामी ने अश्मक को महाराष्ट्र से समीकृत किया है। वस्तुत. बौद्धो का अस्सक देश चाहे यह

---

[1] **जातक, संख्या, 454.**

[2] **ज० रा० ए० सो० बं०, लेटर्स, भाग XIII, संख्या 1, 1947 में लाहा का 'मथुरा इन ऐंश्येंट इंडिया' नामक लेख।**

[3] **जातक, III, 3-5.**

[4] **विमानवत्थु कामेंट्री, 259 और आगे।**

महाराष्ट्र से समीकृत हो या गोदावरी तट पर स्थित हो मध्यदेश के बाहर स्थित था।

अवन्ती—अवन्ती षोडश-महाजनपदो मे से एक था जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी, इसका निर्माण अच्चुतगामी ने कराया था।[1] अवन्ती स्थूल रूप से आधुनिक मालवा, निमाड और मध्यप्रदेश के समीपस्थ जिलो को द्योतित करता था। दे० रा० भंडारकर ने ठीक ही बतलाया है कि प्राचीन अवन्ती दो भागों में विभक्त था। उत्तरी भाग की राजधानी उज्जयिनी और दक्षिणी भाग, जिसे अवन्ती दक्षिणापथ कहा जाता था, की राजधानी माहिष्मती थी।[2] दीघनिकाय के महागोविदसुत्तात के अनुसार, माहिस्सती अवन्ती की राजधानी थी, जिसका राजा वेस्सभु था। स्पष्टत यह दक्षिणापथ मे स्थित अवन्ती देश के प्रति संकेत करता है। महाभारत (II, 31, 10) मे अवती और माहिष्मती दो अलग देश बतलाये गये है।

अवन्ती बौद्ध धर्म का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था। अनेक प्रसिद्ध थेर एव थेरियाँ या तो यहाँ उत्पन्न हुयी थी या यही रहती थी।[3] महाकच्चायन उज्जयिनी मे चण्डपज्जोत (चण्डप्रद्योत) के पुरोहित के परिवार मे पैदा हुआ था। उसने राजा को बौद्ध धर्म मे दीक्षित किया था। इसिदत्त का धर्म-परिवर्तन भी महाकच्चायन ने ही किया था।[4] वह अवन्ती का निवासी था। सोण कुटिकण्ण भी उसी के द्वारा दीक्षित हुआ था।[5] बुद्धकाल मे भारत छोटे स्वतन्त्र राज्यो मे विभक्त था। इन राज्यो मे बिम्बिसार एव अजातशत्रु के राज्यकाल मे मगध, पसेनदि के अधीन कोसल, पज्जोत (प्रद्योत) के अधीन अवन्ती और उदेन की अधीनता मे कोसाम्बी ने छठी एव पाँचवी शती ई० पू० मे भारतीय राजनीति के रंगमंच पर महत्त्वपूर्ण भूमिकाएँ अदा की थी। इन राजाओ मे विद्वेष था और प्रत्येक राज्य एक दूसरे के मूल्य पर अपनी सत्ता के प्रसार के लिए प्रयत्नशील था। पज्जोत (प्रद्योत) उदेन (उदयन) पर अपना आधिपत्य स्थापित करना चाहता था, किंतु उसे अपने

---

[1] **दीपवंस**, 57.

[2] **कार्माइकेल लेक्चर्स**, 1918, पृ० 54.

[3] **थेरगाथा कामेंट्री** 39; **थेरीगाथा कामेंट्री** 261-264; **थेरगाथा**, 120; **उदान**, V, 6; **संयुत्त**, III, 9; IV, 117; **अंगुत्तर**, I, 23; V, 46; **मज्झिम**, II, 194, 223; **विनय टेक्स्टस**, भाग II, पृ० 32; **थेरगाथा** 369.

[4] **साम्स ऑव द ब्रेदेरन**, पृ० 107.

[5] **धम्मपद कामेन्ट्री**, IV, 101.

उद्देश्य मे सफलता न मिली। उसने उदयन के साथ अपनी पुत्री वासमदत्ता (वासवदत्ता) का विवाह कर दिया। इस वैवाहिक सबध ने कौसाम्बी को पज्जोत की अधीनता से बचाया। उदयन ने मगध-नरेश के साथ भी वैवाहिक संधि की थी। ये दोनो राज-विवाह, कौशाम्बी जो अवती एवं मगध का अतस्थ राज्य था, की राजनीतिक स्वाधीनता के स्थायित्व के लिए आवश्यक थे।

गन्धार—यह षोडश महाजनपदो की तालिका मे समिलित है। गन्धार लोग एक प्राचीन जन थे जिनकी राजधानी तक्षशिला थी। मोग्गलिपुत्त तिस्स ने थेर मज्झन्तिक को कश्मीर-गन्धार मे बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा था।[1] गन्धार मे उत्तर-पजाब के पेशावर और रावलपिंडी (प० पाकिस्तान) के जिले समाविष्ट है। कश्मीर-गन्धार एव विदेह मे व्यापारिक सबध थे।[2] गन्धार-नरेश पकुस्साति मगध-नरेश बिम्बिसार का समकालीन था। बताया जाता है कि उसने एक राजदूत और पत्र अपनी मित्रता के परिचय के रूप मे अपने सम-कालीन मगध-नरेश के पास भेजा था। उसने अवन्ती-नरेश प्रद्योत से युद्ध किया था और उसे पराजित किया था।

धारयद्वगु (Darius) (516 ई० पू०) के बेहिस्तुन अभिलेख मे पारसीक साम्राज्य के एक अधीनस्थ राज्य के रूप मे गडर या गन्धार का उल्लेख है। छठी शती ई० पू० के उत्तरार्ध मे गन्धार-जनपद पर साखामनीष राजाओ ने विजय प्राप्त कर ली थी। अशोक के काल मे गन्धार उसके साम्राज्य का एक भाग था। गन्धार का उल्लेख अशोक के पाँचवे शिलालेख मे किया गया है।

कम्बोज—यह षोडश महाजनपदो मे से एक था। यह सुदर घोडो के लिए विख्यात था।[3] कम्बोज लोग स्थूल रूप से पश्चिमोत्तर सीमात प्रदेश के हजारा जिले सहित राजोरी या प्राचीन राजपुर के निकट रहते थे। थेर महारक्खित ने कम्बोज तथा अन्य स्थानो पर बौद्ध-धर्म की स्थापना की थी।[4]

द्वारका, कम्बोज के साथ वर्णित है। यह स्पष्ट रूप से नही कहा गया है कि वस्तुतः यह कम्बोज देश की राजधानी थी। प्रारभिक या उत्तरकालीन पालि-ग्रथो मे कम्बोजो की राजधानी का उल्लेख नही प्राप्त होता है। यह निश्चित है कि कम्बोज गन्धार के समीप ही पश्चिमोत्तर भारत मे स्थित था। कम्बोजो

---

[1] महावंस, अध्याय XII, V, 3.
[2] जातक, III, पृ० 363-69.
[3] सुमंगलविलासिनी, I, 124.
[4] सासनवंस, 49.

का एक नगर, नन्दिपुर था जिसका वर्णन ल्यूडर्स की अभिलेखो की तालिका, सख्या 176 एव 472 मे किया गया है।

कम्बोज अपनी मौलिक आर्य-परपराओ को भुलाकर बर्बर हो गये थे।[1] भूरिदत्त जातक[2] से हमे यह ज्ञात होता है कि अनेक अनार्य कम्बोजो ने यह बतलाया है कि लोग कीटो, मक्खियो, साँपो, मधुमक्खियो और मेढक आदि की हत्या करके शुद्ध किये जाते थे। जातक-परपरा की पुष्टि यास्क के निरुक्त और युवान-च्वाङ् के राजपुर और पश्चिमोत्तर भारत मे स्थित उसके समीपस्थ देशो के वर्णन से होती है।[3]

प्राचीन भारतीय भूगोल पर महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

इस समय हमारे पास प्राचीन भारत के भूगोल पर कुछ उपयोगी ग्रथ है। कनिंघम की 'ऐश्येट ज्यॉग्राफी ऑव इडिया' मुख्यनया फा-ह्यान, युवान-च्वाङ् तथा यूनानी लेखको के विवरणो पर आधारित है। इसमे लेखक की निजी, महत्त्व-पूर्ण पुरातत्त्वीय खोजे भी समाहित है। इस पुस्तक का टिप्पणियो एव आमुख-सहित, पुर्नसपादन एस० एन० मजुमदार ने किया है (कलकत्ता, 1924)। नदलाल दे की 'ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी ऑव ऐश्येट ऐड मेडिवल इडिया' यद्यपि एक क्रमबद्ध ग्रथ नही है, तथापि यह एक बहुत उपयोगी शब्दकोष एव पुस्तिका है। यह दोषपूर्ण है, क्योकि इसमे सामान्यरूप से समीकरण के आधारो को छोड दिया गया है। इसमे दक्षिण भारत का भूगोल भी उपेक्षित कर दिया गया है। इस पुस्तक का प्रथम सस्करण कलकत्ता से 1899 मे और द्वितीय सस्करण मेसर्स ल्युजक ऐड कपनी द्वारा लदन से 1927 मे प्रकाशित हुआ था। ये दोनो ग्रथ सबद्ध अभिलेखीय दत्तसामग्री से विहीन है। बि० च० लाहा की 'ज्यॉ-ग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म' मे पालि बौद्ध ग्रथो के आधार पर प्रथम बार प्राचीन भारत का भौगोलिक चित्र प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है। यहाँ यह कहा जा सकता है कि इसी लेखक ने उक्त ग्रथ के एक परिशिष्ट के रूप मे 'ज्यॉग्रेफिकल डाटा फ्रॉम सस्कृत बुद्धिस्ट लिटरेचर' नामक एक शोध-पत्र लिखा है, जो 'अनल्स ऑव द भडारकर ओरियंटल रिसर्च इस्टीट्यूट्' (XV, 1934, अक्टूबर-जनवरी) मे प्रकाशित हुआ था और जो बाद मे मेसर्स ल्युजक ऐड कपनी द्वारा 1937 मे

---

[1] **जातक (कावेल संस्करण), VI, 110, पाद टिप्पणी, 2.**

[2] **जातक, VI, 208,110.**

[3] **वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, I, 284 और आगे।**

प्रकाशित उनके 'ज्यॉग्रेफिकल एसेज़' नामक ग्रथ मे समाविष्ट कर लिया गया था। 'ज्यॉग्रेफिकल एसेज़,' जिल्द, I, भौगोलिक एव स्थानवृत्त विषयक सूचना प्रदान करने वाले निबधो का एक सकलन है जो विशेषत प्राचीन भारत के भूगोल-वेत्ताओ के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

स्वर्गीय प्रॉ० ए० ए० मैकडानेल एव ए० बी० कीथ द्वारा विरचित 'वैदिक इडेक्स ऑव नेम्स ऐड सब्जेक्ट्स' मे अतिप्राचीन सस्कृत ग्रथो मे सनिहित सभी भौगोलिक सूचनाएँ समाविष्ट है। सोरेंसन की 'इडेक्स टू द महाभारत" एव मललसेकर की 'डिक्शनरी ऑव पालि प्रापर नेम्स' भौगोलिक दृष्टि से बहुत उपादेय है।

बि० च० लाहा द्वारा प्रणीत 'सम क्षत्रिय ट्राइब्स ऑव ऐंश्येट इडिया (1923), मिड इडियन क्षत्रिय ट्राइब्स (1924), ऐंश्येट इडियन ट्राइब्स, जिल्द, I एव II, तथा ट्राइब्स ऑव इडिया (1941) मे बडी सख्या मे क्षत्रिय कबीलो के इतिहास एव ऐतिहासिक भूगोल का वर्णन किया है। इसमें प्रत्येक कबीले द्वारा अधिकृत प्रदेश और विभिन्न युगो मे उनके राज्य के विस्तार का विशद् वर्णन प्राप्त होता है।

बि० च० लाहा की 'हिस्टॉरिकल ग्लीनिग्स' (1922) नामक पुस्तक प्राचीन भारत के भौगोलिक अध्ययन के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

बि० च० लाहा की कलकत्ता ज्यॉग्रेफिक सोसायटी द्वारा 1940 में प्रकाशित 'होली प्लेसेज ऑव इडिया' नामक पुस्तक मे हिदू, बौद्ध एव जैनियो के प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण तीर्थ-स्थानो का एक सक्षिप्त विवरण दिया गया है, जिसका चयन क्षेत्र के आधार पर किया गया है और जो मानचित्रो एव रेखाचित्रो द्वारा सुसज्जित है।

कलकत्ता की ज्यॉग्रेफिकल सोसायटी द्वारा 1944 मे प्रकाशित बि० च० लाहा के 'माउटेंस ऑव इडिया' और 'रिवर्स ऑव इडिया' नामक ग्रथ ऐतिहासिक भौगोलिक अध्ययन है, जिनमे भारतीय साहित्य, यूनानी भूगोल-वेत्ताओ के विवरणो एव चीनी तीर्थयात्रियो के यात्रावृत्तातो पर आधारित भारत की नदियो एवं पर्वतो का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत किया गया है।

ग्वालियर (भूतपूर्व राज्य) के पुरातत्त्व विभाग द्वारा 1944 मे प्रकाशित बि० च० लाहा की 'उज्जयिनी इन ऐंश्येट इडिया' मे मूल साहित्यिक स्रोतो, चीनी-यात्रियो के यात्रावृत्तातो एव यथोचित अभिलेखीय एव मुद्राशास्त्रीय साक्ष्यों पर आधारित उज्जयिनी के प्राचीन नगर का क्रमबद्ध विवरण प्राप्त होता है।

1941 मे बि० च० लाहा द्वारा प्रणीत इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन अर्ली

टेक्स्ट्स ऑव बुद्धिज्म ऐंड जैनिज्म, और 1949 मे बाबे ऑव रॉयल एशियाटिक सोसायटी द्वारा प्रकाशित उनकी 'सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज' नामक पुस्तक भूगोल-वेत्ताओं के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग से उनके 50, 58, 60 एव 67 वे सम्मरण के रूप मे प्रकाशित बि० च० लाहा द्वारा लिखित 'श्रावस्ती इन इडियन लिटरेचर, राजगृह इन ऐशेंट लिटरेचर, कौशाम्बी इन ऐंश्येट लिटरेचर और पञ्चालाज, ऐंड देयर कैपिटल अहिच्छत्र' नामक ग्रथो मे साहित्यिक, अभिलेखीय, मुद्राशास्त्रीय तथा यूनानी एव चीनी यात्रियो के वृत्तातो पर आधारित चार प्राचीन भारतीय नगरो का दक्षतापूर्वक विशद एवं क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत किया गया है, जो पुरा-तात्त्विको एवं इतिहासकारो के लिए लाभप्रद है।

बि० च० लाहा द्वारा प्रणीत इडोलोजिकल स्टडीज, भाग, I, प्राचीन भार-तीय भूगोल के अध्ययन के लिए एक लाभप्रद सहायक है।

पार्जिटर की ऐंश्येट इडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन एव उनके द्वारा अनूदित मार्कण्डेय पुराण तथा विल्सन द्वारा अनूदित विष्णु पुराण मे पुराणो मे प्राप्त भौगो-लिक सूचनाएँ सकलित की गयी है।

हे० च० रायचौधरी की स्टडीज इन इडियन ऐंटिक्वेरी (कलकत्ता विश्व-विद्यालय, 1932) असबद्ध निबधो का सकलन है, जिसमे से पाँच भूगोल से सबधित है।

प्रोफेसर किरफेल की 'डी काम्मोग्रफी डेर इडेर' एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जो भूगोल मे बहुत मिला-जुला है और जिसका प्रतिनिधित्व बौद्ध-पिटकों मे भी किया गया है।

सिल्वाँ लेवी, ज्याँ प्रेज्लुस्की और ज्लेस ब्लाख द्वारा फासीसी भाषा मे लिखे गये निबधो के सकलन को 'प्रि-आर्यन ऐंड प्रि-द्राविडियन इन इडिया' की सज्ञा दी गयी है, जिसका अनुवाद अग्रेजी मे प्र० च० बागची ने किया है (कलकत्ता विश्वविद्यालय 1929)। इस पुस्तक मे सिल्वाँ लेवी का 'प्रि-आर्यन ऐंड प्रि-द्राविडियन' नामक एक लेख है, जो पहले जर्नल एशियाटिक, टोम, CC III, (1923) मे प्रकाशित हुआ था। यह इस वाक्य से प्रारभ होता है . "प्राचीन भारत की भौगोलिक नामावली मे प्राय सम-युग्मक शब्दो की एक निश्चित संख्या प्राप्त होती है जिनमे परस्पर उनके प्रारभिक व्यजनो के आधार पर ही अतर किया जा सकता है। यहाँ मैं उनमे से कुछ का अनुशीलन करना चाहता हूँ : (1) कोसल-तोसल (2) अङ्ग-वङ्ग (3) कलिङ्ग-त्रिलिङ्ग (4) उत्कल-मेकल (5) पुलिन्द-कुलिन्द (6) कामरूप-तामरूप आदि।

ज्याँ प्रेजलुस्की का 'नेम्स ऑव इडियन टाउस इन द ज्यॉग्रेफी ऑव टालेमी' नामक लेख प्रथम बार 1926 मे बुलिटिन दा ला सोसायटी द लिंग्विस्टीक मे प्रकाशित हुआ था। कोडुम्बर या ओंदुम्बर जर्नल एशियाटिक 1926 मे प्रकाशित ज्याँ प्रजलुस्की के Un ancien peuple du punjab : Les Udumbara नामक लेख से किया गया था। सिल्वाँ लेवी द्वारा लिखित 'पलौरा दन्तपुर' नामक लेख प्रथम बार जर्नल एशियाटिक CCVI, 1925 (नोट्स इडियेन्नीज) मे प्रकाशित हुआ था। सिलवाँ लेवी का पिथुण्ड, पिथुड तथा पितुण्ड्र नामक लेख भी (जर्नल एशियाटिक CCVI, 1925-26) इस पुस्तक मे सम्मिलित है। ढाका विश्वविद्यालय द्वारा 1943 मे प्रकाशित 'हिस्ट्री ऑव बगाल', जिल्द I मे बङ्ग से सबधित बहुत भौगोलिक सूचनाएँ समाहित है।

हमारे प्राचीन भूगोल के क्रमबद्ध अध्ययन के लिए ग्रीक एव लैटिन लेखको के ग्रथ बहुत उपयोगी है। वे अधोलिखित है नोट्स ऑन द इडिका ऑव टेसियस, लेखक एच० एच० विलसन (आक्सफोर्ड, 1836); Etude sur la geographie Grecque et Latine de l' Inde et en particulier sur l' Indes de Ptolemee. लेखक, विवियेन डी सेंट मेंटिन, ऐंश्येंट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज ऐंड एरियन' लेखक—जे० डब्ल्यू० मैक्रिडिल (इडियन ऐंटिक्वेरी, कलकत्ता 1876-1877 से पुनर्मुद्रित, नया सस्करण, कलकत्ता, 1926);

—'कामर्स ऐंड नैविगेशन ऑव दी इरिथ्रियन सी' लेखक, जे० डब्ल्यू० मैक्रिडिल (इंडियन ऐटिक्वेरी, कलकत्ता, 1879 से पुनर्मुद्रित)।

—ऐश्येट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टालेमी, लेखक, जे० डब्ल्यू० मैक्रिडिल (इंडियन ऐटिक्वेरी, 1884 मे पुनर्मुद्रित, कलकत्ता 1885)।

—टू नोट्स ऑन टालेमीज ज्यॉग्रेफी ऑव इडिया, लेखक, इ० एच० जॉन्स्टन (ज० रा० ए० सो०, 1941)।

—नोट्स ऑन टालेमी, लेखक, जे० पीएच० फोगेल (बु० स्कू० ओ० अ० स्ट०, XII, XIII और XIV, भाग I)।

—ऐश्येंट इडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई टेशियस द निडियन, लेखक, जे० डब्ल्यू० मैक्रिडिल (इडियन ऐंटिक्वेरी, 1881 से पुनर्मुद्रित, कलकत्ता, 1882)।

—द इनवेजन ऑव इडिया बाई अलेक्जेंडर द ग्रेट, लेखक, जे० डब्ल्यू० मैक्रिडिल, नूतन सस्करण, 1896.

—अलेक्जेंडर्स पैसेज ऑव झेलम, लेखक, सर ऑरेल स्टाइन (द टाइम्स, 5 अप्रैल, 1932)।

—द संगल ऑव अलेक्जेंडर हिस्टोरियस, लेखक, हचिसन (जर्नल ऑव दी पंजाब हिस्टॉरिकल सोसायटी, जिल्द, I)।

—ऐंश्येट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन क्लासिकल लिटरेचर, लेखक, जे० डब्ल्यू० मैक्रिडिल, 1901.

—पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन सी, अनूदक एवं टीकाकार, डब्ल्यू० एच० शाफ, लंदन, 1912.

—ल ज्योग्रेफाइ डी टालेमी ल इंडे (VII, 1-4), लेखक, लू० रेनु, पेरिस 1925.

—इस संबंध मे टी० होल्डिच द्वारा विरचित 'दी गेट्स ऑव इंडिया (लंदन, 1910)और सर आरेल स्टाइन द्वारा प्रणीत 'ऑन अलेक्जेंडर्स ट्रैक टु द इंडस', (लंदन, 1929) तथा ज्योग्रैफिकल जर्नल, लंदन, जिल्द, LXX, 1927, नवबर-दिसबर, पृ० 417 और आगे तथा 515 और आगे मे प्रकाशित उनका 'ऑन अलेक्जेंडर्स कैम्पेन ऑन नार्थ वेस्ट फ्रांटियर' नामक लेख उल्लेखनीय है।

विभिन्न पत्रिकाओ मे प्रकाशित उल्लेखनीय अवदानो की एक सूची नीचे दी गई है :

जर्नल ऑव दी रॉयल एशियाटिक सोसायटी

1873 युवान-च्वाङ् की पटना से वल्भी तक की यात्रा, लेखक, जे० फर्ग्युसन।
1893. सरस्वती और भारतीय मरुभूमि की लुप्त नदी, लेखक, ओल्डम।
1894. राम के वनवास का भूगोल, लेखक, एफ० ई० पार्जिटर।
1897. गौतम बुद्ध का जन्मस्थान, लेखक, वी० ए० स्मिथ।
1897 पिष्टपुर, महेन्द्रगिरि और अच्युत, लेखक, वि० स्मिथ।
1898 कर्तृपुर का राज्य, लेखक, ओल्डम।
1898. कोशाम्बी और श्रावस्ती, लेखक, वी० स्मिथ।
1898 बौद्ध ग्रथो मे कपिलवस्तु, लेखक, टी० वाटर्स।
1898 कदहार अभिलेख मे भूगोल, लेखक, जे० बीम्स।
1902. वैशाली, लेखक, वि० स्मिथ।
1902. कुशीनारा या कुशीनगर तथा अन्य बौद्ध तीर्थस्थल, लेखक, वि० स्मिथ।
1903 कौशाम्बी, काशपुर और वैशाली, लेखक, डब्ल्यू० वोस्ट।
1903. रामगाम से कुशीनारा तक, लेखक, डब्ल्यू० वोस्ट।
1903. सेतव्या या टो-वा, लेखक, डब्ल्यू० वोस्ट।
1903. मालवा कहाँ पर स्थित था? लेखक, ए० एफ० आर० हार्नले।

1904. कौशाम्बी, लेखक, डब्ल्यू० वोस्ट एवं वी० ए० स्मिथ।
1904. प्राचीन भारत का मध्यदेश, लेखक, टी० डब्ल्यू० रीज़ डैविड्स।
1905. साकेत, शा-ची या पि-सो-किया, लेखक, डब्ल्यू० वोस्ट।
1905. मो-ला-पो, लेखक, आर० बर्न।
1906. गौडदेश, लेखक, बि० च० मजुमदार।
1906. कपिलवस्तु, लेखक, डब्ल्यू० होय।
1907. वेठद्वीप, लेखक, जी० ए० ग्रियर्सन।
1907. भारतीय नगरों और देशों के आयाम, लेखक, जे० एफ० फ्लीट।
1908. श्रावस्ती, लेखक, जे० पीएच० फोगल।
1909. नालदा का आधुनिक नाम, लेखक, टी० ब्लाख।
1910. महिष्मण्डल और माहिष्मती लेखक, जे० एफ० फ्लीट।
1912 कम्बोज-जन, लेखक, ग्रियर्सन।
1913. पेरिप्लस मे उल्लिखित दक्षिण भारत के दो स्थानो के नामो का प्रस्तावित समीकरण, लेखक, डब्ल्यू० एच० शाफ।
1916. 'पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन सी' पर कुछ टिप्पणियाँ, लेखक जे० केनेडी।
1917 ऋग्वेदिक नदियो के कुछ नाम, लेखक, एम० ए० स्टाइन।

सर आरल स्टाइन ने ऋग्वेद की प्रसिद्ध नदी-स्तुति (X, 75) सूक्त मे वर्णित नदियो के समीकरण का विवेचन किया है। उन्होने मरुद्वृधा को मरुवर्दवान, असिक्नी को अन्स और सुषोमा को सोहन से समीकृत किया है।

एफ० डब्ल्यू० टामस ने उद्यान और पतञ्जलि मे उल्लिखित औरदायानी रूप से व्युत्पन्न उरदि आदि पर सक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखी है (1918)। पार्जिटर ने 1918 मे 'मगध और विदेह' लिखा है।

श्री एस० बी० वेकटेश्वर ने अशोक के दूसरे शिलालेख मे वर्णित सतियपुत को काञ्ची या काजीवरम के रीतिवद्ध नाम सत्यव्रत क्षेत्र से समीकृत किया है (1918)। एस० कृष्णस्वामी आयगर ने उक्त समीकरण का खडन किया है और यह निष्कर्ष निकाला है कि ये सतियपुत्र पश्चिमी जन थे और पश्चिमी पहाडियों के समीप केरलो एव राष्ट्रिकों के मध्य कही पर स्थित थे और यह समव है कि सतपुते उनके आधुनिक प्रतिनिधि है। यदि ऐसा है तब क्या यह सभव नही कि वर्तमान मलाबार और कनाडा जिलो के तुलु एव नायर जैसे विविध मातृ-प्रधान समुदायो का यह सामूहिक नाम रहा हो (1919)।

वि० स्मिथ ने यह स्वीकार किया है कि सतियपुत्रों को , कोयबटूर के सत्य-

मंगलम तालुक से समीकृत किया जाना चाहिये जो पश्चिमी घाट मे कुर्ग के समीपस्थ है (1918)।

सगर और हैहय, वशिष्ठ और और्व, लेखक एफ० ई० पार्जिटर। लेखक ने हैहयो, माहिषिको, दार्वो, खसो, चूलिको, शको, यवनो, पर्लवो कम्बोजो, द्रुह्यु आदि की भौगोलिक स्थितियो का विवेचन किया है (1919)।

चीनी लेखको के का-पि-लि देश का समीकरण, लेखक वी० स्मिथ (1920)।

दक्षिण भारत का एक अनभिज्ञात प्रदेश, लेखक के० वी० सुब्रहमण्य अय्यर (1922)। इसमे महाभारत, विष्णु पुराण, भरत-नाट्यशास्त्र और खारवेल के अभिलेख तथा पश्चिमी चालुक्य-नरेश मगलीश रणविक्रात आदि के महाकूट स्तभ लेख मे वर्णित प्राचीन मूषक राज्य का समीकरण तुलु या दक्षिण कनाडा से केरल राज्य तक फैले हुये दक्कन के पश्चिमी तट पर स्थित इरामकुडम से किया गया है।

एस० कृष्णस्वामी आयगर ने यह अस्वीकार किया है कि अशोक के समय में कोसर नामक कोई ऐसी जाति थी जो तुलु देश से इतनी घनिष्ठ रूप से सबधित थी कि उनके नाम के आधार पर उस क्षेत्र का नामकरण हुआ होगा (1923)।

दयाराम साहनी द्वारा लिखित 'कोशाम्बी' (1927)। इसमे इलाहाबाद जिले मे स्थित कोसम नामक गाँव से प्राचीन कौशाम्बी का समीकरण, जिसे सबसे पहले सर अलेक्जैंडर कनिघम ने प्रस्तावित किया था, पूर्णत सिद्ध किया गया है।

सीताराम द्वारा लिखित कौशाम्बी (1928)।

प्राचीन भारत के भूगोल पर दो टिप्पणियाँ, लेखक जे० पीएच० फोगल (1929)।

हथुर और अरुर, लेखक ज्वाला सहाय (1932)। लुधियाना के निकट हथुर जैनख्याति वाले अर्हतपुर से और हथुर के निकट अरुर अहिच्छत्र से समीकृत किया गया है।

इंडियन ऐंटिक्वेरी

पौण्ड्रवर्धन पर नोट, लेखक, ई० वी० वेस्टमैकाट (1874)। भारत मे इब्न-बतूता की यात्राओ का भूगोल, लेखक कर्नल एच० युले (1874)।

भारत के सस्कृत भूगोल मे वर्णित स्थानो के समीकरण के विषय मे, लेखक, जे० बेर्गस (1885)।

बृहत्संहिता की भौगोलिक सूची, लेखक, जे० एफ० फ्लीट (1893)।

भागवत पुराण की भौगोलिक सूची, लेखक, जे० ई० अब्बाट (1899)।

नासिक-गुहालेखों में वर्णित चार गाँव, लेखक, वाइ० आर० गुप्ते (1912)।

कोल्लिपक, लेखक, लेविस राइस (1915)।

इसिपतन मिगिदाय (सारनाथ) विषयक कुछ साहित्यिक सदर्भ, लेखक, बि० च० भट्टाचार्य (1916)।

नासिक-गुहालेख मे वर्णित गौतमी पुत्र के साम्राज्य का विस्तार, लेखक, दे० रा० भडारकर (1918)।

भारत के प्राचीन भूगोल के अध्ययन के लिए अवदान, लेखक, एस० एन० मजुमदार (1919 और 1921)।

सातवाहन-युगीन दक्कन, लेखक दे० रा० भडारकर (1920)।

गगा का प्राचीन प्रवाह, लेखक, नदलाल दे (1921)।

कार्तवीर्य की माहिष्मती, मुशी कन्हैय्यालाल, (1922)।

भारत के कुछ स्थानो की भौगोलिक स्थिति, लेखक, वाई० एम० काले (1923)।

काठियावाड और गुजरात के उल्लेखनीय प्राचीन नगरो एव उपनगरो का इतिहास, लेखक, ए० एस० अल्तेकर (1924)।

त्रिलिग और कुलिग, लेखक, जी० रामदास (1925)।

नहपान की राजधानी, लेखक वी० एस० बाखले (1926)।

कालिदास के मेघदूत मे वर्णित देवगिरि पर्वत का एक सभव समीकरण, लेखक, ए० एस० भडारकर (1928)।

समतट के पूर्व, लेखक, एन० एन० दास गुप्ता (1932)।

पजाब और सिंध की नदियो का प्रवाह, लेखक आर० बी० ह्वाइटहेड, (1932)।

मदार पहाडी, लेखक, आर० बोस, (जिल्द, I)।

अजता की गुफाओ का स्थापत्य एव भित्तिचित्र, जिल्द I, II, III, XXII, XXXII, XL)।

नीलगिरि (जिल्द, II तथा IV)।

रामगढ पहाड़ी (जिल्द, II और XXXIV)।

कुम्भकोणम (जिल्द III)।

खानदेश (जिल्द, IV)।

चम्पा का विवरण (जिल्द, VI)।

नेपाल (जिल्द XIII, XIX, XXII)।

टालेमी के भूगोल पर एक टिप्पणी, लेखक, वी० बाल, (जिल्द XIV)।

नदिकेश्वर का समीकरण (जिल्द XIX)।

काग-किन-ना-पु-लो का कर्नूल से प्रस्तावित समीकरण (जिल्द, XXIII)।

मंदसोर का पुरातत्त्वीय वैभव (जिल्द, XXXVII)।

रामटेक, जिला नागपुर (जिल्द, XXXVII)।

मालवा की बौद्ध गुफाएँ (जिल्द, XXXIX)।

वत्सभट्टि की मदसोर-प्रशस्ति (जिल्द, XLII)।

प्राचीन ताम्रपत्रो मे उल्लिखित नासिक जिले के कुछ स्थानो पर एक टिप्पणी, लेखक, वाई० आर० गुप्ते (जिल्द, XLII)।

चद्र की बगाल विजय, लेखक, रा० गो० बसाक (जिल्द, XLVIII)।

भारत के प्राचीन भूगोल के अध्ययन के लिए अवदान, लेखक एस० के० मूयन, (जिल्द XLIX)।

एशियाटिक रिसर्चेज

—एलोरा की निकटस्थ गुहाओ का विवरण, लेखक, सी० मैलेट (जिल्द I)।

—तगर नगर पर टिप्पणियाँ, लेखक, लेफ्टिनेंट एफ० विलफोर्ड (जिल्द I)।

—एलीफैंटा द्वीप मे स्थित कुछ गुफाओ के विवरण, लेखक, जे० गोल्डिघम (जिल्द IV)।

—बगाल से गगा के प्रवाह के विषय मे, लेखक, मेजर आर० एच० कोलब्रुक (जिल्द VII)।

—हिमालय के प्रमुख शिखर, लेखक, जे० हाम्सन और जे० डी० हर्बर्ट (भाग XIV)।

—असम का भूगोल, लेखक जे० बी० न्यूफविले (जिल्द XVI)।

जर्नल ऑव द एशियाटिक सोसाइटी ऑव बगाल

—तिब्बत का भौगोलिक पर्यवेक्षण, लेखक, सासा दी कोरोस (ज० ए० सो० ब०, जिल्द I)।

—सहारनपुर के समीप बेहुत से प्राप्त प्राचीन नगर के अवशेषो का अतिरिक्त विवरण, लेखक, कैप्टन पी० टी० काटले, जिल्द III.

—बिहार के राजगृह नामक नगर का वर्णन, लेफ्टिनेंट टी० रेन्नी, जिल्द III.

—सध्याकर नदी के रामचरित के द्वितीय अध्याय के प्रारभ में वर्णित रामपाल के सामंतो एव मित्रो द्वारा प्रशासित स्थानो के नामो का हर प्रसाद शास्त्री

द्वारा किया गया समीकरण (जिल्द III) उल्लेखनीय है। रा० दा० बनर्जी द्वारा भी उक्त स्थानों का समीकरण किया गया है (जिल्द IV)।

—पटना के 13 कोस और सिंधिया के 6 कोस उत्तर में प्राचीन नगर बाखरा नामक स्थान एवं उसके अवशेषों की यात्रा, लेखक, जे० स्टीफेंसन (जिल्द IV)।

—उपरोक्त पर टिप्पणी, जेम्स प्रिंसेप (जिल्द IV)।

—महाबलिपुरम् या सामान्यतया सातपगोडा के नाम से विख्यात वास्तु-चित्रों के कुछ विवरण, ले०, जे० गोल्डिंघम (जिल्द V)।

—ओजीन या उज्जयिनी की प्राचीन एवं वर्तमान दशाओं का अवलोकन, लेखक, ले० एडवर्ड कोनोली, (जिल्द VI)।

—नर्मदा नदी का प्रवाह, लेखक ले० कर्नल ओसीले (जिल्द XIV)।

—बिहार के विहारों एवं चैत्यों पर टिप्पणी, (जिल्द XVI)।

—भारत के प्राचीन भूगोल पर एक तुलनात्मक निबंध, लेखक, कर्नल एफ० विल्फोर्ड (जिल्द XX)।

—राजमहल पहाडिया, लेखक, डब्ल्यू० एम० शेरविल (जिल्द XX)।

—उडीसा के जेपुर के पुरातत्त्वीय वैभव का विवरण, लेखक, सी० एम० बनर्जी, (जिल्द XL)।

—स्वतंत्र सिक्किम, लेखक, डब्ल्यू० टी० ब्लाफोर्ड (जिल्द XL)।

—बंगाल के इतिहास और भूगोल के प्रति अवदान, लेखक, सी० जे० ओ' डॉनेल (जिल्द XLIV)।

—कैमूर पर्वतमाला, लेखक सी० एस० बनर्जी, (जिल्द XLVI)।

—देवघर के मंदिरों के विषय में, ले०, डॉ० राजेन्द्र लाल मित्र, (जिल्द LII)।

—गया का पुरातत्त्वीय वैभव, ले०, टी० एफ० पेप्पे और सी० हार्ने, ज० ए० सो० ब० (1865)।

—बैराट, अजमेर, ग्वालियर, खजुराहो और महोबा का पुरातत्त्वीय वैभव, ले०, मेजर जनरल, ए० कनिंघम (1865)।

—कश्मीर के कुछ मंदिरों पर टिप्पणी, ले०, बिशप काटन (1865)।

—नर्मदा पर स्थित माहिष्मती या महेश्वर (महेसर) पर नोट और युवान च्वाङ् के महेश्वरपुर का समीकरण, ले०, पी० एन० बोस (1873)।

—पूर्व बंगाल के सुनारगाँव पर टिप्पणी, ले०, जेम्स वाइज़ (1874)।

—बलूचिस्तान के प्राचीन आवास और मकबरे, ले०, कैप्टन ई० माकलर (1876)।

—बगुरा (बोगरा) का पुरातत्वीय वैभव, ले०, एच० बेवेरीज (1878)।

—पूर्वी भारत के प्राचीन देश, ले०, एफ० ई० पार्जिटर (1897)।

—सारन जिले के चिरांद पर नोट, ले० नदलाल दे (1903)।

—हुगली जिले या प्राचीन राढ के इतिहास पर टिप्पणियाँ, ले० नंदलाल दे (1910)।

—पूर्व बंगाल का एक विस्मृत राज्य, ले०, एन० के० भट्टसालि (1914)।

—प्राचीन अग या भागलपुर जिले पर टिप्पणियाँ, ले०, नदलाल दे (1914)।

—पालि साहित्य मे अग और चपा, ले०, बि० च० लाहा, (1915)।

जर्नल ऑव द बांबे ब्रांच ऑव रॉयल एशियाटिक सोसाइटी

—महाबलेश्वर के मदिर पर टिप्पणियाँ, ले०, वी० एन० माडलिक (1871-74)।

—चौल के पुरातत्त्व के इतिहास पर टिप्पणियाँ, ले०, जे० गेरसन डा कुन्हा (1876)।

—गिरनार-अभिलेखो की सुदर्शन झील (ई० पू० 300-450 ई०), ले०, आर्देसीर जमशेद जी (1890)।

—बेसनगर, ले०, एच० एच० लेक, (1914)।

—प्राचीन पाटलिपुत्र, ले०, जे० जे० मोदी, (1916-17)।

—पूना जिले का पुरातत्त्व-वैभव, ले०, दे० रा० भडारकर (1930)।

जर्नल ऑव द बिहार ऐंड उडीसा रिसर्च सोसायटी

—महाभारत का मगधपुर, ले०, सर जार्ज ग्रियर्सन, (जिल्द, II)।

—बुद्ध और उनके शिष्य से सबद्ध राजगिरि के स्थल, ले०, डी० एन० सेन, (जिल्द, III)।

—दक्षिण-बिहार मे युवान-च्वाङ् का पथ, बुद्धवन पर्वत का समीकरण और कुक्कुटपादगिरि के अति सभावित स्थान पर विवाद, ले०, वी० एच० जैक्सन, (जिल्द, IV)।

—कगोद देश पर टिप्पणी, ले० विनायक मिश्र (जिल्द, XII)।

—स्कदगुप्त का अजपुर और बिहार के निकटस्थ क्षेत्र, ले०, पी० सी० चौधरी (जिल्द, XIX)।

इंडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टर्ली

—राढ़ या प्राचीन गंगाराष्ट्र, ले० नं० ला० दे।

—*वाल्मीकि-रामायण में दो कोशलों का उल्लेख*, ले०, एल० पी० पांडेय शर्मा (जिल्द III)।

—प्राचीन भारतीय भूगोल का अध्ययन, ले०, एच० सी० राय चौधरी, (जिल्द, IV)।

—प्राचीन भूगोल का एक अध्ययन, ले०, एच० वी० त्रिवेदी (जिल्द IV)।

—पूर्वी भारत और आर्यावर्त, ले०, ह० च० चक्लादार (जिल्द IV)।

—टालेमी द्वारा वर्णित करूरा, ले०, के० वी० कृष्ण अय्यर (जिल्द, V)।

—ब्रह्मोत्तर का समीकरण, ले०, के० एम० गुप्ता (जिल्द VIII)।

—प्राचीन राढ के कुछ जनपद, ले०, पी० सी० सेन (जिल्द VIII)।

—उदयपुर नगर, ले०, दि० च० सरकार (जिल्द IX)।

—पुण्ड्रवर्द्धन का स्थल, ले०, पी० सी० सेन (जिल्द IX)।

—उड्डीयन और साहोर, ले०, एन० एन० दास गुप्त, (जिल्द XI)।

इंडियन कल्चर

—वग, ले०, बि० च० लाहा (जिल्द I, स० 1)।

—कौटिल्य का भूगोल, ले०, हरिहर वि० त्रिवेदी (जिल्द I स० 2)।

—प्राचीन भारत के जनो पर कुछ टिप्पणियाँ, ले०, बि० च० लाहा (जिल्द I स० 2)।

—प्राचीन भारतीय अभिलेखो मे यवन, ले०, ओ० स्टाइन (जिल्द, I, सं० 3)।

—कुछ प्राचीन भारतीय कबीले, ले०, बि० च० लाहा (जिल्द, I, सं० 3)।

—कौशिका और कुशियारा, ले०, के० एल० बरुआ (जिल्द I, सं० 3)।

—कोशल, ले०, बि० च० लाहा (जिल्द, I, स० 3)।

—रामायण से सकलित दक्कन एव दक्षिण भारत की भौगोलिक सामग्री, ले०, वा० रा० रामचद्र दीक्षितार (जिल्द, I, स० 4)।

—सतियपुत का समीकरण, ले०, बी० ए० सालेतोर, (जिल्द, I, सं० 4)।

—चद्रद्वीप, ले०, एन० एन० दास गुप्ता, (जिल्द, II, स० 1)।

—शको पर टिप्पणियाँ, ले०, स्टेनकोनो, (जिल्द, II, स० 2)।

क्वार्टर्ली जर्नल ऑव द आंध्र रिसर्च सोसाइटी

—लाढ़ो के अगम्य देश, ले०, बी० सिहदेव (जिल्द, II)।

—तोसली और तोसल, ले०, बी० सिहदेव (जिल्द, III)।

—हिप्पोकौरा और सातकर्णि, ले०, ज्यॉं प्रेज्लुस्की, (जिल्द, IV)।

—बृहत्फलायनों की राजधानी, ले०, दि० च० सरकार, (जिल्द, VII)।

क्वार्टली जर्नल ऑव द मिथिक सोसाइटी

—पुराणों के सप्त-द्वीप, ले०, वी० वेंकटचेल्लम अय्यर, जिल्द (XVI और XVII)।

—शृंगेरी मठ, ले०, के० रामवर्मा राजा (जिल्द, XVI)।

—यूनानी लेखकों के सोपत्मा और फूरियन का समीकरण, ले०, एस० सोम-सुन्दर देसिकर, (जिल्द, XXI)।

सीलोन हिस्टॉरिकल रिव्यू

—पालि आख्यानों का भौगोलिक पक्ष, ले०, बि० च० लाहा।

I

उत्तरी भारत

●

अबैस्टेनोई (Abastanoi)—अबैस्टेनोई सस्कृत अम्बष्ठो का वाचक है जो डायोडोरस के सँबेस्टाई (Sambastai), कर्टियस के सेबेरकाइ (Sabarcae) और ओरोमियस के सबग्राइ का (Sabagrae) समानार्थक है। सिकदर के काल मे वे अवर-अकेसिनीज (अस्किनी) प्रदेश मे रहते थे तथा उनकी शासन-प्रणाली गणतत्रात्मक थी। सिकदर ने उन्हे पराजित किया था (मैक्रिडिल, इनवेजन ऑव इडिया, पृ० 292 और आगे, लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज I, 31 और आगे)।

अचिरावती—अचिरावती नदी अजिरवती या ऐरावती नाम से भी विख्यात थी।[1] चीनी तीर्थयात्री युवान-च्वाङ् ने इसे अ-चि-लो नाम से पुकारा है जो श्रावस्ती नगर से दक्षिण-पूर्व की ओर बहती थी।[2] इत्सिग के अनुसार अजिरवती का तात्पर्य अजि (Dragon) नदी मे है।[3] जैन ग्रथो मे इसको एरावै कहा गया है।[4] इसे गोरखपुर मडल की आधुनिक राप्ती नदी से समीकृत किया गया है जिसके पश्चिमी तट पर कोसल की तृतीय या अतिम राजधानी श्रावस्ती[5] का प्राचीन नगर स्थित था। यदि राप्ती के दाहिने तट पर स्थित आधुनिक सहेठ-महेठ श्रावस्ती है, तब यह ध्रुव है कि बौद्ध ख्याति की अचिरावती आधुनिक राप्ती के अतिरिक्त और कुछ नही है। दशकुमारचरितम् का लेखक किसी नदी के तट पर स्थित इस नगर से परिचित था, जो अनुमानत अचिरावती या राप्ती हो सकती है। हमारे इस लेखक ने दुर्भाग्य मे उक्त नदी का नाम नही बतलाया है।[6]

अचिरावती सरयू की एक सहायक नदी है, जो हिमालय पर्वतमाला से निक-

---

[1] अवदानशतक, I, 63; II, 60; पाणिनि की अष्टाध्यायी, IV, 3. 119.

[2] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, 398-99.

[3] ट्रेवेल्स, पृ० 156.

[4] कल्पसूत्र, पृ० 12; बृहत्कल्पसूत्र, 4, 33.

[5] इसे आधुनिक सहेठ-महेठ से समीकृत किया गया है।

[6] वेबर, उबेर दास दशकुमारचरितम् इन इंडिशे स्ट्रीफेन, बर्लिन 1868.

लती है। पालि-भाष्यों मे अनोतत्त झील से गगा, यमुना, अचिरावती, सरयू और मही नामक पाँच नदियो के उद्गम का एक विशद् विवरण प्राप्त होता है।[1] सुत्त-निपात के भाष्य मे किन्ही पाँच सौ नदियों का वर्णन प्राप्त होता है।[2] मिलिन्दपञ्हो[3] के अनुसार उनमे से केवल दस उल्लेखनीय है। इन दस नदियो[4] मे से अचिरावती उन पाँच बडी नदियो[5] मे से एक थी, जो गंगा-नदी समूह मे समिलित थी और शेष अन्य नदियाँ सिन्धु-समूह मे थी। अचिरावती बौद्ध-मध्यदेश की एक पवित्र नदी थी।[6] समुद्र मे गिरने के समय इसका पुराना नाम समाप्त हो जाता था और इसे समुद्र ही कहा जाता था।[7] संयुक्त-निकाय[8] के अनुसार अचिरावती गगा, यमुना, सरयू और मही सहित पूर्व की ओर बहती, कटाव करती और अग्रसर होती थी। यह एक गहरी नदी थी क्योकि इसका जल अगाध था।[9]

बुद्ध अचिरावती के तट पर अनेक सभ्रात एव प्रतिष्ठित ब्राह्मणो द्वारा निवसित मनसाकट गाँव के उत्तर मे स्थित कोशल के उक्त ब्राह्मण गाँव के एक आम्रवन मे रुके थे।[10] इस नदी के तट पर अजीर के वृक्षो का एक बाग था।[11] श्रावस्ती की सुतनु नामक एक छोटी सरिता, जहाँ बुद्ध के शिष्य अनुरुद्ध गये थे, निश्चय ही इसमे गिरती थी।[12]

अचिरावती नदी बहराइच, गोंडा और बस्ती जिलो से हो कर बहती है और

---

[1] पपचसूदनी, सिहली संस्करण, II, 586; मनोरथपूरणी, सिहली सस्करण II, 759-60; सुत्तनिपात कामेंट्री, पा० टे० सो० 437-439.

[2] परमात्थजोतिका, II, 437.

[3] ट्रेंक्नर द्वारा संपादित, पृ० 110.

[4] मार्कण्डेयपुराण, 57, 16-18.

[5] पंचमहानदियो।

[6] विनय, II, पृ० 239; विसुद्धिमग्ग, I, पृ० 10.

[7] विनय, II, पृ० 239; अंगुत्तर, V, पृ० 22; वही, IV, 198-199, 202-गंगा यमुना अचिरवती सरभू मही ता महासमुदमपत्ता जहन्ति पुरिमानि नामगोत्तानि महासमुद्दो त्वेव संखम गच्छन्ति।

[8] II, 135; तु० संयुक्त, V, 39, 134.

[9] न सुकरम उदकस्स पमाणम गणेतुं—संयुत्त० V, 401.

[10] दीघ० I, 235 और आगे।

[11] सुत्तनिपात कामेंट्री, I, पृ० 19.

[12] संयुत्त०, V, 297.

गोरखपुर जिले मे बरहज के पश्चिम मे सरयू या घर्घरा (घाघरा) मे मिलती है। चीनी तीर्थयात्री युवान च्वाङ् के अनुसार यह श्रावस्ती से गुजरती हुयी दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है।[1] गोरखपुर जिले मे बाँई ओर से तीन उपनदियाँ तथा दाँई ओर से एक छोटी सी सरिता इसे आपूरित करती है। ग्रीष्म ऋतु मे बालुकामय नदी-तल छोड कर यह सूख जाती है।[2] श्रावस्ती के दो वैरागी इस नदी के तट पर आये थे। स्नानोपरात वे बालू मे खडे हो कर धूप-सेवन कर रहे थे और परस्पर आनदपूर्वक वार्तालाप कर रहे थे।[3] यह नदी छोटी तरणियो के माध्यम से पार की जाती थी।[4] तट पर स्थित गेहूँ के खेतो को यह सीचती थी।[5] श्रावस्ती-निवासी एक ब्राह्मण ने इसके तटवर्ती वृक्षो को उस भूमि को जोतने के लिए काट डाला था। इस पर फसल हुयी थी, किंतु बाढ ने सारी फसल को समुद्र मे बहा दिया।[6] थेर आनद कुछ भिक्षुओ के साथ इस नदी मे स्नान करने के लिए आये थे। स्नानोपरात अपना शरीर सुखाने के लिए वह एकवसन हो कर खडे रहे।[7] श्रावस्ती के एक गृहस्थ ने जो सन्यासी हो गया था, अचिरवती नदी तक जा कर स्नान किया और वहाँ पर उसने दो कल्हसो को उडते हुए देखा।[8] पाडुपुर के एक मछवाहे ने श्रावस्ती जाते समय इस नदी के तट पर कुछ कच्छप-अडो को देखा था।[9] चव्बग्गिय भिक्षु लोग इस नदी को पार करती हुयी गायो की सीग, कान गर्दन या पूँछ पकडते थे या उनकी पीठ पर चढ जाते थ।[10] इस नदी-तट के निवासी जाल

---

[1] **वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, I, 398-99.**

[2] **अंगुत्तर, IV, 101.**

[3] **जातक, II, 366, अचिरवतीम् गन्त्वा नहात्वा वालिकापुलिने आतपं तप्पमाना सारणीयकथम कथेन्ता अट्ठंसु।**

[4] **विनय, III, 63.**

[5] **सुत्तनिपात कामेंट्री, पा० टे० सो०, पृ० 511–अचिरवतीनदीतीरे थवं वपिस्सामीति खेत्तं कसति।**

[6] **जातक, IV, पृ० 167, सब्बम सस्सम समुद्द पवेसेसि।**

[7] **अंगुत्तर, III, पृ० 402.**

[8] **जातक, I, पृ० 418.**

[9] **धम्मपद कामेंट्री III, 449.**

[10] **विनय, I, पृ० 190-191 चब्बग्गिया भिक्खु अचिरवतीया नदिया गावीनम तरन्तीनम विसानेसु पि गण्हन्ति, कण्णेसुपि गण्हन्ति, गीवायपि गण्हन्ति, चेप्पायपि गण्हन्ति, पिठ्ठिमपि अभिरुहन्ति।**

फेंक कर मछली पकड़ने मे अभ्यस्त थे।[1] प्राचीन बौद्ध ग्रंथो मे पशुओ द्वारा इस नदी को तैर कर पार करने के उल्लेख प्राप्त होते है।[2]

बुद्ध के सारिपुत्त नामक एक प्रसिद्ध शिष्य ने इस नदी मे स्नान किया था।[3] आम्र-कुज मे प्रवेश करने के पूर्व एक धनी व्यापारी की चार पुत्रियो ने भी इस नदी मे स्नान किया था।[4] नग्न वेश्याओ के साथ-साथ इस नदी मे भिक्षुणियाँ भी स्नान करती थी।[5]

कोई एक देहाती भिक्षु अचिरावती मे स्थित तरणी के समीप आया और उसने नाविक से उसकी तरणी के सहारे इस नदी को पार करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। नाविक ने उससे प्रतीक्षा करने को कहा, परतु उसने अस्वीकार कर दिया। अत मे उसने उसे अपनी नाव मे बैठाया। खराब पतवारो के कारण उसके वस्त्र भीग गये और दूसरे तट पर पहुँचने के पहले ही रात हो गयी।[6] कोसल-नरेश पसेनदि के राज-प्रासाद के चबूतरे से यह नदी दिखलायी पडती थी।[7] इस नदी के तट पर आनेवाले पाँच सौ युवक वही पर कुश्ती लडा करते थे।[8] पसेनदि के पुत्र विडूडभ की मुठभेड शाक्यो से इस नदी के तट पर हुई थी और उसने उनका पूर्ण उन्मूलन किया था।[9] कभी-कभी यह नदी इतनी अधिक बढ जाती थी कि इसमे भयकर बाढे आ जाती थी, जिसमे कभी अपनी सेना सहित विडूडभ समुद्र मे बह गया था।[10] श्रावस्ती के महाश्रेष्ठि अनाथपिण्डिक की इस नदी के तट पर सिंचित अठारह करोड की धनराशि इसकी सत्यानाशी बाढ़ मे बह कर नष्ट हो गयी थी।[11] एक व्यापारी का कोष इस नदी के तट पर गडा हुआ था। इस नदी

---

[1] उदान कामेंट्री, पृ० 366.

[2] विनय, I, 191.

[3] अगु० कामेंट्री, सिंहली सस्करण, पृ० 315.

[4] जातक, III, पृ० 137.

[5] विनय, I, 293—इधभन्ते भिक्खुणियो अचिरवतीया नदिया वेसियाहि सधिम नग्गा एकात्तित्थे नहायन्ति।

[6] जातक, III, 228.

[7] विनय, IV, 111-112.

[8] जातक, II, पृ० 96.

[9] धम्मपद कामेंट्री, I, 359-60.

[10] दीघ, I, 244-245; जातक, IV, 167; धम्मपद कामेंट्री I, 360.

[11] धम्मपद कामेंट्री, III, पृ० 10—अट्ठारसकोटि-धनम।

का कगार कट जाने पर उसका कोष समुद्र मे बह गया।[1]

अद्रैस्टि देश (Adraisti) —यह हाइड्राओटीज (रावी) (Hydraotis) के पूर्वी तट पर स्थित था। इनकी राजधानी पिम्प्रामा थी। महाभारत के द्रोण-पर्व (अध्याय 159, 5) मे वर्णित अद्रिजगण यूनानियो के अद्रैस्टि से समीकृत माने गये है। कहा जाता है कि अद्रैस्टि या अधृष्ट-गण सिकदर की सेना से पराजित हुए थे (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, 371 और पाद टिप्पणी, 2, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, I, पृ०, 21-22)।

अगरु (Agaru)—चन्द्रकान्त एव सूर्यकान्त पर्वतो के मध्य कुरु-देश मे स्थित यह एक वन है (वायु, 45, 31)।

अग्रोहा—यह हिस्सार से फतेहाबाद जाने वाली पक्की सडक पर, हिस्सार से 14 मील दूर पर स्थित है। इसका उल्लेख समवत टालेमी ने किया था और उसने इसे अगर (Agara) कहा है। यहां पर किये गये उत्खनन से मुद्राएँ, मनके, भग्न वास्तु एव मृण्प्रतिमाएँ प्राप्त हुयी है। (विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, एक्सकेवेशस ऐट अग्रोहा, पजाब, लेखक, एच० एल० श्रीवास्तव, मे० आ० स० इ०, सख्या 61)।

अहिच्छत्र—यह उत्तर पञ्चाल की राजधानी थी (महाभारत, आदिपर्व, अध्याय 140, तु० रैप्सन, पृ० 167)। भागीरथी नदी उत्तर एवं दक्षिण पञ्चाल के मध्य विभाजक-रेखा थी। वैदिक ग्रथो मे इस देश का एक पूर्वी एवं पश्चिमी भाग बताया गया है (वेदिक इडेक्स, I, 469)। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (कीलहार्न सस्करण, II, पृ० 233) मे इसका उल्लेख किया है। योगिनी तत्र (2 4, पृ० 128-29) मे इसका वर्णन आता है। दिव्यावदान के अनुसार (पृ० 435), उत्तरपञ्चाल की राजधानी हस्तिनापुर थी, किंतु कुमकार जातक मे (कावेल, जातक, III, 230) कम्पिल्लनगर को इसकी राजधानी बतलाया गया है।

पञ्चाल मूलत दिल्ली के उत्तर-पश्चिम मे हिमालय की तराई से चबल नदी के मध्य का प्रदेश था, (तु० कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 413, 1924 सस्करण)। दक्षिण पञ्चाल की राजधानी काम्पिल्य थी[2] (महाभारत, 138, 73-74) जिसे उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जिले मे स्थित आधुनिक कपिल से समीकृत किया जाता

---

[1] जातक, I, 230—अचिरवतीनदीतीरे निहितधनम नदीकुले भिन्ने समुद्दम पविट्ठम अहोसि।

[2] बि० च० लाहा वाल्यूम, जिल्द, II, 1946, पृ० 239-42.

है। उदाककालीन (?) पभोसा गुहा-लेख मे, बहसतिमित्र यहाँ का राजा बतलाया गया है, जिसकी मुद्राएँ रामनगर (उत्तरप्रदेश के बरेली जिले मे स्थित पञ्चाल की राजधानी प्राचीन अहिच्छत्र)और कोसम (उत्तरप्रदेश के इलाहाबाद जिले मे स्थित वत्सो की राजधानी प्राचीन कौशाम्बी) से प्राप्त हुयी है। इसी अभिलेख से हमे ज्ञात होता है कि अहिच्छत्र पर सौनकायनि राज्य करता था। समुद्रगुप्त के प्रयाग-स्तम्भ लेख मे अच्युत नामक एक शक्तिशाली राजा का उल्लेख है, जिसकी मुद्राएँ अहिच्छत्र (उत्तरप्रदेश के बरेली जिले मे स्थित आधुनिक रामनगर)से प्राप्त हुयी है। 7 वी शताब्दी ई० मे भी, जब युवान-च्वाङ् यहाँ आया था, यह एक उल्लेखनीय नगर था।[1] चीनी तीर्थयात्री के अनुसार, इस देश की परिधि, 3,000, ली से भी अधिक थी और इसकी राजधानी की परिधि 17 या 18 ली थी। इस देश मे अन्न उपजता था, अनेक जगल एव स्रोत थे तथा स्वास्थ्यवर्द्धक जलवायु थी। यहाँ के निवासी ईमानदार और ज्ञानार्जन के लिए अध्यवसायी थे। यहाँ पर दस से अधिक बौद्ध बिहार थे। यहाँ पर नौ देवमदिर (वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, 331) कनिघम के अनुसार अहिच्छत्र का इतिहास 1430 ई० तक प्राप्त होता है।

इसका नाम अहिक्षेत्र या अहिच्छत्र लिखा जाता है। अहिच्छत्र इसका वास्तविक नाम प्रतीत होता है।[2] अहिच्छत्र का प्राचीन नाम अधिछत्र था (जो ल्यूडर्स की ब्राह्मी अभिलेखो की सूची की अनुक्रमणिका के एक अभिलेख मे अब भी सुरक्षित है) जो टालेमी के यूनानी अदिसद्र (Adisadra)के अधिक समीप है (मैक्रिडिल, ऐंश्येंट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टालेमी, पृ० 133)। इसे छत्रवती भी कहा जाता था (महाभारत, आदिपर्व, अध्याय 168)। आषाढसेन के पभोसा गुहा-लेख मे, जो लगभग ईसवी सन् के प्रारम्भ का है, अधिछत्र नाम प्राप्त होता है (एपिग्रेफिया इडिका, II, पृ० 432; ल्यूडर्स की तालिका, सख्या 90 एव 905; गौतमी मित्र का अभिलेख, न० गो० मजुमदार, इ० हि० क्वा०)। अर्जुन ने युद्ध मे द्रुपद को पराजित करने के पश्चात् अहिच्छत्र और काम्पिल्य नगरो को द्रोण को दे दिया था। दोनो नगरों को स्वीकार करके विजेताओ मे श्रेष्ठ द्रोण ने काम्पिल्य को पुन द्रुपद को वापस लौटा दिया था (हरिवश, अध्याय, XX, 74-75)। विविध-तीर्थकल्प (पृ० 14) के अनुसार इसका प्राचीन नाम सख्यावती था। पार्श्वनाथ

---

[1] स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया, चतुर्थ संस्करण, पृ० 391-392.

[2] कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रेफी ऑव इंडिया, एन० एन० मजुमदार संस्करण पृ० 412.

इस नगर मे परिभ्रमण करते थे। पार्श्वनाथ के शत्रु कण्ठासुर ने सपूर्ण पृथ्वी को आप्लावित करने वाली अबाध वर्षा करायी थी। पार्श्वनाथ आकठ जल में डूब गये थे। उनकी रक्षा करने के लिए स्थानीय नागराज अपनी पत्नियो के साथ वहाँ गये, उनके सिर पर अपना सहस्र-फन फैलाया और उनके शरीर के चारो ओर कुडली मारकर लपेट लिया। इसीलिए इस नगर का नाम अहिच्छत्र पड़ा।

आधुनिक काल मे, सबसे पहले कैप्टन हाग्सन अहिच्छत्र पहुँचे थे, जिन्होने इसको कई मीलो तक फैले हुये किसी प्राचीन दुर्ग का भग्नावशेष बतलाया है, जिसमे सभवत. 34 अट्टालक थे और जिसे पाण्डु दुर्ग कहा जाता था (मैक्रिडिल, ऐन्श्येट इडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई टालेमी, पृ० 134)। इस स्थान के समीकरण के लिए, एपिग्रेफिया इडिका, XXVI, भाग 2, अप्रैल 1941, पृ० 90 द्रष्टव्य है। विस्तृत विवरण के लिए देखिये बि० च० लाहा द्वारा लिखित, पचालाज ऐड देयर कैपिटल अहिच्छत्र, मे० आ० स० इ०, सख्या 67; आर्क० स० इ०, रिपोर्ट, I, पृ० 255 और आगे, प्रोग्रेस रिपोर्ट ऑव द एपिग्रेफिकल ऐड आर्किटेक्चुरल ब्राचेज ऑव नार्थ-वेस्टर्न प्राविसेज़ ऐड अवध, 1891-92, और आगे, बि० च० लाहा, सम जैन कैनानिकल सूत्राज़, 169-70, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐन्श्येट ईडिया, पृ० 34, बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस् ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, पृ० 200-201, मैक्रिडिल, ऐन्श्येट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टालेमी, पृ० 134.

अजयगढ़—इसका समीकरण उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले से किया जाता है (इन्स्क्रिप्शस ऑव नार्दर्न इडिया रिवाइज्ड बाइ दे० रा० भडारकर, स० 408, V, 1243.

अजुधन—यह प्राचीन नगर पुरानी सतलज नदी के तट पर देपालपुर के 28 मील दक्षिण पश्चिम मे और उक्त नदी के वर्तमान प्रवाह से 10 मील दूर स्थित है (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, 1924, पृ० 245)।

अलकनदा—यह गढ़वाल हिमालय मे गगा का ऊपरी प्रवाह है। यह गन्ध-मादन पर्वत से निकलती है (भागवतपुराण, IV, 6, 24, ब्रह्माण्डपुराण, III, 41, 21; 56, 12, विष्णुपुराण, II, 2, 34, 36, वायुपुराण, 41, 18, 42, 25-35)। यह गगा के ऊपरी प्रवाह को द्योतित करता है। पिडा एव एक अन्य नदी इसकी ऊपरी सहायक नदियाँ है, जिनके सगम पर गढवाल मे श्रीनगर स्थित है। इसकी एक सहायक नदी मदाकिनी है जिसे काली गगा या मदाग्नी से समीकृत किया जा सकता है, जो गढ़वाल मे केदार पर्वत से निकलती है। देवप्रयाग मे अलकनन्दा, भागीरथी-गगा में बाँई ओर से मिली है (बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 19)। जहाँ पर मदाकिनी गगा मे मिलती है, वहाँ से इसका नाम गंगा-भागीरथी

पड जाता है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 21; इंपीरियल गजेटियर ऑव इडिया, जिल्द, I, पृ० 125; मदाकिनी के विषय मे देखिये, कनिंघम, आर्क्योलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट, XXI, II)।

अलसंद (Alasanda)—यह यवन देश (Yona) का प्रमुख नगर था। गाइगर ने इसे पैरोपनिसदाइ देश मे काबुल के निकट सिकदर द्वारा स्थापित एलेक्जेड्रिया नामक नगर से समीकृत किया है (गाइगर द्वारा अनूदित महावस, पृ० 194)। मिलिन्दपञ्हो मे एक द्वीप के रूप मे इसका वर्णन किया गया है, जहाँ राजा मिलिन्द कलसिगाम नामक एक गाँव मे पैदा हुआ था (ट्रेन्नर सस्करण, पृ० 82-83, कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, पृ० 550)।

अमरनाथ—इस्लामाबाद से लगभग 60 मील दूर हिमालय की भैरवघाटी पर्वतमाला मे, शिव का एक विख्यात मदिर अमरनाथ स्थित है। हिंदुओं की दृष्टि मे यह एक तीर्थस्थान है (विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 31)।

अम्बष्ठ देश—अम्बष्ठो का देश अवर चेनाब की घाटी मे स्थित था। महाभारत (II, 48, 14) और भागवतपुराण (X, 83, 23) मे उसका उल्लेख प्राप्त होता है। ब्रह्माण्ड (III, 74, 22), मत्स्य (48, 21), वायु (99, 22) तथा विष्णु पुराणो (II, 3, 18) मे इसका वर्णन मिलता है। पाणिनि ने अपने एक सूत्र (VIII, 3, 97) मे इसका उल्लेख किया है। ऐतरेय ब्राह्मण (VII, 21-3) के काल तक सभवत: ये लोग पजाब मे बस गये थे। महाभारत (II, 52.14-15) मे पश्चिमोत्तर पजाब की एक कबीले के रूप मे इनका वर्णन किया गया है। ये शिवियो एव यौधेयो से घनिष्ठ रूप मे सबधित थे और पजाब की पूर्वी सीमा पर रहते थे (पार्जिटर, ऐंश्येट इडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन, पृ० 109, 264)। दूसरी शताब्दी ई० के प्रथम चतुर्थक मे भूगोल-वेत्ता टालेमी ने इन्हे पैरोपनिसादाई देश के पूर्व मे स्थित एक कबीला बतलाया है (मैक्क्रिंडिल, ऐंश्येट इडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई टालेमी, पृ० 311-12)। कालातर मे ये मेकल पहाडी के पास जो नर्मदा का स्रोत था, आकर बस गये (बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येट इडिया, पृ० 97, 374)। विस्तृत विवरण के लिए, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज I, पृ० 31 और आगे, द्रष्टव्य है।

अन्धवन—यह श्रावस्ती मे स्थित था। वहाँ जाने पर थेर अनुरुद्ध बीमार पड़ गये थे। भिक्षुगण उनके पास गये और उनके शारीरिक कष्ट का कारण पूछा (सयुत्त, V. 302)।

अञ्जनपर्वत (अञ्जनगिरि)— यह महावन मे स्थित था (जातक, V.133)।

इसका उल्लेख रामायण (किष्किन्धाकाण्ड, 37, 5) और मार्कण्डेयपुराण (58, 11) मे प्राप्त होता है। जैन आवश्यक चूर्णी (पृ० 516) मे भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है। स्कन्दपुराण (अध्याय 1, श्लोक 36-48) में इसे स्वर्ण-निर्मित बतलाया गया है। यह पजाब की सुलेमान पर्वत श्रेणी है। सुलेमान पर्वतमाला, जिसे प्राचीन भूगोल-वेत्ताओं ने अजनगिरि कहा है, पश्चिमोत्तर सीमातप्रदेश एव पजाब को बलूचिस्तान से अलग करती है। इसके उत्तर मे गोमल नदी और दक्षिण मे सिन्धु नदी है। तख्त-ए-सुलेमान (सोलोमन का सिहासन) इसका सर्वोच्च शिखर है (11,295 फीट)। मुख्य पर्वतमाला का दक्षिणी भाग बलुआ पत्थर और उत्तरी भाग चूर्ण-प्रस्तर से निर्मित है। इस पर्वतमाला मे कृश-धारायुक्त कई दर्रे है, जिनमे हो कर भारत से बलूचिस्तान जाने का रास्ता गया हुआ है।

अञ्जनवन—साकेत में स्थित यह एक मृग वन था जहाँ बुद्ध रुके थे। जब बुद्ध यहाँ थे, तब कुडलिय नामक एक परिव्राजक ने उनसे धार्मिक एवं दार्शनिक विषयो पर विवाद किया था (सयुत्त, I, 54; V.73 और आगे)।

अनोम—यह पर्वत हिमालय से अधिक दूर पर स्थित नही प्रतीत होता है (अपदान, पृ० 345)।

अनोमा—(चीनी हो-नन-मो चि अग) अनोमा गोरखपुर जिले की औमि (आमी) नदी है। कार्लाइल ने इसे उत्तर-प्रदेश के बस्ती जिले की कुडवा नदी से समीकृत किया है। कपिलवस्तु छोडने के पश्चात् बुद्ध इस नदी के तट पर आये और तब उन्होने भिक्षुजीवन ग्रहण किया (धम्मपद कामेंट्री, I, 85)।

अनोतत्त-(चीनी, अ-नाओ-त)—यह झील रावणहृद या लगा से समीकृत की जा सकती है। बुद्ध यहाँ पर अनेक बार गये थे (अगुत्तर, IV, 101)। शुङ-चिग-चू के अनुसार, अनवतप्त (जो गरम न हो) नामक अन्य अभिधान से विख्यात यह झील हिमालय के शीर्ष पर स्थित थी। इस झील से पूर्व की ओर गगा, दक्षिण की ओर सिन्धु, पश्चिम की ओर वक्षु (Oxus) और उत्तर की ओर सीता (Tarim) नामक चार नदियाँ निकलती है (नार्दर्न इडिया एकार्डिंग टु द शुङ-चिग-चू, पृ० 14)।

अंशुमती—कुरुक्षेत्र की एक नदी के रूप मे इसका वर्णन ऋग्वेद (VI. 27, 5, 6; VIII, 85, 13) मे किया गया है।

अन्तर्वेदी—स्कदगुप्त (466 ई०) के इदौर ताम्रपत्र अभिलेख मे वर्णित

परम्परानुगत अन्तर्वेदी, गगा-यमुना[1] तथा प्रयाग एव हरद्वार के मध्य मे स्थित प्रदेश था। इस अभिलेख के अनुसार, इन्द्रपुर के सूर्य-मदिर मे देवविष्णु नामक किसी ब्राह्मण के अजस्र धर्मस्व के माध्यम से द्वीप जलाया जाता था (कार्पस इस्क्रिप्शनम् इडिकेरम्, जिल्द III)। बुलदशहर वस्तुत. इस अन्तरर्वेदी मे स्थित है।

अनुपिय-अम्बवन—यह मल्लो के राज्य मे स्थित था। महाभिनिष्क्रमण के पश्चात् राजगृह जाते समय बुद्ध ने अपने प्रथम सात दिन यही व्यतीत किये थे (जातक, पृ० 65-66, विनय, II, पृ० 180)।

अपव-वशिष्ठ-आश्रम—यह हिमालय के निकट स्थित था (योग वाशिष्ठ रामायण, I)। अपव-वशिष्ठ ने अपना आश्रम जला देने के कारण कार्त्तवीर्यार्जुन को शाप दिया था।

अरैल—यह प्राचीन गाँव यमुना के दाहिने तट पर गगा-यमुना के सगम पर स्थित है '(इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, ले० नेविल, पृ० 221)।

अरिष्टपुर (पालि अरिट्ठपुर)—पाणिनि ने अपने एक सूत्र मे (VI 2 100) मे इसका उल्लेख किया है। यह शिवि के राज्य की राजधानी थी। यहाँ के राजा की शिक्षा तक्षशिला मे हुयी थी। वह अपने पिता के राज्यकाल मे प्राताधिपति बनाया गया था और अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् वह सिहासनारूढ हुआ। उसने धर्मपूर्वक अपने राज्य का शासन किया। अपने नगर के चारो द्वारो तथा स्वय अपने द्वार पर उसने छह धर्मशालाएँ बनवायी थी। प्रतिदिन वह 6,00,000 मुद्राएँ वितरित किया करता था। निश्चित् दिवसो पर वह स्वय धर्मशालाओ मे जाता और यह देखता था कि दान दिया जा रहा है या नही।

शिवि-राज्य को पंजाब के शोरकोट प्रदेश से समीकृत किया जा सकता है—यही प्राचीन शिविपुर या शिवपुर था (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 52)। प्राचीन यूनानी लेखक पजाब मे सिबोइ (Siboi) नामक एक देश का उल्लेख करते है। अधिक विवरण के लिए, देखिए, बि० च० लाहा द्वारा लिखित, इंडोलॉजिकल स्टडीज़, I, पृ० 24 और आगे।

अरुणाचल—यह पर्वत कैलाश पर्वतमाला के पश्चिम मे स्थित है (लाहा,

---

[1] तु० भविष्य पुराण, भाग III, अध्याय 2. अन्तर्वेदी, इन दोनों नदियों के बीच का दो-आब था। काव्यमीमांसा (93) में सूत्रों के आर्यावर्त्त और मनु के मध्यदेश को अन्तर्वेदी कहा गया है जो वाराणसी (बनारस) तक फैला हुआ है—(विनशन प्रयागयोः गंगा-यमुनयोश्च अन्तरम् अन्तर्वेदी)।

माउंटेस ऑव इंडिया, पृ० 3; स्कन्दपुराण, अध्याय, III, 59-61, IV, 9, 13, 21, 37 भी द्रष्टव्य)।

असिताञ्जननगर—यह कंस नामक विषय मे स्थित था, यहाँ पर महाकंस नामक राजा राज्य करता था (जातक, IV, पृ० 79)।

अस्नि—यह गाँव उत्तरप्रदेश के फतेहपुर जिले से लगभग 10 मील दूर स्थित है जहाँ पर एक स्तम लेख प्राप्त हुआ है (इं० ए० XVI, 173 और आगे)।

अशोक—यह पर्वत हिमालय से बहुत दूर पर स्थित नही था (अपदान, पृ० 342)।

अस्पैसियन देश (Aspasian)—सिकदर के समय मे यह एक छोटा सा राज्य था। ईरानी सज्ञा 'अस्प' सस्कृत अश्व या अश्वक की समानार्थक है (लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज I, पृ० 1) यूनानियो द्वारा अभिहित यह अस्पैसियन कबीला, अश्वक या अश्मक जाति की किसी पश्चिमी शाखा को द्योतित करती है (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, I, 352, टिप्पणी, 3)। उनका देश पूर्वी अफगानिस्तान मे स्थित था (लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 180)। कुछ विद्वानो के अनुसार यह सुवास्तु (आधुनिक स्वात की घाटी)[1] मे स्थित था। सिकदर के आक्रमण का सामना करने वाले अश्मक प्रथम भारतीय जन थे। अस्पैसियन देश का एक नगर यस्प्ला (Euspla) के तट पर या इसके समीप स्थित बताया जाता था, जिसे काबुल नदी की सहायक[2] कुनर नदी से समीकृत माना जाता है।

अष्टापद—यह एक महान् जैन-तीर्थ था। इसे कैलास पर्वत से समीकृत किया गया है। विविधतीर्थकल्प के अनुसार अनेक ऋषियो और ऋषभ के पुत्रो ने यहाँ निर्वाण प्राप्त किया था।[3]

औदुम्बर—पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4.1 173) मे इनका उल्लेख किया है। यह देश पठानकोट क्षेत्र मे स्थित बताया जाता है।[4]

अयोध्या—यह हिंदुओ के सात तीर्थस्थानो मे से एक है, जो अयोज्झा या अयुधा नामक दूसरी सज्ञा से विख्यात है। इस नगर का एक अन्य नाम विनीता

---

[1] रायचौधरी, पो० हि० एं० इं०, चतुर्थ सस्करण, पृ० 197.

[2] लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, जिल्द I, पृ० 1 और आगे।

[3] बि० च० लाहा, सम जैन कैनानिकल सूत्राज, पृ० 174.

[4] विस्तृत विवरण के लिए बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 355 द्रष्टव्य।

था।[1] यह प्रथम एव चतुर्थ तीर्थकरो का जन्मस्थान था।[2] फा-ह्यान ने इसे शा चे (Sha-Che) और टालेमी ने सोगेड (Sogeda) कहा है। ब्राह्मण साहित्य मे इसका वर्णन एक गाँव के रूप मे किया गया है।[3] इस नगर का नाम साकेत, इक्ष्वाकुभूमि (आवस्सक निर्ज्जुति, 382) रामपुरी और कोशल भी था।[4] भागवत पुराण (IX. 8 19) मे इसका उल्लेख एक नगर के रूप मे किया गया है। स्कन्द पुराण[5] के अनुसार अयोध्या मत्स्याकार है। उसका विस्तार पूर्व-पश्चिम मे एक योजन, सरयू मे दक्षिण मे और तमसा से उत्तर मे भी एक-एक योजन है। समुद्रगुप्त के जाली गया ताम्रपत्र अभिलेख मे उत्तरप्रदेश (अवध) की घाघरा नदी मे समीकृत सरयू[6] के तट पर स्थित इस प्राचीन नगर का वर्णन प्राप्त होता है जो फैजाबाद रेलवे स्टेशन से लगभग 6 मील दूर पर स्थित है। इस अभिलेख के अनुसार अयोध्या, बहुत पहले समुद्रगुप्त के काल मे ही गुप्तो का एक जयस्कन्धावार था। बुद्ध के काल मे यह एक महत्त्वहीन नगर था।[7] रामायण मे कोशल की प्राचीन राजधानी के रूप मे इसका वर्णन किया गया है। कुछ विद्वानो के अनुसार साकेत और अयोध्या एक ही थे, किंतु रिज डेविड्स ने सफलतापूर्वक यह सिद्ध किया है कि इन दोनो नगरो का अस्तित्व बुद्ध के समय मे था।[8] जैन विवरणो के अनुसार, अयोध्या बारह योजन लबी और नौ योजन चौडी थी।[9] यह ऋषभ, अजित, अभिनन्दन, सुमति, अनन्त और अचलभानु का जन्मस्थान था। यहाँ भगवान् आदिगुरु ने निर्वाण प्राप्त किया था। चालुक्य-नरेश कुमारपाल ने इस नगर मे एक जैन प्रतिमा स्थापित की थी। अब भी यहाँ नाभिराज का मंदिर स्थित है।[10] अल्बेरूनी के अनुसार यह कन्नोज मे लगभग 150 मील दक्षिणपूर्व मे स्थित है। बौद्धकाल

---

[1] आवस्सक कामेंट्री, पृ० 244.

[2] आवस्सक निर्ज्जुति, 382.

[3] ऐतरेय ब्राह्मण, VII, 3 और आगे; साङ्ख्यायन श्रौतसूत्र, XV, 17-25; तु० ज० रा० ए० सो० 1917, 52, पाद टिप्पणी।

[4] विविधतीर्थ-कल्प, पृ० 24.

[5] अध्याय, I, 64-65.

[6] तु०विनय, II, 237; अगुत्तर, IV, 101; संयुत्त, II, 135; उदान, श्लोक 5.

[7] बुद्धिस्ट इंडिया, पृ० 34.

[8] बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 5.

[9] विविधतीर्थकल्प, अध्याय 34.

[10] बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 173.

मे कोसल उत्तर और दक्षिण कोसल मे विभक्त था। दक्षिण कोसल की राजधानी अयोध्या थी।

अयोध्या पुष्यमित्र शुग के राज्य मे सम्मिलित प्रतीत होती है। यहाँ से प्राप्त एक अभिलेख मे इसके राज्यकाल मे पुष्यमित्र शुग द्वारा दो अश्वमेध यज्ञो के सपादन के तथ्य का वर्णन किया गया है।[1]

चीनी तीर्थयात्री फा-ह्यान ने जो पॉचवी शताब्दी ईसवी मे अयोध्या गया था, बौद्धो एव ब्राह्मणो मे सौहार्द्र नही देखा था। उसने वहाँ पर एक स्तूप देखा, जहा चार बुद्ध टहलते और बैठते थे।[2] एक दूसरा चीनी तीर्थयात्री—युवान-च्वाङ् जो सातवी शताब्दी ईसवी मे भारत आया था, 600 ली से भी अधिक यात्रा करने और दक्षिण की ओर गगा नदी पार करने के पश्चात् अयुधा (Ayudha) या अयोध्या पहुँचा था। उसके मतानुसार अयोध्या असग एव बसुबन्धु का अस्थायी निवासस्थान था। उसने अयुधा को ही साकेत या अयोध्या कहा है। इस देश मे अच्छी पैदावार होती थी और यह सदैव प्रचुर हरीतिमा से आच्छादित रहता था। इसमे वैभवशाली फलो के बाग थे और यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यवर्द्धक थी। यहा के निवासी शिष्ट आचार वाले, क्रियाशील और व्यावहारिक ज्ञान के उपासक थे। यहाँ पर 100 से अधिक बौद्ध विहार और 3,000 से अधिक भिक्षु थे जो महायान एव हीनयान के अनुयायी थे। यहाँ पर 10 देवमदिर थे और अबौद्धो की सख्या बहुत कम थी। राजधानी मे ही प्राचीन विहार था जहाँ वसुबन्धु ने विभिन्न शास्त्रो की रचना की थी। इन भग्नावशेषो मे एक महाकक्ष था जहाँ पर वसुबन्धु दूसरे देशो से आने वाले राजकुमारो एव भिक्षुओ को बौद्ध धर्म की व्याख्या करते थे। गगा के समीप अशोक के स्तूप से युक्त एक विशाल बौद्धविहार था, जो उस स्थान को लक्षित करता था जहाँ बुद्ध ने अपने श्रेष्ठ धर्म पर प्रवचन किया था। इस विहार से चार अथवा पाँच ली पश्चिम मे बुद्ध का अस्थियुक्त एक स्तूप था और इस स्तूप के उत्तर मे उस प्राचीन विहार के अवशेष थे, जहाँ पर सौत्रान्तिक-विभासा-शास्त्र की रचना की गयी थी। नगर के 5 या 6 मील दक्षिणपश्चिम मे किसी आम्रवन मे एक प्राचीन विहार स्थित था जहाँ पर असग ने शिक्षा ग्रहण की थी और जहा वह शिक्षक था। मैत्रेय ने असग को तीन बौद्ध शास्त्र बतलाये थे जिनका उल्लेख युवान-च्वाङ् ने किया है। उपर्युक्त आम्रकुज के पश्चिमोत्तर मे 100 कदम आगे बुद्ध का अस्थियुक्त एक स्तूप था। चीनी तीर्थ-

---

[1] एपि० इं०, XX, पृ० 57.

[2] लेग्गे, ट्रैवेल्स ऑव फा-ह्यान, पृ० 54-55.

यात्री के अनुसार असंग ने अपना धार्मिक जीवन महीशासक के रूप मे प्रारम किया था, परतु बाद मे वह महायानधर्मावलबी हो गया था। वसुबन्धु ने सर्वास्तिवादिन् सप्रदाय के अनुयायी के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया था। असग की मृत्यु के पश्चात् बसुबन्धु, जिन्होंने महायान धर्म का प्रचार एव मडन करते हुये कई भाष्य लिखे थे, 83 वर्ष की अवस्था मे अयोध्या मे मरे थे।[1]

रामायण के अनुसार अयोध्या एक धन-धान्यवती नगरी थी। इसमे सुसिंचित और पुष्पालकृत चौडी गलियाँ एव सडके थी। दरवाजो एव कावलो से मज्जित इसमे उन्नत तोरण थे। यह पूर्णत सुरक्षित था। यहाँ पर शिल्पी एवं कारीगर रहते थे। इसमे राज-प्रासाद, हरित-निकुज एव आम्रकुंज थे। यह नगर जल से भरी हुई एक गहरी परिखा से परिवृत होने के कारण अभेद्य था। यहां बडी सख्या मे कँगूरेदार घर एव सातमजिली ऊँची इमारते थी। यह एक जनसकुल नगर था और प्राय वाद्य-यत्रो की ध्वनि से प्रतिध्वनित होता था। इस नगर मे कम्बोजीय अश्व एव शक्तिशाली हाथी थे।[2] महाभारत मे इसे 'पुण्यलक्षणा' या शुभ लक्षणो से युक्त कहा गया है। पृथ्वी पर यह एक रमणीय स्थान था।[3] रामायण के अनुसार अयोध्या के समाज मे चातुर्वर्ण्यव्यवस्था थी, यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, एव शूद्र। उन्हे अपने विशिष्ट धर्मो एव दायित्वो का निर्वाह करना पडता था।[4]

जैन एव बौद्ध धर्मों के इतिहास मे अयोध्या उल्लेखनीय है।[5] इक्ष्वाकुवश मे अयोध्या के सिहासन के उत्तराधिकार का प्रश्न सामान्यतः ज्येष्ठाधिकार के नियम से निश्चित किया जाता था।[6] अयोध्या के अनेक विख्यात राजा हुये है।[7] अयोध्या के नरेश वशिष्ठ गोत्र से सबधित थे। वशिष्ठ उनके वशानुगत पुरोहित थे।[8]

---

[1] **वाटर्स, आन युवान च्वाङ्**, I, 354-9.

[2] **रामायण, पृ०** 309, **श्लोक**, 22-24.

[3] **वही, पृ०** 6, **श्लोक**, 90-98.

[4] **वही, पृ०** 114, **श्लोक** 32.

[5] **एस० स्टीवेंसन, हार्ट ऑव जैनिज्म**, पृ० 50-51; **संयुत्त**, III, 140 **और आगे; सारत्थपकासिनी**, II, पृ० 320.

[6] **रामायण, पृ०** 387, **श्लोक**, 36.

[7] **महाभारत**, 241, 2; **वायु**, 99, 270; **मत्स्य**, 50, 77; **वायु**, 85, 3-4; **अग्नि पुराण**, 272, 5-7; **कूर्म**, I, 20, 4-6; **हरिवंश**, II, 660, **पद्म** V, 130-162 **आदि आदि।**

[8] **विष्णु**, IV, 3. 18; **पद्म**, VI, 219-44.

अयोध्या का राज्य युवनाश्व द्वितीय एव विशेषतः उसके पुत्र मान्धातृ के समय मे बहुत विख्यात हुआ।[1] कालातर मे अयोध्या के प्रभुत्व का ह्रास हुआ और राजा जह्नु के राजत्व में कान्यकुब्ज के राज्य का समुत्कर्ष हुआ। हैहयो ने अयोध्या को पराजित किया और उनकी विजय के उपरात वहाँ पर विदेशी जातियाँ बस गयी। अयोध्या पुन: भगीरथ एव अम्बरीष नाभागि के राज्यकाल मे प्रसिद्ध हुयी।[2] दशरथ ने अग के बर्बर ऋष्यश्रृग से सहायता माँगी थी।[3] अयोध्या मे दशरथ के अश्वमेध मे पूर्वी तथा दक्षिणी देशो एव सुदूर पजाब के नरेश आमत्रित थे। पार्जिटर ने बतलाया है कि तब अयोध्या एव वशिष्ठों का सुसस्कृत ब्राह्मण क्षेत्र से कोई सबध न था।[4] कथासरित्सागर मे अयोध्या में नन्द के स्कंधावार का उल्लेख प्राप्त होता है।[5] योगिनीतत्र मे इस नगर का उल्लेख है (2।4, पृ० 128-129)। पालि ग्रथो मे अयोध्या के कुछ और राजाओ का उल्लेख प्राप्त होता है।[6] अयोध्या मे मुद्राओ की बहुत बडी सख्या प्राप्त हुई है और अधिक विवरणो के लिए, द्रष्टव्य, लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, III)।

अयोमुख—कनिघम के मतानुसार यह प्रतापगढ से 30 मील दक्षिण-पश्चिम स्थित था।[7]

आलवी—कनिघम एव हार्नले ने इसे उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले मे स्थित नेवल या नवल से समीकृत किया है। कुछ लोगो ने इसे इटावा से 27 मील उत्तर-पूर्व मे स्थित अविव से समीकृत किया है।[8] आलवी नगर के समीप अग्गालव नामक एक मदिर था, जहाँ पर बुद्ध एक बार रुके थे। अनेक नारी उपासिकाएँ और भिक्षुणियां यहाँ पर सत्य प्रवचन सुनने के लिए आयी थी।[9]

---

[1] महाभारत, III, 126.

[2] वायु, 88, 171-72; पद्म, VI, 22, 7-18; लिंग, I, 66, 21-22 आदि

[3] रामायण, I, 9 और 10.

[4] ऐंश्येंट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन, पृ० 314.

[5] टानी संस्करण, I, पृ० 37.

[6] जातक, (फासबॉल), IV, पृ० 82-83; वंसत्थप्पकासिनी (पा० टे० सो०), जिल्द, I, पृ० 127.

[7] कनिंघम, आ० स० रि० XI, 68; कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रेफी ऑव इंडिया, पृ० 443 और आगे; पृ० 708.

[8] बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 24.

[9] जातक, I, 160.

आपगा—यह ऋग्वेद (III.23, 4) मे वर्णित एक नदी है, जो दृषद्वती एव सरस्वती के मध्य बहती थी। कुछ विद्वानो ने इसे गगा के दूसरे नाम आपगा से समीकृत किया है। त्सिमर के अनुसार यह सरस्वती के निकट स्थित है।[1] थानेश्वर से गुजरने वाली यह एक छोटी उपनदी है। कुछ विद्वान् इसे चितग नदी की एक शाखा के रूप मे जानते है।[2] इस नदी का उल्लेख महाभारत (III, 83, 68) मे भी है।

बदरी—वराह पुराण (141.1) के अनुसार हिमालय-क्षेत्र मे यह एक एकात स्थल है। यहाँ पर इन्द्रलोक एव पचशिख (141.10, 141. 14) नामक दो तीर्थ है। पद्म पुराण मे (अध्याय 133) बदरी मे सारस्वत तीर्थ का वर्णन किया गया है।

बदरिकाराम—महाराज वैश्रवण के काल के कोसम-अभिलेख मे कौशाम्बी के समीप स्थित इस स्थान का उल्लेख प्राप्त होता है (एपि० इ० XXIV, भाग IV, पृ० 147)। यह एक बौद्ध विहार था जहाँ पर बुद्ध एक बार रुके थे। यहाँ पर थेर राहुल ने भिक्षुओ के नियमो के पालन मे अपना मन लगाया था (जातक I, 160, III, 64)। खेमक नामक एक थेर यहाँ पर अपने आवासकाल मे बहुत बीमार पड गया था। इस अवसर पर घोषिताराम मे निवास करने वाले स्थविरो ने दामक नामक एक थेर को उसके पास यह जानने के लिए भजा था कि वह कैसे पीडा सहन कर लेता है (सयुत, III, 126 और आगे)।

बदरिकाश्रम—महाभारत (90, 27-34) मे इसका उल्लेख प्राप्त होता है। इसमे बदरिकातीर्थ का भी वर्णन प्राप्त होता है (85, 13, तु० पद्म पुराण, अध्याय 21, तीर्थ माहात्म्य)। योगिनीतत्र मे (2 6 167 और आगे) इस आश्रम का उल्लेख है। बाण की कादम्बरी के अनुसार अर्जुन एव कृष्ण यहाँ आये थे (पृ० 94)। स्कन्द पुराण(अध्याय 1, 53-59)के अनुसार इस तीर्थ मे जाने से पापी पापो से मुक्त हो जाता है। यहाँ पर एक महती पूजा होती है, परतु प्रतिवर्ष 6 मास तक जब यह हिमाच्छादित रहता है, यहाँ पर कोई पूजा नही होती (पद्म पुराण, उत्तरखड, 2.1 7)।

बद्रीनाथ—यह गढ़वाल मे स्थित है। यह मुख्य हिमालय पर्वतमाला की की एक चोटी है जो श्रीनगर से 55 मील उत्तर-पूर्व में स्थित है। अलकनन्दा नदी के स्रोत के समीप ही इसके पश्चिमी तट पर नर-नारायण का मदिर बनाया गया

---

[1] आल्टिडिशेज लेबेन, 18.

[2] ज० रॉ० ए० सो०, 1883, पृ० 362.

था। आठवी शताब्दी ईसवी मे यह मदिर शकराचार्य द्वारा बनवाया गया बतलाया जाता है (लाहा, होली प्लेसेज़ ऑव इडिया, पृ० 18; इपीरियल गज़ेटियर ऑव इडिया, ले०, डब्ल्यू० डब्ल्यू० हटर, पृ० 287 और आगे)।

बाँसखेड़ा—यह शाहजहाँपुर से लगभग 25 मील दूर है। यहाँ पर हर्ष का एक ताम्रपत्र अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ० IV, 208)।

बर्बरिक (टालेमी का बर्बरायी)—स्पष्टत. यह पेरिप्लस ऑव दी इरीथ्रियन सी' मे उल्लिखित बार्बेरिकम (Barbaricum) या बार्बेरिकन (Barbaricon) नामक मडी थी। यह एक व्यापारिक नगर (बाजार) एव बदरगाह था जो सिन्धु नदी के मध्यवर्ती मुहाने पर स्थित था। सिन्धु-डेल्टा के द्वीपो पर स्थित नगरो मे से यह एक था (मैक्रिडिल, ऐश्येट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टालेमी, मजुमदार द्वारा सपादित, पृ० 148)।

बर्बरसदेश (बर्बरदेश) अरबसागर तक विस्तृत प्रतीत होता है। महाभारत मे बर्बरदेश के निवासियो को शको एव यवनो से सबधित बतलाया गया है (महाभारत, सभापर्व, XXXI, 1199, वनपर्व, CCLIII, 15254, शान्तिपर्व, CCVII, 7560-61,)। मार्कण्डेय पुराण (LVII 39) मे इन्हे सिंधु-देश मे स्थित बतलाया गया है और बृहत्सहिता मे इसका उल्लेख उत्तरी या उत्तरपश्चिमी जाति के रूप मे किया गया है। (और अधिक विवरण के लिए लाहा की पुस्तक ट्राइब्स इन ऐश्येट इडिया, पृ० 92, दृष्टव्य)।

बसही—उत्तर प्रदेश के इटावा जिले की बिन्धुना तहसील के मुख्यावास से दो मील उत्तर-पूर्व मे स्थित यह एक गाँव है। यहाँ से एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, जो विष्णु की स्तुति से प्रारभ होता है और तत्पश्चात् इसमे महियाला से मदनपाल तक की वशावली दी गयी है (इडियन ऐटिक्वेरी, XIV, 101-104)।

बटेश्वर—आगरा से 35 मील दक्षिण-पूर्व, आगरा जिले मे यमुना के दाहिने तट पर स्थित यह एक कस्बा है, जहाँ पर एक प्राचीन टीला मिलता है (एपि० इ०, I, 207)।

बाहुदा (बाहुका या बहुका)—पार्जिटर ने इसे आधुनिक रामगगा से समीकृत किया है जो कन्नौज के समीप, बाँई ओर से गगा नदी मे मिलती है (पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 291-92)। कुछ विद्वानों ने इसे धवला, जिसे अब धुमेला अथवा बड़ी राप्ती कहते है और जो अवध मे राप्ती की सहायक नदी है—से समीकृत किया है (नं० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 16)। दक्कन मे इसी नाम की एक अन्य नदी थी (महाभारत, भीष्मपर्व, 9, 322; अनुशासनपर्व, 165, 7653, रामायण, किष्किन्ध्या काण्ड, 41, 13)। इस नदी मे स्नान करने के

कारण लिखित नामक ऋषि को उनकी विच्छिन्न बाहु पुन. प्राप्त हुयी थी जिसके कारण इसका बाहुदा नाम पड़ा है (महाभारत, शान्तिपर्व, 22; हरिवंश, 12)। मार्कण्डेय पुराण(अध्याय, 57) मे इसे गगा-यमुना के साथ ही हिमालय पर्वत से सबधित बतलाया गया है। शिवपुराण के अनुसार, अपने पति प्रसेनजित् द्वारा अभिशप्त होने के कारण गौरी बाहुदा नदी के रूप मे परिवर्तित हो गयी थी। मज्झिमनिकाय (I पृ० 39) के अनुसार बाहुदा को बाहुका भी कहा जाता है। बुद्ध ने इस नदी मे स्नान किया था। इस नदी मे अवगाहन करने से बहुत से लोग अपने पापो को नष्ट कर सके थे (वही, I, पृ० 39)। जातक (V. 388, और आगे) मे गया, दोण और टिम्बरू के साथ ही इसका उल्लेख किया गया है, अतिम दो नामो का समीकरण नही किया जा सकता है।

बाहुमती—बाहुमती को नेपाल मे बौद्धो की पवित्र नदी बागमती से समीकृत किया जा सकता है। लास्मेन ने एरियन की ककथिस (Kakanthis) को नेपाल की बागमती नदी से समीकृत किया है। बागमती को बाचमती भी कहा जाता है, क्योंकि इसका निर्माण बुद्ध ऋाकुच्छन्द ने अपनी नेपाल यात्रा के मध्य अपने मुख-वचन से किया था। मरदारिका, मणिस्रोही, राजमञ्जरी, रत्नावली, चारुमती, प्रभावती और त्रिवेणी नामक नदियो के साथ इसका सगम होने पर क्रमश. शाता शकर, राजमञ्जरी, प्रमोदा, सुलक्षणा, जया एव गोकर्ण नामक तीर्थ बनते हैं (वराह-पुराण, अध्याय 215, तु० स्वयभू-पुराण, अध्याय V)। बागमती नदी के तट पर वत्सला स्थित है (नेपाल महात्म्य, अध्याय I, 39)।

वाराणसी—देखिए काशी।

बेलखर—उत्तरप्रदेश के मिर्जापुर जिले मे चुनार के दक्षिणपूर्व मे लगभग 12 मील दूर स्थित यह एक गाँव है। बेलखर प्रस्तर स्तभलेख इसी गाँव से मिला था, जिस पर गणेश की एक छोटी आकृति बनी हुयी है।[1]

भद्दावतिका—यह व्यापारिक नगर पारिलेय्यक वन से श्रावस्ती जाने वाले मार्ग मे पडता था। श्रावस्ती में वर्षाऋतु व्यतीत करने के पश्चात्, बुद्ध भिक्षाटन के लिए निकले और यहाँ आये थे। इस बाजार के समीप एक बाग था, जहाँ पर बुद्ध ने निवास किया था। इस नगर से वह कोसाम्बी गये थे।[2]

भद्रशिला—यह एक वैभवशील, सपन्न एव जनसकुल नगर था। लबाई और

---

[1] आर्क० सर्वे० रिपोर्ट, XI, 128 और आगे; ज० ए० सो० बं०, 1911, पृ० 763 और आगे।

[2] जातक, I, 360.

चौड़ाई मे यह 12 योजन, चार तोरण मे सुविभक्त, तथा ऊँचे महराबों एव खिड़कियों से अलकृत था। इस शहर मे एक राजोपवन था।[1] बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता के अनुसार, यह नगर हिमालय पर्वत के उत्तर मे स्थित था (पचम पल्लव, पृ० 2 और 6)। कालांतर मे यह नगर तक्षशिला नाम से विख्यात् हुआ क्योंकि यहाँ पर एक ब्राह्मण भिक्षु ने यहाँ के राजा चद्रप्रभ का शिरोच्छेदन किया था।[2]

भरद्वाज आश्रम—भरद्वाज ऋषि का आश्रम प्रयाग या इलाहाबाद मे गगा-यमुना के सगम पर स्थित था।[3] राम ने स्वय यह स्वीकार किया था कि यह आश्रम अयोध्या से दूर नही था।[4] दण्डकारण्य जाते समय रामचन्द्र यहाँ आये थे और उन्होंने हनुमान को भरत के पास भेजा था।[5] राम, लक्ष्मण एव सीता के साथ यहाँ आये थे। उन्होंने तब ऋषि का यथोचित सत्कार किया था और उनको यह बतलाया कि वे अपने पिता के वचनों को पूर्ण करने के लिए 14 वर्ष के वनवास में जा रहे थे। भरत राम की खोज मे भ्रमण करते हुए, अपने कुल-गुरु वशिष्ठ के साथ यहाँ आये थे। वीतिहव्यों से युद्ध मे पराजित होने के पश्चात् राजा दिवोदास ने इस आश्रम मे शरण ली थी।

भर्ग—अपने प्रमुख नगर सुमुमारगिर के सहित भर्गो का देश वत्स के अधीन हो गया था।[6] कुछ विद्वान् इसे श्रावस्ती एव वैशाली के मध्य स्थित बतलाते है, किंतु उस स्थान की स्थिति अनिश्चित है।

भास्कर क्षेत्र—नुतिमदुगु से उपलब्ध ताम्रपत्र अभिलेखों मे इसका वर्णन प्राप्त होता है। यह बेलारी जिले मे स्थित हापी नामक स्थान है।[7] न० ला० दे ने इसको, बिना कोई निश्चित कारण बतलाये हुये ही, प्रयाग से समीकृत किया है।[8]

भेसकलावन—यह भर्गो के सुसुमारगिरि या सुसुमारगिर के समीप था—

---

[1] दिव्यावदान, पृ० 315.

[2] रा० ला० मित्र, ने० बु० लिट्०, पृ० 310.

[3] रामायण, अयोध्याकाण्ड, अध्याय, 54, श्लोक, 9.

[4] वही, सर्ग 54, श्लोक, 24.

[5] वही, आदि काण्ड, प्रथम सर्ग, श्लोक, 87.

[6] अंगुत्तर, II, 61; विनय II, 127.

[7] एपि० इं० XXV, भाग IV.

[8] ज्यॉ० डिक्श० ऑव ऐश्येंट ऍड मेडिवल इंडिया, द्वितीय संस्करण, 32.

जहाँ पर बुद्ध रुके थे।[1] यह केसकलावन नाम से भी विख्यात था।[2] यह एक महत्त्व-पूर्ण बौद्ध आवास तथा वत्स जनपद मे बौद्ध-मत का एक प्राचीन केंद्र था। स्पष्टतः यह वन राजकुमार बोधि से सबधित था, जो बुद्ध के कट्टर उपासक अनुयायी हो गये थे।[3]

भीतरगाँव—यह कानपुर जिले मे है, जहाँ पर एक विशाल मदिर है। भितरी-गाँव नाम से भी विख्यात यह गाँव कानपुर से 20 मील दक्षिण और कोडा जहाना-बाद से 10 मील उत्तर-पश्चिम मे, कानपुर तथा हमीरपुर के बीच मे स्थित है।[4]

भितरी—स्कन्दगुप्त के भितरी स्तभलेख मे वर्णित यह गाँव गाजीपुर जिले[5] की सैदपुर तहसील के मुख्य शहर सैदपुर के लगभग 5 मील पूर्वोत्तर मे स्थित है।

भीटा—इसे वीरचरित्र मे उल्लिखित प्राचीन विटभय पट्टन नामक नगर से समीकृत किया गया है, जो महावीर के समय मे विकसित हुआ था इस ग्रथ मे विटभय पट्टन को राजा उदयन की राजधानी बतलाया गया है, जिसने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था।[6] इलाहाबाद के निकट भीटा के प्राचीन अवशेष का वर्णन जनरल कनिघम ने जो यहाँ पर 1872 ई० मे आये थे, किया है।[7] अधिक विवरण के लिए, आर्क० सर्वे० ऑव इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1909-10, पृ० 40; 1911-12, पृ० 29-94.

भृगु-आश्रम—महाभारत मे इसे भृगु-तीर्थ कहा गया है। इस ऋषि का आश्रम उत्तरप्रदेश मे बलिया मे था, जो गगा एव सरयू के तट पर स्थित था। परशु-राम ने राम दाशरथी द्वारा अपहृत अपनी शक्ति को यहाँ पर पुन प्राप्त किया था।[8] भागे हुये राजा वीतहव्य ने इस आश्रम मे शरण ली थी। भृगु की सत्कृपा से राजा वीतहव्य एक ब्राह्मण बने थे।[9]

---

[1] अंगुत्तर, II, पृ० 61; III, पृ० 295; IV, पृ० 85, 228, 232, 268; मज्झिम II, 91; जातक III, 157; मज्झिम, I, 513 और आगे।

[2] मज्झिम, II, 91; जातक, III, 157.

[3] मज्झिम, I, 513 और आगे।

[4] आर्क० सर्वे० इं०, एनुअल रिपोर्ट, 1908-9, पृ० 5 और आगे।

[5] का० ई० इं०, जिल्द, III.

[6] नेविल, इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 234.

[7] आर्क० सर्वे० रि०, जिल्द, III, पृ० 46-52.

[8] महाभारत, III, 99, 8650.

[9] तु० मैटिन, ईस्टर्न इडिया, II, 340.

बिलसद—बिलसद नामक एक अन्य नाम से विख्यात इस गाँव का वर्णन कुमार गुप्त के बिलसद स्तम्भलेख मे किया गया है। यह एटा जिले मे अलीगज के लगभग चार मील उत्तर-पश्चिम मे तीन भागो यथा—पूर्वी बिलसद, पश्चिमी बिलसद और आचलिक बिलमद के रूप मे स्थित है।[1]

बिठूर—यह कानपुर से 14 मील दूर स्थित है और वहाँ पर वाल्मीकि ऋषि का आश्रम है।

ब्रह्मपुर—पजाब मे यह चबा[2] राज्य की प्राचीन राजधानी थी। यहाँ पर तीन प्राचीन मदिर है, जिनमे सबसे बडा प्रस्तर निर्मित है और शिव के अवतार मणिमहेश को, दूसरा प्रस्तर निर्मित मदिर विष्णु के नरसिहावतार और तीसरा जो अधिकाशत. काष्ठ निर्मित है, लक्ष्मणदेवी को समर्पित है। कनिघम के मतानुसार ब्रह्मपुर विराटपत्तन का एक अन्य नाम था। यहाँ की जलवायु थोडी ठडी बतलायी जाती है और वैराट की स्थित मे भी मेल खाती है। युवान-च्वाङ् ने ब्रह्मपुर राज्य की परिधि 667 मील बतलायी है। इसमे अवश्यमेव अलकनन्दा एव कर्णाली नदियो के मध्य का सपूर्ण पहाडी प्रदेश समिल्लित रहा होगा।[3] ब्रह्मपुर को पो-लो-लिह-मो-पु-लो भी कहा जाता था।[4] कनिघम के मतानुसार ब्रह्मपुर गढवाल और कुमाऊँ जिलो मे स्थित था। इन जिलो मे कतुर या कतुरिया राजा शासन करते थे, जो समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम लेख के कर्तृपुर मे सबधित थे।[5]

बूढ़ी गंडक—इसका स्रोत नेपाल मे हरिहरपुर की पहाडियो मे है। चपारन जिले मे मोतीहारी के उत्तरपूर्व मे इसमे मिलने वाली पहली पश्चिमी उपनदी छह नदियो के सयुक्त प्रवाह के अतिरिक्त और कुछ नही है। यह मुगेर जिले मे गोगरी के पश्चिम मे गगा मे मिलती है। और अधिक विवरण के लिए बि० च० लाहा की पुस्तक रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 24 द्रष्टव्य।

चन्दपहा—यह कोसम्ब पट्टल मे स्थित एक गाँव है जिसे कर्णदेव ने पडित शातिशर्मन् को दिया था।[6]

---

[1] का० इं० इं० जिल्द, III.

[2] अधुना छब हिमाचल प्रदेश राज्य में समाविष्ट है।

[3] कनिघम, एं० ज्यॉ० इ०, 407 और आगे।

[4] वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, I, पृ० 329.

[5] ज० रा० ए० सो०, 1898, 199; कनिंघम, एं० ज्यॉ० इं०, 704.

[6] एपि० इं०, XI, पृ० 139 और आगे; ज० रा० ए० सो० 1927, पृ० 94 और आगे भी द्रष्टव्य।

चन्द्रभागा—एक पालि-धर्मग्रंथ—अपदान मे इसका उल्लेख है।[1] मिलिंद-पञ्हो के अनुसार यह नदी हिमवन्त (हिमालय क्षेत्र) से निकलती है। जैन थानंग (5,470) में चार अन्य नदियो के साथ इसका वर्णन प्राप्त होता है। चन्द्रभागा या चेनाब किश्तवर के ठीक पहले दो सगमित पहाडी सरिताओ के रूप मे बहती है। किश्तवर से रिश्तवर तक इसका प्रवाह दक्षिणाभिमुख है। जम्मू से होकर वहाँ से अपने वितस्ता (झेलम) के मध्य दोआब बनाती हुयी यह दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती है। यही ऋग्वेद मे वर्णित असिक्णी, एरियन की एकेसिनीज़ (Akesines) तथा टालेमी की सदवग या सदबल नदी है। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार इसी नाम की दो नदियाँ थी। महाभारत मे भी इसी मान्यता का प्रतिपादन प्रतीत होता है।[2] परतु दूसरी सरिता का समीकरण दुष्कर है। पद्मपुराण में इस नदी का वर्णन है।[3]

चन्द्रावती—यह वाराणसी जिले मे गगा के बाये तट पर स्थित है, जहाँ से गाहडवाल वश के दो ताम्रपत्र प्राप्त हुये थे।[4]

चावल—यह पर्वत हिमालय से बहुत दूर नही था।[5]

चम्ब—इस जिले मे रावी नदी के स्रोतो की घाटियो एव लाहुल तथा काश्तवार के मध्य चेनाव की ऊपरी घाटी का एक भूखड सम्मिलित था। उसकी प्राचीन राजधानी वर्मपुर थी।[6]

छतरपुर—यह गाँव कानपुर के 21 मील उत्तर-पश्चिम मे शिवराजपुर के समीप स्थित था, जहाँ गोविंद चन्द्रदेव का एक ताम्रपत्र अभिलेख प्राप्त हुआ था।[7]

चीन—वीरपुरुषदत्त के नागार्जुनिकोण्ड अभिलेख मे इसका वर्णन है। यह हिमालय क्षेत्र मे चिलात या किरात के पार स्थित था। पालि ग्रथ सासनवश मे (पृ० 13) में हिमवतपदेस को चीनरट्ठ कहा गया है।

चित्रकूट (पालि चित्तकूट)—पद्मपुराण (अध्याय 21, तीर्थ माहात्म्य) मे

---

1 पृ०, 277, 291.

2 भीष्मपर्व, 9, 322-27.

3 उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-38.

4 इं० हिं० क्वा०, मार्च, 1949.

5 अपदान, पृ० 451.

6 कनिंघम, एं० ज्यॉ० इं०, पृ० 161-62.

7 एपि० इं०, XVIII, पृ० 224.

वर्णित तीर्थस्थलो के अंतर्गत इस रमणीक पर्वत का वर्णन प्राप्त होता है। जैन ग्रंथ भगवती-टीका (7. 6) मे इसे चित्तकुड कहा गया है। कालिदास के अनुसार किसी चट्टान या टीले को कौतुक मे ही सिर से ठोकर देने वाले किसी वन्य-वृषभ, की भाँति यह प्रतीत होता है।[1] यह भरद्वाज ऋषि के आश्रम से 20 मील (10 क्रोश) की दूरी पर स्थित था।[2] उत्तरचरितम् (अक, I, 24) मे चित्रकूट तक जानेवाली कालिंदी-तट पर स्थित सडक का उल्लेख है। यह आधुनिक चित्रकूट नामक एक प्रसिद्ध पहाडी है, जो इलाहाबाद से 65 मील दूर पश्चिम-दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है।[3] यह आधुनिक चित्रकूट रेलवे स्टेशन से लगभग चार मील दूर स्थित है। यह प्रयाग के दक्षिण-पश्चिम मे है। अपदान (पृ० 50) मे इसे अस्पष्ट रूप से हिमवत के समीप स्थित बतलाया गया है। गढवा शिलालेख मे इसका उल्लेख है।[4] भागवत पुराण मे एक पर्वत के रूप मे इसका वर्णन प्राप्त होता है (श्लोक, 19, 16)। ललितविस्तर मे (पृ० 391) मे एक पहाडी के रूप मे इसका उल्लेख है। यह एक रमणीक[5] एव निष्कलुष स्थल था।[6] यह हिमालय क्षेत्र मे स्थित था और यहाँ पर एक स्वर्णिम गुहा तथा एक प्राकृतिक झील थी।[7] यह अपने झरनो या प्रपातो के लिए विख्यात था (रघुवश, XIII, 47)

इसको बुदेलखड मे काम्प्तानाथ गिरि से समीकृत किया गया है। सामान्यतया इसे उत्तरप्रदेश के बाँदा जिले मे कालिंजर से लगभग 20 मील दूर उत्तर-पूर्व मे स्थित उसी नाम के एक पर्वत से समीकृत किया जाता है। महाभारत (III, 85-56) मे इसे कालजर से सबद्ध बतलाया गया है।[8] इसके समीकरण के विषय मे हम आर्क० सर्वे० रिपोर्ट, XIII और XXI तथा ज० रा० ए० सो० 1894 का भी उल्लेख कर सकते है।

रामायण[9] के अनुसार राम ने पर्यस्विनी (पैसुनी) या मदाकिनी के तट पर

---

[1] रघुवंश, XIII 47.

[2] रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग 54, श्लोक 28.

[3] ज० रा० ए० सो०, अप्रैल, 1894, पृ० 239.

[4] का० इं० इं०, जिल्द, III.

[5] जातक, II, 176.

[6] जातक, VI, 126.

[7] जातक, II, 176; III, पृ० 208.

[8] ज० रा० ए० सो० बं०, भाग, XV, 1949, नं० 2, लेटर्स, पृ० 129.

[9] अयोध्याकाण्ड, अध्याय, 55.

स्थित इस पहाडी पर निवास किया था। भरद्वाज आश्रम से लौटते समय वह यमुना को पार करके यहाँ आये थे। भरद्वाज-आश्रम[1] से यह तीन योजन दूर पर स्थित था। यह रमणीक पर्वत अनेक कलहंसों का आवास था जो यहाँ पर स्थित स्वर्ण गुफा[2] मे रहते थे जिनमे कुछ तो तीव्रगामी एव कुछ स्वर्णिम थे।[3] धर्मानुचरण, धर्मानुसार राज्य का शासन तथा प्रजा के हृदय को जीतने के लिए आदिष्ट एक राजा ने इस पर्वत के लिए प्रस्थान किया था।[4] कालिका पुराण (79, 143) मे कज्जल नामक एक पर्वत को चित्रकूट के पूर्व मे स्थित बतलाया गया है।

चित्रकूट मे मदाकिनी एव मालिनी[5] नामक दो नदियाँ थी। मदाकिनी इस पहाडी के उत्तर की ओर स्थित बतलायी जाती है। चित्रकूट के जगल पृथक् नही प्रतीत होते। नीलवन इस पहाडी पर स्थित वन से मिल गया था।[6] महाभारत (85, 58-59) मे चित्रकूट पर्वत और मदाकिनी नदी का उल्लेख प्राप्त होता है।

चुक्ष—तक्षशिला से प्राप्त जोहोनिक के रजत-घट अभिलेख मे उल्लिखित चुक्ष को तक्षशिला के समीप चाच के मैदान से समीकृत किया जाता है।[7] स्टाइन के मतानुसार चुक्ष अटक जिले के उत्तर मे स्थित वर्तमान चाच नामक स्थान है।

दधीचि-आश्रम—यह आश्रम सरस्वती के दूसरी ओर स्थित था। दधीचि ऋषि ने मानवता के कल्याण के लिए आत्मोत्सर्ग किया था।

डलमऊ—यह डलमऊ परगने और डलमऊ तहसील का मुख्यावास है। यह एक अतिप्राचीन नगर और अतीव ऐतिहासिक एव पुरातत्वीय महत्त्व का स्थान है। रायबरेली से 19 मील दूर यह गगा नदी के तट पर स्थित है। यहाँ पर एक किला है जिसमे वस्तुत दो बौद्ध स्तूपो के ध्वसावशेष है।[8]

---

[1] अयोध्याकाण्ड, LIV, 29-30.

[2] जातक, V, 337; जातक II, 107; V, 381.

[3] जातक, IV, 212, 423-424.

[4] जातक, V, 352.

[5] रामायण, अयोध्याकाण्ड, LIV, 39; LVI, 7, 8.

[6] अयोध्याकांड, LVI, 1-18.

[7] ब्युलर, एपि० इं०, IV, 54; स्टेनकोनो, का० इं० इं०, II, i, 25-28; रायचौधरी, पो० हि० एं०इ० (चतुर्थ संस्करण), पृ० 369, पादटिप्पणी 3.

[8] नेविल, रायबरेली डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 160 और आगे।

दण्डकहिरत्र—यह पर्वत हिमालय-क्षेत्र मे स्थित प्रतीत होता है।[1]

दवाला—महाराज सखोब के खोह ताम्रपत्र अभिलेख में इसका वर्णन प्राप्त होता है जो डाहल का प्राचीन रूप है और जो आधुनिक बुदेलखड का प्रतिनिधित्व करता है।[2] आटविकराज्यो मे आलवक (गाजीपुर) और दवाला (डभाला) या जबलपुर से संबंधित आटविक राज्य सम्मिलित थे।[3]

दर्वाभिसार—इस स्थान का उल्लेख महाभारत (VII, 91, 43) मे प्राप्त होता है, जिसमे स्टाइन के मतानुसार झेलम और चेनाव के मध्य स्थित निचले और मध्यवर्ती पहाडी इलाके सम्मिलित थे। कुछ विद्वानो के अनुसार स्थूल रूप मे यह कश्मीर के पूँछ जिले और नौसेहरा को द्योतित करता था और संभवत प्राचीन काम्बोज राज्य का एक खड था (रायचौधरी, पॉ० हि० ए० इ०, चतुर्थ सस्करण, पृ० 200)। अधिक विवरणो के लिए वि० च० लाहा की इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग I, पृ० 17-18 द्रष्टव्य है।

देवलिया—यह उत्तरप्रदेश के प्रतापगढ जिले मे स्थित है (डिस्क्रिप्शन ऑव नार्दर्न इडिया, दे० रा० भडारकर द्वारा पुनरावृत्त, स० 696, वि० 1393)।

देवरिया—यह गॉव इलाहाबाद से 11 मील दक्षिण-पश्चिम मे यमुना के दाहिने तट पर और कन्हना से लगभग 9 मील पश्चिम मे स्थित है (इलाहाबाद गजेटियर, लेखक, नेविल, पृ० 233)।

देविका—इस नदी का वर्णन पाणिनि की अष्टाध्यायी (VII 3.1), योगिनी तत्र (2, 5,139 और आगे) और कालिका पुराण (अध्याय, 24, 137-138) मे किया गया है। पार्जिटर ने इसे रावी नदी की सहायक डीग नदी मे समीकृत करने की चेष्टा की है (मार्कण्डेय पुराण, पृ० 292, टिप्पणी)। वामन एव मत्स्य पुराण इस समीकरण की पुष्टि करते हैं (अध्याय, 81, 84, 89, अध्याय, 113)। अग्नि पुराण (अध्याय, 200) के अनुसार यह सावीर देश मे बहती थी। पद्म पुराण (उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-38) मे इस नदी का वर्णन है। कालिकापुराण (अध्याय, 23, 137-138) मे इसके स्रोत का उल्लेख किया गया है, जो सिवालिक पर्वतमाला की मैनाक पहाडियो मे है। इस नदी का समीकरण उत्तरप्रदेश की देवा या देविका नदी से भी किया गया है, जो सरयू के दक्षिणी प्रवाह का एक अन्य नाम है (आगरा गाइड ऐड गजेटियर, 1841, II, पृ० 120, 252)। कालिका-

---

[1] जातक II, पृ० 33.

[2] का० इं० इ०, जिल्द III.

[3] एपि० इं० VIII, 284-287.

पुराण के अनुसार यह गोमती और सरयू के मध्य बहती थी। महाभारत के अनुशासनपर्व (श्लोक, 7645 एवं 7647) से व्यंजित होता है कि देविका और सरयू दो पृथक् नदियाँ थी।

धम्मपालगाम—यह गाँव काशी जनपद मे संमिलित था (जातक, IV . 50)

दृषद्वती—ऋग्वेद (III, 23-4) मे वर्णित इस नदी का वर्णन तत्कालीन ब्रह्मावर्त्त (II, 17) की दक्षिणी एव पूर्वी सीमा के रूप मे किया गया है। महाभारत के अनुसार यह कुरुक्षेत्र की एक सीमा का निर्माण करती थी (वनपर्व, 50 .74)। कालिका पुराण मे (अध्याय, 51,77 और आगे) इसे गंगा की भाँति दृष्टिगत होने वाली बतलाया गया है। दृषद्वती एव कौशिकी का संगम एक अपूर्व तीर्थ था। इस नदी का समीकरण आधुनिक चित्रग से किया गया है जो सरस्वती के समानातर प्रवाहित होती है (रैप्सन, ऐश्येट इडिया, पृ० 51, इपीरियल गज़ेटियर ऑव इडिया, पृ० 26)। इस नदी का स्रोत सिरमौर पहाडियो में निर्दिष्ट किया जा सकता है। एल्फिसटन और टॉड ने इसे अबाला और सिध से बहने वाली घग्घर से समीकृत करने का प्रयत्न किया है जो अब राजस्थान की मरुभूमि मे विलुप्त हो गयी है (ज० ए० सो० ब०, VI, 181) जब कि कनिघम ने इसे राक्षी नदी बतलाया है जो थानेश्वर के दक्षिण-पूर्व से बहती है (आर्क्यॉलाजिकल सर्वे रिपोर्ट, XIV)। कुछ विद्वानों ने इसे आधुनिक चितग या चित्रग से समीकृत किया है (ज० रा० ए० सो०, 25, 58)। वामन पुराण (अध्याय, 34) मे कौशिकी को दृषद्वती की एक शाखा बतलाया गया है। भागवत पुराण मे भी इस नदी का उल्लेख प्राप्त होता है V. 19, 18, X, 71, 22)। योगिनीतंत्र (2, 5, 139 और आगे) मे भी इसका वर्णन प्राप्त होता है।

द्वैतवन—अपने वनवास के काल मे पाण्डवो ने इस वन मे निवास किया था। यह एक मुक्त स्थान समझा जाता था जिस पर किसी राजा का अधिकार नही था। इसकी सीमा मे द्वैत नामक झील की स्थिति के कारण इसे द्वैतवन कहा जाता था। महाभारत के अनुसार यह किसी मरुभूमि के निकट था और सरस्वती नदी इससे होकर बहती थी। उत्तरपूर्व मे तंगण और दक्षिणपूर्व मे कुरुक्षेत्र तथा हस्तिनापुर के मध्य मे स्थित यह हिमालय के समीप ही था। यही से पाडव महाभारत के वनपर्व में वर्णित अपनी तीर्थयात्रा पर निकले थे (एपि० इं०, XXVII, भाग VII, जुलाई, 1948, पृ० 319, और आगे)।

एकसाला—यह ब्राह्मणो का एक गाँव था जहाँ कोशल-निवासियों के बीच बुद्ध एक बार रुके थे। गृहस्थों की एक बड़ी सभा से परिवृत्त होने पर पर उन्होंने

धम्म पर प्रवचन किया था। यही पर मार बुद्ध द्वारा पराजित हुआ था (सयुत्त, I, पृ० 111)।

गढ़वा—चन्द्रगुप्त द्वितीय के गढवा शिलालेख मे इस गढ का उल्लेख है जिसमें इलाहाबाद जिले के अरैल और बारा परगने के कुछ गाँव समिलित थे (कार्पस, इं० इ०, जिल्द, III)। इस अभिलेख के अनुसार गढ़वा इलाहाबाद जिले की करछना तहसील मे स्थित था।

गण्डकी (गडक)—भागवत पुराण (X. 79 11, V 7 10) के अनुसार इसे गण्डकी और चक्र नदी भी कहा जाता था। पद्म पुराण (अध्याय 21) मे इसे पुनीत बताया गया है। योगिनीतंत्र (2।1, पृ० 112-113) मे गण्डकी नदी का उल्लेख प्राप्त होता है। यह गगा की एक बडी . ऊपरी सहायक नदी है जिसका उद्गम दक्षिणी तिब्बत की पहाडियो मे है। नेपाल से गुजरते हुए इसमे बाँई ओर से चार और दाहिनी ओर से दो सहायक नदियाँ मिलती है। गण्डक मे दाँई ओर से मिलने वाली इसकी ऊपरी सहायक नदी नेपाल मे नयाकोट के पश्चिमोत्तर मे और राप्ती नामक इसकी निचली सहायक नदी चपारन जिले के ठीक पहले इसमे मिलती है। इसका मुख्य प्रवाह सारा जिले मे सोनपुर, और मुजफ्फरपुर जिले मे हाजीपुर के मध्य गगा मे मिलता है, जबकि इसका क्षुद्र प्रवाह बसाढ मे द्विशाखित हो कर किसी अन्य नदी से मिल जाता है। विस्तृत विवरण के लिए बि० च० लाहा की पुस्तक, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 23-24 द्रष्टव्य है।

गण्डपर्वत—यह गंगोत्री पर्वत है जिसके पाद मे बिन्दुसरोवर स्थित है। (मत्स्य पुराण, अध्याय 121)।

गन्धमादन—योगिनीतंत्र (1।15) मे इस पर्वत का वर्णन है। भागवत पुराण मे (IV. 1 58, V. 1 8, X 52. 3) इसका उस पर्वत के रूप मे उल्लेख है जिसके ऊपर ब्रह्मा अवतरित हुए थे। जातक मे इसका वर्णन एक शैलकूट के रूप मे किया गया है जहाँ राजा वेस्सन्तर अपने बाल-बच्चो के साथ गया था (जातक, VI, 519)। यह पर्वत रुद्र हिमालय का एक भाग है तथा महाकाव्य-कारों के मतानुसार यह कैलास पर्वतमाला का एक हिस्सा है। यह मन्दाकिनी द्वारा सिंचित बतलाया जाता है। हरिवंश (अध्याय, XXVI, 5-7) के अनुसार उर्वशी के साथ राजा पुरुरवा गधमादन पर्वत की तलहटी मे दस वर्ष तक रहे। पद्म पुराण (अध्याय, 133) के अनुसार वहाँ पर सुगध नामक एक तीर्थ था। इस पुराण (उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-38) मे गंधमादन का वर्णन प्राप्त होता है। बाण ने हिमालय के एक शिखर के रूप मे इसका वर्णन किया है (कादम्बरी, काले-सस्करण, पृ० 94)। कालिदास ने अपने कुमारसभव (VIII, 28, 29, 75-86

मे गधमादन का वर्णन किया है। इस पर्वत से एक ऋषि राजा को देखने के लिए वाराणसी आया था (जातक, III, 452)। इस पर्वत में नंदमूल नामक एक गुहा थी, जिसमे बोधिसत्त्व निवास करते थे (सासनवंस, पा० टे० सो०, पृ० 68)। इस पर्वत पर एक विशाल शिवलिंग था (कालिका पुराण, 78.70)। इस पर्वत के पूर्व में काम-पर्वत स्थित था (वही, 79 57)। दिव्यावदान के अनुसार (पृ० 157) आश्रम-व्यवस्थापक रत्नक ने इस पर्वत से अशोकवृक्ष ले जा कर उस स्थान पर आरोपित किया था जहाँ पर बुद्ध ने चमत्कार दिखलाये थे। बुद्ध इस पर्वत पर गये थे जिस समय इसकी तलहटी मे एक ब्राह्मण रहा करता था (बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता, पचम पल्लव, पृ० 25,31)।

गन्धर्व—महाभारत (II, 48, 22-23) मे वर्णित गधर्वदेश को कुछ लोगो ने गधार देश से समीकृत किया है। रामायण मे वर्णित गधार देश सिधु नदी के तट पर स्थित बतलाया जाता है (मोतीचंद्र, ज्यॉग्रेफिकल ऐड इकनॉमिक स्टडीज इन द महाभारत, पृ० 115)।

गन्धार—गधार[1] जो पालि ग्रथो (अगुत्तर, I, पृ० 213, वही IV, 252, 256 और 260) मे वर्णित षोडश महाजनपदों मे से एक है, पाणिनि की अष्टाध्यायी (4.1.169) और वीरपुरुषदत्त के नागार्जुनिकोण्ड अभिलेख मे भी उल्लिखित है। मत्स्य (114. 41) एव वायु पुराण (45 116) मे इसका उल्लेख हुआ है। इसमे रावलपिंडी और पेशावर जिले सम्मिलित थे। धारयद्वसु प्रथम (522-486 ई० पू०) के बेहिस्तून अभिलेख मे वर्णित देशो की सूची मे इसका वर्णन है। धारयद्वसु के विशाल सूसा राजभवन अभिलेख मे भी इसका वर्णन है। गदार (गधार) के निवासी पारसीक साम्राज्य के अधीनस्थ जन प्रतीत होते हैं (ऐंश्येंट पर्सियन लेक्सिकन ऐंड द टेक्स्टस ऑव अखेमेनियन इन्स्क्रिप्शस, ले०, एच० सी० टोमेन, वैंडरविल्ट ओरियंटल सीरीज, भाग VI)। गधार जन का, जो ऋग्वेदिक युग से विज्ञात एक प्राचीन जन थे (ऋग्वेद, I, 126. 7) वर्णन अशोक के पचम शिलालेख मे गधार के निवासियो के रूप मे किया गया है जो पश्चिमोत्तर पंजाब और उसके समीपस्थ प्रदेशो का द्योतक है। इस प्रकार यह सिंधु नदी के दोनों ओर स्थित था (रायचौधरी, पो० हि० ए० इ०, चतुर्थ सस्करण, पृ० 50; रामायण VII, 113, 11; 114, 11)। युवान च्वाङ् ने गंधार देश को पूर्व से पश्चिम तक 1,000 ली से अधिक और उत्तर से दक्षिण तक 800 ली से अधिक बतलाया है। उसके अनुसार यह देश खाद्यान्नों की प्रचुर उपज और

[1] ल्युडर्स की तालिका, सं० 1345.

प्रभूत फल-फूलो से समृद्ध था, वहाँ पर अधिक ईख उपजायी जाती थी तथा मिश्री का उत्पादन होता था। यहाँ की जलवायु गरम थी। यहाँ के निवासी भीरु एवं प्रायोगिक कलाओ के प्रेमी थे, (वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ् I, 198-99)। इस देश मे 1,000 से अधिक बौद्ध बिहार थे किंतु वे पूर्णत. जीर्ण-शीर्ण हो चुके थे। अनेक स्तूप खडहर हो गये थे। वहाँ पर 100 से अधिक देवमदिर थे और विविध संप्रदाय अस्त-व्यस्त रहते थे, (वही, I, 202)। गधार की प्राचीनतम राजधानी पुष्करावती थी, जिसकी स्थापना भरत के पुत्र और राम के भतीजे पुष्कर ने की थी (विष्णु पुराण, विल्सन सस्करण, भाग IV, अध्याय, 4)। गधार की प्राचीन राजधानियाँ पुष्करावती या पुष्कलावती और तक्षशिला थी, जिनमे प्रथम सिधु नदी के पश्चिम और द्वितीय, सिधु नदी के पूर्व मे स्थित थी। कुछ विद्वानो का अनुमान है कि गधार जनपद मे कश्मीर और तक्षशिला प्रदेश समिलित थे (रायचौधरी, पो० हि० ए० इ०, चतुर्थ सस्करण, पृ० 124) किंतु इसकी पुष्टि जातको के साक्ष्य से नहीं होती (द्रष्टव्य जातक, III, 365)। इसमे पश्चिमी पाकिस्तान के पेशावर और रावलपिंडी जिले समाविष्ट है (महावस, गाइगर द्वारा अनूदित, पृ० 82, टिप्पणी 2)। अभिधर्म कोषशास्त्र का प्रसिद्ध लेखक वसुबन्धु पुष्करावती का निवासी था जिसकी परिधि युवान-च्वाङ् के अनुसार लगभग 14 या 15 ली थी और जो अच्छी तरह से बसी हुयी थी, (वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, I, 214)। अधिक विवरण के लिए, बि० च० लाहा की ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 9 और आगे; ज्यॉग्रफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 49-50 एव इडॉलॉजिकल स्टडीज, भाग I, पृ० 10 और आगे, द्रष्टव्य है।

गनेश्रा—यह मथुरा के निकट है। यहाँ पर फोगेल को एक खडित अभिलेख प्राप्त हुआ था। इस अभिलेख से क्षहरातवश के घटाक नामक एक क्षत्रप का नाम ज्ञात होता है।[1]

गगा—गगा जिसे अलकनदा[2] या द्युधुनी[3] या द्युनदी[4] भी कहा जाता है, ऋग्वेद[5] और शतपथ ब्राह्मण (XIII 5, 4, 11) मे वर्णित है। पतजलि के महाभाष्य (I, 1 9, पृ० 436) मे इसका उल्लेख किया गया है। ब्रह्माण्ड पुराण

---

[1] ज० रा० ए० सो०, 1912, पृ० 121.

[2] भागवत पुराण, IV, 6, 24; XI, 29, 42.

[3] वही, III, 23, 39.

[4] वही, III, 5, 1; X, 75, 8.

[5] वही, X, 75, 5; VII, 45, 21.

(II. 18, 26-42, 50-52) तथा कालिदास के रघुवश[1] मे भी इसका वर्णन किया गया है। गगा को भागीरथी और जाह्नवी[2] भी कहा जाता है। योगिनी-तत्र (1.6; 2.1; 2.7.8; 2 5) मे इसका उल्लेख है। गगा की विजय कुरु-साम्राज्य की दूरतम सीमा द्योतित करती है (वैदिक इडेक्स, I, 218, पा० टि० 4)। तैत्तिरीय आरण्यक (II. 20) के अनुसार गगा एव यमुना के बीच मे रहने वाले विशेष रूप से सम्मानित होते थे। अथर्ववेद (IV 7.1) मे उल्लिखित वारणावती, लुडविग[3] के अनुसार गगा ही प्रतीत होती है। गगा (आधुनिक गगा) नारायण के चरण से निकली हुयी बतलायी जाती है और मेरु पर्वत पर बहती थी, वहाँ से वह चार शाखाओ मे विभक्त हो कर पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर मे बहती है; शिव ने भक्त की मध्यस्थता के कारण उसके दक्षिणी प्रवाह को भारत मे हो कर बहने दिया।[4] हरिवश[5] के अनुसार राजा पुरुरवा उर्वशी के साथ पाँच वर्षो तक मदाकिनी नदी के तट पर रहे, जो गगा का ही एक अन्य नाम है। मार्कण्डेय पुराण (पृ० 242-43) के अनुसार गगा त्रिपथगामिनी है अर्थात् उनके तीन प्रवाह है। इसके तट पर राम और लक्ष्मण आये थे।[6] पूर्व मे चैत्ररथवन तक बहने वाले इसके प्रवाह का नाम सीता है जो वरुणोद्-सरोवर तक जाता है। मुमेरु के दक्षिण और गधमादन पर्वत की ओर बहने वाली सरिता का नाम अलकनन्दा है जो वेगवती धाराओ मे मानसरोवर मे गिरती है। वायु एव मत्स्य पुराण मे, मार्कण्डेय पुराण के समान ही गगावतरण का विवरण दिया गया है जब कि विष्णु, भागवत, पद्म पुराण तथा महाभारत (85, 88-98, 87, 14) के विवरण प्रभूत अशो मे उससे सहमत है। बाण की कादम्बरी (पृ० 75) के अनुसार भगीरथ द्वारा पृथ्वी पर लायी जाते समय गगा ने यज्ञ करते हुए जह्नु की वेदी को बहा दिया था। पद्म पुराण (अध्याय, 21) मे गगा-सागर-सगम का उल्लेख है जो पवित्र माना जाता है। ब्रह्म पुराण (अध्याय, 78, श्लोक, 77) के अनुसार विध्यपर्वत के दक्षिण मे बहने वाली गगा को गौतमी गगा और उसके उत्तर मे प्रवाहित होने वाली गगा को भागीरथी गगा कहा जाता है। वायु पुराण मे दिये गये रोचक विवरण के लिए

---

[1] IV, 73; VI, 48; VII, 36; VIII, 95; XIII, 57; XIV, 3.

[2] रघुवंश VII, 36; VIII, 95; X, 26, 69.

[3] ऋग्वेद का अनुवाद 3, 210; त्सिमर, आल्टिनडिशेज लेबेन, 20.

[4] मार्कण्डेय पुराण, 56, 1-12.

[5] अध्याय, XXVI, 5-7.

[6] रामायण, आदिकाण्ड, सर्ग, 23, श्लोक, 5.

बि० च० लाहा की ज्यॉग्रेफिकल एसेज, जिल्द I, पृ० 85 नामक पुस्तक द्रष्टव्य है)। पद्म पुराण (अध्याय, 4, श्लोक, 107) मे गंगा एव सिधु के सगम को एक पवित्र तीर्थ बतलाया गया है। इस पुराण में गगा की सात शाखाओ यथा—वातोदका, नलिनी, सरस्वती, जम्बू नदी, सीता, गगा एवं सिधु के प्रति सकेत है (स्वर्गखंड, अध्याय, 2, श्लोक, 68)। गंगा एव उसकी सहायक नदियो के विषय मे एरियन ने कुछ उपयोगी सूचनाएँ दी है जहाँ पर वह कहता है· "मेगस्थनीज ने लिखा है कि दोनो मे (गगा और सिधु नदियो मे) गगा अधिक बडी हैं। साथ ही इसमें सोनोस (Sonos) मिट्टोकेटिस (Sittokatis) तथा सोलोमेटीज (Solomatis) नदियाँ जो नवपरिवहन के योग्य है एव कोण्डोचेटीज (Kondochates) सैम्बोस (Sambos), मगोन (Magon), एगौरैनिस तथा ओमेलिस (Agoranis, Omalis) नामक नदियाँ भी मिलती है। इनके अतिरिक्त इसमे कामेनसीज (Kommenases) नामक एक विशाल नदी, काकौथिस (Kakouthis) तथा ऐंडोमैटिस (Andomatis) नदियाँ मिलती है (मैक्रिडिल, ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 190-191)। जम्बूद्वीवपण्णति के अनुसार 14,000 अन्य सरिताओ को समाहित कर गगा पूर्व की ओर बहती है। महाभारत मे विंदुसर को तथा पालि-ग्रथों के अनोतत्त झील के दक्षिणी भाग को इस सरिता का स्रोत बतलाया गया है। गढवाल जिले मे गगोत्री मे भागीरथी गगा प्रकट होती है। हरद्वार से बुलदशहर तक गगा का प्रवाह दक्षिणाभिमुख और उसके पश्चात् इलाहाबाद तक जहाँ इसमे यमुना नदी मिलती है, इसका प्रवाह दक्षिणपूर्वाभिमुख है। इलाहाबाद से राजमहल तक इसका प्रवाह पूर्वाभिमुख है। राजमहल के आगे यह बगाल मे प्रविष्ट होती है। हरद्वार से प्रयाग तक प्राय यह यमुना के समानान्तर बहती है। महाभारत (84.29) मे सप्तगगा का उल्लेख है। (अधिक विवरण के लिए लाहा की रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 17 और आगे तथा ज्यॉग्रेफिकल ऐसेज, 84 और आगे द्रष्टव्य है)।

गर्गरा—यह किसी नदी का नाम है। विश्ववर्मन के गगधर अभिलेख मे इस गर्गरा का उल्लेख है जो चबल की सहायक, वर्तमान कालीसिंध नामक नदी का प्राचीन नाम है (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

गढ़मुक्तेश्वर—गगा के दाहिने तट पर मेरठ जिले मे स्थित यह एक कस्बा है। यह हिंदुओ का एक तीर्थ है और यह अपने गगा-मंदिर के लिए विख्यात है।

गर्जपुर-(गर्जपतिपुर)—वाराणसी के पूर्व मे 59 मील दूर, आधुनिक गाजीपुर से समीकृत, गगा तट पर स्थित यह एक शहर था। इसे गर्जनपति भी कहते थे। इसका चीनी नाम चेन-चू (Chen Chu) है। इसकी परिधि 2,000 ली थी।

यहाँ की भूमि धान्यवती और उपजाऊ तथा निरतर कर्षित होती थी। यहाँ की जलवायु समशीतोष्ण एव यहाँ के निवासी ईमानदार थे। यहाँ पर दस सघाराम और बीस देवमदिर थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्नवर्ल्ड, II, 61)।

गौरीशंकर—यह नेपाल मे स्थित माउट एवरेस्ट है। नेपाल-तिब्बत-सीमा पर स्थित हिमालय का यह शिखर, वस्तुत विश्व का सर्वोच्च पर्वत-शिखर माना जाता है। यह 29,002 फीट ऊँचा है (लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 2, 6)। यह विविध नामो देवधुग, कोमोफकर, कोमो लुगमा, कोमो उरी, चेलुगुबू और मि-ति-गु-ती-च-पु लोगंग, से विश्रुत है। कुछ विद्वानो की मान्यता है कि राधानाथ सिकदार माउट एवरेस्ट के अन्वेषक नही थे। माउट एवरेस्ट का अन्वेषण भारतीय सर्वेक्षण-विभाग (Survey of India) के सयुक्त प्रयासो का फल था (बी० टी० गुलाटी का 'माउट-एवरेस्ट, इट्स नेम ऐंट हाइट' नामक शोधपत्रक, सर्वे ऑव इडिया—तकनीकी पेपर, सख्या, 4)। गुलाटी ने इस बात के प्रति सकेत किया है कि माउट एवरेस्ट की ऊँचाई और उसके स्थानीय नामो के विषय मे निश्चित मत व्यक्त करना दुष्कर है। 1953 मे हिलेरी और तेनजिग इसके शिखर पर पहुँचे और उन्होने देखा कि यह शिखर पूर्णत कोणाकार और हिमाच्छादित था जिस पर वे मुक्त रूप मे टहल सकते थे।

गविधुमत—इसे इटावा से 24 मील उत्तर पूर्व मे और फर्रुखाबाद जिले मे सकिसा से 36 मील दूर पर स्थित कुडरकोट से समीकृत किया जा सकता है (न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 59)। पतजलि ने अपने महाभाष्य मे इसका उल्लेख किया है (2.3.21, पृ० 194)।

घोषितारास—घोषित नामक एक श्रेष्ठि द्वारा निर्मित यह विहार कौशाम्बी मे स्थित था (दीघ, I, 157, 159, सयुक्त II, 115, पपचसूदनी, II, 390)। इस विहार का नामकरण इसके नाम पर हुआ था। हाल मे किये गये यहाँ के उत्खननो से एक अभिलेख प्राप्त हुआ है, जिससे कौशाम्बी की सीमा पर दक्षिणी पूर्वी कोने मे स्थित इस प्रसिद्ध आराम की अवस्थिति बतलाने मे सहायता मिलती है। यह स्थान यमुना नदी से अधिक दूर नही प्रतीत होता है। यह आराम, बुद्ध के निर्वाण के पश्चात् भी आनद का प्रिय आवास था (सयुत्त, III, 133 और आगे)। प्राय. यहाँ पर सारिपुत्त, महाकच्चायन और उपवाण आया करते थे (वही, V, 76-77; परमात्थदीपनी ऑन द पेट्टावत्थु, 140-144)। अनुपिया छोडने के पश्चात् बुद्ध कौशाम्बी आये और वहाँ पर वह इस आराम मे रुके (विनय, II, पृ० 184)। यहीं पर चण्ण आनन्द से मिला था (वही, II, पृ० 292)। चण्ण नामक एक भिक्षु इस आराम का सदस्य था। बुद्ध ने उसकी मृत्यु के समय उसके

लए ब्रह्मदण्ड का विधान किया था (विनय टेक्स्टस, II, 370)। मण्डिस्स एवं जालिय नामक दो परिव्राजकों ने यही पर बुद्ध का साक्षात्कार किया था (दीघ, I, 157, 159-160)। पिण्डोल भारद्वाज जिसने उदयन को बौद्ध धर्मानुयायी बनाया था, यही रहा करता था (तु० साम्स ऑव द ब्रेदेरेन, पृ० 111)। थेर उरुधम्मरक्खित के नेतृत्व मे इस आराम के कोई तीस हजार भिक्षु ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी में राजा दुट्ठगामिणी के शासन-काल मे लका गये (महावस, पा० टे० सो०, पृ० 228)। जब पाँचवी शताब्दी ई० मे फा-ह्यान कौशाम्बी गया, तब उसने घोषिताराम मे अधिकाशत हीनयान मत के अनुयायी बौद्ध स्थविरो को देखा (लेग्गे, ट्रेवेल्स ऑव फा-ह्यान, पृ० 96)। सातवी शताब्दी ई० मे कौशाम्बी जाने पर युवान च्वाङ् ने देखा कि यहाँ पर पूर्णत ध्वस्त दस से अधिक सघाराम थे (वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ् I, 366)। इन दस विहारो मे घोपिताराम भी एक था, जो कौशाम्बी के दक्षिण पूर्व मे स्थित था। कुक्कुटाराम और पावारिक (पावरिया) आम्बवन क्रमश इसके दक्षिण पूर्व और पूर्व मे स्थित थे (वही, 370-71)। अशोक ने घोषिताराम के समीप, 200 फीट से भी ऊँचा एक स्तूप बनवाया था।

गोहर्व—यह गाँव इलाहाबाद जिले की मझनपुर तहसील मे स्थित है, जहाँ से कर्णदेव के दो ताम्रपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ० XI, पृ० 139-46)।

गोकर्ण—स्वयम्भू पुराण के अनुसार स्वयम्भू ने आठ पवित्र व्यक्ति उत्पन्न किये थे। उनमे से एक गोकर्ण के गोकर्णेश्वर थे। इसे (गोकर्ण) बागमती नदी से समीकृत किया जाता है (रा० ला० मित्र, ने० बु० लि०, पृ० 253; लाहा, ज्याग्रेफिकल एसेज, पृ० 46)।

गोकुल—भागवत पुराण मे एक गाँव के रूप मे इसका वर्णन है (X. 2 7; X. 5 32)। यह यमुना के बाँये तट पर स्थित है। वैष्णवधर्म के इतिहास मे यह विख्यात है। यहाँ पर गोकुलनाथ जी का मदिर है। कस से भयभीत वसुदेव यमुना नदी के पार चले गये और उन्होने श्रीकृष्ण को नद के सरक्षण मे छोड दिया जो वही रहा करते थे। चैतन्य के समकालीन और वैष्णवो के वल्लभ-सप्रदाय के सस्थापक वल्लभाचार्य ने महावन का अनुकरण करके एक नूतन गोकुल का निर्माण करवाया। गोकुल के निकट वृहद्वन नामक एक जगल था (भागवत पुराण, X 5,26, X.7.38)।

गोमती—यह नदी प्रायः निश्चित ही ऋग्वेद मे वर्णित गोमती है (ऋग्वेद, X. 75.6) जो समवतः सिंधु की एक पश्चिमी सहायक नदी आधुनिक गोमल है। इसे आधुनिक गोमती नदी से समीकृत करने का भी प्रयत्न किया गया है जो वाराणसी के आगे गंगा मे मिलती है और रामायण मे जिसे अयोध्या मे प्रवाहित होने-

वाली तथा पशुओ से आकीर्ण बतलाया गया है (अयोध्याकाण्ड, अध्याय 49)। यह शाहजहाँपुर जिले से निकलती है और वाराणसी तथा गाजीपुर के बीचोबीच, गंगा मे मिलती है (इ० ऐ०, भाग XXII, 1893, पृ० 178)। महाभारत (अध्याय 84, 73) और भागवत पुराण (V 19,18, X. 79,11) मे इस नदी का वर्णन प्राप्य है। पद्म पुराण (उत्तरखड, श्लोक, 35-38) मे भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है। स्कन्द पुराण मे इसी नाम की एक अन्य नदी का वर्णन है (अवतीखण्ड, अध्याय 60)। स्पष्टत' यह नदी गुजरात से हो कर बहती थी जिसके तट पर द्वारका स्थित था। कुछ विद्वानो ने एक पृथक् नदी के रूप मे धूत-पापा को फैजाबाद मडल में सुल्तानपुर से 18 मील दक्षिणपूर्व मे गोमती के तट पर स्थित आधुनिक धोपाप से समीकृत किया है।

स्कन्द पुराण—(काशीखण्ड, उत्तर, अध्याय 59) के अनुसार वाराणसी के निकट यह गगा की एक सहायक नदी थी (नद लाल दे, ज्यॉ० डिक०, पृ० 57, 231, बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 21)।

गोमतीकोट्टक—जीवितगुप्त के देवबर्णार्क अभिलेख मे इसका उल्लेख प्राप्त होता है। यह कही गोमती (गोमती) नदी के तट पर स्थित प्रतीत होता है जो शाहजहाँपुर जिले से निकल कर लखनऊ और जौनपुर मे बहती हुयी वाराणसी और गाजीपुर के बीचोबीच गगा मे मिलती है (काव्य, इ० इ० जिल्द, III)।

गोमुखि—इसे रामायण मे वर्णित गोकर्ण से समीकृत किया जा सकता है (I, 42)।

गोतम—यह पर्वत हिमालय के निकट स्थित प्रतीत होता है (अपदान, पृ० 162)।

गोवर्धन (गोवड्ढन-जातक, IV 80)—यह पहाडी मथुरा जिले मे वृदावन से 18 मील दूर पर स्थित है। पैंठा नामक गाँव मे कृष्ण ने इस पहाडी को अपनी कनिष्ठिका पर उठाया था और छत्र के रूप मे इन्द्र की वर्षा से अपने पशुओ एव पुर-वासियो की रक्षा करने के लिए धारण कर रखा था (महाभारत, उद्योगपर्व, अध्याय, 129)। भागवत पुराण (V. 19 16, X 11 36, 13. 29) एव हरिवश (अध्याय, 55) मे भी बतलाया गया है कि गोवर्धन गिरि पर हरिदेव और चक्रेश्वर महादेव के मदिर एव श्रीनाथ जी, जिन्हे गोपाल कहा जाता था, की मूर्ति है। कालिदास ने अपने रघुवश (VI. 51) मे इस पहाडी का वर्णन किया है। योगिनीतत्र (1।14) में इसका उल्लेख मिलता है।

गोबिसना—यह मुरादाबाद के उत्तर मे कही स्थित था। उजाएन गाँव के निकट स्थित प्राचीन दुर्ग गोबिसना के इस प्राचीन नगर का प्रतिनिधित्व करता है

जहाँ सातवी शताब्दी ईसवी में युवान च्वाङ् आया था। गोविसना विषय की परिधि 333 मील थी। इसे गोविसन्न भी कहा जाता था (वाटर्स, ऑन युवान् च्वाङ्, I, 331)। इसके उत्तर मे ब्रह्मपुर, पश्चिम मे मदावर, दक्षिण और पूर्व में अहिच्छत्र स्थित थे। पश्चिम मे रामगंगा से ले कर पूर्व में घाघरा तक फैले हुये काशीपुर, रामपुर और पीलीभीत के आधुनिक जिले तथा दक्षिण मे बरेली तक के क्षेत्र गोविसना विषय मे समिल्ति थे (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इं०, पृ० 409 और आगे)।

हलिद्दवसन—कोलियदेश में स्थित यह एक गाँव था जहाँ पर बुद्ध गये थे (सयुक्त, V, 115)।

हड़प्पा—हडप्पा के अवशेष पश्चिमी पजाब (आधुनिक पश्चिमी पाकि०) के जिले मे स्थित है। हडप्पा-सस्कृति का प्रसार मुख्य सिंधु नदी की घाटी के और आगे भी था। 1946 में किये गये यहाँ के उत्खनन से कच्ची ईंटों द्वारा निर्मित प्रतिरक्षात्मक दीवाल के नीचे दबी हुयी एक नूतन मृच्छिल्पकला प्रकट हुयी है। हडप्पा के निवासी धरती मे खोदी गयी कब्रो मे अपने मृतको को दफनाया करते थे। हडप्पा के 'AB' टीले तथा प्रतिरक्षा प्राचीर आदि से यह प्रकट होता है कि हडप्पा की सभ्यता अधिक विकसित थी। लोग सुखी जीवन व्यतीत करते थे। वाणिज्य तथा व्यापार अतीव विकसित थे। विस्तृत विवरण के लिए, मा० स्व० वत्स की एक्सकेवेशस ऐट हडप्पा, 1-11, 1940, द्रष्टव्य है।

हराहा—यह बाराबकी जिले मे स्थित है। यहाँ ईशानवर्मन् मौखरि के शासनकाल का एक शिलापट्ट-अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ० XIV, पृ० 110)।

हरिद्वार—उत्तरी भारत मे स्थित यह वैष्णवो का एक तीर्थ है। महाभारत के अनुसार इसे गंगाद्वार और वैष्णव साहित्य के अनुसार इसे मायापुरी कहा जाता है। गंगा-तट पर विदुर ने मैत्रेय ऋषि से श्रीमद्भागवत सुना था। यही पर गगा हिमालय से अवतरित हुयी थी। यह सहारनपुर जिले मे स्थित है।

युवान च्वाङ् के अनुसार मदावर की पश्चिमोत्तर सीमा और गगा के पूर्वी तट पर स्थित इस नगर को मो-यु-लो (Mo-Yu-Lo) या मयूर कहा जाता था। गंगा नहर के ऊपरी सिरे पर स्थित मयूर मायापुर का विध्वस्त स्थल है। चीनी यात्री के अनुसार इसकी परिधि 3⅓ मील थी और यह अतीव जनसकुल था। कनिंघम के अनुसार इस नगर को मयूरपुर इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसके

समीप बहुसख्यक मयूर पाये जाते थे।[1] विस्तार के लिए द्रष्टव्य इपीरियल गजे-टियर्स ऑव इंडिया, भाग XIII, 51 और आगे)।

हस्तिनापुर—उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले मे गगा-तट पर स्थित यह कुरुओ की प्राचीन राजधानी थी। परपरानुसार इसे मवाना तहसील के मेराट नामक एक प्राचीन गॉव से समीकृत किया गया है।[2] यहाँ का राजा धृतराष्ट्र था। वृद्ध धृतराष्ट्र से समझौता करके पद्रह वर्षो तक हस्तिनापुर मे रहने के उपरात पाण्डु वन को चले गये जहाँ वह अपनी पत्नियों सहित वन मे किसी दावानल मे भस्मीभूत हो गये। अर्जुन का प्रपौत्र परीक्षित हस्तिनापुर का शासक था। वह एक प्रखर, मेघावी और महान् वीर पुरुष था। वह एक शक्तिशाली धनुर्धर था। उसमे एक कर्त्तव्यपरायण राजा के सभी सद्‌गुण विद्यमान थे। आधिसीम कृष्ण के पुत्र निचक्षु के शासनकाल मे यह नगर गगा की बाढ से नष्ट हो गया था और बाद मे इस राजा ने कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया।[3] मार्कण्डेय (LVIII, 9) एव भागवत पुराणो (I 3 6, I 8 45, IV, 31 30, X, 57 8) मे गजाह्वयो का उल्लेख है, जो कुरु-राजधानी हस्तिनापुर से सबधित थे। भागवत पुराण (I 9.48, I.15 38, I 17 44, III 1,17, IX 22 40, X 68 16) के अनुसार इस नगर का नाम, गजाह्वय भी था। प्रथम तीर्थंकर ऋषभ हस्तिनापुर के निवासी थे। उन्होने भरत को सिहासनारूढ किया था। उन्होने अपना राज्य अपने संबधियो मे बॉट दिया था। विविधतीर्थकल्प के अनु-सार राजा हस्ति ने भागीरथी के तट पर हस्तिनापुर की स्थापना की थी। जैन धर्म के प्रवर्तक प्राय इस नगर मे आते थे।[4] हरिवश (20.1053-54) और भागवत पुराण (IX 21, 20) से इस तथ्य की पुष्टि होती है। हस्ति या हस्तिन् के अजामीढ एव द्विमीढ नामक दो पुत्र थे। अजामीढ ने हस्तिनापुर मे मुख्य पौरव-वश का शासन बनाये रखा। उसके तीन पुत्र थे और उनसे तीन पृथक् राजवशो का का उद्‌भव हुआ।[5] अधिक विवरण के लिए बि० च० लाहा की 'सम जैन कैनॉनि-कल सूत्राज', पृ० 172, नामक पुस्तक देखिये।

---

[1] कनिघम, एं० ज्यॉ० इं०, पृ० 402 और आगे, 703.

[2] कनिघम, एं० ज्यॉ० इं०, पृ० 702.

[3] पार्जिटर, डाइनस्टीज ऑव द कलि एज, पृ० 5; तु० रामायण, II, 68. 13; महाभारत, I, 128.

[4] भगवतीसूत्र, II, 9; थानंग, 9, 691.

[5] पार्जिटर, एं० इं० हि० ट्रे०, पृ० 111.

हेमवत—प्राचीन काल मे हिमालय पर्वत, हिमवान, हिमाचल[1] हिमवंतपदेस, हिमाद्रि,हैमवत और हिमवत नामो से विश्रुत था। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में इसका वर्णन किया गया है।[2] इसे पर्वतराज[3] और नागाधिराज[4] कहा जाता है। महाभारत[5] के अनुसार हेमवत प्रदेश नेपाल (नेपाल-विषय) के ठीक पश्चिम मे स्थित था। महाभारत ही के अनुसार इसमे ऊँचे पर्वतो के प्रदेश को द्योतित करने वाला कुलिन्द विषय, (टाल्मी का कुनिन्द्राई, Kunındrae) जिसमे गगा, यमुना और सतलज के स्रोत स्थित थे—समिलित था। इस प्रकार इसमे आधुनिक हिमाचल प्रदेश के कुछ भाग उसके समीपस्थ इलाके तथा देहरादून के कुछ हिस्से समिलित प्रतीत होते है। मार्कण्डेय पुराण (अध्याय, 54, 24; 57, 59)के रचयिता ने हिमालय पर्वत (हिमवत) को एक समुद्र से दूसरे समुद्र तक धनुप की प्रत्यचा के समान फैला हुआ बतलाया है (कार्मुकस्य यथा गुणा)। मार्कण्डेयपुराण के इस कथन की पुष्टि महाभारत (VI 6 3) और कुमारसभव (I,1) से होती है। कैलास[6] और हिमालय (हिमवान) नामक दो सर्वोच्च पर्वत, मेरुपर्वत[7] के दक्षिण मे स्थित है। वे दोनो पर्वत पूर्व एव पश्चिम मे, तथा समुद्र मे फैले हुए है।[8] सस्कृत साहित्य मे प्राय वर्णित कैलास पर्वत, हिमालय पर्वतमाला के मध्यभाग के उत्तर मे स्थित था।[9] बाण के हर्पचरित(सप्तम उच्छवास)के अनुसार अपना राजसूय यज्ञ पूरा करने की दृष्टि मे अर्जुन ने हेमकूट को जीता था। बाण की कादम्बरी (श्लोक, 16) के अनुसार यह पर्वत स्फटिक के कारण धवल या स्फटिक

---

[1] पद्म पुराण, उत्तरखड, (श्लोक, 35-38), इसमें भौगोलिक नामों की एक सूची दी गयी है; पाणिनि कृत अष्टाध्यायी (IV 4 1.12.)

[2] अथर्ववेद, XII, 1 11; ऋग्वेद, X, 121, 4; तैत्तिरीय सहिता, V, 5, 11, 1; वाजसनेयी संहिता, XX IV, 30; XXV, 12; ऐतरेय ब्राह्मण, VIII, 14, 3; भागवत पुराण, I, 13, 29; I, 13, 50; कूर्म पुराण, 30, 45-48; योगिनीतंत्र, I, 16.

[3] अगुत्तर, I, 152; तु० कालिका पुराण, अध्याय 14, 51.

[4] कुमारसम्भव, I, 1.

[5] महाभारत, वनपर्व, अध्याय, 253.

[6] योगिनीतंत्र, 1 1; 1 12.

[7] मार्कण्डेय पुराण, अध्याय, 54, श्लोक 23.

[8] पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 277.

[9] वही, पृ० 376.

शिलाओं से निर्मित था। कुणाल जातक[1] मे हिमालय को 500 लीग ऊँचा और 3,000 लीग चौडा एक विशाल क्षेत्र बतलाया गया है। अश्वघोष ने हिमालय (हिमवान) का उल्लेख किया है और मध्यदेश को इसके और पारिपात्र के मध्य स्थित बतलाया है।[2] शिव जो कैलास और हिमालय के शिखरो पर रहते थे, का स्तवन दो नाग करते थे।[3]

मैनाकपर्वत विशाल हिमालय पर्वतमाला का एक भाग था।[4] हिमालय क्षेत्र मे दद्दर नामक एक पर्वत भी था।[5] इसमे चार पर्वतमालाएँ, जगल और एक प्राकृतिक झील थी।[6] हिमालय के समीप धम्मक नामक एक अन्य पर्वत था जहाँ पर प्रथम बुद्ध दीपकर के लिए एक कुटी और एक आश्रम का निर्माण किया गया था।[7] हिमालय के पार्श्व मे चण्डगिरि नामक एक पर्वत था और उसके निकट ही एक बडा जगल था।[8] असम और मणिपुर तक फैला हुआ पूर्वी हिमालय क्षेत्र मोटे रूप से जम्बूद्वीप का हैमवत खड था, जिसके लिए अशोक ने अपने तेरहवे शिलालेख मे नाभक और नाभपति शब्दो का प्रयोग किया है।[9] थेर मज्झिम बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए हिमालय क्षेत्र मे भेजे गये थे।[10] इस पर्वत पर रहने वाले *यक्ख-वृद* को उन्होने बौद्ध धर्म मे दीक्षित कर लिया। ये लोग अधिकाशत: हिंसक और अतिशक्तिशाली यक्खो की पूजा किया करते थे। उन्हे पाँच स्थविरों द्वारा प्रतिपादित बुद्ध के सिद्धांतो को बतलाया गया।[11] पौलस्त्य राक्षसगण हिमालय पर्वत मे सबधित[12] है। मार्कण्डेय पुराण[13] के अनुसार, राक्षस कैलास पर्वत के शीर्ष

[1] जातक, सख्या 536

[2] सौन्दरनन्द काव्य, II, श्लोक, 62

[3] पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 132

[4] महाभारत, सभापर्व III, 58-60; वनपर्व, CXXXV, 10,694-95.

[5] जातक, III, पृ० 16.

[6] वही, IV, पृ० 338.

[7] बुद्धवंस, II, श्लोक 29.

[8] महावस्तु, III, 130

[9] बरुआ, अशोक ऐंड हिज इंस्क्रिप्शंस, भाग I, पृ० 101

[10] महावंस, XII, 6; थूपवंस, 43; महाबोधिवंस, 114-115.

[11] सासनवंस, पृ० 169; तु० समन्तपासादिका, I, 68.

[12] महाभारत, III, 274, 15,901; V. 110, 3,830; रामायण, III 32,14-16.

[13] पार्जिटर द्वारा अनूदित, पृ० 6.

पर रहते थे। जम्बूद्वीप (भारत प्रायद्वीप) का हिमालय क्षेत्र (हिमवतपदेस) पालि विवरणो के अनुसार उत्तर मे सुमेरु पर्वत (पालि, सिनेरु) के दक्षिण की ओर तक फैला हुआ था। कालसी शिलालेखों, निग्लीव और लुम्बिनी से प्राप्त अशोक के स्तभलेखो तथा चपारन से प्राप्त अभिलेखो में भारत के हैमवत खड का उल्लेख प्राप्त होता है। हिमालय क्षेत्र (हैमवतपदेस) को कुछ विद्वानो ने तिब्बत से, फर्ग्युसन ने नेपाल से और रीज़ डेविड्स ने मध्य हिमालय से समीकृत किया है। प्राचीन भूगोलवेत्ताओं के अनुसार पजाब के पश्चिम मे सुलेमान से लेकर पूर्व मे असम और अराकान पर्वतमाला तक भारत की सपूर्ण उत्तरी सीमा पर फैली हुयी पूरी पर्वत श्रेणी के लिए हिमवत नाम का प्रयोग किया जाता था। शाक्य और कोलिय नामक दो प्राचीन भारतीय जनो को बुद्ध ने हिमालय की ओर भेज दिया था और उन्होने हिमालय क्षेत्र के अनेक पर्वतो के प्रति सकेत किया था।[1] कैलास पर्वत हिमालय पहाड का एक भाग था।[2] किंतु मार्कण्डेय पुराण मे इसे एक पृथक् पर्वत बतलाया गया है। कैलास उच्च शिखरो वाला एक पर्वत था। यह शुद्ध-धवल था (महाबोधिवस, 13, 26, 45 और 79)। इस पर्वत पर स्थित विहार से थेर गुरियगुत्त 96, 000 भिक्षुओ के साथ लका गये थे (थूपवस, 73)। मानस-सरोवर से लगभग 25 मील उत्तर मे कैलास पर्वत जिसे तिब्बत निवासी काग्री-पोचे कहते है, के शिखर पर मुघम्मपुर स्थित है (सासनवस, पृ० 38)।

अल्बेरुनी के अनुसार मेरु और निषध जिन्हे पुराणो मे वर्ष पर्वत कहा गया है, हिमालय पर्वत-श्रृखला से सबधित थे। हिमालय पर्वत से दस नदियाँ यथा गगा, यमुना, अचिरावती, सरभू, मही, सिधु, सरस्वती, वेत्रवती, वितम्सा, और चद्रभागा[3] निकली है (मिलिंद, 114) परतु पुराणो के अनुसार, हिमवत से दस से भी अधिक नदियाँ यथा—गगा, सरस्वती, सिधु, चद्रभागा, यमुना, शतद्रु, वितस्ता, इरावती, कुहू, गोमती, धूतपापा, बाहुदा, दृषद्वती, विपाशा, देविका, रक्ष, निश्चिरा, गण्डकी, और कौशिकी निकली है (तु० मार्कण्डेय पुराण, 57, 16-18; वही, वंगवासी सस्करण, अध्याय, 61, श्लोक 16E. इन नदियों से सबधित विस्तृत विवरण के लिए लाहा की ज्यॉग्रेफिकल ऐसेज नामक पुस्तक, पृ० 84-95 देखिये। टालेमी ने बतलाया है कि इमाओस (हिमालय पर्वत) गगा, सिंधु, कोआ तथा स्वात नामक नदियो का उद्गम स्थल है। मिगसम्मता नामक नदी

---

[1] जातक, V, 412 और आगे।

[2] मत्स्य पुराण, 121. 2.

[3] हिमालय से निकलने वाली 500 नदियों में से ये महत्त्वर्ण नदियाँ हैं।

हिमालय से निकलती है और गंगा मे मिलती है (जातक, VI, 72)। मिलिंद-पञ्हो (पृ० 70) में ऊहा नामक नदी हिमालय मे स्थित बतलायी गयी है। अपदान नामक एक पालि ग्रंथ मे हिमालय के समीप स्थित कुछ अन्य पर्वतो यथा—कदम्ब (पृ० 382), कुक्कुट (178), कोसिक (पृ० 381), गोतम (पृ० 162), पदुम (पृ० 362), मारिक (पृ० 440), लम्बक, (15) वसम (पृ० 166), सभंग (पृ० 437) और सोमित (पृ० 328) का वर्णन किया गया है। भारतवर्ष की भौगोलिक सीमाओ मे स्थित हिमालय ही अकेला वर्ष पर्वत है। देवपाल के मुगेर दान-पत्र में हिमालय मे स्थित केदार का उल्लेख है। कालिका पुराण (अध्याय, 14, 31) मे उल्लेख है कि हिमालय पर्वत मे महाकौशिकी नदी के प्रपात तक शिव और पार्वती गये थे। इसी पर्वत से निकलने वाली दर्पट नामक एक क्षुद्र नदी का इसमें उल्लेख है (कालिका पु० 79, 3)। कुमारसम्भव (I, 1) के अनुसार मध्य हिमालय पर्वत भारतवर्ष के उत्तर मे स्थित है तथा पूर्व एव पश्चिम मे यह समुद्र मे निमग्न है। इस पर्वत का सौदर्य, जो विविध प्रकार के रत्नो की खान है, हिमनदो से विघटित नही होता (कुमारसम्भव I, 3)। इसके शिखर पर नाना प्रकार की खनिज सपत्ति है (I, 4)। हिमालय के दीप्तिमान शिखरो मे ऋषिगण आवास करते है (I, 5) जिसकी गुफाएँ बादलो से आवृत्त रहती हैं, (I, 14)। आखेटको की वन्यजाति किरात इस पर्वत पर हाथियो को मारने वाले सिंहो के पद-चिन्हो का अनुगमन कर सकती है, यद्यपि रक्त की बूंदे हिमजल से धुल जाती हैं (I, 6)। हिमालय की अँधेरी गुफाओ मे पत्निओ के साथ रहते हुए किरातों को स्वदीप्त जड़ी-बूटियाँ प्रकाश दिया करती है (I, 10)। मानससरोवर के निकटवर्ती क्षेत्र[1] कैलास, मन्दार और हैम किरातो के प्रमुख स्थान थे। गहन रूप से हिमाच्छादित हिमालय प्रदेश इनमे चलने वालो के लिए कष्टकर है (I, 11)। सूर्य की किरणें भी तिमिरावृत्त इस पर्वत के अधकार को दूर करने मे अशक्त हैं (I, 12)। हिमालय पर्वत सफेद समूर वाले याको के लिए प्रसिद्ध है (I, 13)। राजा विक्रम द्वारा पूंछे जाने पर अप्सराओ ने यह उत्तर दिया था कि वे हेमकूट (हेमकूट शिखरे) जो हिमालय पर्वत ही हैं[2], पर उनकी प्रतीक्षा करेगी।

बौद्ध ग्रंथो में अनोतत्त[3], कण्णमुण्ड, रथकार, छद्दन्त, कुणाल, मदाकिनी और

---

[1] पाजिटर, मार्कण्डेयपुराण, पृ० 322, पाद टिप्पणी।

[2] विक्रमोर्वशी, अंक I.

[3] महावंस, I, 18; महाबोधिवंस, 36, 100-101; 152-155 आदि।

सीहप्पपत[1] नामक सात झीलों का उल्लेख है। इनमे से प्रत्येक झील की लंबाई, चौडाई और गहराई 50 लीग है। उनके नाम ही कुछ ऐसे हैं कि उनका समीकरण ही दुष्कर है और उनकी लबाई, चौडाई तथा गहराई इतनी समान है कि उस पर सहज-विश्वास कर लेने की प्रेरणा नही होती। हिमालय के शिखरो मे से मणि-पर्वत, अजनपर्वत, सानुपर्वत तथा फलिकपर्वत[2] उल्लेखनीय हैं। उनमे से किसी का भी सतोषप्रद समीकरण नही किया जा सकता।

भारतवर्ष और हरिवर्ष के बीच मे हिमालय पर्वतमाला और हेमकूट स्थित है जिनमे हिमालय हेमकूट के दक्षिण मे है। देशो और पर्वतो की इस स्थिति का ज्ञान जैनग्रथ जबुदीवपण्णत्ति और महाभारत से प्राप्त होता है। हेमकूट प्रदेश को किम्पुरुषवर्ष और हैमवत क्षेत्र को किन्नरखण्ड भी कहा जाता है। महायान बौद्ध अवधारणा के अनुसार हिमालय क्षेत्र उत्तर मे गधमादन पर्वतमाला तक फैला हुआ था जो रुद्र हिमालय का एक भाग था, किंतु महाकाव्यकारो के अनुसार यह कैलास पर्वतमाला का एक अश था। अनोतत्त (अनवतप्त) झील या मानस-सरोवर जो हिमालय मे स्थित सात बडी झीलो[3] मे से एक थी—कैलास और चित्रकूट शिखरो से सबधित थी। जम्बुदीवपण्णत्ति का यह वर्णन कि महापद्महृद नामक दो झीले थी, ठीक प्रतीत होता है जिनमे एक पश्चिमी हिमालय पर्वतमाला (क्षुद्र हिमवत) से और दूसरी पूर्वी हिमालय पर्वत श्रेणी (महाहिमवत) से सबद्ध थी। हिमालय मे स्थित चद्दन्त नामक झील 50 लीग लबी और 50 लीग चौड़ी थी। इसी सरोवर मे लाल और श्वेत कमल तथा कुमुदिनियाँ एव खाद्य-कुमुद उत्पन्न होते थे।[4] हिमालय क्षेत्र मे सुदरियाँ रहती थी जो अपनी शक्ति के वशीभूत होने वाले सभी व्यक्तियो का सर्वनाश करती थी।[5]

हिमालय क्षेत्र वन्य पशुओ का आवास था। हाथी, मृग, गैंडे, महिष, मेढक, मयूर एवं मयूरियाँ इस पर्वत पर रहती थी। हिमालय के जगलो मे यूथचर या आवारे हाथी बहुत बड़ी सख्या मे रहते थे।[6] वहाँ पर विभिन्न नस्लो के अश्व,

---

[1] अंगुत्तर IV, पृ० 101; मनोरथपूरणी, II, पृ० 759; परमात्थजोतिका, II, पृ० 443.

[2] जातक, V, पृ० 451.

[3] महावंस, I, 18.

[4] जातक, V, 37.

[5] वही, V, 152.

[6] वही, VI, 497.

सरीसृप, अजगर और जल मे रहने वाले सर्पादि रहते थे। हिमालय की किसी कदरा मे एक शेर रहता था, जिसने एक भैंस को मार कर उसका मास खाया था। इसके अनतर वह थोडा जल पी कर पुनः अपनी गुफा मे लौट आया।[1] हिमालय क्षेत्र में चित्रकूट पर्वत की किसी गुफा मे रहने वाले एक प्रौढ़ कलहस ने एक प्राकृतिक झील मे पैदा होने वाले वन्य-शस्य (धान) को नष्ट कर दिया था।[2] यहाँ की नदियाँ और झीलें मत्स्य-सकुल थी तथा यहाँ पर असख्य पक्षी थे। यह पर्वत पक्षियो के कलरव से प्रतिध्वनित होता था।[3] जाडे मे पेड एव कमल पूर्णत फूले हुये रहते थे।[4] खाद्य-कुमुदिनी के बीज (मखाना या ताल-मखाना) हिमालय से प्राप्त किये जा सकते थे।[5] इस पर्वत-क्षेत्र मे तपस्वी, आखेटक तथा मृगया-अभियान पर निकले हुये राजा आया करते थे। तपस्वियो एव ऋषियो ने वहाँ पर अनेक आश्रम बनाये थे। आश्रमो के असख्य उदाहरण[6] हैं किंतु हम उनमे से कुछ का उल्लेख कर सकते है। कपिल का आश्रम हिमालय के पार्श्व मे भागीरथी नदी के समीप ही था।[7] वृषपर्वन् का विख्यात् आश्रम हिमालय मे कैलास पर्वत के समीप स्थित था।[8] हिमालय की एक गुफा में रहने वाले नारद नामक ऋषि एक सप्ताह तक समाधिस्थ रहे, उनमे दिव्यशक्तियाँ थी और अत मे उन्होंने आनद की अनुभूति की।[9] वाराणसी के चार समृद्ध गृहस्थ तृष्णाजनित दु खो की अनुभूति के पश्चात् हिमालय की ओर गये और सन्यास ग्रहण कर लिया। बहुत दिनो तक वहाँ पर उन्होंने जगली फल-मूल खा कर जीवन व्यतीत किया।[10] वाराणसी के एक धनी

---

[1] जातक, III, 113

[2] वही, III 208

[3] वही, VI, 272.

[4] वही, VI, 497.

[5] वही, VI, 390

[6] जातक, III, 37, 79 143; IV, 74, 423; I, 361, 371, 406, 431; II, 101, 41, 53, 57, 65, 72, 85, 131, 171, 230, 258, 262, 269, 395, 411, 417, 430, 437, 447 आदि; तु० महावस्तु, I, 232, 272, 284, 351, 353; III, 41, 130, 143 आदि।

[7] सौन्दरनन्दकाव्य, I, 5; दिव्यावदान, पृ० 548.

[8] महाभारत, वनपर्व, CLVIII, 11, 541-3; CLXXVII, 12, 340-44.

[9] जातक, VI, 58

[10] वही ,VI, 256.

ब्राह्मण ने सन्यास ग्रहण कर लिया और दिव्य शक्तियो को प्राप्त करने के पश्चात् वह हिमालय पर्वत पर निवास करने लगा।[1] हिमालय से 500 ऋषि वाराणसी से नमक एव सिरका लेने के लिए नीचे मैदानो मे आये थे।[2] काशी-जनपद के निवासी किसी ब्राह्मण ने अपनी माता की मृत्यु के पश्चात् हिमालय मे जा कर ऋषि-तुल्य धार्मिक जीवन ग्रहण कर लिया था।[3] विदेह-नरेश मिथिला नगरी का राज्य त्याग करके हिमालय क्षेत्र मे गये और उन्होंने धार्मिक जीवन का वरण कर लिया। वह वहाँ पर केवल फलाहार पर परम शाति से रहते थे।[4]

अपना राज्य अपनी माता को सौप कर वाराणसी का कोई राजा मृगों के आखेट और उनका मास खाने के लिए हिमालय क्षेत्र मे गया था।[5] वाराणसी का एक अन्य राजा सुप्रशिक्षित शिकारी कुत्तो के झुड को साथ ले कर मृगो के आखेट के लिए हिमालय क्षेत्र मे गया था। वहाँ पर उसने सुअरो एव मृगो को मार कर उनका मास खाया। इसके अनतर वह इस पर्वत पर बहुत ऊँचाई पर चढ गया। वहाँ पर जिस समय सुखद सरिता बढती थी, उसकी लहरे आवक्ष ऊँची होती थी।[6]

हिंगुल पर्वत (हिंगलपर्वत)—यह हिमालय-क्षेत्र मे स्थित है (जातक, V 415)। हिंग्लाज, बलूचिस्तान मे हिंगुला या हिंगुल नामक पर्वतमाला के छोर पर समुद्र-तट से लगभग 20 मील दूर अघोर या हिंगुला नदी के तट पर स्थित है (नद लाल दे, ज्यॉ० डिक्श०, पृ० 75)।

हिरण्णवती (हिरण्यवती)—यह छोटी गडक तथा कुशीनारा के समीप अजितवती का ही नाम है। यह बडी गडक से कोई आठ मील दूर पश्चिम मे गोरख-पुर जिले से बहती है और घाघरा (सरयू) मे मिलती है। कुशीनारा के मल्लो का शालवन इसी नदी के तट पर स्थित था (दीघ, II, 137)।

हृषीकेश—यह पर्वत हरद्वार से 24 मील दूर उत्तर मे स्थित है, जहाँ पर देव-दत्त का आश्रम था (वराहपुराण, अध्याय, 146)। हरद्वार से बद्रीनाथ जानेवाली सडक पर यह गगा-तट पर स्थित है। कुछ लोगो के मतानुसार वैष्णवो का यह पवित्र नगर हरिद्वार से लगभग 20 मील दूर गगा के किनारे पर स्थित है।

---

[1] जातक, V, 193
[2] वही, V, 465.
[3] वही, III, 37.
[4] वही, III, 365
[5] वही, VI, 77.
[6] वही, IV, 437.

इच्छानंगल—यह कोशल में ब्राह्मणो का एक गाँव था। बुद्ध एक बार यहाँ इच्छानंगलवनसण्ड मे रुके थे (अगु० नि० III. 30. 341; वही, IV. 340)। सुत्तनिपात (पृ० 115) मे उस गाँव का नाम इच्छानकल बतलाया गया है।

इक्षुमती—यह कुरुक्षेत्र की एक नदी है (भागवत पुराण, V, 10. 1)।

इन्द्रपुर—स्कदगुप्त के इंदौर ताम्रपत्र-अभिलेख मे वर्णित यह विशाल और उच्च पर्वत बुलदशहर जिले की एक तहसील के डिमई परगना के मुख्यावास डिमई से लगभग पाँच मील दूर पश्चिमोत्तर मे स्थित है (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

इन्द्रस्थान—भागवत पुराण मे इसे एक नगर बतलाया गया है (X. 58. 1; X. 73. 33; XI. 30 48, XI. 31. 25)। पद्म पुराण के अनुसार (200. 17-18) इन्द्र ने इस नगर मे अनेक धार्मिक यज्ञ किये थे, कई बार रमापति की उपासना की थी और नारायण की उपस्थिति मे ब्राह्मणो को प्रभूत धनराशि दान दी थी। तब से यह स्थान इद्रप्रस्थ के नाम से विख्यात हुआ। इसका उल्लेख गोविदचद्र के कमौली पत्र (वि० स० 1184) मे किया गया है। इसे इद्रप्रस्थ से समीकृत किया गया है (एपि० इं०. XXVI, भाग, 2, पृ० 71; इ० ऐ०, XV. पृ० 8, पा० टि० 46) जो यमुना तट पर आधुनिक दिल्ली से कोई दो मील दूर दक्षिण मे स्थित है। इसका विस्तार सात लीग था (सत्तयोजनिके इदपत्तनगरे-जातक, स०, 537; बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 18)। महाभारत मे इसे बृहत्स्थल भी कहा गया है। यह प्रथम पाण्डव युधिष्ठिर की राजधानी थी। इद्रप्रस्थ (दिल्ली के समीप आधुनिक इद्रपत) कुरुओ की दूसरी राजधानी थी और गगा-तट पर स्थित तथा उत्तरप्रदेश के मेरठ जिले से समीकृत हस्तिनापुर उनकी पहली राजधानी थी। अधे राजा धृतराष्ट्र ने प्राचीन राजधानी हस्तिनापुर पर शासन किया जब कि उन्होंने अपने भतीजो पच-पाण्डवो को यमुना-तट पर स्थित एक जिले का शासन दे दिया जहाँ पर उन्होने इंद्रप्रस्थ की स्थापना की। कालांतर मे धीरे-धीरे कुरुओ की प्राचीन राजधानी श्रीविहीन हो गयी और पाण्डवों द्वारा स्थापित नये नगर को अब भारत-सरकार की राजधानी होने का गौरव प्राप्त है (अधिक विवरण के लिए, न० ला० दे की ज्यॉ० डिक्श०, पृ० 77-78 द्रष्टव्य है)।

इरावती—पतजलि ने अपने महाभाष्य (2. 1. 2, पृ० 53) में इसका उल्लेख किया है। यह आधुनिक रावी या यूनानियो द्वारा उल्लिखित हाइड्रा-ओतीज़ या अद्रीस या रोनाडीस नदी ((Hydraotis or Adris or Rhonades) है। यह नदी बांगहल की चट्टानी तलैया से निकलती है और पीर पंजल के दक्षिणी तथा धौलाधर के उत्तरी ढालों को सिंचित करती है। कालिका पुराण (अध्याय,

24. 140) के अनुसार इस नदी का स्रोत इरा झील है। हिमालय में इस नदी का प्रवाह 130 मील लबा है। यह नदी सर्वप्रथम हमे क्षम्ब के दक्षिणी-पश्चिमी कोण पर कश्मीर में दृष्टिगोचर होती है। छम्ब से दक्षिणपश्चिमाभिमुख यह नदी लाहौर से होती हुयी चेनाब या वितस्ता एव चद्रभागा के सयुक्त प्रवाह मे अहमदपुर और सरायसिधु के मध्य मिलती है (लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 13)।

इसिपतन-मिगदाय (ऋषिपत्तन-मृगदाव)—यह सारनाथ है।

इसुकार (ऋषकुमार)—यह समृद्ध, प्रसिद्ध तथा सुदर कस्बा कुरु जनपद मे स्थित था (उत्तराध्ययनसूत्र, XIV. 1)

ज्वालामुखी—पू० पंजाब के काँगड़ा जिले की डेरा गोपीपुर तहसील मे कॉगडा कस्बे से नदौन जाने वाली सडक पर स्थित यह एक प्राचीन स्थल है। जैसा कि इसके अवशेषो से सिद्ध होता है किसी समय यह एक महत्त्वपूर्ण और वैभवशाली नगर था। अब यह मुख्यतया ज्वालामुखी देवी के मदिर के लिए विख्यात है जो ब्यास नदी की घाटी मे स्थित है (अधिक विवरण के लिए, लाहा की 'होली प्लेसेज इन इडिया, पृ० 24, नामक पुस्तक द्रष्टव्य)।

जालधर—योगिनीतत्र (1।11, 2।2, 2।9) मे इसका वर्णन मिलता है। जालधर के अतर्गत उत्तर मे छम्ब पूर्व मे मडी और सुखेत तथा दक्षिण-पूर्व मे शतद्रु के क्षेत्र सम्मिलित थे। लबाई मे पूर्व से पश्चिम तक यह 1,000 ली या 167 मील तथा चौडाई में उत्तर से दक्षिण तक 800ली या 133 मील था। पद्म पुराण (उत्तरखण्ड) के अनुसार, यह महान् दैत्यराज जालंधर की राजधानी थी (कनिंघम, ए ज्यॉ०, इ०, पृ० 156 और आगे)।

जानरवट—यह उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जिले की तिरवा तहसील मे स्थित है, जहाँ पर वीरसेन के समय का एक अभिलेख मिला है (एपि० इं०, XI. पृ० 85)।

जेतवन—उत्तर भारत मे स्थित यह एक राजसी-उद्यान था, जो बुद्ध का एक प्रिय आराम (दीघ, I, 178) और बौद्ध-धर्म का एक प्राचीन केंद्र था। यह श्रावस्ती (आधुनिक सहेत-महेत) से दक्षिण मे एक मील दूर पर स्थित था। श्रावस्ती के अचल में स्थित यह बौद्धधर्म का एक वैहारिक अधिष्ठान था, जो राजकुमार जेत के सत्कार्यो को अमर बनाये हुये है जिसने महावंसटीका (पा० टे० सो०, पृ० 102) के अनुसार जेतवन-उद्यान की स्थापना की थी। इसके क्रेता अनाथपिण्डिक की कीर्ति को अमर बनाये रखने के लिए इस वैहारिक संस्थान को उसका आराम बतलाया जाता है (पपंचसूदनी, I, 60-61)। जेतवन विहार के निर्माण और अनाथपिण्डिक द्वारा बुद्ध के प्रति इसके औपचारिक समर्पण के साथ ही खास कोशल

विशेषतया श्रावस्ती मे बौद्ध मत के प्रथम स्थायी केंद्र की स्थापना हुयी थी। राजगृह से श्रावस्ती लौटने के उपरात श्रेष्ठि अनाथपिण्डिक एक आराम बनवाने के लिए उचित स्थल की तलाश मे था। राजकुमार जेत का उपवन एक अभीष्ट स्थल हो सकता था। जैसे ही राजकुमार इसे बेचने के लिए सहमत हुआ श्रेष्ठी ने अपने नौकरो को वृक्षो को काट कर उक्त स्थल को साथ करने के लिए नियोजित किया। सारे उपवन मे स्वर्ण बिछा दिया गया। विनय के विवरण के अनुसार श्रेष्ठी ने वहाँ पर अनेक भवन, यथा आवासकक्ष (विहार), विश्रामगृह (परिवेण), कोषगृह (कोटठक), अग्निशालाओ (अग्गिसाला), सयुक्त उपत्थानशालाएँ, शौचगृह कुटी, कुएँ, स्नानागार, तालाब और मडप आदि बनवाये। इस पुण्य कर्म की पूर्ति के लिए प्रभूत धनराशि का व्यय हुआ था। यह एक रोचक तथ्य है कि इस विहार की निर्माण-प्रक्रिया के सभी स्तर, जिनकी निष्पत्ति इसके समर्पण उत्सव मे हुई थी, भरहुत के अध्युच्चित्रो मे निरूपित किये गये हैं, जब कि बोधगया के उच्चित्रो मे केवल जेतवन के खरीदने का दृश्य अकित किया गया है (बरुआ, गया ऐंड बुद्धगया, II, 104-5, बरुआ, भरहुत, II, 27-31)। जेतवन मे चार मुख्य भवन करेरीकूटि, कोसम्बकूटि, गन्धकूटि एव सल्लघर थे (सुमगलविलासिनी, II, 407)। श्रावस्ती के इस स्थल का उल्लेख ल्यूडर्स की तालिका, सख्या 731 एव जातक, सख्या 5 मे प्राप्त होता है (बरुआ ऐड सिन्हा, भरहुत इन्स्क्रिप्शस, पृ० 59)। इसी स्थान पर कोशल नरेश प्रसेनजित बुद्ध के शिष्य बने थे (सयुत्त निकाय, I, 68 और आगे)। जयचद्रदेव के शासनकाल के बोधगया से प्राप्त एक बौद्ध अभिलेख मे यह बतलाया गया है कि कन्नौज के गाहडवाल राजा गोविदचद्र ने, जिसका विवाह कुमारदेवी नामक एक बौद्ध-राजकुमारी से हुआ था, जेतवन विहार में रहने वाले भिक्षुओ की सहायता के लिए कई गाँव अलग कर दिये थे (एपि० इं०, XI. 20 और आगे)। कुछ समय तक बुद्ध ने इस विहार मे निवास किया था (दीपवस, पृ० 21; महावस, पृ० 7)। विस्तृत विवरण के लिए बि० च० लाहा कृत श्रावस्ती इन इडियन लिटरेचर; मे० आ० स० इं०, स० 50, पृ० 22 और आगे द्रष्टव्य।

झूंसी—झूंसी का प्राचीन नगर फूलपुर से 14 मील दूर दक्षिण-पश्चिम मे गगा के बायें तट पर स्थित है (इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, ले० नेविल, पृ० 245)।

कदम्ब—यह पर्वत हिमालय से अधिक दूर पर स्थित नही प्रतीत होता (अपदान, पृ० 382)।

कहौम—स्कंदगुप्त के कहौम स्तमलेख में इस गाँव का वर्णन है जिसे ककुभ या ककुभग्राम भी कहा जाता है और जो देवरिया जिले मे सलेमपुर-मझौली परगने

के सलेमपुर-मझौली नामक कस्बे के दक्षिण की ओर कोई पाँच मील दूर पश्चिम में स्थित है (का० इं० इ०, भाग III)।

कहरोर—यह प्राचीन कस्बा प्राचीन ब्यास नदी के दक्षिणी तट पर मुल्तान से 50 मील दक्षिणपूर्व में तथा बहावलपुर से 20 मील दूर उत्तरपूर्व में स्थित है —(कनिंघम, ए० ज्यॉ० इं०, 1924, पृ० 277)। अल्बेरूनी के अनुसार विक्रमादित्य और शकों का महान् युद्ध यहीं पर हुआ था।

कैलास—योगिनीतंत्र (1।1, 1।12) में इसका वर्णन है। रामचंद्र के पुरुषोत्तमपुरी अभिपत्रों में इस पर्वत का उल्लेख है (एपि० इ०, XXV, भाग, V)। इसे पर्वतों का राजा कहा गया है। नदा या गंगा नामक नदियों से परिवृत्त इस पर्वत को भूतेशगिरि भी कहा जाता है (भागवत पुराण, IV 5 22, V 16. 27)। कालिका पुराण (बंगवासी संस्करण) में कैलास का वर्णन है (अध्याय, 13 23)। यहाँ पर शिव-पार्वती आये थे (वही, अध्याय, 14, 31)। शान्तनु इस पर्वत पर तथा गंधमादन पर भी रहते थे (अध्याय, 82, 7)। महाभारत (वनपर्व, अध्याय, 144-156) में कुमाऊँ और गढ़वाल पर्वतों को कैलास पर्वतमाला में सम्मिलित किया गया है। महाभारत में इसे हेमकूट भी कहा गया है (भीष्मपर्व, अध्याय, 6)। इस पर्वत पर जिसे शंकरगिरि भी कहा जाता था, इक्ष्वाकुवंशीय नरेश मानसवेग का पुत्र तथा वेगवत का पुत्र वीरशेखर आया था (दशकुमारचरितम्, पृ० 54)। कालिदास ने अपने कुमारसम्भव (निर्णयसागर संस्करण, VIII. 24) में कैलास का उल्लेख किया है। जैन लोग इसे अष्टापद पर्वत के नाम से जानते है जहाँ पर ऋषभ के पुत्रों एवं अनेक मुनियों को कैवल्य प्राप्त हुआ था। इंद्र ने यहाँ तीन स्तूप बनवाये थे। भरत ने यहाँ पर सिंहनिषद्य नामक एक चैत्य तथा अपनी प्रतिमा के साथ ही चौबीस अन्य जिन प्रतिमाओं का निर्माण करवाया था। बालि ने रावण पर आक्रमण किया था।[1] कैलास श्रेणी लद्दाख पर्वतमाला के समानांतर उससे 50 मील पीछे फैली हुयी थी। इसमें अनेक दैत्याकार शिखर-समूह हैं। इसे वैद्यूतपर्वत से समीकृत किया जा सकता है। तिब्बत-निवासी इसे कंग्रीनपोचे कहते है, जो मानससरोवर से कोई 25 मील दूर उत्तर में स्थित है। बदरिकाश्रम इस पर्वत पर स्थित बतलाया जाता है।[2]

---

[1] बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 174

[2] अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, नं० ला० दे, ज्यॉ० डिक्श०, पृ० 82-83; बि० च० लाहा, ज्यॉ० ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 39; लाहा, माउंटेंस ऑव इंडिया, पृ० 7.

ककुत्था—बरही नामक यह एक छोटी सरिता है जो कसया से आठ मील आगे छोटी गंडक मे मिलती है। कार्लेइल ने इसे घागी नदी से समीकृत किया है, जो गोरखपुर जिले मे चितियाँव से 1½ मील दूर पश्चिम मे बहती है। राजगृह से कुशीनारा जाते समय बुद्ध को इस नदी को पार करना पडा था जो कुशीनारा के निकट थी।[1] तब वह आम्रवन पहुँचे और वहाँ से कुशीनारा के समीप मल्लो के शालवन की ओर बढ़े।[2]

कलसिगाम—यह अलसंद या सिकदरिया (Alexandria) द्वीप मे स्थित था। यह राजा मिलिन्द (Menander) का जन्म स्थान था।[3]

कमला—यह गगा की एक ऊपरी सहायक नदी है, जिसका निचला प्रवाह घुगरी नाम से विख्यात है। यह नेपाल की महाभारत पर्वत-माला से निकलती है और दक्षिणी पूर्णिया मे करगोला मे गगा मे मिलती है। दाहिनी ओर से कमला मे दो और बाँई ओर से पाँच सहायक नदियाँ मिलती है। विस्तृत विवरण के लिए, बि० च० लाहा, रिवर्स इन इडिया, पृ० 25, द्रष्टव्य।

कमौली—यह गाँव वाराणसी मे गगा एव वरुणा के सगम के पास स्थित है। यहाँ से प्राप्त एक अभिलेख मे यह बतलाया गया है कि विष्णुपुर मे स्थित अपने विजय-स्कधावार से महाराज गोविदचंद्र ने उसीथ नामक ग्राम एक ब्राह्मण को दिया था।[4] गोविंदचद्र ने कान्यकुब्ज और उस पर निर्भर क्षेत्रो पर अपने वश की सत्ता पुनर्स्थापित की थी। उसने अश्वपति-गजपति-नरपति-राजत्रयाधिपति की महत्वाकाक्षी उपाधियाँ धारण की, जो मूलत. डाहल के कलचुरि-नरेशो द्वारा धारण की जाती थी।[5] कन्नौज के नरेशो के इक्कीस ताम्रपत्र तथा चार अन्य अभिलेख इस गाँव से प्राप्त हुए बतलाये जाते है।[6]

कम्बोज—कम्बोज लोग पश्चिमी हिमालय मे रहने वाले बतलाये गये है। भौगोलिक रूप से वे उत्तर मे रहते थे।[7] उनका उल्लेख पाणिनि की अष्टाध्यायी

---

[1] दीघ, II, 129, 134, और आगे; उदान VIII, 5.

[2] लाहा, ज्यॉ० ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 37; लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 23.

[3] मिलिन्दपञ्ह, पृ० 83.

[4] एपि० इं०, II, 358-61.

[5] एपि० इं०, XXVI, भाग II, पृ० 71 और पाद-टिप्पणी, 6.

[6] एपि० इं० IV, पृ० 97 और आगे।

[7] महाभारत, भीष्मपर्व, अध्याय, 9.

(4.1.175), पतंजलि के महाभाष्य (I. 1. 1. पृ० 317; 4. 1. 175) तथा अशोक के पाँचवे शिलालेख मे किया गया है।[1] कम्बोज लोग प्राचीन वैदिक कबीलो मे से एक प्रतीत होते है। वे सिंधु नदी के पश्चिमोत्तर में स्थित थे और प्राचीन फारसी अभिलेखो के कम्बुजीयो के समान थे। भागवत पुराण मे इनका उल्लेख एक देश के रूप मे हुआ है (II. 7, 35; X. 75, 12; X. 82. 13)। कुछ लोगो ने उन्हे राजपुर मे स्थित बतलाया है। राजपुर का वर्णन करते हुए युवान-च्वाङ् कहता है, लपा से राजपुर के मध्यवर्ती के निवासी अपरिष्कृत, अपने वैयक्तिक आकार मे सादे तथा रुक्ष हिसात्मक प्रवृत्ति के है—वे खास भारत के निवासी नही है, वरन् सीमांत-कबीलो से सबधित हीन जाति के है।"[2] वि० स्मिथ ने इस देश को तिब्बत या हिन्दु-कुश पर्वतो के मध्य स्थित बतलाया है। कुछ लोगो ने इसे आधुनिक सिंध और गुजरात के समीप निर्धारित किया है। कम्बोज अपने सुडौल एव वेगवान घोडो के लिए विश्रुत था।[3] विस्तृत विवरण के लिए बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐन्श्येंट इडिया, प्रथम अध्याय; बि० च० लाहा, इडालॉजिकल स्टडीज, जिल्द I, पृष्ठ 9-10, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 50-51, द्रष्टव्य।

कंचन पर्वत—यह उत्तर हिमालय है (जातक, II, 396, 397, 399; VI. 101)।

कण्हगिरि—यह कृष्णगिरि पर्वत (कन्हेरी) ही है (ल्यूडर्स की तालिका, स० 1123)। यह कराकोरम या कालापर्वत है (वायु पुराण, अध्याय, 36)। पश्चिम की ओर यह पहाड हिंदुकुश के साथ आगे चला गया है। आधुनिक भूगोल-वेत्ताओ के अनुसार कराकोरम पर्वत अपेक्षाकृत पहले बना था, अत· यह मुख्य हिमालय पर्वतमाला से प्राचीन है। यह पर्वत हर्सीनियन (Hercynian) युग का है। उन्नत होने के बाद इसमे अत्यधिक पर्त्ते एव दरारे बनी (बि० च० लाहा, माउटेंस ऑव इडिया, पृ० 4, 7)।

कखल (कनखल)—यह गंगा और नीलधारा के संगम पर हरिद्वार से दो मील पूर्व मे स्थित है। यह पुराणों मे वर्णित दक्ष-यज्ञ का स्थान था (कूर्म पुराण, अध्याय, 36; वामन पुराण, अध्याय, 4 और 34; लिंग पुराण, भाग I, अध्याय 100)। पद्म पुराण मे इसका वर्णन एक तीर्थ के रूप मे किया गया है (अध्याय

---

[1] बे० मा० बरुआ, अशोक ऐंड हिज इंस्क्रिप्शंस, पृ० 92-94

[2] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 284 और आगे।

[3] जैन सूत्राज (सै० बु० ई०), II, 47.

14 तीर्थ-माहात्म्य; तु० महाभारत, वनपर्व, अध्याय, 84, 30)। योगिनीतंत्र (2-6) मे इसका वर्णन है।

काण्व-आश्रम (कण्व-आश्रम)— काण्व-ऋषि, जिन्होने शकुन्तला को अपनी पुत्री के रूप में ग्रहण किया था, का आश्रम धर्मारण्य कहा जाता था जो सहारनपुर और अवध जिलो से हो कर बहने वाली मालिनी नदी के तट पर स्थित था। कुछ लोगो के मतानुसार यह चंबल नदी के तट पर (महाभारत, वनपर्व, अध्याय, 82; अग्नि पुराण, अध्याय, 109) जब कि अन्य लोगो के विचार से यह नर्मदा नदी के तट पर स्थित था (पद्म पुराण, अध्याय, 94)।

कपिलवस्तु (किया-वेयी लो-यूये)—यह शाक्यो की राजधानी थी जिसमे बुद्ध पैदा हुये थे। इसे कपिलवस्तु (दिव्यावदान, पृ० 67), कपिलपुर (ललित-विस्तर, पृ० 243) या कपिलाह्वयपुर (वही, पृ० 28) भी कहा जाता था। दिव्यावदान मे (पृ० 548) कपिलवस्तु को कपिल ऋषि से सबंधित बताया गया है। बुद्धचरितकाव्य (भाग, I, श्लोक, 2) मे इस नगर को कपिलस्यवस्तु कहा गया है। महावस्तु (भाग , II, पृ० 75) के अनुसार यह सात प्राचीरो से घिरा हुआ था। शुइ-चिंग-चु के अनुसार इस नगर मे शाक्य वंश के कुछ उपासक और लगभग 20 गृहस्थ रहते थे। इस नगर के निवासी धार्मिक क्रियाशीलता पर अधिक बल देते थे और उनमे अब भी प्राचीन चेतना विद्यमान थी। उन्होने जीर्ण स्तूपो का पूर्ण पुनरुद्धार कराया था (नार्दर्न इंडिया एकार्डिंग टु द शुइ-चिंग-चु, ले०, एल० पीटेख, पृ० 33)। प्रसिद्ध रुम्मिनिदेई स्तंभ शाक्यमुनि के परपरानुगत जन्म-स्थल प्राचीन लुम्बिनी बाग को लक्षित करता है। विंसेंट स्मिथ कपिलवस्तु को जो लुम्बिनी ग्राम से अधिक दूर पर नही है, नेपाल सीमा पर बस्ती जिले के उत्तर मे स्थित पिपरावा से समीकृत करने के पक्ष मे है। रिज डेविड्स तिलौराकोट को प्राचीन कपिलवस्तु मानते है।

पी०सी० मुकर्जी रीज डेविड्स के मत से सहमत है और कपिलवस्तु को तौलिव से दो मील उत्तर मे स्थित तिलौरा से समीकृत करते है जो तराई की प्रातीय सरकार का मुख्यावास तथा जो गोरखपुर के उत्तर मे नेपाल की तराई मे नेपाली गाँव निग्लीव से $3\frac{1}{2}$ मील दूर है, दक्षिण पश्चिम में स्थित है। रुम्मिनिदेई, कपिलवस्तु से केवल 10 मील दूर पूर्व मे और भगवानपुर से दो मील उत्तर मे स्थित है। महावस्तु (I, पृ० 348 और आगे) मे कपिलवस्तु की स्थापना के विषय मे एक कहानी बतलायी गयी है। चीनी यात्री फा-ह्यान के अनुसार यह नगर बिरला ही बसा था।[1]

---

[1] ट्रैवेल्स ऑव फा-ह्यान्, लेखक, लेग्गे, पृ० 64, 68

यहाँ उसने विभिन्न स्थानों पर मीनारें देखी थी। युवान-च्वाङ् के अनुसार इसकी परिधि लगभग 4,000 ली थी। ग्राम कम एव वीरान थे तथा विहारो की सख्या 1,000 से भी अधिक थी। वहाँ पर देवमदिर थे जहाँ विभिन्न सप्रदायो के लोग पूजा करते थे। बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् कपिलवस्तु मे या इसके समीप मंदिरो एवं स्तूपो का निर्माण किया गया था (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 4)। इस नगर मे जिसे चीनी लोग की-पि-लो-फा स्सी-ती कहते थे कोई सर्वोच्च राजा नही था। यह उपजाऊ और समृद्ध था तथा क्रमानुगत ऋतुओं मे यहाँ खेती की जाती थी। यहाँ की जलवायु सतत एकमम रहती थी तथा लोगो का शिष्टाचार विनम्र एव सौजन्यपूर्ण था (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 14)। इस नगर मे सथागार स्थित था जहाँ से प्रशासकीय एव न्यायिक कार्य सपादित होते थे (बुद्धिस्ट इडिया, पृ० 19)। कपिलवस्तु एव कोलियो के नगर के बीच मे रोहिणी नदी का जल एक बाँध द्वारा नियन्त्रित कर दिया गया था (धम्मपद कामेंट्री, जिल्द,III, पृ० 254)। ललितविस्तर (पृ० 58, 77, 98, 101, 102, 113, 123,) के अनुसार कपिलवस्तु उद्यानो, कुजो एव बाजारो से सुशोभित एक महानगर था। इसमे चार नगर-द्वार एव सपूर्ण शहर मे मीनारे थी। यह विद्वानो का आवास और पुण्यशील व्यक्तियो का आश्रय था। मेहराबदार तोरणो और कगूरो मे युक्त यह एक उन्नत पठार के सौदर्य से आवृत्त था (बुद्ध-चरित, I, श्लोक 2, 5)। इस नगर को बुद्धिमान मत्रियो की सेवाएँ सुलभ थी (सौदरनदकाव्य, I)। चूँकि यहाँ पर अनुचित कर नही थे, अत यहाँ निर्धनता के लिए कोई स्थान नही था और वहाँ केवल समृद्धि-श्री दैदीप्यमान थी (बुद्धचरित काव्य, I, श्लोक, 4)। रुम्मिनिदेई-अभिलेख के अनुसार अशोक ने स्वय यहाँ आ कर इस नगर को सम्मानित किया था, क्योकि बुद्ध यहाँ उत्पन्न हुये थे। उन्होने लुम्बिनी ग्राम को करो से मुक्त कर दिया था और वहाँ के निवासियो को उनकी उपज का केवल 1/8 भाग देना पड़ता था (का० इ० इ० III, 264-65)। विस्तृत विवरण के लिए देखिये, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज़, जिल्द, I, पृ० 182 और आगे; ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 248-49, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 28 और आगे; इडोलॉजिकल स्टडीज, जिल्द, III)।

कपिश—कपिश (चीनी किय-पि-शि), प्लिनी का कपिस्स तथा सोलिन, का कफुस ही है। टालेमी के अनुसार यह काबुल के उत्तर-पूर्व में 155 मील दूर पर स्थित था। जूलियन ने इसे कोहिस्तान की उत्तरी सीमा पर, पजशीर और टगाओ घाटियों मे स्थित माना है। युवान-च्वाङ् के अनुसार इस देश की परिधि 10 ली थी। यहाँ पर विविध प्रकार के अन्न और फलो के वृक्ष थे। शोन नस्ल के घोड़े यही पर पैदा

होते थे। यहाँ की जलवायु ठंडी और झझापूर्ण थी। यहाँ के निवासी नृशंस और भयानक थे तथा यहाँ की भाषा रुक्ष थी। यहाँ के निवासी समूरदार वस्त्र तथा समूर से सज्जित वस्त्र पहिनते थे। वे स्वर्ण, रजत तथा ताम्र-मुद्राओ का प्रयोग करते थे। यहाँ का राजा एक क्षत्रिय था। वह अपनी प्रजाओ को बहुत प्यार करता था। प्रति-वर्ष वह 18 फीट ऊँची बुद्ध की एक रजत-प्रतिमा बनवाया करता था तथा मोक्षमहापरिषद् नामक सभा का आयोजन किया करता था। तब निर्धन एव दरिद्र व्यक्तियों को दान दिया जाता था। वहाँ पर 100 मठ, स्तूप, संघाराम तथा देवमदिर थे (बील, बुद्धिस्ट रेकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, 54 और आगे)।

कड़ा—ऐतिहासिक महत्व का यह स्थान सिराथू से कोई पाँच मील उत्तर-पूर्व मे और इलाहाबाद से 41 मील दूर पर स्थित है (एपि० इ० XXII पृ०, 37)।

कर्मासधर्म—कुरुदेश मे स्थित यह एक कस्बा था जहाँ बुद्ध गये थे (अगुत्तर, V, 29-30)।

कर्णिकाचल—यह मेरु पर्वत का एक नाम है।

कौशाम्ब्यपुर—अजयगढ स्तंभ लेख, (वि० स० 1345; एपि० इ०, जिल्द, XXVIII, खंड, III, जुलाई, 1949) मे कौशाम्यपुर का उल्लेख है जो इलाहाबाद जिले मे कोसम या कौशाम्बी से समीकृत किया जा सकता है।

कौशिकी—(पालि-कोसिकी, जातक, V 2)—यह आधुनिक कुशी नदी है जो बिहार के पूर्णिया जिले से बहती हुयी गगा मे मिल जाती है (रामायण, आदिकाण्ड, 34, वराह पुराण, 140)। रामायण मे इसे हिमालय से निकलने वाली एक बड़ी नदी के रूप मे वर्णित किया गया है (आदिकाण्ड, श्लोक, 8)। भागवत पुराण (I, 18, 36, V. 19, 18; IX 15, 12; X. 79, 9) मे इस नदी का वर्णन किया गया है। योगिनीतंत्र (2।4 पृ० 128-29) मे भी इसका वर्णन प्राप्त होता है। इस नदी के प्रवाह मे बहुत परिवर्तन होते थे (पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 292, टिप्पणी)। यह इस नाम से पूर्वी नेपाल के दक्षिणी भाग मे चार नदियो के संयुक्त प्रवाह के रूप मे हमें दृष्टिगोचर होती है। इसमे की तीन नदियाँ तिब्बत से निकलती है। कोसी नाम से भी विश्रुत यह नदी संभवत: मेगस्थनीज के प्रमाण पर एरियन की इंडिका नामक (अध्याय, IV) पुस्तक मे वर्णित संभवत. कोस सोआस नदी है जो गंगा की एक सतरणीय सहायक नदी थी जैसा कि डब्ल्यू० डब्ल्यू० हंटर ने अपने स्टेटिस्टिकल एकाउंट ऑव बंगाल (पूर्णिया), 1877, नामक ग्रंथ मे बताया है। यह अपने वेगपूर्ण प्रवाह, भयंकर और अनिश्चित नदी तल तथा मुख्यतया सतत पश्चिमाभिमुख प्रवाह के लिए उल्लेखनीय है। अपने पूर्वी प्रवाह मे यह करतोया नामक नदी से मिलती है, जिसकी सहायक अतराई

और तिस्ता है (देखिए, एफ० ए० शिलिंगफोर्ड का "ऑन चेंजेस इन द कोर्स ऑव द कुशी रिवर ऐंड द प्रोबेबिल डेंजर्स एराइजिंग फ़ाम देम" नामक लेख जो ज० ए० सो० ब०, जिल्द, LXIV, खण्ड I, 1895, पृ० 1 और आगे मे प्रकाशित हैं। विस्तृत विवरण के लिए देखिये, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, I, 94-95।

कबिलास—यह शिव का आवास कैलास पर्वत है (यादव महादेव राय का सिंगूर अभिलेख और देवराय महारय का डगुर अभिलेख, शक सवत् 1329, एपि० इं०, XXIII, खड V, पृ० 194)।

काकन्दी—यह जैन पट्टावलि और बौद्ध साहित्य मे वर्णित काकन्दी ही है। इस स्थान की स्थिति अज्ञात है। काकन्दी मूलतः काकन्द ऋषि का आवास था (काकन्दम्स निवसो काकन्दी)। दूसरे शब्दो मे यह माकदी, सावत्थी, कौसाम्बी और कपिलवस्तु के ही समान था (बरुआ ऐड सिनहा, भरहुत इस्क्रिप्शस, पृ० 18)।

कालकाराम—यह बिहार साकेत मे था जहाँ बुद्ध एक बार रुके थे। साकेत के कालक नामक एक श्रेष्ठी ने यह उपवन बुद्ध को दिया था (धम्मपद कामेंट्री, सिंहली सस्करण, III, 465 और आगे; अगुत्तर कामेंट्री, सिंहली सस्करण, II, 482 और आगे)।

कालिन्दी—यमुना के अतर्गत देखिये।

काम-आश्रम—यह आश्रम सरयू और गगा के सगम पर स्थित था। महादेव ने इसी आश्रम मे अपने माथे पर स्थित तीसरे नेत्र के तेज से मदन को भस्म किया था (रामायण, बालकाण्ड, अध्याय, 23, तु० रघुवश, अध्याय II, श्लोक 13, स्कद पुराण, अवती खड, अध्याय, 34)।

कामगाम—यह कोलिय देश की राजधानी थी जो शाक्य क्षेत्र के पूर्व मे स्थित था (जातक, कावेल, जिल्द, V, पृ० 219 और आगे)।

काम्पिल्य—(वैदिक काम्पील, पालि कम्पिल्ल)—यह दक्षिण पञ्चाल की राजधानी थी। रामायण में इसे इद्रपुरी अमरावती की भाँति सुदर बताया गया है (आदिकाण्ड, सर्ग 33, श्लोक 19)। महाभारत, (138, 73-74) मे काम्पिल्य को निश्चित रूप से दक्षिण पञ्चाल की राजधानी बताया गया है।[1] किंतु जातको मे इसे गलती से उत्तर पञ्चाल में स्थित बतलाया गया है। पाणिनि द्वारा उल्लिखित भारत का यह एक प्राचीन नगर[2] था। यह जैनियो का एक पवित्र तीर्थ था।

---

[1] **जातक, II, 214; वही, VI, 391; वही, V, 21; वही, III, 79, 379 इत्यादि।**

[2] **काशिकावृत्ति, 4, 2, 121.**

तैत्तिरीय सहिता (VII 4,19, 1), मैत्रायणी सहिता (III, 12, 20), तैत्तिरीय ब्राह्मण (III, 9, 6) तथा शतपथ ब्राह्मण (XIII 2, 8, 3) मे एक स्त्री को काम्पीलवासिनी विशेषण दिया गया है। वेबर और त्सिमर के अनुसार काम्पील एक नगर का नाम था, जिसे परवर्ती साहित्य मे काम्पिल्य कहा जाता था। यह पञ्चाल की राजधानी थी।[1] जैनग्रथ ओववाइय-सूय (39) मे इसका वर्णन प्राप्त होता है। आवश्यक निर्युक्ति (383) मे इसे तेरहवे तीर्थंकर का जन्मस्थान बतलाया गया है। योगिनीतत्र (2।4, । पृ० 128-129) मे इसका उल्लेख है।

काम्पिल्य आधुनिक कम्पिल से समीकृत है जो प्राचीन गगा-तट पर बदायूं और फर्रुखाबाद के बीच मे स्थित है।[2] महाभारत (I, 128, 73) तथा जैन विविधतीर्थकल्प (पृ० 50) मे निश्चित रूप से इसे गगा के तट पर स्थित बतलाया गया है। नदलाल दे के अनुसार यह उत्तरप्रदेश के फर्रुखाबाद जिले मे फतेहगढ से 28 मील दूर उत्तरपूर्व मे स्थित था (ज्याँग्रेफिकल डिक्शनरी, 88)। यह कायमगज रेलवे स्टेशन से केवल पाँच मील दूर है (उत्तर-पूर्व रेलवे)।

काम्पिल्य बहुत धनी[3] एव समृद्धिशाली[4] नगर था। काम्पिल्य मे गगा-तट से राजप्रसाद तक एक अति कृत्रिम सुरग (उम्मग्ग) खोदी गयी थी। बृहत्तर सुरग का मुखद्वार गगा-तट पर था। बडी सुरग को अनेक योद्धाओ ने तथा छोटी सुरग को 700 व्यक्तियो ने खोदा था। बृहत्तर सुरग के प्रवेशद्वार पर एक यात्रिक दरवाजा लगा हुआ था। सुरग ईटो की बनी थी और उस पर पलस्तर किया हुआ था। उसमे अनेक कमरे और रत्नगर्भ थे। यह अति अलकृत थी (विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य जातक, II, 329 और आगे, वही, VI 410)।

इस नगर मे राजा द्रुपद की पुत्री द्रौपदी का स्वयबर हुआ था जिसने स्वेच्छा से पाँच पाण्डवो को अपने पति के रूप मे वरण किया (महाभारत, आदि पर्व, अध्याय 138; रामायण, आदि०, अध्याय, 23)। तेरहवे तीर्थंकर विमलनाथ जो राजा कृतवर्मन् और उनकी रानी सोमदेवी के पुत्र थे, के जीवन की पाँच शुभ घटनाओं से यह गौरवान्वित था। इन पाँच घटनाओ, यथा अवतरण, आवास, अभिषेक, उपगुति तथा जिनत्व के कारण इस शहर को पञ्चकल्याणक भी कहा जाता था।

---

[1] इंडिशे स्टुडियेन, I, 184; आल्टिंडिशेज लेबेन, 36, 37

[2] कनिंघम, एं० ज्याँ० इं०, 413; आर्क० सर्वे० रि०, I, 255.

[3] हरिषेण, कथाकोष, सं० 104 और 115

[4] जातक, VI, 433.

यही पर कौण्डिन्य और गर्दवालि के शिष्य, जैनमुनि आर्षमित्र ने संन्यास ले कर कैवल्य प्राप्त किया था। यही काम्पिल्य मे गौतम ने पृष्ठि चम्पा के नरेश गागली को जैन धर्म मे दीक्षित किया था। कुछ लोगों के अनुसार विख्यात ज्योतिषी श्री वराहमिहिर इसी नगर मे उत्पन्न हुये थे (बि० च० लाहा, वाल्यूम, II, 240)।

इस नगर में अनेक महत्त्वपूर्ण राजाओ ने शासन किया था। महाभारत प्रसिद्ध पंच-पाडवो की पत्नी द्रौपदी के पिता द्रुपद, ब्रह्मदत्त[1], राजा हर्यश्व का पुत्र काम्पिल्य[2] जो पञ्चाल नाम से विश्रुत था, तथा अजमीढ वश के नीप के पुत्र समर[3] ने काम्पिल्य मे राज्य किया था। चूलणि ब्रह्मदत्त को विद्वान् ब्राह्मणो ने धार्मिक एव लौकिक विषयो मे शिक्षा दी थी (जातक, VI 391 और आगे)। पञ्चाल नामक एक राजा ने अपने राज्योद्यान मे किसी विद्वान् ब्राह्मण को शरण दी थी। हिमालय क्षेत्र मे जाने के पूर्व उक्त ब्राह्मण ने राजा को नैतिक धर्म की रक्षा, व्रतों के पालन करने तथा धार्मिक बनने का उपदेश दिया था (जातक, III, 79 और आगे)। गन्धार-नरेश नग्गजी के समकालीन राजा दुम्मुख ने चार पच्चेक बुद्धो की धार्मिक वार्ता सुनकर सन्यास ले लिया था।[4] क्षेमेन्द्र की बोधिसत्त्वावदान कल्पलता[5] मे राजा सत्यरत का उल्लेख है जो बहुत धर्मात्मा था, तथा महावस्तु में (भाग I, पृ० 283) राजा ब्रह्मदत्त का उल्लेख प्राप्त होता है। काम्पिल्य-नरेश सञ्जय ने राज-सत्ता का परित्याग करके जैन धर्म ग्रहण कर लिया था जिसे किसी भिक्षु ने जीव-हिंसा न करने के लिए शिक्षा दी थी।[6] काम्पिल्य-नरेश धर्मरुचि बहुत पवित्रात्मा था। काशी-नरेश से झगडा होने पर वह अपने पुण्य के प्रताप से अपनी सारी सेना आकाश-मार्ग से काशी ले गया था।[7]

काम्पिल्य मे अच्छे और बुरे नरेशो ने राज्य किया था। इस नगर के एक पापात्मा राजा ने भारी करो से अपनी प्रजा को सत्रस्त किया था। उसके मत्री भी अधर्मी थे। राजकीय अधिकारी भी प्रजाओं का दमन करते थे, जिनको वे दिन

[1] रामायण, आदिकाण्ड, सर्ग 33
[2] विष्णु पुराण, अध्याय, II; भागवत पुराण, अध्याय, 22
[3] विष्णु पुराण, IV, 19
[4] जातक, III, 379 और आगे।
[5] 66वाँ पल्लव, पृ० 4 और 68 वाँ पल्लव, पृ० 9.
[6] उत्तराध्ययन सूत्र, XVIII.
[7] विविधतीर्थकल्प, पृ० 50

में, तथा डाकू जिनकी संपत्ति रात मे लूटते थे।[1] आधुनिक कपिल कस्बे मे दो जैन मंदिर हैं जहाँ विश्व के सभी भागों से यात्री प्रायः आया करते हैं।

कान्यकुब्ज—इसे गाधिपुर, कुशस्थल और महोदय भी कहा जाता था।[2] यह आधुनिक कन्नौज है। महाभारत (अध्याय, 87, 17) के अनुसार विश्वामित्र यहाँ आये थे। विनयपिटक (जिल्द, II, पृ० 299) के अनुसार कण्णकुज्ज या कान्यकुब्ज मे संकस्स (सकाश्य) से श्रद्धेय थेर रेवत आये थे। भागवत पुराण (VI, I, 21) में भी इसका वर्णन अजामिल के नगर के रूप मे किया गया है। बाण ने अपने हर्षचरित (षष्ठ उच्छ्‌वास) मे कान्यकुब्ज की राज्यश्री नामक राजकुमारी का वर्णन किया है जो कारागार मे डाल दी गयी थी। कान्यकुब्ज नगर पञ्चाल राज्य मे स्थित था (एपि० इ०, IV, 246)। चेदि सवत् 866 मे उत्कीर्ण जाजल्लदेव के रत्नपुर अभिलेख मे जाजल्ल एव चेदि-नरेश की सधि का उल्लेख किया गया है और जिसका सम्मान कान्यकुब्ज के राजकुमार जेजाकभुक्तिक ने किया था (एपि० इ०, I, 33)। खलिमपुर से प्राप्त एक ताम्रपत्र मे यह बतलाया गया है कि भोज, कुरु, मत्स्य, यवन तथा यदु, चक्रायुध को कान्यकुब्ज-नरेश मानने के लिए विवश किये गये थे (रा० दा० बनर्जी, बाँगालार इतिहास, भाग, I, पृ० 167-69)। ग्यारहवी शताब्दी ई० के अत मे कान्यकुब्ज गागेयदेव के पुत्र कर्णदेव (1040-1070 ई०) के अधीन हो गया (रा० दा० बनर्जी, प्राचीन मुद्रा, पृ० 215)। कान्यकुब्ज अवन्तिवर्मन् और ग्रहवर्मन् नामक शासको के अधीन था जो सुस्थितवर्मन् मौखरि[3] के वशज थे (गुप्त इस्क्रिप्शस, प्रस्तावना, पृ० 15)। कान्यकुब्ज की प्राचीन राजधानी का नाम मूलत: कुसुमपुर था (द्रष्टव्य, समुद्रगुप्त का मरणातर उत्कीर्ण, इलाहाबाद स्तभ लेख, का० इ० इ०, जिल्द, III)। यह विश्वामित्र का जन्मस्थान था (रामायण, बालकाण्ड)। 7 वी शताब्दी ई० मे जब चीनी यात्री युवान च्वाङ् यहाँ आया था, यहाँ की सत्ता हर्षवर्द्धन के हाथ मे थी। युवान-च्वाङ् ने कान्यकुब्ज में 100 बौद्ध अधिष्ठान देखे थे। उसके अनुसार, गंगा, कन्नौज के पश्चिम मे बहती थी, न कि पूर्व मे, जैसा कि कनिंघम ने माना

---

[1] जातक, V, 98 और आगे।

[2] अभिधान-राजेन्द्र, IV, 39-40.

[3] यहाँ पर उल्लेखनीय है कि यह मत अब सत्य नहीं माना जाता। देव वर्णार्क के लेख तथा हाल ही में देवरिया जिले से प्राप्त सोहनाग के मुद्रा-लेख से स्पष्ट हो जाता है कि अवन्ति वर्मा एवं ग्रहवर्मा, मौखरि शर्ववर्मा के वंशज थे। सुस्थितवर्मा कामरूप-नरेश था – अनुवादक)

है। यह राज्य लगभग 4,000 ली विस्तृत था। इसके चारो ओर एक शुष्क परिखा थी। इसके चतुर्दिक् दृढ एव ऊँचे अट्टालक (बुर्ज) थे। इसमें फूल, जंगल, झीलें एव सरोवर थे। यहाँ के निवासी सुखी एव सतुष्ट थे। जलवायु सुरुचिपूर्ण एव सुहावनी थी। यहाँ के निवासी ईमानदार, निश्छल, सज्जन और अपने स्वरूप में मोहक थे। वे अलंकृत एव चमकदार वस्त्र पहनते थे। वे ज्ञान-पिपासु थे। वहाँ बौद्ध-मत के अनुयायी और विधर्मी समान सख्या मे थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, 206-207)। उसके समय मे कन्नौज का शासक हर्षवर्द्धन अपने प्रशासन मे न्यायशील एव कर्त्तव्य-पालन मे नियमनिष्ठ था। सत्कार्यों के सपादन मे वह अपने तन-मन से लीन रहता था। गगा के तट पर उसने अनेक स्तूप एव बौद्ध विहार बनवाये थे। वह भिक्षुओ को परीक्षा तथा विवाद के लिए आमंत्रित करता था और उनकी योग्यता या अयोग्यता के अनुसार उन्हे पुरस्कृत या दडित करता था। राजा अपने सपूर्ण राज्य मे निरीक्षण के लिए दौरे करता था। राजा की दिनचर्या तीन भागो मे विभक्त थी। एक भाग राजकाज तथा दो धर्म-कार्य के लिए नियत थे। वह एक अथक परिश्रमी व्यक्ति था (वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, I, 343-44)। हर्षवर्द्धन के काल के पूर्व, कन्नौज मौखरि नरेशों की राजधानी थी। त्रिलोचनपाल के सूरत-दानपत्र मे कन्नौज मे राष्ट्रकूट वश का प्रथम उल्लेख किया गया है। लक्ष्मणपाल के बदायूं स्तभ लेख से (एपि० इ०, I, 61-66) यह निश्चित रूप से सिद्ध होता है कि राष्ट्रकूट कन्नौज के समीप रहते थे। मालवा, कोशल एव कुरु-प्रदेश कन्नौज के गुर्जर राजाओ के अधीन प्रतीत होते हैं। धग ने कन्नौज-नरेश को पराजित करके सर्वोच्चसत्ता प्राप्त की थी (कान्यकुब्ज नरेन्द्र, एपि० इ०, I, 197)। गाहडवाल नरेश गोविदचद्र के पाँच ताम्रपत्र-अभिलेख कन्नौज से मिले है (एपि० इ०, VIII. 149 और आगे)। दो ताम्रपत्र अभिलेखों मे कन्नौज-नरेश महाराजाधिराज महेन्द्रपाल के शासन का उल्लेख है (एपि० इं० IX. 1. और आगे)।

ग्वालियर-प्रशस्ति से हमें ज्ञात होता है कि प्रतीहार वत्सराज ने भाण्डिकुल से कन्नौज की सत्ता छीन ली थी (एपि० इ०, XVIII. 101)। वणी और रन्धन-पुर दानपत्रो से हमें ज्ञात होता है कि राष्ट्रकूट ध्रुव ने वत्सराज को पराजित किया था जिसने (वत्सराज) स्वय गौड-नरेश को हराया था। उसके प्रतिद्वन्द्वी धर्मपाल ने कन्नौज पर अधिकार करने की अपनी महत्त्वाकांक्षा नही छोडी थी, यद्यपि इस दिशा मे इसका प्रथम प्रयत्न असफल हो चुका था (एपि० इ०, VI. 244)। कन्नौज-नरेश गोविंदचंद्र के वि० सं० 1184 मे उत्कीर्ण कमौली अभिपत्र में कुशिक गाधिपुर तथा कान्यकुब्ज का उल्लेख किया गया है, जिसे सामान्यतः एक ही स्थान

यथा कन्नौज से समीकृत किया जाता है (एपि० इं०, XXVI, भाग II, अप्रैल 1941, पृ० 71)। गोविदचंद्र ने कान्यकुब्ज तथा उसके अधीन क्षेत्रो पर अपने वंश की सत्ता पुनर्स्थापित की थी।

कारीतलाई—यह जबलपुर जिले मे मुरवारा तहसील के मुख्यावास से पूर्व की ओर 29 मील दूर स्थित एक गाँव है (एपि० इं०, XXIII, भाग V, लक्ष्मण-राज का कारीतलाई शिलालेख)।

काशी—भारत के तीर्थों मे काशी या वाराणसी अपना विशिष्ट स्थान रखती है (सौर पुराण, IV, श्लोक 5; कालिका पुराण, 51, 53; 58, 35, तु० महाभारत, 84, 78)। काशी षोडश् महाजनपदो की तालिका मे समिलित है (अंगुत्तर, I, 213; IV, 252, 256, 260)। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4. 2.116)तथा पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य मे (2 1.1, पृ० 32)काशी का उल्लेख किया है। भागवत पुराण (IX. 22,23; X 57.32, X 66,10, X 84.55तथा XII.13, 17)मे भी इस नगर का उल्लेख है। स्कद पुराण (अध्याय, I, 19-23) तथा योगिनीतत्र (1 2; 2 4) मे इस पुण्यनगरी का उल्लेख किया गया है। गोविदचन्द्र के कमौली-दानपत्र (वि० स० 1184)मे भी उसका वर्णन प्राप्त होता है (एपि० इ०, XXVI, भाग II. पृ० 71, इ० ए० XV, पृ० 8, पाद-टिप्पणी, 46)। प्राचीन काशी जनपद के प्रमुख नगर वाराणसी का एक शहर के रूप मे वर्णन ल्युडर्स की तालिका, संख्या 925 मे प्राप्त होती है। जैनग्रथ उवासगदसाओ (पृ० 84-85, 90, 95, 105, 160, 163) के अनुसार यह जियसत्तु के राज्य मे, कम्पिल्लपुर, पलासपुर तथा आलमी की भाँति एक महत्त्व-पूर्ण नगर था। विभिन्न युगों मे यह विभिन्न नामो, यथा सुरुन्धन, सुदस्सन, ब्रह्म-वड्ढन, पुप्फवती, रम्म एव मोलिनी नाम से विख्यात था (जातक, IV, पृ० 15, 199, चरियापिटक, पृ० 7)। कूर्म पुराण (पूर्वभाग, अध्याय, 30, श्लोक 63) के अनुसार यह वरणा एव असी नदियो के मध्य स्थित था। यह इलाहाबाद से 80 मील आगे गगा के उत्तरी तट पर स्थित है। वरणा एवं असी नदियों के संयुक्त नाम के आधार पर जो इस नगर के उत्तर एव दक्षिण मे बहती है इसका नाम वाराणसी पड़ा। वरणा, जो निश्चय ही एक उल्लेखनीय क्षुद्र नदी है, अथर्ववेद (IV 7.1) मे वर्णित वरणावती नदी से समीकृत की जा सकती है। वाराणसी को काशीनगर और काशीपुर भी कहा जाता है (जातक, V. 54; VI. 115; धम्मपद कामेंट्री, I, 87)। जातको मे इस नगर का विस्तार 12 योजन बतलाया गया है (जातक, IV. 377; VI 160, तु० मज्झिम कामेंट्री, II, 608)। इसका निर्माण शूलपाणि महादेव ने किया था। यहाँ पर रानी शैव्या

एवं अपने पुत्र के साथ राजा हरिश्चद्र आये थे (मार्कण्डेय पुराण, बगवासी, सं० पृ० 34)। श्रावस्ती से सुगम सडको द्वारा यहाँ पहुँचा जा सकता था। यह गगा के बाँये तट पर स्थित था। यह उद्योग एव व्यापार का एक बड़ा केंद्र था तथा वाराणसी, श्रावस्ती एवं तक्षशिला मे व्यापारिक सबध थे (धम्म पद कामेंट्री, III, पृ० 429; I, पृ० 123)। यह एक अत्यधिक जन-सकुल एवं समृद्धशाली प्रदेश था (धम्मपद कामेंट्री, III, पृ० 445, सुत्तनिपात कामेंट्री, II, 523 और आगे, जातक II, 109, 287, 338, III, 198, V. 377, VI. 151, 450; जातक I, 355; अगुत्तर, III, 391, जातक II, 197; I, 478, VI. 71)। हिंदू, बौद्ध एव जैन साहित्य मे विशिष्ट रूप से वर्णित वाराणसी की गणना आनन्द द्वारा बुद्ध के परिनिर्वाण के लिए अनुकूल बताये गये बडे नगरो मे की गयी थी (दीघ, II, 146)। सारनाथ से प्राप्त एक अभिलेख मे इस नगर मे स्थित कुछ धार्मिक भवनो के मरम्मत का उल्लेख किया गया है (इ० ए०, XIV, पृ० 139-140).

जैन ग्रथ विविधतीर्थकल्प के अनुसार वाराणसी चार भागो मे विभक्त है;

(1) देववाराणसी—यहाँ पर विश्वनाथ का मदिर स्थित है, जिसमे 24 जिनपट्टों को देखा जा सकता है,

(2) राजधानी-वाराणसी—यहाँ पर यवन रहते थे।

(3) मदन-वाराणसी, और

(4) विजय-वाराणसी (लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 174-75)।

चीनी वाराणसी को पो-लो-नि-स्से (Po-Lo-Ni-Sse) कहते थे। यह 4,000 ली विस्तृत था तथा बहुत घना बसा हुआ था। यहाँ की जलवायु शीतल, फसले प्रचुर तथा वृक्ष फलने-फूलने वाले एव सर्वत्र घनी झाडियाँ थी। वहाँ पर कोई 30 सघाराम एव 100 देवमदिर थे। यहाँ के निवासी उदार एव विद्याध्ययन मे तत्पर थे। यहाँ के निवासी अधिकाशत नास्तिक थे तथा कुछ लोग ही बुद्ध के प्रति श्रद्धा रखते थे (बील बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 44 और आगे)। वाराणसी के निकट चुण्डट्ठिल (चुण्डवील) नामक एक स्थान था, जिसका वर्णन मरहुत अभिलेख मे हुआ है (बरुआ ऐंड सिनहा, मरहुत इस्क्रिप्शस, पृ० 7, 18)।

कुछ गाहडवाल-अभिलेखो (यथा, रवियनदानपत्र, भडारकर को उत्तरी अभिलेखो की तालिका, स० 222) से हमे ज्ञात होता है कि वाराणसी के उत्तर मे वरुणा एवं गंगा के सगम के समीप स्थित, आदिकेशवघट्ट उस समय वाराणसी का एक भाग समझा जाता था। वाराणसी नगर की दक्षिणी सीमा कम से कम गंगा एवं असी के सगम तक फैली हुयी थी (इंडियन कल्चर, II, 148)। बोधगया

से प्राप्त जयचद्र देव के शासनकाल के एक बौद्ध अभिलेख मे काशी का उल्लेख किया गया है। माधायनगर दानपत्र के अनुसार काशी का एक राजा लक्ष्मणसेन द्वारा पराजित हुआ था (ज० रा० ए० सो० बं०, न्यु० स०, भाग V, पृ० 467 और आगे; तु०, एपि० इ०, XXVI, भाग I, लक्ष्मणसेन का इडिया आफिस अभिपत्र)। चन्द्रदेव के चद्रावती दानपत्र मे (एपि० इ०, XIV 193) गाहडवाल राज्य का विस्तार वाराणसी और कन्नौज से अयोध्या (फैजाबाद) मे सरयू एव घर्घरा (घाघरा) के सगम तक बतलाया गया है। काशी जनपद के उत्तर मे कोसल, पूर्व मे मगध, और पश्चिम मे वत्स स्थित था (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, 316)। यह एक धनी एव समृद्धिशाली नगर था (अगुत्तर, I, 213, दीघ, II, 75)। वैदिक साहित्य एव पुराणो मे काशी का कई बार उल्लेख हुआ है (साख्यायन श्रौतसूत्र, XVI. 29,5, बृहदारण्यक उप०, III, 8.2 शतपथ ब्राह्मण, XIII. 5, 4, 19, कौषीतकि उप०, IV 1, बौधायन श्रौतसूत्र, XVIII 44, रामायण, उत्तरकाण्ड, 56, 25, 59, 19, आदि काण्ड, तेरहवाँ सर्ग, किष्किन्ध्या-काण्ड, 40 वाँ सर्ग)। महाभारत में इस शहर का सुस्पष्ट वर्णन किया गया है। महाभारत के अनुशासनपर्व (अध्याय, 30, पृ० 1899-1900) के अनुसार वाराणसी का सस्थापक दिवोदास पराजित होने के पश्चात् वन मे भाग गया था। महाभारत के उद्योगपर्व (अध्याय, 117, पृ० 746) के अनुसार काशी-नरेश दिवोदास के प्रतर्दन नामक एक पुत्र था। हरिवंश (अध्याय, 31) मे दिवोदास के जीवनचरित्र का एक अन्य विवरण प्राप्त होता है (तु० वायु पुराण, अध्याय, 92, ब्रह्म पुराण, अध्याय, 13, 75)। महाभारत एव पुराणो मे काशी के राजाओ से सबधित कई कहानियाँ है (आदि पर्व, 95-105, उद्योगपर्व, अध्याय, 172-94; पृ० 791-806, सभापर्व, 30, 241-2, विराटपर्व, 72, 16, उद्योगपर्व, 72. 714, द्रोण पर्व, 22, 38, भीष्म पर्व, 50, 924, वायु पुराण, अध्याय, 92; विष्णु पुराण, पचम अंश, अध्याय, 34)। महाभारत के उद्योगपर्व मे कृष्ण द्वारा काशी के कई बार जलाये जाने का उल्लेख प्राप्त होता है। जैनियो के अनुसार पार्श्वनाथ वाराणसी में पैदा हुए थे। काशी का उल्लेख जैन धर्म के प्रवर्त्तक महावीर और उनके शिष्यो की कहानियो के सदर्भ मे भी हुआ है।[1] यद्यपि काशी और वाराणसी अपेक्षाकृत हिंदू एव जैन ग्रथो मे सुस्पष्ट रूप से वर्णित है, किंतु बौद्ध

[1] बि० च० लाहा, महावीर, हिज लाइफ ऐंड टीचिंग्स, खंड 1; उवासगदसाओ, भाग II, 90-8; जैन सूत्राज, सै० बु० ई०, भाग II, पृ० 136-7; सूत्र कृतांग, जैनसूत्राज, II, पृ० 87; एस० स्टीवेंसन, हार्ट ऑव जेनिज्म, पृ० 48-49.

ग्रथों, विशेषत: जातकों से, इस विषय मे हमे पूरी जानकारी प्राप्त होती है।[1] बुद्ध के काल मे काशी की राजनीतिक शक्ति समाप्त हो गयी थी। कोसल मे काशी-जनपद-विलयन कोशलाधिप प्रसेनजित के राज्यारोहण के पूर्व ही एक निष्पन्न तथ्य था। उसके पिता महाकोशल ने मगध-नरेश बिम्बिसार के साथ अपनी पुत्री कोशलदेवी के विवाह के अवसर पर उसे काशी ग्राम (कासीगाम) श्रृंगार-धन के रूप मे दे दिया था।[2] जब मगध-नरेश अजातशत्रु कोशलो को पराजित करके उत्तर-भारत का सर्वशक्तिशाली राजा बना[3] तब उसने काशी को जीत कर मगध राज्य मे सदा के लिए मिला लिया।

अच्छे शासन के बावजूद भी काशी अपराधो से पूर्णत: मुक्त नही थी।[4] काशी मे न्याय एव मुनीनिपूर्ण शासन होता था। राजामात्य न्यायशील और ईमानदार थे। कोई गलत वाद न्यायालय मे नही लाया जाता था और कभी-कभी सच्चे मुकद्मे इतने कम होते थे कि मत्रियों को मुकद्मेबाजो के अभाव में बेकार बैठना पडता था। वाराणसी का राजा अपनी कमियों को जानने के लिए सदा सजग रहता था।[5]

वाराणसी के उत्साही नवयुवक शिक्षा प्राप्त करने के लिए तक्षशिला जाया करते थे (धम्मपद कामेंट्री, I, 251 और आगे, खुद्दकपाठ कामेंट्री, 198)। वह स्थान जो बुद्ध की कई यात्राओं से निकटतम रूप मे सबधित था, शहर के निकट ही, प्रसिद्ध मृगवन (इसिपतनमिगदाव) था। ज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् यही पर बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश दिया था (दीघ, III, 141, मज्झिम I, 170 और आगे, सयुक्त, V 420 और आगे, पृ० 97, 559)। बुद्ध ने वाराणसी के बहुत से निवासियों का बौद्धमत मे परिवर्तित किया तथा यहाँ पर उन्होंने कई उपदेश दिये (विनय, I, 15, 19, अगुत्तर निकाय, I, 110 और आगे, 270 और आगे, III, 392 और आगे 399; और आगे, सयुत्त, I, 105, V. 406, विनय, I, 189, 216, 289, समन्तपासादिका, I, 201)। इस नगर मे अनेक श्रद्धास्पद

---

[1] अगुत्तर, I, 213; दीघ, II, 146; विनय, I, 343 और आगे; धम्म पद कामेंट्री, I, 56 और आगे; जातक III, 211 और आगे; 406 और आगे; 452, 487; जातक, I, 262 और आगे; अगुत्तर, V, 59

[2] जातक, II, 237; IV, 342, और आगे।

[3] संयुत्त, I, 82-85

[4] धम्मपद कामेंट्री, I, 20; जातक, II, 387-88.

[5] जातक, II, 1-5.

बौद्ध-भिक्षु आये थे (विनय टेक्स्टस, सै० बु० ई०, II, 359-60; थेरीगाथा कामेंट्री, पृ० 30-31; विनय टेक्स्टस, III, 360, टिप्पणी, 3; 195-96, टिप्पणी, 3)।

कसिया—कसया पाषाण-प्रतिमा अभिलेख मे इस गाँव का वर्णन है, जो गोरखपुर जिले की पडरौना तहसील मे, गोरखपुर शहर से पूर्व मे 34 मील दूर पर स्थित है (का० इ० इ०, जिल्द III)। कासया तहसील का मुख्यावास गोरखपुर से पूर्व मे 34 मील दूर एक बडे गाँव मे, देवरिया से इक्कीस मील पूर्वोत्तर तथा पडरौना से 12 मील दूर दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है (गोरखपुर डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, ले०-नेविल, पृ० 261)। मल्लों का राज्य दो भागों मे विभक्त था जिनकी राजधानियाँ कुशीनारा और पावा थी। कुछ विद्वानो के अनुसार पावा को सभवत छोटी गडक के तट पर तथा गोरखपुर जिले के पूर्व मे स्थित कसया से समीकृत किया जा सकता है (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 14)। कसया के भग्नावशेषो की खोज 1876 मे की गयी थी जब मुख्य निर्वाण-स्तूप को पूर्णत. खोदा गया था। प्राचीन बौद्ध-स्थल कसया मे किये गये उत्खननो से बहुत महत्त्वपूर्ण पुरानिधियाँ एव अनेक प्राचीन भवन प्रकाश मे आये है (आ० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1911-12, पृ० 134 और आगे, आ० स० रि० 1904-5, 43 और आगे; 1905-6, 6 और आगे, 1906-7, 44 और आगे 1910-11, 62 और आगे, 1911-12, 134 और आगे।

काश्मीर(कश्मीर)—काश्मीर जिसे टालेमी ने कस्पेरिया (Kasperia) कहा है का वर्णन वीरपुरुषदत्त के नागार्जुनिकोण्ड अभिलेखो मे हुआ है। पाणिनि (4 2.133)एव पतञ्जलि(3, 2, 2, पृ०188-189, 1, 1, 6, पृ०276)इस शहर से परिचित थे। इसका वर्णन योगिनीतंत्र मे भी हुआ है (1।3, 2।1, पृ० 77)। बृहत्संहिता मे एक देश के रूप मे इसका वर्णन किया गया है (XIV. 29)। यह पजाब के उत्तर मे स्थित है। यहाँ पर साहित्य, धर्म एव दर्शन के क्षेत्रो मे उल्लेखनीय प्रगति हुयी है। दिव्यावदान (पृ० 399) मे इस रमणीक नगर का उल्लेख किया गया है। अवदानशतक (पृ०, 67) तथा बोधिसत्त्वावदान कल्पलता (70 वाँ पल्लव) में इसे केवल नागो द्वारा निवसित नगर बतलाया गया है। स्रग्धरास्तोत्रम् का प्रणेता काश्मीर-निवासी एक बौद्ध भिक्षु था। मध्यन्तिक नामक एक भिक्षु को उसके आध्यात्मिक गुरु आनंद ने यहाँ पर धर्म प्रचारक के रूप मे भेजा था (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल ऐसेज, पृ० 45)। कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार इस शहर से हीरा (वज्र) प्राप्त होता था।

काश्मीर राज्य का विस्तार 7,000 ली था और यह चारो ओर ऊँचे पर्वतों

से परिवृत्त था। इस प्रदेश की राजधानी की पश्चिमी सीमा पर कोई बड़ी नदी, जो स्पष्टत. वितस्ता प्रतीत होती है, प्रवाहित होती थी। यहाँ की भूमि उपजाऊ थी, और इस कारण यहाँ खाद्यान्न, फलो एव फूलो की प्रचुर उपज की जा सकती थी यहाँ पर जडी-बूटियाँ प्राप्त होती थी। यहाँ की जलवायु शीतल एव रुक्ष थी। यहाँ के निवासी सुदर आकृति वाले होते थे। वे विद्या-व्यसनी थे। उनमे नास्तिक एव आस्तिक दोनो ही थे। यहाँ पर स्तूप एव सघाराम भी पाये जाते थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, 148 और आगे)। यह गन्धार जनपद मे सम्मिलित था। तृतीय बौद्ध सगीति के समापन के पश्चात् मोग्गलिपुत्त-तिस्स को बोद्धधर्म के प्रचार के लिए कश्मीर भेजा गया था। अशोक के समय में यह मौर्य-साम्राज्य के अतर्गत था (द्रष्टव्य, ऑन युवान-च्वाड्, I, पृ० 267-71)।

काश्मीर के अनन मदिरो मे, मार्तण्ड एव पायेच, दो का उल्लेख किया जा सकता है। मार्त्तण्ड, जिसे सूर्यमदिर भी कहा जाता है, इस्लामाबाद से कोई तीन मील पूर्व मे, कश्मीर के अति रमणीक दृश्य के ऊपर एक ढाल पर स्थित है। इस विशाल मदिर का निर्माण ललितादित्य ने आठवी शती ई० मे कराया था। नौनाग्रि करेवा के नीचे, श्रीनगर से 19 मील दूर तथा झेलम नदी के बॉये तट से कोई 6 मील दूर पर पायेच का प्राचीन मदिर स्थित है जो अपने सहज सौदर्य एव स्वरूप की रमणीयता की दृष्टि से काश्मीर का सर्वश्रेष्ठ मदिर है। कश्मीर शैवमत के एक पृथक् सप्रदाय का केद्र था जिसका दर्शन शंकर द्वारा प्रतिपादित अद्वैत दर्शन के समान था (अधिक विवरण के लिए, देखिये, बि० च० लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 30-31)।

कर्तृपुर—इलाहाबाद स्तभ लेख मे वर्णित कर्तृपुर मे कुमाऊँ, अलमोडा, गढवाल एव कॉगडा सम्मिलित थे।[1]

केदार—महाभारत (अध्याय, 83, श्लोक, 72) मे केदारतीर्थ का उल्लेख प्राप्त होता है।[2] योगिनीतत्र (पृ० 1, 8, 1, 11) मे इसका वर्णन किया गया है।

केकय—महाभारत (II, 48-13, VI. 61, 12; VII. 19, 7) तथा भागवत पुराण (X. 2, 3; X. 75, 12; X. 84, 55; X. 86. 20) मे वर्णित केकय देश को पजाब (पा०) के आधुनिक शाहपुर जिले से समीकृत किया गया है। रामायण के अनुसार (II, 68, 19-22; VII 113-114) केकय देश

---

[1] ज० रा० ए० सो०, 1898, पृ० 198.

[2] तु० कूर्म पुराण, 30, 45-48; सौर पुराण, अध्याय, 99, श्लोक, 23.

विपाशा या ब्यास नदी के पार, गन्धार जनपद सीमा का स्पर्श करता था। कनिंघम ने केकय देश की राजधानी को गिरजक या झेलम तट पर स्थित जलालपुर से समीकृत किया है (ज० ए० सो० ब०, 1895, 250 और आगे, ए० ज्यॉ० इ०, 1924, 188, रामायण, I, 69, 7, II, 71, 18)। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (7.3.2) तथा पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (7, 2, 3) मे इसका उल्लेख किया है। राजशेखर ने अपनी काव्यमीमासा मे केकय देश को भारत के उत्तराखण्ड मे शको, हूणो, काबोजो, बाह्लीको आदि के साथ स्थित बताया है। स्ट्रैबो के अनुसार यह देश विस्तृत एव उपजाऊ था तथा इसमे कोई 300 नगर थे (एच० तथा एफ० का अनुवाद, III, पृ० 91)। विस्तृत विवरण के लिए देखिये, लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, I, पृ० 18-19)।

केसपुत्त—अगुत्तर (I 188) मे केसपुत्त को कोसल मे स्थित बतलाया गया है। यहाँ के निवासी कालाम बिम्बिसार के समय मे गणराज्य मे रहते थे। अलार नामक दार्शनिक केसपुत्त का निवासी था (बुद्धचरित, XII 2; लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 30)।

केतकवन—यह कोसल मे नालकपान ग्राम के समीप स्थित था (जातक, I,170)।

केतुमती—अपनी पत्नी एव बच्चो के सहित राजा वेम्मन्तर ने इस नदी के तट पर विश्राम किया था (जातक, VI. 518)। वह इस नदी को पार करके नालिका पहाड़ी पर गये थे। उत्तर दिशा मे जाते हुए तब वह मुचलिन्द सरोवर पहुँचे थे।

खाण्डव—तैत्तिरीय आरण्यक के अनुसार (V. I. 1.) यह कुरुक्षेत्र की एक सीमा थी। इसे महाभारत मे वर्णित खाण्डव वन से समीकृत किया जा सकता है। यह नाम पचविंश ब्राह्मण मे (XXV. 3, 6) भी मिलता है।

कीर—धर्मपाल के खलिमपुर ताम्रपत्र मे इस प्रदेश का उल्लेख प्राप्त होता है जो कीलहार्न के मतानुसार पूर्वोत्तर भारतवर्ष मे स्थित था (एपि० इ०, IV 243, 246)। पालवशीय नरेश धर्मपाल ने इस देश के निवासियो को पराजित किया था और कीर-नरेश स्वय पाल सम्राट् को आदर देने के लिए कन्नौज की राजसभा में आया था (एपि० इ०, IV. 243)। यशोवर्मन् के खजुराहो-अभिलेख के अनुसार कीर-नरेश को भोट-राज ने वैकुठ की एक प्रतिमा दी थी (एपि० इ०, I, 122)। कर्ण के रीवाँ शिलालेख मे कीर का उल्लेख वैजनाथ के समीप हुआ है जो काँगड़ा की घाटी मे स्थित था (एपि० इ०, XXIV, भाग III, पृ० 110)।

कोरग्राम—इसे काँगडा जिले मे स्थित बैजनाथ से समीकृत किया गया है जहाँ पर एक लिंग मदिर था, जो प्राचीन बिन्दुक नदी (आधुनिक बिन्नू) के दक्षिणी तट पर चित्रवत् स्थित है (आ० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1929-30, पृ० 15 और आगे)।

किरात—यह हिमालय मे और सभवत. तिब्बत मे स्थित है। टालेमी के अनुसार किरात उत्तरापथ मे स्थित थे (तु० मैक्रिडिल, ऐश्येंट इडिया, पृ० 277)। उनके सनिवेश पूर्वी क्षेत्र मे भी थे। किरात देश को टालेमी ने किरहैडिया (Kirrhadia) कहा है। किरहैडाई (Kirrhadai) के देश कैरहैडिया को 'पेरिप्लस ऑव द एरीथियन सी' मे गगा नदी के मुहाने के पश्चिम मे स्थित बतलाया गया है। टालेमी द्वारा वर्णित किरहैडोई या ऐर्रहेडोई न केवल गगा नदी घाटी पर ही फैले हुये थे, वग्न् और आगे पूर्व मे भी विस्तृत थे। प्लिनी एव मैगस्थनीज ने भी किरातो का स्काइटिस (Skyrites) नाम से वर्णन किया है। मेगस्थनीज के अनुसार ये लोग खानाबदोश थे। किरातो की स्थिति के विषय मे विस्तृत विवरण के लिए देखिये, लास्सेन, इडिशेज अल्टिठुम, जिल्द, III, पृ० 235-237)। महाभारत (XII 207. 43) मे किरातो का उल्लेख यवनो, कम्बोजो, गधारो एव बर्बरो के साथ किया गया है। ये सभी उत्तरापथ मे रहते थे। श्रीमद्भागवत मे (II. 4. 18) उन्हे आर्यक्षेत्र के बाहर का रहने वाला बतलाया गया है। उनका उल्लेख वीरपुरुषदत्त के नागार्जुनिकोण्ड अभिलेख मे किया गया है। उत्तरापथ के किरातो को शिकारियो तथा लोभी पुरुष जैसी हिंस्र प्रवृत्तिवाली अपराधी जातियो के रूप मे तिरस्कृत किया गया है (बे० मा० बरुआ, अशोक ऐड हिज इन्स्क्रिप्शस, पृ० 100; साहित्यिक उल्लेखो के लिए देखिए, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 282-83)।

किरथार—यह पर्वत सुलेमान पर्वत के दक्षिण मे बलूचिस्तान के सिंह एव झलवन क्षेत्रो के बीच मे स्थित है। मूला नदी की कृशधारा से दक्षिण की ओर समानातर शिखरो की एक श्रृंखला मे यह 199 मील तक फैला हुआ है। अधिक विवरण के लिए देखिये, लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 8)।

कोशल—पाणिनि की अष्टाध्यायी (4.1.171) मे वर्णित कोशल भारत के सोलह महाजनपदो मे से एक था (अगुत्तर निकाय, I, 213, तु० विष्णु पुराण, अध्याय, 4, अश 4)। भागवत पुराण मे (IX. 10. 29; IX 11, 22, X. 2. 3; X 58 52; X 86. 20, XII. 12. 24) इसका वर्णन एक देश के रूप मे किया गया है। यह कुरु एव पचाल देशो के पूर्व मे तथा विदेह के पश्चिम मे स्थित था। सदानीरा इसे विदेह से अलग करती थी जो सभवत. बड़ी गडक थी

(कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, I, 308; रैप्सन, ऐश्येंट इंडिया, पृ० 164; तु० शतपथ ब्राह्मण 1.4.11)। कोशल-निवासी सूर्यवंशी थे तथा सीधे इक्ष्वाकु द्वारा मनु के वंश से संबंधित थे। दशकुमारचरितम् (पृ० 195) मे कोशल-नरेश कुसुमधन्वा का उल्लेख है, जिसकी पत्नी सागरदत्ता पाटलिपुत्र के वैश्रवण नामक एक व्यापारी की पुत्री थी। बौद्ध लोग कोशल को कोशलवंशीय राजकुमारो का देश कहते है जिनकी उत्पत्ति वे इक्ष्वाकु से बतलाते थे (सुमंगलविलासिनी, I, 239)। महाकाव्य-काल मे कोशल की महत्ता बढ़ जाती है। राम के वनवास की कहानी से महाकाव्य-काल मे कोशल-देश के विस्तार का ज्ञान-प्राप्त किया जा सकता है। राम के पश्चात् सुविस्तृत कोशल-साम्राज्य राम तथा उनके अन्य तीन भाइयो के पुत्रो मे बँट गया था। खास कोशल देश ही दो भागो मे विभक्त बतलाया जाता है। राम का ज्येष्ठ पुत्र कुश दक्षिण कोशल का राजा हुआ और उसने अपनी राजधानी अयोध्या से बदल कर कुशस्थली को बनाया जो विंध्य पर्वतमाला मे स्थित थी (वायु पुराण, 88, 198)। उनका छोटा पुत्र, लव उत्तर कोशल का शासक हुआ और उसने श्रावस्ती को अपनी राजधानी बनाया। कोशल का उत्तरकालीन इतिहास मुख्यतया जैन एव बौद्ध साहित्य से ज्ञात होता है। काशी एव कोशल मे शत्रुता थी। काशी और कोशल पास-पास विकसित होने वाले दो समान रूप से शक्तिशाली राज्य थे जिनमे प्रत्येक के अपने-अपने आतरिक क्षेत्र, बाहरी जिले तथा सीमात देश थे। कालातर मे काशी कोशल जनपद मे मिला लिया गया। बौद्ध ग्रथो मे कोशल के नर-नारियो के विषय मे बहुत सी कहानियाँ है और उनमे से अनेक किसी-न-किसी रूप मे पसेनदि से सबधित थी। बाद मे दक्षिण कोशल से पृथक् करने लिए उत्तर कोशल को श्रावस्ती कहा जाने लगा। कोशल के राजाओं एव राजकुमारो को अच्छी शिक्षा मिलती थी। अधिक विवरण के लिए देखिये बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, अध्याय, XXVIII)।

कोसम्बी—कोसम्बी (सस्कृत, कौशाम्बी, चीनी, कियाउ-शाङ्-मि) वंसों या वत्सो (वत्सपट्टन) की राजधानी थी। यह छठे तीर्थंकर का जन्मस्थान था (आवस्सक निर्ज्जुति, 382)। एक पाषाण-स्तभ-लेख कोसम के निकट प्राप्त हुआ था जिसे इलाहाबाद जिले मे प्राचीन कोशाम्बी से समीकृत किया जाता है (महाराज वैश्रवण का कोसम् अभिलेख, वर्ष 107, एपि० इं०, XXIV, भाग IV, पृ० 146)। वैश्रवण कौशाम्बी का एक शासक था और उसका नाम सर्व-प्रथम इस अभिलेख से ज्ञात हुआ है। प्राचीन कौशाम्बी स्थल की खोज करते समय भद्रमघ के शासनकाल का कोसम अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इं०, XXIV, भाग VI, अप्रैल, 1938)। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (2.1.1, पृ०

32; 2.2.1, पृ० 124) में इस नगर का उल्लेख किया है। पौराणिक परंपरा के अनुसार वत्सदेश के राजवश की उत्पत्ति पुरु से मानी जाती थी जिससे राजा उदयन (पालि, उदेन) सबधित था और एक समय इसकी राजधानी कुरु-देश में हस्तिनापुर थी। उत्तर से साकेत एव सावत्थी को, दक्षिण मे गोदावरी तट पर स्थित पतिट्ठान या पैठन से मिलाने वाले बडे व्यापारिक मार्ग पर यात्रा करने वाले यात्रियो के लिए कौशाम्बी एक महत्त्वपूर्ण विश्रामस्थल था, (बरुआ ऐड सिंहा, भरहुत इंस्क्रिप्शस, पृ० 12)।

कनिंघम ने कोसम्बी को इलाहाबाद से लगभग 30 मील दूर दक्षिण-पश्चिम मे यमुना-तट पर स्थित कोसम से समीकृत किया है। सातवी शती ई० मे युवान-च्वाङ् यहाँ पर आया था। उसके अनुसार यह देश 6,000 ली तथा इसकी राजधानी 30 ली विस्तृत थी। यह गरम जलवायु वाला एक उपजाऊ देश था; यहाँ पर देशी चावल एव गन्ना बहुत पैदा होता था। यहाँ के निवासी उद्यमी, कला-प्रिय एव पुण्यशील थे। यहाँ पर दस से अधिक बौद्ध विहार थे जो पूर्णत: जीर्ण हो चुके थे तथा यहाँ के भिक्षु हीनयान सप्रदाय के थे। यहाँ पर पचास से अधिक देवमदिर तथा असख्य अबौद्ध थे।[1] 1093 सवत् (1036 ई०) मे उत्कीर्ण कडा के किले मे प्रवेश-द्वार पर लिखित-अभिलेख मे, कन्नौज के अतिम प्रतीहार-नरेश महाराजाधिराज यशपाल द्वारा कौशाम्बी मडल मे स्थित पयलास ग्राम (आधुनिक प्रास) के दान का उल्लेख है। इसे उसने अपने प्रथागत उत्पादन शुल्क, अधिशुल्क तथा करो सहित, पभोसा निवासी माथुर-विकट को, उसके वशजों के समय मे भी स्थायी रूप से चलते रहने के आश्वासन के साथ दिया था। समुद्र-गुप्त के मरणोत्तर इलाहाबाद स्तभ-लेख मे कौशाम्बी का उल्लेख प्राप्त होता है (का० इं० इ०, जिल्द, III)। यह नगर जिन के उत्पन्न होने से प्रतिष्ठित हुआ था। यहाँ पर पद्मप्रभु का मदिर है, जिसमें चदनवाला की प्रतिमा देखी जा सकती है। महावीर के सम्मान मे यहाँ पर चन्दनवाला ने लगभग छ मास तक उपवास किया था। ईंट निर्मित राजा प्रद्योत का किला अब भी यहाँ पर स्थित है[3] विस्तृत विवरण के लिए देखिये, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 136 और आगे; बि० च० लाहा, कौशाम्बी इन ऐंश्येंट लिटरेचर, मे० आ० सर्वे आ० इ०, संख्या

---

[1] वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, I, 365-66.

[2] बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 172-173.

[3] इस समय यहाँ पर इस प्रकार का कोई दुर्ग नहीं है। लेखक को यह भ्रांति कैसे हुयी, अस्पष्ट है।—अनुवादक

60, महावस्तु, जिल्द, II, पृ० 2, बोधिसत्वावदानकल्पलता, 35 वाँ पल्लव; नार्दर्न बुद्धिस्ट लिटरेचर, रा० ला० मित्र, पृ० 269, सौन्दरनन्दकाव्य प्रथम सर्ग, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, 26-27, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 16-17.

कोसम इनाम तथा कोसम खिराज—ये युगल गाँव यमुना-तट पर मझनपुर से कोई 12 मील दूर दक्षिण मे तथा सरायआकिल से नौ मील दूर पश्चिम में स्थित है। कोसम इनाम किले के पश्चिम मे तथा कोसम खिराज इसके पूर्व मे स्थित है।[1]

कोसिक—यह पर्वत हिमालय के निकट स्थित प्रतीत होता है।[2]

कोसिकी—यह गगा की एक शाखा है।[3] इसे कुशी से समीकृत किया गया है।[4]

कृषाणग्राम—ललितविस्तर मे इसे कही कपिलवस्तु के समीप स्थित बतलाया गया है। कुछ विद्वानो ने इसे उस स्थान से समीकृत किया है जहाँ पर गौतम ने अपना राज्य-परित्याग किया तथा अपनी जटाएँ काटी थी।[5]

कृष्णगिरि—इसे कराकोरम या काला पहाड कहते है।[6] पश्चिम मे यह पर्वत हिन्दूकुश के क्रम मे ही फैला हुआ है। आधुनिक भूगोलशास्त्रियो के अनुसार यह पहले ही बना था और इस कारण मुख्य हिमालय मे पुराना है। यह हर्सीनियन युग का है तथा इसके बनने के पश्चात् इसका अत्यधिक स्तर-भ्रश हुआ है।

क्रुमु—कुमा या काबुल के आगे यह वैदिक नदी सिन्धु की एक पश्चिमी उपनदी है। इसे आधुनिक कुरम से समीकृत किया गया है, जो इशखेद (Ishakhed) के दक्षिण मे सिन्धु से मिलती है। यह सुलेमान पर्वतमाला को वेधती है।[7]

कुभा—सिंधु की पश्चिमी सहायक नदियो मे यह वैदिक नदी सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।[8] कुछ युनानी एव लैटिन इतिहासकारो के मतानुसार यह मुख्य

---

[1] नेविल, इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 262-263.

[2] अपदान, पृ० 381.

[3] जातक, पृ० V, 2.

[4] तु० कौशिकी, देखिए, पीछे।

[5] बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल, एसेज, 41; रा० ला० मित्र, नार्दर्न बुद्धिस्ट लिटरेचर, पृ० 135.

[6] वायु पुराण, अध्याय, 36.

[7] लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 15.

[8] ऋग्वेद, X., 75, 6.

भारत की पश्चिमी सीमा थी। यह आधुनिक काबुल नदी, एरियन की कोफेस (Kophes) तथा प्लिनी की कोफेन (Kophen) के अतिरिक्त और कुछ नही है। स्पष्टत. यह पुराणो मे वर्णित कुहु नदी ही है और इसे टॉलमी की कोआ से समीकृत किया जा सकता है, जिसे इमाओस (Imaos) या हिमवत से निःसृत बतलाया गया है।[1] कुभा नदी सुलेमान पर्वतमाला मे एक घाटी का निर्माण करती है। अटक (सस्कृत, हाटक) के कुछ पहले यह सिधु मे मिलती है तथा प्राग मे इसमे स्वात (एरियन की साओस्तोस, Saostos), सस्कृत सुवास्तु तथा गौरी (एरियन की गैरोइया, Garroia) नामक इसकी दो सहायक नदियो का सयुक्त प्रवाह मिलता है, जिसे हम स्वात की एक उपनदी, आधुनिक पजकोरी से समीकृत करते है। वायु एव कूर्म पुराणो मे इस नदी का उल्लेख प्राप्त होता है (XLV. 95, XLVII 27)।

कुहु—यह कुभा ही है।

कुल्लु—यह महाकाव्यो मे वर्णित कुलूत या कौलूत है। व्यास नदी की ऊपरी घाटी मे स्थित कुल्ली जिला कियु-लु-तो के पूर्णत समरूप है, जिसे युवान-च्वाङ् ने जालधर से उत्तर-पूर्व मे 117 मील या 700 ली दूर पर स्थित बतलाया है (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 162 और आगे)। यहाँ पर अशोक ने एक स्तूप बनवाया था तथा युवान-च्वाङ् के अनुसार यहाँ पर बीस विहार थे। वहाँ पर अब भी बौद्धधर्म के चिन्ह दृष्टिगोचर होते है। विस्तृत विवरण के लिए, आर्क० सर्वे० ऑव० इ० की वार्षिक रिपोर्ट, 1907-8, 261 और आगे देखिए।

कुरुजांगल—सभवत. यह कुरु प्रदेश का जगली क्षेत्र था जो सरस्वती-तट पर काम्यक वन से यमुना के निकट खाण्डव वन तक फैला हुआ था (तु० महाभारत, III, 5.3)। यह कुरुदेश का पूर्वी भाग था तथा इसमे गगा एव उत्तर पचाल के प्रदेश समिलित थे (कुरुक्षेत्र के अतर्गत देखिये)।

कुरुक्षेत्र—महाभारत के अनुसार यह एक पवित्र नगर माना जाता था। (83, 1-8; 203-208)। यहाँ की धूलि से पापियो के पाप मिट जाते थे। जो व्यक्ति सरस्वती के दक्षिण मे एव दृषद्वती के उत्तर मे, कुरुक्षेत्र मे रहते है वे मानो स्वर्ग मे रहते हो। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4.1.172, 176); 4.2.130) मे इसका उल्लेख किया है। योगिनीतत्र (2.1; 2.7, 8) मे इसका वर्णन किया गया है। सौरपुराण (67.12) मे भी इसका वर्णन एक तीर्थ-नगर के रूप मे हुआ है (तु० कूर्म पुराण, पूर्वभाग, 30, 45-48; तु०, पद्म

[1] **टॉलमी, VII. 1. 26.**

पुराण, उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-38) प्राचीन कुरुदेश मे कुरुक्षेत्र या थानेश्वर संमिलित थे। इस क्षेत्र मे सोनपत, आमिन, करनाल और पनीपत समिलित थे और यह उत्तर मे सरस्वती एव दक्षिण में दृषद्वती नदियो के मध्य स्थित था। तैत्तिरीय आरण्यक (VI. 1 1) के अनुसार कुरुक्षेत्र के दक्षिण मे खाण्डव, उत्तर मे तूर्घ्न तथा पश्चिम मे परीण: (एरियन का परेनोस, Parenos) स्थित थे। महाभारत कुरुजनो के साथ ही कुरुक्षेत्र की पृष्ठभूमि मे विकसित हुआ।[1] बुद्ध-युग के सोलह महाजनपदो मे से यह एक सुविख्यात जनपद था। कुरुओ का देश तीन भागो मे विभक्त प्रतीत होता है, कुरुक्षेत्र, कुरु-देश एव कुरु-जागल (महाभारत, आदिपर्व, IX. 4337-40)। कुरुओ के कर्षित क्षेत्र, कुरुक्षेत्र मे यमुना के पश्चिम का सपूर्ण प्रदेश तथा सरस्वती एव दृषद्वती के मध्य की पुण्यभूमि समिलित थी, (महाभारत, वनपर्व, LXXXIII, 5071-78, 7073-76, रामायण, अयोध्याकाण्ड, LXX, 12)। कुरुओ का अनुर्वर प्रदेश कुरुजागल उनके राज्य का पूर्वी भाग था और इसमे गगा एव उत्तरी पचाल के मध्यवर्ती प्रदेश समिलित प्रतीत होते है (रामायण, अयोध्याकाण्ड, LXXII; महाभारत, सभापर्व, XIX. 793-94)। कुरुदेश का यह जगली क्षेत्र काम्यक वन तक फैला हुआ था। गगा-यमुना के मध्यवर्ती क्षेत्र को विशेषत एक पुण्य-क्षेत्र माना गया था, क्योकि इसकी सीमा मे पुण्यसलिल्लात दृषद्वती, सरस्वती एव आपया नामक नदियाँ बहती थी।[2] भागवत पुराण में इसका उल्लेख प्राप्त होता है (I, 10,34; III, 3 12, IX 14, 33, तु० ब्रह्माण्ड पुराण, II, 18, 50)। भगवद्गीता के अनुसार इसे धर्मक्षेत्र कहा जाता था। स्कद पुराण मे भी (अध्याय, I, 19-23)[3] इसे एक पुनीत स्थल बतलाया गया है। कुरुदेश या दिल्ली प्रदेश कौरव-पाण्डवो का युद्ध-स्थल था जिसमे भारत के समस्त राज्य एक या दूसरी ओर थे।[4] महान् धर्मशास्त्रकार मनु ने कुरु तथा अन्य सबधित जनों के देश को

---

[1] कुरुक्षेत्र के वर्णन के लिए द्रष्टव्य, महाभारत, III, 83-4; 9.15; 25, 40; 52, 200; 204-8.

[2] ऐतरेय ब्राह्मण, VII, 30; शतपथ ब्राह्मण, IV. 1.15.13; XI. 5 1.4; XIV. 1.1.2; मैत्रायणी संहिता; II, 1. 4; IV 5-9; जैमिनीय ब्राह्मण III, 126; सांख्यायन श्रौतसूत्र, XV. 16. 11.

[3] चितंग की एक शाखा, अपगा या ओघवती।

[4] कौरवों के विरुद्ध पाण्डवों के महायुद्ध में विभिन्न राज्यों एवं कबीलों के भाग के विवरण के लिए देखिये, ज० रा० ए० सो०, 1908, पृ० 309 और आगे।

ब्रह्मर्षियो का पुनीत देश कहा है जो ब्रह्मावर्त के ठीक बाद रखा जाता था[1] (मनु-संहिता,II, 17-19)। रैप्सन के मतानुसार कुरुदेश पूर्व मे कुरुक्षेत्र की सीमा से भी आगे फैला हुआ था। कुरु-जन निश्चय ही दोआब के उत्तरी भाग या गगा-यमुना के मध्यवर्ती क्षेत्र मे रहते थे जिनके पडोसी पूर्व मे उत्तर-पचाल जन एवं दक्षिण मे , दक्षिण पंचाल जन थे जो शेष दोआब मे प्रयाग मे (इलाहाबाद) गगा-यमुना के सगम के समीप वत्सभूमि तक रहते थे (ऐंश्येंट इडिया, पृ० 165)।

युवान-च्वाङ् के काल मे थानेश्वर वैश्य (बैस) वश की राजधानी थी जिसने दक्षिण पंजाब, हिंदुस्तान तथा पूर्वी राजपूताना (राजस्थान) के कुछ भागो पर राज्य किया था। 648 ई० मे एक चीनी राजदूत थानेश्वर-नरेश हर्षवर्द्धन के पास भेजा गया था। यहाँ आने पर उसने देखा कि सेनापति अर्जुन ने उसके राज्य का अपहरण कर लिया था और तब वह राजवश नष्ट हो गया था। थानेश्वर एक महान् पुण्यक्षेत्र बना रहा, किंतु 1014 ई० मे इसे महमूद गजनी ने ध्वस्त किया और यद्यपि 1043 ई० मे दिल्ली के एक हिंदू राजा ने इसे पुन. जीता परतु शताब्दियों तक यह वीरान पडा रहा।

कुशपुर (कुशभवनपुर)—इसका नामकरण राम के पुत्र कुश के नाम पर हुआ बतलाया जाता है। यह स्थान तीन ओर से गुम्ती (गोमती) नदी से घिरा हुआ था (कनिघम, ए० ज्या० इ०, पृ० 459)।

कुशावती—यह कुशीनारा का एक प्राचीन नाम है जहाँ पर बुद्ध को महापरि-निब्बान प्राप्त हुआ था (जातक, I, 292, V,278, 285, 293, 294, 297)। यह गोरखपुर से 37 मील दूर पूर्व मे, छोटी गण्डक के तट पर आधुनिक कसया के निकट तथा बेतिया के उत्तर पूर्व मे स्थित था (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, 713, 714, ज० रा० ए० सो०, 1913, 152)। विस्तृत विवरण के लिए कुशीनारा के अतर्गत देखिए।

कुशिक—यह गाधिपुर और कान्यकुब्ज (आधुनिक कन्नौज) ही है और इसका वर्णन गोविंदचद्र के कमौली दानपत्र (वि० स० 1184) मे हुआ है (एपि० इ० XXVI जिल्द, II, 68 और आगे)।

कुशीनारा—कुशीनारा मल्लो का एक नगर था (दीघ, II, 165)। बुद्ध के काल मे यह राजगृह, वैशाली या श्रावस्ती की तरह एक प्रथम कोटि का नगर नही था। यह बुद्ध के प्रति आनद के इस कथन से व्यक्त होता है, "तथागत को जगल के बीच इस छोटे कस्बे मे, इस उपनगर मे नही मरना चाहिए।" चीनी

[1] **ब्रह्मावर्त्ततीर्थ—महाभारत,** 83.53.

इसे कियु-शि-न-की-लो कहते है। यहाँ पर कुछ लोग ही रहते थे और यहाँ के उपवन निर्जन एव अनुर्वर थे। इसके पुरद्वार के पूर्वोत्तरी कोण मे अशोक द्वारा बनवाया हुआ एक स्तूप था। यहाँ के ग्राम निर्जन थे।

यहाँ पर चुण्ड का पुराना घर स्थित था जिसने बुद्ध को अपने घर पर आमंत्रित किया था (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 31-32)। कुशीनारा से पावा की दूरी अधिक नही थी। यह इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि बुद्ध अपनी अतिम बीमारी मे जल्दी ही कुशीनारा से पावा गये थे।*

कनिंघम के मतानुसार कुशीनारा को गोरखपुर जिले के पूर्व मे स्थित कसया मे समीकृत किया जा सकता है (ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 493)। इस मत की पुष्टि इस तथ्य से होती है कि इस गाँव के निकट निर्वाण-मदिर के पीछे स्थित स्तूप मे एक ताम्रपत्र मिला है जिस पर 'परिनिर्वाणचैत्य ताम्रपट्ट' उत्कीर्ण है। यह प्रत्यभिज्ञान ठीक प्रतीत होता है । विभिन्न विद्वानो के विभिन्न मत है। विसेट स्मिथ कुशीनारा को नेपाल मे पहाडियो की पहली शृखला के पार स्थित करने को वरीयता देते है (अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 167, पा० टि० 5, ज० रा० ए० सो० 1913, 152)। रिज डैविड्स ने यह मत व्यक्त किया है कि यदि हम चीनी तीर्थयात्रियो के विवरण पर विश्वास करे तब कुशीनारा के मल्लो का प्रदेश, शाक्य प्रदेश के पूर्व मे एव वज्जिगण के उत्तर मे पहाडी ढाल पर स्थित था। कुछ अन्य विद्वान् उनका प्रदेश शाक्यो के दक्षिण मे एव वज्जिगण के पूर्व मे स्थित बतलाते है (बुद्धिस्ट इडिया, पृ० 26)।

दिव्यावदान के अध्ययन (389-94) में यह ज्ञात होता है कि अशोक इस नगर में आया था, जहाँ पर बुद्ध ने परिनिर्वाण प्राप्त किया था। इस विवरण की पुष्टि अशोक के शिलालेखो (आठवे शिलालेख) से होती है। कुशीनारा से राजगृह जाते समय बुद्ध को ककुत्था नदी पार करनी पडी थी। यह वरही नामक एक छोटी सरिता है जो कसया मे आठ मील आगे छोटी गडक मे मिलती है। कुशीनारा के निकट हिरञवती (हिरण्यवती) या छोटी गण्डक[1], जिसके तट पर कुशीनारा के मल्लो का शालवन स्थित था, बडी गडक मे लगभग आठ मील पश्चिम मे गोरखपुर जिले की ओर मुडती है और घाघरा (सरयू) मे मिलती है। जबकि मल्लो

---

*लेखक ने बुद्ध की अंतिम यात्रा का विवरण ठीक नहीं दिया है। बुद्ध पावा। में चुण्ड कुमारपुत्त के यहाँ सूकर-माद्दव खाने के बाद पावा से कुशीनारा गये न कि कुशीनगर से पावा। द्रष्टव्य दीघ निकाय का महापरिनिब्बान सुत्तांत।

[1] दीघ निकाय, II, 137.

का संविधान राजतन्त्रात्मक था, उस समय कुशावती मल्लों की राजधानी के रूप मे विख्यात थी (जातक, V, पृ० 278 और आगे)। यह वैभवपूर्ण, समृद्ध एव जन-सकुल थी तथा यहाँ भिक्षा सुगमता से प्राप्त होती थी (दीघ II, 170)। कालांतर मे बुद्ध के काल मे, जब यहाँ राजतन्त्र के स्थान पर गणतन्त्रात्मक शासन-व्यवस्था हो गयी, उस समय इस नगर का नाम कुशीनारा रख दिया गया। बुद्ध ने स्वय बतलाया है कि कुशीनारा प्राचीन कुशावती थी। यह राजधानी थी जो पूर्व मे पश्चिम मे 12 योजन लबी एव उत्तर से दक्षिण मे 7 योजन चौडी थी (अयम् कुशीनारा कुशावती नाम राजधानी अहोऽसि—दीघ, II, 146-47,)। बुद्ध ने कुशावती के प्राचीन वैभव का वर्णन किया है जिसमे सात प्राकार, चार तोरण और खजूर-वृक्षों के सात निकुज थे (दीघ० 170-171)। दिव्यावदान के अनुसार (पृ० 227) यह महासुदर्शन नामक नगर था।

कुशीनारा के मल्लो का अपना सथागार था जहाँ पर राजनीतिक, या धार्मिक सभी विषयो पर विवाद होते थे। दीघनिकाय के महापरिनिब्बान सुत्तान्त मे कुशीनारा के मल्लो मे पुरिष नामक एक अधिकारी वर्ग का उल्लेख प्राप्त होता है, जो रिज डैविड्स के मतानुसार अधीनस्थ कर्मचारियो का एक वर्ग था (बुद्धिस्ट इडिया, पृ० 21)। कुशीनारा के पूर्व मे मल्लो का मकुटबधन नामक एक मदिर था जहाँ बुद्ध का शव अतिम सस्कार के लिए लाया गया था। जब बुद्ध को उनकी अतिम वेला आसन्न प्रतीत हुई तब उन्होने कुशीनारा के मल्लो के पास आनद से एक सदेश भेजा जो उस समय अपने सथागार मे जन-कार्यों पर विचार करने के लिए एकत्र हुए थे। समाचार प्राप्त करने के पश्चात् वे तुरत शालवन की ओर गये जहाँ पर बुद्ध उस समय थे। बुद्ध के निधन के पश्चात् उनके उपयुक्त उनके पार्थिव अवशेषो का सम्मान करने के उपायो पर विचार करने के लिए वे अपने सथागार मे एकत्र हुए थे। उन्होने तथागत की अस्थियो को किसी चक्रवर्ती राजा के अवशेषो की भाँति ही माना। उन्होने अपने भाग मे आये हुए बुद्ध के अवशेषो पर तब एक स्तूप का निर्माण करवाया तथा एक भोज दिया।

लक्ष्मन झूला—हृषीकेश के निकट स्थित यह रमणीक स्थल अपने पर्वतीय दृश्य के लिए प्रसिद्ध है। केदारनाथ एव बद्रीनाथ के लिए प्रस्थान करने के पूर्व तीर्थयात्री यहाँ पर रुकते है। इस स्थान का नामकरण झूलते हुए पुल के आधार पर पडा है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 21)।

लदख—बृहत्तर हिमालय के समानातर लद्दख एक उत्तुग पर्वत श्रेणी है और यह मानसरोवर के पूर्व में स्थित है। कोई 50 मील चौडी एक घाटी इसे हिमालय पर्वतमाला से पृथक् करती है (लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 7)।

लार—उत्तरप्रदेश के गोरखपुर जिले मे स्थित यह एक गाँव है जहाँ पर कन्नौज-नरेश गोविंदचद्र के ताम्रपत्र प्राप्त हुए थे (एपि० इ०, VII, 98 और आगे)।

लोहावर—ऐसा कहा जाता है कि इस नगर की स्थापना रामपुत्र लव ने की थी। टालेमी ने इसे लबोकला (Labokla) कहा है (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 226-227)।

लुम्बिनी ग्राम—अशोक के रुम्मिनिदेई-अभिलेख में लुमिनिगाम का वर्णन प्राप्त होता है जो अब रुम्मिनिदेई या रूपदेई नामक छोटे से गॉव के नाम से विख्यात है जिसका नाम रुम्मिनिदेई के मदिर के आधार पर पडा है। रुम्मिनिदेई कपिल-वस्तु से केवल दस मील दूर पूर्व मे, भगवानपुर से दो मील उत्तर मे तथा पडॅरिया से कोई एक मील दूर उत्तर मे स्थित है। चीनी यात्री फा-ह्यान एव युवान-च्वाङ् लुम्बिनी वन आये थे। फा-ह्यान के अनुसार यह कपिलवस्तु से पचास ली (9 या 10 मील) दूर, पूर्व मे स्थित था। युवान-च्वाङ् ने यहाँ पर अशोक द्वारा स्थापित एक स्तभ का उल्लेख किया है जिसके सिर पर घोडे की एक मूर्ति थी। बाद मे यह स्तभ किसी ईर्ष्यालु व्याल द्वारा बज्रपात किये जाने से बीच मे खडित हो कर धरती पर पडा रहा। पी० सी० मुकर्जी ने अपने 'ऐंटीक्वीटीज इन द तराई' नामक ग्रन्थ मे यह बतलाया है कि अशोक के रुम्मिनिदेई स्तभ के विद्यमान अवशेष चीनी तीर्थ-यात्री के विवरण से साम्य रखते है। लुम्बिनी वन को उस स्थान से जहाँ रुम्मिनिदेई अभिलेख प्राप्त हुआ था, समीकृत करने के लिए और साक्ष्य है। युवान-च्वाङ् ने बनाया है कि उक्त अशोक स्तभ के समीप दक्षिण-पूर्व की ओर बहने वाली एक छोटी सरिता थी, जिसे वहाँ के लोग तिलौर (तेल की नदी) कहते थे।' उक्त अनुश्रुति वहाँ अब भी प्रचलित है और इस नदी को अब तिल्लार-नदी कहते है, जो तेलीर नदी या तेली की नदी का विकृत स्वरूप है। रुम्मिनिदेई मे अपेक्षाकृत बाद का बना हुआ एक मदिर भी है जिसमे बुद्ध के जन्म को प्रस्तुत करते हुए एक चित्रित शिला-पट्ट है, जो उक्त स्थान के लुम्बिनीवन होने के विषय मे एक और प्रमाण है। अशोक के रुम्मिनिदेई स्तभ लेख मे यह बताया गया है कि अपने राज्याभिषेक के बीसवे वर्ष मे राजा अशोक स्वय वहाँ गया था और उसने इस स्थान की पूजा की थी, क्योकि बुद्ध यहाँ पैदा हुए थे। उसने लुम्बिनी ग्राम को करो से मुक्त कर दिया था और उसे केवल 1।8 भाग देना पडता था (का० इ० इ०, 264-265)।

निग्लीव-स्तभ लेख मे (जो उत्तर-पूर्व रेलवे के उसका बाजार स्टेशन के उत्तर-पश्चिम मे।38 मील दूर स्थित है) मे यह कहा गया है कि यह स्तभ लेख कोनागमन स्तूप के समीप बनवाया गया था परतु अब यह उस स्थान पर नही है। बुद्ध-

चरितकाव्य (I, श्लोक 23; XVII श्लोक, 27) मे लुम्बिनीवन को कपिलवस्तु मे स्थित बतलाया गया है, जो बुद्ध का जन्म-स्थान था । लुम्बिनीवन की स्थिति के विषय में भिन्न-भिन्न मतो के लिए देखिए, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म , पृ० 29-30; लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 185 और आगे।

मदावर—पश्चिमी रुहेलखड मे बिजनौर के निकट यह एक बडा कस्बा है। कुछ विद्वानो ने इसे मदीपुर या मो-ती-पु-लो से समीकृत किया है। युवान-च्वाड् के अनुसार यह 1,000 मील विस्तृत था। विवियेन डी सेंट मार्टिन के अनुसार यहाँ के निवासी मेगस्थनीज द्वारा वर्णित मथाए (Mathae) थे (कनिघम, एं० ज्यॉ० इ०, पृ० 399 और आगे)।

मधुबन—यह उत्तरप्रदेश के वाराणसी मडल मे आजमगढ जिले के नाथूपुर परगने मे स्थित है जहाँ पर हर्ष का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, VII, 155 और आगे)।

मधुरवन—हुविष्क के मथुरा बौद्ध प्रतिमा-अभिलेख मे मधुरवन नाम का उल्लेख है। कुछ विद्वानो ने इसे मधुवन या मथुरा (वर्तमान मथुरा) से समीकृत किया है जिसका वर्णन ल्युडर्स की तालिका (सख्या, 288, 291) मे हुआ है। ल्युडर्स (सख्या, 38) मे मथुरवनक नामक मथुरा के एक निकटवर्ती क्षेत्र का उल्लेख प्राप्त होता है।

मद्रदेश—इलाहाबाद स्तभ लेख मे वर्णित मद्र-देश स्थूल रूप से आधुनिक स्यालकोट और रावी एव चेनाब नदियो के मध्य स्थित उसके समीपवर्ती देशो को व्यजित करता है। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4, 1, 176; 4, 2, 131, 4, 2, 108) मे मद्र का उल्लेख किया है। पतजलि ने भी अपने महाभाष्य (1, 1, 8, पृ० 345, 1, 3, 2, पृ० 619, 2, 1, 2, पृ० 40, 4, 2, 108) मे इसका वर्णन किया है। इसकी राजधानी शाकल[1] थी, जिसे स्यालकोट से समीकृत किया जाता है। शाकल (पालि मे सागल[2]) एक बडा व्यापारिक केन्द्र था। यह एक पहाडी एव सुसिचित रमणीक प्रदेश मे स्थित था। यहाँ पर विविध प्रकार की सैकडो धर्मशालाएँ थी। युवान-च्वाड् के मतानुसार प्राचीन शाकल (शे-की-लो, (She-Ki-lo) नगर कोई 20 ली विस्तृत था। यहाँ पर एक बिहार था जिसमे हीनयान सप्रदाय के लगभग 100 भिक्षु रहा करते थे और इस विहार के पश्चिमोत्तर मे कोई 200 फीट ऊँचा एक स्तूप था, जिसे अशोक ने बनवाया

[1] **महाभारत, II, 1196; VIII. 2033.**

[2] **मिलिन्दपञ्ह, ट्रेंक्नर संस्करण, पृ० 1-2.**

था (बील, रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, पृ० 166 और आगे)। इस देश के निवासी वैदिकयुगीन एक प्राचीन क्षत्रिय जाति के थे। मद्रगण योद्धाओ का एक निगम था और उनका स्तर राजाओ जैसा था। 326 ई० पू० मे शाकल पर सिकदर महान् का आधिपत्य हो गया। 78 ई० के लगभग, एक सशक्त यूनानी राजा मेनेन्डर (पालि, मिलिन्द) ने सागल या शाकल पर शासन किया था। मिलिंदपञ्हो के अनुसार इसने बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि मेनेन्डर के शासनकाल के पूर्व ही, शाकल मे बौद्ध धर्म का प्रभुत्व हो गया था (द्रष्टव्य, श्रीमती रिज डैविड्स, साम्स ऑव द सिस्टर्स, पृ० 48, साम्स ऑव द ब्रेदेरेन, पृ० 359)। चौथी शताब्दी ई० मे मद्रगण समुद्रगुप्त के करद थे। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, अध्याय VII)।

महावन—यह कपिलवत्थु मे ही था (सयुक्त, I, पृ० 26)। बुद्ध एक बार हिमालय तक फैले हुए महावन के कूटागार-सथागार मे रुके थे (विनय टेक्स्ट्स, *III, 321 और आगे*)।

मही—पालि साहित्य मे वर्णित पाच बड़ी नदियो मे से यह एक है (अगुत्तर IV 101, मिलिंदपञ्ह, पृ० 114, सुत्तनिपात, पृ० 3)। यह गडक की सहायक नदी है।

महोबा—उत्तरप्रदेश के हमीरपुर जिले मे स्थित यह प्राचीन महोत्सवपुर है। कनिघम ने 1843 ई० मे यहाँ से वि० स० 1240 के परमर्दिन का एक शिलालेख प्राप्त किया था। इसमे परमर्दिन की प्रशस्ति की गयी है, तथा अग, वग और कलिंग मे उसके युद्धो का वर्णन किया गया है। इस प्रशस्ति की रचना वास्तव्य वश के जयपाल ने की थी। बाद मे इस अभिलेख को वा-वि० मिराशी ने सपादित किया है (भारत कौमुदी, भाग I, पृ० 433 और आगे)।

मैनाकगिरि—योगिनीतत्र (2, 4, पृ० 128-129) में इस पहाड़ी का उल्लेख प्राप्त होता है। बाण की कादम्बरी (पृ० 86) मे भी इसका वर्णन किया गया है। गगा से व्यास नदी तक फैली हुई यह शिवालिक पर्वतमाला ही है। प्रमुख सिवालिक पर्वतश्रेणी व्यास से गंगा तक, कोई 200 मील तक फैली हुई है और इसे प्राचीन भूगोलवेत्ता मैनाकपर्वत कहते थे। उत्तरप्रदेश मे शिवालिक पहाडियों को चुरिया और डुंडवा पर्वतमाला कहते है और ये गगा एव यमुना के मध्यवर्ती क्षेत्र मे स्थित है। ये पहाडियाँ सहसा मैदानो से उठती है और उत्तर की ओर देहरादून की घाटी मे ढलती है (लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 3, 4,7)।

मनसाकट—कोशल मे स्थित इस ब्राह्मण गाँव में पाँच सौ भिक्षुओ के साथ

बुद्ध गये थे (दीघ, I, पृ० 235)। इसके उत्तर मे अचिरावती नदी बहती थी। इस नदी के तट पर एक आम्रवन था।

मदाकिनी—योगिनीतत्र मे इस नदी का एक बार उल्लेख किया गया है (1 15, पृ० 87-89)। यह पश्चिमी काली (काली गगा) ही है जो गढवाल मे स्थित केदार पर्वत से निकलती है। यह अलकनदा की एक सहायक नदी है (अगुत्तरनिकाय, IV, 101)। कनिघम ने इसे चित्रकूट पर्वत के पार्श्व से प्रवाहित होनेवाली बुदेलखड की पैसुन्दी नदी की सहायक—मदाकिन से समीकृत किया है (कनिघम, आर्क० सं० इ०, XXI, 11)।

मणिकर्ण—यह एक तीर्थस्थल है जिसे मणिकरन भी कहा जाता है और जो कुलू घाटी मे ब्यास नदी की सहायक नदी पार्वती के तट पर स्थित है (ज० ए० सो० ब०, 1902, पृ० 36)।

मणिपर्वत—यह हिमालय क्षेत्र मे स्थित है (जातक, II, पृ० 92)।

मनकुवर—कुमारगुप्त के मनकुवर पाषाण-प्रतिमा अभिलेख मे वर्णित यह छोटा गाँव, इलाहाबाद जिले की करछना तहसील के अरैल परगने मे स्थित अरैल मे दक्षिण-पश्चिम मे कोई नौ मील दूर पर यमुना के दाहिने तट पर स्थित है (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

मशकावती—यूनानी लेखको के अनुसार यह 'अस्सकेनोई (Assakenoi) की राजधानी थी। यह अस्सकेनोस नामक राजा की राजधानी थी। इसे सिकदर की सेना ने ध्वस्त कर दिया था। जब इस नगर ने आत्मसमर्पण कर दिया तब भृतिभोगी सेना की एक विशाल टुकड़ी सिकदर की सेना मे सम्मिलित होने के लिए सहमत हो गयी। उसकी सहायता न करने के इच्छुक भृतिभोगी सैनिको ने गुप्त रूप से भाग निकलने की योजना बनायी। इसके कारण मकदूनिया के निवासियो ने उनमे मे किसी को जीवित नही छोडा (कै० हि० इ०, भाग, I, पृ० 353, लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, I, पृ०, 2, 3)।

मथुरा—मथुरा से प्राप्त एक बौद्ध वेदिका स्तभ लेख में धनभूति (?) और वात्सी के पुत्र वाघपाल (?) धनभूति का उल्लेख सर्वबुद्धो की पूजा के लिए रत्न गृह की वेदिका एव तोरण के दाता के रूप मे किया गया है (ल्युडर्स की तालिका, सं० 125)। तोरण-युक्त इस वेदिका का समर्पण उसने अपने माता-पिता तथा बौद्ध सप्रदाय के चारो वर्गों, भिक्षु, भिक्षुणी, उपासक एव उपासिको के साथ किया था। राजा धनभूति के पुत्र राजकुमार वाधपाल का नाम भरहुत की एक वेदिका दाता के रूप मे उल्लिखित है (वही, सख्या 869)। वाधपाल के पिता आगरजु (अगारद्युत) तथा वात्सी के पुत्र एव राजा विश्वदेव के प्रपौत्र राजा धनभूति का

नाम प्रधानतः भरहुत-स्तूप के अलकृत तोरणो के दाता के रूप मे उल्लिखित है (वही स० 687-88, तु० स० 882)। भरहुत-तोरण के अभिलेखो मे यह स्पष्टतया उल्लिखित है कि राजा धनभूति ने शुगो के राज्यकाल मे (सुगन रजे) इन तोरणो का निर्माण करवाया था (बरुआ ऐड सिन्हा, भरहुत इन्स्क्रिप्शस, पृ० 1 और आगे)। यदि भरहुत-अभिलेख मे वर्णित राजा धनभूति के पुत्र, राजकुमार वाधपाल को मथुरा से प्राप्त बौद्ध-वेदी अभिलेख के धनभूति के पुत्र वाधपाल (?) धनभूति से समीकृत किया जाय जिसकी अधिक सभावना प्रतीत होती है, तब यह सोचना अपरिहार्य हो जाता है कि मथुरा उस समय शुगो के राज्य के ही किसी निकटवर्ती प्रदेश मे समिलित था। इस अभिलेख के वर्तमान अश से यह निष्कर्ष कि राजा की उपाधि वाधपाल (?) धनभूति के नाम के साथ भी जुडी हुई थी नही निकाला जा सकता है। बाधपाल (?) धनभूति के नाम मे परिचित वाधपाल अवश्य ही कोई राजा रहा होगा, अन्यथा समर्पण मे उसे उसके माता-पिता (अनुमानत· वयोवृद्ध) तथा बौद्ध सप्रदाय के सभी चारो वर्गो के विशाल अनुयायिवर्ग के साथ सबद्ध करना तर्कसगत न होता। राजकुमार वाधपाल का भरहुत-अभिलेख अशोकयुगीन प्राकृत मे लिखा गया है जब कि वाधपाल (?) धनभूति के मथुरा-अभिलेख की भाषा अशोककालीन प्राकृत से कुषाणकालीन अभिलेखो मे प्रयुक्त (प्रकारात्मक) मिश्रित-सस्कृत के मध्य की सक्रमणकालीन भाषा है। इसके अक्षर भी अशोक तथा कुषाणकालीन ब्राह्मी के मध्य के है। दोनो अभिलेखो के बीच के समय का अतर इतना अधिक नही है कि उससे उनकी भाषाओ मे इतना स्पष्ट परिवर्तन लक्षित किया जा सके। इस अतर का समाधान यह मान कर सुगमतापूर्वक किया जा सकता है कि यद्यपि भरहुत और मथुरा दो आसन्न क्षेत्रो मे स्थित थे, किंतु दोनो ही थोडे पृथक् भाषाई क्षेत्रो मे पडते थे। इस क्षेत्र मे किसी अन्य राजा या राजवश के शासन का बिल्कुल ही उल्लेख न होने मे यह मानना उचित प्रतीत होता है कि वाधपाल (?) धनभूति और उसके पूर्वज मथुरा के स्थानीय शासक थे और वहाँ पर वे कुषाण-सत्ता के उत्कर्ष के पूर्व ही राज्य करते थे।

मथुरा शूरसेन देश की राजधानी थी। इसकी स्थापना राम के भाई शत्रुघ्न ने मधुवन मे यादव लवन को मार कर और जगल को काट कर की थी (पार्जिटर, ऐंश्येंट इडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन, पृ० 170)। यहाँ पर बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य महाकच्चायन, अशोक के पथप्रदर्शक उपगुप्त, वसुबन्धु के एक शिष्य गुणप्रभ,[1]

[1] अंगु, I, 67; वि० स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया, पृ० 199; बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता, 72वाँ पल्लव; बील, रिकार्डस् ऑव द वेस्टर्न, वर्ल्ड I, पृ० 191, टिप्पणी।

ध्रुव एव प्रसिद्ध नगरवधू वासवदत्ता रहा करती थी। पाणिनि (IV 2 82) तथा यूनानी और चीनी तीर्थयात्री इस नगर से परिचित थे। पतजलि ने अपने महाभाष्य मे इसका वर्णन किया है (I, 1 2, पृ० 53, 56, 1. 3 1, पृ० 588-589, 2 4. 1, पृ० 223, 1 1 8. , पृ० 348)। योगिनीतत्र (2 2 120) मे भी इसका उल्लेख है। वैदिक साहित्य में मथुरा का उल्लेख नही किया गया है। यह नगर यमुना-तट पर स्थित है और उत्तरप्रदेश के आगरा मडल मे स्थित है। यह कौशाम्बी के ठीक उत्तर-पश्चिम मे 217 मील दूर स्थित है। मथुरा और पाटलिपुत्र के मध्य नावो का एक पुल था। इस शहर को मधुपुरी भी कहा जाता था जिसे आधुनिक मथुरा नगर से 5 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित वर्तमान महोली से समीकृत किया जाता है। यूनानी लोग इस नगर के मेथोरा (Methora) और मदूरा (Madoura) (देवताओं का नगर) नामो से परिचित थे। चीनी तीर्थयात्री फा-ह्यान ने इसे मा-ताऊ-लो (Ma-t'aou-lo) (मयूरपक्षी का नगर) कहा है (ट्रावेल्स ऑव फा-ह्यान, पृ० 42)। युवान च्वाङ ने इसे मो-तू-लो (Mo-t'u-lo) कहा है (वाटर्स ऑन युवान च्वाङ्, I. 301)। एरियन ने अपनी पुस्तक इडिका (VIII) मे मेगस्थनीज के आधार पर इस शहर को शूरसेनो की राजधानी बताया है। टालेमी ने भी इसका वर्णन किया है (VII 1 50)। जैन लोग इसे सौरि-पुर या सूर्यपुर कहते थे। मथुरा एक धनी, प्रगतिशील और घनी आबादी वाला नगर था। यहाँ पर अनेक समृद्ध और बडे व्यापारी रहते थे। मथुरा के राजा यादव वश के थे। मथुरा वैष्णव सप्रदाय का केंद्र था। आधुनिक वैष्णव मत का जनक, भागवतधर्म भी यही प्रतिपादित किया गया था। कई शताब्दियो तक बौद्ध मत मथुरा मे प्रबल था। इस नगर मे दूसरी शताब्दी ई० पू० के मध्य से जैन धर्म की गहरी जडे जम गई।

प्लिनी (नेचुरल हिस्ट्री, VI 19) ने यमुना को जोमेनीज (Jomanes) कहा है जो मेथोरा और क्राइसोबारा[1] नगरो के बीच पलीबोथ्री (Palibothri) होती हुई गगा मे मिलती है। लास्सेन ने क्राइसोबारा (Chrysobara) का अनुलेखन कृष्णपुर के रूप मे किया है।[2] वह इसे आगरा मे स्थित बतलाते है। कनिघम ने इसे मथुरा के केशवपुर मुहल्ला से समीकृत किया है।[3] एस० एन०

---

[1] मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टालमी, एस० एन० मजूमदार सस्करण, पृ० 98'.

[2] इंडिशे आल्टर्टुम्स्कुंडे, I, पृ० 127, टिप्पणी 3.

[3] आर्क० सर्वे० ऑव इंडिया की रिपोर्ट, XX, पृ० 45.

मजुमदार के अनुसार इसे यमुना के बांये तट पर तथा मथुरा से पाँच मील दक्षिण, दक्षिण-पूर्व मे स्थित गोकुल से समीकृत किया जा सकता है।[1] यूनानी लेखको के अनुसार मेथोरा (मथुरा) आगरे से 35 मील पहले यमुना तट पर स्थित है। यह नगर इंद्रप्रस्थ के दक्षिण मे स्थित था।[2] श्रावस्ती से मथुरा का पथ वेरज नामक एक महत्त्वपूर्ण स्थान से हो कर गुजरता था।[3] मथुरा यमुना के दाहिने तट पर इन्द्रप्रस्थ और कौशाम्बी की दूरी के अर्धांश पर स्थित था। यथार्थतः यह उत्तर-मथुरा[4] थी, जिसे आधुनिक मथुरा शहर से पाँच मील दूर दक्षिण-पश्चिम मे स्थित महोली से समीकृत किया जाता है। गगातट-पर स्थित सकिसा (सस्कृत, सकाश्य)-से उत्तरी मथुरा की दूरी केवल चार योजन[5] बतलाई गई है। वर्तमान मथुरा अपने प्राचीन स्थल पर नही है। नदी के कटाव के कारण यह और उत्तर मे बसी है।

फा-ह्यान ने मथुरा मे भिक्षुओ से भरे हुए अनेक विहार देखे थे।[6] तब इस नगर मे बौद्धमत विकासशील था। युवान-च्वाङ् ने इसे 5,000 ली से भी अधिक विस्तृत और इसकी राजधानी की परिधि लगभग 20 ली बतलायी है। यहाँ की भूमि बडी उर्वर थी और कृषि मुख्य उद्यम था। इस प्रदेश मे धारीदार श्रेष्ठ सूती कपडे तथा सोना बनते थे। यहाँ की जलवायु गरम थी। यहाँ के निवासियों के आचरण मधुर और प्रथाएँ शालीन थी। यहां देवमंदिर और बौद्ध-विहार थे तथा विभिन्न बौद्धेत्तर सप्रदायो के व्रतनिष्ठ अनुयायी यहाँ पर अव्यवस्थित रूप से रहते थे।[7] यहाँ पर अशोक द्वारा निर्मित तीन स्तूप भी स्थित थे।

मथुरा की कुछ प्रतिकूल अवस्थाएँ थी। यहाँ की सडके विषम (विषमा), धूलयुक्त (बहुरजा), भयकर कुत्तो (चण्डसुनरवा), वन्य पशुओ तथा राक्षसो

---

[1] कनिंघम, एं० ज्यॉ० इं०, एस० एन० मजुमदार, संस्करण, पृ० 707.

[2] महाभारत, सभापर्व, XXX. 1105-6.

[3] मललसेकर डिक्शनरी ऑव पालि प्रापर नेम्स, II, पृ० 930.

[4] उत्तर भारत की मथुरा दक्षिण पाण्ड्यों की राजधानी, दक्षिण मथुरा (आधुनिक मदुरा) से पृथक है।

[5] कात्यायन, पालि ग्रामर, भाग III, अध्याय I.

[6] लेग्गे, फा-ह्यान, पृ० 42.

[7] वाटर्स, यॉन युवान्-च्वाङ्, I. 301.

(वालायक्खा)[1] से युक्त थी और भिक्षा भी सुलभ नही थी (दुल्लभपिण्डा)[2]। वृष्णियों और अन्धकों के आदि-स्थान मथुरा पर राक्षसों ने आक्रमण किया था।[3] वृष्णियो और अन्धको ने भयभीत होकर मथुरा को त्याग दिया और द्वारावती मे अपनी राजधानी स्थापित की।[4] मगध-नरेश जरासध ने एक बडी सेना के साथ इसको घेर लिया था। अपने महाप्रस्थान के समय युधिष्ठिर ने वज्रनाभ को मथुरा के राजसिहासन पर अधिष्ठित किया था।[5] गुप्तवंश के उत्कर्ष के पूर्व यहाँ पर सात नाग-नरेश राज्य कर रहे थे।[6] शत्रुघ्न ने सुवाहु और शूरसेन नामक अपने दो पुत्रो के साथ इस नगर पर राज्य किया था। उग्रसेन और कस मथुरा के राजा थे जिस पर अन्धको के उत्तराधिकारी शासन करते थे।[7] पार्जिटर का यह सुझाव कि सुदास के शासन के कुछ वर्षो पूर्व शूरसेन और मथुरा के प्रदेशो पर राम के भाई शत्रुघ्न की विजय के फलस्वरूप कुछ वशिष्ठों को दूसरे राज्यो मे जाना पडा होगा।[8] सात्वत भीम ने शत्रुघ्न के पुत्रो को मथुरा से निकाला और तब उसने तथा उसके उत्तराधिकारियो ने वहाँ शासन किया।[9] शत्रुघ्न ने यमुना के पश्चिम मे स्थित सात्वत यादवो पर आक्रमण करने और माधव लवन को मारने के पश्चात् शूरसेन नाम से विश्रुत प्रदेश को मथुरा की राजधानी बनाया। अन्धको ने मथुरा मे शासन किया जो यादवो की प्रमुख राजधानी थी।[10] मगध-नरेश जरासध ने अपनी सत्ता के चरमोत्कर्ष काल मे मथुरा तक और उसके समीपवर्ती प्रदेशों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया, जहाँ के यादव-नरेश कस ने अपनी

---

[1] हेयर ने इसे festıal yakkhas अनूदित किया है। द बुक ऑव द ग्रेजुअल सेयिंग्स, जिल्द III, पृ० 188 किन्तु 'वाला' शब्द का तात्पर्य Boa conscrictors (एक प्रकार का सांप) और अन्य वन्य पशुओं से है।

[2] अंगुत्तर निकाय, III, 256.

[3] ब्रह्मपुराण, अध्याय XIV.

[4] हरिवश, अध्याय, 37.

[5] स्कन्द पुराण, विष्णुखड।

[6] वायु पुराण, अध्याय 99.

[7] वायु पुराण, 88, 185-86; ब्रह्माण्ड पुराण, III, 63, 186-87; रामायण VII, 62-6; विष्णु पुराण, IV, 4, 46; भागवत पुराण, IX 11, 14.

[8] पार्जिटर, ऍंश्येंट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडीशन, पृ० 171.

[9] वही, पृ० 211.

[10] वही, पृ० 279.

दो पुत्रियो का विवाह उससे कर दिया और उसे अपना अधिराट् माना था।

महाभारत एव पुराणो के अनुसार मथुरा का राजवश यदु अथवा यादवो का था। यादव–जन विविध कुलो मे विभक्त थे।[1]

बुद्धकाल में मथुरा के एक राजा की उपाधि अवन्तीपुत्र थी। अतएव, वह मातृ-पक्ष से उज्जयिनी के राजवश से सबधित था। दीपवस से हमे यह ज्ञात होता है कि राजा साधीन के पुत्र एव पौत्र सर्वश्रेष्ठ नगरी मधुरा या मथुरा के विशाल राज्य पर शासन करते थे[2]। एक जैन विवरण के अनुसार सौर्यपुर (मथुरा) नगर में वासुदेव नामक एक शक्तिशाली राजा था।[3]

समुद्रगुप्त से पराजित होने के पूर्व, मथुरा मे नाग एव यौधेय शासन करते थे।[4] पंजाब और काबुल नरेश मेनेन्डर ने भी इस पर अधिकार किया था।[5] मथुरा के हिंदू नरेश मदा के लिए हगान, हगामश, राजुबुल तथा अन्य शक क्षत्रपो द्वारा अपदस्थ किए गए थे जो सभवत. प्रथम शताब्दी ई० या इसके निकट ही शासन करते थे।[6] दूसरी शताब्दी ई० पू० मे मथुरा कुषाण-नरेश हुविष्क के अधीन थी। यह तथ्य भव्य बौद्ध विहार के साक्ष्य से पुष्ट होता है जिस पर उसका नाम अकित है।[7] प्रथम शताब्दी ई० पू० मे मथुरा प्रदेश देशी राजाओ से छिनकर विदेशी (शक) सत्ता के हाथ मे चला गया। एक यूनानी राजा, कलिंग-नरेश खारवेल[8]

---

[1] महाभारत, I, 94, 3725-39.

[2] विष्णु पुराण, IV 13, 1; वायु पुराण, 96, 1-2.

[3] ओल्डेनबर्ग सस्करण, पृ० 27; तु० एक्सटेंडेड महावस, मललसेकर संस्करण' पा० टे० सो०, पृ० 43.

[4] विष्णु पुराण (V 21) के अनुसार कस की मृत्यु के पश्चात् कृष्ण ने मथुरा के सिंहासन पर उग्रसेन को अधिष्ठित किया था।

[5] रायचौधरी, पो० हि० ए० इं० चतुर्थ सस्करण, पृ० 391.

[6] वि० स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 210.

[7] वही, पृ० 241, पाद टिप्पणी, 1.

[8] वि० स्मिथ अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया, चतुर्थ संस्करण, पृ० 286-87; तु० कनिंघम, आर्क० सर्वे० रिपोर्ट I, पृ० 238.

[9] स्टेन कोनो ने इसे दिमित पढ़ा है और डिमिट्रियस से समीकृत किया है, किन्तु खारवेल के अभिलेख में यूनानी नरेश का पूरा नाम नहीं पढ़ा जा सकता है।

के संभावित प्रत्याक्रमण की आशका से अपनी सेना सहित मथुरा लौट आया था जब कि खारवेल राजगृह (राजगृह) पर घेरा डाले हुए था (ज० बि० उ० रि० सो० XIII. 236)। योनो या बाख्त्री-योनों ने भारत मे अपने राज्य स्थापित करते समय मथुरा पर भी अपनी सत्ता स्थापित की थी।[1] जिस समय मेगस्थनीज़ ने शूरसेनो के विषय मे लिखा था, उस समय उनका देश अवश्यमेव मौर्य-साम्राज्य मे सम्मिलित रहा होगा तथा मौर्यों के पश्चात् उनकी राजधानी मथुरा पर बाख्त्री-यवनो एव कुषाणो का अधिकार हो गया था। मथुरा शुग-साम्राज्य मे भी सम्मिलित था या नही, यह एक विवादास्पद विषय है।

मथुरा वैष्णव-सप्रदाय का केंद्र था। शक-कुषाणकाल मे मथुरा भागवत धर्म का गढ नही रह गया था।[2] मथुरा से प्राप्त लघु नाग-प्रतिमा अभिलेख से यह पूर्णत सिद्ध होता है कि मथुरा मे नागपूजा प्रचलित थी जो कालिय नाग एव कृष्ण द्वारा उसके दमन की कहानी के सदर्भ मे महत्वपूर्ण है।[3] वृन्दावन मे दोल्लीला-समारोह मे सम्मिलित होने के पश्चात् अक्रूर के साथ श्री कृष्ण यहाँ आये थे। कृष्ण ने यहाँ पर एक धोबी की हत्या की थी तथा सुदामा नामक किसी मालाकार को वरदान एव त्रिवक्रा नामक एक कुब्जा को दिव्य सौदर्य दिया था। अपने एव अपने भाई बलराम को वस्त्र पहनाने के कारण एक बुनकर को पुरस्कृत किया था (भागवत पुराण, स्कन्ध X, अध्याय, 41-42) तथा इद्रधनुष भग किया था। उन्होने कस के हाथी एव अत मे मथुरा के अत्याचारी राजा कस का वध किया था। श्री कृष्ण के जन्मस्थल मथुरा को वैष्णवमत का भी जन्मस्थान माना जाता है। मथुरा मे कई शताब्दियो तक बौद्धधर्म का भी अस्तित्व था। बुद्ध के एक शिष्य महाकच्चायन ने यहाँ पर जाति विषयक एक प्रवचन दिया था।[4] अशोक के गुरु उपगुप्त को, जब वह मथुरा मे थे, नटवट-विहार मे आमत्रित किया गया था। बौद्धधर्म के इतिहास मे मथुरा के उपगुप्त-विहार का बहुत महत्त्व है क्योकि इसी विहार मे उन्होने अनेक लोगो को बौद्ध धर्म में दीक्षित करने मे सफलता प्राप्त की थी।[5] इस नगर मे जैन मत की स्थिति सुदृढ थी। विविधतीर्थकल्प (पृ० 50 और आगे) के अनुसार दो ऋषियों द्वारा सिद्धि प्राप्त किये जाने के कारण मथुरा को सिद्धक्षेत्र

---

[1] तु० खारवेल का हाथीगुंफा का अभिलेख, मधुरं अपायतो यवनराजा।
[2] रायचौधरी, अर्ली हिस्ट्री ऑव द वैष्णव सेक्ट, पृ० 99.
[3] वही, पृ० 100.
[4] मज्झिम, II, पृ० 83 और आगे।
[5] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ् I, पृ० 306-7.

कहा जाने लगा था। मथुरा और उसके समीपस्थ छियानबे गाँवो के निवासी अपने घरो एवं आँगनो मे जैन मूर्तियाँ स्थापित करते थे (बृहत् भागवत, I, 1774 और आगे) । महावीर यहाँ पर आये थे (विवागसूय, 6) । अधिकाशतः परवर्ती कुषाण नरेशो के शासन-काल, 78 ई० के बाद से सबधित मथुरा से प्राप्त अनेक अभिलेख इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त प्रमाण प्रस्तुत करते है कि यहाँ पर जैन सप्रदाय न केवल अधिष्ठित ही था वरन् पहले से ही यह छोटे-छोटे वर्गो मे विभक्त हो गया था।[1]

पश्चिमोत्तर की कला-परपराओ को मथुरा के जैन उच्चित्रो मे पैर जमाने के लिए एक दृढ़ आधार मिला।[2] यहाँ पर बुद्ध एव बोधिसत्व की कालाकित एव तिथिहीन अनेक प्रतिमाएँ प्राप्त हुयी है। मथुरा के मदिरो ने गजनी के महमूद को इतना अधिक विस्मित किया था कि उसने अपनी राजधानी को इसी प्रकार सज्जित करने का सकल्प किया था। मथुरा मे समन्वेषण के विषय मे आर्क० स० इ०, वार्षिक रिपोर्ट, पृ० 120 और आगे द्रष्टव्य है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, III।

मालव—जैन ग्रथ भगवती सूत्रके अनुसार मालव-प्रदेश षोडश् महाजनपदो की सूची मे समिलित है। मालव-जन का उल्लेख पतजलि के महाभाष्य (IV. 1 68) मे किया गया है। मालव नाम से विख्यात इस प्रदेश के निवासी पजाब मे रहते थे। किन्तु उनके द्वारा अधिकृत प्रदेश का ठीक-ठीक निर्धारण करना कठिन है। स्मिथ के विचारानुसार वे झेलम एव चेनाब के सगम के आगे स्थित प्रदेश मे रहते थे[3] जिसमें झग जिला एव माटोगोमरी जिले के कुछ भाग समिलित है[4] (ज० रा० ए० सो० 1903, पृ० 631)। मैक्रिडिल के अनुसार वे चेनाब और रावी के वर्तमान दोआब से सिन्धु और अकेसिनीज के सगम तक फैले हुए भू-खड के एक व्यापक भाग मे रहते थे, जिसे आधुनिक मुल्तान जिले एव माटगोमरी के कुछ भागो से समीकृत किया जाता है (इनवेजन ऑव इडिया, परिशिष्ट टिप्पणी, 357)। कुछ विद्वानो ने इन्हें रावी नदी के दोनो तटो पर उसकी अवर

---

[1] **कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, I, पृ० 167.**

[2] **वही, पृ० 641.**

[3] **अधुना परवर्ती कुषाण-नरेशों की तिथि लगभग 120 ई० से आरंभ होती है। अधिकाश इतिहासकार 78 ई० को अब कुषाण-नरेश कनिष्क की तिथि मानते हैं—अनुवादक।**

[4] **संप्रति पश्चिमी पाकिस्तान में समिलित हैं।**

घाटी मे स्थित बतलाया है (रायचौधरी, पो० हि० ए० इ०, चतुर्थ सम्करण,पृ० 205)।

मालव-जनो को जिन्हे मल्लोई भी कहा जाता था, सिकदर की सेना ने पराजित किया था। उन्होने अपने प्राकारावेष्ठित नगरो से सिकदर की सेना का डटकर सामना किया किंतु अत मे वे सिकदर और उसके सेनापति पेरदिकास से पराजित हुए। ततपश्चात् उन्होने अपने नगर को छोड दिया।

इसके पश्चात् भी लगता है, मालव-जन पजाब के अपने प्रदेश में कुछ समय तक बने रहे। महाभारत (द्रोणपर्व, अध्याय, X, पृ० 17, सभापर्व, अध्याय 32,पृ० 7) मे उन्हे त्रिगर्त्तो, शिवि और अम्बष्ठो से मिलाकर के सभवत उसी स्थान पर स्थित बतलाया गया है। किंतु थोडे समय के पश्चात् ही ऐसा प्रतीत होता है कि वे दक्षिण की ओर चले गये और जाकर राजस्थान मे कही पर बस गये। समुद्रगुप्त के शासनकाल मे वे वहाँ पर रहते थे। राजस्थान मे जयपुर के निकट नागर-क्षेत्र पर माल्वो का अधिकार क्षत्रप नहपान के दामाद शक उषवदात के नासिक गुहा लेख से सिद्ध होता है। शक-आक्रमण एव विजय मालव जन के गण का उन्मूलन नही कर पाये, क्योकि उनका उल्लेख समुद्रगुप्त के प्रयाग-स्तंभ लेख मे आर्यावर्त के पश्चिमी एव दक्षिण-पश्चिमी छोर पर बसनेवाले गणराज्यो की सूची मे किया गया है। मालवो का नाम सुविख्यात कृत या मालव-विक्रम सवत् से भी सबद्ध किया जाता है (तु० नरवर्मन का मदसोर अभिलेख, का० इ० इ० जिल्द, III)। पुराणो मे मालवो का उल्लेख सौराष्ट्रो, अवती-वासियो, आभीरो, शूरो और अर्बुदो के साथ किया गया है तथा उन्हे पारिपात्र पर्वत के अश्रय मे रहते हुए बतलाया गया है (भागवत पुराण, XII, I, 36, विष्णुपुराण, खण्ड, II, अध्याय, 3, ब्रह्माण्ड पुराण, अध्याय, XIX श्लोक, 17)। परवर्ती अभिलेखीय साक्ष्यो मे सप्तमालव नामक सात प्रदेशो का वर्णन प्राप्त होता है (एपि० इ० V, 229, अ० भ० ओ० रि० इ०, जिल्द, XIII, भाग, 3-4, 1931-32, पृ० 229)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, I, पृ० 27 और आगे, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, अध्याय, VIII।

माल्यवत पर्वत—यह हिमालय के पश्चिमोत्तरी सिरे से प्रारभ होता है, और पहले अविभक्त भारत को अफगानिस्तान से अलग करते हुए यह दक्षिण-पश्चिम की ओर, फिर उत्तर-पूर्वी अफगानिस्तान की ओर फैला हुआ है। आधुनिक भूगोलवेत्ता इस पर्वत को हिन्दुकुश कहते है। मुख्य शृखला से अनेक शैल-प्रक्षेप निकले हुए है—यथा बदखशाँ एव कोकचा। बदखशाँ पर्वत प्रक्षेप आमू दरिया

(आक्सस) को कोकचा से, और कोकचा प्रक्षेप कोकचा को कुदुज जल-प्रणाली मे अलग करता है। हिन्दुकुश की ऊँचाई पूर्वी भाग मे 14, 000 से 18,000 फीट के मध्य है, जिसके ऊपर भी कई दैत्याकार शिखर 25,000 फीट की ऊँचाई तक जाते है। यह बहुत विरदित क्षेत्र है और ढालू चट्टानो के कारण उसके शिखर पर बहुत कम मिट्टी है, जिसके फलस्वरूप घास के अतिरिक्त यहाँ पर और कुछ नही उग सकता है (लाहा, माउटेस ऑव ऐश्येट इडिया, पृ० 7)।

मानपुर—महाराज सर्वनाथ के खोह ताम्रपत्र अभिलेख (214 वे वर्ष) मे इस कस्बे का उल्लेख है जिसे सभवत सोन नदी के समीप स्थित वर्तमान मनपुर से समीकृत किया जा सकता है, जो उचहरा से दक्षिण पूर्वी दिशा मे लगभग 47 मील दूर और कारीतलाई 32 मील से दूर दक्षिण-पूर्व मे स्थित है, (का० इ० इ० जिल्द, III)।

मानस-सरोवर—राजा विभ्राज ने इस झील मे आश्रय ग्रहण किया था (हरिवश, XXIII, 9-10)।

मार्कण्डेय-आश्रम—यहाँ पर भीष्म आये थे। इस आश्रम के निवासियो ने उनका यथोचित सम्मान किया था। महाभारत मे (वनपर्व, अध्याय, 84) इसे गोमती ओर गगा के सगम पर स्थित बतलाया गया है। पद्मपुराण (अध्याय. 16) के अनुसार मार्कण्डेय ऋषि ने सरयू एव गगा के सगम पर तपस्या की थी।

मेहरौली—चद्र के मरणोत्तर मेहरौली लौह-स्तम लेख मे उसका उल्लेख है जो मिहिरपुरी का एक भ्रष्ट रूप है। यह प्राय दिल्ली के दक्षिण 9 मील पर स्थित एक गाँव है। इस वैष्णव अभिलेख को विष्णुपद (विष्णु के पदचिह्नो से युक्त) नामक किसी पहाडी पर विष्णु-ध्वज की स्थापना का वर्णन करने के लिए उत्कीर्ण कराया गया था (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

मेरोस पर्वत—इसे मार-कोह भी कहा जाता है, जो पजाब मे जलालाबाद के समीप स्थित है और जहाँ पर सिकदर महान् गया था।

मेरु—हेमाद्रि तथा स्वर्णाचल जैसे अन्य नामो से विज्ञात इस पर्वत को गढवाल मे स्थित रुद्र-हिमालय से समीकृत किया जाता है (थेरीगाथा कामेट्री, पृ० 150) जहाँ से गगा निकलती है (लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 42)। यह बदरिकाश्रम के समीप स्थित है और सभवत यह एरियन द्वारा वर्णित माउट मेरोस ही है। इस पर्वत के पश्चिम की ओर निषध एव पारिपात्र पर्वत, दक्षिण मे हिमवन्त और कैलास तथा उत्तर मे शृगवान और जरुधि स्थित हैं (मार्कण्डेय पुराण, बगवासी सस्करण, पृ० 240)। महर्षि शालंकायन ने इस पर्वत पर साधना की थी (कूर्म पुराण, 144 ।10)।

मिगसम्मता—यह नदी हिमालय से निकलती थी (जातक, VI. 72)।

मोरा—मथुरा शहर से 7 मील दूर पश्चिम मे तथा मथुरा से गोवर्द्धन जाने वाली सडक के उत्तर मे दो मील दूर स्थित यह एक छोटा-सा गाँव है (एपि० इ० XXIV. भाग V, जनवरी, 1938, पृ० 194)।

मोरियनगर—इस नगर को कोसलाधिप पसेनदि के पुत्र राजा विडूडभ द्वारा उत्पीडित होने पर कुछ शाक्यो ने हिमालय मे जा कर बसाया था (महावस टीका, सिहली सस्करण, पृ० 119-21)। यह पीपल के वृक्षो से भरे हुए जगली क्षेत्र मे एक झील के परित स्थित था। सामान्यत अब यह माना जाता है कि अशोक महान् का पितामह चन्द्रगुप्त मोरिय कुल का था, जिसकी राजधानी पिप्फलिवन थी। वह स्थान जहाँ पर इस नगर की स्थापना की गयी थी सदैव मोरो के कलरव से प्रतिध्वनित होता था (महावसटीका, सिहली सस्करण, पृ० 119-21)। पिप्पलिवन के मोरियों को बुद्ध के पार्थिव अवशेषो का एक भाग मिला था, जिस पर उन्होने एक स्तूप का निर्माण करवाया था (दीघ० II, 167)।

मूसिकेनोस—मूसिकेनोस के प्रदेश मे सिकदर के इतिहासकार सुपरिचित थे। सिकदर ने उनपर अचानक आक्रमण कर दिया था जिसके फलस्वरूप उनको आत्मसमर्पण करना पडा (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, 377)। स्ट्रैबो (एच० तथा एफ० द्वारा अनूदित, भाग, III, पृ० 96) के अनुसार वे सामूहिक रूप से खाते थे और शिकार ही उनका भोजन होता था। वे सोने अथवा चाँदी का प्रयोग नही करते थे। दासो के स्थान पर वे किशोर युवको को परिचर के रूप मे नियोजित करते थे। यथोचित् अवधान से वे औषधिविज्ञान का अध्ययन करते थे। निरतर वाद उठा करके उन्हे अदालतो मे जाना कभी रुचिकर नही था।

मुजावन्त—इसका एक अन्य समानार्थक शब्द मुञ्जावन्त है, जो महाभारत मे आता है (स्त्री पर्व, X. 785, XIV. 180, लुडविग कृत ट्रासलेशन ऑव ऋग्वेद, 3,198 भी द्रष्टव्य है)। यह हिमालय मे स्थित एक पर्वत का नाम है। इसका नाम ऋग्वेद (X. 34, 1) मे भी आया है जहाँ इसे भौजवत कहा गया है। पाणिनि के सूत्र (IV 4,1110) पर लिखित सिद्धातकौमुदी मे हमे एक अन्य रूप मौञ्जावन्त मिलता है। कुछ विद्वानो के मतानुसार यह एक पहाडी थी जिसके नाम के आधार पर ही इस जाति का नाम पडा था। त्सिमर ने अपने ग्रथ अल्टिडिशेज़ लेबेन, 29, मे इसे कश्मीर के दक्षिण पश्चिम मे स्थित निचली पहाड़ियो मे से एक बतलाया है।

मुक्तेश्वर—पंजाब के फीरोजपुर जिले मे यह मुक्तेश्वर तहसील का मुख्यावास है। प्रतिवर्ष यहाँ पर सिक्खो का एक बडा पर्व मनाया जाता है।

मूलस्थान (मूलस्थानपुर)—यह रावी नदी मे बने दो द्वीपो पर स्थित था। यूनानी एव लैटिन लेखको ने इसे कैस्पैपीरोस (Kaspapyros), कैस्पीरा (Kaspeira) आदि नाम दिये है। युवान-च्वाङ् माउ-लो-सन-पु-लु (सस्कृत, मूलस्थान) गया था। इसे उसने सिध से 900 ली पूर्व मे स्थित बताया था। (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, 254)। कनिघम ने मूलस्थान को मुल्तान से समीकृत किया है।

मुरुण्ड देश—दूसरी शताब्दी ई० मे मुरुडाई (Moroundai) नाम से मुरुण्डों का सबसे पहले उल्लेख टालेमी ने किया। इन्होने, ऐसा प्रतीत होता है, कि सभवत गगा के पूर्व मे सपूर्ण उत्तरी बिहार मे ले कर इसके डेल्टा के मुहाने तक के विस्तृत भू-भाग पर अधिकार कर लिया था। उनके छ महत्त्वपूर्ण नगर यथा, बोरैता (Boraita), कोरीगाजा (Koryagaja), कोन्दोत (Kondota), केलिडना (Kelydna) , अगनगोर (Aganagora) तथा तलर्ग (Talarga), थे। ये सभी गंगा के पूर्व मे स्थित थे। सन मार्टिन के अनुसार केलिडना का कुछ सबध काली नदी या कालिन्दी नदी से और अगनगोरा का कटवा से थोडी दूर आगे, गगा के पूर्वी तट पर स्थित अग्रदीप (अग्रद्वीप) मे था (टालेमी, ऐश्येंट इडिया, पृ० 215-16)। कनिघम के अनुसार टालेमी के मोरुण्डाई प्लिनी द्वारा वर्णित मोरेडीज (Moredes) ही थे। वायुपुराण मे मुरुण्डो को म्लेच्छ कबीले का बतलाया गया है। हेमचद्र की अभिधानचितामणि (IV 26, लम्पाकास्तु मरुण्डा स्यु) मे मुरुण्डो को लम्पाको, टालेमी के लबटाई (Lambatai) से समीकृत किया गया है, जो लघमान के समीपवर्ती क्षेत्र मे आधुनिक काबुल नदी के उद्गम स्थल के पास स्थित थे ओर इसलिए यह माना जाता है कि मुरुण्डो का इस क्षेत्र मे भी एक सन्निवेश था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 93-94)।

नगरहार—इसे अफगानिस्तान मे स्थित आधुनिक जलालाबाद से समीकृत किया जाता है।[1] फा-वेइ का अभिप्राय यह लगता है कि उसके समय में यह पुरुषपुर राज्य का एक भाग था (एल० पीटेख, नर्दर्न इडिया एकार्डिग टु द शुइ-चिंग-चू, पृ० 60)। लास्सेन ने नगरहार को नगर या टोलेमी द्वारा वर्णित डायोनिसोपोलिस से समीकृत किया है जो कबुर एव सिधु के मध्य मे स्थित था। पाँचवी शती ई० के प्रारभ में फा-ह्यान ने इसे केवल ना-की (Na-Kie) कहा था जो उस समय

[1] ज० पीश्च० फोगेल, नोटस् ऑन टालेमी, बु० स्कू० ओ० अ० स्ट०, जिल्द IV. भाग I,X पृ० 80.

किसी स्वाधीन राजा द्वारा प्रशासित एक स्वतंत्र राज्य था। सातवीं शती ई० मे युवान-च्वाङ् के काल मे यह कपिसीन (Kapisene) के अधीन था और यहाँ कोई राजा नही था। इसे उद्यानपुर भी कहा जाता था (तु० कनिंघम, आर्के० स० इ०, 1924, पृ० 53-54)।

नैमिषारण्य (आधुनिक नीमसार)—यह गोमती के तट पर सीतापुर जिले मे स्थित है। वायु पुराण (I 14) मे इसे दृषद्वती के तट पर स्थित बतलाया गया है, जो हमारे विचार से त्रुटिपूर्ण है। 51 पीठस्थानो मे से एक तथा पुराणकार प्राचीन आर्य-ऋषियो का आवास होने के कारण यह एक महत्त्वपूर्ण हिंदू तीर्थस्थल है। नैमिषारण्य आने पर ऋषियो ने नारद का सम्मान किया था (पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, श्लोक, 77-78)। पचविंश (XXV. 6,4) एव जैमिनीय ब्राह्मणो मे (I. 363) नैमिषीय का उल्लेख है जो नैमिषारण्य मे बसनेवालो को लक्षित करता है। महाभारत (83. 109-111, 84, 59-64) मे इस पुण्य नगरी का उल्लेख है। पद्मपुराण (VI. 219, 1-2) के अनुसार द्वादश-वर्षीय यज्ञ नैमिषारण्य मे सपादित किय गया था। कूर्मपुराण (पूर्वभाग, 30, 45-48) मे भारत के अन्य तीर्थस्थानों के साथ इसका भी वर्णन किया गया है (तु० भागवत पुराण, I, 1.4, III, 20, 7, X. 79, 30, VII. 14, 31, X.78, 20, अग्निपुराण, अध्याय, 109, पद्मपुराण, अध्याय, 16, तीर्थमाहात्म्य)। योगिनी तत्र (2.4) मे इसका वर्णन प्राप्त होता है।

नौहाई—कोसम स्तभ से कोई $1\frac{1}{2}$ मील दूर पश्चिमोत्तर मे यह ग्राम स्थित है (एपि० इ० XXIV, खड, VI, अप्रैल, 1938, पृ० 253)।

नाभक—अशोक के पाँचवे एव तेरहवे शिलालेख मे वर्णित नाभक पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत (भारत-विभाजन के पूर्व) एव भारत के पश्चिमी समुद्रतट के मध्य कही पर स्थित था। कुछ लोगों का विचार है कि नाभक एव नाभपत्ति काल्सी के उत्तर में स्थित केंद्रीय हिमालय-राज्य थे।

नान्यौरा—उत्तरप्रदेश के हमीरपुर जिले की पनवारी जैतपुर तहसील में स्थित इस ग्राम का उल्लेख नान्यौरा दानपत्र मे किया गया है।

नेपाल—योगिनीतत्र (1.7, 1.11, 2.2) मे इसका उल्लेख है। नेपाल माहात्म्य (अध्याय, I, श्लोक, 30) मे नेपाल का पुराना नाम श्लेषमातकवन बताया गया है। बागमती नदी के तट पर पशुपतीर्थ या पशुपतितीर्थ स्थित है। नेपाल की सीमा निम्नलिखित है : पूर्व मे कौशिकी नदी, पश्चिम में त्रिशूलगंगा, उत्तर में शिवपुरी (कैलाश) तथा दक्षिण मे एक ऐसी नदी जिसका जल शीतल एवं निर्मल है। (अध्याय, 15, श्लोक, 3-5)। इलाहाबाद स्तम-लेख में नेपाल

को एक स्वायत्त-शासी प्रत्यन्त राज्य कहा गया है। समुद्रगुप्त ने इस पर विजय प्राप्त की थी।* कुछ लोग इसका तात्पर्य टिपरा से लेते है (ज० ए० सो० ब०, 1836, पृ० 973) जो सदिग्ध प्रतीत होता है। मानदेव जिष्णुगुप्त के शासनकाल मे उत्कीर्ण थानकोट अभिलेख मे मान-कर नामक एक कर का उल्लेख है जो नेपाल की घाटी मे लिया जाता था। यह कर गाहडवालवशीय नरेश गोविदचद्र के अभिलेखो (लगभग 1104-54 ई०) मे वर्णित तरुष्कदण्ड की भाँति था (एपि० इ० II, 361 और आगे, IV 11 और आगे, 98 और आगे, 104 और आगे, 116 और आगे, V 115 और आगे, VII 98 और आगे, VIII 153 और आगे, IX 321 और आगे, XI 20 और आगे, 155)। सातवी शताब्दी ईसवी मे नेपाल एक अतस्थ राज्य था। आठवी शताब्दी ई० मे नेपाल तिब्बत की पराधीनता से मुक्त हो गया था।

देवपारा अभिलेख के अनुसार (एपि० इ०, I, 309), नेपाल नरेश नान्यदेव लगभग 12 वी शती ई० के मध्य मे अनेक अन्य राजकुमारो के साथ विजयसेन द्वारा पराजित और बदी बनाया गया था।

वराहपुराण (अध्याय, 3) मे नेपाल घाटी को मूलत नाग-बास नामक झील बतलाया गया है। यह 14 मील लबी और 4 मील चौडी थी, (तु० नदलाल दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 140) काठमाडू मे पश्चिमोत्तर मे लगभग 3 मील दूर एव अशोक की पुत्री चारुमती द्वारा स्थापित देवीपाटन कस्बे मे बागमती नदी के पश्चिमी तट पर नेपाल मे मृगस्थल मे स्थित पशुपतिनाथ या पशुपति का मदिर हिंदुओं का एक विश्रुत मदिर है। मदिर के सम्मुख नदी के पूर्वी तट पर ऊँचे वृक्षो एव वनो से आच्छादित एक पहाडी है।

नेरुपर्वत—यह हिमालय क्षेत्र मे स्थित है (मिलिंद, पृ० 129)। जातको (जातक III, 247) मे इसे सुवर्ण पर्वत कहा गया है।

निग्लीब—यह उत्तरपूर्वी रेलवे के उस्का बाजार रेलवे स्टेशन से 38 मील दूर पश्चिमोत्तर मे बुटौल (बुटवल) जिले की नेपाली तहसील तौलिहवा मे स्थित है (एपि० इ० V, पृ० 1)।

निर्माण्ड—पू० पजाब के कॉगडा जिले के कुल्लू या कुलू मडल की प्लाच तहसील के मुख्यावास से 21 मील दूर पूर्वोत्तर मे सतलज नदी के दाहिने तट के

***वस्तुतः समुद्रगुप्त ने नेपाल पर किसी सैनिक अभियान के माध्यम से नहीं विजय प्राप्त की थी। नेपाल एक प्रत्यन्त राज्य था और इस पर समुद्रगुप्त का प्रभाव मात्र था।—अनुवादक**

समीप स्थित, निर्माण्ड ग्राम का उल्लेख महासामंत एव महाराजा समुद्रसेन के निर्माण्ड ताम्रपत्र अभिलेख में किया गया है (का० इ० इं०, जिल्द, III)। यह ग्राम परशुराम को समर्पित एक प्राचीन मंदिर के समीप स्थित है। यही पर त्रिपुरांतक या मिहिरेश्वर नाम से विख्यात शिव को समर्पित एक अन्य मंदिर था।

निसभ—गंधमादन के पश्चिम मे तथा काबुल नदी के उत्तर मे हिमालय के समीप स्थित इस पर्वत को यूनानी लोग पैरोपनिसस (Paropanisos) कहते थे जिसे अब हिंदुकुश कहते है (बु० अपदान, पृ० 67)।

आक्सीकेनोस-क्षेत्र—कटियस ने प्रायस्तियो (Praesti) को इस क्षेत्र का निवासी बतलाया है, जो समवतः महाभारत (VI, 9, 61) मे वर्णित प्रोष्ठों (Prosthas) से समीकृत किये जा सकते है। कनिंघम के विचार से आक्सीकेनोस-क्षेत्र सिंधु नदी के पश्चिम मे लरकाना के समीपस्थ मैदान मे स्थित था (इनवेज़न ऑव अलेक्जेंडर, पृ० 158)। आक्सीकेनोस ने सिकदर का सामना करने का असफल प्रयत्न किया था (कै० हि० इ० I, 377; लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग I, पृ० 36)।

पभोसा गुफा—अभिलेखो मे यह तथ्य उल्लिखित है कि कौशाम्बी के समीप स्थित पभोसा की दो गुफाएँ अहिच्छत्र-नरेश आषाढसेन ने काश्यपीय अर्हतो को समर्पित की थी। उनमे से एक मे दानी-नरेश आषाढसेन को राजा बृहस्पतिमित्र का मामा बतलाया गया है (ल्युडर्सकी तालिका, म० 904; एपि०इ०, X, परिशिष्ट) और दूसरे अभिलेख मे राजाओ की चार पीढियो का उल्लेख है, जिसका प्रारम शौनकायन से होता है (बि० च० लाहा, पचालाज ऐंड देयर कैपिटल अहिच्छत्र, मे० आर्क० स० इ०, स० 67, पृ० 12)।

पडेरिया—यह स्थान भगवानपुर जिले की भगवानपुर नामक नेपाली तहसील से दो मील उत्तर मे स्थित है। डॉ० फ्रूहरर के अनुसार यह निग्लीव से लगभग 13 मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, V, पृ० 1)।

पह्लव—यह पार्थियनों के लिए प्रयुक्त भारतीय शब्द पार्थव का विकृत रूप है (रैप्सन, क्वायस ऑव इडिया, पृ० 37, पाद टिप्पणी, 2)। वायु पुराण पह्लवो के प्रदेश को उत्तर मे बतलाता है, जब कि मार्कण्डेय पुराण तथा बृहत्सहिता मे वे भारत के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित बतलाये गये है (वायु पुराण, अध्याय, 45; V.115; मार्कण्डेय पुराण, अध्याय, 58; बृहत्सहिता, अध्याय, 14)। रामायण के अनुसार वशिष्ठ एवं विश्वामित्र-जैसे प्रसिद्ध ऋषियों के कामधेनु-विषयक वैमनस्य के अवसर पर पह्लवो की उत्पत्ति हुयी थी (आदि काण्ड, LIV, 1018-22)। कुरुक्षेत्र के युद्ध मे वे कुरुओं की ओर से लड़े थे। महाकाव्य

एव पौराणिक परपरा के अनुसार वे हैहय-तालजघो के सश्रित राष्ट्र थे। शको, यवनो एव अन्य जातियो के साथ वे राजा सगर द्वारा पराजित किये गये थे। जूनागढ के शिलालेख में शिविसक नामक एक पह्लव अधिकारी का उल्लेख प्राप्त होता है और नासिक गुहालेख मे गौतमीपुत्र शातकर्णि को पह्लवो, शको एव सभी यवनो को निर्मूल करने का श्रेय दिया गया है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा कृत ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 6 और आगे, लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 39-40।

पहलादपुर—पहलादपुर पाषाण-स्तम लेख मे इस ग्राम का वर्णन है,' जो गगा के दाहिने तट के समीप गाज़ीपुर जिले मे धानापुर से 3 मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है।

पहोवा—हरयाणा के करनाल जिले की कैथल तहसील मे पुण्य सलिला सरस्वती के तट पर थानेश्वर से 16 मील पश्चिम मे स्थित यह एक प्राचीन नगर एव तीर्थस्थान है। यह कुरुक्षेत्र मे स्थित है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 26)।

पलेठी—गगा और अलकनदा के सगम पर स्थित देवप्रयाग से कोई 12 मील दूर पश्चिमोत्तर मे पट्टीखास की गहरी घाटी मे स्थित यह एक छोटा सा ग्राम है। यहाँ पर प्राचीन मंदिरो के अवशेष प्राप्त होते है (द्रष्टव्य, सिद्धभारती, भाग II, पृ० 273 और आगे)।

पाली—गोरखपुर जिले की बाँसगाँव तहसील के धुरियापार परगना मे स्थित यह एक गाँव है जहाँ से गोविंद के दानपत्र मिले थे (एपि० इं०, V 113 और आगे)।

पंचालदेश—इसमे बरेली, बदायूँ, फर्रुखाबाद, रुहेलखड और मध्यवर्ती दोआब के निकटवर्ती जिले समिल्लित थे। यह पूर्व मे गोमती एव दक्षिण मे चबल नदी से परिवृत्त प्रतीत होती है। यह प्रदेश हिमालय से चबल नदी तक फैला हुआ था (कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रफी, पृ० 360)। उत्तरवैदिक सहिताओं एव ब्राह्मणो मे प्राय पांचालो का वर्णन किया गया है (काठकसंहिता, XXX. 2, वाजसनेयि सहिता, XI 3, 3; गोपथ ब्राह्मण, I, 2 9; शतपथ-ब्राह्मण. XIII 5 4 7, तैत्तिरीय ब्रा० I 8. 4. 1. 2)। उपनिषदो एव परवर्ती ग्रथो मे पचाल के ब्राह्मण दार्शनिक एव भाषाविज्ञान सबधी परिसवादो मे भाग लेते हुए बतलाये गये है (बृहदारण्यक उपनिषद्, VI. 1, 1, छान्दोग्य उपनिषद्, V. 3 1, I, 8, 12; साख्यायन श्रौतसूत्र, XII 13-6, आदि)। वैदिक साहित्य मे इस राज्य के राजाओ का उल्लेख है (ऐतरेय ब्राह्मण, VIII. 23;

शतपथ ब्राह्मण, सै० बु० ई०, जिल्द, XLIV, पृ० 400)। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी मे पाञ्चालक का उल्लेख किया है। (7, 3, 13)। पतंजलि ने भी अपने महाभाष्य मे (1, 2, 2, पृ० 512, 1, 1, 1 पृ० 37, 1, 4, 1, पृ० 634) एक जनपद के रूप मे इसका उल्लेख किया है।

पचाल नाम की व्युत्पत्ति एव पाँच की सख्या से इसके सभावित संबध की समस्या से पुराणकार अभिभूत थे (भागवत, 9-21, विष्णु, 19 वाँ अध्याय, अक 4, वायु० पृ०99, अग्नि पुराण, 278)। महाभारत मे यहाँ के निवासियों के बारे मे अनेक कहानियाँ बतलायी गयी है (आदि पर्व, अध्याय, 94, 104; द्रोणपर्व, अध्याय, 22, पृ० 1012-1013, उद्योग पर्व, अध्याय, 156-157; 172-194,198, भीष्म पर्व, अध्याय,19, पृ० 830, कर्ण पर्व, अध्याय, 6, 1169, वन पर्व, अध्याय, 253, 513; विराटपर्व, 4, 570)।

पचाल देश बुद्ध के जीवनकाल तक उत्तरी भारत का एक महान् एवं शक्तिशाली जनपद रहा (अगुत्तर, I, 213; IV. 252, 256, 260, जातक (कावेल), VI 202)। पचाल एव यहाँ के राजकुमारो का वर्णन जैन साहित्य मे भी हुआ है (उत्तराध्ययन सूत्र, जैनसूत्र, II, पृ० 60, 61, 87 आदि)। अशोक के पश्चात यूनानियों ने पचाल पर आक्रमण किया था।

पचाल महाजनपद उत्तरी एव दक्षिणी पचाल मे विभक्त था, जिनकी राजधानियाँ क्रमश अहिच्छत्र एव काम्पिल्य थी। उत्तरी पचाल मे गगा के पूर्व तथा अवध के पश्चिमोत्तर मे स्थित उत्तरप्रदेश के जिले तथा दक्षिण पचाल मे कुरु तथा शूरसेनो के पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व मे स्थित गगा-यमुना के मध्यवर्ती क्षेत्र सम्मिलित थे (रैप्सन, एंश्येंट इंडिया, पृ० 167)।

हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् पचाल जनपद के दुर्दिन आ गये थे किंतु लगभग आठवी शती ई० के पश्चात् भोज एव उसके पुत्र के शासनातर्गत बिहार से सिंध तक फैला हुआ यह उत्तरी भारत की एक प्रमुख शक्ति बन गया था। बारहवीं शती ई० मे गाहडवाल वश के अधीन यह एक बार पुन महत्वपूर्ण हो गया था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, पचालाज ऐण्ड देयर कैपिटल अहिच्छत्र, (मे० आर्क० स० इ०, स० 67)।

परौली—यह गाँव कानपुर जिले मे भीतारगाँव से दो मील दूर उत्तर में स्थित है, जहाँ पर एक जीर्ण मदिर है (आर्क० स० इ०, एनुवल रिपोर्ट, 1908, 9, पृ० 17 और आगे)।

परीणह—पचविंश ब्राह्मण (XXV, 13, 1), तैत्तिरीय आरण्यक

V. 1, 1), लाट्यायान् श्रौतसूत्र (X. 19, 1), कात्यायन श्रौतसूत्र (XXIV. 6, 34), और साख्यायन श्रौतसूत्र (XIII. 29, 32) मे वर्णित यह कुरुक्षेत्र मे स्थित एक स्थान का नाम है।

परुष्णी—यह एक वैदिक नदी है (ऋग्वेद, X 75, VII, 18; VIII. 63, 15)। इसे रावी से समीकृत किया गया है।

पटल—यह सिंधु नदी के डेल्टा मे स्थित है। स्पष्टतः यह अवर सिंधु नदी से सिंचित प्रदेश की राजधानी थी जिसके कारण इसका यूनानी अभिधान पैटेलीन (Patalene) था (जे० पी०एच० फोगेल, नोट्स ऑन टॉलेमी, बु० स्कू० ओ० अ० स्ट०, XIV, भाग I, पृ० 84; द्रष्टव्य प्रस्थल)।

पारिरेय—(पालि, पारिलेय्यक; सस्कृत, परेरक)—पारिलेय्यक नामक हाथी से सरक्षित यह एक वन्य क्षेत्र का नाम था। कौशाम्बी मे भिक्षुओ के मध्य हुए एक विवाद को न निपटा सकने के कारण बुद्ध यहाँ रहने के लिए आये थे और यहाँ पर वर्षा-ऋतु मे पारिलेय्यक हाथी और एक बदर द्वारा अनुसेवित हो कर रहे थे। कौशाम्बी से इस वन-क्षेत्र का पथ एक गाँव से हो कर गुजरता था। पारिलेय्यक वन खण्ड का चित्र भरहुत मे जातक, लेपपत्र सख्या 8 मे अकित हुआ है (बरुआ ऐड सिनहा, भरहुत इस्क्रिप्शस, पृ० 62)। इसकी स्थिति अज्ञात है। सभवतः यह जगल कौशाम्बी से अधिक दूर नही था (तु० सयुत्त, III, 94-95; विनय महावग्ग X. 4, 6)।

पारिवात—यह पारिपात्र पर्वत ही है। इसका उल्लेख ल्यूडर्स तालिका, सख्या, 1123 मे किया गया है। पारिपात्र या पारियात्र का सर्वप्रथम उल्लेख बौधायन धर्मसूत्र (1, 1, 25) मे आर्यावर्त्त की दक्षिणी सीमा के रूप मे किया गया है। स्कद पुराण मे भी इसे भारतवर्ष के केंद्र कुमारी खण्ड की दूरतम सीमा के रूप मे बतलाया गया है। इस पर्वत के आधार पर ही इस क्षेत्र का नाम पड़ा है जिससे यह सबद्ध था। चीनी तीर्थयात्री युवान-च्वाङ् ने इसे पो-ली-ये-ता-लो कहा है (Po-li-ye-ta-lo) जिसका शासक कोई वैश्य राजा था। पार्जिटर ने इसे विंध्य पर्वतमाला के उस भाग से समीकृत किया है, जो भोपाल के पश्चिम मे अरावली पर्वत के साथ स्थित है (द्रष्टव्य, पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 286)। कुछ नदियाँ यथा, वेदस्मृति वेदवती, सिंधु, वेण्वा, सदानीरा, मही, चर्मण्वती, वेत्रवती, वेदिशा, सिप्रा एवं अवर्णी इस पर्वत से निकलती है (तु० मार्कण्डेय पुराण, 57, 19-20)। पारियात्र विंध्य पर्वतमाला का पश्चिमी भाग है, जो चंबल के उद्गमस्थल से लेकर खंभात की खाड़ी तक फैला हुआ है। यह विंध्य

पर्वतमाला का वह भाग है जहाँ से चंबल और बेतवा नदियाँ निकलती हैं (भंडार॰ कर, हिस्ट्री ऑव द दक्कन, खंड, 3)।

पाटन—यह काठमाडू से तीन मील दक्षिण मे स्थित है। नेपाल पर गुरखा विजय के पूर्व यह एक अलग राज्य की दीर्घकाल तक राजधानी रही है।

पावा—गोरखपुर जिले के पूर्व मे छोटी गंडक नदी के तट पर स्थित पावा, पापा या पावापुरी कसया ही है। कनिघम ने अति प्राचीन स्थल पावा को पड़रौना से समीकृत किया है (आर्क॰ स॰ रि॰, I, 74, XVI, 118)। यह जैनियो का एक तीर्थस्थान समझा जाता है। पावा नरेश षष्ठिपाल के प्रासाद मे रहते समय महावीर ने अपने पार्थिव शरीर को छोड़ा था। यह वही नगर था जहाँ बुद्ध चुण्ड लोहार के घर पर अपना अंतिम भोजन करके पेचिश के शिकार हुए थे। पावा से कुशीनारा आते समय महाकस्सप ने बुद्ध के महापरिनिर्वाण के विषय मे सुना था। महापरिनिर्वाण-सूत्र के फा-ह्यान संस्करण के अनुसार वह राजगृह के दक्षिण मे दक्षिण-गिरि मे और महासघिक विनय के अनुसार गृध्रकूट पर थे (नार्दर्न इडिया एकार्डिंग टु द शु इ-चिंग-चु, ले॰ एल॰ पीटेख, पृ॰ 27)। इस पुर मे मल्ल जन रहा करते थे जो निष्ठापूर्वक महावीर एव बुद्ध के निष्ठावान उपासक थे। जहाँ पर महावीर ने प्राणत्याग किया था, वहाँ पर चार भव्य जैन मदिर बनवाये गये थे।

पिलक्खगुहा—यह गुहा घोषिताराम और कौशाम्बी के समीप कही पर स्थित थी। यह एक झील या सरोवर की भाँति प्रतीत होती थी क्योकि सचमुच एक गड्ढा होने के कारण इसमे वर्षा का जल जमा हो जाता था। ग्रीष्म ऋतु मे यह सूख जाती थी। यहाँ पर सदक नामक एक परिव्राजक आया था जिसे आनद ने बौद्ध धर्म मे दीक्षित किया था (मज्झिम, I, 513 और आगे)।

पिलोशन—इसकी सीमाएँ लगभग यमुना-तट पर बुलदशहर से फिरोजाबाद तक तथा गंगातट पर कादिरगज तक फैली हुयी बतलायी जा सकती है। इसकी परिधि 333 मील थी (कनिघम, एं॰ ज्या॰ इ॰, पृ॰ 423)।

पिम्प्रामा—यह अद्रैस्टाई (Adraistai) का गढ़ था जो रावी (Hydraotis) के पूर्वी तट पर स्थित था। कुछ विद्वानो ने अद्रिजो को यूनानियों द्वारा वर्णित अद्रैस्टाई (Adraistai) से समीकृत किया है। अद्रैस्टाई अथवा अघृष्ट सिकदर की सेना से पराजित हुए बतलाये जाते हैं (कै॰ हि॰ इ॰ I, पृ॰ 371 और पाद टिप्पणी, सं॰ 2)।

पिप्फलिवन—यह मौर्यों का देश था (दीघ, II, 167)। एक विद्वान् के

अनुसार बस्ती जिले मे बिर्दपुर (भूतपूर्व रियासत) के पिपरावा गाँव के नाम मे इसके नाम की प्रतिध्वनि प्राप्त होती है।

पिपरावा--पिपरावा मे बुद्ध के अवशेषो का समर्पण उत्तर का सर्वप्राचीन प्रलेख माना जाता था (इ० ऐ०, 1907, पृ० 117-24)। यह बस्ती जिले के उत्तर मे नेपाल के सीमात पर स्थित है (आर्कयॉलॉजिकल सर्वे, भाग XXVI. 1897)। फ्लीट के अनुसार पिपरावा ग्राम ही (बिर्दपुर तालुका) कपिलवस्तु है जहाँ से पिपरावा-कलश प्राप्त हुआ था (ज० रा० ए० सो०, 1906, पृ० 180, कनिघम, ए० ज्याँ० इ०, पृ० 711-12)। रिज डेविड्स ने इसे एक नया नगर माना है, जिसे विडूडभ ने प्राचीन नगर के नष्ट हो जाने के बाद बनवाया था (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 29)।

पोतोडा--इसे हिंडोल (रियासत) मे पोटल मे समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXVI, भाग II, पृ० 78)।

प्रभास--इलाहाबाद से 32 मील दक्षिण-पश्चिम मे, मझनपुर तहसील मे यमुना के उत्तरी तट पर आधुनिक पभोसा नामक ग्राम पहाडी पर स्थित है, जिसे प्राचीन प्रभास से समीकृत किया जाता है। प्रभास पहाडी, जो गगा-यमुना के मध्य अन्तर्वेदी मे अकेली पहाडी है, प्राचीन कौशाम्बी या कोसमखिराज के महा-दुर्ग से तीन मील दूर पश्चिमोत्तर मे स्थित है, जहाँ से कुछ अभिलेख भी प्राप्त हुये थे (एपि० इं०, II, 240)।

प्रस्थल--(पटल) इसे आधुनिक बाहमनाबाद मे या इसके समीप स्थित माना गया है जो एक बहुत प्राचीन स्थान है और जहाँ पर व्यापक प्रागैतिहासिक अवशेष विकीर्ण है (ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, जनवरी, 1856)। यूनानियो द्वारा अभिहित पैटेलीन नामक छोटे राज्य को सामान्यतया सिधु नदी के डेल्टा मे समीकृत किया जाता है। सभवत इसका नामकरण इसकी राजधानी पाटल के आधार पर हुआ था। सिकदर के आक्रमण के बहुत बाद इस पर बाख्त्री यवनो का अधिकार हो गया (हैमिल्टन और फैल्कनर, जिल्द, II, 252-53) और कालातर मे इडोग्रीक नरेशो के हाथ से छिन कर इस पर शक या इडो-सीथियन राजाओ का अधिकार हो गया था। टॉलेमी नामक भूगोलवेत्ता के अनुसार, दूसरी शती ई० के मध्य यह भारत-शक सत्ता का एक प्रधान स्थान था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, 37 और आगे।

प्रयाग--रामायण (अयोध्याकाण्ड, सर्ग 54, श्लोक, 2-5) मे कहा गया है कि राम, लक्ष्मण एव सीता ने, जब वे अयोध्या के पश्चात् गगा-यमुना के सगम पर

आये, इस पवित्र नगर से धुआँ उठते हुए देखा था। महाभारत (85, 79-83) के अनुसार सपूर्ण संसार का यह पवित्रतम स्थान है। हरिवंश (अध्याय, XXVI.9 के अनुसार महान् ऋषियो ने इसकी बडी प्रशसा की है। योगिनीतत्र (2.2.119) मे इसका उल्लेख किया गया है। कूर्म पुराण (पूर्वभाग, 30. 45-48) एव पद्म पुराण (उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-38) मे भी इस प्रसिद्ध तीर्थ स्थान का वर्णन प्राप्त है। भीटा से प्राप्त कुछ अभिलेखो मे निम्नलिखित राजाओ का उल्लेख है जो प्रयाग से सबधित थे :

1. महाराज गौतमीपुत्र श्री शिवमघ

2 राजन् वाशिष्ठीपुत्र भीमसेन, द्वितीय या तृतीय शताब्दी ई०

3 महाराज गौतमीपुत्र वृषध्वज, तृतीय या चतुर्थ शती ई० (रा० कु० मुकर्जी, गुप्त एपायर, पृ० 13)।

आदित्यसेन के अफसढ शिलालेख (फ्लीट, सख्या 42) से ज्ञात होता है कि कुमारगुप्त ने, जिसने मौखरि नरेश ईशान्वर्मन पर विजय प्राप्त की थी, प्रयाग मे धार्मिक आत्मोसर्ग किया था (दे० रा० भडारकर वाल्यूम, पृ० 180-81)।

प्रयाग (चीनी, पो-लो-ये-किया) आधुनिक इलाहाबाद है। भागवत पुराण (VII. 14, 30, X 79, 10) के अनुसार यह एक क्षेत्र है। प्राचीन बौद्ध ग्रंथो मे पयाग या प्रयाग गगा तट पर स्थित एक तीर्थ या घाट बतलाया गया है (मज्झिम, I, 39)। महापनाद द्वारा अधिकृत प्रासाद यहाँ पर जल-निमग्न हो गया था (पपचसूदनी, I, पृ० 178)। प्रयाग मे गगा, यमुना एव सरस्वती नामक नदियो का सगम है। हिंदू इस सगम को बहुत पुनीत मानते है। सौर पुराण (अध्याय, V 67, श्लोक, 16) मे गगा-यमुना के सगम का उल्लेख है (तु० रामायण अयोध्याकाण्ड, 54 वाँ सर्ग, श्लोक 2-5)। कालिदास ने अपने रघुवश (XIII. 54-57 मे इस सगम का उल्लेख किया है। महाभारत (अध्याय, 82, 125-128) के अनुसार सरस्वती सगम सार्वलौकिक रूप से पुनीत माना गया है। इस सगम पर स्नान करने से मनुष्य अत्यधिक पुण्यार्जन करता है। राम, लक्ष्मण एव सीता ने गगा-यमुना के सगम पर जल के दो प्रकार के रग देखे थे (रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग, 54, श्लोक, 6)।

चीनी यात्री युवान-च्वाङ् के, समय मे इस प्रदेश की परिधि 5,000 ली और इसकी राजधानी की 20 ली से अधिक थी। उसने इस प्रदेश, यहाँ की जल-वायु तथा निवासियो की प्रसशा की है। उसके अनुसार यहाँ पर केवल दो बौद्ध अधिष्ठान एव अनेक देव मदिर थे। यहाँ के अधिकाश निवासी अ-बौद्ध थे (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, 361)। हरे-भरे शाक-पात एवं फलो के वृक्ष

यहाँ पर प्रचुर मात्रा मे थे। यहाँ की जलवायु गरम एव सह्य थी। यहाँ के निवासी मृदुल एवं विनम्र प्रवृत्ति के थे। वे विद्यानुरक्त थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, 230)। ब्रह्म पुराण (अध्याय, 10-12) के अनुसार कुरु, दुष्यत एव भरत नामक तीन राजाओं ने यहाँ शासन किया था। विक्रमोर्वशी का नायक पुरुरवा यहाँ का शासक बतलाया गया है। प्रयाग धंग के अधिकार में था, जिसके बारे मे कहा जाता है कि उसने जाह्नवी एव कालिंदी के जल में अपना शरीर परित्याग करके परमगति प्राप्त की थी (एपि० इ०, I, 139, 146)। कमौली दानपत्र (1172 ई०) के अनुसार गाहडवाल-नरेश जयचंद्र ने प्रयाग मे वेणी मे (एपि० इ०, IV. पृ० 122) स्नान किया था जिसके (प्रयाग के) स्थान पर हिंदू शासन के उत्तरार्ध काल में प्रतिष्ठानपुर का उत्थान हुआ (नेविल, इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 195)।

पुष्फवती—यह काशी राज्य की राजधानी, वाराणसी का एक नाम था (भंडारकर, कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 50–51)। चंदकुमार पुष्फवती के एकराज का पुत्र था। वह मुक्त हृदय से दान देता था और वह कोई वस्तु पहले भिखारी को दिये बिना नही खाता था (चरिया-पिटक, सपादक, बि० च० लाहा, पृ० 7)।

पूर्वाराम (पुब्बाराम)—जेतवन के उत्तरपूर्व मे श्रावस्ती के समीप स्थित यह एक बौद्ध-विहार था, जिसका निर्माण मिगार नामक श्रेष्ठि की वधू विशाखा ने करवाया था। जिन परिस्थितियों के कारण इस विहार का निर्माण करवाया गया था, उनका वर्णन धम्मपद भाष्य मे किया गया है (धम्मपद कामेंट्री, जिल्द, I, 384-420)। एक दिन विशाखा ने जेतवन विहार से घर लौट कर देखा कि वह अपने मूल्यवान हार के विषय मे सब कुछ भूल चुकी है जिसे उसने वहाँ उतारा था और वही विहार मे छोड़ आयी थी। उसे पुनः प्राप्त कर लेने पर उसने इसे पहनने से इंकार किया और उसे महँगे दामो मे बेच दिया। इस धन का उपयोग उसने एक स्थान खरीद कर एक विहार बनवाने में किया और इसे उसने सघ को समर्पित कर दिया। इस बिहार के निर्माण मे लकडी एव पत्थर का प्रयोग किया गया था जो पहली एव दूसरी मजिलो मे असख्य कमरो से युक्त एक भव्य दुमजिली इमारत थी (धम्मपद कमेंट्री, I, 414)। यह बिहार पुब्बाराम-मिगारमातु-पासाद नाम से विश्रुत थी। बुद्ध ने मिगारमाता के प्रासाद में रहते समय अग्गण्ण-सुत्तांत का प्रवचन दिया था (दीघ, III, पृ० 80)। विस्तृत विवरण के लिए देखिए, बि० च० लाहा, श्रावस्ती इन इंडियन लिटरेचर, (मे० आर्क० स० इं० सं०, 50)।

पुष्कलावती—(पुष्करावती, एरियन की प्युकेलाओटीज (Peukelaotis) तथा डायोनिसस पेरीगेटीज की प्युकेली (Peukalei) —सिन्धु नदी के पश्चिम मे स्थित यह गंधार की एक प्राचीन राजधानी थी। इसे स्वात एव काबुल-नदी के सगम से थोडा पहले स्थित आधुनिक चारसद्दा (चारषदा)[1] से समीकृत किया जाता है (वा० श० अग्रवाल, ज्यॉग्रेफिकल डेटा इन पाणिनीज अष्टाध्यायी, ज० उ० प्र० हि० सो०, जिल्द, XVI, भाग I, पृ० 18)। कुछ अन्य विद्वानो के अनुसार, प्रकारातर से पुष्कर नाम से विख्यात इस नगर को स्वात नदी के तट पर पेशावर से 17 मील पूर्वोत्तर मे स्थित आधुनिक प्राग एव चारसद्दा से समीकृत किया जा सकता है (शाफ, द पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन सी, पृ० 183-184, ज० ए० सो० ब०, 1889, iii; कनिंघम, ए० ज्या० इं०, 1924, 57 और आगे)। बताया जाता है कि उसकी स्थापना भरत के पुत्र एव राम के भतीजे पुष्कर ने की थी (विष्णु पुराण, विल्सन सस्करण, जिल्द, IV, अध्याय, 4)। सिकदर के अभियान के समय (326 ई० पू०) यह भारतीय राजा हस्ति (यूनानी एस्टीज-Astes) की राजधानी थी। टॉलेमी ने इसे प्रोक्लाइस (Proklais) कहा है जो एक विशाल एव जनाकीर्ण नगर था। मायुस (लगभग 75 ई० पू०) के शासनकाल मे यहाँ पर शको का शासन हो गया (द्रष्टव्य, कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, भाग, I, 560; ब्राउन, क्वायस ऑव इडिया, पृ० 24)। तारानाथ के अनुसार कनिष्क का पुत्र यहाँ रहा करता था (द्रष्टव्य वि० स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 277, पाद टिप्पणी, 1)। बृहत्सहिता मे इसका उल्लेख एक नगर के रूप में हुआ है (XIV 26)। विस्तृत विवरण के लिए देखिये, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 14)।

रैम्य-आश्रम—यह हरद्वार (हरिद्वार) के उत्तर मे थोड़ी दूर पर कुब्जाम्र मे स्थित था।

रत्नवाहपुर—घर्घरा नदी द्वारा सिंचित यह कोशल मे स्थित एक कस्बा था। इक्ष्वाकुवशीय धर्मनाथ यहाँ पर राजा भानु की पत्नी, सुव्रता से उत्पन्न हुये थे। धर्मनाथ के सम्मान मे यहाँ पर एक चैत्य बनवाया गया था (बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 175)।

राधाकुण्ड—इसे आरिट भी कहा जाता है, क्योकि श्रीकृष्ण ने बैल का रूप

---

[1] आर्क० स० इं० रि०, II, (1871), 90, और आगे; XIX (1885), 96 और आगे; एनुअल रिपोर्ट, आर्क० स० इं०, 1902-3 (1904), पृ० 41 और आगे।

धारण करके यहाँ पर अरिष्ट नामक एक असुर का वध किया था। कृष्ण के गोहत्या करने के कारण, उनकी सहगामिनी राधा ने उनका शरीर स्पर्श करना अस्वीकार कर दिया था और इसलिए कृष्ण ने अर्जित पापो का मार्जन करने के लिए अपने स्नानार्थ एक सरोवर खुदवाया। इस सरोवर का नाम श्यामकुड था। राधा ने भी श्यामकुड के बगल मे राधाकुड नामक एक सरोवर बनवाया था।

राजपुर—(को-लो-शी-पु-लो) इसे कश्मीर के दक्षिण मे स्थित राजौरी से समीकृत किया गया है। राजोरी जिला उत्तर मे पीरपजल, पश्चिम मे पुनाच, दक्षिण मे भीमबर तथा पूर्व मे रिहासी एव अखनूर से घिरा हुआ है (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, 148-149)।

राजघाट—यह वाराणसी नगर मे स्थित है जहाँ मे गोविदचद्रदेव के दो ताम्रपत्र प्राप्त हुए थे (एपि० इ०, XXVI, भाग VI, अप्रैल, 1942, पृ० 268 और आगे)।

रामदासपुर—यह पजाब मे स्थित अमृतसर ही है जिसका नामकरण एक सिख गुरु के आधार पर किया गया था, जिसने नानक के प्रियस्थल किसी प्राकृतिक जलकुड के समीप ही एक कुटी बनवायी थी (न० ला० दे०, ज्यॉग्रफिकल डिक्शनरी, पृ० 165)।

रामगंगा—फर्रुखाबाद एव हरदोई के मध्य गगा मे रामगगा नामक एक सहायक नदी मिलती है जो अल्मोडा के पहले कुमायूं पर्वतमाला से निकलती है।

रामगाम—उत्तरप्रदेश के बस्ती जिले मे स्थित यह रामपुर देवरिया है। यहाँ कोलियो का सन्निवेश था। बुद्धकाल मे कोलिय एक गणतत्रात्मक कुल था जिनके दो आवास थे, प्रथम रामगाम मे और दूसरा देवदह मे, सुमगलविलासिनी (पृ० 260-62) मे उनकी उत्पत्ति के विषय मे। एक रोचक कहानी उल्लिखित है। महावस्तु (I, 352-55) के अनुसार कोलियजन कोल ऋषि के वशज थे। कुणाल-जातक (जातक, V, 413) मे कोलियो को कोलवृक्ष पर रहते हुए बतलाया गया है। इसीलिए उन्हे कोलिय कहा जाने लगा। बुद्ध ने शाक्यो एव कोलियो मे जिनमे दीर्घकाल से परस्पर विग्रह था, समझौता कराया था (थेरगाथा, V, 529, जातक, कावेल, V, पृ० 56)। शाक्य एव कोलिय गणो ने रोहिणी नदी को एक ही बाँध से बाँधा था और वे इस नदी के जल द्वारा अपना कृषि कर्म किया करते थे (जातक, कावेल, V, 219 और आगे)। शाक्यो एव कोलियो मे इस नदी पर अधिकार विषयक विवाद उठने पर बुद्ध ने अपने शाक्यवंश मे शाति पुनरस्थापित करने मे सफलता प्राप्त की थी (जातक, I, 327; IV. 207)। कनिंघम ने

इसे आधुनिक रोवाई या रोहवैनी से समीकृत किया है, जो गोरखपुर मे राप्ती मे मिलनेवाली एक छोटी सरिता है।

रोहिणी—यह नदी शाक्यो एव कोलिय प्रदेशों की मध्यवर्ती सीमा थी (थेरगाथा, V, 529, पृ० 56)।

सहलाटवी—वाटाटवी के अतर्गत देखिए।

शम्भु—इस भारतीय नाम का युनानी पर्याय सैबोस (Sambos) है। ग्रीक एव लैटिन लेखको के अनुसार सैबोस मूसिकेनोस प्रदेश के समीपवर्ती पर्वतीय क्षेत्रो पर राज्य करता था। इन दो पडोसी राज्यो मे पारस्परिक ईर्ष्या एव शत्रुभाव के अतिरिक्त अन्य किसी प्रकार का सबध न था। इस प्रदेश की राजधानी का नाम सिन्दिमन (Sindiman) था। इसे सिधु नदी के तट पर स्थित सेहवान नामक नगर से समीकृत किया गया है (मैक्रिडिल, इनवेजन ऑव अलेक्जेंडर, पृ० 404)। सैबोस ने सिकदर को आत्मसमर्पण किया था।

संकाश्य (पालि, संकस)—इसे उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले मे स्थित आधुनिक सकिस नामक ग्राम से समीकृत किया गया है जो कुडारकोट मे पश्चिम उत्तर की ओर 36 मील दूर, इटावा जिले के आजमनगर परगना मे स्थित अलीगज से दक्षिण, दक्षिणपूर्व की ओर 11 मील दूर और इटावा से 40 मील दूर उत्तर, **उत्तर-पूर्व की ओर स्थिति है**। कुछ विद्वानो के अनुसार सकस्स, सकिस्सा या सकिसा बसतपुर ही है, जो इक्षुमती नदी के उत्तरी तट पर स्थित है, जिसे अब अनरजी और कन्नौज के बीच प्रवाहित होनेवाली कालीनदी कहते है जो फतेहगढ मे 23 मील पश्चिम मे इटावा जिले मे तथा कन्नौज मे 45 मील उत्तर-पश्चिम मे स्थित है। पतजलि के महाभाष्य (भाग, I, पृ० 455) के अनुसार यह गवीधुमत से चार योजन दूर है (2, 3, 21, द्रष्टव्य 'ए स्टोन इस्क्रिप्शस फ्राम कुडारकोट, एपि० इ०, I, 179-180)। पुरातत्वीय अवशेषो के लिए हीरानद शास्त्री द्वारा सकिसा मे किये गये उत्खनन के विवरण द्रष्टव्य है (ज० उ० प्र० हि० सो०, III, 1927, पृ० 99-118)।

सप्तसिन्धु—यह पजाब है, जहाँ पर भारत मे आने के पश्चात् प्राचीन आर्य सबसे पहले बसे थे (ऋग्वेद, VIII 24, 27)। पतजलि के महाभाष्य (I 1 1 पृ० 17) मे इसका उल्लेख है। सात सिन्धु अधोलिखित है

इरावती, चद्रभागा, वितस्ता, विपाशा, शतद्रु, सिन्धु और सरस्वती।

सरभू (सरयू)—रामायण (आदिकाण्ड, 14 वॉ सर्ग, श्लोक, 1-2) मे कहा गया है कि राजा दशरथ ने इस नदी के तट पर अश्वमेध यज्ञ सपादित किया था। ऋष्यश्रृग के नेतृत्व मे अनेक श्रेष्ठ ब्राह्मणो ने इसमे भाग लिया था। राम

और लक्ष्मण, सरयू तथा गंगा के संगम पर गये थे (रामायण, आदि काण्ड, 23 वाँ सर्ग, श्लोक, 5)। महाभारत(84.70) मे इस नदी का उल्लेख सरयू नाम से है। सरयू का वर्णन पाणिनि की अष्टाध्यायी (VI, 4. 174) में किया गया है। योगिनीतंत्र (2.5) मे इसका उल्लेख है। कालिका पुराण (अध्याय, 24. 139) में एक पवित्र नदी के रूप में सरयू का वर्णन मिलता है। पद्म पुराण (उत्तर-खण्ड, श्लोक, 35-38) मे भी इसका वर्णन किया गया है। कालिदास ने अपने रघुवश (VIII. 95; IX. 20; XIII 60-63; XIX. 40) में इसका वर्णन किया है। यह नदी हिमालय से निकलती है (मिलिन्दपन्ह, पृ० 114)। ऋग्वेद (IV. 30,18; X 64, 9; V. 53, 9) मे इसका वर्णन प्राप्त होता है। तुर्वसु और यदु जिन्होने इस नदी को पार किया था, चित्ररथ एव अर्ण को पराजित किया था। यह गंगा की सहायक नदी घाघरा या गोगरा ही है जिसके तट पर अयोध्या नगरी स्थित थी। टॉलेमी द्वारा वर्णित सैरबोस (Sarabos) यही है। यह प्राचीन बौद्ध-ग्रथो मे वर्णित पाँच महानदियो मे से एक है। यह नदी बिहार के छपरा जिले मे गंगा में मिलती है। बहराइच जिले के उत्तरपश्चिम कोने पर इसमे उत्तर पूर्व से एक उपनदी मिलती है, जो सरयू के नाम से प्रवाहित होती है। अयोध्या की प्राचीन नगरी इस नदी के तट पर स्थित थी, जिसका उल्लेख भागवत पुराण (V. 19, 18; IX 8 17; X. 79, 9) मे प्राय. किया गया है। रामायण (उत्तरकाण्ड, 123 वॉं सर्ग, श्लोक, 1) के अनुसार सरयू नदी अयोध्या नगरी से आधे योजन दूर पर प्रवाहित होती है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 22.

सरस्वती—सरस्वती एव दृषद्वती उत्तरी भारत की दो ऐतिहासिक नदियाँ हैं जो सिंधु नदी समूह से असपृक्त, स्वतत्र रूप से प्रवाहित होती है। मनु के ब्रह्मावर्त क्षेत्र को इन्ही पुनीत सरिताओ के मध्य स्थित बतलाया गया है। यह हिमाचल प्रदेश मे शिमला और सिरमौर क्षेत्रो से हो कर एक उभार बनाती हुयी, दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है। मनु ने उस स्थान को विनशन की सज्ञा दी है, जहाँ से यह अदृश्य होती है[1]। तैत्तिरीय सहिता (VII. 2, 1, 4), पचविश ब्राह्मण (XXV. 10, 1), कौषीतकि ब्राह्मण (XII 2,3), शतपथ ब्राह्मण (I, 4. 1. 14) तथा ऐतरेय ब्राह्मण (II. 19. 1. 2) मे इस नदी का वर्णन किया गया है। ऋग्वेद मे (I, 89,3; 164,19; II. 41, 16; 30, 8; 32, 8; III. 54, 13; V. 42, 12; 43, 11; 46, 2; VI. 49, 7; 50-12; 52,

[1] तु०, महाभारत, 82.3; प० पुराण, अध्याय, 21.

6; VII. 9, 5, 36, 6; 39, 5; X. 17, 7; 30, 12; 131. 5; 184, 2) मी मे इसका उल्लेख आया है। पद्म पुराण(सृष्टिखण्ड, अध्याय, 32, श्लोक, 105) मे गगोद्भेदतीर्थ का वर्णन है, जहाँ यह नदी गगा में मिलती है। कात्यायन (XII. 3. 20, XXIV. 6,22), लाट्यायन(X. 15, 1; 18, 13, 19, 4), आश्वलायन (XII 6. 2. 3) तथा साख्यायन (XIII. 29) श्रौतसूत्रो मे इस नदी के तट पर किये गये यज्ञो की बड़ी महत्ता और पवित्रता का उल्लेख किया गया है। कालिदास ने अपने रघुवश (III 9) में इसका वर्णन किया है। योगिनीतत्र (2.3, 2.5; 2.6) मे मी इस नदी का वर्णन प्राप्त होता है। सिद्धान्तशिरोमणि मे ठीक रूप से सरस्वती का वर्णन कही पर दृष्टिगोचर एव कही पर अदृश्य रहने वाली नदी के रूप मे किया गया है। सप्रति अस्तित्वशीला यह नदी शतद्रु एव यमुना के बीच प्रवाहित होती है। वैदिक आर्य इसे एक ओजवती नदी के रूप मे जानते थे जो समुद्र मे मिलती थी (मैक्समूलर, ऋग्वेद सहिता, पृ० 46)। यह नदी हिमालय से निकलती थी। हिमालय पर्वतमाला मे जिसे शिवालिक कहा जाता है यह सिरमौर पहाडियो से निकलती है और अबाला मे आद-बदरी मे यह मैदान मे आती है । हिंदू इसे पवित्र नदी मानते है। महामारत के अनुसार (83, 151, 84, 66) लोग इस पुण्यसलिला के तट पर पितरो को पिण्डदान दिया करते थे। इस नदी के तट पर एक वन स्थित था जिसे अम्बिकावन कहा जाता था (भागवत पुराण, X. 34, 1-18) और जो अम्बिका के कारण पवित्र माना जाता था।

सर्द (सर्दी)—यह पवित्र स्थान किशनगगा के दाहिने तट पर काश्मीर मे कामरज के निकट, मधुमती के सगम के समीप स्थित है। शाण्डिल्य ऋषि ने यहाँ पर तपस्या की थी। कश्मीर-नरेश ललितादित्य ने जब से किसी गौड़ नरेश की हत्या कर दी थी, तब बंगालियो ने इस मदिर का दर्शन करने के बहाने कश्मीर मे प्रवेश किया था और परिहासकेशव की प्रतिमा के भ्रम मे विष्णु की प्रतिमा नष्ट कर दी थी। यहाँ तक कि सुविख्यात ऋषि शकराचार्य भी इस मदिर मे उस समय तक नही घुसने पाये थे, जब तक कि उन्होने उनसे पूछे गये प्रश्नो का उत्तर नही दिया था।

शतद्रु—गंगा की सहायक, यह आधुनिक सतलज है। ऋग्वेद मे (III. 33. 1; X. 75. 5) इस नदी का वर्णन पजाब की सबसे पूर्वी नदी के रूप मे किया गया है। इसका वर्णन यास्क के निरुक्त (IX 26) मे मी हुआ है। भागवत पुराण मे (V. 19, 18) इसका एक नदी के रूप मे उल्लेख है। एरियन के समय मे यह नदी स्वतत्र रूप से कच्छ की खाड़ी मे गिरती थी (इंपीरियल

गजेटियर ऑव इंडिया, 23, 179)। हस्तिनापुर-नरेश सुबाहु के पुत्र राजकुमार सुधनु की पत्नी, किन्नरी मनोहरा ने हिमालय जाते समय यह नदी पार की थी और तब कैलास पर्वत की ओर बढी थी (बि० च० लाहा, ए स्टडी ऑव द महा-वस्तु, पृ० 118)। शतद्रु, टॉलेमी द्वारा वर्णित जरड्रोस (Zardros) और प्लिनी द्वारा वर्णित हेसीड्रस (Hesydrus) है। यह एक पारे-हिमालय नदी-है, क्योंकि इसकी द्रोणी मुख्यत हिमालय के उत्तर में है। इस नदी का स्रोत मान-सरोवर की पश्चिमी झील के पश्चिमी क्षेत्र में बतलाया जाता है। इस क्षेत्र मे कामेतपर्वत के कुछ आगे तक, जहाँ से यह थोडा दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड जाती है, इसका प्रवाह पश्चिमाभिमुख है। प्राचीनकाल मे सिधु नदी के परिरोध तक इसका स्वतत्र प्रवाह था (पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 291, टिप्पणियाँ)। सतलज और ब्यास का सयुक्त प्रवाह घग्घर नाम से विश्रुत है। शतद्रु का उल्लेख महाभारत मे भी हुआ है (I, 193.10)। विस्तृत विवरण के लिए, द्रष्टव्य रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 114।

शौरीपुर—जैन सूत्रों में वर्णित मथुरा का यह एक अन्य नाम था उत्तरा-ध्ययन, सै० बु० ई०, XLV, पृ० 112, कल्पसूत्र, सै० बु० ई०, XXII, पृ० 276)।

सागल—सागल या शाकल जिसे टॉलेमी ने यूथेडेमिया भी कहा है, मद्रों की राजधानी थी (महाभारत, II, 32, 14)। इसे अब भी मद्रदेश कहा जाता है। कनिंघम ने इसे रावी नदी के पश्चिम में स्थित सगलवाला टिबा मे समीकृत किया है (ऐन्श्येंट ज्यॉग्रैफी, पृ० 180)। कुछ विद्वानों ने इसे स्यालकोट या मद्रनरेश शल्य के किले से समीकृत किया है (प्रोसीडिंग्स ऑव द फोर्टीन्थ ओरियटल काग्रेस में फ्लीट की टिप्पणी, द्रष्टव्य कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, 686)। युवान-च्वाङ् के मतानुसार शाकल के प्राचीन नगर शे-की-लो, (She-kei-lo) की परिधि लगभग 20 ली थी। यद्यपि उसका प्राकार ध्वस्त हो चुका था, किंतु इसकी नीव अब भी दृढ एव पुष्ट थी। यहाँ पर एक विहार था जहाँ हीनयान सप्रदाय के 100 भिक्षु रहा करते थे। इस विहार के पश्चिमोत्तर में, अशोक द्वारा निर्मित कोई 200 फीट ऊँचा एक स्तूप था। मिलिदपञ्ह के अनुसार (क्वेश्चन्स ऑव मैनेन्डर, पृ० 1-2) यह नगर व्यापार का एक महान् केंद्र था। यौनकों के देश मे यह एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर था। यह एक सुसिंचित एव पर्वतीय सुरम्य देश मे स्थित था। अनेक दृढ अट्टालक (बुर्ज) एव प्राकार (परकोटा) से युक्त इसका प्रतिरक्षण दृढ था। यहाँ की सडकों की स्थिति सुदर थी। यहाँ पर अनेक भव्य प्रासाद थे। इस नगर का उल्लेख प्राय महाभारत मे किया गया है (तत शाकल (सागल)-मभ्येत मद्राणा पुटभेदनम)। दिव्यावदान (पृ० 434) मे भी इसका उल्लेख है। शाकल 326

ई० पू० मे सिकदर महान् के आधिपत्य मे चला गया था जिसने इसे निकटस्थ झेलम तथा चेनाब के मध्यवर्ती क्षेत्र के क्षत्रप के अधीन कर दिया था (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, 549-550)। मेसीडोनिया-निवासियो ने सागल को नष्ट कर दिया था किंतु डेमिट्रियस नामक एक बाख्त्री यवन राजा ने इसका पुनर्निर्माण कराया था और अपने पिता यूथेडेमास के सम्मान मे इसे यूथीडेमिया कहा (इ० ऐ०, 1884, पृ० 350)। लगभग 78 ई० मे शाकल मे राज्य करने वाले शक्तिशाली यूनानी-नरेश * मिलिद (मेनेण्डर) के शासनकाल मे यहाँ के निवासी सुखी थे। मिलिद के शासनकाल के पहले ही शाकल मे बौद्धमत का प्रभाव पड चुका था तु० श्रीमती रिज डेविड्स, साम्स ऑव द सिस्टर, पृ० 48, साम्स ऑव द ब्रेदेरेन, पृ० 359)। छठी शताब्दी ई० के प्रारभिक भाग मे शाकल हूण-विजेता मिहिर कुल की राजधानी बन चुकी थी जिसने अपना अधिकार इस नगर तथा सभी निकटवर्ती प्रातो पर कर लिया था (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, 549, 550)। मद्र, कलिंग एव वाराणसी के राजाओ मे वैवाहिक सबध होते थे (कावेल, जातक, IV, पृ० 144-145, जातक V, 22)। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 54 और आगे, मैक्रिडिल, ऐंश्येंट इडिया ऐंज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, एस० एन० मजूमदार शास्त्री द्वारा सपादित, 1927, पृ० 122 और आगे।

साकेत—साकेत उत्तर कोशल की राजधानी थी। पतजलि ने अपने महाभाष्य (3, 3, 2, पृ० 246, I, 3, 2 पृ० 608) मे इसक वर्णन किया है। टॉलेमी द्वारा वर्णित सोगेड (Sogeda) तथा फा-ह्यान द्वारा वर्णित शा-ची (Sha-chi) यही है, (लेग्गे, ट्रावेल्स ऑव फा-ह्यान, पृ० 54)। कोशल जनपद मे यह एक अत्यत महत्त्वपूर्ण नगर हो गया था, यहाँ से यमुना पार करने के पश्चात् कौशाम्बी जाया जा सकता था। श्रेष्ठ घोडो के सात पुनर्योजनो से श्रावस्ती से यहाँ पहुँचा जा सकता था (सत्तरथ विनितानि—मज्झिम, I, 149)। कोशल के दक्षिण-पश्चिमी सीमात पर स्थित यह एक नगर था। भारत के छह महानगरो मे यह विख्यात था (दीघ निकाय, II, 146)। बुद्ध-काल के ठीक पूर्व यह राजधानी थी (कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 51)। यह वही नगर था, जहाँ पर विशाखा-मिगारमाता का पिता धनजय श्रेष्ठि रहता था (धम्मपद कामेंट्री, जिल्द, I, भाग 2, पृ० 386-7)। एक बार सारिपुत्त साकेत मे रुके थे (विनय, I, पृ० 289)। जीवक यहाँ आया था और उसने किसी श्रेष्ठि की रुग्णा पत्नी की

***मेनेन्डर (मिलिन्द) वस्तुतः एक इंडो-ग्रीक नरेश था। —अनूवक**

चिकित्सा की थी (वही, I, 270 और आगे)। साकेत से श्रावस्ती जाने वाली सड़क पर डाकू रहते थे जो यात्रियों के लिए खतरनाक थे। यहाँ तक कि भिक्षुओं की सपत्ति भी लूट ली जाती थी और कभी-कभी डाकू उनको मार डालते थे। राजकीय सैनिक डकैती के घटनास्थल पर पहुँचते थे और वे उन डाकुओं की हत्या कर डालते थे जिन्हें वे पकड़ पाते थे (विनय, I, पृ० 88)। तीस वनवासी भिक्षुओ को समय से श्रावस्ती, जहाँ पर बुद्ध अनाथपिण्डिक के जेतवन मे ठहरे हुए थे, न पहुँच सकने के कारण, साकेत मे रुक जाना पडा था (विनय, I, पृ० 253)। सावत्थी एव साकेत के बीच तोरणवत्थु नामक एक गाँव था (सयुक्त IV. 374 और आगे)। जातको में साकेत को एक महत्त्वपूर्ण नगर बतलाया गया है (जिल्द, III, 217; 272, V. 13; VI. 228)। साकेत विशेषतः गुप्त राजाओ से सबंधित था।

शाल्व—गोपथ ब्राह्मण (1, 2, 9) मे शाल्व देश का उल्लेख है। पाणिनि के सूत्र (4, 1, 173, 178) मे यह बतलाया गया है कि शाल्व जनपद मे औदुम्बर (उदुम्बर), तिलखल, मद्रकार, युगन्धर, भूलिंग एवं शरदण्ड समिलित थे। पाणिनि ने वैधूमाग्नि नामक एक नगर का भी उल्लेख किया है, जिसे विधूमाग्नि ने शाल्व देश मे निर्मित कराया था (4 2 76; 4 2. 133; 4. 1. 169)। पतजलि ने अपने महाभाष्य मे (4, 2, 76) इसका वर्णन किया है। शाल्वो ने समवत. उस प्रदेश को अधिकृत किया था, जहाँ पर आधुनिक अलवर (सप्रति राजस्थान मे) स्थित है (कनिंघम, ए० रि० आर्क० स० इ०, XX. पृ० 120, मत्स्य पुराण, अध्याय 113); विष्णु पुराण, II, अध्याय, III, श्लोक, 16-18 एव ब्रह्म पुराण, अध्याय, 19, 16-18) मे शाल्वो को पश्चिम मे स्थित बतलाया गया है। महाभारत के अनुसार शाल्व देश कुरुक्षेत्र के समीप स्थित या (विराट पर्व, अध्याय, 1) । यह सावित्री के पति सत्यवान के पिता की राजधानी थी (वन पर्व, अध्याय, 282)। शाल्वो की राजधानी शाल्वपुर थी, जिसे सौभगनगर भी कहा जाता था (महाभारत, वन पर्व, अध्याय, 14)। महाभारत के युद्ध मे शाल्व पाण्डवो के विरुद्ध दुर्योधन के सहायक थे (भीष्म पर्व, अध्याय, 20, 10, 12, 15)।

सामगाम—यह शाक्यो के देश में स्थित था, जहाँ पर बुद्ध एक बार रुके थे (अंगुत्तर, III, 309; मज्झिम, II, 243)।

सांगल—यह प्राकारावेष्ठित नगर गुरुदासपुर जिले में फतेहगढ़ के निकट कही पर स्थित था (ज० रा० ए० सो०, 1903, 687)। यह कठो (Catheans) का प्रमुख केद्र था जो स्वतत्र प्रसधक-कुलो (गण राज्यो) में अग्रणी थे। विस्तृत

विवरण के लिए, द्रष्टव्य बि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 22)।

सारनाथ—(शारगनाथ) सारनाथ स्तम-लेख मे (वाराणसी जिले में स्थित प्राचीन स्थल) सारनाथ का वर्णन है जो वाराणसी से लगभग सात मील दूर पर स्थित है जहाँ पर बौद्ध अवशेषो का एक विशाल सग्रहालय है (का० इं० इ०, जिल्द, III,)। सारनाथ शिलालेख धमेख स्तूप के उत्तर से तथा गुप्तकालीन प्राचीन विहारो के अवशेषो पर पूर्व से पश्चिम तक फैले हुए ऊँचे टीले के दक्षिण से खोद कर निकाला गया था (एपि० इ०, III, 44, एपि० इ० IX. 319-28)। इसका प्राचीन नाम इसिपतनमिगदाय (ऋषिपत्तन मृगदाव) है जहाँ पर बुद्ध ने धर्मचक्र-प्रवर्त्तन किया था[1]। कनिंघम ने इसे उत्तर मे विशाल धमेख स्तूप से दक्षिण मे चौकुडी टीले तक लगभग आधे मील तक फैले हुए सुरम्य जगलो से आच्छादित क्षेत्र से समीकृत किया है (आर्क्यालॉजिकल रिपोर्ट, I, पृ० 107)। दूसरी शताब्दी ई० पू० मे इसिपतन में बौद्ध भिक्षुओं का एक विशाल सम्प्रदाय था। युवान-च्वाङ् के काल मे यह एक वैहारिक केंद्र था, क्योकि उसने यहाँ पर 1,500 बौद्ध भिक्षुओं को हीनयान बौद्धमत का अध्ययन करते हुए पाया था। इसिपत्तन के मृगवन की उत्पत्ति के विषय मे पाठकों का ध्यान निग्रोधमिग जातक की ओर आकृष्ट किया जाता है (जातक, I, 145 और आगे)। मृगवन काशीनरेश द्वारा मृगो के निर्भय विचरण के लिए प्रदत्त वन था।

बौद्ध सम्प्रदाय के कुछ अति प्रसिद्ध सदस्य इस स्थान पर समय-समय पर रहे हैं। इसिपतन मे हुए लिपिबद्ध धर्म परिवर्तनो मे सारिपुत्त और महाकोठ्ठित तथा महाकोठ्ठित एव चित्तहत्थी-सारिपुत्त मे हुए परिवर्तन उल्लेखनीय है (सयुत्त, II, पृ० 112-114, III, पृ० 167, 69; 173-7, IV, पृ० 384-6, अगुत्तर III, पृ० 392 और आगे)। बुद्ध ने इसिपतन (ॠषिपत्तन) मिगदाय (मृगदाव) को चार तीर्थस्थानो मे एक बतलाया था, जहाँ उनके श्रद्धालु अनुयायियो को जाना चाहिए (बुद्धवश कामेंट्री, पृष्ठ 3, दीघ निकाय, II, 141)। इसे इसिपत्तन इसलिए कहा जाता था कि हिमालय से आकाश मार्ग से जाते हुए ऋषि यहाँ उतरा करते थे या यहाँ से अपनी आकाश-यात्रा पर प्रस्थान करते थे। इसिपतन में बुद्ध के प्रथमोपदेश के साथ ही उनके जीवन से सबधित कई अन्य घटनाओ का वर्णन बौद्ध ग्रथो मे किया गया है (विनय I, 15 और आगे, अगुत्तर निकाय,

---

[1] **मज्झिम, I, 170 और आगे; संयुत्त, V. 420 और आगे; कथावत्थु 97, 559.**

I, 110 और आगे; 279-80, III, 392 और आगे, 399 और आगे; सयुत्त निकाय, I, 105-6; V. 406-8; दीपवस, पृ० 119-20; थेरीगाथा कामेंट्री, पृ० 220, बि० च० लाहा, ऐंश्येंट इंडियन ट्राइब्स, 1926, पृ० 22-25)। सारनाथ मे किये गये पुरातत्वीय उत्खननो के सक्षिप्त विवरण के लिए द्रष्टव्य ज० रा० ए० सो०, 1908, 1088 और आगे; आर्क० स० इ० रि०, I, 105 और आगे, ए० रि० आर्क० स० इ०, 1904-1905, 59 और आगे; 1906-1907, 68 और आगे; 1907-1908, 43 और आगे; 1914-15, 97 और आगे, 1919-20, 26 और आगे, 1921-22, 42 और आगे, 1927-28, 95 और आगे। बी० मजूमदार की पुस्तक, गाइड टु सारनाथ, 1937 भी पठनीय है।

सावत्थी (श्रावस्ती)—प्राचीन स्थान श्रावस्ती का आधुनिक समानार्थक सहेठ-महेठ[1] है। यह पूरा क्षेत्र उत्तरप्रदेश मे गोडा एव बहराइच जिलो की सीमा पर स्थित है और बलरामपुर रेलवे स्टेशन से यहाँ पहुँचा जा सकता है। बहराइच से भी यहाँ पहुँचा जा सकता है, जहाँ से यह लगभग 26 मील दूर है। ल्युडर्स तालिका (सख्या, 918, 919) मे इसका उल्लेख सावस्ती के रूप मे हुआ है। यहाँ से कुछ मूर्तियाँ उपलब्ध हुयी हैं, जिनमे अधिकाशत बौद्ध धर्मपरक, इससे कुछ कम जैन एव कुछ ब्राह्मण धर्मपरक हैं। बौद्ध भाष्यकार बुद्धघोष के अनुसार, मूलत सवत्थ नामक ऋषि का आवास-स्थान होने के कारण इस नगर को सावत्थी कहा जाता था। पहले यह एक धार्मिक स्थान था और कालातर में इसके परितः इस नगर का समुत्कर्ष हुआ (पपचसूदनी, I, 59-60, परमत्थजोतिका (सुत्तनिपात कामेंट्री, पृ० 300, उदान कामेंट्री, स्यामी सस्करण, पृ० 70)। चूंकि यहाँ पर मानवमात्र के लिए आवश्यक प्रत्येक वस्तु उपलब्ध थी, अतएव इसे सावत्थी (सब्ब-अत्थि) कहा जाता था। इस नगर का निर्माण राजा श्रावस्त या श्रावस्तक द्वारा किया गया बतलाया जाता है (विष्णु पुराण, अध्याय, II, अश 4)। मत्स्य एव ब्रह्म पुराणो मे (XII. 29-30; VII. 53) श्रावस्त को युवनाश्व का पुत्र बतलाया गया है। महाभारत मे श्रावस्त को श्राव का पुत्र एव युवनाश्व का पौत्र बतलाया गया है (वन पर्व, 201, 3-4; हरिवश, XI.

---

[1] पुरातत्वीय समन्वेषण के संक्षिप्त विवरण के लिए द्रष्टव्य, ज० रा० ए० सो०, 1908, 1098 और आगे; आर्क० स० इं०, रि०, I, 330 और आगे; XI 78 और आगे; ए० रि० आर्क० स० इं०, 1907-8, 81 और आगे; 1910-11, पृ० 1 और आगे।

21, 22)। हर्षचरित (काणे संस्करण, 201, पृ० 50) में श्रुतवर्मन का उल्लेख है जो किसी समय श्रावस्ती का राजा था। कथासरित्सागर एव दशकुमार चरित (15, 63-79, अध्याय, V) मे क्रमशः देवसेन एव धर्मवर्धन नामक श्रावस्ती के दो नरेशो का वर्णन प्राप्त होता है। राजा धर्मवर्धन के नवमालिका नामक एक सुदरी पुत्री थी (दशकुमार चरितम्, पृ० 138)। प्रमति श्रावस्ती की अपनी यात्रा पर चलते रहे, जहाँ क्लात होने पर वह नगर के बाहर किसी भाग मे लताओं के बीच विश्राम करने के लिए लेट गये थे (वही, पृ० 136)। सपूर्ण बौद्ध साहित्य मे श्रावस्ती का वर्णन कोशल जनपद की राजधानी तथा राजगृह से दक्षिण-पशिचम मे कालक और अस्सक तक जाने वाले राजपथ पर सावत्थी एव वनसावत्थी नामक दो महत्वपूर्ण पडावो के रूप मे किया गया है। कोई एक अन्य महापथ भी अवश्य रहा होगा जिससे कोई व्यक्ति श्रावस्ती से किटागिरि होकर वाराणसी की यात्रा कर सकता था (मज्झिम, I, 473)।

श्रावस्ती नगरी अचिरावती नदी के तट पर स्थित थी (विनय महावग्ग, पृ० 190-191, 293; परमत्थजोतिका, पृ० 511)। बुद्ध के जीवन-काल मे श्रावस्तीनगर से दक्षिण की ओर निकट ही निर्मित जेतवन एव पुब्बाराम दो प्रसिद्ध बौद्ध वैहारिक अधिष्ठान एव बौद्धमत के प्रभावशाली केंद्र थे। श्रावस्ती ब्राह्मण धर्म एव वेद-विद्या का एक महत्वपूर्ण एव शक्तिशाली केंद्र भी था। यहाँ पर एक महत्वपूर्ण ब्राह्मण सस्था थी, जिसके कुलपति जानुस्सोणि थे (दीघ, I, 235, सुमगलविलासिनी II, 399, मज्झिम, I, 16)। बोधिसत्वावदानकल्पलता (61, 2) के अनुसार श्रावस्ती के स्वस्तिक नामक एक ब्राह्मण ने अपने जीविकोपार्जन के लिए कृषिकर्म ग्रहण किया था। श्रावस्ती के धनाढ्य रईसो मे राजकुमार जेत का उल्लेख किया जा सकता है, जो प्रसिद्ध जेतवन का निर्माता स्वामी एव पोषक था (पपचसूदनी, I, पृ० 60)। नगर के समीप कोशल-नरेश प्रसेनजित की रानी मल्लिका के नाम पर एक अन्य प्रसिद्ध उपवन था। बौद्धधर्म की परंपराओ मे अनाथपिण्डिक नाम से विख्यात सुदत्त ने जेतवनविहार के दान से अमर कीर्ति प्राप्त की थी तथा विशाखा ने पुब्बाराम बिहार का निर्माण कराकर अपने को अमर बना लिया था।

श्रावस्ती की भौतिक समृद्धि का कारण यह था कि यहाँ पर तीन प्रमुख व्यापारिक पथ मिलते थे तथा यह व्यापार का एक महान् केंद्र था। सोहगौरा ताम्रपत्र मे सन्निहित उपदेश जो या तो श्रावस्ती के महामात्र द्वारा प्रचलित किया गया था या वही के महामात्र के लिए उद्दिष्ट था, यह सिद्ध करने के लिए एक स्पष्ट अभिलेखीय साक्ष्य है कि जनपथो पर समुचित दूरियो एव अनुकूल बस्तियों में

ढेर सारे रस्सो, एव सार्थो के लिए उपयोगी अन्य सामग्रियो से सज्जित राज्य निर्मित गोदाम थे (वियना ओरियटल जर्नल, X 138 और आगे; इ० ऐं०, XXV 216 और आगे, ज० रा० ए० सो०, 1907, 510 और आगे, इं० हि० क्वा०, X. 54-6; अ० म० ओ० रि० इ०, XI 32 और आगे, सावतिय महामातन सासने)। ललितविस्तर के अनुसार यह नगर राजाओ, राजकुमारो, मत्रियो, सभासदो और उनके अनुगामियो आदि से परिपूर्ण था (अध्याय, 1)। यहाँ पर 57,000 परिवार थे (समन्तपासादिका, पृ० 614)। अवश्य ही यह अन्य ओरो से तोरणयुक्त एक प्राचीर द्वारा परिवृत्त रहा होगा। प्राचीर के भीतर स्थूलरूप से नगर तीन मडलो मे विभक्त रहा होगा यथा केंद्रीय, बाह्य और बाह्यतम। राजप्रासाद एव दरबार केंद्रीय भाग मे रहे होंगे। पथ-व्यवस्था की रूप-रेखा पहरेदारी को मुकर बनाने को ध्यान मे रखकर की गयी रही होगी। नगर मे राजकर्मचारियो के आवासो, धार्मिक एव शैक्षिक सस्थाओ, निजी गृहो, बाजारो और यहाँ तक कि वेश्याओ के घरो के लिए स्थानो का समुचित निर्धारण अवश्य रहा होगा।

श्रावस्ती न केवल भारतीय व्यापार की एक विशाल पण्यशाला ही वरन् धर्म एवं सस्कृति का भी एक महान् केंद्र थी। श्रावस्ती, जिसे जैन लोग चद्रपुरी या चन्द्रिकापुरी नामक अन्य सबोधन से पुकारते थे, दो प्रसिद्ध जैन तीर्थकरो सभवनाथ एव चद्रप्रभानाथ का जन्मस्थान थी (जैन हरिवशपुराण, पृ० 717, शाह, जैनिज्म इन नर्दर्न इडिया, पृ० 26)। विविध तीर्थकल्प के अनुसार श्रावस्ती मे श्री संभवनाथ की प्रतिमा से अलकृत एक चैत्य था। कपिल ऋषि यहाँ ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से आये थे। राजा जितशत्रु का पुत्र, भद्र अपने परिव्रजन-काल मे भिक्षु हो गया था और कालातर मे उसे कैवल्य प्राप्त हुआ था (बि० च० लाहा, सम जैन कैनानिकल सूत्राज, 175)। इसी नगर मे अलग होने के पश्चात् पहली बार महावीर घोषाल मंखलीपुत्र से मिले थे। महावीर यहाँ पर कई बार आये थे और उन्होने यहाँ पर एक चातुर्मास्य बिताया था (कल्पसूत्र, सुबोधिकाटीका, 103, 105, 106, आवश्यक सूत्र 221; स्टीवेसन, हार्ट ऑव जैनिज्म, 42)। जटिल, निगण्ठ, अचेलक, एक-साटक और परिब्राजक आदि इस पुर के निवासियो की इतनी अधिक सुपरिचित आकृतियाँ थी कि राजकीय गुप्तचर अपना गुप्त उद्देश्य पूर्ण करने के लिए इन संन्यासियो का वेश बना लिया करते थे (सयुत्त०, I, 78)। बुद्ध के अतिज्ञानवर्द्धक अनेक प्रवचन यही पर हुये थे। इस नगर ने बौद्ध सघ को बडी सख्या मे भिक्षु एव भिक्षुणियाँ प्रदान की थी (धम्मपद कामेंट्री, I, 3 और आगे; वही, I, 37 और आगे; वही, II, 260 और आगे; वही, II, 270 और आगे;

वही I, 115 और आगे, वही, III, 281 और आगे; वही IV 118; साम्स ऑव द ब्रेवेरेन, पृ० 7, 13, 14, 19, 20, 25, साम्स ऑव द सिस्टर्स, पृ० 19-20)।

इस नगर मे दो प्रसिद्ध चीनी यात्री, फाह्यान एव युवान च्वाङ् क्रमश. ईसा की पाँचवी और सातवी शताब्दी मे आये थे। जब फाह्यान इस नगर में आया था, यहाँ की जनसख्या कम थी। उसने महाप्रजापति गोतमी द्वारा निर्मित विहार का स्थान, आनाथपिण्डिक के घर की दीवाल एव कुएँ तथा उस स्थान को देखा था, जहाँ पर अगुलिमाल को अर्हतपद प्राप्त हुआ था (लेग्गे, ट्रावेल्स ऑव फाह्यान, 55-56)। युवान-च्वाङ् के अनुसार यद्यपि यह नगर अधिकाशत नष्ट हो चुका था, तथापि यहाँ कुछ निवासी थे। इस क्षेत्र मे अच्छी उपज होती थी, यहाँ की जलवायु सम थी और यहाँ के निवासी अपने आचरण मे ईमानदार, अध्ययनशील एव सुदर कार्यो के प्रेमी थे। यहाँ पर कई सौ बौद्ध विहार थे, जिनमे अधिकाशत. जीर्ण हो चुके थे। यहाँ पर कुछ देवमदिर तथा बहुसख्यक अबौद्ध लोग थे। यहाँ पर कई स्तूप, अनेक बौद्ध विहार और महायान धर्मावलबी अनेक बौद्ध भिक्षु थे, (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, 377, II, 200)।

श्रावस्ती के धन, जन एव राजनीतिक महत्ता का ह्रास हुआ। विहार के निर्माण मे 54 करोड व्यय करके जेतवन विहार का प्रसिद्ध दाता अनाथपिण्डिक अकिचन होकर मरा। व्यापार मे उसे 18 करोड का घाटा हुआ और नदी के तट पर गडी हुयी उसकी इतनी ही धनराशि अचिरावती नदी की बाढ मे बह गयी (धम्मपद कामेंट्री, III, 10)। बुद्धकाल से लेकर लगभग बारहवी शती ई० के मध्य तक अपने सर्वाधिक महत्वपूर्ण अधिष्ठान जेतवन के साथ यह नगर निरतर बौद्धधर्म का केंद्र बना रहा। इसके साथ ही एक महान् धर्म के लगभग 1800 वर्षो की दीर्घ-कालीन अवधि के मध्य होनेवाली विपर्यय की कहानी जुडी हुई है। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, श्रावस्ती इन इडियन लिटरेचर, (मे० आ० स० इ०, सख्या, 50); बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 129 और आगे, अ० स० इ० रि०, 1,330 और आगे, XI. 78 और आगे, ए० रि० आ० स० इ०, 1907-8, 81 और आगे; 1910-11, पृ० 1 और आगे।

सेतव्य—उकट्ठ के निकट यह कोशल जनपद का एक नगर था (अगुत्तर, II, 37)। एक बार बहुत सारे भिक्षुओ के साथ कुमारकस्सप सेतव्य गये थे और वहाँ पर उन्होने सेतव्य के प्रधान पायासि को बौद्ध धर्म मे दीक्षित किया था (दीर्घ, II, 316 और आगे)।

सेतमहेत—सेत या सहेठ गोडा और बहराइच जिलों की सीमा पर स्थित

सीर्श—हरयाणा के हिस्सार जिले मे स्थित यह एक कस्बा है, जिसके समीपस्थ किसी एक टीले से एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इं०, XXI, माग viii)।

शिविपुर—शोरकोट अभिलेख के अनुसार शोरकोट का प्राचीन नाम शिविपुर या शिवपुर था, जो शिबियों की राजधानी थी (एपि० इ०, XVI, 1921, पृ० 17; लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया, पृ० 83)। उत्तरापथ में स्थित शिवपुर या शिबियों की नगरी का वर्णन पाणिनि के भाष्यकार ने किया है (द्रष्टव्य, पतञ्जलि, IV. 2,2)। शिव या शिवि-जन इरावती एव चन्द्रमागा नदियो के मध्य पजाब मे झग के शोरकोट क्षेत्र मे रहते थे और इसलिए इसे उत्तरापथ मे समिलित किया गया है। यह एक अत्यत प्राचीन जाति प्रतीत होती है, जिसका उल्लेख समवत: प्रथम बार ऋग्वेद (VII. 18. 7) मे हुआ है। वे दीर्घकाल तक स्वतत्र थे, क्योकि इनका उल्लेख न केवल सिकंदर कालीन यूनानी भूगोलवेत्ता एव इतिहासकार वरन् पाणिनि (IV. 2. 109) के भाष्यकार भी करते है। बाद मे वे भारत के सुदूर दक्षिण में चले गये थे (तु० दशकुमार चरितम्, अध्याय, VI, वृह(सहिता, अध्याय, XIV. श्लोक, 12)। ललितविस्तर (पृ० 22) और महावस्तु मे (लाहा, स्टडी ऑव द महावस्तु, पृ० 7) शिविदेश को जम्बुद्वीप के सोलह महाजनपदो मे से एक बतलाया गया है। अरिट्ठपुर शिवि जनपद की राजधानी थी (जातक, IV पृ० 401)। अरिट्ठपुर (सस्कृत, अरिष्टपुर) को सभवत: पजाब के उत्तर मे स्थित टॉलेमी की अरिस्तीबोथ्रा मे समीकृत किया जा सकता है, जो संभवत द्वारावती ही है (जातक, फासबाल, माग, VI, पृ० 421; न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 11, 187)। क्षेमेन्द्र की बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता मे शिववती नगरी का वर्णन है, जिसे राजा शिवि द्वारा शिवि देश की राजधानी से समीकृत किया जा सकता है (91 वॉं पल्लव)। प्राचीन यूनानी लेखको ने पजाब मे स्थित सिबोइ (Siboi) के प्रदेश का उल्लेख किया है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़, माग, I पृ० 24-26.

शोण—(शोणा) यह गगा की विज्ञात सबसे बडी निचली सहायक नदी है। एरियन की सोन, आधुनिक सोन् नदी, जबलपुर जिले मे मैंकाल (मेकल) पर्वत-माला से निकलकर उत्तर पूर्व की ओर बघेलखड, मिर्जापुर और शाहाबाद जिलो से गुजरती हुई पटना के समीप गगा मे मिलती है। रामायण के अनुसार (आदि-काण्ड, 32 वाँ सर्ग, श्लोक, 8-9) यह सुरम्या नदी गिरिव्रज को परिवृत करने वाली दो पहाड़ियो और मगध से होती हुयी प्रवाहित होती है और इस कारण

इसे मागधी कहा जाता था। पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-38) में इस बडी नदी का उल्लेख किया गया है। पुराणों मे इसे ऋक्ष पर्वतमाला से निकलने वाली महत्त्वपूर्ण नदियो मे से एक बतलाया गया है। इस नदी को पार करके दधीचि अपने पिता की तपोभूमि मे पहुँचे थे (हर्षचरित, प्रथम उच्छ्वास)। कालिदास ने अपने रघुवंश (VII. 36) मे इसका उल्लेख किया है। मगध में राजगृह होकर बहने वाली इसके प्रवाह को सम्भवतः सुमागधा या सुमागधी कहा जाता था। यह बघेलखड मे पाँच सहायक नदियो, मिर्जापुर जिले मे चार, पालामऊ और शाहाबाद जिले प्रत्येक मे एक-एक नदी द्वारा आपूरित होती है। यह नदी पटना के पहले ही गगा मे मिलती है (तु० रघुवश, VII. 36, भागीरथी-शोण इवोत्तरग)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 26।

सोरों—इसका प्राचीन नाम सुकरक्षेत्र या सद्कार्यो का क्षेत्र था। यह कस्बा बरेली से मथुरा के राजपथ पर, गगा के पश्चिमी तट पर स्थित था (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 418)। यह उ० प्र० के इटावा जिले मे स्थित था (इस्क्रिप्शंस ऑव नर्दर्न इंडिया, दे० रा० भडारकर द्वारा पुनरावृत, न० 416, वि० स० 1245)।

श्रृगवेरपुर (श्रृगिवेरपुर)—बताया जाता है कि राम ने यहाँ पर गगा को पार किया था। कनिघम ने इसे सिंगरौर से समीकृत किया है, जो इलाहाबाद मे पश्चिमोत्तर मे 22 मील दूर एक बहुत ऊँचे कगार पर स्थित है (आ० स० रि०, XI. 62, ज० रा० ए० सो० ब०, XV सख्या, 2, 1949, पृ० 131)।

स्रुघ्न—यह थानेश्वर से 38 या 40 मील दूर पर स्थित था। युवान-च्वाङ् ने इसे सु-लुकिन-ना (Su-lukin-na) कहा है। इसकी परिधि 1,000 मील थी। यह पूर्व मे गगा तक तथा उत्तर मे एक उच्च पर्वतमाला तक फैला हुआ था जब कि यमुना इसके मध्य से बहती थी। कनिघम के अनुसार, इसमे अवश्यमेव गिरि तथा गगा नदियो के बीच मे स्थित अबाला और सहारनपुर जिले के कुछ भागो समेत, गढवाल और सिरमौर के पहाडी इलाके समिलित थे। (कनिंघम, एं० ज्यॉ० इ०, पृ० 395 और आगे)।

स्थानेश्वर (स्थाणीश्वर)—यह प्राचीन भारत के प्राचीनतम स्थानों मे से एक था। इसका नाम या तो ईश्वर अथवा महादेव का निवास स्थान होने के कारण, स्थान से या स्थाणु एव ईश्वर के नामो के संयोग से ग्रहण किया गया है। युवान-च्वाङ् ने इसे स-त-नि-शि-फा-लो (Sa-ta-ni-shi-fa-lo) कहा है, जिसकी परिधि 1, 100 मील से भी अधिक थी। वाण के हर्षचरित् (तृतीय

उच्छ्वास) के अनुसार यह श्रीकण्ठजनपद की राजधानी थी। कुरुक्षेत्र नामक प्रसिद्ध रणक्षेत्र थानेश्वर के दक्षिण की ओर, अबाला से लगभग 30 मील दक्षिण मे और पानीपत से 40 मील उत्तर में स्थित है। इस नगर मे एक प्राचीन एव जीर्ण किला था, जो सिरे पर लगभग 1200 फीट का वर्गाकार था, (कनिंघम, ए०, ज्यॉ० इं०, पृ० 376 और आगे, 701)। एस० एन० मजूमदार ने (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, इंट्रोडक्शन, XLIII) इसे विनय महावग्ग (V. 13, 12) और दिव्यावदान (पृ० 22) मे वर्णित थून (स्थून) से समीकृत करने का सुझाव रखा है। थून ब्राह्मणो का एक गाँव था (तु० जातक, VI, 62) जो मध्यदेश की पश्चिमी सीमा पर स्थित था (विनय टेक्स्टस, सै० बु० ई०, XVII. 38-39)।

शुक्तिमती—महाराजा वैश्रवण के शासनकाल मे 107 वर्षांकित कोसम अभिलेख मे इस स्थान का उल्लेख प्राप्त होता है जो समवत कौशाम्बी के समीप स्थित था। चेतिय जातक (सख्या, 422) मे इसे सोत्थिवती नगर कहा गया है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV)। यह चेदि-नरेश धृष्टकेतु की राजधानी थी (महाभारत, III 22)। यह शुक्तिमती नदी के तट पर स्थित था, जो महा भारत के अनुसार (भीष्मपर्व, VI. 9) भारतवर्ष की एक नदी थी।

सुमेरु—पद्मपुराण (उत्तरखड, श्लोक, 35-38) तथा कालिकापुराण (अध्याय, 13, 23, अध्याय 19-92) मे इसका उल्लेख किया गया है। शिव ने इसका शिखर देखा था (कालिकापुराण, अध्याय, 17. 10)। इस पर्वत से जम्बु नदी निकलती है (वही, अध्याय, 19. 32)। यह सिनेरु या मेरु पर्वत ही है।

सुंसुमारगिरि (सिशुमार पहाड़ी)—यह भर्ग देश मे था (संयुत्त, III, 1)। यह मेसकलावन के किसी मृगवन मे स्थित था। यह एक नगर था तथा इसकी राजधानी का यह नाम इसलिए था कि इसके निर्माण के प्रथम दिन ही निकटवर्ती एक झील मे किसी कच्छप ने शोर मचाया था (पपचसूदनी, II, 65; सारत्थप्पकासिनी, II, 249)। वत्सराज उदयन एव उसकी रानी वासवदत्ता का पुत्र, राजकुमार बोधि इस पहाड़ी पर रहता था और उसने यहाँ पर कोकनद नामक एक प्रासाद बनवाया था। बौद्ध अनुश्रुतियो के अनुसार यह भर्ग राज्य की राजधानी थी, और इसका प्रयोग एक दुर्ग के रूप मे किया जाता था (मज्झिम, I, 332-338, II, 91-97)। कुछ विद्वानो ने इसे वर्तमान चुनार पहाड़ी से समीकृत किया है (घोष, अर्ली हिस्ट्री ऑव कौशाम्बी, पृ० 32)। इस पहाड़ी पर निवास करने वाले एक धनी गृहस्थ ने अपनी पुत्री का विवाह अनाथपिण्डिक के पुत्र के साथ किया था (रा० ला० मित्र, नर्दर्न बुद्धिस्ट लिटरेचर, पृ० 309)।

सुन्दरिका—यह प्राचीन भारत की सात पवित्र नदियो मे से एक है। यह कोशल की एक नदी थी जो अतिसंभवत अचिरावती या राप्ती की सहायक नदी थी। यह श्रावस्ती से अधिक दूर नही थी (सुत्तनिपात, पृ० 79)।

सुनेत—इसके भग्नावशेष पजाब के लुधियाना जिले मे स्थित हैं, जो लुधियाना नगर से तीन मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है (जर्नल ऑव द न्युमिसमेटिक सोसायटी ऑव इडिया, जिल्द, IV, भाग, I, पृ० 1-2)।

सुवर्णगुहा—यह चित्रकूट पर्वत पर है जो हिमालय क्षेत्र मे स्थित है (जातक, III, 208)।

श्वेतपर्वत (सेतपब्बत)—यह हिमालय मे तिब्बत के पूर्व मे स्थित है (सयुत्त, I, 67)।

तक्षशिला—(चीनी, शी-शी-चेग Shi-Shi-Ch'eng)—यह गन्धार जनपद की राजधानी थी। पाणिनि एव पतञ्जलि ने क्रमश अपनी अष्टाध्यायी (4, 3, 93) और महाभाष्य (1, 3, 1, 4, 3, 93, पृ० 588-89) मे इसका वर्णन किया है। इसका उल्लेख प्रथम कलिग शिलालेख मे है। अशोक के शासनकाल मे तक्षशिला मे, जो सदैव एक विद्रोहशील प्रात था प्राताधिपति के रूप मे एक कुमार की नियुक्ति की गयी थी। शिलालेखों मे अशोक के शासनकाल के प्रारंभिक वर्षो का उल्लेख किया गया है, जब तक्षशिला मे इस प्रकार की कोई अशाति नही थी। एरियन ने इस नगर को विशाल, समृद्ध एव जनाकीर्ण बतलाया है। स्ट्रेबो ने यहाँ की भूमि की उर्वरता की प्रशसा की है[1]। प्लिनी ने इसे एक प्रसिद्ध नगर बतलाया है, और कहा है कि यह पहाडियो की तलहटी मे समतल मे स्थित था। कहा जाता है कि पहली शती ई० के मध्य यहाँ पर ट्याना का अपोलोनियस (Apollonius of Tyana) तथा उसका साथी दमिस (Damis) आया था, जिन्होने इसे निनेवा के आकार का बतलाया है, जो पतली किंतु सुव्यवस्थित सडको से युक्त किसी यूनानी नगर की भाँति प्राकारयुक्त था। सिकदर के वशानुगत होने के लगभग 80 वर्षो के पश्चात् तक्षशिला पर अशोक का आधिपत्य हो गया था।

सातवी शती ई० मे युवान-च्वाङ् इस नगर मे आया था, जब यह कश्मीर का एक अधीनस्थ राज्य था। चीनी यात्री के अनुसार तक्षशिला की परिधि 2,000 ली से तथा इसकी राजधानी की परिधि 10 ली से अधिक थी। यहाँ की भूमि उर्वर थी और यहाँ पर प्रवाहशील नदियो के कारण अच्छी पैदावार और प्रचुर वनस्पति

---

[1] एच० एवं एफ० द्वारा अनूदित, III, पृ० 90.

होती थी। यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक थी तथा यहाँ के निवासी बौद्ध धर्म के अनुयायी थे। यद्यपि यहाँ पर अनेक विहार थे, किन्तु उनमे कुछ निर्जन हो चुके थे। यहाँ पर कुछ एक विहारो में रहने वाले भिक्षु महायान धर्मावलबी थे (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, 240)।

बौद्ध एवं जैन कहानियो में इसका वर्णन प्रमुख रूप से किया गया है। यह प्राचीन भारत मे शिक्षा का एक महान् केंद्र था। विविध कलाओ एव शास्त्रो के अध्ययन के लिए भारत के विभिन्न भागो से यहाँ विद्यार्थी आते थे। कोशल-नरेश प्रसेनजित् और मगध-नरेश बिम्बसार के विख्यात राजवैद्य जीवक की शिक्षा यही पर हुयी थी (बि० च० लाहा, हिस्टॉरिकल ग्लीनिंग्स, अध्याय, I)। उस समय के विद्यार्थी-जीवन का एक अति सुदर चित्र एक जातक मे प्रस्तुत किया गया है (जिल्द, II, पृ० 277)।

इस नगर को पश्चिमी पजाब[1] के रावलपिंडी जिले मे स्थित आधुनिक तक्ष-शिला से समीकृत किया गया है। इस पुर को भद्रशिला भी कहा जाता था और कालातर मे इसका नाम तक्षशिला पडा, क्योंकि यही पर एक ब्राह्मण-भिक्षुक ने राजा चन्द्रप्रभ का शिरोच्छेद किया था (दिव्यावदान माला, नर्दर्न बुद्धिस्ट लिटरेचर, पृ० 310)। भद्रशिला नामक नगर वैभवयुक्त, समृद्ध एव जनसकुल था। लबाई-चौडाई मे यह नगर12 योजन था तथा यह चार तोरणो द्वारा सुविभक्त और ऊँचे महराबो एव गवाक्षो द्वारा सज्जित था। हिमालय के उत्तर मे स्थित यह नगर चन्द्रप्रभ नामक राजा के शासनातर्गत था (बोधिसत्वावदान-कल्पलता, पञ्चम पल्लव)। इस नगर मे एक राजोद्यान था (दिव्यावदान, पृ० 315)। बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता, (59 वॉ पल्लव) के अनुसार जब कुणाल इसे जीतने के लिए भेजा गया था, तब तक्षशिला राजा कुजरकर्ण के अधीन थी। दिव्यावदान से ऐसा प्रतीत होता है कि तक्षशिला अशोक के पिता मगध-नरेश बिन्दुसार के साम्राज्य मे संमिलित थी।

तक्षशिला, जो गन्धार की प्राचीन राजधानियो मे से एक थी, सिन्धु नदी के पूर्व मे स्थित थी। कनिंघम के विचार से तक्षशिला शाह-ढेरी के समीप काल-का-सराय के ठीक एक मील उत्तर-पूर्व मे, किसी दुर्गीकृत नगर के विस्तृत भग्नावशेषो मे जिनके परित: कम से कम पचपन स्तूप, अट्ठाइस विहार और नौ मदिर पाये गये थे, स्थित है। शाह-ढेरी से ओहिद की दूरी 36 मील और ओहिद से हस्त-नगर की दूरी 38 मील है। इस प्रकार कुल दूरी 74 मील है, जो प्लिनी द्वारा

[1] संप्रति पश्चिमी पाकिस्तान में स्थित।

बतलायी गई तक्षशिला और पुष्कलावती (Peukelaotis) के बीच की दूरी से 19 मील अधिक है। इस असगति का समाधान करने के लिए कनिंघम ने 60 मील को 80 मील (LXXX) पढने का सुझाव रखा है जो 73½ अंग्रेजी मीलो के बराबर है या जो दोनो स्थानो के मध्य की वास्तविक दूरी से केवल आधा मील कम है (कनिंघम, ऐंश्येट ज्यॉग्रेफी, पृ० 121)। डॉ० भडारकर का मत है कि (कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 54, पा० टि०) अशोक के शासन-काल मे तक्षशिला गन्धार की राजधानी नही थी, क्योकि उसके तेरहवे शिला-शासन से यह व्यक्त होता है कि गन्धार उसके खास राज्य मे नही था, जबकि कलिंग के प्रथम शासन से यह स्पष्ट है कि तक्षशिला प्रत्यक्षत. उसके अधीन था, क्योकि उसका एक पुत्र वहाँ पर नियुक्त किया गया था। यह तथ्य कि तक्षशिला उस समय गधार की राजधानी नही थी, टॉलेमी के इस कथन से पुष्ट होता है कि गडराई (गन्धार) देश अपने प्रोक्लाइस (Proklais)-पुष्करावती नगर समेत सिंधु नदी के पश्चिम में स्थित था (तु० लेग्गे, ट्रावेल्स ऑव फा-ह्यान, पृ० 31-32, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया, पृ० 394-95, बि० च० लाहा, हिस्टॉरिकल ग्लीनिग्स, अध्याय, I, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 52-53, जर्नल ऑव द गगानाथ झा रिसर्च इस्टीट्यूट, जिल्द, VI भाग, 4, अगस्त, 1949, पृ० 283-88)। तक्षशिला के उत्खननो एव भग्नावशेषो के लिए द्रष्टव्य, आर्क० स० इ० रि०, II, (1871), पृ० 112 और आगे, V (1875), 66 और आगे, XIV (1882), 8 ओर आगे, ए० रि० आर्क० स० इ०, 1912-13, (1916), आर्क० स० इ० ए० रि० ,1929-30, पृ० 55 और आगे, वही, 1930-34, पृ० 149-176, एनुअल रिपोर्ट ऑव द आर्क्यालॉजिकल सर्वे ऑव इडिया, 1936-7 (1940)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, जे० मार्शल, गाइड टु तक्षशिला, तृतीय सस्करण (1936); बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग I, पृ० 14-17.

तमसा—महाराज सर्वनाथ के खोह ताम्रपत्र-अभिलेख मे इस नदी का वर्णन प्राप्त होता है, जो आधुनिक तमस या टोस नदी है। यह नागौद के दक्षिण मे महियार* से निकलती है और रीवा के उत्तरी भाग से बहती हुयी, इलाहाबाद से दक्षिण-पूर्व मे लगभग 18 मील दूर गगा मे मिलती है (का० इ० इं० जिल्द, III)। मार्कण्डेयपुराण (सर्ग, LVII, 22) मे इस नदी का वर्णन है। पार्जिटर के अनुसार यह इलाहाबाद के आगे गगा मे दाहिने तट पर मिलती है। कूर्मपुराण

*मध्यप्रदेश में एक भूतपूर्व रियासत।

XLVII 30) मे इसका एक अन्य नाम तामसी भी बतलाया गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि तमसा या पूर्वी टोंस नदी फैजाबाद से निकलती है। आजमगढ से बहती हुयी यह बलिया के पश्चिम मे गगा मे मिलती है। यह रामायण-ख्याति की एक ऐतिहासिक नदी मानी जाती है (रामायण, आदिकाण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक, 3)। राम ने अपना पहला पड़ाव इस नदी के तट पर किया था, जो गंगा से अधिक दूर नही थी और इसे पार कर के उन्होने सड़क पकड़ कर यात्रा की थी और बाद मे वह श्रीमती नदी पहुँचे। राम ने इस नदी की प्रशसा की और इसमे स्नान करने की इच्छा की, क्योकि यह पक-हीन थी (रामायण, आदिकाण्ड, द्वितीय सर्ग, श्लोक, 4-6)। रघुवश के अनुसार, दशरथ ने अनेक यज्ञ-यूप बनवा कर इस नदी के तट को अलंकृत किया था (IX 20)। इस नदी का तट सदैव मुनियो से भरा रहता था (रघुवश, IX 72)। दक्षिण टेस नदी ऋक्ष पर्वत से उत्तर पूर्व की ओर बहती हुयी इलाहाबाद के आगे गगा मे मिलती है। यह बाँई ओर से दो तथा दाहिनी ओर से दो उपनदियो द्वारा आपूरित है।

तामसवन—*कनिघम ने इसे पजाब मे मुल्तानपुर से समीकृत किया है।* इसे रघुनाथपुर भी कहा जाता है (ज० ए० सा० ब०, XVIII, पृ० 206, 479)।

थूण (स्थूण)—स्थानेश्वर के अतर्गत देखिये।

त्रिगर्त—महाभारत (II, 48, 13) मे वर्णित यह देश रावी एव सतलज के मध्य स्थित था और इसकी राजधानी कही जालधर के समीप थी। प्राचीन काल मे यह कॉंकडा क्षेत्र का वाचक था (मोचीचन्द्र, ज्यॉग्रफिकल ऐड इकॉनॉमिक स्टडीज इन द महाभारत, उपायनपर्व, पृ० 94)। दशकुमारचरितम् मे त्रिगर्त्त देश मे रहने वाले तीन समृद्ध गृहस्थो मे सबधित एक घटना का वर्णन है जो परस्पर भाई थे। उनके जीवन-काल मे निरतर बारह वर्षों तक वर्षा नही हुयी, वृक्षो मे फल नही लगे, वर्षालु बादल दुर्लभ थे, अनेक स्रोत एव नदियाँ सूख गयी थी तथा नगर, ग्राम, कस्बे तथा अन्य सनिवेश नष्ट हो गये थे, (बृ० 150-151)। विस्तृत विवरण के लिए, द्रष्टव्य लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, अध्याय, 12)।

तृणविन्दु-आश्रम—प्रजापति के पुत्र पुलस्त्य यहाँ पर समाधि लगाने के लिए आये थे। यह मेरु पर्वत के किनारे स्थित था। जब वह वैदिक ऋचाओ का पाठ कर रहे थे, तृणविन्दु ऋषि की कन्या उसके समक्ष उपस्थित हुयी। पहले तो वह अभिशप्त हुई किंतु बाद मे पुलस्त्य ने उससे विवाह कर लिया।

तुलम्ब—यह कस्बा रावी नदी के बाँये तट पर मुल्तान के उत्तर-पूर्व मे 52 मील दूर पर स्थित है (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, 1924, पृ० पृ० 257)। मूलतः

इसे कुलम्ब कहा जाता था (कनिंघम, आर्क० स० रि०, V., पृ० 111 और आगे)।

तुसाम—तुसाम शिलालेख में इस गाँव का वर्णन है जो हरयाणा के हिस्सार जिले के मुख्यावास, भिवनी के पश्चिमोत्तर में लगभग 14 मील दूर पर स्थित है (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

उद्यान—यह सु-पो-फा-सु-तु (Su-p'o-fa- su-tu) नदी के तट पर स्थित है, जो सस्कृत की शुभवास्तु, एरिअन की सुआस्टुस (Suastus), तथा आधुनिक स्वात नदी है। उद्यान मे पजकोर, बिजावर, स्वात तथा बुनीर के चार आधुनिक जिले समिल्लित है। उद्यान की राजधानी का नाम मगल था (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, 93 और आगे, ज० रा० ए० सो०, 1896, पृ० 655)। फा-ह्यान के अनुसार जो पाँचवी शताब्दी ई० मे भारत आया था, उद्यान या वू-चग (Woo-chang) उत्तर भारत का भाग था। उद्यान, जिसका शाब्दिक अर्थ वाटिका है, पश्चिमी पजाब (पाकिस्तान) के उत्तर मे शुभवास्तु जिसे अब स्वात कहा जाता है, के तट पर स्थित था। यहाँ पर बौद्ध धर्म प्रचलित था। यहाँ पर 500 सघाराम या विहार थे। उनमे रहने वाले भिक्षु हीनयान धर्म के विद्यार्थी थे। बुद्ध इस देश मे आये थे और यहाँ अपने पद-चिह्न छोड गये थे। फा-ह्यान वू-चग मे रुका था तथा यहाँ उसने ग्रीष्मावास किया था (लेग्गे, ट्रावेल्स ऑव फा-ह्यान, पृ० 28-29)। युवान-च्वाङ् के अनुसार उद्यान (Wu-chang-na) के निवासी बौद्ध धर्म का अधिक आदर करते थे। वे महायान मतावलबी थे, किंतु वे हीनयानियों की विजय के अनुयायी थे। स्वात नदी के दोनो किनारो पर अनेक भग्न विहार थे और महायान धर्मावलबी भिक्षुओ की सख्या क्रमशः कम हो गयी थी। वहाँ पर दस से अधिक देवमदिर थे तथा विभिन्न सप्रदायो के अनुयायी अव्यवस्थित ढग से रहते थे (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 225 और आगे)।

उग्गनगर—यह श्रावस्ती के निकट स्थित था। उग्ग नामक कोई व्यापारी व्यापार करने के लिए उग्गनगर से सावत्थी आया था (धम्मपद कामेंट्री, III. 465)।

उहा—यह नदी हिमवन्त मे स्थित बतलायी जाती है (मिलिन्दपञ्हो, पृ० 70)।

उपवत्तनसालवन—यह मल्लो के प्रदेश मे स्थित था। यही पर बुद्ध को महापरिनिब्बान प्राप्त हुआ था (दीघ, II, 169)।

उशीनर—पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4, 2, 118; 2, 4, 20) में

इस देश का उल्लेख किया है। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (1, 1, 8, पृ० 354; 1, 3, 2, पृ० 619; 4, 2, 118 मे इसका वर्णन किया है। यह देश कुरु प्रदेश के उत्तर मे स्थित था। (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, पृ० 84)। गोपथ-ब्राह्मण (II 9) मे उशीनरो को औदीच्य माना गया है। ऋग्वेद (X. 59, 10) मे उनका उल्लेख है। त्सिमर का विचार है कि उशीनर पहले और आगे उत्तर पश्चिम मे रहते थे। वैदिक इडेक्स के लेखको को यह मत मान्य नही है (जिल्द, I, पृ० 103)। पार्जिटर का विचार है कि वे पजाब मे रहते थे (ए० इ० हि० ट्रे० पृ० 109)। बौद्ध जातकों मे प्रायः राजा उशीनर का वर्णन आता है (निमि जातक, फासबाल, VI. पृ० 199, नारदकस्सप जातक, VI, पृ० 251; जातक, IV 181. और आगे)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया, पृ० 68 और आगे।

उशीनारा—उशीरध्वज के अंतर्गत द्रष्टव्य।

उशीरध्वज—इस पर्वत को कनखल के उत्तर मे स्थित उशीरगिरि से समीकृत किया जा सकता है (इ० ऐ०, 1905, 179)। सिवालिक पर्वतमाला, जिसे भेद कर गगा मैदान मे अवतीर्ण होती है, उशीरगिरि से समीकृत की जा सकती है।

पालि साहित्य मे वर्णित उशीनारा और कथासरित्सागर मे उल्लिखित उशीनर-गिरि निःसदेह दिव्यावदान मे वर्णित (पृ० 22) उशीरगिरि ओर विनय टेक्स्ट्स (सें० बु० ई० ,भाग, II, पृ० 39) के उशीरध्वज से समीकृत है।

उत्तरकोशल—इसे अयोध्या से समीकृत किया गया है (तु० गोविन्द चन्द्र का कमौली दानपत्र, वि० सं० 1184, एपि० इ०, XXVI, भाग, II, 68 और आगे; इ० ऐ०, XV, पृ० 8, पा० टि० 46)। रामायण मे अयोध्या को कोशल की प्राचीन और श्रावस्ती को उत्तरकालीन राजधानी बतलाया गया है (तु० जातक, स० 454, और 385)। बाद मे दक्षिण कोशल से अलग करने के लिए उत्तर कोशल को श्रावस्ती कहा जाने लगा। युवान-च्वाङ् ने उत्तर कोशल को श्रावस्ती कहा है, जिसकी परिधि 600 ली थी। यहाँ पर अनेक बौद्ध-विहारो के भग्न खंडहर थे। व्यवहार में यहाँ के निवासी ईमानदार और सुचरितो के प्रेमी थे। यह नगर सुधान्यपूर्ण था तथा यहाँ की जलवायु सम थी। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, अध्याय, XXVIII.

कोशल का उत्तरी सीमात अवश्य ही पहाडियो मे रहा होगा, जिसे अब नेपाल कहा जाता है। इसकी दक्षिणी सीमा गगा नदी थी और इसकी पूर्वी सीमा पर शाक्य देश की पूर्वी सीमा मिलती थी (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, I, 178)।

कोशल जन इस जनपद के शासक थे, जिनकी राजधानी श्रावस्थी थी (बुद्धिस्ट इंडिया, पृ० 25)।

उत्तरकुरु—वैदिक एव परवर्ती ब्राह्मण साहित्य मे इसका वर्णन कश्मीर के उत्तर मे स्थित किसी देश के रूप मे किया गया है। भागवतपुराण (I, 16, 13) मे इसे उत्तर-कुरुओ का देश बतलाया गया। कुछ लोग इसे एक प्रकल्पित क्षेत्र (Mythical) मानते है। दीपवस (पृ० 16) मे वर्णित कुरुदीप को उत्तर कुरु से समीकृत किया जा सकता है। विनय भाष्य (समन्तपासादिका, पृ० 179) के अनुसार तिदसपुर उत्तरकुरु का एक नगर था। ललितविस्तर (पृ० 19) मे उत्तरकुरु को एक प्रत्यतद्वीप कहा गया है (तु० बोधिसत्त्वावदानकल्पलता, पृ० 48, 50, 71)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 29

वैद्यूतपर्वत—यह कैलास पर्वत का एक भाग है, जिसके पाद मे मानससरोवर स्थित है।

वाह्लीक—योगिनीतत्र (1.14) मे इसका वर्णन किया गया है। चन्द्र के मेहरौली लौहस्तभ से यह निर्विवादरूप से सिद्ध होता है कि वाल्हीक जन सिन्धु नदी के उस पार स्थित थे।[1] कुछ विद्वान चन्द्र को समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तभलेख मे वर्णित चन्द्रवर्मन से, और कुछ लोग ससुनियाँ शिलालेख मे वर्णित उसी नाम के राजा से समीकृत करते हैं। कहा जाता है कि इसने वग देश मे सगठित रूप से एक साथ सामना करने वाले शत्रुओ को पराङ्मुख कर दिया था और युद्ध करते करते सिन्धु के सात मुहानो को पार करके वाह्लीकों पर विजय प्राप्त की थी। अतएव वाह्लीक देश को वर्तमान बल्ख देश से समीकृत करने के प्रयास किये गये हैं। वाल्हीको को बैक्ट्रियोइ (Baktrioi) से समीकृत किया जाना चाहिये, जो टॉलेमी के समय मे अराकोशिया के निकटवर्ती प्रदेश मे रहते थे।[2] रामायण (किष्किन्ध्या काण्ड, 44, श्लोक, 13) के अनुसार वाल्हीक लोग उत्तर मे रहने वाले निवासियो से सबद्ध थे। वाह्लीक देश को किसी भी स्थिति मे पंजाब के पार स्थित किसी देश से समीकृत किया जाना चाहिये।

वाल्मीकि-आश्रम—विख्यात् रामायणकार वाल्मीकि का आश्रम कानपुर से 14 मील दूर बिठूर मे था। यहाँ पर सीता ने लव-कुश नामक अपने युगल पुत्रों

---

[1] **वि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्यंट इंडिया, अध्याय, XI; ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 137; ऐंश्यंट इंडियन ट्राइब्स, II, पृ० 58-60.**

[2] **इं० ऐं०, 1884, पृ० 408.**

को जन्म दिया था। यह आश्रम चित्रकूट पर्वत के एक रमणीक कोने में स्थित था। कालिदास ने इस आश्रम को शत्रुघ्न के मार्ग मे स्थित बतलाया है जिस समय वे लवणासुर का वध करने के लिए अयोध्या से मधुपघ्न जा रहे थे, जो आधुनिक मथुरा से 5 मील दक्षिण-पश्चिम मे है,[1] भरद्वाज ऋषि ने राम को गगा-यमुना के संगम पर जाने का निर्देश दिया था। राम, सीता और लक्ष्मण सहित यमुना नदी पार करके इसके दाहिने तट पर पहुँचे थे। यहाँ से दो मील की दूरी पर उन्होने यमुना-तट पर एक जगली क्षेत्र देखा था। शाम को वे इस जंगल के एक मैदानी इलाके में पहुँचे जहाँ पर उन्होने रात गुजारी थी। प्रात होने पर वे अपनी यात्रा पर चल पडे और चित्रकूट पर्वत पर आये। तत्पश्चात् उन्होने वाल्मीकि का आश्रम देखा। रामायण के अनुसार (1, 2, 3, VII. 57, 3) वाल्मीकि का आश्रम गगा और तमसा (दक्षिणी टोस) के सगम पर स्थित बतलाया जाता है। पार्जिटर[2] के अनुसार यह तमसा (पूर्वी टोस) के तट पर स्थित था। रामायण (VII, अध्याय, 57) से ज्ञात होता है कि सीता को देश-निष्कासन के लिए वाल्मीकि के आश्रम की ओर ले जाते समय लक्ष्मण ने गगा नदी पार की थी।[3] तमसा को पूर्वी टोस ही होना चाहिये, जिसके तट पर वाल्मीकि का आश्रम स्थित था।[4] इस आश्रम मे मथुरा से लौटकर शत्रुघ्न भी आये थे।[5]

वेणुग्राम—भरहुत पूजापरक नामपत्र (स० 22) मे वेणुग्राम या वेणुवग्राम (बाँस का गाँव) का नाम आता है, जिसे कनिघम के अनुसार कोसम के उत्तर-पूर्व मे स्थित बेन-पूर्व नानक आधुनिक गाँव से समीकृत किया जा सकता है।

वेरञ्ज—वेरञ्ज मधुरा (मथुरा) के निकट स्थित एक गाँव था, जहाँ पर कुछ वेरञ्ज-ब्राह्मणो के निमंत्रण पर बुद्ध गये थे।[6] मधुरा से वेरञ्ज जाते समय एक बार बुद्ध रास्ते मे रुक गये थे और उन्होने एक गृहस्थ को प्रवचन दिया था।[7] अकाल-पड़ने पर भिक्षुओ के साथ एक बार बुद्ध वेरञ्ज मे रुके थे। भिक्षु लोग

---

[1] रघुवंश, XV, 11, 15.

[2] ज० रा० ए० सो०, 1894, 235.

[3] तु० रघुवंश, XIV . 52.

[4] ज० रा० ए० सो० बं०, XV, 1949, सं० 2, लेटर्स, पृ० 132, पाद टिप्पणी, 4.

[5] रामायण, उत्तरकाण्ड, सर्ग, 84, श्लोक, 3'

[6] धम्मपद अट्ठकथा, II, पृ० 153.

[7] अंगुत्तर निकाय, II, 57.

पीडितो के लिए अन्न सचित करने मे असफल रहे, परतु बाद मे घोड़े के कुछ व्यापारियों ने उनकी सहायता की थी।[1] एक ब्राह्मण ने बुद्ध से यह पूछा कि वे वयोवृद्ध ब्राह्मणो का सम्मान क्यो नही करते। बुद्ध ने उनको एक उपयुक्त उत्तर दिया जिसके फलस्वरूप उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था।[2] बुद्ध ने वेरञ्ज मे चातुर्मास्य व्यतीत किया।[3] वर्षा ऋतु के अत मे उन्होने इसे छोड दिया और वाराणसी पहुँचे (विनय, III, 11)।

वेत्रवती--इस नदी को आधुनिक बेतवा से समीकृत किया जाता है, जो गंगा की एक छोटी सहायक नदी है। यह यमुना नदी मे मिलती है।

वेत्तवती-जातक-- (जिल्द, IV, पृ० 388) के अनुसार यह नगर इसी नाम की एक नदी के तट पर स्थित था।

विभ्रट--हिमालय पर्वत के समीप यह एक विशाल पर्वत है (कालिका पुराण, अध्याय , 78, 37)।

विन्ध्याचल--यह पहाडी मिर्जापुर के समीप स्थित है, जिसके शिखर पर बिन्दुवासिनी का विख्यात मदिर स्थित है। विन्ध्याचल कस्बा, जिसे पपापुर भी कहा जाता है, मिर्जापुर से पाँच मील पश्चिम मे स्थित है (भविष्यपुराण, अध्याय, IX)। इसका वर्णन योगिनीतत्र (2, 9, पृ० 214 और आगे) और कालिका-पुराण (अध्याय, 58, 37) मे किया गया है।

बिन्दुसरोवर--इसका वर्णन योगिनीतत्र मे (2, 5, 141, और आगे) मे किया गया है। गगोत्री से दो मील दक्षिण मे यह रुद्रहिमालय पर स्थित है, जहाँ पर भगीरथ ने स्वर्ग मे गगावतरण के लिए तपस्या की थी (रामायण, I, 43, मत्स्यपुराण, अध्याय, 121)। ब्रह्माण्ड पुराण (अध्याय, 51) मे इस सरोवर को कैलास पर्वतमाला के उत्तर मे स्थित बतलाया गया है (न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, द्वितीय संस्करण, पृ० 38)।

विपाशा--इस नदी का नाम पाणिनि की अष्टाध्यायी (4, 2, 74) में आया है। यह ब्यास नदी है जिसे यूनानियो द्वारा वर्णित विपासिस (Vipasis) या हाइपैसिस (Hypasis) अथवा हाइफैसिस (Hyphasis) से समीकृत किया गया है, जो शतद्रु या सतलज की एक सहायक नदी है। प्राचीनकाल मे सभवत. यह एक स्वतत्र नदी थी। महाभारत मे इस नदी के उद्गम का उल्लेख

---

[1] **विनय**, III, 6.

[2] **अगुत्तर निकाय**, IV, 172.

[3] **जातक**, III, 494.

है। विश्वामित्र द्वारा अपने पुत्रों का बध किये जाने पर मग्नहृदय वशिष्ठ ने आत्म-हत्या करना चाहा। अतएव वे स्वयं अपना हाथ पैर बाँध कर नदी मे कूद पडे, परतु नदी के तीव्र प्रवाह ने उन्हे बधनमुक्त कर दिया (वि=विगत+पाश) और इस प्रकार नदी के तट पर लग कर वे बच गये। मार्कण्डेय पुराण (सर्ग, LVII, 18) मे इस नदी का उल्लेख है। भागवत (X. 79, 11) एव पद्म पुराण (उत्तर-खण्ड, श्लोक, 35-38) मे भी इसका वर्णन मिलता है। यह नदी रावी के स्रोत के निकट रोहतंग दर्रे पर स्थित पीरपजल पर्वतमाला से निकलती है। यह अनेक हिम नदो द्वारा आपूरित होती है। यह चम्बा से दक्षिण-पश्चिम दिशा मे बहती हुई शतद्रु मे मिलती है।

वितस्ता—ऋग्वेद (X 75, 5, निरुक्त, IX 26, तु० पाणिनि 1, 4, 21 पर काशिकावृत्ति) मे वर्णित यह नदी पजाब की पाँच नदियो से सबसे पश्चिमी नदी है। सिकदर के इतिहासकारो द्वारा वर्णित हाइडेस्पीज (Hydaspes) और टॉलेमी द्वारा वर्णित बिडास्पीज (Bidaspes) यही है। सिन्धु की चार प्रमुख पूर्वी सहायक नदियो मे सबसे पश्चिमी नदी वितस्ता (पालि, वितसा) या झेलम ही है। यह कश्मीर के पीरपजल पर्वतमाला से निकलती है, और पूँछ के आगे पश्चिम की ओर वक्रगति से बहती है और तब यह दक्षिण मे घूमकर दक्षिण-पश्चिमाभिमुख होकर प्रवाहित होती है। मीरपुर के पश्चिम मे और झेलम कस्बे से थोडी दूर पूर्व मे चल कर यह पश्चिम की ओर मुड जाती है और पूर्वोत्तर मे पीर-दादन तथा दक्षिण-पश्चिम मे खोसब के बीच एक उभार बनाती हुयी यह नदी दक्षिण की ओर बहती है। झग एव झग मघियाना के आगे यह चेनाव मे मिलती है। यह नदी कश्मीर मे विभिन्न स्थानीय नामो यथा, विरनग, अदपल तथा सद्रन नामों से विख्यात है और श्रीनगर होकर बहती है। ऋग्वेदिक आर्य इसे वितस्ता के नाम से जानते थे (X. 75)। भागवतपुराण (V 19, 18) मे एक नदी के रूप मे इसका वर्णन किया गया है।

वृन्दावन—यह एक हिन्दू तीर्थ-स्थल है। यह मथुरा के उत्तर मे छह मील दूर स्थित है। हरिवश (अध्याय, LXII, 22-23) मे यमुना-तट पर स्थित एक रमणीक वन के रूप में इसका वर्णन किया गया है, जिसमे दूर्वा, फलो एवं कदम्ब वृक्षों की प्रचुरता थी। गोपियो के साथ कृष्ण यहाँ पर लीला किया करते थे।[1] भागवत पुराण (X. 11, 28, 35, 36, 38; X. 22.29; X. 46, 18), मे इसका वर्णन हुआ है।

---

[1] कनिंघम, एं० ज्यॉ० इं०, पृ० 429-30.

वृषपर्व आश्रम—यह गन्धमादन पर्वत के समीप स्थित है जो रुद्र हिमालय का एक अग है किंतु महाकाव्यकारो के अनुसार यह कैलास पर्वतमाला का भाग है।

व्यास-आश्रम—पुराणो एव महाभारत के लेखक ऋषि व्यास का आश्रम हिमालय मे अवस्थित गढवाल मे बद्रीनाथ के समीप मनल नामक गाँव में स्थित है।

यमुना—इस नदी का वर्णन ऋग्वेद (X. 75, V. 52, 17, VIII. 18. 19, X 75, 5,)[2], अर्थववेद (IV 9, 10) तथा ऐतरेय ब्राह्मण (VIII. 14, 4) मे किया गया है। कलिन्दगिरि[3] से निकलने के कारण यह कलिन्दकन्या नाम से विश्रुत है। ऋग्वेद (VII 18, 19) के अनुसार तृत्सुओ और सुदास ने अपने शत्रुओ को इस नदी के तट पर पराजित किया था। तृत्सुजन का प्रदेश पूर्व मे यमुना एव पश्चिम मे सरस्वती नदी के मध्य स्थित था। ऐतेरय (VIII. 23) एव शतपथ ब्राह्मणो (XIII. 5, 4 ,11) मे यमुना के तट पर भरतो को विजय कीर्ति मिली थी। पञ्चविश ब्राह्मण (IX. 4, 11, XXV. 10, 24, 13, 4), साङ्ख्यायनश्रौतसूत्र, (XIII 29, 25, 33), कात्यायन श्रौतसूत्र (XXIV. 6, 10, 39), लाट्यायन श्रौतसूत्र (X, 19, 9, 10) एव अश्वलायन श्रौतसूत्रो (XII 6 28) मे इस नदी का वर्णन मिलता है। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (I, 1, 9, पृ० 436, 1, 4, 2, पृ० 670) मे इसका वर्णन किया है। योगिनी-तत्र (2, 5, 139-140) एव कालिका पुराण (अध्याय, 15, 8) मे इसका उल्लेख किया गया है। कालिन्दी नाम से भी विश्रुत इस नदी का वर्णन भागवतपुराण (III 4 36, IV 8 43, VI 16 16, VIII 4 23, IX 4 30, IX 4 37, X 58-22) तथा महावस्तु (III. 201) मे हुआ है। बाण ने अपनी कादम्बरी (पृ० 62) मे इसे कालिन्दी कहा है, क्योकि इसका जल काला प्रतीत होता है। यह नदी यमुना-गगा के मध्यवर्ती पनढर पर स्थित बन्दरपूंछ नामक एक शिखर के ढालो मे निकलती है। यमुनोत्री का मदिर बदरपूंछ के पाद मे स्थित है। गगा की पहली और बडी पश्चिमी सहायक नदी खास यमुना ही है, जो कामेत पर्वत के नीचे हिमालय पर्वत माला से निकलती है। उत्तर भारत के मैदानो मे प्रवेश करने के पहले यह सिवालिक पर्वतमाला और गढ़वाल मे घाटी बनाती है और तब दक्षिण दिशा मे गगा के समानातर बहती है। मथुरा के आगे

---

[1] ज० रा० ए० सो०, 1883, पृ० 361.

[2] रघुवश VI, 48.

प्रयाग या इलाहाबाद मे गगा के सगम तक यह दक्षिण-पूर्व की दिशा मे प्रवाहित होती है। देहरादून जिले में इसमें पश्चिम की ओर से दो सहायक नदियाँ मिलती है, जिनमे से ऊपरी का नाम उत्तरी टोंस नदी है। आगरा और इलाहाबाद के मध्य बाँयी ओर से इसमे चर्मण्वती (आधुनिक चबल), कालीसिन्ध, वेत्रवती (आधुनिक बेतवा), केन और पयष्णी (आधुनिक पैंसुनी) नामक चार सहायक नदियाँ मिलती है। इस नदी के तट पर अनेक पवित्र स्थान स्थित है। गगा-यमुना के बीच मे स्थित किसी भी स्थान पर किये गये एक महायज्ञ मे काश्यप के शिष्य शरभंग विद्यमान थे।[1] चीनी यमुना को येन-मोक-ना (Yen-mok-na) नाम से जानते है। यह शूरसेन एव कोशल तथा और आगे कोशल एव वश के बीच की सीमा थी। शूरसेन-प्रदेश की राजधानी मदुरा (मथुरा) तथा वश की राजधानी कोसाम्बी इसके दाहिने तट पर स्थित थी। यमुनोत्री को जो कुरमोली से 8 मील दूर है, यमुना नदी का स्रोत माना जाता है। इसे यूनानी इरैन्नेबोस (Erannabos) से समीकृत किया जाता है (हिरण्यवाह या हिरण्यबाहु)। प्राचीन बौद्ध ग्रथो मे वर्णित पाँच महानदियो मे से यमुना एक है।[2] यह आधुनिक यमुना है। स्कन्दपुराण मे वालुवाहिनी को इस नदी की एक सहायक नदी बतलाया गया है।

यौगन्धर--इसे दिल्ली के पश्चिमोत्तर मे स्थित हरयाणा राज्य के झिंद जिले (भूतपूर्व झिन्द रियासत) से समीकृत किया जा सकता है। इसका वर्णन पाणिनि की अष्टाध्यायी (4, 2, 130) और महाभारत (III, 129, 9) मे किया गया है तथा इसे कुरुक्षेत्र का प्रवेश द्वार कहा गया है।

यवनदेश--पश्चिमोत्तर सीमात पर स्थित यूनानियो को योन या यवन कहा जाता था। वे सबसे अधिक सम्मानित विदेशी थे। किंतु सभी यवनो को शूद्र स्त्रियों एव क्षत्रिय पुरुषो के ससर्ग से उत्पन्न संतान माना जाता था।[3] रामायण (I, 54, 21) मे शको-यवनो के मिश्रित ओर्दु एवं हिंदुओ के सघर्ष का उल्लेख है (तु० शकान्यवयनर्मिश्रितान्)। किष्किन्ध्याकाण्ड (IV 43 11-12) मे सुग्रीव ने यवन-देश एव शको के नगरों को कुरु-मद्रो और हिमालय के बीच मे स्थित बतलाया है। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4 1 175) मे इसका उल्लेख किया है। वाराहमिहिर की बृहत्सहिता (XIV · 18) में इस क्षेत्र को म्लेच्छो द्वारा निवसित बतलाया गया है (म्लेच्छा हि यवना)। गौतम बुद्ध एवं

---

[1] **महावस्तु, I, पृ०** 160.

[2] **अगुत्तर, IV**. 101; **संयुत्त, II**, 135; V. 401, 460, 461.

[3] **गौतमधर्मशास्त्र, IV**. 21.

अस्सलायन के काल मे किसी यवन या योन राज्य के अस्तित्व का साक्ष्य मज्झिमनिकाय (III,149) से प्राप्त होता है। मिलिन्दपञ्हो[1] मे निर्वाण-प्राप्ति के लिए यवनो के देश को एक उपयुक्त स्थान बतलाया गया है। महावस्तु (जिल्द, I, पृ० 171) मे योनों की एक सभा का उल्लेख है, जहाँ पर निर्णीत कोई भी बात उन पर लागू होती थी। डॉ० दे० रा० भडारकर का मत है कि (कार्माइकेल लेक्चर्स, 1921, पृ० 29) कि छठी शताब्दी ई० पू० में पाणिनि के अस्तित्व तथा उनके द्वारा यूनानियों की लिपि यवनानी का उल्लेख कोई आश्चर्यजनक बात नही है। वस्तुतः यवनानी शब्द से पाणिनि का तात्पर्य किसी लिपि से नही वरन् केवल यवन के स्त्रीलिंग शब्द से था। कात्यायन ने यवनानी एव यवनी मे अंतर बतलाया है। यवनानी शब्द का प्रयोग उन्होने केवल यूनानी लिपि के किसी रूप के सीमित अर्थ मे किया है। यवन देश की ठीक स्थिति को निश्चित करना दुष्कर है--(भडारकर, कार्माइकेल लेक्चर्स, 1921, पृ० 29 ; राय चौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव ऐश्येट इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 253)। प्राक्-सिकदर युगीन किसी यूनानी (अधिक उचित ढग से, आयोनियन) उपनिवेश के अस्तित्व का अनुमान भारत के पश्चिमोत्तर सीमात से सगृहीत मुद्राओ के साक्ष्य से लगाया जा सकता है, जो एथेन्स की प्राचीनतम मुद्रा-प्रकारो से मिलती-जुलती है (न्यूमिस्मेटिक क्रौनिकिल, XX. 191; ज० रा० ए० सो० 1895, 874)। यवनो को उत्तरापथ के अन्य जनो यथा, काम्बोज, गन्धार, किरात तथा बर्बर के साथ वर्गीकृत किया गया है (तु० महाभारत, XII. 207. 43)। उनका वर्णन भागवतपुराण (II 4. 18; 7 34, IV. 72, 23, IX. 8. 5; 20, 30) मे भी किया गया है। इनका उल्लेख अशोक के पाँचवे शिलालेख तथा वीर पुरुषदत्त के नागार्जुनिकोड अभिलेख मे किया गया है। पाँचवे एव तेरहवे शिलालेखो मे काम्बोजो के साथ योनो का वर्णन किया गया है (इस्क्रिप्शस ऑव अशोक, ले० भडारकर और मजुमदार, 53-54)। वाशिष्ठीपुत्र पुलुमायी के नासिक गुहालेख मे गौतमी पुत्र शातकर्णि की प्रशसा शको, यवनो एव पहलवो (पार्थियनो) के सहारक के रूप मे की गयी है तथा उसे क्षहरात राजकुल का उत्पादन करने वाला सातवाहन नरेश बतलाया गया है (बि० च० लाहा, उज्जैनी इन ऐश्येट इडिया, पृ० 18)। यवनदेश, धारयद्वसु के नक्श-ए-रुस्तम अभिलेख मे वर्णित आयोनिया ही है। अशोक के अभिलेखो मे न केवल यवनो का ही उल्लेख हुआ है, वरन् तुषास्फ नामक एक यवन अधिकारी या सामंत यवनराज का भी वर्णन है, जो अशोक के शासन-

[1] ट्रेंक्नर संस्करण, पृ० 327.

कालमे सौराष्ट्र (काठियावाड़) का राज्यपाल था और जिसकी राजधानी गिरिनार (गिरनार) थी, जैसा कि महाक्षत्रप रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से प्रकट होता है (लगभग 150 ई०)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, ओ० स्टाइन, यवनज इन अर्ली इंडियन इस्क्रिप्शस, इंडियन कल्चर, भाग, I, पृ० 343, और आगे, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इंडिया, अध्याय, XXXI, बि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज भाग I, 5 और आगे। भंडारकर ने बतलाया है कि तेरहवें शिलालेख मे वर्णित योनों को बल्ख (Bactria) के यवनो से समीकृत करना असभव है, क्योकि वह लेख उस समय प्रचलित किया गया था जब सीरिया-नरेश अन्तियोकस थियास जीवित था। उनका मत है कि तेरहवे शिलालेख मे वर्णित यवन अति सभवतः सिकंदर के बहुत पहले बडी सख्या मे भारत के कतिपय बहिर्वर्ती प्रातो मे आकर बस गये थे (कार्माइकेल लेक्चर्स, 1921, 27, 28 और आगे)। इस मत की पुष्टि मुद्रा-साक्ष्य से भी होती है।

पतञ्जलि के महाभाष्य (3, 3, 2, पृ० 246, कीलहार्न सस्करण के अनुसार किसी यवन ने साकेत या अयोध्या तथा माध्यमिका (चित्तौड के पास) को नष्ट किया था (अरुणद् यवन: साकेतम्, अरुणद् यवनो माध्यमिकाम्)। शुङ्ग राजकुमार वसुमित्र और यवनो मे सिन्धु के दक्षिणी तट पर युद्ध हुआ था। भारत के अभ्यतर मे यूनानी सत्ता के विस्तार के प्रयत्न को सबसे पहले शुङ्गो ने निष्फल किया था। पश्चिमी भारत मे यवन सत्ता के अंतिम अवशेष दक्कन मे आध्रों या सातवाहनो के उत्कर्ष के परिणामस्वरूप नष्ट हो गये थे। पार्थियनो के आक्रमण द्वारा पश्चिमोत्तर भारत से यवनो का सदा के लिए उन्मूलन हो गया था।

यमदग्नि-आश्रम—यह आश्रम उत्तरप्रदेश के गाजीपुर जिले मे स्थित है। कुछ विद्वानो के अनुसार यह उत्तर प्रदेश के बलिया जिले से 36 मील पश्चिमोत्तर मे खैरादि मे स्थित है।

युगन्धर—महाभारत के (विराटपर्व, अध्याय, I, वनपर्व, अध्याय, 128) अनुसार यह प्रदेश जो कुरुक्षेत्र के समीप था, यमुना के पश्चिमी तट पर तथा कुरुक्षेत्र के दक्षिण मे स्थित बतलाया जाता है।

जेद—पश्चिमोत्तर सीमात मे उण्ड (ओहिंद) के समीप स्थित यह एक गाँव है (एपि० इ० XIX. पृ० 1)।

II

दक्षिणी भारत

अच्युतपुरम्—यह गजम जिले मे मुखलिगम के समीप है, जहाँ से इन्द्रवर्मन के पत्राभिलेख प्राप्त हुये थे। इन पत्रो मे गगवशीय किसी कलिग-नरेश द्वारा कलिगनगरम् मे दिये गये भूमिदान का उल्लेख हुआ है (एपि० इ०, III, 127)।

अधिराजेन्द्रवलनाडु—यह एक जिले का नाम है (सा० इ० इ०, I, 134)। यह जयकोण्ड-शोर-मण्डलम मे स्थित है।

अगैयारु—यह एक नदी का नाम है, जो मादोत्तम ग्राम से होकर गुजरती थी, (वही II,, 62)।

अगस्त्य-मलाई—त्रावणकोर मे स्थित यह एक पहाडी है। उसी पहाडी मे ताम्रपर्णी नदी निकलती है (डब्ल्यू० डब्ल्यू० हटर, द इपीरियल गजेटियर्स ऑवइडिया, जिल्द, I, पृ० 46)।

ऐम्बुण्डी—यह आधुनिक अम्मुडी गाँव का प्राचीन नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 87, 135, 136)। यहाँ के निवासियो ने अपने आराध्य देव शिव को एक भूखड दिया था।

ऐराबट्ट—इसे कटक जिले के बाँकी थाने मे स्थित रटागढ से समीकृत किया गया है (देवानन्ददेव का बारिपादा सग्रहालय पत्र; एपि० इ०, XXVII, भाग, VII, जुलाई, 1948, पृ० 328 मी द्रष्टव्य)।

अजंता—अजंता की दो गुफाएँ औरगाबाद से 60 मील पश्चिमोत्तर और मुसावल से लगभग 35 मील दक्षिण मे मुख्य रेलवे पर स्थित है। घाट की तलहटी मे स्थित फर्दापुर नामक एक छोटे कम्बे से अजता की गुफाओ तक पहुँचा जा सकता है। औरगाबाद से फर्दापुर तक एक अच्छी मोटर से जाने योग्य सडक है। अजंता की 29 गुफाएँ विभिन्न समयो पर काटी, तराशी और चित्रित की गयी हैं। विसेट स्मिथ के अनुसार अजता के अधिकाश चित्र छठी शताब्दी ई० मे कालाकित होने चाहिए। तद्‌जनित राजनीतिक परिस्थितियाँ बौद्ध धर्म की सेवा के लिए समर्पित मूल्यवान कलाकृतियो की रचना के लिए अनुकूल न रही होगी। अजंता

मे दो प्रकार की गुफाएँ—चैत्य एव विहार प्राप्त होती है।— नवी एवं दसवी गुफाएँ जो सर्वाधिक प्राचीन है, पहली एव दूसरी शताब्दी ई० पू० की हैं। विहारों के अतर-कक्षों मे प्राप्त होने वाली बुद्ध की विशाल प्रतिमाएँ प्रायः प्रवचन-मुद्रा मे है। अजंता के भित्ति-चित्र एव चित्रण बौद्ध स्थापत्य के अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष है। अलकरण-प्रधान चित्र एव छतों के भीतरी भाग के चित्रण प्राचीन भारतीय ललित कला के प्राचीनतम उदाहरण है। इन गुफाओ मे जातको के दृश्य सुन्दर ढग से चित्रित किए गए है। छब्बीसवी गुफा मे दीवालो पर अकित सबसे अधिक उल्लेखनीय नक्काशी वह विशाल एव सघन कृति है, जिसमे मार द्वारा बुद्ध को प्रलोभित करने का दृश्य प्रदर्शित किया गया है। इसमे जीवन-चक्र (Wheel of life), उडते हुये गन्धर्वो एव अप्सराओ के भी चित्र प्राप्त होते है। ये गुफाएँ अपने युग के बौद्धो की भावनाओ एव आकाक्षाओ का एक सजीव चित्र प्रस्तुत करती है। इन गुहाओ मे पक्षियो, वदरो और वन्य जातियो आदि सभी के चित्र प्रस्तुत किये गये है। नदियो, समुद्रो, पथरीले समुद्र-तटो, मछलियो आदि की श्रेष्ठ कलात्मक महत्ता है। बरामदे के पीछे बाँई ओर दीवाल पर चित्रित बुद्ध की भव्य आकृति की सपूर्ण ससार मे प्रशसा की गई है। पतले स्तभो पर आश्रित आकृतियो के शीर्ष पर टिकी हुयी एक चिपटी छत पर महलो एव भवनो के चित्र बनाये गये है: उच्च वर्ग के लोग कटि के ऊपरी भाग मे कपडे नही वरन् अधिक आभूषण, भुजबध, हार और चोटियाँ आदि पहनते थे और निम्न वर्ग के लोग अधिक वस्त्र धारण करते थे, किंतु वे बिना अलकारो के ही चित्रित किये गये है। भिक्षु अपने सामान्य वेष मे प्रदर्शित किये गये है। विशिष्ट महिलाएँ अधिक आभूषण धारण करती थी। दसवी गुफा मे प्रदक्षिणा-पथो के डाटो के बीच के चित्र बहुत बाद के है। सोलहवी गुफा एक अत्यत महत्त्वपूर्ण विहार है। बीसवी गुफा मे बरामदे तक ले जाने वाली नक्काशी की हुई खमेदार सीढी, इतराती बालाओ के भव्य चित्रो से सज्जित स्तभो के शीर्ष तथा प्राचीन तोरणो का स्मरण दिलाने वाली मदिरो की ड्योढियाँ भारत के सामाजिक, धार्मिक एव गृह-शिल्प के विकास को समझने मे सहायक सिद्ध होती है। मदिर के सामने की बरसाती एक मण्डप की भाँति हैं। पहली गुफा मे पुजारियो का समूह सचमुच बहुत कलापूर्ण है। सैनिक धनुष-बाण, भालो आदि से सज्जित चित्रित किये गये है। पुरुष आगे गाँठदार, ऊँचा साफ़ा पहनते थे। बडा और भारी कण्ठ-माल सुस्पष्ट है। ये सब वस्तुएँ हमे साँची की प्राचीन वास्तु-शैली तथा मथुरा से प्राप्त प्राचीनतम् वास्तु-चित्रो का स्मरण दिलाती है।

अलनाडु—यह अरूमोरिदेववलनाडु की एक तहसील है (साउथ इडियन

इंस्क्रिप्शंस, जिल्द II, पृ० 333-456)। यहाँ पर राजचूडामणि चतुर्वेदिमंगलम् था (द्रष्टव्य रगाचारी की तालिका ,संख्या , 326, मदुरा जिला)।

अमरकुण्ड—आन्ध्र मे स्थित यह एक कस्बा है। इसके समीप ही एक पर्वत है, जिसपर ऋषभ एवं शान्तिनाथ की प्रतिमाओ से अलकृत एक सुदर मदिर स्थित है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 185.

अमरावती (पालि-अमरवती)–यह एक कस्बे का नाम है जिसमे अमरेश्वर-मदिर स्थित है (एपि० इ०, भाग, VII, पृ० 17)। इसका प्राचीन नाम धान्यघट या धान्यघटक है, जिसे धान्यकट या धान्यकटक (धान्य का नगर) से समीकृत किया जाता है (हुल्श, साउथ इडियन इस्क्रिप्शस जिल्द, I, पृ० 25)। यह अपने स्तूप के लिए प्रसिद्ध है (एपि० इ०, VI, 146-157, तु० सी० आई०,VI 17 और आगे)। यह अधापतिय की राजधानी थी (नद लाल दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 7)। बुद्ध अपने किसी पूर्वजन्म मे सुमेध नामक एक ब्राह्मण कुमार के रूप मे इस नगर मे पैदा हुये थे (धम्मपद अट्ठकथा, I, पृ० 83)। इसे धरणिकोट नदी के समीप आधुनिक अमरावती नगर से समीकृत किया जा सकता है, जो कृष्णा नदी के तट पर स्थित अपने भग्न स्तूप के लिए विख्यात प्राचीन अमरावती से एक मील पश्चिम की ओर स्थित है। अमरावती स्तूप बेजवाडा के लगभग 18 मील पश्चिम में और कृष्णा नदी के दाहिने तट पर स्थित धरणी के दक्षिण मे आन्ध्र प्रदेश राज्य के कृष्णा जिले मे स्थित इसके मुहाने से लगभग 60 मील की दूरी पर पाया गया है। अमरावती स्तूप का निर्माण आन्ध्रभृत्य-नरेशो ने कराया था, जो बौद्ध मतावलबी थे (ज० रा० ए० सो० ,III, 132)। अमरावती चैत्य युवान-च्वाङ् द्वारा वर्णित पूर्वशैल बिहार ही है। अमरावती के उत्खनन सबंधी विवरण के लिए द्रष्टव्य, आर्क० स० इ०, रि० ,III ,1905-06,116 और आगे, आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1908-09, 88 और आगे।

अंबत्तूर-नाडु—यह चिगलपुट जिले के सैदपेट तालुक मे स्थित एक गाँव का नाम है (सा० इं० इ० , जिल्द, III, पृ० 287)।

अम्बासमुद्रम्—यह ताम्रपर्णी नदी के उत्तरी तट पर स्थित है और तिनेवल्ली जिले में इसी नाम के तालुक का मुख्यावास है। अम्बासमुद्रम् का प्राचीन नाम इलंगोयकुड्डि था। मुल्लिनाडु मे स्थित यह एक ब्रह्मदेय था (वरगुणपाण्डय का अम्बासमुद्रम् अभिलेख, एपि० इं०, IX, 84; एपि० इ०, XXV, भाग, I , पृ० 35 और आगे)।

अंधापतिय—आदि पल्लव नरेश शिवस्कन्दवर्मन के मयिडवोलु ताम्रपत्र अभिलेख मे अधापतिय का उल्लेख है (अन्धापथ, एपि० इं०, VI 88)। इस स्थान के नाम का सस्कृत समानार्थक शब्द अंधावती हो सकता है। अधापतिय या आन्ध्रपथ गोदावरी व कृष्णा के बीच मे स्थित आन्ध्र देश है, जो पश्चिमी भारत मे आन्ध्र देश से पृथक पूर्वी आन्ध्र क्षेत्र है (हुल्ट्श, सा० इ० इ०, I, पृ० 113; विस्तृत विवरण के लिए, द्रष्टव्य, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 164 और आगे)। पालि ग्रंथों मे अंधको का वर्णन मुण्डको, कोलको और चीनो के साथ किया गया है (अपदान, भाग, II, पृ० 359)। पच द्राविड़ो मे निम्नलिखित हैं : द्राविड खास (तमिल), अन्ध्र (तेलुगु), कर्णाट (कनाडा प्रदेश), महाराष्ट्र एव गुर्जर। धनकटक या धान्यकटक या कृष्णा के मुहाने पर स्थित अमरावती इसकी राजधानी है (नदलाल दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 7)। मौखरि नरेश[1] कुमारगुप्त तृतीय, (554 ई०) के हरहा अभिलेख मे बताया गया है कि किसी आन्ध्राधिपति ने मौखरि-नरेश को अपने सहस्रो तिहरे मदमस्त हाथियो से पीड़ित किया था (एपि० इ०, XIV पृ० 110 और आगे)। हे० च० रायचौधरी का अनुमान है कि पूर्वोक्त आन्ध्रनरेश सभवत पोल्लामुरु पत्रो मे उल्लिखित विष्णुकुण्डिन् वशीय माधववर्मन प्रथम (यनाश्रय) था, (पो० हि० ए० इ०, चतुर्थ सस्करण, पृ० 509)। यह अनुमान, ईशानवर्मन मौखरि के पिता ईश्वरवर्मन के जौनपुर अभिलेख मे ईश्वरवर्मन के द्वारा आन्ध्रो पर विजय से पूर्णत सगत है। (का० इ० इ०, III, पृ० 230)। पल्लव-नरेश शिवस्कन्दवर्मन के काल मे आन्ध्रपथ या आन्ध्रदेश पल्लववश के अधीन हो गया प्रतीत होता है, जिसका मुख्यावास धजकड (धान्यकटक) था। अशोक के तेरहवे शिलालेख मे 'भोज–पतिनिकेसु अन्ध्र-पलिदेशु' वर्णित है।

आन्ध्रक्षेत्र के पुलिन्द सदैव आन्धो से सबद्ध रहे है जो सभवतः विन्ध्यपर्वत से कृष्णा तक फैले हुये सपूर्ण भूभाग मे रहते थे। वाशिष्ठीपुत्र पुलुमायि पहला नरेश था जिसने आन्ध्र देश पर सातवाहन सत्ता का प्रसार किया। आन्ध्रदेश एव आन्ध्र जनो विषयक छिटपुट उल्लेख उत्तरकालीन अभिलेखीय साक्ष्यो मे मिलते हैं। इडियन म्यूजियम मे संग्रहीत पालवंशीय नरेश नारायणपालदेव के

---

[1] लेखक ने इसे भूल से मौखरिवंश का राजा कहा है। वास्तव में वह उत्तर गुप्त राजवंश का शासक था। लेखक का यह कथन समीचीन नहीं है। इस अभिलेख के अनुसार मौखरि-नरेश ने आन्ध्रपति की सेना को परास्त कर दिया था, जिसमें तिहरे मदमस्त गज संमिलित थे।

नवे वर्ष में उत्कीर्ण अभिलेख मे आन्ध्रवैषयिक शाक्य भिक्षु स्थविर धर्ममित्र का उल्लेख है, जिसने बुद्ध की एक प्रतिमा स्थापित की थी।

अम्मलपुण्डि—सभवत इस गाँव को अनमर्लपूण्डियाग्रहारम से समीकृत किया जा सकता है, तो ताडीकोण्ड के दक्षिणपूर्व मे 12 मील दूर पर स्थित है (एपि० इं०, XXIII, भाग, V)।

अनवुतपालाचल—यह एक पहाड़ी है (सा० इ० इ०, II, 373)।

अनमलाई हिल्स—यह पहाडी त्रावणकोर पहाडियो मे विलीन हो गयी है (डब्ल्यू० डब्ल्यू० हटर कृत द इपीरियल गजेटियर्स ऑव इडिया, जिल्द, I, पृ० 190 और आगे)।

अनंतपुर—यह केरल (पहले त्रावणकोर) की राजधानी त्रिवेन्द्रम मे है जहाँ पर पद्मनाथ का विख्यात मदिर स्थित है, जिसे देखने श्री चैतन्य और नित्यानद गये थे।

आन्ध्रमण्डल या आन्ध्रविषय—यह तेलुगु देश है (सा० इ० इ०, III पृ० 128)। आदि पल्लव-नरेश शिवस्कन्दवर्मन के मयिडावोलु अभिपत्रो से सिद्ध होता है कि अन्ध्रापथ या आन्घ्रो का क्षेत्र कृष्णा जिले तक फैला हुआ था और इसकी राजधानी धन्नकड या बेजवाडा थी (एपि० इ०, VI, पृ० 88)। मौखरिनरेश कुमारगुप्त तृतीय (554 ई०) के हराहा अभिलेख मे यह मौखरि राजा किसी आन्ध्रपति द्वारा परिपीडित बताया गया है (एपि० इ०, XIV, पृ० 110 और आगे)[1]। पूर्वोक्त आन्ध्र-नरेश सभवत. पोलमुरु अभिपत्रो मे वर्णित विष्णुकुण्डिन वशीय माधववर्मन प्रथम, यनाश्रय था। इस तथ्य की पुष्टि ईशाण वर्मन मौखरि के पिता, ईश्वरवर्मन के जौनपुर अभिलेख मे होती है जिसमे आन्ध्रो पर ईश्वर-वर्मन के पक्ष की विजय का उल्लेख किया गया है (का० इ० इ०, III, पृ० 230)। आन्ध्रो का वर्णन ऐतरेय (VII 18) एव शतपथ ब्राह्मण मे है। विसेंट स्मिथ का मत है कि ये लोग द्रविड थे और गोदावरी तथा कृष्णा के डेल्टा मे रहने वाले आधुनिक तेलुगु-माषी जनता के प्रजनक थे (इ० ऐ०, 1913, 276-78)। कुछ विद्वानो के अनुसार वे मूलत विन्ध्य क्षेत्र के एक कबीले थे, जिन्होंने अपना राजनीतिक प्रभाव शनै-शनै पश्चिम से पूर्व मे गोदावरी एव कृष्णा की घाटियो मे बढा लिया (वही, 1918, 71)। महाभारत (XII. 207. 42) मे उन्हे दक्कन मे स्थित बतलाया गया है। रामायण (किष्किन्ध्याकाण्ड, 41, अध्याय,

---

[1] **लेखक के इस अशुद्ध ऐतिहासिक उल्लेख के लिए भी पिछली पाद-टिप्पणी देखें।**

11) मे उन्हें गोदावरी से सबधित बतलाया गया है। अभिलेखीय साक्ष्य से सिद्ध होता है कि वे गोदावरी-कृष्णा की घाटी मे रहते थे। मार्कण्डेयपुराण (LVII. 48-49) मे आन्ध्रो को दक्षिणात्य जन बतलाया गया है। अशोक के तेरहवें शिलालेख मे आन्ध्रदेश को अशोक का एक अधीनस्थ राज्य बतलाया गया है। आन्ध्रदेश का उल्लेख एक जातक (जातक, I, 356, और आगे) मे आता है जिसके अनुसार एक ब्राह्मण-तरुण तक्षशिला से शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् व्यावहारिक अनुभवो से लाभान्वित होने के लिए वहाँ गया। प्लिनी के अनुमार आन्ध्रो के पास अगणित गाँव और प्राचीरो एव मीनारो से सुरक्षित तीस नगर थे और अपने राजा को उन्होंने पदाति, अश्वारोहियो एव गजारोहियो से सज्जित एक विशाल सेना प्रदान की थी (इ० ऐ०, 1877, 339)।

पुराणो मे सातवाहनो को आन्ध्र या आन्ध्रभृत्य बतलाया गया है। उन्होंने सपूर्ण आन्ध्रदेश एव निकटवर्ती क्षेत्रो पर शासन किया था (वि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, 164-5)।

परिधि मे 3,000 ली तक विस्तृत इस देश को चीनी लोग अन-ता-लो (An-ta-lo) कहते थे। यहाँ की भूमि उर्वर एव श्रेष्ठ थी, यह निरतर जोती जाती थी। यहाँ की जलवायु उष्ण थी, निवासी निर्भीक एव भावुक थे। यहाँ पर कुछ सघाराम एव देव-मदिर थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 217-18)।

आन्ध्रप्रदेश की राजधानी धनकटक प्रतीत होती है, जहाँ पर युवान-च्वाङ् गया था। आन्ध्रो की प्राचीनतम राजधानी (अन्धपुर) तेलवाह नदी के तट पर स्थित थी, जिसे सभवत. तेल या तेलिगिरि से समीकृत किया जाता है, जो मध्य-प्रदेश एव मद्रास के सीमात के समीप ही बहती है (पो० हि० ए० इ०, पृ०, 196, पा० टि० 4)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य वि० च० लाहा, इडॉलॉजिकल स्टडीज, भाग I, पृ० 47 और आगे; लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 165, डब्ल्यू० डब्ल्यू० हटर कृत इपीरियल गजेटियर्स ऑव इडिया, जिल्द I पृ० 198; बुद्धिस्ट रिमेन्स इन आन्ध्र ऐड आन्ध्र हिस्ट्री (225-610 ई०) ले० के० आर० सुब्रह्मण्यम।

अगरायंकुप्पम—यह अगरंकुप्पम नामक आधुनिक गाँव है, जो विरिञ्चि-पुरम से 63 मील दूर उत्तर मे स्थित है (सा० इ० इ० I, पृ० 133)।

अगार—ब्रह्माण्ड पुराण, II, 16, 59 मे वर्णित यह एक दक्षिणात्य देश है।

अन्नदेववरम—ब्राह्मणों के निवास के लिए स्थापित यह गाँव, पिन्नसानि

एवं गगा (गोदावरी का एक अन्य नाम) के सगमपर बसे हुये बिसरि-नाडु में स्थित बतलाया जाता है (एपि० इं०, XXVI, भाग, I, जनवरी, 1941)।

अन्तर्वेदी—गोदावरी तट पर स्थित सात पुण्य स्थलो मे यह अतिम है (डब्ल्यू० डब्ल्यू० हृटर कृत इपीरियल गजेटियर्स ऑव इंडिया, जिल्द, I, पृ० 204

अरगियसोरपुरम—यह राजराजवलनाडु की एक तहसील है। यह पोयिर-कूर्रम मे स्थित एक गॉव है (सा० इ० इ०, II, पृ० 449,492)।

अरैशूर—पेन्नर नदी के तट पर स्थित यह एक ग्राम है (वही, III, 448)।

अरकटपुर—यह आधुनिक अर्काट हो सकता है। इसे राजा खारवेल ने जीता था, जैसा कि हाथीगुम्फा अभिलेख से प्रकट होता है (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 61-62)।

अरशिल—यह किसी नदी का नाम है। इसे अरशिलेयारु की अरिशील भी कहते है (सा० इ० इ०, II, 52)।

अरिकमेडु—यह भारत के पूर्वी समुद्रतट पर पाण्डिचेरी से दो मील दक्षिण मे स्थित है। 1945 मे यहाँ के कुछ स्थलो का उत्खनन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के तत्वावधान मे किया गया था।

अरुगूर—यह वेलूर के निकट स्थित आधुनिक अरियूर है (वही, I, पृ० 71)।

अरुमण्डल—यह एक गॉव है। इसका आधुनिक नाम अरुमडल है। यह पाण्डयकुलाशनिवलनाडु की किरशेनगिलिनाडु तहसील मे स्थित था, (वही, जिल्द, II, पृ० 479)।

असक—इसे साधारणत गोदावरी-तट पर स्थित अश्मक से समीकृत किया जाता है (शामा शास्त्री कृत 'अर्थशास्त्र का अनुवाद', पृ० 143)।

अस्सक या अश्मक देश—सुत्तनिपात (पा० टे० सो०, 190) मे अस्सक या अश्मक देश को गोदावरी-तट पर पत्तिठ्ठान के ठीक दक्षिण मे (श्लोक, 977) स्थित बतलाया गया है। डॉ० भडारकर ने सुत्तनिपात के अनुसार यह बताया है कि बावरी नामक कोई ब्राह्मण गुरु कोशल जनपद त्यागकर दक्षिणापथ के अस्सक देश मे गोदावरी के तट पर स्थित एक गॉव मे बस गया था (कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 4,53, पा० टि० 5)। रिज डेविड्स ने अश्मक को अवन्ती के ठीक उत्तर-पश्चिम मे स्थित बतलाया है। इनके अनुसार गोदावरी के तट पर स्थित यह सनिवेश एक बाद का उपनिवेश था (बुद्धिस्ट इडिया, पृ० 27-28)। असग ने अपने सूत्रालकार मे सिन्धु नदी की घाटी मे स्थित किसी अश्मक देश का वर्णन किया है।

कौटिल्यकृत अर्थशास्त्र के अनुसार अस्सक (असक) को साधारणतया गोदावरी

(अर्थात् महाराष्ट्र) तट पर स्थित अश्मक के समान माना जाता है (शामा शास्त्रीकृत अनुवाद, पृ० 143, टिप्पणी, 2)। कुरुक्षेत्र के युद्ध में अश्मक जन पाण्डवो की ओर से लड़े थे (महाभारत, VII. 85, 3049)। पाणिनि ने अपने एक सूत्र (IV. 1, 173) मे अश्मक का उल्लेख किया है। इक्ष्वाकुओ और अश्मको मे संबंध था (बृहन्नारदीयपुराण, अध्याय, 9)।

अश्मकों या अस्सको की राजधानी पोटन या पोटलि बतलायी गयी है, जो महाभारत (I, 77, 47) मे उल्लिखित पौदन्य है। एक समय पोतलि काशी राज्य मे समिलित था। अस्मक जातक के अनुसार (जातक, II, 155) अस्मक नामक किसी राजा ने पोतलि मे राज्य किया था जिसे इसमे काशी-राज्य मे स्थित एक नगर बतलाया गया है।

यूनानियो द्वारा अभिहित अस्पैसियन जन, सुविख्यात अश्वक या अश्मक जाति की एक पश्चिमी शाखा के रूप मे माने जा सकते है। ईरानी संज्ञा 'अस्प' सस्कृत शब्द अवव या अश्वक का समानार्थक है (कैं० हि० इ०, जिल्द, I, पृ० 352, नोट, 3, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 1-2, लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 180 और आगे,।

अत्रि-आश्रम—इस आश्रम मे राम, लक्ष्मण और सीता के साथ आये थे, जब कि ये ऋषि यहाँ पर अनुसूया के साथ रहते थे। वहाँ पर अनेक तपस्वी आध्यात्मिक चर्या मे लगे थे।

अत्तिलि—आजकल यह कस्बा पश्चिमी गोदावरी जिले के तनुकु तालुक के दक्षिण पश्चिम मे स्थित है। चोड नरेश अन्नदेव ने अत्तिलि की सीमाओ पर अपने विरोधी दक्षिण के सभी राजाओ को पराजित किया था और इस नगर की प्राचीर के भीतर शरण लेने वाले 10,000 शत्रु सैनिको को सुरक्षित रखा था (एपि० इ०, XXVI, भाग, I)।

अयोध्या—यह एक देश का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 58)। अयोध्या के सिहासन पर 59 राजा आरूढ हुये थे। इस वश का विजयादित्य नामक एक राजा दक्कन पर विजय प्राप्त करने के लिए गया था।

अय्यमपलयम—यह गाँव कोयबटूर जिले के पल्लडम ताल्कु मे सोमनुर रेलवे स्टेशन से 4½ मील दूर पूर्वोत्तर मे स्थित है। यहाँ पर एक छोटा सा मंदिर है (जर्नल ऑव द इंडियन सोसायटी ऑव ओरियटल आर्ट, जिल्द, XV)।

अधिराजमंगल्लियपुरम्—यह कुड्डालूर तालुक मे स्थित तिरुवादि है। यह कुड्डालूर के उत्तर मे 14 मील पश्चिम की ओर और पनरुति रेलवे स्टेशन

से एक मील दक्षिण मे स्थित है। इसे अदिगैमानगर भी कहते हैं। यह गेंडिलम के उत्तरी तट पर स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 98)।

अविपुर—यह मयूरभज (भूतपूर्व रियासत, संप्रति उडीसा राज्य मे विलयित) के पाँचपीर तहसील मे स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 147)।

आलंपुण्डि—दक्षिण अर्काट जिले के तिण्डीवनम तालुक के सेञ्जी परगने मे स्थित यह एक गाँव है (एपि० इ०, III, 224)।

आलप्पक्कम—दक्षिण अर्काट जिले के कुड्डालूर तालुक मे स्थित यह एक गाँव है (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 97)।

आलूर—यह पडिनाडु मे स्थित एक गाँव है और इसे मैसूर जिले के चामराज-नगरतालुक मे स्थित आलूर से समीकृत किया जा सकता है (सा० इ० इ०, भाग, I, पृ० 425-27)।

आमूर (आंबूर)—उत्तरी अर्काट जिले के वेलूर तालुक मे स्थित यह एक कस्बा है (वही, भाग, III, पृ० 165)। यह दक्षिणी अर्काट जिले के तिरुकोयिलुर तालुक मे स्थित है। यहाँ पर दो तमिल अभिलेख प्राप्त हुये थे (एपि० इं०, IV, 180 और आगे)।

आमुरकोट्टम—यह जयकोण्डचोलमण्डलम मे स्थित एक जिला है (वही, जिल्द II, भूमिका, पृ० 28)

आनैमलाइ—मदुरा जिले मे स्थित, यह एक पुण्यगिरि है (वही, III, पृ० 239)। इसे हाथी-पहाडी कहते है। यह पहाडी पूर्वोत्तर से दक्षिण-पश्चिम की ओर मदुरा से पाँचवे मील के पत्थर से मदुरा-मेलुर रोड के प्राय समानातर जाती है (मद्रास डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, मदुरा, ले० डब्ल्यू० फ्रासिस, पृ० 254 और आगे)।

आनन्दूरु—यह शिलाहर इन्दरस के अक्कलकोट अभिलेख मे वर्णित (एपि० इ०, XXVII, भाग, II, अप्रैल, 1947, पृ० 71) आनन्दूरु तीन सौ (जिले) का मुख्यावास है। इसे हम महाराष्ट्र (भूतपूर्व हैदराबाद रियासत) राज्य के उस्माना-बाद जिले मे इसी नाम के तालुक के प्रमुख नगर आधुनिक आनदूरु से समीकृत कर सकते है। यह अक्कलकोट से लगभग 20 मील उत्तर मे स्थित है।

आनंगुर—यह विल्लुपुरम से दो मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है (एपि० इं०, XXVII, भाग, III, पृ० 98)। आनागुर-नाडु मे यह अवश्य ही एक प्रमुख स्थान रहा होगा।

आन्ध्र—यह वर्तमान तेलुगु प्रदेश है (वही, जिल्द, II, प्रस्तावना, पृ० 4)।

आन्नदेववरम—पल्लूरि-शैलवरम के पश्चिम मे गगा के तट पर स्थित यह एक गाँव था। राजा अन्नदेव ने यह गाँव ब्राह्मणो को दान कर दिया था (एपि० इ०, XXVI, भाग, I, राजामुद्री सग्रहालय मे सग्रहीत तेलुगु चोड अन्नदेव का अभिपत्र)।

आराम—यह सोनपुर, जहाँ प्राय राजा का स्कन्धावार होता था, के निकट था। भव्य प्रासादो, मदिरो, उपवनो और सरोवरो आदि से सज्जित इसे एक समृद्ध नगर के रूप मे वर्णित किया गया है (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII)।

आसुवुलपर्रु—यह गाँव बेजवाडा तालुक मे कृष्णा नदी के तट पर स्थित था (एपि० इ०, XXIII, भाग, V)।

आवूरकुर्रम—यह एक विषय है, जो नित्तविनोदवलनाडु का एक उपसभाग है (सा० इ० इ०, भाग, II, पृ० 95)।

बदरिवमेडि—यह गजम जिले मे है। इस ताल्लुक के एक गाँव से गग-नरेश इन्द्रवर्मन के ताम्रपत्रो का एक कुलक प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, अक्टूवर, 1941, पृ०, 165)।

बंगवाडि—यह मैसूर राज्य के कोलार जिले मे स्थित है (एपि० इ०, VI, 22 और आगे, द्रष्टव्य, एपि० इ०, VII, 22)।

बसिनिकोण्ड—यह मदनपल्ली के निकट एक गाँव है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, 183 और आगे—वैदुम्ब-महाराज गण्डत्रिनेत्र के तीन अभिलेख)।

बवाजी पहाडी—यह उत्तरी अर्काट जिले मे वेलोर के अचल मे वेलपादि के समीप स्थित है (सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 76)। कन्नरदेव का एक शिलालेख इस पहाडी की चोटी के नीचे पाया गया है (एपि० इ०, IV, 81 और आगे)।

बादामि—यह एक गाँव है। इसे वातापि भी कहते है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 399, नोट, 504)। सिरुत्तोण्डर ने 650 ई० पू० मे इस पर आक्रमण किया था।

बाहूर—यह अरगियशोरचतुर्वेदिमगलम, जिसे बाहूग्राम भी कहते थे, का आधुनिक नाम है। यह पाण्डिचेरी के समीप है। यह अरुवा-नाडु जिले मे सम्मिलित है। बाहूर गाँव भूतपूर्व फ्रासीसी क्षेत्र के एक निकाय का मुख्यावास था और 1752 ई० मे यहाँ पर फ्रासीसियो एवं अग्रेजो मे एक युद्ध हुआ था (वही, जिल्द, II, पृ० 27, प्रस्तावना, 505, 513, 514, 519)। पहले यह फ्रांसीसी क्षेत्र मे था। (द्रष्टव्य, रगाचारी की सूची, पृ० 1693-94, 1-18.)

बेलुगुल—केलादि सदाशिव नायक के कप ताम्रपत्र मे बेलुगुल का उल्लेख है, जो मैसूर राज्य मे स्थित श्रवण बेलगोला है।

भरणिपाडु—कामराज नामक एक चोड-नरेश ने युद्ध में राजा सिम्ग को इसी कस्बे के समीप पराजित किया था (एपि० इ०, XXVI. भाग, I)।

भागीरथी—यह गगा का ही नाम है (हुल्टश, सा० इं० इ०, जिल्द, I, पृ०, 28)।

भास्कर क्षेत्र—इसे बेलारी जिले मे स्थित हाम्पी से समीकृत किया जाता है। यह विजयनगर के नरेशो की राजधानी थी (एपि० इ०, XXV भाग, IV, अक्टूबर, 1939, पृ० 190)।

भेठिभृंग—गगनरेश इन्द्रवर्मन के इडियन म्यूजियम अभिपत्रो मे इसका वर्णन है। इसे सभवत ब्राह्मणी नदी के तट पर स्थित बरसिंग से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, अक्तूबर, 1941, पृ० 168)।

भीमरथी (या भीमरथ)—पश्चिमी चालुक्य-राजा जयसिंह द्वितीय के दौलताबाद-अभिपत्रो में वर्णित भीमरथी नदी को कृष्णा की मुख्य सहायक आधुनिक भीमा नदी से समीकृत किया जा सकता है (इ० क०, VIII पृ० 113)। इस नदी के उत्तरी तट पर पुल्केशिन, अप्पायिक और गोविन्द के बीच एक युद्ध हुआ था (एपि० इ०, VI 9)। वायु (XLV 104) और वराह पुराणो मे इस नदी का वर्णन है। पुराणो मे प्रधानत यह एक सह्य-नदी के रूप मे विश्रुत है, जो पूना जिले के पश्चिमोत्तर भाग मे प्रवाहित होती है, जहाँ से यह दक्षिण-पूर्व दिशा मे बहती हुई मैसूर राज्य के रायचूर (पहले हैदराबाद रियासत)जिले के उत्तर में कृष्णा नदी मे मिल जाती है। यह अनेक नदियो द्वारा आपूरित है (द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 49)।

भोगवढन—(संस्कृत--भोग वर्धन=धनवर्धक--बरुआ और सिन्हा, भरहुत इंस्क्रिप्शस, पृ० 15)। पुराणो के अनुसार यह दक्कन मे स्थित एक देश है। ऐसा प्रतीत होता है कि भोगवर्धन गोदावरी क्षेत्र मे स्थित था किंतु इसकी ठीक स्थिति अज्ञात है। भोगवर्धनो (भोगवडम)को मौलिको, अश्मको, कुन्तलो आदि के साथ दक्षिणी क्षेत्र मे स्थित बतलाया गया है (तुलनीय, मार्कण्डेय पुराण, LVII, 48-49)।

भोजकट और भोजकटपुर—(संस्कृत : भोजकट या भोज्य, भोज्य; बरुआ और सिन्हा, भरहुत इंस्क्रिप्शस, पृ० 7). —अरुल्ल—पेरुमल्ल अभिलेख और रविवर्मन के रगनाथ अभिलेख मे दक्षिण भारत के केरल राज्य के यदुवंशी किसी भोज राजा का उल्लेख है (एपि० इं०, जिल्द, IV भाग, III, 146)। गौड-नरेश धर्मपालदेव के (800 ई०) खलीमपुर दानपत्र अभिलेख मे मत्स्य, कुरु, यदु और

यवनो के राजाओं के साथ ही भोज राजा का उल्लेख है, जिसने कान्यकुब्ज मे उसके राज्याभिषेक समारोह के अवसर पर आर्शीवचन कहे थे। भोजो का दूसरा महत्त्व-पूर्ण वर्णन चेट राजा खारवेल (पहली शती ई० पू०) के हाथीगुम्फा अभिलेख मे हुआ है, जिससे हमे ज्ञात होता है कि कलिंग महाराज खारवेल ने राठिको एव भोजको को पराजित किया था और उन्हे अपने प्रति राजनिष्ठा की शपथ लेने के लिए विवश किया था। राठिक और भोजक स्पष्टत अशोक के पाँचवें और तेरहवे शिलालेखो मे वर्णित राष्ट्रिक एव भोज है (द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया, पृ० 372)। अशोक के तेरहवे शिलालेख मे उल्लिखित भोज और पितिनिक, महाराष्ट्र (भूतपूर्व बबई प्रेसीडेंसी) के वर्तमान थाना और कोलाबा जिलो मे स्थित थे। महाभारत के सभापर्व (अध्याय, 30) मे दक्षिण मे सहदेव द्वारा जीते गये प्रदेशो के अतर्गत भोजकट और भोजकटपुर नामक दो स्थानो का वर्णन है। यदि भोजकट को पुराणोक्त भोज और भोज्य से समीकृत किया जाय तब इसे विन्ध्य क्षेत्र का कोई स्थान होना चाहिये। ब्राह्मणो मे अभिव्यक्त दण्डक्यभोज शब्द से यह द्योतित होता है कि यह भोजकट या तो दण्डक में सम्मिलित या उसके बहुत समीप था। महाभारत की तालिका से यह स्पष्ट है कि भोजकट (=एलिचपुर) विदर्भ (आधुनिक बरार) की दूसरी राजधानी भोजकटपुर या भोजपुर से भिन्न था। भोज, बरार या प्राचीन विदर्भ और चम्मक के साथ सपतित होता है जो अमरावती जिले मे एलिचपुर से 4 मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है। खिल हरिवश मे भोजकट को स्पष्ट रूप से विदर्भ से समीकृत किया गया है (तु० विष्णुपुराण, LX 32)। भरहुत पूजापरक लेपपत्र, संख्या, 45 पर भोजकट का उल्लेख है (बरुआ और सिन्हा, भरहुत इस्क्रिप्सस, पृ० 131)। अशोक के तेरहवे शिलालेख मे भोजो, पारिन्दों एवं पालदो का उल्लेख है। भोज का वर्णन ऋग्वेद (II, 53, 7) और ऐतरेय ब्राह्मण (VIII. 14) मे किया गया है। शतपथ ब्राह्मण (XIII, 5, 4, 11) का यह आशय परिलक्षित होता है कि सात्वत गगा यमुना के समीप स्थित थे और यह क्षेत्र भरतो का राज्य था। भोज लोग अति प्राचीन काल मे ही मध्य एवं दक्षिण भारत में फैल गये थे। पुराणो के अनुसार भोज और सात्वत्त दोनो ही यदुवश से संबंधित तथा सम्मित्रित जन थे (मत्स्यपुराण, अध्याय, 43, पृ० 48, अध्याय, 44, पृ० 46-48, वायु पुराण, अध्याय, 94, पृ० 52; अध्याय, 95, पृ० 18; अध्याय, 96, पृ० 1-2; विष्णुपुराण, IV. 13, 1-6)। महाभोज के पुत्र, सात्वत्त के वशज भोज कहे जाते थे (भागवत् पुराण, अध्याय, IX, पृ० 24, कूर्मपुराण, अध्याय, 124, श्लोक, 40; हरिवश, अध्याय, 37)। भोज हैहयो से संबंधित थे, जो यादवों की एक शाखा थे (अग्नि पुराण,

अध्याय, 275, श्लोक, 10, वायुपुराण, अध्याय, 94, पृ० 3-54; मत्स्य पुराण, अध्याय ,43, पृ० 7-49)। जैन धर्म ग्रथो मे भोजो को क्षत्रिय बतलाया गया है (जैन सूत्राज, सैं० बु० ई० II, पृ० 71, टिप्पणी 2)। अन्धको और कुकुरो के साथ भोजो ने कुरुक्षेत्र के युद्ध मे कुरुओ का समर्थन किया था (महाभारत, उद्योग पर्व, अध्याय, 19)। वे चेदियो एव सृञ्जयो से सबधित थे (महाभारत, V. 28)। जैन ग्रथ उत्तराध्ययन–चूर्णि (2, पृ० 53) मे बतलाया गया है कि उज्जयिनी का कोई राजा मुनि होने के पश्चात् भोगकड गया था। अधिक विवरण के लिए, द्रष्टव्य बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 43 और आगे; लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्यंट इडिया, पृ० 366 और आगे।

भुवनेश्वर—यह खुर्द तहसील मे स्थित एक गॉव है, जो कटक से 18 मील दूर दक्षिण और पुरी शहर से 30 मील उत्तर मे स्थित है। यहाँ अधिकांशत. हिंदू रहते है। यह मलुये पत्थर के छोटे टीलो के ऊपर मखरला धरती पर स्थित है। समीपवर्ती अनाच्छादित चट्टानो के कारण ग्रीष्म ऋतु मे यहाँ बहुत गर्मी पडती है। वल्लियान्ती नदी के तट पर स्थित यह न केवल एक तीर्थ ही वरन् स्वास्थ्यवर्धक स्थान भी है। यहाँ पर थोडी किंतु ठिठुराने वाली शीत पडती है और वर्षा ऋतु मे भी यहाँ सुहावना लगता है। यहाँ पर कुचला के बहुत वृक्ष है। यहाँ पर अनेक सरोवर है जिनमे से कुछ का यथा, केदारेश्वर के समीप, केदारगौरी, ब्रह्मेश्वर के निकट ब्रह्मगौरी और कपिलेश्वर मदिर के बाहर, कपिलह्रद का नामोल्लेख किया जा सकता है। सबसे बडा सरोवर विन्दुसागर है। केदारगौरी सरोवर का जल मदाग्नि के लिए अतीव लाभकर है। यहाँ का प्रधान मदिर लिगराज मदिर स्थापत्य कला के दृष्टिकोण से अद्वितीय है। लिगराज को प्रकारातर मे भुवनेश्वर या त्रिभुवनेश्वर भी कहा जाता है। इसके निर्माण की समावित तिथि शक सवत् 588 (667-7 ई०) है। ययाति केशरी ने इस मदिर का निर्माण प्रारभ कराया था, जिसे ललाट केशरी ने पूर्ण किया था। यह 4½ एकड भूमि मे बना हुआ है, और मखरला की एक ऊँची, मोटी दीवाल से परिवेष्ठित है और आयताकार है। भीतर का प्रागण पत्थरो से पक्का है और इसमे 60 या 70 पार्श्व मदिर है। मदिर के पश्चिमोत्तर कोने मे शिव की पत्नी भगवती का मदिर महत्त्वपूर्ण है। प्रधान मदिर के नृत्यगृह, भोजनशाला, द्वारमडप और शिखर नामक चार अग है।

भुवनेश्वर में परशुरामेश्वर मदिर भी है, जिसकी तिथि कुछ विद्वानो के अनुसार पाँचवी या छठी शताब्दी ई० है (एम० एम० गागुली, उड़ीसा ऐड हर रिमेस, 270 और आगे)। विद्वानो मे इस मदिर की तिथि के विषय मे मतभेद

है (द्रष्टव्य, ज० रा० ए० सो० ब, XV, स० 2, 1949, लेटर्स, 109 और आगे)। भुवनेश्वर अभिलेख मे उल्लिखित उद्योतकेशरिन को उसी नाम के एक राजकुमार से समीकृत किया गया है, जिसके अभिलेख उडीसा के कलिन्दकेशरी और नवमुनि गुफाओ मे प्राप्त हुये हैं (एपि० इ०, XIII 165-66)। बारहवी शती के नरसिंह प्रथम के भुवनेश्वर शिलालेख मे नरसिंह की बहन, चन्द्रिका द्वारा उत्कल विषय मे स्थित एकाम्र या आधुनिक भुवनेश्वर मे एक विष्णुमदिर का निर्माण कराये जाने का उल्लेख है (ब्रह्मपुराण, अध्याय, 40)। शिलापट्ट पर खुदा हुआ भुवनेश्वर शिलालेख पुरी जिले मे स्थित भुवनेवर के आनन्द वासुदेव के मदिर के प्रागण की पश्चिमी दीवाल पर स्थित है (एपि० इ०, XIII, 198-203)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 218, ओ 'मैल्ले द्वारा सपादित और मैसफील्ड द्वारा सशोधित, बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पुरी, 1929, पृ० 265 और आगे, एल० एस० एस० ओ "मैल्ले द्वारा लिखित, बगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, 1908, पुरी, पृ० 234 और आगे, के० सी० पाणिग्रही द्वारा लिखित, 'न्यू लाइट ऑन द अर्ली हिस्ट्री ऑव भुवनेश्वर, जर्नल ऑव द एशियाटिक सोसायटी, लेटर्स, भाग, XVII, स० 2, 1951, पृ० 95 और आगे)।

बिरजा क्षेत्र—ब्रह्मपुराण (42, 1—4) के अनुसार यहाँ पर बिरजा नामक एक देवी का आवास था। यह पुण्यसलिला वैतरणी के तट पर स्थित है। बिरजा का मदिर जाजपुर मे स्थित है। इस क्षेत्र मे कपिल, गोग्रह, सोम, मृत्युञ्जय, सिद्धेश्वर आदि आठ पुण्यक्षेत्र है (ब्रह्मपुराण, 42, 6-7)। योगिनीतत्र (2, 2, पृ० 120) मे इसका वर्णन प्राप्य है।

बोब्बिलि—यह सद्य निर्मित आन्ध्रप्रदेश राज्य के विजगापट्टम जिले मे स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग, I, पृ० 33)।

बोम्मेहाल—इसे बोम्मेपर्ती से समीकृत किया जा सकता है, जो अनतपुर से सात मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, XXV भाग, IV, पृ० 190)।

ब्रह्मगिरि—विशद विवरण के लिये 'हाफ इयर्ली जर्नल, ऑव द मैसूर युनिवर्सिटी, सेक्शन, ए, I, 1940 देखिये। इसमे इस स्थल का उत्खनन से पहले का एक सर्वेक्षण दिया गया है। यहाँ से अशोक के लघु शिलालेख का एक कुलक प्राप्त हुआ है।

बुगुड—यह गजम जिले के गुमसुर तालुक मे है (एपि० इ०, III, पृ० 41)।

चन्दक—यह महिम्सक राज्य के निकट एक पर्वत है, जहाँ पर कन्नपेण्णा नदी के मोड पर बोधिसत्त ने एक पर्णकुटी बनायी थी। यह मलय-गिरि या मलाबार घाट है।

चन्दनपुरी—यह आधुनिक चन्दनपुरी है, जो एलोरा के लगभग 45 मील दूर पश्चिमोत्तर मे मालेगाँव से तीन मील दूर दक्षिण-पश्चिम मे गिरणा नदी के तट पर स्थित एक कस्बा है (एपि० इ०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939, पृ० 29)।

चन्दौर—इस राजधानी को आधुनिक चन्दावर से समीकृत किया जा सकता है, जो होनवर तालुक और उत्तरी कनाडा जिले मे कुस्त से लगभग पाँच मील दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है (नार्थ कनाडा गजेटियर, भाग, II, पृ० 277, एपि० इ०, XXVII, भाग, IV, पृ० 160)।

चन्द्रगिरि—मैसूर राज्य के हसन जिले मे अवस्थित विख्यात जैन-नगर श्रवण बेलगोला के निकट यह एक पहाडी है (एपि० इ०, III, 184)। लोग प्राचीन काल मे इसे देय दुर्गा कहते थे।

चन्द्रवल्ली—यह ब्रह्मगिरि से दक्षिण-पश्चिम मे 45 मील दूर पर स्थित है। इस स्थान पर किये गये उत्खनन के विवरण के लिए एम० एच० कृष्ण कृत, 'एक्स-केवेशस ऐट चन्द्रवल्ली' (सप्लीमेंट टु द एनुवल रिपोर्ट ऑव द आर्कयॉलॉजिकल डिपार्टमेंट ऑव द मैसूर स्टेट, 1929) देखिये।

केप कामोरिन (संस्कृत, कन्याकुमारी)—इसका तमिल नाम कन्नि कुमारी या कन्निया कुमारी है (एपि० इ०, II, पृ० 237, पाद टि०, 3) जो प्राचीन तमिल ग्रथो मे विख्यात् है।

चौदुआर—चोदुआर के विस्तृत अवशेष कटक से लगभग चार मील दूर उत्तर मे महानदी की एक शाखा बिरूप नदी के उत्तरी तट पर विकीर्ण है। केशरिन राजवंश के पचीसवे राजा जयकेशरिन् ने चौदुआर अथवा चार द्वारों वाले नगर को अपनी राजधानी बनाया था। किसी समय यह शैवमत का एक केंद्र था। चौदुआर मे शैवमत के साथ ही साथ बौद्धमत भी उन्नतावस्था मे था। यहाँ से स्मित आकृति वाली बैठी मुद्रा मे प्रज्ञापारमिता की एक प्रतिमा प्राप्त हुयी है। यही से द्विबाहु अवलोकितेश्वर की बैठी मुद्रा की एक प्रतिमा इडियन म्यूजियम के लिए प्राप्त की गयी थी। यहाँ से प्राप्त अधिकाश प्रतिमाएँ उड़ीसा की उत्तर मध्ययुगीन मूर्तिकला का प्रारंभिक विकासबिंदु प्रतीत होती है। विशद् विवरण के लिए द्रष्टव्य, रा० प्र० चन्द, एक्सप्लोरेशन इन उडीसा, मे० आ० स० इ०, स० 44, पृ० 20 और आगे।

चाराल—यह चित्तूर जिले के पुगनुर तालुक मे है (एपि० इ०, XXV, भाग, VI, पृ० 241)।

चेब्रोलु—यह किस्त्ना जिले के बाप्टला तालुक मे स्थित है (एपि० इ०, V, 142 और आगे)।

चेल्लूर—यह गोदावरी जिले के कोकनद तालुक मे स्थित एक गाँव का नाम है (सा० इं० इं०, I, पृ० 50-51)। संप्रति मद्रास सग्रहालय मे सुरक्षित विष्णुवर्धनवीर-चोड के दान-ताम्रपत्र से पूर्वी चालुक्यो और चोलो के सबधो पर प्रकाश पडता है।

चेल्लुर—यह चेल्लूर नामक आधुनिक गाँव है (वही, I, पृ० 52, पा० टि०, 3)।

चेन्दलुर—यह नेल्लोर जिले के ओगोल तालुक मे स्थित है, जहाँ पर सर्वलोकाश्रय के 673 ई० मे अंकित कुछ ताम्रपत्र मिले थे (एपि० इ०, VIII, 236 और आगे)।

चेर—इस प्रदेश मे वर्तमान मलाबार, कोचीन और त्रावणकोर समिल्लित थे (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 21)। चेर केरल का भ्रष्ट रूप है। केरल के निवासियो को कैरलक कहा जाता था (बृहत्संहिता, XIV 12) मूलत इसकी राजधानी वञ्जि थी, जिसे कोचीन के समीप पेरियार नदी के तट पर स्थित वर्तमान तिरु-करूर से समीकृत किया जाता है और इसकी उत्तरकालीन राजधानी परियार नदी के मुहाने पर स्थित तिरुवञ्जिवकलम थी। इसमे पश्चिमी समुद्र तट पर क्विलन्दि से लगभग पाँच मील दूर उत्तर मे अगलप्पुलाई पर तोण्डि, मुचिरि, पलेयुर (चौघाट के निकट) और वैक्कराई महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केन्द्र थे। चोलो के पश्चात चेर, दक्षिण मे अग्रणी शक्ति हुये। अशोक के दूसरे शिलालेख मे केरलपुत्र का वर्णन है। सस्कृत महाकाव्यो और पुराणो मे चेरो के तमिल राज्य का वर्णन है (महाभारत, IX 352, 365, सभापर्व, XXX, पृ० 1174-75; रामायण, IV, अध्याय, 41 (बम्बई सस्करण), मार्कण्डेय पुराण, अध्याय, 57, 45, वायुपुराण, XLV 124; मत्स्यपुराण, (CXIII. 46)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐन्श्येंट इडिया, पृ० 193 और आगे।

चेराम्—पुलिनाडु मे स्थित इस गाँव को चित्तूर जिले के पुगानुर तालुक के चाराल ग्राम से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, अप्रैल 1940, पृ० 254)।

चेरुपूरु—यह गाँव विजगापट्टम जिले मे स्थित आधुनिक चिपुरुपल्ली से समीकृत किया जा सकता है। कुछ लोग इसका प्रत्यभिज्ञान विष्णुवर्धन प्रथम के चिपुरुपल्ली ताम्रपत्र में वर्णित प्लकिविषय मे स्थित चेरुपूरु से करते है।

चेवूरु—यह गाँव कित्सना जिले के कैकलूर तालुक मे है, जहाँ से ताम्रपत्रों का एक समूह उपलब्ध हुआ है (एपि० इ०, XXVII. भाग, I, पृ० 41)।

चिदंबरम्—यह उत्तर मे वेलर, पूर्व मे बगाल की खाड़ी, दक्षिण मे कोलेरून

और पश्चिम में वीरनम सरोवर के मध्यवर्ती क्षेत्र मे स्थित है। दक्षिण में अर्काट जिले मे स्थित यह नगर (सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 64, 86, 92, 97, 98, 168) अपने मंदिरो के लिए उल्लेखनीय है।[1] शिरम्बलम चिदंबरम का तमिल नाम है। इसे तिल्लई (वही, II, पृ०, 258, 279 आदि) भी और देवी-भागवत (VIII, 38) के अनुसार चिदबल्म कहते है। यह चोलो की उपराजधानी थी और अनेक चोल राजाओं का राज्याभिषेक समारोह इस मंदिर के पवित्र महाकक्ष मे हुआ था। कर्णाटक एव मैसूर के युद्धो मे इस मंदिर का महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है। दक्षिण भारत मे महादेव की पाँच आदि प्रतिमाएँ है, जिनमे से एक चिद-बरम् मे स्थित व्योम-प्रतिमा है। शिव की नटराज प्रतिमा भी महत्त्वपूर्ण है। लिगपुराण (उत्तर, अध्याय, 12) के अनुसार शिव के आठ रूप है, जिनमे पाँच आदि-रूप है।

चिदिबलस—यह गजम जिले मे नरसन्नपेत के निकट है, जहाँ से तीन अभिपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 108)।

चिक्मगलुर—यह कडुर जिले और मैसूर के उक्त जिले मे स्थित चिक्मगलुर ताल्लुक का मुख्यावास है (एपि० इ०, VIII, 50 और आगे)।

चिंगलपुत—यह एक जिले का नाम है, जिसके मुख्यावास का नाम भी चिंगलपुत है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 340)।

चिरापल्ली—यह त्रिचनापल्ली का प्राचीन नाम है (एनुअल रिपोर्ट फॉर 1937-38 ऑव साउथ इडियन एपिग्रेफी, पृ० 78)।

चित्तामूर—यह दक्षिण अर्काट जिले के गिंजी ताल्लुक मे स्थित है, जिसमें दो जैन मंदिर है (एनुअल रिपार्ट फॉर 1937-38 ऑफ साउथ इडियन एपिग्रेफी, 109)।

चोल—चोल-प्रदेश (शोरमण्डलम) मे तजोर एवं त्रिचनापल्ली जिले समाविष्ट है (सा० इ० इ०, I, पृ० 32, 51, 59, 60, 79, 92, 96, 97, 100, 111, 112, 118, 134, 135, 139 आदि)। इसे कावेरी नदी अभि-सिंचित करती थी (वही, जिल्द, II, पृ० 21, प्रस्तावना, और 503)। चोल राज्य पूर्वी समुद्र-तट पर पेन्नार नदी से लेकर वेल्लार तक और पश्चिम मे लगभग कुर्ग की सीमाओ तक फैला हुआ था। इसमे त्रिचनापल्ली, तंजोर और पुडुकोट्टा (भू० पू० रियासत) के कुछ भाग सम्मिलित थे (के० ए० नीलकठ शास्त्री, द चोलाज,

---

[1] **माडर्न रिव्यू, LXXI. 1942, एल० एन० गुबिल द्वारा लिखित लेख चिदम्बरम्।**

अध्याय, II, पृ० 22)। उरैय्यूर इसकी राजधानी थी (पुरानी त्रिचिना-पल्ली) जो सस्कृत उरगपुर की समानार्थक है। दण्डिन ने अपने काव्यादर्श मे (III, 166, रामचन्द्र तर्कवागीश सस्करण) चोल देश का वर्णन किया है, किंतु इसके भाष्यकार ने इसे कर्णाट मे सम्मिलित बतलाया है। चोल देश की परिधि, जिसे चीनी चूल्लि-ये ((Chulli-ye) कहते थे, लगभग 2400 ली थी। यहाँ की जनसख्या बहुत कम थी। यह वीरान और जगल था। यहाँ की जलवायु गरम और निवासी क्रूर और लपट थे। प्रकृत्या वे भयकर थे। यहाँ पर कुछ जीर्णप्राय सघाराम एव देवमदिर थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 227)। चोल राज्य के इच्छुक राजराज ने वेगी प्रदेश अपने चाचा विजयादित्य को दे दिया था। चोल नाम की उत्पत्ति अनिश्चित है। चोल शब्द प्राचीनकाल से ही चोलवशीय राजाओ के अधीन रहने वाली जनता और देश के लिए व्यवहृत था। चोल राजा तिरैय्यर कबीले अथवा समुद्री जन से सबधित बताये जाते थे। टॉलेमी ने शोर (चोल) राज्य को अरकेटस और मलग-राज्य को बसरोन्नगस द्वारा प्रशासित बतलाया है। टॉलेमी ने चोलो को सोरिगाई (Soringae) की सज्ञा से अभिहित किया है जिनकी राजधानी आरथौरा (Orthoura) थी (मैक्क्रिडिल, ऐश्येंट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, मजूमदार सस्करण, पृ० 64-65, 185-186)। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4, 1, 175) मे चोल का वर्णन किया है। अशोक ने दूसरे और तेरहवे शिलालेखो मे दूसरे राज्यो के साथ चोलो का वर्णन अपने साम्राज्य के बाहर सीमात पर स्थित प्रातो (प्रचम्त) के रूप मे किया है। रामायण (बबई स०) IV, अध्याय, 41), मार्कण्डेय (अध्याय, 57, श्लोक,' 45), वायु० (अध्याय, 45, श्लोक, 124) और मत्स्यपुराणो (अध्याय, 112, श्लोक 46) मे चोलो का उल्लेख प्राप्य है। बृहत्सहिता (XIV 13) मे इसे एक देश कहा गया है। चोलो का प्रारंभिक इतिहास अधकारपूर्ण है।

महावस (166, 197 और आगे) के अनुसार किसी समय लका पर आक्रमण करने वाले दमिल चोल देश के निवासी थे। चोलो का वर्णन कात्यायन के वार्तिक मे आया है। चोल तमिल सोर है, और सभवत. टॉलेमी द्वारा वर्णित शोर से समीकृत किये जा सकते है (तु० सौर रंगिया अर्कटी–(Sora Regia Arcati)। चोलो की राजधानी उरैय्यूर (उरगपुर) थी और उनका मुख्य बदरगाह, कावेरीपत्तनम् अथवा कावेरी के उत्तरी तट पर स्थित पुगार था। अधिक विवरण के लिए, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 186 और आगे द्रष्टव्य।

कोलरून—(कोल्लिडम)—यह एक नदी का नाम है (सा० इ० इ०,

जिल्द, II, पृ० 60 और 282, पाद टिप्पणी) जो सेत्तिमगलम् गाँव से होकर प्रवाहित होती है। यह त्रिचिनापल्ली से निकलती है और पोर्टो नोवो के आगे समुद्र की खाडी मे गिरती है।

कांजीवरम्—यह कच्ची या काची या काञ्चीपुर का आधुनिक नाम है (वही, II, 259, पा० टि०)। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (IV. 1 4; IV. 2 2) मे काञ्चीपुर का उल्लेख किया है। दक्षिण भारत मे बौद्ध शिक्षा के उल्लेखनीय केद्र मे से यह एक था (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, I, पृ० 79-80)। दक्षिण भारत का यह प्राचीन स्थल दो भागो यथा, शिव और विष्णु काञ्ची मे विभक्त था। कुछ विद्वानो ने इसे तीन भागो मे बाँटा है यथा, विशाल काञ्ची, लघुकाञ्ची और पिलयर कोलियम। शिवकाञ्ची का मदिर अत्यत प्राचीन है, और विष्णुकाञ्ची के मदिर का निर्माण बाद मे किया गया था। काञ्ची-नगरी शैव, बौद्ध और जैन मतो से प्रभावित रही है। काजीवरम् का कामाक्षी मदिर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। कैलासनाथ के मदिर मे अर्धनारीश्वर की एक प्रतिमा है। कच्छपेश्वर मदिर मे कूर्म के रूप मे विष्णु शिव की पूजा करते हुये प्रदर्शित किये गये है। वहाँ पर अनेक विष्णु-मदिर है। नगर के पश्चिमी भाग मे, जिसे विष्णु काञ्चीवरम कहा जाता है, बैकुण्ठ-पेरुमाल के वास्तुचित्रो मे विष्णु के विविध रूप प्रदर्शित है।

क्रंगनोर—कोडुगोलूर नामक गाँव का यह आधुनिक नाम है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 4, प्रस्तावना)। यह प्राचीन चेरो की राजधानी के रूप मे विश्रुत थी।

दडिगमण्डल—फ्लीट के अनुसार, सभवत. दडिगमण्डल को तडिगैपाडी से समीकृत किया जा सकता है (वही, II, पृ० 3, प्रस्तावना, तु० इ० ऐ०, जिल्द, XXX, पृ० 109 और आगे)।

दडिगवाडी—तडिगैपाडि से समीकृत यह मैसूर जिले मे स्थित एक प्राचीन जिला है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 4, प्रस्तावना)।

दक्षिणझारखंड—नरसिह द्वितीय के केन्दुपत्रदान ताम्रपत्र मे दक्षिण झारखड का उल्लेख है, जिसमे गजम एजेंसी का उत्तरी भाग समाविष्ट है। इसे समुद्रगुप्त की इलाहाबाद प्रशस्ति मे महाकान्तार भी कहा गया है जहाँ के प्रमुख व्याघ्रराज से उसकी लड़ाई हुयी थी।

दमिल—सासनवस (पृ० 33) मे इसका वर्णन एक राज्य के रूप मे हुआ है, जहाँ थेर कस्सप रहते थे। दमिल जन दक्षिण भारत के एक शक्तिशाली कबीले थे। वे बौद्ध-स्तूपो के प्रति अनादर भाव रखते थे (महावस कामेंट्री, पृ० 447)।

इनकी लड़ाइयाँ सिंहली-नरेशो से हुयी थीं। विस्तृत विवरण के लिए बि० च० लाहा की 'ज्यॉग्रेफिकल एसेज नामक पुस्तक, पृ० 76-80 देखिये।

दण्डपल्ली—यह चित्तूर जिले के पालमनेर तालुक मे स्थित एक गाँव है, जहाँ से विजयभूपति के अभिपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, XIV, 68 और आगे)।

दंतपुर—यह कलिंग की राजधानी थी ((जातक, II, 367, 371, 381; III, 376; IV, 230-232, 236)। गग नरेश इन्द्रवर्मन के जिरजिंगी अभिपत्रों मे (एपि० इ०, XXV, खड, VI, अप्रैल, 1940, पृ० 285) इसका उल्लेख एक सुदर नगर के रूप मे हुआ है, जो देव-पुरी अमरावती से भी अधिक रमणीक था। यह महाभारत (उद्योगपर्व, XLVII 1883) मे वर्णित दतपुर या दतकुर तथा शिकाकोल के निकट नागार्जुनिकोण्ड अभिलेखों में उल्लखित पालुर है। पालि-ग्रथ महागोविन्दसुत्तान्त (दीघ, II, पृ० 235) में भी इसका वर्णन कलिंग की प्राचीन राजधानी के रूप मे किया गया है। दतपुर का अर्थ वास्तव मे दाँत का शहर है। विश्वास किया जाता है कि बुद्ध काल के पूर्व भी यह एक महत्त्वपूर्ण नगर रहा होगा (महावस्तु, III, 361 और जातक, II, 367)। बतलाया जाता है कि बुद्ध का पवित्र दाँत इसी स्थान से लका ले जाया गया था (तु० दाथावस, बि० च० लाहा, द्वारा सपादित सस्करण)। जैन ग्रथ आवश्यक निर्युक्ति मे (1275) मे दतवक्क को दतपुर का शासक बतलाया गया है। इस शहर को गोदावरी-तट पर स्थित राजमहेन्द्री (राजामुद्री) से समीकृत किया गया है। कुछ विद्वानो ने इसे उडीसा मे स्थित पुरी बतलाया है (दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 53)। सिलवाँ लेवी ने उसे टॉलेमी द्वारा वर्णित पलौरा (Paloura) से समीकृत किया है। (सुब्बा राय के अनुमार यह दतपुर के दुर्ग के अवशेषो मे स्थित है, जो शिकाकोल रोड रेलवे स्टेशन से तीन मील दूर वशधरा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है।

दर्सि—यह आन्ध्र प्रदेश के नेल्लोर जिले मे अवस्थित है, जहाँ से पल्लव-युगीन एक दान ताम्रपत्र प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, I, 397)।

दिउली—यह गाँव धर्मशाला थाने से दो मील दूर पश्चिम मे जाजपुर तहसील मे स्थित है। यहाँ पर एक मदिर है, जो ब्राह्मणी नदी के मोड़ पर है। खमेदार महाकक्ष की छत गिर पड़ी है। मंदिर के सामने एक वटवृक्ष है, जिसकी छाया मे विष्णु की एक आदमकद एकाश्मप्रतिमा है (बिहार ऐंड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, कटक, ले० ओ, 'मेल्ली, 1933)।

देवपुर—इसे या तो सुगवरपुकोट तालुक मे स्थित देवाडि या शिकाकोल

तालुक मे स्थित देवाडी से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXIV, भाग, II, पृ० 50)।

देवराष्ट्र—यह विजगापट्टम जिले का येलमाञ्चिली तालुक है (आर्क० स० रि०, 1908-09, 123; 1934–35, 43, 65)।

धरणीकोट—(धन्नकड)—जैन ग्रथ आवश्यक निर्युक्ति (324) में इसका वर्णन है। यह गुटुर जिले मे है, जहाँ से धर्मचक्र स्तंभ लेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXIV, भाग, VI, अप्रैल, 1938, पृ० 256)। टालेमी ने इसे मेसोलिया (Maisolia) की राजधानी पित्युद्रा (Pityundra) बतलाया है। यह बेजवाडा से कोई 20 मील पहले कृष्णा नदी के तट पर स्थित था (मैक्रिंडिल, टॉलेमीज ऐंश्येंट इडिया, मजूमदार सस्करण, पृ० 187)। रेड्डियो ने धरणीकोट मे ब्राह्मणी-आक्रमण का सामना किया और उन्हे पीछे हटा दिया था (एपि० इ०, XXVI)।

धौली—दया नदी के दक्षिणी तट पर भुवनेश्वर से चार मील दक्षिण पश्चिम मे यह गाँव स्थित है। इस गाँव के समीप दो नीची-छोटी पहाडियाँ एक दूसरे के समानातर पर स्थित है। दक्षिणीपर्वतमाला के उत्तर भाग की शिला गढी हुयी और ओपदार है। यहाँ पर अशोक के कुछ शिला ज्ञापन उत्कीर्ण है। अभिलेख, शिला मे गहराई से लिखा गया है और चार खडो मे विभक्त है। अभिलेख के आगे एक चबूतरा है, जिसके दाहिनी ओर ठोस शिला मे एक हाथी का अग्रभाग गढा हुआ है। यहाँ पर कुछ प्राकृतिक तथा कृत्रिम गुफाएँ एव मदिर है। अशोक के अभिलेख धौली के सर्वाधिक रोचक अवशेष है, जिनसे एक व्यापक उदारतावादी दृष्टिकोण प्रकट होता है एव जिससे श्रेष्ठ आचारिक सिद्धातो की आदत डाली जा सकती है (विहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पुरी, ले० ओ' मेल्ली, 1929, 278 और आगे)।

धवलपेट—यह गाँव आन्ध्र राज्य के विजगापट्टम जिले मे शिकाकोल से लगभग 12 मील दूर पर स्थित है। यहाँ से महाराज उमावर्मन के अभिपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, पृ० 132)।

दिब्बिद अग्रहारम—विजगापट्टम जिले के वीरविल्ली तालुक मे स्थित यह एक गाँव है (एपि० इ०, V, 107)।

दिनकाडू—दिनकाडु अभिलेखो मे वर्णित यह एक गाँव है। इस गाँव की कुछ भूमि विजयादित्य ने माधव को दी थी (जर्नल ऑव द आध्र हिस्टॉरिकल रिसर्च सोसायटी, जिल्द, V, भाग, I, पृ० 56)।

दीर्घासि—गंजम जिले मे कलिंगपतनम से चार मील उत्तर में स्थित यह एक

गाँव है। यहाँ से वनपति (शक संवत् 997) का एक अभिलेख मिला था (एपि० इ०, IV, 314 और आगे)।

दोम्मर-नंद्याल—इसे नदिगाम और पसिम्दिकुरु नामक दो गाँवों से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXVII, भाग, VI, पृ० 274)।

द्राक्षाराम—यह एक गाँव का नाम है। इसे आंन्ध्र देश का मुकुटमणि कहा गया है। यह पूर्वी गोदावरी जिले मे रामचन्द्रपुरम ताल्लुक के इञ्जरम नहर के उत्तरी तट पर स्थित है। यह गोदावरी जिले का एक पुनीत स्थल है। यहाँ भीमेश्वर को समर्पित एक विशाल मदिर है (सा० इ० इं०, I, पृ० 53, 61, एपि० इ०, XXVI, भाग, I)। चोल नरेश अन्नदेव ने भीमेश्वर मदिर के शिखर को स्वर्ण मडित करवाया था। यहाँ पर ब्राह्मणो के लिए दो सत्रों की स्थापना की गयी थी (तु० सीवेल, लिस्ट ऑव ऐंटक्विटीज, I, पृ० 25)।

द्राविड—यह एक देश का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 113)II यह तमिल देश का सस्कृत नाम है। इसका वर्णन महाभारत (अध्याय, 118, 4), भागवत पुराण (IV 28, 30, VIII 4, 7, VIII 24 13, IX 1 2, X 79-13; XI 5, 39) और बृहत्सहिता मे (XIV 19) हुआ है। जैन ग्रथ बृहत्कल्प भाष्य मे भी इसका वर्णन प्राप्य है (वृ० श्लोक, I, 1231)।

दुण्णिविट्ठ—यह कलिंग-राज्य मे एक ब्राह्मण गाँव था (जातक, VI, 514)

एडेरु—बेजवाडा से 15 मील पूर्वोत्तर मे, कृष्णा जिले मे अकिरिपल्ली के समीप यह एक गाँव है (एपि० इ०, V, 118, वही, I, पृ० 36)। इसे कित्स्ना जिले मे स्थित इडार नुजविद ताल्लुक भी कहते है।

एकधीर-चतुर्वेदिमंगलम—यह एक गाँव का नाम है, जो दक्षिण अर्काट जिले के तिरुनाम-नल्लूर के समीप कही पर स्थित है। एकवीरमगलम् नाम एकधीर-चतुर्वेदिमगलम का वाचक है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 529, अन्य विवरण के लिए द्रष्टव्य, रगाचारी की तालिका, पृ० 1695, एफ० टी० 21, अन्य सस्करण के लिए)।

एलापुर—दतिदुर्ग के एलौरा अभिपत्रो मे इसका वर्णन है। यह एलौरा ही है जहाँ दतिदुर्ग ने दशावतार-गुहा मदिर एवं उसके उत्तराधिकारी कृष्ण ने कैलाश मदिर का निर्माण कराया था (एपि० इ०, XXV, भाग, I, पृ० 29, जनवरी, 1939)।

एल्लोर—इसे इल्लूर या इल्वल्पुर भी कहा जाता है। यह सभवतः कमलाकरपुर या तेलुगु कोलनुका अधुानिक नाम है। यह गोदावरी जिले की

की कोल्लेरु झील के तट पर स्थित है (सा० इ० इं०, जिल्द, II, पृ०, 308)। यह अपने कैलाशनाथ मंदिर के लिए विश्रुत है। औरंगाबाद से लगभग 16 मील दूर महाराष्ट्र राज्य के पश्चिमोत्तर में, एल्लोर या एलोरा में स्थित गुफाएँ भारत की कतिपय अतीव महत्त्वपूर्ण बौद्ध गुफाएँ है। सबसे पहले यहाँ भिक्षुगृहो, जिन्हे दुमलेण कहा जाता था, की खुदाई की गयी थी। बौद्ध गुफाओ के साथ ही साथ यहाँ पर ब्राह्मण और जैन गुफाएँ भी है। बौद्ध गुफाओ मे उत्तरकालीन महायान सप्रदाय के स्पष्ट चिह्न परिलक्षित होते हैं। दूसरी गुफा की दीर्घाओ मे प्रवचन-मुद्रा मे कमलासीन बुद्ध की प्रतिमाएँ है। पूर्वोत्तर के कोने में बुद्ध की एक बहुत बेडौल एव प्राय अपूर्ण प्रतिमा है। यहाँ पर सिहासन पर बैठी हुयी बुद्ध की एक भीमकाय प्रतिमा भी है। इन गुफाओ मे बुद्ध प्रवचन या धर्मचक्र प्रवर्तन-मुद्रा मे प्रदर्शित किये गये है। दीवाले बुद्ध और बौद्ध-मुनियो की प्रतिमाओ से प्रचुर रूप से आवृत्त है। तीसरी गुफा एक बिहार गुहा है, जिसमे भिक्षुओ के लिए बारह कोठरियाँ है। दीवारो पर भी बौद्ध-ऋषिओ के अनेक चित्र खचित है। चतुर्थ गुहा जीर्ण हो चुकी है। इस गुहा के उत्तरी छोर पर दो स्त्रियो द्वारा परि-सेवित पद्मपाणि की एक प्रसिद्ध प्रतिमा है। छठी गुफा मे एक मंदिर के सामने मूर्तियो से भरा हुआ एक उपकक्ष है। नवी गुफा मे विविध प्रकार के परिचारको से सेवित बुद्ध की एक प्रतिमा है। दसवी गुहा एक सुदर चैत्य-गुफा है, जिसके समुख एक विशाल एव उन्मुक्त प्रागण है। इसमे की गयी नक्काशी अत्यन्त सुदर और इसका मुहार अतिशय अलकृत है। पूजागृह मे गलियारे का भीतरी भाग प्रतिमाओ से भरे हुये तीन कक्षो मे विभाजित है। डगोबा के समुख बुद्ध की एक भीमकाय प्रतिमा यहाँ बनायी गयी है। ग्यारहवी गुफा दो मजिली एव अपने बाह्य-रूपाकार मे तेरहवी गुफा के सदृश ही है। ग्यारहवी एव तेरहवी गुफाओ मे खुले प्रागण और दीवालो मे कमरे बने हुए है तथा उनपर महायान सप्रदाय के प्रभाव चिह्न परिलक्षित होते है।

एलौरा (प्राचीन एलापुर) से सर्वप्राचीन राष्ट्रकूट सम्राट् दतिदुर्ग के ताम्रपत्र अभिलेख प्राप्त हुय थे (एपि० इ०, XXV, भाग, I, पृ० 25 और आगे)।

एलुम्बुर—यह मद्रास का एक भाग एगमोर ही है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, 133)।

एलूरु—यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 108)। यहाँ पर कुछ मदिर स्थिति है।

एलुर—यह पश्चिमी गोदावरी जिले के वेगीविषय मे स्थित एक गाँव है।

एनावपाडि—यह किसी गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 83)।

एरण्डपल्ल—फ्लीट ने इसे पूर्वी खानदेश मे स्थित एरण्डोल से एवं डुब्रील ने गजाम जिले मे शिकाकोल के समीप एरण्डपली से समीकृत किया है। कुछ विद्वानो ने इसे विजगापट्टम मे स्थित येण्डिपल्लि से समीकृत किया है (रायचौधरी, पो० हि० ऐ० इ०, पचम सस्करण, पृ० 540, जर्नल ऑव इडियन हिस्ट्री, जिल्द, VI, खड, III, पृ० 402-403)।

एयिल—यह दक्षिण अर्काट जिले के तिण्डीवनम ताल्लुक मे स्थित एक गॉव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 123, 147)। इसी गॉव के नाम पर एयिर-कोट्टम का नामकरण हुआ है।

एयिरकोट्टम—इस जिले का नामकरण सभवत दक्षिण अर्काट जिले के तिण्डिवनम ताल्लुक मे स्थित एयिल (कोट) के आधार पर हुआ है, (वही, I, पृ० 123)। यह जयकोण्डशोलमण्डलम मे स्थित एक विषय (जिला) है। काजीवरम् भी इसी मे स्थित बतलाया गया है।

गडविषय—इसे जयभञ्जदेव के अतिरिगम अभिपत्रो मे वर्णित खिञ्लीय-गडविषय से समीकृत किया जाता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, जनवरी, 1937, पृ० 18)।

गंगा—यह एक नदी का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 57-58 आदि)। इस नदी को मदाकिनी भी कहते है, जो अपने वेगवान जलप्रवाह के आक्रोश सहित आकाश से अवतरित होती है और जिसे भगवान् शिव अपनी जटा-जूट मे धारण करते है (सा० इ० इ०, II, पृ० 514)। रामचन्द्र के पुरुषोत्तमपुर अभिपत्रो मे इसका वर्णन है, जो गोदावरी है (एपि० इ०, XXV भाग, V, पृ० 208)।

गंगापाडि—यह वर्तमान मैसूर राज्य मे समाविष्ट है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ०, 8, 17)।

गंगापुर—इस गॉव को आधुनिक सगूर से समीकृत किया जाता है, जो उत्तरी कनाडा जिले (कारवार) मे सिरसी जाने वाले मार्ग पर हावेरी से लगभग आठ मील दूर पश्चिमोत्तर मे स्थित है। यह गोवेयराज्य के चद्रगुत्तिनाडु मे समिलित था (एपि० इं०, XXIII, भाग, V, पृ० 182 और आगे)।

गौतमी—यह गोदावरी नदी का एक अन्य नाम है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I, जनवरी, 1941)। इसे अखण्ड गौतमी से समीकृत किया जा सकता है। सात शाखाओ मे विभाजित होने के पहले गोदावरी को अखण्ड-गौतमी या सप्त गोदावरी का सामूहिक नाम दिया गया है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I, पृ० 40)।

गौतमी नामक एक गाँव भी है, जो गजम जिले मे बदखिमेडि ताल्लुक में

स्थित है जहाँ से तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, 180 और आगे, 4 वर्ष मे अंकित गग इन्द्रवर्मन के गौतमी अभिपत्र)।

गगांनुर—वेलूर के समीप स्थित यह एक गॉव का नाम है (वही, I, पृ० 77, 128)। यह उत्तरी अर्काट जिले के वेल्लोर तालुक मे करँवरि-आंदिनाडु मे स्थित गागेय-नल्लूर ही है।

गांगेय-नल्लूर—यह गागनुर नामक आधुनिक गाँव है (वही, I, पृ० 77)। यह्र पडुवुरुकोट्टम की करँवरि आदिनाडु तहसील मे स्थित एक गाँव है।

गेडिलम—मानवलप्पेरुमल के सेदमगलम् अभिलेख मे इस नदी का उल्लेख है जो दक्षिण अर्काट जिले के कल्ल-कुर्चि तालुक से निकलती है और उसी जिले मे कुड्डलुर के समीप सेंटडेविड किले के भग्न बुर्जो के नीचे बगाल की खाडी मे गिरती है (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, जनवरी, 1937, पृ० 27)। इस नदी के तट पर तिरुवडि एव तिरुमाणिकुलि नामक दो गॉव स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ०, 97)।

घनसेल पर्वत—यह दक्षिण भारत के अवन्ती जनपद मे स्थित था (अवन्ती-दक्खिनापथे, जातक, V, 133)।

घण्टसाल—मौसलिपटम से 13 मील पश्चिम मे, कित्स्ना जिले मे स्थित यह एक गॉव है। इखसिरिवधमान इसका प्राचीन नाम प्रतीत होता है (एपि० इ०, XXVII, भाग, I, 1947-48, 1 और आगे)। यहाँ से पॉच प्राकृत अभिलेख प्राप्त हुये थे।

घटिकाचल—यह एक पहाडी का नाम है। यह उत्तरी अर्काट जिले के शोलिघुर मे स्थित है (वही, II, पृ० 502)।

गिंगु—यह दक्षिण अर्काट जिले मे है। यहाँ पर कुछ प्राचीन स्मारक है (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट्स, 1917-18, भाग, I, पृ० 13)।

गोदावरी—यह एक नदी का नाम है (महाभारत, 85, 33, 88, 2; भागवतपुराण, V. 19, 18, ब्रह्माण्डपुराण, I, 12, 15, मत्स्यपुराण, 22, 46, पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-38)। रामायण (अरण्यकाण्ड, 15 वाँ सर्ग, श्लोक, 11-18, 24) के अनुसार यह कमलमडित थी और इसके निकट ही मृग स्वच्छद विचरण किया करते थे। हस, कारण्डव और चक्रवाक इस नदी मे क्रीडा किया करते थे। इस रम्या नदी के दोनो तट वृक्षो से सुशोभित थे। लक्ष्मण ने इस नदी मे स्नान किया था और अनेक कमलो एव फलो को लेकर वह पर्ण-कुटी लौटे थे। कालिदास ने अपने रघुवश (XIII 33 मे इसका उल्लेख किया है। पञ्चवटी उसके तट पर स्थित थी। ब्रह्मपुराण (अध्याय, 77, श्लोक, 9-10;

सौर०, अध्याय, 69, श्लोक, 26) के अनुसार इसका उद्गमस्थल त्र्यवक तीर्थ था। इस नदी के तट पर अनेक पुण्य स्थल स्थित हैं, यथा कुशावर्त्ततीर्थ (ब्रह्मपुराण, अध्याय, 80) दशाश्वमेधिकतीर्थ (महाभारत, अध्याय, 83, 64), गोवर्धनतीर्थ (वही, अध्याय, 91), सावित्री तीर्थ (वही, अध्याय, 102), विदर्भ (वही, 121), मार्कण्डेयतीर्थ (वही, अध्याय, 145) और किष्किन्ध्यातीर्थ (वही, 157)। इसका वर्णन सुत्तनिपात (पृ० 190) में हुआ है। यह दक्षिण भारत की सबसे लबी और सबसे बडी नदी है जिसका उद्गम-स्थान पश्चिमी घाट मे कही है। विन्ध्यपर्वतमाला के नीचे पूर्वी घाट मे एक घाटी बनाती हुयी यह दक्षिण-पूर्वी दिशा मे प्रवाहित होती है। यह तीन उपनदियो में बँट कर गोदावरी जिले में बगाल की खाडी मे गिरती है और अपने मुहाने पर यह एक विशाल डेल्टा बनाती है। आन्ध्र (भूतपूर्व, हैदराबाद) और महाराष्ट्र राज्य के इसके प्रवाह-पथ में इसमे अनेक सहायक नदियाँ मिलती हैं। यह सह्य पर्वत से तुगभद्रा, कावेरी, भीमरथ (या भीमरथी), कृष्णवेण्हा आदि नदियो के साथ ही नि.सृत हुयी है। दक्षिण भारत की इस पवित्रतम नदी का वास्तविक स्रोत ब्रह्मगिरि है जो त्र्यवक नामक गाँव की ओर नासिक से 20 मील दूर पर है। यह कवित्थ-वन के निकट है, (जातक, V, 132)। जैन-साहित्य मे इस नदी को गोयावरी कहा गया है (बृहत्कल्प-भाष्य, 6 6244 और आगे)। महाभारत मे (अध्याय, 85 44) सप्तगोदावरी का उल्लेख है।

गोकर्ण—केलादि सदाशिव नायक के कप ताम्रपत्र मे गोकर्ण का उल्लेख है, जो उत्तरी कनाडा (कारवार) मे इस नाम का एक ग्राम है। यह रेवा नदी के निकट है (सौरपुराण, अध्याय, 69, श्लोक, 29)। शक सवत् 1177 मे लिखित कदब कामदेव के ताम्रपत्र गोकर्ण मे प्राप्त हुये थे (तु०, एपि० इ०, XXVII, भाग, IV, पृ० 157 और आगे)। रामायण (आदिकाण्ड, 42 वाँ सर्ग, श्लोक, 12) मे बतलाया गया है कि दीर्घकाल तक नि.सतान रहने के कारण भगीरथ ऋषि ने उस स्थान पर आकर तपस्या की थी। महाभारत (85, 24-27) एव पद्मपुराण (अध्याय, 21 मे) एक तीर्थ के रूप मे इसका वर्णन किया गया है। कूर्मपुराण (30, 45-48; तु० अग्निपुराण, 109) तथा पद्मपुराण (अध्याय, 133) मे भी इसी रूप मे इसका वर्णन है। सौरपुराण (अध्याय, 99, श्लोक 33) मे दक्षिणी गोकर्ण का वर्णन है जो इसके अनुसार सिन्धु नदी के तट पर स्थित है।

गोकर्णेश्वर—कटक जिले की जाजपुर तहसील मे दिउली के समीप स्थित यह एक गाँव है, जो धरमशाला थाने से दो मील दूर पश्चिम में स्थित है। यहाँ

पर गोकर्णेश्वर का एक छोटा सा मंदिर है, जो ब्राह्मणी नदी के मोड़ पर चित्रवत् बना हुआ है। यह उड़ीसा के प्राचीन मंदिरों में से एक है। एक वट वृक्ष के तने यहाँ पर चतुर्मुखी विष्णु की एक आदमकद एकाश्म प्रतिमा प्राप्त होती है।

गोल्लपुण्डि—इसे गोल्लपूडि गाँव से समीकृत किया जा सकता है, जो कित्स्ना जिले के बेजवाडा में कृष्णा नदी के उत्तरी तट पर ताडिकोण्ड के उत्तर में लगभग 12 मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V—अम्मराज द्वितीय का ताण्डिकोण्ड-दानपत्र)।

गोमुखगिरि—यह एक पहाडी का नाम है। इस पहाडी पर एक मंदिर है, जिसे राजा अन्नदेव ने गोमुखगिरीश्वर के लिए समर्पित किया था (एपि० इं०, XXVI, भाग, I,)।

गोष्टूरु—यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, जिल्द, I,38)। गोष्टूर को कित्स्ना जिले में स्थित आधुनिक गुण्टुर से समीकृत करना संदेहास्पद है। इस गाँव के पूर्व में गोंगुव, दक्षिण में गोणयूरु, पश्चिम में कलुचेरुवुलु और उत्तर में मडपल्ली स्थित है (वही, I, पृ०, 43)।

गोट्टकेला—इसे गोटरकेल भी कहते है। यह सोनपुर कस्बे से लगभग 3 मील दूर पर है (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII, जुलाई, 1936, पृ० 250)।

गोविन्दवाडि और दामल—ये चिंगल्पुत जिले के काजीवरम् तालुक में स्थित दो गाँव हैं। गोविन्दवाडि उत्तरी अर्काट जिले के अरकोनम तालुक में तिरुमलपुरम के निकट है, और इसे तिरुमलपुरम से उपलब्ध अभिलेख में वर्णित गोविन्दपाडि से समीकृत किया गया है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ०,254)। गोविन्दपाडि वेल्लनाडु में है जो दामरकोट्टम का एक विषय (जिला) है।

गुद्दवाटि विषय—यह गोददवाडि-विषय ही है (इ० ऐ०, भाग, XIV, पृ० 53)। गुद्दवाटि विषय या गुद्दवाडि विषय को संभवतः गुद्रवार, गुद्रावार या गुद्रहार विषय से समीकृत किया जा सकता है, और यह कित्स्ना जिले के एक तालुक के मुख्यावास आधुनिक गुडिवाड से संबंधित है (हुल्टश, सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 52 और पा० टि०)।

गुडला-कण्डेरुवाटि—यह कृष्णा नदी के दक्षिणी तट पर अमरावती के चतुर्दिक् स्थित इलाके का प्राचीन नाम है जो अपने सुंदर मंदिरों, अमरवटेश्वर एवं बुद्ध के चैत्यों के लिए उल्लेखनीय है। 'गुडला' का शाब्दिक अर्थ 'मंदिरों का' है और कण्डेरवाडि या कण्डेरुवाटि का नाम प्राचीन कस्बे कण्डेरु के गण्टुर तालुक या आधुनिक कण्टेरु के आधार पर पड़ा है, जो गुंटुर जिले में स्थित एक गाँव है, जो पहले एक बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान रहा होगा। गुडलाकण्डेरुवाटि-विषय गुंटुर के उत्तरी

एवं सत्तेनपल्ली तालुक के पूर्वी भाग का नाम था। गुंटुर के केंद्रीय भाग एव सत्तेनपल्ली के दक्षिण-पूर्वी भागो को उत्तर-कण्डेरुवाटिविषय कहते थे (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 166)।

गुद्रवारविषय—इसे मसुलिपटम के समीप गुडूरु से और किस्त्ना जिले मे इसी नाम के तालुक के मुख्यावास, गुडिवाड से समीकृत किया गया है (एपि० इं०, XVII, स० 10, पृ० 45)।

गूद्र—यह ममुलिपटम के समीप एक कस्बा है। टॉलेमी ने इसे कोड्डौरा कहा है (मैक्रिडिल, ऐंश्येंट इडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, मजूमदार सस्करण, पृ० 68)।

गुण्डुगोलनु—वेगिनाण्डुविषय मे स्थित यह एक गाँव है। इसे कल्लुरु के निवासी एक ब्राह्मण को दान दे दिया गया था। यहाँ से अनेक अभिपत्र पाये गये है (इ० ऐ० XII, 248)।

गुत्ति—यह गूती नामक स्थान है, जो अनतपुर जिले के एक तालुक का मुख्यावास है (एपि० इं०, XXV, भाग, IV, पृ० 190)।

हड्डवक—यह एक गाँव है, जो स्पष्टत सुदाव है, जो उडीसा राज्य के गजम जिले के पूर्वी भाग (पहले परलकिमेडी रियासत का पूर्वी भाग) मे स्थित है (एपि० इ०, XXVI, भाग, 2, अप्रैल, 1941, पृ० 63)।

हगरी—यह नदी कदब देश एव उत्तर मे नलवाडि तथा कदब देश एव दक्षिण मे सिरे 300 के मध्य की उभयनिष्ठ सीमा है (क्वा० ज० मि० सो०, जनवरी तथा अप्रैल, 1950, पृ० 88)।

हलमपुर—गुरज़ल ब्राह्मी अभिलेख मे इस स्थान का उल्लेख है। कुछ विद्वानो के अनुसार इसे किस्त्ना जिले के नदिगाम तालुक मे स्थित अल्लूरु से समीकृत किया जा सकता है। कुछ अन्य विद्वानो के अनुसार इसे भूतपूर्व निजाम राज्य मे स्थित आलमपूर से समीकृत किया जा सकता है। आलमपूर कृष्णा मे मिलने के स्थल से थोडी दूर पहले ही, इसके तुगभद्रा के पश्चिमी तट पर रायचूर दोआब के अतिम छोर पर स्थित है। यहाँ पर पुरानिधियाँ मदिरो एव अन्य प्रकार के स्मारको का बाहुल्य है (एपि० इ०, XXVI, 124 और आगे; एनुअल रिपोर्टस ऑव द आर्क्योलॉजिकल डिपार्टमेंट ऑव निजाम्स डोमिनियस, 1926-27)।

हसप्रपतन—यह भागीरथी के बाँई ओर और प्रतिष्ठान के उत्तर मे स्थित एक तीर्थस्थान है (कूर्मपुराण, पूर्वभाग, अध्याय, 36, श्लोक, 22)।

हनुमकोण्ड (अन्मकोण्ड)—यह आन्ध्र प्रदेश राज्य मे स्थित वारगल के समीप है, जहाँ से प्रोल का अभिलेख प्राप्त हुआ था। इस स्थान के दक्षिणमे

एक पहाडी के ऊपर पद्माक्षी का एक छोटा-सा मदिर बनवाया गया था (एपि० इ०, IX, 256 और आगे)।

हेमावती—यह एक गॉव का नाम है। यह नुलम्बपाडि की प्राचीन राजधानी थी, (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 425) जिसे निगरिलि-शोरपाडि भी कहा जाता था और जो अनतपुर जिले तक फैली हुयी प्रतीत होती थी।

इदैतुरैनाडु—यह एडातोर प्रदेश है जो मैसूर के एक तालुक का मुख्यावास है (वही, I, पृ० 96)।

इलंगोयक्कुडि—यह अबा–समुद्रम का प्राचीन नाम है। मुल्लिनाडु मे स्थित यह एक ब्रह्मदेय था (एपि० इ०, XX V, भाग, I, जनवरी, 1939)।

इरमण्डलम—इर को राजराज के सुविख्यात उपनाम मुम्मुडिचोल के आधार पर मुम्मुडिचोलमण्डलम कहा जाता था (सा० इ०इ०, जिल्द, II, पृ० 108 आदि)।

इरट्टपाडि—यह पश्चिमी चालुक्यों का साम्राज्य था। इसके राजस्व की धनराशि $7\frac{1}{2}$ लाख थी (वही, I, पृ० 65)। तजौर अभिलेखो की तालिका के 1365 वे अभिलेख (रगाचारी की सूची) के अनुसार इस पर किसी चोल-नरेश ने आक्रमण किया था।

इसिल—एक महामात्र द्वारा प्रशासित दक्कन मे स्थित यह एक राजधानी थी। यह सिद्दापुर का एक प्राचीन नाम हो सकता है जो मैसूर राज्य के चीतलद्रुग (चित्रदुर्ग) जिले मे स्थित है (अशोक का प्रथम लघुशिलालेख, एपि० इ०, II, स० 4, पृ० 111)।

जगन्नाथनगरी—इसे जगन्नाथपुरम से समीकृत किया जा सकता है, जो नदी के दक्षिण मे स्थित कोकनद कस्बे का एक खड है (सा० इ० इ०, I, पृ० 51-60, सीवेल, लिस्ट ऑव ऐटिक्वटीज, जिल्द, I, पृ० 24)।

जगवाग—इस नगर पर चोड-नरेश अन्नदेव ने अधिकार कर लिया था (एपि० इ०, XXVI, भाग, I)।

जम्बुग्राम—राजा महाभवगुप्त प्रथम जनमेजय के कालिमना ताम्रपत्र मे इसका वर्णन है, जिसे कालिभना के समीप आधुनिक जामगॉव से समीकृत किया जा सकता है (इं० हि० क्वा०, XX, स० 3)।

जम्बुकेश्वर—कुछ विद्वानो के अनुसार यह श्रीरगम है (तु०, देवीपुराण, अध्याय, 102)। यह त्रिचनापल्ली से दो मील दूर उत्तर मे स्थित है। यहाँ पर एक मदिर है जिसमे जल-लिग है। जल मे रहने के कारण देवता का नाम जललिंग है। इसमे बॉई ओर ब्रह्मा, बीच मे शिव एव दाहिनी ओर विष्णु की प्रतिमाएँ है।

जटिंगरामेश्वर--यह मैसूर-राज्य के चित्तलद्रुग (चित्रदुर्ग) जिले के मोलकालमुरु तालुक मे सिद्दापुर के समीप स्थित एक पहाडी है (एपि० इं०, IV, 202)।

जयकोण्डचोलमण्डलम—यह चोल देश है (सा० इ० इ०, I, पृ० 79-80, 102-123)।

जयपुरविषय—माधववर्मन के कटक सग्रहालय मे सग्रहीत अभिपत्र मे इसका उल्लेख है, जो शुभाकरदेव के धरकोट अभिपत्र मे वर्णित कगोदमण्डल का जयकटकविषय ही है। इसे उडीसा के गजाम जिले के समीप ही स्थित वर्तमान जेपुर से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, अक्टूबर, 1937, पृ० 151)।

जाजपुर--उडीसा के जाजपुर विषय (जिले) मे स्थित यह एक प्राचीन स्थान है। महाभारत मे इस स्थान को 'बिरजाक्षेत्र' कहा गया है। दूसरी-तीसरी शती ई० मे भी इसकी गणना एक तीर्थ के रूप मे की जाती थी। यहाँ पर एक मंदिर है, जिसमे बिरजा नाम (बि-रजा, कामहीना) से सती की एक प्रतिमा अधिष्ठित है। यह मदिर चौदहवी शती ई० से पहले का नही हो सकता है। कटक जिले में वैतरणी के तट पर स्थित जाजपुर जिसे बिरजाक्षेत्र भी कहा जाता है, ऐतिहासिक महत्त्व का एक स्थान प्रतीत होता है। यहाँ से चार भीमकाय प्रतिमाएँ प्राप्त हुयी है, जो पुराविदो के लिए विशेष उपयोगी उपकरण हो सकती है। इनमें से एक बोधिसत्त्व पद्मपाणि की 16 फीट ऊँची विकृत खोडलाइट (Khondalite) की प्रतिमा है जो परवर्ती गुप्त युग की है। अन्य तीन प्रतिमाएँ वाराही, चामुण्डा, एव इन्द्राणी की है। इन प्रतिमाओ मे चामुण्डा एव इन्द्राणी की प्रतिमाएँ बहुत बुरी तरह से खडित है। जाजपुर से उपलब्ध वाराही की विशाल प्रतिमा के दोनो दाहिने हाथो के अग्रभाग लुप्त है और दोनो बांये हाथ खडित है। वह आराम की मुद्रा मे सिहासन पर आरूढ है। उसका वाहन, महिष पीठिका पर उकेर कर के चित्रित किया गया है। रा० प्र० चद के मतानुसार जाजपुर से प्राप्त मातृकाओ एव संबद्ध देवताओ तथा देवियो की प्रतिमा के निर्माताओ ने देवी-माहात्म्य का अनुसरण किया था, जिसमे केवल सात मातृदेवियो का ही उल्लेख है। बताया जाता है कि जाजपुर के सभी प्राचीन मदिरो को मुसलमान आक्राताओ ने नष्ट कर दिया था। वेडेल एव रा० प्र० चद ने ठीक ही बतलाया है कि युवान-च्वाड् के समय मे जाजपुर ही उडीसा की राजधानी थी। इसे दुर्गा या बिरजा के सम्प्रदाय का एक प्राचीन केंद्र मानना चाहिए। जाजपुर से प्राप्त मातृकाओ एवं सबद्ध देवताओ यथा, शिवदूती एव गणेश की भव्य प्रतिमाएँ प्राचीन मध्ययुगीन

बौद्ध-शिल्प के सर्वोत्तम नमूने हैं। जाजपुर के प्राचीन मध्ययुगीन शैलमंदिर स्थापत्य की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण नही है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, रा० प्र० चंद, एक्स्लोरेशंस इन उडीसा, मे० आर्क० स० इ०, सं०, 44

जेपुर—यह आंध्र राज्य के विजगापट्टम जिले में स्थित है (एपि० इ०, XXV, खंड, V, जनवरी, 1940)।

जिज्जिक—यह गाँव गजम जिले के तेक्कलि जमीदारी में स्थित आधुनिक जिरजिगी गाँव ही है, जहाँ से गग इन्द्रवर्मन के कुछ अभिपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इं०, XXV, भाग, VI, अप्रैल, 1940, पृ० 281 और 286)।

जुराडा—इसे जरडा से समीकृत किया जा सकता है, जो गजम जिले के कोदोल तालुक मे स्थित एक गाँव है। गजम जिले में सुरद तालुक का मुख्यावास सुरद ही जुराडा है (एपि० इ०, XXIV, भाग I, जनवरी, 1937, पृ०, 18)।

कच्चि—यह आधुनिक काजीवरम है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 206)।

कच्चिपेडु—यह काञ्चीपुरम्, आधुनिक काजीवरम है (सा० इं० इ०, I, पृ० 113, 114, 117, 139, 141, आदि, जिल्द, III, पृ० 267)।

कडब—यह मैसूर राज्य के तुमकुर जिले मे है, जहाँ से प्रभूतवर्ष (शक स० 715) के ताम्रपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, IV, 332 और आगे)।

कडम्ब—यह एक देश का नाम है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 343, 356)।

कडंकोट्टूर—यह एक गाँव का नाम है (वही, I, पृ० 105)। अरिष्टनेमि आचार्य यही के थे।

कडलाडि—यह उत्तरी अकार्ट जिले मे है (एपि० इं०, XIV, 310)।

कडपा—टॉलेमी ने इसे करिगे कहा है। यह उत्तरी पेन्नार के दाहिने तट से पाँच मील दूर पर उसकी एक छोटी सहायक नदी के तट पर स्थित है (टॉलेमी कृत ऐश्येंट इडिया, मजूमदार सस्करण, पृ० 186)।

कडारम (या किडारम)—यह अब मदुरा जिले के रामनाड जमीदारी तालुक का मुख्यावास है (सा० इ० इ०, II, पृ० 106)। भारत से बृहत्तर भारत या चीन की ओर जाने वाले जलपोतो के लिए पहला बदरगाह होने के कारण कडारम, तमिल देश के निवासियो के लिए एक सुपरिचित स्थान था और इसीलिए तमिल अभिलेखो मे कडारम की विजय का उल्लेख रहता है। 1090 ई० मे अंकित लघुत्तर लीडन ताम्रपत्रो मे कडारम आयिरट्टलि के चोल दरबार मे आये हुये एक राजदूत का उल्लेख है (एपि० इ०, XXII, 267-71)।

कलंजियम—यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 83)।

कलबलिनाडु—जटावर्मन कुलशेखर प्रथम के तिरुप्पूवनम अभिपत्रो मे इसका उल्लेख है। यह उत्तर एव दक्षिण—दो भागो मे विभक्त था (एपि० इं०, XXV, भाग, III, पृ० 98)।

कलवपूम्डी—अन-वोत-रेड्डी (शक सं० 1280) के कोडुरु, दानपत्र मे इसका उल्लेख है, जिसे किस्त्ना जिले के गुडिवाड तालुक मे स्थित आधुनिक कलुवपूडि से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, III, पृ० 140)।

कलिग—यह एक देश का नाम है (एपि० इ०, जिल्द, II, पृ० 8, 17, 35, 123 आदि)।

कलिगनगर—हस्तिवर्मन के नरसिहपल्ली और इन्द्रवर्मन के सातबोम्मालि अभिपत्रो मे कलिगनगर को शिकाकोल के निकट मुखलिगम या वशधरा नदी के मुहाने पर स्थित आधुनिक कलिगपटम से समीकृत किया गया है। (एपि० इ० IV, 187)। कुछ विद्वानो के अनुसार मुखलिगम एक तीर्थ स्थल है, जो गजम जिले मे परलकिमेडि से 20 मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 76)। फ्लीट ने इसे कलिगपट्म से समीकृत किया है (इडियन ऐंटिक्वेरी, XVI, पृ० 132) जो एक राज्य था। कलिग का वर्णन पाणिनि की अष्टाध्यायी मे है (IV 1. 170)। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (3, 2, 2, पृ० 191) मे इसका वर्णन किया है। भारत के पूर्वी समुद्रतट पर महानदी और गोदावरी नदियो के मध्य स्थित यह एक सुविख्यात देश था (ज० उ० प्र० हि० सो०, XV, भाग, II, पृ० 34)। गुणार्णव (गगसवत् 192) के पुत्र देवेन्द्र वर्मन के त्रिलिग अभिलेख मे भी इसका वर्णन है। लक्ष्मणसेन के इडिया आफिस अभिपत्र मे कलिग का वर्णन है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I; XXV, भाग, V, जनवरी 1940)। गग सवत् 358 के अनन्तवर्मन के तेक्कलि अभिपत्रो मे (एपि० इं०, XXVI, 174 और आगे) तथा 308 वे वर्ष के गग देवेन्द्रवर्मन के इडियन म्यूजियम अभिपत्रो (एपि० इ०, XXIII, भाग, II,) मे इसका वर्णन है। रैडल ने ठीक ही बतलाया है कि कलिगनरेश, लक्ष्मणसेन को हर प्रतिपदा को स्त्रीदान के रूप मे कर दिया करता था जब वह तरुण था (एपि० इ०, XXVI, भाग I, पृ० 11, पा० टि०, 4)। कलिग-राज्य मे समुद्रतट पर स्थित पिथुदुक, पिथुडग या पिथुण्ड था जो लांगुलिया नदी के समीप स्थित था। कलिग के प्रथम शिलालेख से ज्ञात होता है कि कलिग एक कुमार के अधीन था, जिसका मुख्यावास तोसली (तोसल) या समाप था (लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 64 पा० टि०)। हाथीगुम्फाअभिलेख के अनुसार राजा खारवेल अग-मगध में

जिनका सिंहासन अपने राज्य में वापस लाया था[1], उसने बराबर पहाड़ियों में, जिसे गोरथगिरि कहा जाता था, मागधी सेना का एक दुर्ग ध्वस्त किया था और मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह के नागरिकों पर भारी दबाव डाल कर विवश किया था। उसने मगध-नरेश बहसतिमित को अपनी सत्ता मानने के लिए विवश किया था। खारवेल ने झंझावत से बुरी तरह ध्वस्त कलिंग नगर की इमारतों, दीवालों और फाटकों का जीर्णोद्धार, इसिताल सरोवर के बाँधों को ऊँचा, और विनष्ट उद्यानों का पुनरुद्धार कराया था। हाथीगुम्फा-अभिलेख के अनुसार राजा खारवेल ने अपने शासन-काल के चतुर्थ वर्ष में भोजकों और राठिकों (जो अशोक के अभिलेख में वर्णित भोज एवं राष्ट्रिक है) को पराजित किया था और उन्हें अपनी राजनिष्ठा के प्रति शपथ लेने के लिए विवश किया था। उसके निजी अभिलेखमें राजा खारवेल को 'कलिंगाधिपति' और उसकी अग्र-महिषी के अभिलेख में उसे 'कलिंग चक्कवत्ती' बतलाया गया है। हाथीगुम्फा-अभिलेख से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि खारवेल के राज्यकाल में कलिंगनगर कलिंग की राजधानी थी। इसे संतोषप्रद ढंग से गंजम जिले में वशधरा के तट पर स्थित मुखलिंगम और उसके समीपस्थ अवशेषों से समीकृत किया गया है। खारवेल के समय में खिबीर वास्तव में कलिंग की राजधानी थी। यह नगर निकटवर्ती एक नदी से एक नहर के माध्यम से मिला हुआ था, जिसे नंद नामक किसी राजा ने तीन सौ वर्ष पूर्व खुदवाया था। इस नहर को इस राजधानी के केंद्रीय भाग तक तनमुलिय सड़क से आगे बढ़ा कर लाया गया था। नये राजप्रासाद की स्थिति से ऐसा आभासित होता है कि यह राजधानी प्राची नामक किसी सरिता के तट पर स्थित थी, जो पुरी जिले के उत्तरी भाग में प्रवाहित होती थी, जिसके दोनों तटों पर अब भी अनेक भग्न मंदिर दृष्टि-गोचर होते हैं। प्राची नदी लिंगराजमंदिर से पाँच छह मील की दूरी पर पूर्व से दक्षिण की ओर बहती है (जर्नल ऑव द इंडियन सोसायटी ऑव ओरियंटल आर्ट भाग, XV, पृ० 52 में प्रकाशित, बे० मा० बरुआ का लेख, खारवेल ऐज किंग ऐंड बिल्डर')।

प्राचीन कलिंग देश के अंतर्गत आधुनिक उड़ीसा में वैतरणी के दक्षिण में स्थित, और विजगापट्टम तक के समुद्रतटीय क्षेत्र सम्मिलित प्रतीत होते हैं (तु० महाभारत, III, 114-4)। इसमें अमरकंटक पर्वतमाला भी सम्मिलित थी, जिसे इसका पश्चिमी भाग बतलाया जाता है (महाभारत, वनपर्व) XIV, 10096-10107; कूर्मपुराण, II, XXXIX, 19 ; कनिंघम, एं० ज्यॉ० इं०,

[1] बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इंस्क्रिप्शंस, पृ० 272-273.

पृ० 734-35; अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा कृत ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 63-64)। मत्स्यपुराण में जलेश्वर का उल्लेख है, जो कलिंग की अमरकण्टक पहाड़ी पर स्थित एक तीर्थ है (186, 15-38; 187, 3-52)। भागवतपुराण में इसका और इसके निवासियों का उल्लेख है (IX. 23. 5; X. 61, 29, 37) और बृहत्संहिता मे इसका भी वर्णन है (XIV, 8)। कलिंगदेश गोदावरी और महानदियों के बीच मे स्थित है (हुल्ट्श, सा० इ० इ०, I, पृ० 63, 65, 95, आदि)। कलिंग की राजधानी दंतपुरनगर थी (एपि० इ०, XIV)। गंजम जिले मे कलिंग की अन्य अनेक राजधानियाँ स्थित थी (एपि० इ०, IV. 187)। महाशिवगुप्तययाति के सोनपुर दानपत्र मे गौडदेशीय लक्ष्मणसेन द्वारा शासित कलिंग, कगोद उत्कल और कोशल का उल्लेख है। कलिंग स्वय एक भौगोलिक इकाई थी और प्राचीन काल से ही इसके पृथक् शासक होते थे। सुदाव से उपलब्ध दो पूर्वी गग दान-ताम्रपत्रो मे (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, पृ० 63) भी कलिगनगर का उल्लेख है जिसे विभिन्न रूप से आधुनिक कलिगापतम या मुख-लिंगम मे स्थित बतलाया गया है। इस ताम्रपत्र के अनुसार कामरूप प्राचीन कलिंग मे स्थित था।

सातवी शती ई० के ऐहोल अभिलेखो मे पुलकेशिन् द्वितीय ने कलिंगो को पराजित करने का दावा किया है और उसने पिष्टपुर के दुर्ग पर अधिकार कर लिया था (एपि० इ०, VI पृ० 4 और आगे)। एक नेपाली अभिलेख मे हर्षदेव या श्रीहर्ष को कलिंग, ओड्र, गौड और अन्य देशो का राजा बतलाया गया है (ज० रा० ए० सो०, 1898, पृ० 384-85, इ० हि० क्वा०, 1927, पृ० 841)। कलिंग का उल्लेख अन्यत्र सुप्रसिद्ध लक्ष्मीकर्ण के पौत्र कल्चुरिवंशीय गया-कर्ण की रानी अल्हणदेवी के भेड़ाघाट अभिलेख मे प्राप्त होता है। इससे हमे यह ज्ञात होता है कि लक्ष्मीकर्ण जब अपने वीरत्व का प्रदर्शन कर रहा था, वंग, कलिग के साथ काँपता था (एपि० इं०, II, पृ० 11)।

कलिग के प्राचीन गंगो मे अधिकाश यथा, हस्तिवर्मन(एपि० इ०, XXIII, 65), इन्द्रवर्मन(एपि० इं०, XXV, 195), देवेन्द्रवर्मन (एपि० इ०, XXVI, 63) जो अपने को कलिंगेश्वर कहते हैं, ने कलिंग नगर के अपने जयस्कधावार से अपने दानपत्र प्रचलित किये थे (एपि० इ०, XXVI, 67)। कलिग के प्राचीन गगनरेशो यथा जयवर्मदेव और इन्द्रवर्मन के अभिपत्रो में श्वेतक के विजयआवास का उल्लेख है (एपि० इ०, XXIII, 261; XXIV, 181; XXVI 167) जिसे गजम जिले मे चिकटि से समीकृत किया गया है। भिन्न-भिन्न तिथियो मे

लिखित विभिन्न अभिलेखो में वर्णित कलिंग देश के प्राचीन जिलों की सूची के लिए, द्रष्टव्य, इडियन कल्चर, XIV, पृ० 137

पाँचवी शती ई० का सुविख्यात कोमार्टी दानपत्र चन्द्रवर्मन नामक एक श्री महाराज को प्रस्तुत करता है जिसे कलिंगाधिपति कहा गया है (सीवेल, हिस्टॉरिकल इस्क्रिप्शस ऑव सदर्न इडिया, पृ० 18)। कलिग-नरेश उमावर्मन और विशाखवर्मन् सभवत इसी वश के थे। प्राय कोमार्टी दानपत्र की तिथि के लगभग ही माठरवंशीय किसी कलिंगाधिपति वाशिष्ठीपुत्र शक्तिवर्मन का अभिलेख है, जिसने पिष्ठपुर (पिठपुरम) से कलिंगविषय मे स्थित राकलुव नामक गाँव का दान दिया था (एपि० इ०, XII, पृ० 1 और आगे)। पूर्वी चालुक्य नरेश भीम प्रथम के एक दान-ताम्रपत्र मे एलमञ्चि कलिंगदेश मे स्थित एक गाँव का वर्णन है जो देवराष्ट्र नामक प्रात का एक भाग था। रत्नदेव तृतीय के खरोद अभिलेख के अनुसार कोकल्ल का कनिष्ठ पुत्र कलिग का अधिपति था (एपि० इ०, XXI, पृ० 159)। कुछ विद्वानो के अनुसार कलिगराज न केवल कोकल्ल का उत्तराधिकारी ही था, वरन् उसे उसका पुत्र भी माना जाने लगा था। खरोद अभिलेख मे आगे बतलाया गया है कि कलिगराज तुम्माण का राजा हो गया था, जिसे कुछ लोगो ने बिन्लासपुर जिले मे तुमान से समीकृत किया है (इ० ऐ०, LIII, पृ० 267 और आगे)। अमोद अभिपत्रो के अनुसार कलिगराज ने उत्कल-नरेश का मथन किया था और गागेयदेव के राजकोष को समृद्ध बनाया था (एपि० इ०, XIX, पृ० 75)। 1135 ई० मे लिखित एक दक्षिण भारतीय अभिलेख के अनुसार कलिग के एक गग-नरेश को दुर्जय मण्ड द्वितीय ने पराजित किया था (एपि० इ०, VI, 276)। एलौरा अभिलेख के 23 वे श्लोक और इन्द्र तृतीय के बेगुम्रा अभिपत्रो के अनुसार काञ्ची, कोशल, मालवा, लाट, टक आदि देशो के नरेशो के साथ ही कलिग का राजा भी दतिदुर्ग द्वारा पराजित हुआ था (एपि०ई०IX, 24 और आगे)।

गोविन्द तृतीय नर्मदा के तट तक आया था और उसने कलिग तथा मालवा, कोशल, वेगी, डाहल और ओड्रक आदि अन्य देशो पर विजय प्राप्त की थी (एपि० इ०, XXIII, भाग, VIII, पृ० 297, स्तभ के मन्न अभिपत्र)। सातवी शती ई० मे युवान-च्वाड् कलिग आया था। उसके अनुसार इसकी परिधि 5000 ली थी। यहाँ नियमित रूप से खेती होती थी और प्रचुर फल-फूल उत्पन्न किये जाते थे। यहाँ पर विस्तृत वन थे। यहाँ की जनसख्या घनी थी। यहाँ की जलवायु गरम थी। यहाँ के निवासी उग्र एव प्रचड, अधिकाशत रूक्ष और असभ्य थे। यहाँ पर कुछ सघाराम एव देवमदिर थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, पृ० 209-10)।

महावस्तु (जिल्द, III, पृ० 361) के अनुसार दंतपुर कलिंग जनपद की राजधानी थी और बुद्ध के आविर्भाव के युगो पहले से ही स्थित थी। (जातक, II, पृ० 367)। समवतः दतपुर मे ही कृष्ण ने कलिगो का विनाश किया था महाभारत, उद्योगपर्व, XLVII, 1883)। प्लिनी द्वारा वर्णित कलिगो (Calingoe) की राजधानी ददगुल या ददगुड थी जिससे प्रकट होता है कि उसका मौलिक स्वरूप दंतकुर था न कि दतपुर (कनिघम, एं० ज्यॉ० इ०, पृ० 735)। कौटिलीय अर्थशास्त्र (पृ० 50) के अनुसार कलिग एव अग के हाथी श्रेष्ठ होते थे। दशकुमारचरितम् के अनुसार मत्रगुप्त कलिंग आया था। इस नगर से थोडी दूर पर वह किसी श्मशान के निकटवर्ती एक घने जगल मे किसी पहाड़ी के ढाल पर बैठा था। कलिग-नरेश की पुत्री कनकलेखा वहाँ पर बुलवायी गयी थी (पृ० 167-68)। आध्र की राजधानी से एक ब्राह्मण ने आकर कलिग-नरेश कनकलेखा के पिता, कर्दन के विषय मे एक कहानी बतलायी थी (वही, पृ० 172)। कालिदास ने कलिग के राजा को 'महेन्द्राधिपति' कहा है (रघुवश, IV, 43; VI, 54)। उनके अनुसार कलिग गोदावरी तक फैला हुआ था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, एम० के० आयगर कृत ऐश्येंट इंडिया ऐंड साउथ इंडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर, जिल्द, I, (1941), अध्याय, XIII, पृ० 396 और आगे।

कलिंगपट्टनम—गोदावरी के मुहाने पर स्थित यह एक समृद्धिशाली बदरगाह था।

कलिंगारण्य—मिलिन्दपञ्हो (पृ० 130) मे वर्णित यह जगल दक्षिण-पश्चिम मे गोदावरी नदी और उत्तर पश्चिम मे इन्द्रावनी नदी की गावलिया शाखा के बीच मे स्थित था (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 591)। रैप्सन के अनुसार यह महानदी और गोदावरी के बीच मे स्थित था (ऐंश्येंट इडिया, पृ० 116)।

कल्लुरु—यह प्राचीन गाँव गुटुर जिले के रेपल्ली तालुक मे स्थित है (इ० ऐं०, XII, 248)।

कलपट्टि—यह पालघाट मे है जहाँ पर एक शिलालेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XV, 145 और आगे)।

कलुबरिगा—यह मैसूर राज्य मे स्थित आधुनिक गुलबर्गा है (एपि० इ०, XIII, 157)।

कलुचेरवुलु—यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 43)।

कल्याण—इस नगर की स्थापना चोड्-नरेश कामराज ने की थी जो 'आध्र-देश के मुकुट-मणि' कामपुरी नाम से विख्यात हुयी (एपि० इ०, XXVI, भाग, I)।

कमकपल्ली—यह करवन्नाडग विषय के गिरिगड नामक गाँव मे स्थित है (एपि० इ०, XVI, 270)।

कमलपादव—यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 83)।

कमलापुरम—यह कुड्डापा जिले मे स्थित है जहाँ से इन्द्र तृतीय का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था।

कम्पिलि—यह आधुनिक कप्ली है जो बेलारी जिले के होसपेट तालुक मे तुगभद्रा के दक्षिणी तट पर स्थित है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 194; मद्रास गजेटियर्स, बेलारी, ले० डब्ल्यू० फ्रासिस, पृ० 282 और आगे)। दतिवर्मन् के दानपत्र मे काम्पैल्य मे स्थित एक बौद्ध विहार के लिए एक गाँव के दान का आलेख है (एपि० इ०, VI, 287)। समुचित साक्ष्यो के अभाव मे इस काम्पिल्य को दक्षिण पञ्चाल की राजधानी काम्पिल्य से समीकृत करना सुरक्षित नही होगा।

कनड (या कन्नड)—यह कर्णाट देश है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 117-311) जो रामनाड एव सेरिगपटम के बीच कर्नाटक का एक भाग है। इसे कुन्तलदेश भी कहा जाता है। मैसूर राज्य को भी कर्णाटक कहा जाता था, (ज० रा० ए० सो०, 1912, पृ० 482)। विजयनगर राज्य को भी कर्णाट कहा जाता था (इपीरियल गजेटियर्स ऑव इडिया, जिल्द, IV)।

कनकवल्ली—यह पगलनाडु से सबधित एक गाँव है (सा० इं० इ०, I, पृ० 78, 79) जो जयकोण्डचोलमण्डलम मे पड्डुवुर-कोट्टम का एक मडल है।

कण्डरादित्यम—त्रिचनापल्ली जिले मे कावेरी नदी के उत्तरी तट पर स्थित यह एक गाँव का नाम है (वही, I, पृ० 112)। अभिलेखो मे इसी नाम के एक प्रमुख का नाम आता है।

कण्डेरुवाडि—यह कन्डेरुवाटिविषय जिला है (वही, I, पृ० 38, 44)।

चालुक्य-नरेश भीम द्वितीय ने यहाँ के निवासियो के लिए एक राज्याज्ञा जारी की थी (द्रष्टव्य, रगाचारी की सूची मे किस्ना जिले के अतर्गत, सख्या, 98)। कण्डेरुवाटिविषय तीन या चार छोटे जिलो मे विभक्त प्रतीत होता है। प्रत्यक्षत: इसमे सपूर्ण गुण्टुर तालुक, सत्तेनपल्ली का पूर्वी भाग और तेनाली तालुक के उत्तरी भाग समिलित थे। सत्तेनपल्ली तालुक के दक्षिणी-पूर्वी भाग सहित गुण्टुर के केंद्रीय भाग को उत्तरकण्डेरुवाटिविषय (एपि० इ० XXIII, भाग, V) कहा जाता था।

कण्णमंगलम—यह एक गाँव का नाम है, जो आर्णी और वेल्लोर के बीचोबीच आर्णी जागीर मे स्थित था (सा० इ० इ०, I, पृ० 83)।

कण्णि—यह किसी नदी का नाम है जो प्राचीन काल मे कन्या कुमारी के समीप प्रवाहित होती थी (कोप्परुजिगदेव का वैलूर अभिलेख, एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 180)।

कंतेरु—सालकायन विजयस्कन्दवर्मन के कतेरु अभिपत्रो मे गण्टुर जिले के गण्टुर तालुक मे स्थित इस गाँव का उल्लेख है (एपि० इ०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939, पृ० 42)। कुछ विद्वानो के अनुसार यह गुण्टुर से कुछ मील दूर पूर्वोत्तर मे बेजवाडा जाने वाली मुख्य सडक पर स्थित है (एपि० इ०, XVIII, पृ० 56)।

कन्या—यह कन्या कुमारी ही है जो केप कामोरिन की तमिल सज्ञा है। (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 22, पा० टि०)। इसे गङ्गैकोण्डचोलपुरम भी कहा जाता है। यहाँ पर कुलोत्तुगचोल प्रथम का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXVI, भाग, VI, अप्रैल, 1942, पृ० 274 और आगे)। यह एक सुप्रसिद्ध अति प्राचीन स्थान है। यूनानी लेखक इसे कुमारिया अक्रोन या केप कोमारिया कहते थे। कन्याकुमारी देवी का मदिर हिदमहासागर के बिल्कुल तीर पर स्थित है। यहाँ पर वीर राजेन्द्रदेव का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XVIII, पृ० 21)।

करैवारि-आण्डि-नाडु—यह एक जिले का नाम है (सा० इ० ई०, I, पृ० 77, 78, 129)।

करमदाई—यह कस्बा कोयबटूर से लगभग 17 मील दूर मेत्तुपल्यम और कोयबटूर के बीच रेलवे लाइन पर स्थित है। यहाँ पर श्रीरगनाथ पेरुमल का मदिर स्थित है।

करणिपाक्कम—इसे कर्ल्लनिपाकम भी कहा जाता है। यह एक गाँव है, जो उत्तरी अर्काट जिले के वेल्लोर तालुक मे विरिञ्चिपुरम के समीप स्थित है (सा० इ० इं०, I, 136)।

करञ्जाडु—इस गाँव को कोमण्ड या करडा से समीकृत किया जा सकता है जो कोमण्ड से लगभग 16 मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, पृ० 173)।

करवण्डपुरम—यह वही गाँव है, जिसे आजकल तिन्नेवली तालुक के कल-क्कुडि-नाडु मे स्थित उक्किरक्कोट्टई कहा जाता है। आदि पाण्ड्य-नरेशो के काल मे इसका अत्यधिक सामरिक महत्त्व था। यहाँ अब भी एक किले एव परिखा के अवशेष दृष्टिगत होते है जो इसकी प्राचीन गरिमा के साक्ष्य है। यहाँ पर अरि-केशरीश्वरम् और राजसिंगीश्वरम् नामक दो शिव-मदिर है, जो अरिकेशरी एवं

राजसिंह नामक पाण्ड्य राजाओं के नाम पर बसे हुये गाँव के समीप स्थित है (एपि० इ० ,XXIII, भाग, VII, पृ० 284)।

करकाट्टूर—इसे चित्तूर जिले मे पलमानेर के समीप कलकट्टूर से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXII, पृ० 113)।

करकुडि—यह कावेरी नदी के दक्षिणी तट पर नविपन्मंगलम मे स्थित उय्यक्कोण्डन तिरुमलाई का प्राचीन नाम है (सा० इ० इ०, III, पृ० 231)। यह पाडकुलसबललाडु मे राजाश्रयचतुर्वेदिमगलम मे स्थित है (द्रष्टव्य, रंगाचारी की तालिका, 1952)।

कर्णाट-देश—इस देश का विशिष्ट उल्लेख तमिल अभिजात ग्रथो (Classics) मे हुआ है (सा० इ० इ०, I, पृ० 69-70, 82, 130, 160, 164)। इसका वर्णन भागवतपुराण (V. 6, 7) मे भी हुआ है। इसे एक विशाल देश बतलाया गया है। यहाँ पर कन्नड भाषा-भाषी लोग रहते है। कर्णाट के राजा नाममात्र के लिए विजयनगर के राजाओ के अधीन थे।

कर्णिक—यह कावेरी की एक शाखा है। यह श्रीरगम के परित प्रवाहित होने वाली कोलेरून नदी है (पद्मपुराण, अध्याय, 62)।

करूर या करुवुर—यह कोयम्बटूर जिले मे स्थित एक गाँव है (सा० इ० इ०, पृ० 126, पा० टि० 1)। इसे वञ्जि भी कहा जाता है, जो चेर-राज्य की प्राचीन राजधानी थी। टॉलेमी ने इसे करुर कहा है जो केरल के युवराज की राजधानी थी (बर्नेल, साउथ इडियन पैलियोग्रेफी, द्वितीय सस्करण, पृ० 33, पा० टि० 2, जेड० डी० एम० जी०, भाग, XXXVII, पृ० 99, हुल्टश, सा० इ० इ०, I, पृ० 106, पा० टि० 2)। यह आधुनिक त्रिचि जिले मे स्थित एक कस्वा है जिसका वर्णन विशिष्ट रूप से तमिल ग्रथो मे किया गया है। टॉलेमी के अनुसार करौरा, केरोबोथ्रोस या केरलपुत्रो की राजधानी थी। करूर का शाब्दिक अर्थ 'काला शहर' है (मैक्रिडिल, ऐश्येंट इंडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, एस० एन० मजूमदार सस्करण, पृ० 182)।

करुवूर—यह कोयबटूर जिले मे स्थित एक गाँव का नाम है। इसी जिले मे स्थित यह एक कस्बे का भी नाम है (सा० इ० इ०, II पृ० 250, 260, 288, 305; जिल्द, III, पृ० 31)।

कौराल—कुछ लोगो ने इसे कोलैर झील से, दूसरो ने उसे उड़ीसा के (पहले के सेंट्रल प्राविंस के)सोनपुर जिले से और कुछ ने उसे दक्षिण भाग मे स्थित कोराड से समीकृत किया है।

कालहस्ति—सुवर्णमुखरी नदी के तट पर स्थित यह एक तीर्थ-स्थल है, जो उत्तर-अर्काट जिले मे है (एपि० इ०, I, पृ० 368)।

कालिभना—राजा महाभवगुप्त प्रथम जनमेजय के कालिभना ताम्रपत्र अभिलेख मे (इ० हि० क्वा०, XX, स० 3) इस गाँव का वर्णन है, जो सभलपुर जिले के पटना (मू० पू० रियासत) के मुख्यावास बोलगिर से लगभग 9 मील दूर पूर्वोत्तर में स्थित है।

कालिदुर्ग—यह आधुनिक कालिकट शहर है (सा० इ० इ०, I, पृ० 364-72)। इसका तमिल रूप कल्लिकोट्टाई है।

कालियूरकोट्टम—यह एक जिले का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 116, 117, आदि)। इसकी तहसील एरिकलनाडु थी, (द्रष्टव्य, रगाचारी की तालिका का 263वाँ अभिलेख)।

कामपुरी—इसे कल्याण भी कहा जाता है, जो आध्रदेश का मुकुटमणि है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I, जनवरी, 1941)। इस नगर की स्थापना आध्रदेश मे चोड़-नरेश अन्नदेव ने की थी जो शायद उसके राज्य की राजधानी बनी (वही, XXVI, भाग, I)।

काम्करर्पाति (काम्करर्पाति)—यह गौतमी नदी के तट पर स्थित है (जो गोदावरी का ही एक अन्य नाम है)। इसे गोदावरी के पश्चिमीतट पर स्थित काकरपरु नामक आधुनिक गाँव से समीकृत किया जा सकता है। आजकल यह पश्चिमी गोदावरी जिले के तनुकु तालुक मे स्थित है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I, जनवरी, 1941)।

काण-नाडु—इसे पाण्डिमण्डलम का एक भाग बतलाया जाता है। पुडुकोट्टई (राज्य) के दक्षिणतम हिस्से—तिरुमेय्यम तालुक के पश्चिमी भाग मे काण-नाडु का प्राचीन जिला स्थित था। यह केरलसिगवलनाडु के बिल्कुल समीप था (एपि० इ० ,XXV, भाग II, अप्रैल, 1939)।

कानप्पेर—पाण्ड्य देश मे स्थित यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 149)। यह अपने मदिर के लिए विख्यात् है।

काञ्चीपुर—(काञ्ची या काञ्चीपुर)—काजीवरम् के अतर्गत् देखिये। अत्यत प्राचीन काल से ही यह एक महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थान था। भागवतपुराण (X 79 14) मे इसका उल्लेख एक नगर के रूप मे हुआ है। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (II पृ० 298) मे इसका वर्णन किया है। स्कन्दपुराण (अध्याय, I, 19-23) मे अन्य पुण्यस्थलो के साथ ही इसका भी वर्णन हुआ है। योगिनीतत्र (1, 17) मे भी इसका वर्णन है। द्रविड देश में काञ्ची नामक एक नगर था,

जहाँ किसी धनी व्यापारी का शक्तिकुमार नामक पुत्र रहता था जो एक गुणवती पत्नी पाने के लिए उत्कंठित था। इस उद्देश्य से वह कावेरी नदी के दाहिने तट पर स्थित सिरि देश में गया (दशकुमारचरितम्, पृ० 153)। शिवस्कन्दवर्मन के मयिदवोलु ताम्रपत्र में काञ्चीपुर का वर्णन है (तु०, एपि० इ०, XXV, भाग, VII, पृ० 318)। ऐहोल अभिलेख में वर्णित काञ्चीपुर पर पुलकेशिन् ने विजय प्राप्त की थी। शान्तिवर्मन के तालगुण्ड-अभिलेख में भी काञ्ची का वर्णन है। इसे काञ्चीपेडु कहा जाता है। यह काजीवरम है जो मद्रास के दक्षिण-पश्चिम में 43 मील दूर पलार नदी के तट पर द्रविड या चोल देश की राजधानी है (तु० महाभारत, भीष्मपर्व, अध्याय, IX)। शिवकाञ्ची एवं विष्णुकाञ्ची इस नगर के पश्चिमी और पूर्वी भाग है। यहाँ पर एक जैन काञ्ची भी है, जिसे तिरुप्परुत्ति-कुनरम कहा जाता है। काजीवरम के सभी मंदिरों में कामाक्षी-मंदिर सबसे महत्त्व-पूर्ण है। इस मंदिर की एक अनोखी विशेषता यह है कि देवता के सामने एक चक्र स्थित है। बताया जाता है कि इस शहर की स्थापना कुलोत्तुग चोल ने कुरुंभरभूमि नामक एक जगल में की थी, जिसे बाद में तोण्डमण्डल कहा जाने लगा था। यह प्राचीन चोलों एवं उत्तरकालीन पल्लवों की राजधानी में से एक थी (द्रष्टव्य, एम० के० आयगर, ऐंश्येंट इंडिया ऐंड साउथ इंडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर, जिल्द, I, 1941, पृ० 520 और आगे)। यह बौद्ध शिक्षा का एक उल्लेखनीय केंद्र था। भूगोलवेत्ता टॉलेमी ने बस्सरोनग द्वारा प्रशासित मलग राज्य का उल्लेख किया है, जो कुछ विद्वानों के अनुसार काञ्ची ही थी (मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 185-186)। टॉलेमी के अनुसार मलग अरौरनोइ (अरवरनोइ) की राजधानी थी (टॉलेमी, ऐंश्यट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 185)। काञ्चीपुर में कैलाशनाथ स्वामिन का मंदिर है जो छठी शती ई० के स्थापत्य की पल्लवशैली में बना है। यहाँ पर राजसिंहवर्मेश्वर नामक एक अन्य मंदिर भी है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर अगणित छोटे शैव एवं विष्णु मंदिर है (हुल्ट्श, साउथ इंडियन इंस्क्रिप्शंस, I, पृ० 1, 2, 3, 19, 29, 77, 113, 116, 118, 120, 123, 125, 139, 140, 141, 145, 146, 147)।

काञ्ची पर राष्ट्रकूट नरेश गोविन्द और उसके पिता ने आक्रमण किया था। जैसे ही गोविन्द ने इस पर आक्रमण किया, तत्कालीन काञ्ची-नरेश, 803 ई० के पहले ही पराजित हो चुका था, जैसा कि हमें ब्रिटिश म्यूजियम में संग्रहीत गोविन्द तृतीय के अभिपत्रों से ज्ञात होता है (इ० इ० ऐं०, XI, 126)। कृष्ण के शासन-काल के पाँचवें वर्ष में लिखित दक्षिणी अर्काट जिले से प्राप्त प्राचीन सिद्धलिंग-

मादम अभिलेख में काञ्ची और तजई या तंजौर की विजय का उल्लेख है (मद्रास एपिग्रेफिकल कलेक्शस फॉर 1909, नं०, 375)। उत्तरी अर्काट जिले मे स्थित उक्कलविष्णु-मदिर से प्राप्त एक अभिलेख मे राजा कन्नरदेववल्लभ को काञ्ची और तजौर का विजेता बतलाया गया है (एपि० इ०, IV, 82)।

काण्डलुर—यह एक गाँव का नाम है। इसे चिदबरम से समीकृत किया जा सकता है ('साउथ इंडियन इंस्क्रिप्शस, I, पृ० 63-65, 95, 140)। बतलाया जाता है राजराज प्रथम ने यहाँ जहाजो का विनाश किया था।

काप—यह गाँव मैसूर राज्य मे दक्षिण कनाडा (मगलोर) मे है। यहाँ से एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XX पृ० 80)।

कारैक्काल (करिकल)—यह एक बदरगाह है। यह तजौर जिले मे एक फ्रासीसी सन्निवेश था (हुल्ट्श, सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 295)।

कारुवग्राम—यह या तो कोरेगाँव या कर्व है जो कृष्णा नदी के दाहिने तट पर कराड से क्रमशः लगभग छह या चार मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, XXVI, भाग, VII, पृ० 323)।

काट्टुप्पाडि—यह मद्रास राज्य के वेल्लोर स्टेशन के निकट स्थित एक गाँव है (एपि० इं०, I, पृ० 129, पा० टि० 3)।

काटट्टूंबूर—यह एक गाँव की सज्ञा है। यह पडवूरकोट्टम के एक भाग पागलनाडु मे स्थित था। (एपि० इ०, I, पृ० 78-79)। वस्तुत यह उत्तरी अर्काट जिले के वेल्लोर तालुक में स्थित है।

कावनूर (कावन्नूर)—यह उत्तरी अर्काट जिले के गुडयात्तम तालुक में स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, I, पृ० 133, एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर 1935, पृ० 147)। यह चिंगल्पुत जिले के सैदपेत तालुक मे स्थित है।

कावेरी (*या काविरी*)—*यह एक नदी का नाम है, जो कुर्ग के दर्रों से निकल* कर कोयबटूर, त्रिचिनापल्ली जिलो से होकर बहती हुयी बगाल की खाडी मे गिरती है। यह पल्लवो की प्रिय कही जाती है। इसका यह आशय है कि किसी पल्लव-नरेश ने कावेरी के तटवर्ती प्रदेशो पर शासन किया था (सा० इ० इ०, I, पृ० 29)। इस नदी का वर्णन रामायण (किष्किन्ध्याकाण्ड, XLI, 21, 25, तु० हरिवश, XXVII. 1416-22—तु० महाभारत, भीष्मपर्व, IX 328; वनपर्व, LXXXV. 8164-5 आदि) और योगिनीतत्र (2, 6, पृ० 178) में है। कालिकापुराण (अध्याय, 24, 130, 135) के अनुसार इस नदी का उद्गमस्थल महाकाल झील है। दण्डिन् के काव्यादर्श मे कावेरी के तटवर्ती देशो का उल्लेख है (III, 166)। पुराणों एव महाकाव्यो के तीर्थयात्रा खडो में इस नदी को अतिशय पवित्र बतलाया

गया है। यह टॉलेमी द्वारा वर्णित खैबेरोज (Khaberos) है जिसका उद्गम-स्थल आदेईसाथ्रोन पर्वतमाला है, जिसे सहय के दक्षिणी भाग से समीकृत किया जा सकता है। भागवतपुराण मे इस नदी का उल्लेख है (V. 19, 18; VII, 13, 12, X 79, 14, XI 5 40, तु० पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, श्लोक 35-38)। इसका वर्णन बृहत्संहिता (XIV 13) और कालिदासकृत रघुवंश (IV. 45) मे भी है। दक्षिण भारतीय अभिलेखो मे कावेरी चोलो के नाम से संबद्ध है। हर ने गुणभद्र से यह प्रश्न किया था, "मै पृथ्वी पर स्थित एक मदिर में खड़े होकर कैसे चोलो की महान् शक्ति या कावेरी नदी का अवलोकन कर सकता हूँ?" (हुल्ट्श, सा० इ० इ०, I, 34)। चालुक्य-नरेश पुलकेशिन् द्वितीय ने चोल देश मे प्रवेश करने के लिए अपनी विजय-वाहिनी के साथ इस नदी को पार किया था, जबकि इस नदी का प्रवाह उसके हाथियो द्वारा निर्मित एक सेतु के माध्यम से अवरुद्ध हो गया था। कावेरी नदी की गरिमा प्राचीन तमिल काव्य की अक्षय विषय-वस्तु है। मणि-मेखलाई (I 9-12, 23-4) के अनुसार इस गौरव-शालिनी सरिता को महर्षि अगस्त्य ने राजा कान्त की प्रार्थना पर और सूर्य के पुत्रो की परम-पद प्राप्ति के लिए अपने कुंभ से निर्युक्त किया था। यह चोल प्रजाति की विशिष्ट निशान थी और इसने अति दीर्घकालीन अनावृष्टि के काल में मे भी उन्हे असहाय नही किया। कावेरी नदी की वार्षिक बाढो के अवसर पर एक समारोह होता था जिसमे राजा से लेकर रक तक सारा राष्ट्र भाग लेता था। यह दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी है, जो पश्चिमी घाट मे निकल कर मैसूर से होकर दक्षिण-पूर्व की ओर बहती हुयी मद्रास राज्य के तजौर जिले मे बगाल की खाडी मे गिरती है। प्राचीन काल मे मोती निकालने के लिए विश्रुत यह नदी प्राचीन चोल राज्य के दक्षिणी भाग से बहती हुयी समुद्र मे गिरती थी। कावेरी के उत्तरी तट पर स्थित पुगार या कावेरीपट्टनम् प्रमुख चोल बदरगाह था जब कि चोलो की प्राचीन राजधानी, उरगपुर इसके दाहिने तट पर स्थित थी। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 51.

काविरिप्पूबट्टनम—कावेरी नदी के मुहाने पर स्थित यह कावेरीपट्टनम का पूरा तमिल नाम है (सा० इ० इ०, II पृ० 287)। इसे अनिवार्यत. चोलो के प्राचीन बदरगाह व राजधानी कावेरीपुपट्टिनम होना चाहिए जो तमिल ग्रंथो के अनुसार प्रलय मे बह गया था (वि० रा० रा० दीक्षितार कृत प्रिहिस्टॉरिक साउथ इडिया, पृ० 31) भी द्रष्टव्य है।

केंद्रापारा—यह कटक जिले की केद्रापारा तहसील का मुख्यावास है।

केरकेर—खिचिंग से लगभग 12 मील दूर दक्षिण-दक्षिण-पूर्व में आदिपुर परगने के धोशदापीर में स्थित इस गाँव का उल्लेख नरेन्द्रभंजदेव के आदिपुर ताम्रपत्र में हुआ है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 158)।

केरल देश—केरल, तमिल शब्द चेरल का कन्नड रूप है। पाणिनि ने इसका वर्णन अपनी अष्टाध्यायी (4, 1, 175) में किया है। भागवतपुराण में भी इसका उल्लेख है (X 79, 19; X 82 13)। पुराने तौर पर इस देश को केरलम या चेरल-नाडु कहा जाता था। चेरडम का अर्थ पर्वतमाला है। केरल-देश चेर ही है (सा० इ० इ०, I, पृ० 51, 59, 86, 90, 92, 94)। वि० स्मिथ के अनुसार साधारणतया केरल का अर्थ चन्द्रगिरि नदी के दक्षिण में स्थित पश्चिमी घाट के विषम क्षेत्रों से है (अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया, पृ० 466)। इसे राजेन्द्र चोल ने जीता था। यह वर्तमान मलाबार, कोचीन और त्रावणकोर है।

केरलपुत्र (पाठांतर-केतलपुतो)—यह दक्षिणभारत में स्थित केरल देश है। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (IV 1 चतुर्थ आह्निक) में केरल (या मलाबार) का वर्णन किया है। केरलपुत्र कुपाक (या सत्य) के दक्षिण में स्थित था जो केंद्रीय त्रावणकोर (करुनगपल्ली तालुक) में कन्नटी तक फैला हुआ था। इसके दक्षिण में मूषिक नामक राजनीतिक प्रखड स्थित था (ज० रा० ए० सो०, 1923, 413)। यह पेरियार नदी से सिंचित था, जिसके तट पर कोचीन के समीप इसकी राजधानी वञ्जि स्थित थी और इसके मुहाने पर मूचिरि नामक बंदरगाह था (कै० हि० इ०, I, 595)। चेर या केरल देश में त्रावणकोर कोचीन और मलाबार जिले सम्मिलित थे। कोंगुदेश (जो कोयबटूर जिले और सलेम जिले के दक्षिणी भाग को द्योतित करता है) भी इसमें सम्मिलित किया गया था। इसकी मूल राज-धानी वञ्जि थी, जो अब पेरियार नदी के तट पर कोचीन के समीप तिरु-करूर है, किंतु इसकी उत्तरकालीन राजधानी पेरियार नदी के मुहाने पर स्थित तिरुवञ्जि-क्कलम थी। इसमें पश्चिमी समुद्र-तट पर क्विलादि के लगभग पाँच मील उत्तर में अगलप्पुलाई के तट पर तोण्डि, पेरियार के मुहाने पर स्थित मूचिरि और कोट्टयाम के समीप पलैय्यूर चौघाट तथा वैक्कारि नामक महत्त्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे।

अपने दूसरे तथा तेरहवे शिलालेखों में अशोक ने केतलपुतो या केरलों का वर्णन किया है जो उसके साम्राज्य की सीमा पर रहने वाले जन थे, यद्यपि वे उसके राज्य के बाहर थे। बाद में, पेरिप्लस के समय में केरोबोथ्रा (जो कि केरलपुत्र हैं) दमिरिच में सम्मिलित था। तत्पश्चात् टॉलेमी के समय में कारूरो का राज्य केरोबोथ्रास (केरलपुत्र) द्वारा प्रशासित था।

केरल देश का वर्णन महाकाव्यो एव पुराणो मे किया गया है। महाभारत के अनुसार(समापर्व, XXX 1174-5, अध्याय, XXXI; तु० भीष्मपर्व, IX, 352, 365; रामायण, बबई सस्करण, IV, अध्याय, 41)। केरल लोग एक जगली कबीले थे। वायुपुराण (XLV 124), मत्स्य (अध्याय, CXIII, 46) और मार्कण्डेयपुराणो (57-45), बिब्लियोथेका इडिका सीरीज) मे चोलों पाण्डयों एव केरलो का वर्णन दक्षिणापथ के निवासियो के अतर्गत किया गया है।

सेनगुत्तवन चेर प्रथम उल्लेखनीय चेर राजा था। कुछ समय के लिए दक्षिण का आधिपत्य चेरो ने चोलों से छीन लिया था, परतु शीघ्र ही यह आधिपत्य पाण्डयों को, और अतिम रूप से पल्लवो को मिल गया था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 193-194, कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, 595, बि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 58-59

केरलसिगवलनाडु—जटावर्मन कुलशेखर प्रथम के तिरुप्पुवनम अभिपत्रों में इसका उल्लेख है। यह पुडुकोट्टई रियासत के एक भाग रामनाड जिले के तिरुपट्टूर तालुक के एक बहुत बडे हिस्से पर तथा शिवगगा (जमीदारी) में भी फैला हुआ प्रतीत होता है (एपि० इ०, XXV, भाग, II, अप्रैल, 1939, पृ० 96)।

केशवपुरी—इसे आधुनिक केशपुरी से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, V, जनवरी, 1940)।

खडिपदा—बलसोर जिले की भद्रक नामक तहसील से लगभग 24 मील दूर दक्षिण-पूर्व की ओर और कटक जिले के एक महत्त्वपूर्ण शहर जैंपुर से लगभग आठ मील पश्चिमोत्तर मे स्थित यह एक छोटा सा गाँव है। यहाँ से शुभाकर के समय मे लिखित एक प्रतिमा-लेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXVI, भाग, VI, अप्रैल 1942, पृ० 247)।

खण्ड-दीप—बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता मे इस देश का वर्णन है। इसे कलिंग के राजा ने जला दिया था (आठवाँ पल्लव, पृ० 27)।

खण्डगिरि और उदयगिरि—हाथीगुम्फा-अभिलेख के लेखक खण्डगिरि एवं उदयगिरि नामक युगल पहाडियों से कुमार एव कुमारी पहाडियो के रूप मे परिचित थे। ये दोनो पहाडियाँ बालुकाश्म-शिला का एक कटिबध निर्मित करती हैं जो उडीसा की स्फटिक (Granite) पहाडी के तल को परिवेष्टित करती हुयी औतंगर और देक्कुनाल से दक्षिणोन्मुखी दिशा मे खुर्दा से गुजरती हुयी चिल्का झील तक फैली हुयी है (ज० ए० सो० बं०, ओल्ड सीरीज, भाग, VI, पृ० 1079)।

खण्डगिरि पहाड़ी पुरी जिले मे भुवनेश्वर से तीन मील दूर पश्चिमोत्तर मे खुर्दा तहसील के उत्तर-पश्चिम मे स्थित है। खण्डगिरि (टूटी या भग्न पहाडी) नाम उदयगिरि, नीलगिरि और खण्डगिरि नामक तीन शिखरो के लिए व्यवहृत होता है। खण्डगिरि का शिखर सबसे ऊँचा, 123 फीट, जब कि उदयगिरि का 110 फीट ही ऊँचा है। उदयगिरि के पाद मे एक छोटा वैष्णव आश्रम है। इसमे चौवालीस, खण्डगिरि मे उन्नीस और नीलगिरि मे तीन गुफाएँ हैं। उदयगिरि मे गुफाएँ उच्चतर और अवर, दो वर्गो मे विभक्त है। खण्डगिरि मे दो के अतिरिक्त सभी गुफाएँ पगडडी मे ही स्थित है। उदयगिरि की गुफाओ में राणीगुम्फा सबसे बडी है। अन्य उल्लेखनीय गुफाओ मे गणेशगुम्फा, जय विजयगुम्फा, मचपुरीगुम्फा, बाघगुम्फा और सर्पगुम्फा है। इनके अतिरिक्त हाथीगुम्फा एवं अनंतगुम्फा उल्लेखनीय है।

खण्डगिरि का शिखर इस प्रकार समतल कर दिया गया है जिससे पथरीले किनारों वाला एक चबूतरा बन गया है। इस चबूतरे के मध्य मे एक जैन मदिर है। मुख्य मदिर मे एक देवालय और एक द्वार मडप है। सर जॉन मार्शल ने बतलाया है कि इन सभी गुफाओ मे सर्व-प्राचीन हाथीगुम्फा कृत्रिम ढग से तराश कर बढायी गयी एक प्राकृतिक गुफा है। कालक्रम की दृष्टि से दूसरी गुफा मचपुरी है, जो इस स्थान पर बनायी गयी सभी महत्त्वपूर्ण गुफाओ का आदि रूप थी। इसके पश्चात् फिर अनतगुम्फा थी। इन सभी गुफाओं की तिथि पहली शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य के बहुत पहले नही रखी जा सकती (कैब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, जिल्द, I, पृ० 639-40)। तिथिक्रम मे दूसरी गुफा राणीगुम्फा है (विस्तार के लिए द्रष्टव्य, एशियाटिक रिसर्चेज़, जिल्द, XV, (1824); फर्ग्युसन, इलस्ट्रेशंस ऑव द राक कट टेपुल्स ऑव इडिया (1845), रा० ला० मित्र, उडीसा, जिल्द, I, अध्याय, I, आर्क० स० इं०, जिल्द, XIII, फर्ग्युसन, हिस्ट्री ऑव इडियन ऐंड ईस्टर्न आर्किटेक्चर (1876) ऐड केव टेंपुल्स (1880); कैब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, जिल्द, I, अध्याय, XXVI, बे० मा० बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इस्क्रिप्शस इन द उदयगिरि ऐंड खडगिरि केव्स, 1929; बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज़, अध्याय, X)।

खेद्रपुर—यह मिराज के दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है। यहाँ पर एक प्राचीन मदिर है। यादव राजा सिंहनदेव द्वारा मरम्मत कराये जाने वाले कोप्पेश्वर मदिर के पाद-पीठ को दो मूर्तियाँ अलकृत करती है (ज० रा० ए० सो०, भाग, 3 एवं 4, 1950, पृ० 105 और आगे)।

कील्-मुट्टुगूर—यह उत्तरी अर्काट जिले के गुडियात्तम तालुक मे स्थित एक

गाँव है, जहाँ से तीन तमिल अभिलेख प्राप्त हुये थे (एपि० इं०, IV, 177 और आगे)।

कील-वेम्ब-नाडु—यह पाण्ड्य देश की एक तहसील है, जिसमें तिन्नेवली स्थित है (सा० इं० इं०, III, पृ० 450)।

किन्डेप्प—यह गाँव तेल्लवल्लिविषय मे स्थित था (एपि० इ०, XXIII भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 59)।

किसनपुर—यह कटक जिले के पद्मपुर परगने मे स्थित एक गाँव है। यहाँ पर शिव काटेश्वर के मंदिर से पत्थर की पटिया पर उत्कीर्ण एक अभिलेख प्राप्त हुआ था। यह मदिर कटक से लगभग 18 मील उत्तर-पूर्व मे स्थित है। यहाँ से प्राप्त इस अभिलेख मे गग-राजाओ की वशावली चोलगग से अनगभीम तक दी गयी है (ज० ए० सो० ब०, LXVII, 1898, पृ० 317-27)।

किसरकेल्ला—इसे केसरकेल्ला नामक गाँव से समीकृत किया जा सकता है, जो सम्बलपुर जिले के पटना रियासत मे बोलगिर से लगभग छह मील पूर्व मे स्थित है (एपि० इ०, XXII, पृ० 136)।

कोडूरु—यह किस्ना जिले के गुडिवाड तालुक मे स्थित है, जहाँ से अभिपत्रो का एक कुलक (गिनती मे पाँच) प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXV, भाग, III, पृ० 137)।

कोलारु—यह एक गाँव का नाम है। ईलियट ने इसे कलेरु पढा है। इस गाँव के नाम का कुछ सबद्ध गुडिवाड तालुक मे स्थित कोलार या कोल्लेरु झील से हो सकता है (सा० इ० इ०, I, पृ० 52, 62; तुलनीय, इ० ऐ०, XIV, पृ० 204)।

कोलौलपुर—राइस ने इसे मैसूर के पूर्व मे स्थित आधुनिक कोलार से समीकृत किया है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941, 167; राइस, मैसूर ऐंड कुर्ग फ्रॉम द इस्क्रिपशस, पृ० 32)।

कोल्लेरु—यह गोदावरी जिले मे स्थित एक झील का नाम है (एपि० इ०, II, पृ० 308; VI, 3)। वेगिमण्डल मे स्थित यह एक बडी झील है।

कोल्लिप्पाक्कै—यह वही गाँव है, जिसे किल्लीप्पाक कहा जाता है। इसकी दीवाले शुल्ली के वृक्षो से घिरी हुयी है (सा० इ० इ०, I, पृ० 99)। एक किल्ली-प्पाग गुटुर जिले मे भी है '(रगाचारी की तालिका का 92 वाँ अभिलेख द्रष्टव्य)।

कोमण्ड—यह उडीसा के नयागढ़ (भू० पू० रियासत) मे स्थित एक गाँव है, जहाँ से तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, पृ० 172, नेत्तभंज के कोमण्ड ताम्रपत्र)।

कोमर्ती—यह गाँव गजम जिले के किसी तालुक के नरसन्नपेत नामक मुख्यावास से दो मील दूर दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है। यहाँ से कलिंग के चन्द्रवर्मन के तीन ताम्रपत्र अभिलेख प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, IV, 142)।

कोमारमंगल—इस गाँव को सलेम जिले के तिरुचेंगोद तालुक में स्थित कोमारमगलम से समीकृत किया जा सकता है। यह सलेम मे लगभग 30 मील दूर स्थित है (गग श्री पुरुष के सलेम अभिपत्र, शक स० 693, एपि० इ०, XXVII, भाग, IV, पृ० 148)।

कोनमण्डल—यह गोदावरी नदी के डेल्टा मे स्थित एक देश है, जिससे हैहय लोग घनिष्ट रूप से सबधित थे (एपि० इ०, IV, 84, 320)। कोनमण्डल के प्रमुखगण अपनी उत्पत्ति हैहय कृतवीर्य और कार्तवीर्य से बतलाते थे जो यदुवशी थे।

कोनाडु—यह तमिल देश का एक प्राचीन प्रात था, जो पुदुकोट्टा (भू० पू० राज्य) का एक भाग था। पुदुकोट्टई (राज्य) में कोडुम्बालूर इसका प्रमुख नगर था(सा० इ० इ०, II, पृ० 458)।

कोनारक—कोर्णाक नाम से भी विश्रुत यह रेतीला क्षेत्र रमणीक एवं पुनीत समुद्र-तट पर स्थित है। यह चिल्का झील से प्राची नदी तक फली हुयी रेतीली पट्टी के उत्तरी छोर के समीप स्थित है। शरद ऋतु मे पिपली से इसके निकट तक मोटरकार से आया जा सकता है। यहाँ पर कोनादित्य नामक एक देवता है (ब्रह्मपुराण, 28, 18)। यह हिंदू-मदिर के लिए विख्यात है जो भारतीय स्थापत्य का एक सर्वश्रेष्ठ नमूना है। सूर्य देवता के लिए समर्पित यह मदिर सामान्यतया 'काले पगोडा' के नाम से विख्यात है, जो पुरी नगर से पूर्वोत्तर मे 21 मील दूर पर स्थित है। मदिर के दक्षिण-पूर्व मे लगभग 1½ मील दूर पर समुद्र है। तेरहवी शती ई० के खुर्दा नरेश नरसिह देव को मदिर के निर्माण का श्रेय दिया जाता है (ज० ए० सो० ब०, LXXII, 1903, भाग, I, पृ० 120)। काले पगोडा (कोर्णाक मंदिर) का आहाता एक दीवार से परिवृत है और इसका मुख्य प्रवेशद्वार पूर्व मे है। यहाँ पर एक सुदर महाकक्ष खोदा गया है जिसके द्वारमंडप के सामने कलापूर्ण एवं विस्तृत नक्काशी की गयी है। यह भव्य मदिर अत्यधिक बैठ गया है और इसे दुष्टो से सुरक्षित रखने के लिए बहुत कुछ किया जा चुका है। ऊँची कुर्सी पर निर्मित द्वारमंडप एक विशाल भवन है। नवग्रहो का प्रतिनिधित्व करने वाला शिला-पट्ट नवग्रह शिला के नाम से विख्यात है और यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बर्नियर, कोर्णाक, (मार्ग, जिल्द, II, सख्या, 2 और 4) ओ० मैल्ली द्वारा सपादित बिहार ऐंड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पुरी, 1929, पृ० 308 और आगे ; जैरेट द्वारा

अनूदित, अबुल फज्ल की आइन-ए-अकबरी; फर्ग्युसन, हिस्ट्री ऑव इडियन ऐंड ईस्टर्न आर्किटेक्चर, भाग, VI, अध्याय, 2, आर्क० स० इ० रि०, 1902-1903, पृ० 48-49, 1903-04, पृ० 4; हटर, उडीसा, I, रा० ला० मित्र, ऐंटिक्विटीज़ ऑव उडीसा, II, 145)।

कंगोद—कीलहार्न ने इसे युवान-च्वाङ के कुग-यू-तो से समीकृत किया है। कनिंघम ने इसे गंजम से समीकृत किया है। फर्ग्युसन ने इसे गंजम जिले मे कटक ओर अस्क के बीच मे कही पर स्थित बतलाया है। अभिलेखो मे वर्णित कंगोद-मण्डल (एपि० इ०, VI, 136) शशाक के अधीन था और यहाँ के निवासियो ने कन्नौज-नरेश हर्षवर्द्धन की अवहेलना की थी।

कोंगु—इसमे सलेम और कोयबटूर के आधुनिक जिले समिलित है (सा० इ० इ०, III, पृ०, 450)।

कोंकान—मार्कण्डेयपुराण (25) के अनुसार यह वेण्वा नदी के तट पर स्थित है। दक्षिण-कोकान पर विजयनगर के सेनापति माधव ने विजय प्राप्त की थी। अपने स्वामी काशीविल्लास की कृपा के कारण माधव ने एक शैव के रूप मे ख्याति प्राप्त की थी (एपि० इ०, VI, और VIII; इ० ऐं०, XLV, 17)। अपने धर्म के लिए उसके उत्साह की पुष्टि मचल्पुर अभिपत्रो से भी होती है। दक्षिण कोकान विषयक अन्य अभिलेखीय उल्लेखो के लिए द्रष्टव्य, (एपि० क०, VII, 313-375, एपि० क०, VII, न० 34; एपि० क०, VIII, 152, 166, 382)।

कोंकुडुरु—गोदावरी जिले मे रामचन्द्रपुरम से पॉच मील उत्तर मे स्थित यह एक गॉव है (एपि० इ०, V, 53 और आगे)।

कोपण—केलादि सदाशिव नायक के काप ताम्रपत्र मे कोपण का उल्लेख है, जो कोपल ही है, और जो आंध्र प्रदेश के हैदराबाद मे स्थित जैनियो का एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थान है।

कोप्पम (कुप्पम)—यह पेरारु (पलारु) नदी के तट पर स्थित एक गाँव है (सा० इ० इ०, I, पृ० 134)। बताया जाता है कि यहाँ राजेन्द्र ने आहवमल्ल के ऊपर विजय प्राप्त की थी।

कोप्परम—यह गुटुर जिले के नरसरावपेत तालुक में स्थित है। यहाँ पुलकेशिन् द्वितीय का एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XVIII, 257)।

कोरकाई—इसका सस्कृत रूप तिरुनेलवेलि जिले में स्थित कोरगार है, जो पाण्डयो की प्राचीन राजधानी थी (सा० इ० इ०, I, पृ० 168)। साधारणतया

इसे तमिल ग्रंथो मे कोर्काई कहा गया है। यह एक समृद्धिशाली बदरगाह था (वि० रा० रा० दीक्षितार, प्रि-हिस्टॉरिक साउथ इडिया, पृ० 31)।

कोरि या कोलि—त्रिचिनापल्ली के नगरोपकठ मे स्थित यह उरैय्यूर ही है जो चोलो की प्राचीन राजधानी मानी जाती है (सा० इ० इ०, II, 252, 459)।

कोरोसण्ड—यह गाँव जिसे कोरोसण्डा भी कहा जाता है उडीसा राज्य के गजम जिले पर्लकिमेडि से छह मील दूर दक्षिण मे है (एपि० इ०, XXI, पृ०23)।

कोरुकोण्ड—राजामुद्री के उत्तर मे लगभग नौ मील दूर गोदावरी की घाटी मे स्थित यह एक पहाड़ी दुर्ग है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I, जनवरी, 1941)।

कोशल-नाडु (कोशलनाडु)—यह दक्षिण कोशल है, जो कनिंघम के मतानुसार महानदी और उसकी सहायक नदियो की ऊपरी घाटी के सदृश है (सा० इ० इ०, I, पृ० 97; आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑव इडिया, भाग, XVII, पृ० 68)। सोमेश्वर-देव के कुरुस्पल शिलालेख के अनुसार महाकोशल या दक्षिणकोशल बरार से उडीसा तक और अमरकण्टक से बस्तर तक फैला हुआ था (एपि० इ०, X, न० 4)। जाजल्लदेव के रत्नपुर अभिलेख से हमे यह ज्ञात होता है कि कलिंगराज ने दक्षिणकोशल पर विजय प्राप्त की थी और तुम्माण को अपनी राजधानी बनाया था। बिल्हरी-अभिलेख के अनुसार लक्ष्मणराज ने दक्षिण-कोशलाधिपति को पराजित किया था (एपि० इ०, II, पृ० 305, I, पृ०, 254)। साधारणतया आधुनिक छत्तीसगढ़ प्रखड को दक्षिणकोशल समझा जाता है जब कि तुम्माण को बिलासपुर जिले के तुमन नामक आधुनिक गाँव से समीकृत किया जाता है (एपि० इ०, I, 39 और आगे; 45 और आगे)।

जैन-ग्रथ जम्बुद्दीवपण्णत्ति के अनुसार, कुशावती दक्षिण कोशल की राजधानी थी। निश्चित रूप से यह वह नगर हो सकता है, जो वैताढ्य पर्वतमाला से सबद्ध है, जिसके किनारे साठ विद्याधर नगर स्थित थे (सत्तिम विज्जाहरण गरावासा, I, 12)।

कोट्टारु—यह कन्या कुमारी के समीप स्थित एक सुप्रसिद्ध कस्बा है। यह प्राचीन कस्बा त्रावणकोर मे स्थित है और कन्या कुमारी के उत्तर मे लगभग 10 मील दूर पर स्थित है (सा० इ० इं०, III, पृ० 147)।

कोट्टुर—इसे गजम मे, महेन्द्रगिरि के दक्षिण-पूर्व मे 12 मील दूर पर स्थित कोठूर से समीकृत किया जाता है। एक अन्य कोट्टूर विज़ागापट्टम जिले मे भी स्थित है (विजगापट्टम डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर, I, 137)।

कोट्याश्रम—यह वशिष्ठ का आश्रम है, जिसे बरिपद से 32 मील दूर कुलिंग से समीकृत किया गया है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 154)।

क्रोष्टुकवर्त्तनी-विषय—प्राचीन और उत्तरकालीन गग आलेखो मे वर्णित यह एक जिले का नाम है। हुल्ट्श ने इसे आधुनिक शिकाकोल से समीकृत किया है (एपि० इं०, XXVI, भाग, II, पृ० 66 और आगे, एपि० इ०, XXV, भाग, V, जनवरी, 1940, पृ० 196)। इस विषय (जिले) का उल्लेख देवेन्द्रवर्मन के शिकाकोल अभिपत्रो मे भी हुआ है। कुछ विद्वानो ने इसे गजम जिले की वंशधरा नदी के उत्तरवर्ती देश से समीकृत किया है (जर्नल ऑव द मिथिक सोसायटी, XIV, पृ० 263)।

कृष्णगिरि—यह कराकोरम या काला-पहाड है (वायुपुराण, अध्याय, 36)। प्राचीन भूगोलवेत्ता काराकोरम को कृष्णगिरि कहते थे। यह पर्वत पश्चिम मे हिन्दुकुश के क्रम मे स्थित है। आधुनिक भूगोलवेत्ताओ के अनुसार यह खास हिमालय से अधिक प्राचीन है। यह हर्सीनियन युग का है (लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 4 और 7, *रैप्सन, आध क्वायन्स*, XXXIII, *बाबे गजेटियर*, I, II, 9, तु० रामायण, VI, 26-30)।

कृष्णवर्णा—यह आधुनिक कृष्णा नदी है (सा० इ० इ०, I, पृ० 28)। पुराणो मे वर्णित कृष्णवेण्वा जातको मे कन्हपेण्णा, और खारवेल के हाथीगुम्फा-अभिलेख मे वर्णित कण्हपेम्णा, दक्षिण भारत की एक प्रसिद्ध नदी है। रामायण, (किष्कन्ध्याकाण्ड, XLI, 9) मे इसका उल्लेख कृष्णवेणी या कृष्णवेणा के रूप मे किया गया है (तु०, अल्टर्ट्युस्कुडे, जिल्द, I, पृ० 576)। इसका उद्गम स्थान पश्चिमी घाट मे है। दक्कन के पठार से होती हुयी और पूर्वी घाट को एक कृश-प्रवाह (नदकदर) के रूप मे चीरती हुयी यह पूर्व की ओर बहती है और बगाल की खाडी मे गिरती है (विस्तार के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 48)। वेण (वराह-पुराण, LXXXV), वेणा या वर्णा (*कूर्मपुराण, XLVII, 34*), *वैणी (वायुपुराण, XLV, 104)*, *वीणा*, (महाभारत, भीष्म पर्व, IX. 328) और वेण्णा (भागवतपुराण, XIX, 17) इसके विविध पाठ है। पार्जिटर ने कृष्णा एव कावेरी नदियो के मध्य पेन्नार नदी से इसका समीकरण प्रस्तावित किया है (मार्कण्डेय पुराण, पृ० 303, टिप्पणियाँ)।

कृष्णा—यह नदी पुराणो मे वर्णित कृष्णवेणा या योगिनीतंत्र में वर्णित कृष्णवेणी (2. 5, पृ० 139-140; हुल्ट्श, सा० इं० इ०, II, 232) के समान ही है। इसका वर्णन भागवतपुराण (V, 19, 18)

और बृहत्संहिता (XIV, 14) मे हुआ है। यह अपने आधुनिक नाम कृष्णा में जीवत है। मार्कंडेय पुराण (57, 26, 27) के अनुसार यह सह्य पर्वत से निकलती है। जातकों में इसे कन्हपेण्णा और खा खेल के हाथीगुम्फा अभिलेख मे कण्हपेण्णा भी कहा गया है। इसका उद्गम-स्थल पश्चिमी घाट में है। पूर्व की ओर बहती हुयी यह दक्कन के पठार से होती और पूर्वी घाट को एक नदकंदर के रूप मे चीरती हुयी बगाल की खाडी मे गिरती है। इसका प्रवाह-पथ महाराष्ट्र (भूतपूर्व बबई राज्य) और आध्रप्रदेश (भूतपूर्व हैदराबाद रियासत) राज्यो से होकर है। आलमपुर से उत्तर-पूर्व में जगय्यपेत के आगे तक बहती हुयी कृष्णा नदी हैदराबाद (भू० पू० रियासत) की प्राकृतिक दक्षिणी सीमा बनाती है। प्राय. अठनी के समीप इसमे कई सरिताओ का सयुक्त प्रवाह आकर मिलता है जिनमे यर्ला, कोइद और वर्णा नदियाँ सुप्रसिद्ध है। आध्र प्रदेश मे (भू० पू० हैदराबाद) प्रवेश करने के पूर्व मुद्देबिहल के आगे दाहिनी ओर से इसमे मालप्रभा नदी मिलती है। आध्रप्रदेश मे इसके प्रवाह-क्रम मे इसमे अनेक उपनदियाँ मिलती है, जिनमें धोन, भीमा, दिदी, पेद्दवगु, मुसि-अलेर, पलेर, मुनेर और तुगभद्रा नदियाँ समिलित है (विस्तार के लिए द्रष्टव्य, लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 48)।

कृष्णापुर—यह विजयनगर के खंडहरों के पश्चिमी छोर पर स्थित एक विजन गाँव है। यहाँ पर शक सवत् 1451 मे किसी रद्दी पाषाण गुट्टिका पर उत्कीर्ण कृष्णराय का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, I, 398)। तिन्नेवल्ली से छह मील दक्षिण-पूर्व में स्थित इसी नामका एक गाँव है, जहाँ से सदा-शिवराय के ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, IX, 328 और आगे)।

कृतमाला—इस नदी को वैगाई से समीकृत किया गया है जो पाण्ड्य राज्य की राजधानी मधुरा शहर से होकर बहती है।

कुडमलाईनाडु—यह कुर्ग ही है (सा० इ० इं०, I, पृ० 63, II, पृ० 8, 17, 35, III, पृ० 144)। हुल्ट्श के अनुसार यह मलावार है।

कुडमुक्किल—यह कुमकोनम है (सा० इ० इ०, III, पृ०, 450)।

कुडियान्तण्डल—यह गाँव चिंगलपुत जिले मे स्थित है (एपि० इं०, XIV 232)।

कुद्राहार—यह सभवत कोण्डमुडी का कुदूरहार ही है जहाँ से जयवर्मन के अभिपत्र प्राप्त हुये थे। यह कुदूर मे स्थित किसी जिले के मुख्यावास का नाम है जो किस्तना जिले के बदर तालुक मे स्थित आधुनिक कूडुरु ही है। (एपि० इं०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939, पृ० 46)।

कूलबंदल—यह एक गाँव है जो काजीवरम से वाडीवाश जाने वाली सड़क पर मामण्डूर के दक्षिण मे पाँच मील दूर पर स्थित है (सा० इ० इ०, III, पृ० 1)। यह उत्तरी अर्काट जिले के चेय्यर तालुक मे है।

कुमारमंगलम—ऐमबुन्डी के पश्चिमोत्तर मे कोर्रमगलम के पूर्व मे स्थित यह एक गाँव का नाम है, जो पोयगाई के उत्तर मे (राजेन्द्र चोलनल्लूर) और पालारु नदी के दक्षिण मे स्थित है (सा० इ० इ०, I, पृ० 87-88)।

कुमारपुर—नेत्तभजदेव के जुराड दानपत्र मे कुमारपुर को गजम जिले के बेरहमपुर तालुक मे स्थित इसी नाम के एक गाँव से समीकृत किया जाता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, जनवरी, 1937, पृ० 18)।

कुमारवल्ली—यह कुमारवल्लिचतुर्वेदिमगलम का आधुनिक नाम है (सा० इ० इ०, II, प्रस्तावना, पृ० 23)।

कुमारी—कन्या कुमारी के समीप यह एक पवित्र नदी का तमिल नाम है और यह सस्कृत कुमारी के समरूप है (सा० इ० इ०, I, पृ० 77)।

कुभकोनम—कावेरी नदी के तट पर स्थित यह शिक्षा का एक महान केंद्र और दक्षिण भारत के प्राचीनतम नगरो मे से एक था। यहाँ के सारगपाणि, कुभेश्वर, नागेश्वर और रामस्वामी मंदिर उल्लेखनीय है। इस नगर का नाम कुभेश्वर देवता के नाम पर पड़ा है। नागेश्वर मंदिर मे सूर्य के लिए एक पृथक् मंदिर है। सारगपाणि एक वैष्णव देवता और विष्णु के एक खास अवतार है। रामस्वामी मंदिर को तजौर के किसी राजा ने सोलहवी शताब्दी ई० मे बनवाया था।

कुम्मट—यह दोरवडिनाडु मे स्थित है। इसे आनेगोण्डि से लगभग आठ मील दूर पर स्थित कुमार-रामन कुम्मट से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V)।

कूनियूर—यह गाँव तिरुनेलवेल्लि जिले के अबासमुद्रम तालुक मे स्थित है जहाँ से वेकट द्वितीय के समय के ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, III, 236)।

कुंतल—यह कर्णाट देश का एक जिला है (सा० इ० इ०, I, 156, 160)। मैसूर से प्राप्त अभिलेखो के अनुसार (राईस, मैसूर ऐंड कुर्ग फ़ाम इस्क्रिप्शस, पृ० 3; फ्लीट, डाइनस्टीज़ ऑव कनारीज़ डिस्ट्रिक्टस, पृ० 284, पा० टि० 2)। कुतल क्षेत्र मे (महाराष्ट्र भू० पू० बबई प्रेसिडेंसी) के दक्षिणी तथा मैसूर के उत्तरी भाग सम्मिलित थे। युले द्वारा प्रस्तावित गोदलोई का कुंतल से समीकरण मान्य हो सकता है। चूँकि यह पृथ्वी देवी के बालो (कुतल) के सदृश है, इसलिए

इसे कुंतल कहा जाता है। किसी समय यहाँ नद वशीय राजा राज्य करते थे। लगता है कि दक्कन के कुतल लोग ऐतिहासिक युगो में अत्यधिक महत्ता प्राप्त कर सके थे। ग्यारहवी और बारहवी शताब्दी के अभिलेखो मे कुतल देश का प्राय: उल्लेख किया गया है जब कि इसमे दक्षिणी मराठा प्रदेश और निकटवर्त्ती कन्नड जिले समिलित थे (एपि० इ०, XXIV, पृ० 104 और आगे)। साहित्यिक एव अभिलेखीय उल्लेख असदिग्ध रूप से यह सिद्ध करते है कि दक्कन के सात-कर्णियो के कई कुल थे, और इनमे से एक या अधिक कुलों ने कन्नडी जिलो के कुतल पर कदबो के पहले शासन किया था। अजता के एक अभिलेख मे वाकाटक-नरेश पृथ्वीषेण प्रथम का उल्लेख है, जिसने कुतलेश्वर पर विजय प्राप्त की थी। पृथ्वीषेण ने अपना प्रभुत्व बुन्देलखड मे नचने की तलाई, गंज, तथा कुतल के सीमावर्ती प्रदेशो पर स्थापित किया था (एपि० इ०, XVII, 12; इ० ऐ०, 1876, पृ० 318)। हरिषेण नामक एक वाकाटक नरेश ने कुतल पर विजय प्राप्त करने का दावा किया था (वस्तुत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐन्श्येंट इडिया, पृ० 176 और आगे)। कर्ण के रीवा शिलालेख मे कुतल का उल्लेख है जो उत्तरकालीन चालुक्यो का देश था (एपि० इ०, XXIV, भाग, 3, जुलाई, 1937, पृ० 110)। कुछ विद्वानो के अनुसार कुतल भीमा और वेदवती के बीच मे स्थित है, जिसमे महाराष्ट्र (भू० पू० बबई) के कन्नड जिले, मद्रास और मैसूर राज्य तथा सभवत. विदर्भ सहित महाराष्ट्र का भी एक भाग संमिलित था जिसकी राजधानी गोदावरी-तट पर स्थित प्रतिष्ठान थी (द्रष्टव्य, वा० वि० मिराशी, हैदराबाद आर्कयॉलॉजिकल मेमायर, स० 14, पृ० 9, पा० टि०)। तालगुण्ड स्तभ लेख से हमे ज्ञात होता है कि कुतल मे स्थित वैजयन्ती के एक कदब नरेश ने अपनी पुत्रियो का विवाह गुप्त तथा अन्य राजाओ के साथ किया था। कुतल के कुछ मध्ययुगीन राजा अपनी उत्पत्ति चन्द्रगुप्त से बतलाते थे (रा० कु० मुकर्जी, गुप्त इपायर, पृ० 48)।

कूर—यह एक गाँव है, जिसके 108 परिवार चारो वेदो का अध्ययन करते थे (सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ०, 154)।

कूरम—यह काञ्चीपुरम के समीप एक गाँव है। कूरम गाँव नाडु (देश) या सस्कृत नीरवेलूर के मन्यवान्तरराष्ट्र मे था जो ऊरुक्काट्टुक्कोट्टम की एक तहसील थी (सा० इ० इं०, I, 144, 147, 154, 155)। एक अभिलेख मे कूरम की सभा ऊर्फ ऊरुक्काट्टुक्कोट्टम के नीरवेलूरनाडु जिले मे शोलमार्त्तण्डु चतुर्वेदिमगलम् द्वारा भूमि के विक्रय का उल्लेख है।

कुवलयसिंगनल्लूर—यह अण्डनाडु तहसील मे स्थित है जो मदुरा जिले

के पेरियकोट्टई और उसके समीपवर्ती क्षेत्र हैं (एपि० इं०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939, पृ० 40)।

कुवलालपुर—यह एक कस्बा है। इसका आधुनिक नाम कोलार है (सा० इ०, जिल्द, II, पृ० 380)।

लालगुडी—यह त्रिचिनापल्ली जिले मे स्थित है जहाँ मे तीन तमिल अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XX, पृ० 46)।

लाम्—यह गुटुर जिले मे ताडिकोण्ड से दक्षिण मे दो मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 166)।

लांगुलिय—यह नदी, जिसे नागावती भी कहा जाता है, गोदावरी और महानदी के डेल्टा के बीच स्थित है। यह कलहदी की पहाडियो से निकलती है और गजम जिले से होकर दक्षिण की ओर बहती हुयी आध्रप्रदेश मे शिकाकोल (श्रीकाकुलम) के आगे खाडी (बगाल की) मे गिरती है। मार्कण्डेयपुराण मे इसे लागूलिनी कहा गया है (LVII, 29)। यह महाभारत मे वर्णित लागली नदी है (सभापर्व, IX. 374)।

लेकुमारी—इसे कैकलूर विषय के कैकलूर तालुक मे स्थित लोकमुडि से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, खड, I, पृ० 46)।

लोहितगिरि—यह एक पहाडी है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 372)।

लोकालोक पर्वत्—यह एक पर्वत का नाम है, जिसे ताजे पानी के सागर के पार स्थित माना जाता है और जिसके आगे ब्रह्माण्ड-कोशिका स्थित है (सा० इ० इ०, III, पृ 414, तु० विष्णुपुराण (विल्सन), पृ० 202, टि० 6)।

लुपुट्टरा—लुपटुरा या लुपुटुरा सभवत छठे वर्ष मे अकित पटना अभिपत्रो मे वर्णित लिपतुग ही है (एपि० इ०, III, 344)। कुछ लोगो ने इसे पटना (रियासत) मे बोलगिर से छह मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित लेप्त से समीकृत किया है, जब कि अन्य लोग इसे सोनपुर (भू० पू० रियासत) मे स्थित या तो नुप्तर या नुपरसिग से समीकृत करने के पक्ष मे है (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII, जुलाई, 1936, पृ० 250)।

मध्यम-कलिंग—यह उस प्रदेश का नाम है जिसे स्थूल रूप से आधुनिक विजगापट्टम जिला कहा जाता है (एपि० इ०, VI, 227, 358, एनुअल रिपोर्ट ऑव द साउथ इंडियन एपिग्रेफी, 1909, पृ० 106; वही 1918, पृ० 132)। कुछ लोगो के अनुसार यह मेगस्थनीज द्वारा वर्णित मोदोकलिंगाई है (इं० ऐं०, VI, 338)।

मदुराई—यह पाण्ड्यो की राजधानी मदुरा है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 206)।

मदुरमण्डलम—यह एक देश का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 97, 99, 112), यह प्राचीन पाण्ड्य देश है जिसकी राजधानी मदुरा थी। टॉलेमी ने इसे मदौरा (Madoura) कहा है। यह वैगाई नदी के तट पर स्थित है।

मदुरा—रामायण (उत्तरकाण्ड, सर्ग, 83, श्लोक, 5) के अनुसार यह रमणीक नगर बहुत दिनो तक राक्षसो से परिपूर्ण था। यह नगर वैगाई नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है। यह मद्रास से 345 मील दूर दक्षिण रेलवे के मुख्य रेलमार्ग पर स्थित है (मद्रास डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, मदुरा, लेखक, डब्ल्यू० फ्रासिस, पृ० 257 और आगे)। यह मदिरो से भरा हुआ है और निस्सदेह एक धार्मिक नगर है। यहाँ का विष्णुमदिर रेलवे स्टेशन से एक मील भी नही है और इसका भीतरी भाग काले सगमरमर से निर्मित है, जिसमे प्रदक्षिणा के लिए पथ की भी व्यवस्था है। मदुरा का सबसे बडा मदिर मीनाक्षी का है जो लक्ष्मी ही है। यह मदिर एक विस्तृत क्षेत्र मे बना हुआ है जिसका एक भाग मीनाक्षी के लिए और दूसरा शिव के लिए समर्पित है। मदुरा, पाण्ड्य राजाओ की राजधानी थी। यह जटावर्मन की राजधानी थी जो तेरहवी शताब्दी ईसवी मे सिहासनारूढ हुआ था और जिसने कर्णाटक के होयसल-नरेश सोमेश्वर पर विजय प्राप्त की थी (एपि० इ०, III, 8)। प्रो० दीक्षितार ने अपने स्टडीज़ इन द तमिल लिटरेचर ऐड हिस्ट्री, पृ० 13, नामक ग्रथ मे दक्षिण मदुरा को मदुरा के आधुनिक नगर से पृथक् माना है।

मदुरोदय-वलनाडु—यह पाण्ड्य देश का एक जिला है (एपि० इ०, भाग, II, अप्रैल, 1939, पृ० 96)।

महाबलिपुरम—यह स्थान मद्रास के दक्षिण मे लगभग 35 मील दूर तथा चिंगलपुत् से दक्षिण-पूर्व मे 20 मील दूर पर समुद्र-तट पर स्थित है। एक वैष्णव सत के अनुसार यहाँ पर शिव, विष्णु के साथ रहते थे और इसी कारण हमे यहाँ दोनो देवताओ के मदिर एक दूसरे के पास स्थित मिलते है। यह सात पगोडाओ का स्थान है। इनके अतिरिक्त यहाँ पर कई प्राकृतिक एव कृत्रिम गुफाएँ है। उनमे से कुछ मे हमे पौराणिक दृश्यो के अत्यत आकर्षक सास्कृतिक चित्रण मिलते है। राक्षसो का दमन करती हुयी महिष-मर्दिनी, अर्जुन की तपश्चर्या, वर्षा के देवता इन्द्र के क्रोध के कारण पशुओ की रक्षा के लिए श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन-धारण आदि कुछ उल्लेखनीय मूर्तियाँ है । विष्णु के वराह अवतार का उच्चित्र भी अत्यत महत्त्वपूर्ण है। इस देवता को शेषनाग पर विश्राम करते हुये उनके दाहिने

पैर पर खड़े और पृथ्वी देवी को उनके दाहिने जंघे पर विश्राम करते हुये प्रदर्शित किया गया है (लाहा, होली प्लेसेज़ ऑव इंडिया, पृ० 39)।

महागौरी—मार्कण्डेय पुराण (LVII, 25) मे इसका उल्लेख है, जो ब्राह्मणी का पर्यायवाची शब्द है। यह उडीसा की आधुनिक ब्राह्मणी नदी है (सु० महाभारत, भीष्मपर्व, IX. 341)।

महाकान्तार—कुछ विद्वानो के अनुसार महानदी के तट पर सम्बलपुर संभवत: इसकी राजधानी थी। इसे पूर्वी गण्डवन या दक्षिणी झारखड से समीकृत किया जाता है।

महाराष्ट्र—महाराष्ट्र देश या मो-हो-ला-च अपने संकीर्ण अर्थ मे दक्कन है (सा० इ० इ०, I, पृ० 113, पा० टि० 3)। महाराष्ट्र सचमुच ऊपरी गोदावरी द्वारा सिंचित प्रदेश और गोदावरी तथा कृष्णा नदियो का मध्यवर्ती प्रदेश है। ऐहौल अभिलेख के अनुसार इसमे तीन सभाग थे, जिनमे प्रत्येक को सातवी शती० ई० मे महाराष्ट्रक कहा जाता था (इ० ऐ०, XXII, 1893, पृ० 184)।

युवान-च्वाड के अनुसार इस प्रदेश की परिधि 5,000 ली थी। यहाँ की भूमि समृद्ध, उर्वर और नियमित रूप से कर्षित थी। यहाँ की जलवायु गरम थी और यहाँ के निवासी ईमानदार और सरल थे। वे लबे और स्वभावत: प्रतिशोधशील थे। यहाँ पर कुछ सघाराम और देवमदिर थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 255 और आगे)। इसे टॉलेमी द्वारा वर्णित एरियाके (Ariake) बतलाया जाता है (पृ० 39)। इसकी परिधि 6000 ली थी और इसकी राजधानी एक बडी नदी के पश्चिम मे थी। महाराष्ट्र की प्राचीन राजधानियाँ (1) गोदावरी-तट पर स्थित प्रतिष्ठान या पैठान (2) बबई बदरगाह के पूर्वी तट पर स्थित कल्याण, (3) प्राचीन चालुक्यो की वातापि (4) और युवान-च्वाड के समय मे इसकी वास्तविक राजधानी बादामी थी। सोपारा और मास्की-अभिलेखो के अनुसार महाराष्ट्र-देश अशोक के साम्राज्य का एक भाग, था। महाराष्ट्र मे बौद्ध धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा गया एक प्रचारक धम्मरखित था (महावस, अध्याय, XII, पृ० 97, गाईगर सस्करण)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, कनिघम की ऐ० ज्यॉ० इ०, टिप्पणियाँ, पृ० 745 और आगे, न० ला० दे कृत ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 118; सिद्ध भारती, भाग II, पृ० 285 और आगे पर प्रकाशित एस० आर० शिंदे कृत हाऊ, व्हेन्स ऐड व्हेन महाराष्ट्र केम इनटु बीइग, ह० धी० सॉकलिया, ऐश्येंट ऐंड प्रिहिस्टारिक महाराष्ट्र, ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, जिल्द, 27, भाग, I, 1951, नई माला।

महाविनायक पहाड़ी—यह जाजपुर तहसील मे है। इसकी उपासना शिव

के अनुयायी, शिव, गणेश और गौरी के ऐक्य के रूप मे करते हैं, (ओ' मैल्ली द्वारा सपादित, बिहार ऐंड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, कटक, 1933)।

महेन्द्रवाडि—यह गाँव अर्कोनम जंक्शन से अर्काट जाने वाली रेलवे लाइन पर शोलिंघुर रेलवे स्टेशन से तीन मील पूर्व, दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। यहाँ से प्राचीन पल्लव-लिपि मे उत्कीर्ण गुणभर का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, IV, 152)।

महेन्द्राचल—योगिनीतंत्र (2, 4, 128 और आगे) मे महेन्द्रपर्वत का उल्लेख है। गग इन्द्रवर्मन के गौतमी-अभिपत्रो मे इसका वर्णन है। समवतः इसमे गजम जिले मे इसी नाम की पहाडियो का उल्लेख है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, अक्टूबर, 1937, पृ० 181)। महेन्द्र पर्वतमाला गजम से सुदूर दक्षिण मे पाण्ड्य-देश से पूर्वी घाट पर्वतमाला तक फैली हुयी थी। महेन्द्रगिरि या महेन्द्रपर्वत गगा-सागर-सगम और सप्तगोदावरी के बीच स्थित था। गजम के समीप पूर्वी घाट के एक भाग को अब भी महेन्द्र पहाडी कहा जाता है। पार्जिटर का अनुमान है कि यह नाम महानदी, गोदावरी और वेनगंगा के मध्य स्थित पहाडियो तक ही सीमित रखा जाना चाहिए, और संभवतः इसमे गोदावरी के उत्तर मे स्थित पूर्वी घाट के हिस्सो को भी समाविष्ट किया जा सकता है (मार्कण्डेय पुराण, पृ० 305, टिप्पणी)। बाण के हर्षचरित् (सप्तम उच्छवास्) के अनुसार महेन्द्रपर्वत मलय-पर्वत मे मिल जाता है। रघुवश (IV 39, 43, VI 54) मे इसे कलिंग मे स्थित बतलाया गया है। यह नाम मुख्य रूप से उस पर्वतमाला को दिया गया है, जो गजम को महानदी घाटी से पृथक् करती है। कालिदास ने कलिंग-नरेश को महेन्द्राधिपति भी कहा है (रघुवश, IV. 43; VI. 54)।

महेन्द्रपर्वत से सबद्ध लघुपहाडियो मे श्रीपर्वत, पुष्यगिरि, वेंकटाद्रि अरुणाचल और ऋषभ थी।

उडीसा से मदुरा जिले तक फैली हुयी संपूर्ण पर्वतमाला को महेन्द्रपर्वत कहा जाता था। इसमे पूर्वीघाट समिलित थे। यह मलयाचल मे मिल जाता था। रामचन्द्र से पराजित होने के बाद परशुराम ने इस पर्वत में शरण ली थी।

प्राचीन भारतीय भूगोलवेत्ता पूर्वीघाट को निश्चय ही महेन्द्रगिरि कहते थे क्योंकि पूर्वीघाट के सर्वोच्च शिखर को अब भी इसी नाम से पुकारा जाता है। विश्लिष्ट पहाड़ियों के रूप मे ये पहाड़ियाँ भारत के पूर्वी समुद्र-तट के न्यूनाधिक समानातर फैली हुयी हैं, जो इस देश के विभिन्न भागो मे विभिन्न नामों से जानी जाती है। विस्तार के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, माउटेंस ऑव इडिया, कलकत्ता ज्यॉग्रेफिकल सोसायटी पब्लिकेशन, स० 5, पृ० 22.

महिष-राइस ने इसे मैसूर से समीकृत किया है (मैसूर ऐंड कुर्ग इंस्क्रिप्शंस, पृ० 14)। कुछ विद्वानो ने इसे माहिष्मती से और दूसरों ने (मू० पू० इंदौर रियासत मध्यप्रदेश के निमाड़ जिले में नर्मदा के उत्तरी तट पर स्थित महेश्वर से समीकृत किया है।

मैनाकपर्वत—रामायण मे इसे दक्षिण भारत मे स्थित बतलाया गया है। अश्वघोष के अनुसार समुद्र का प्रवाह-पथ अवरुद्ध करने के लिए यह नदी में घुस गया था (सौन्दरनन्दकाव्य, अध्याय, VII, श्लोक, 40)। यह पौराणिक विवरण रामायण मे भी प्राप्त होता है, जिसमे मैनाकपर्वत को दक्षिणापथ में स्थित बतलाया गया है। मलयगिरि नाम से भी विख्यात इस पर्वत मे सर्पाकीर्ण तीन गुफाएँ थी (दशकुमारचरित, पृ० 36)।

मलाबार—यह केरल देश है (सा० इ० इ०, II, पृ० 4, 241)।

मलैक्कुरम—यह एक जिला है, जिसे मलकूट से समीकृत किया जा सकता है, जो युवान-च्वाङ् द्वारा वर्णित मो-लो-कू-ट है (वार्टस ऑन युवान-च्वाङ्, पृ० 228 और आगे)। इसे उसने कावेरी के डेल्टा मे स्थित बतलाया है (सा० इ० इ०, III, पृ० 197)।

मलयनाडु—यह मलयालम या मलाबार तक सीमित है। इसमे चेर राजा के क्षेत्रो के अतिरिक्त पाण्ड्यो का प्रदेश भी समिलित है। इसका वर्णन राजेन्द्र चोल के अभिलेख मे किया गया है (सा० इ० इ०, II, पृ० 236, 242 आदि)।

मलैयूर—यह एक रम्य पहाडी पर स्थित है, जिस पर एक दुर्ग भी है (वही, खड, III, पृ० 469)।

मलयगिरि—यह एक पहाडी का नाम है(वही, III, पृ० 422)। इसका वर्णन बृहत्सहिता मे किया गया है (XIV. 11)। अपने देश का परित्याग करके किसी पाण्ड्य-राजा ने इस पहाडी पर शरण ली थी। पार्जिटर ने ठीक ही इस पर्वतमाला को नीलगिरि से कन्याकुमारी तक फैले हुये पश्चिमी घाट के एक खड से समीकृत किया है। मलयकूट, जिसे श्रीखण्डाद्रि या चदनाद्रि भी कहा जाता था पर अगस्त्य का आश्रम स्थित था (तु० धोयीकृत पवनदूतम्)। कावेरी के आगे पश्चिमी घाट का दक्षिणी प्रसरण, जिसे अब त्रावणकोर पहाड़ियाँ कहते हैं, वस्तुतः मलयगिरि का पश्चिमी पार्श्व है। कुछ विद्वानो के अनुसार जातक (V. 162) मे वर्णित चदक पर्वत मलयगिरि या मलाबार (रियासत, सप्रति केरल में) है।

मलयाचल—महाकाव्य-परपरा मे इसे दक्षिण भारत मे स्थित बतलाया

गया है। जीमूतवाहन ने राजसत्ता का परित्याग करने के पश्चात् इस पर्वत पर शरण ली थी, '(बोधिसत्त्वावदान-कल्पलता, 108 वाँ पल्लव, पृ० 12)। पद्म पुराण (अध्याय, 133) मे मलयाचल पर स्थित कल्याणतीर्थ का वर्णन है। दण्डिन के काव्यादर्श (III, 150) मे उल्लिखित दक्षिणाद्रि भाष्यकार के अनुसार मलयाचल ही है।

मलखेड—कृष्ण तृतीय के सलोतगी-अभिलेख मे राष्ट्रकूटो की इस शाही राजधानी को 'स्थिरीभूत-कटके' अथवा जहाँ से सैन्य-शक्ति स्थित कर दी गयी हो बतलाया गया है (एपि० इ०, IV. 66; XIII 176 और आगे)।

मल्लई—चिंगलपुत् जिले मे स्थित यह आधुनिक महाबलिपुरम है (कोप्परु जिगदेव का वैलूर अभिलेख, एपि० इ०, XXIII, भाग, V, 180)।

मनगोली—यह गाँव बीजापुर जिले के बगेवाडि ताल्लुक के मुख्यावास बगेवाडि के पश्चिमोत्तर मे लगभग 11 मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, V पृ० 9)।

मणलूर—तुगभद्रा के तट पर स्थित यह एक गाँव है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 230)। पाण्ड्य-क्षेत्र मे मणलूर नामक एक गाँव है (द्रष्टव्य, रगाचारी की तालिका, तिन्नेवल्ली, 515)।

मनयिरकोट्टम— यह एक जिले का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 147)।

मदार्थो—यह गाँव दक्षिण कनाड़ा (मगलोर) जिले के उदिपि ताल्लुक मे स्थित है। यहाँ पर श्री दुर्गा परमेश्वरी का एक मदिर है (ज० इ० सो० ओ० आ०, जिल्द, XV)।

मणीकल्लू—यह आध्र-राज्य (भू० पू० मद्रास प्रेसीडेन्सी) के गुटुर जिले मे स्थित एक प्राचीन स्थान है। यहाँ से एक प्राचीन ब्राह्मी अभिलेख उपलब्ध हुआ था।

मणिमगलम्— वह चिगलपुत् जिले मे काजीवरम ताल्लुक के पूर्वी छोर पर स्थित एक गाँव है जो दक्षिण रेलवे के वण्डलुर स्टेशन से लगभग छह मील पश्चिम मे स्थित है। सस्कृत-काव्यो मे इस गाँव का नाम रत्नाग्रहार दिया गया है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 48, 49, 50)। अभिलेखो मे नरसिहपुरम (चिगलपुत) को किडारमगोण्डशोलपुरम कहा जाने लगा था (मद्रास एपिग्रेफिकल रिपोर्टस, 1910, 244 और 245)। पल्लव-नरेश नरसिहवर्मन ने यहाँ एक युद्ध लडा था, जिसमे पुलकेशिन् पराजित हुआ था (सा० इ० इ०, जिल्द, I, 144, 145; भाग, II, पृ० 363)।

राजराज प्रथम के शासनकाल के अभिलेखों में उसकी रानी लोक-महादेवी

के नाम पर मणिमगलम को लोकमहादेवी चतुर्वेदिमंगलम कहा गया है, किन्तु उसके शासनकाल के पंद्रहवे वर्ष के पश्चात् और उसके उत्तराधिकारियो मे कुलोतुंग प्रथम तक के नरेशों के राज्यकाल मे उत्कीर्ण अभिलेखों में इस गाँव को राजचूडा-मणिचतुर्वेदिमगलम (म० एपि० रि०, 1897 तथा 1892 का 289 और 292, तु० सा० इ० इ०, जिल्द, III, सख्या, 28-30)।

मञ्जीरा—यह गोदावरी की एक सहायक नदी है, जो बालाघाट पर्वतमाला से निकलती है और दक्षिणपूर्व एव उत्तर की ओर बहती हुयी गोदावरी मे मिलती है। इसे बाँई ओर से तीन और दाहिनी ओर से पाँच सरिताएँ आपूरित करती हैं। इसका एक अन्य पाठभेद वञ्जुला है (वायुपुराण, XLV. 104)।

मन्नेरु—यह नेल्लोर जिले की एक नदी है (सा० इ० इ०, II, पृ० 4)।

मरुदुर—यह तिरुनेलवल्ली जिले के कोविलपट्टी तालुक मे स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV)।

मट्टेपाद—यह गुटुर जिले के आगोल तालुक मे स्थित एक गाँव है, जहाँ से पाँच ताम्रपत्रो पर उत्कीर्ण दामोदरवर्मन के अभिलेख प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, XVIII, 327 और आगे)।

माडक्कुलम—यह मदुरा के पश्चिम मे स्थित है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, पृ० 170)।

माहिषक (माहिषिक)—यह दक्षिण मे है और पुराणो मे यहाँ के निवासियों का उल्लेख (मार्कण्डेय, LVII, 46, मत्स्य, LXIII, 47, तु० महाभारत, सभापर्व, IX, 366) दाक्षिणात्य जनो के रूप मे किया गया है।

माहिष्मती (पालि : माहिस्सती)—महाभारत के सभापर्व (XXX, 1025-63) मे इसका वर्णन किया गया है। कुछ लोगो के अनुसार यह इदौर के दक्षिण मे लगभग 40 मील दूर पर स्थित था। वह विन्ध्य एव ऋक्ष पर्वतो के बीच नर्मदा नदी के दाहिने तट पर स्थित प्रतीत होता है और इसे सुगमतापूर्वक आधुनिक माधाता क्षेत्र से समीकृत किया जा सकता है, जहाँ पर रामायण मे वर्णित माहिषिकि नामक एक नदी थी (किष्किन्ध्याकाण्ड, XLI, 16)। हरिवंश के (XLV 5218 और आगे) अनुसार मुचुकुन्द माहिष्मती का सस्थापक प्रतीत होता है। कुछ लोग महिष्मत को इसका सस्थापक मानते है। पुराणो के अनुसार (मत्स्य पु०, XLIII, 10-29, XLIV, 36, वायु, 94, 26; 95, 35)। किसी यदुवशी राजकुमार ने माहिष्मती की स्थापना की थी। भागवतपुराण मे इसे हैहयो का एक नगर बतलाया गया है (IX. 15, 26, IX, 16, 17; X. 79,21)। पद्मपुराण (183 2) मे बताया गया है कि माहिष्मती नर्मदा नदी

के तट पर स्थित थी। दशकुमारचरित (पृ० 194) मे हमे बतलाया गया है कि रानी वसुंधरा और राज-शिशुओं को इस पुर मे लाया गया था और उन्हे मित्रवर्मा के समक्ष उपस्थित किया गया था। भंडारकर के अनुसार माहिष्मती या माहिस्सती अवन्ती-दक्षिणापथ की राजधानी थी। पुराणो मे माहिष्मती के प्रथम राजवंश को हैहय कहा गया है (मत्स्यपुराण, 43, 8-29, वायु पु० 94, 5-26)। महाभारत मे अवन्ती और माहिष्मती को पृथक बतलाया गया है (II 31. 10) पतञ्जलि महाभाष्य मे विदर्भ और काञ्चीपुर के समकक्ष माहिष्मती का वर्णन आता है (IV. I, चतुर्थ आह्निक)।

मामल्लपुरम्—मद्रास से 32 मील दक्षिण मे समुद्र-तट पर स्थित साधारणतया सात पगोडा नाम से विश्रुत यह गाँव पल्लव अवशेषो के लिए विख्यात है (सा० इं० इ०, I, पृ० 1; फर्ग्युसन ऐड बर्गेस, केव टेम्पुल्स, पृ० 105-159)। यह पल्लवो का समुद्री बंदरगाह था।

मारमंगलम—यह तिरुनेलवल्ली जिले मे है। मारनेरी और मारमगलम को प्राचीनकाल मे मारमगलम कहा जाता था (एपि० इ०, XXI, भाग, III)।

माविनूर—यह एक गाँव का नाम है जिसे समवत. कोन्नूर-अभिलेख मे वर्णित माविनूर से समीकृत किया जाता है (एपि० इ०, VI 28)। कीलहार्न ने इसे आधुनिक मन्नर से समीकृत किया है, जो कोन्नूर के दक्षिण पूर्व मे 8 मील दूर पर स्थित है। अमोघवर्ष के वेंकटापुर अभिलेख (शक स० 828) मे माविनूर मे स्थित एक हजार लताओ से मडित एक बाग के दान का उल्लेख है जो चन्द्रतेज भट्टार के लिए प्रदत्त था (एपि० इं०, XXVI, भाग, II, पृ० 60)।

मायिर्राडगम्—परिखा के रूप मे गहरे सागर से परिवेष्ठित यह एक टापू है (सा० इ० इं०, II, पृ० 109)।

मेलपट्टि—यह उत्तरी अर्काट जिले के गुडियात्तम तालुक मे स्थित है। यहाँ से विजय-कप-विक्रम-वर्मन् का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 143)।

मेलपाडि—यह उत्तरी अर्काट जिले मे स्थित एक गाँव है, जो तिरुवल्लम के उत्तर मे छः मील दूर पर स्थित है (सा० इ० इ०, II, पृ० 222, 249 आदि)। यह नीवा नदी के पश्चिमी तट पर स्थित है (वही, III, पृ० 23)। सोलन्नलैकोण्ड वीरपाण्ड्य के अंबासमुद्रम अभिलेख के अनुसार यह चित्तूर जिले मे है (एपि० इ०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939)। कृष्ण तृतीय के करहड अभिपत्र उस समय प्रचलित किये गये थे जब यहाँ पर राष्ट्रकूट-नरेश गोविन्द तृतीय का शिविर

पड़ा था, जो पराजित सामंतो की सारी संपत्ति पर अधिकार करने मे लीन थे (एपि० इ०, IV. पृ० 278)।

मेलुर—मदुरा के पश्चिमोत्तर मे लगभग 16 मील दूर पर स्थित यह एक गाँव है, (एपि० इ०, XXI, भाग, III, जुलाई, 1931)। फ्रासिस के मतानुसार यह त्रिचिनापल्ली की सडक पर मदुरा के पश्चिमोत्तर मे 18 मील दूर पर स्थित है (मद्रास डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, मदुरा, पृ० 288)।

मेरु—यह पर्वत अपने गर्भ मे सोना छिपाये हुये है और जम्बुद्वीप के उत्तर मे स्थित माना जाता है। चिदबरम मे स्थित मदिर को दक्षिण मेरु माना जाता था क्योकि इसके स्वर्णिम महाकक्ष की छत पर प्रभूत मात्रा मे सोना था (सा० इ० इ०, I, पृ० 166, II, पृ० 235)।

मिण्डिगल—यह एक गाँव है, जो चिन्तामणि के पश्चिमोत्तर मे लगभग 11 मील दूर पर स्थित है और जो मैसूर राज्य मे कोलार जिले के चिन्तामणि तालुक का मुख्यावास है (एपि० इ०, V, 205 और आगे)।

मियारु-नाडु—इसमे उत्तरी अर्काट जिले मे स्थित वर्तमान तिरुवल्लम और उसके समीपवर्ती क्षेत्र समिलित थे (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, IV, अक्टूबर, 1935)।

मोरौण्ड—टॉलेमी ने इस नगर को एओई (Aioi) का एक भीतरी कस्बा बतलाया है (टॉलेमी कृत ऐश्येंट इडिया, ले० मैक्रिंडिल, पृ० 215-216)। एओई देश सभवत. केरल प्रदेश के दक्षिण मे स्थित कोई क्षेत्र था, किंतु इसे अभी तक समीकृत नही किया जा सका है। सभवत यह मुरुण्डो का एक नगर था। मोरुडाई का एक अन्य सनिवेश सुदूर दक्षिण मे था (लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इंडिया, 93)।

मृषिक—(मूषिक या मूषक देश)—मार्कण्डेयपुराण मे (LVIII, 16) मृषिक देश को दक्षिण-पूर्व मे बतलाया गया है। पार्जिटर का सुझाव है कि मृषिक लोग समक्त मुसी नदी के तट पर रहते थे, जिसके किनारे आधुनिक हैदराबाद है (मार्कण्डेय पुराण, पृ० 366)। महाभारत (भीष्मपर्व, IX, 366) और मार्कण्डेयपुराण मे मृषिकों को दक्षिण मे रहने वाला जन बतलाया गया है।

मुदुमडुवु—वैदुम्ब महाराज गण्डत्रिनेत्र के अभिलेखो मे इसका वर्णन है जिसे अनतपुर जिले मे स्थित मुदिमडुगु से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXIV, भाग, IV, अक्टूबर, 1937, पृ० 191)।

मुगैनाडु—यह एक जिला है, जो पगलनाडु के मध्य में स्थित एक सभाग

है जो कि जयकोण्डचोलमडलम् का एक भाग है (सा० इ० इ०, I, पृ० 97, 99, 101)।

मूलक—वाराहमिहिर की बृहत्संहिता (XIX, 4) मे मूलकों के देश को मौलिक कहा गया है। मूलक-जन एक छोटे कबीले थे, जो दक्षिण के अश्मकों से अति घनिष्ट रूप से सबधित थे। कौटिलीय अर्थशास्त्र के टीकाकार मट्टस्वामी के अनुसार उनके देश को महाराष्ट्र मे समीकृत किया जा सकता है। वायुपुराण (अध्याय, 88, 177-8) मे मूलको और अश्मको को एक ही इक्ष्वाकु-वश का वशज बतलाया गया है। मूलक कबीले के प्रजनक मूलक को गरुड पुराण मे (अध्याय, 142 ,34) भगीरथ के वशज राजा अश्मक का पुत्र बतलाया गया है अस्मक और अलक या मूलक प्रदेशो के बीच की सीमा गोदावरी नदी थी (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 21; परमात्थजोतिका आन द सुत्त-निपात, पृ० 581)। इन दोनो प्रदेशो के निवासियो के विषय मे मतैक्य नही है। विष्णुधर्मोत्तर मे उल्लिखित पौराणिक परम्परा मे यह सिद्ध होता है कि ये लोग दूसरे थे। सोननन्द जातक के अनुसार (जातक, V, 317) अस्सक देश अवन्ती मे मिला हुआ है। डॉ० दे० रा० मडारकर (कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 53-54) के अनुसार सोननन्द जातक मे वर्णित इसके सानिध्य का समाधान केवल यह मान लेने पर होता है कि उत्तरकाल मे मूलक अस्सक देश मे ममिलित था और इस प्रकार अस्सक देश अवन्ती मे मिला हुआ था। बहुत बाद मे, दूसरी शती ई० के दूसरे चतुर्थक मे, गौतमी के नासिक अभिलेख मे मूलको को अश्मको से पृथक् बतलाया गया है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, I, पृ० 41 और आगे।

मुण्ड-राष्ट्र—इसका वर्णन सिंहवर्मन के उरुवुपल्ली और पिकिर दानपत्रो में है। इसे नेल्लोर-अभिलेखो मे वर्णित उत्तरकालीन मुण्डनाडु या मुण्डई-नाडु से समीकृत किया जाता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, VII, पृ० 30।)

मुरला—यह केरल की एक नदी है (रघुवश, IV, 54-55)।

मुरप्पु-नाडु—यह तिरुनेलवल्ली जिले के श्री वैकुण्ठम तालुक मे पलमकोट्टा मे छह मील पूरब मे स्थित एक गाँव है और यह ताम्रपर्णी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, पृ० 166, सीवेल, लिस्ट ऑव ऐंटिक्विटीज, I, पृ० 312)।

मुरसीमन—राजा महाभवगुप्त प्रथम जनमेजय के कालिमना ताम्रपत्रों में इसका वर्णन है जो उडीसा में पटना (भू० पू० रियासत) के जरसिंघा मे स्थित मुरसिंग से समीकृत किया गया है (इं० हि० क्वा०,XX, सं० 3)।

मूरूर—इस गाँव को आधुनिक मूरूर से समीकृत किया जा सकता है जो उत्तरी कनारा (कारवार) जिले के कुम्त तालुक मे, कुम्त से लगभग 10 मील दूर उत्तर में स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग, IV, पृ० 160)।

मूषक (मूषिक)—मृषिक के अतर्गत् देखिए।

मूषिकनगर—कलिंग-नरेश खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख में इसका उल्लेख है जिसने अपने शासन के दूसरे वर्ष मे यहाँ के निवासियो के हृदय मे आतंक उत्पन्न कर रखा था (एपि० इ०, XX, 79, 87, बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इंस्क्रिप्शंस, पृ० 176, ज० रा० ए० सो०, 1922, पृ० 83)। डॉ० टाम्स को उक्त उद्धरण में मूषिक नगर का कोई उल्लेख नही प्राप्त हुआ (ज० रा० ए० सो०, 1922, पृ० 83; बि० ला० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 384)।

मुतगि—यह बीजापुर जिले के बागेबाडि तालुक मे स्थित एक गाँव है। यह बागेवाडि कम्बे के दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 6½ मील दूर पर स्थित है। मुरितगे इसका प्राचीन नाम है, जहाँ से दो अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XV, 25 और आगे)।

मूतिब—यह दक्षिण मे स्थित है (महाभारत, XII, 207-42, तु० वायु-पुराण, 45, 126, मत्स्यपुराण, 114, 46-48)। यहाँ के निवासियो को मूतिब कहा जाता था, जो समवत प्लिनी द्वारा वर्णित मोदुबाई (Modubae) ही थे (अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 173)।

नडगाम—यह गजम जिले के नरसन्नपेत तालुक मे स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, IV, 183)।

नक्कवारम्—यह निकोबार द्वीपसमूह का तमिल नाम है (सा० इ० इ०, III, पृ० 195)।

नलतिगिरि या नल्तिगिरि या ललितगिरि—यह बिरूप नदी के तट पर स्थित बलिचन्द्रपुर के दक्षिण पूर्व मे लगभग 6 मील दूर पर स्थित है। यह धनमडल रेलवे स्टेशन के समीप है। यह एक विशाल गाँव है। जिसमे तीन पहाडियाँ हैं। यहाँ से बोधिसत्व वज्रपाणि की एक खडी प्रतिमा, द्विभुज पद्मपाणि अवलोकितेश्वर, और चतुभुर्जी तारा की प्रतिमाएँ उपलब्ध हुयी थी। विस्तृत अध्ययन के लिये द्रष्टव्य मे० आर्क० स० इ०, स० 44, पृ० 8-9 में रा० प्र० चद्र का 'एक्स्लोरेशंस इन उडीसा' नामक लेख।

नदगिरि—गग इन्द्रवर्मन के इडियन म्यूजियम अभिपत्रों मे नंदगिरि का उल्लेख है, जिसे मैसूर राज्य के कोलार जिले के पश्चिम में सुविख्यात पहाडी

गढ़ी नंदिदुर्ग से समीकृत किया गया है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर 1941, 167)।

नंदिपुरम्—यह एक गाँव का नाम है, जिसे कुमकोनम के निकट नाथनकोविल से समीकृत किया जाता है (सा० इ० इ०, III, पृ० 233)।

नंदिवेलुगु—यह गुंटुर जिले में है, जहाँ किसी शिव मंदिर की छत मे उत्कीर्ण एक अभिलेख मिला था (एनुअल रिपोर्ट ऑव द साउथ इंडियन एपिग्रेफी, 1921, पृ० 47)।

नरसपतम—यह विजगापटम जिले मे एक तालुक है (एपि० इ०, XI, 147-58)।

नरसिंगपल्ली—यह गाँव गजम जिले के शिकाकोल तालुक मे स्थित है जहाँ से 79 वे वर्ष मे उत्कीर्ण कलिंग के हस्तिवर्मन के अभिपत्र प्राप्त हुये थे (एपि०, इ० XXIII, भाग II, अप्रैल, 1935, पृ० 62)।

नरवन—शक-संवत् 664 मे लिखित विक्रमादित्य द्वितीय के नरवन अभिलेख के अनुसार राष्ट्रकूट गोविन्दराज की प्रार्थना पर किसी चालुक्य नरेश ने इस गाँव को कुछ ब्राह्मणो को दिया था (चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीय के नवीन अभिपत्रो के अनुसार यह गाँव रत्नगिरि जिले के गुहागरपेत मे समुद्रतट पर स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग III, पृ० 127)।

नवग्राम—वज्रहस्त तृतीय के गजम ताम्रपत्रो मे इसका वर्णन है, जिसे गजम जिले के तेक्कलि तालुक मे स्थित आधुनिक नौगाम से समीकृत किया जाता है (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 62)।

नवखण्डवाड—1186 इ० के पिठापुरम अभिलेख के अनुसार यह गाँव पिठापुरम से लगभग 1½ मील दूर पर स्थित था और कुतिमहादेव को समर्पित था (एपि० इ०, IV, पृ० 53)।

नवतुल या नवतुला—गुणार्णव के पुत्र देववर्मन के त्रिलिंग अभिलेख मे कोरसोडक-पञ्चालिविषय मे स्थित इस गाँव का उल्लेख है, जिसे परलकिमेड से दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 6 मील दूर पर स्थित नंतल नामक पल्ली से समीकृत किया जाता है। विशाखवर्मन के कोरशडा और इन्द्रवर्मन के शिकाकोल अभिपत्रों मे (इ० ऐ०, XIII, पृ० 122 और आगे) कोरसोद्रक पञ्चालि का वर्णन है, जिसे आधुनिक कोरशण्डगाँव से समीकृत किया जा सकता है, जो गंजम जिले मे परलकिमेडि से 6 मील दक्षिण मे स्थित है (इं० हि० क्वा०, XX, स० 3)।

नयनपल्ली—यह गाँव गुंटुर जिले के बपतला तालुक में मोतुपल्ली से लगभग

तीन मील दूर पर स्थित है। यहाँ से गणपतिदेव का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXVII, भाग, V, पृ० 193)।

नागार्जुनिकोण्ड—यह पहाडी आध्र प्रदेश राज्य के गुटुर जिले मे पलनाड तालुक मे है। यह कृष्णा नदी के दाहिने तट पर छायी हुयी है। नागार्जुन पहाड़ी जो एक बडी चट्टानी पहाडी है, मछेरला रेलवे स्टेशन मे 16 मील दूर पश्चिम मे स्थित है। इस उल्लेखनीय स्थल की खोज 1926 मे की गयी थी। यहाँ से कई ईंटो के टीले और सगमरमर के स्तभ उपलब्ध हुये थे। कुछ स्तंभो पर प्राकृत मे और दूसरी-तीसरी शताब्दियो ई० मे प्रचलित ब्राह्मी लिपि मे अभिलेख उत्कीर्ण हैं। यहाँ से अनेक जीर्ण विहार, अर्द्धवृत्ताकार मदिर, स्तूप, अभिलेख, मुद्राएँ, पुरानिधियाँ, मृद्भाडि, प्रतिमाएँ और अमरावती शैली मे 400 से भी अधिक भव्य अध्युच्चित्र उपलब्ध हुये थे। नागार्जुनिकोण्ड से प्राप्त अभिलेखो से यह व्यक्त होता है कि विजयपुरी नामक प्राचीन नगर अवश्यमेव द्वितीय एव तृतीय शताब्दी ई० मे दक्षिण भारत का सबसे बडा और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बौद्ध सनिवेश रहा होगा। विहार, स्तूप एव मंदिर बडी ईंटो के बने थे, ईंटे मिट्टी के गारे से चुनी गयी थी और दीवालो पर पलस्तर किया हुआ था। ईंटो की इन इमारतो पर गढाई और अन्य अलंकरण सामान्यत. गचकारी के माध्यम से किये गये थे और इमारतें सिर से पैर तक चूने से पुती थी। नागार्जुनिकोण्ड का हर वैहारिक अधिष्ठान स्वय मे पूर्ण था। विस्तृत अध्ययन के लिए द्रष्टव्य, ए० एच० लागहर्स्ट कृत, *द बुद्धिस्ट ऐंटिक्विटीज़ ऑव नागार्जुनिकोण्ड*, मद्रास प्रेसिडेसी (मे० आर्क० स० इ०, न० 54)।

नान्दीकड—इसका वर्णन वाकाटक राजा विन्ध्यशक्ति द्वितीय के बसीम अभिपत्रो मे किया गया है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941)। इसे महाराष्ट्र (भूतपूर्व निजाम हैदराबाद), मे नन्देद नाम के जिले के मुख्यावास नन्देद से समीकृत किया जाता है।

नागपटम् तालुक—वर्तमान तजौर जिले मे स्थित यह एक बदरगाह है जो किसी समय बौद्ध प्रतिमाओं के लिये विख्यात था (सा० इ० इ०, जिल्द, II, पृ० 48)। यह कानिक्काल के दक्षिण मे लगभग 10 मील दूर पर स्थित था। टॉलेमी ने इसे एक महत्त्वपूर्ण नगर बतलाया है। यूरोपीय व्यापारियो एव धर्म-प्रचारको का ध्यान आकृष्ट होने के बहुत पहले ही यह व्यापार और बौद्ध धर्म समेत अनेक धर्मों का केंद्र बन चुका था (लाहा, *ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया*, पृ० 186)।

नेल्लुर—यह आधुनिक नेल्लोर है, जो आध्र प्रदेश राज्य (भू० पू० मद्रास प्रेसी-

(डेमीमे स्थित इसी नाम के जिले का मुख्यावास है। इस जिले के उत्तरी भाग पर पर्वी चालुक्यों ने शासन किया था (सा० इ० इ०, II, 372)।

नेट्टुर—इसी नाम का एक गाँव इलैयगुडी मे पाँच मील पश्चिम मे शिवगगा (जमीदारी) में स्थित है (वही, III, पृ० 206)।

निड्डूर—यह गाँव तजौर जिले के मायावरम ताल्लुक में कावेरी के उत्तरी तट पर स्थित है (एपि० इ०, XVIII, पृ० 64)।

नील-गंगवरम्—यह गुटुर जिले के विनुकोण्ड ताल्लुक मे है, जहाँ से एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXV, भाग, VI, अप्रैल, 1940, पृ० 270)।

नीलकण्ठ-चतुर्वेदिमगलम—इसे गागेयनल्लूर भी कहा जाता है, जो उत्तरी अर्काट जिले के नेल्लोर ताल्लुक मे स्थित है। यह करँवरि-आदिनाडु मे स्थित एक गाँव है (सा० इं० इ०, I, पृ० 77-78)।

नीलाचल—यह पहाडी उत्कल के मध्य मे स्थित है (स्कन्दपुराण, अध्याय, I, 12-13)।

नीलगुण्ड—यह गॉव मैसूर राज्य के बेल्लारी जिले मे स्थित है, जहाँ से विक्रमादित्य षष्ठम के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, XII, 142 और आगे)।

नीवा—यह पालारु की एक सहायक नदी का नाम है (सा० इ० इ०, III, पृ० 88)।

नुतिमडुगु—यह गॉव अनतपुर जिले मे है, जहाँ से कुछ ताम्रपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 186)।

ओड्डविषय—आधुनिक उडीसा ही उड्रो या ओड्रो का प्रदेश है (तेलुगु, ओध्रुलु, कन्नड ओड्डरु और युवान-च्वाङ् का उ-च)। बृहत्संहिता (XIV 6) मे इसे उड्र कहा गया है। योगिनीतंत्र (2.9.214 और आगे) मे इसको ओड्र बतलाया गया है। महाभारत (वनपर्व, LI, 1988, भीष्मपर्व, IX 365, द्रोणपर्व, IV. 122) मे उड्रो को उत्कलो, मेकलों, कलिंगो, पुण्ड्रो और आन्ध्रो से सबधित बतलाया गया है। पालि-ग्रथ अपदान (II, 358) मे ओड्डको का वर्णन है जो ओड्रा या उड्रा ही थे। ब्रह्मपुराण (28, 29, 42) के अनुसार ओड्र देश उत्तर में बिरजामण्डल (जाजपुर) तक फैला हुआ था और इसमे तीन क्षेत्र समाविष्ट थे, यथा पुरुषोत्तम या श्री क्षेत्र, सवितु या अर्कक्षेत्र तथा बिरजाक्षेत्र जिससे होकर वैतरणी नदी बहती थी। युवान-च्वाङ् जो इस देश मे आया था, ने कर्णसुर्वण के दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 722 ली तक यात्रा की थी और तब वह वु-तु या ऊ-च देश पहुँचा था। तेरहवें वर्ष मे लिखित राजा राजेन्द्र चोल के तिरुमलाई

शिलालेख मे ओड्डविषय पर राजा राजेन्द्रचोल की विजय का उल्लेख है। नरेन्द्र भजदेव के आदिपुर ताम्रपत्र के अनुसार (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 159) ओड्रविषय मूलत. एक छोटे जिले का वाचक था परतु बाद मे यह संज्ञा पूरे प्रात को दे दी गयी थी। परिधि मे यह देश 7000 ली से अधिक था। यह समृद्ध और सपन्न था, यद्यपि यहाँ की जलवायु गरम थी, यहाँ के निवासी विद्या-प्रेमी थे और उनमे से अधिकाश बौद्ध धर्म मे विश्वास रखते थे। यहाँ पर अनेक सघाराम एव कुछ देव मदिर थे (बील, बुद्धिस्ट, रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 204, तु० वाटर्स ऑन युवान च्वाङ्, II, पृ० 193-194)।

ओलाग—इस गाँव को देलग से समीकृत किया जा सकता है, जो क्योझर (भू० प० राज्य) की आनदपुर तहसील मे स्थित था (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 173)।

ओयमा-नाडु—इसे प्रकारातर से विजयराजेन्द्रवलनाडु कहा जाता है जो जयकोण्डचोलमण्डलम नामक विषय (जिला) ही है। यह उस प्रदेश का एक क्षेत्र है जिसके अतर्गत दक्षिण अर्काट जिले मे स्थित तिण्डीवनम नामक आधुनिक कस्बा स्थित है (सा० इ० इ०, II, 425)।

पड्डूर-कोट्टम्—विजय-कपविक्रमवर्मन के मेलपट्टि अभिलेख मे इसका उल्लेख है, जो तोण्डैमण्डलम मे स्थित था। मोटे तौर से इसमे उत्तरी अर्काट जिले के आधुनिक वेल्लोर और गुडियात्तम तालुक समिलित थे (एपि० इ०, XXIII, भाग, II और IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 147)।

पैठान—यह प्राचीन प्रतिष्ठान का आधुनिक नाम है, जो सातवाहन-नरेशो के शासन काल मे एक समृद्धिशाली नगर था। यह महाराष्ट्र (भूतपूर्व हैदराबाद) के औरगाबाद जिले मे गोदावरी नदी के उत्तरी तट पर स्थित था। सुत्तनिपात (पा० टे० सो०, पृ० 190) मे इस नगर को अस्सक या अश्मकदेश की राजधानी बतलाया गया है। यह पोटन ही है, जिसे पालि निकायो (दीघ निकाय, II, पृ० 235) मे अस्सको की राजधानी बतलाया गया है। यह राजा शातकर्णि (सात-वाहन या शालिवाहन) और उसके पुत्र शक्तिकुमार की भी राजधानी थी, जिन्हे साधारणतया नानाघाट अभिलेखो मे वर्णित राजा शातकर्णि एव राजकुमार शक्ति श्री से समीकृत किया गया है (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, भाग, I, पृ० 531)। जैन परपराओ के अनुसार सातवाहन ने उज्जयिनी के विक्रमादित्य को पराजित किया था और प्रतिष्ठानपुर का राजा बना था। उसने दक्कन एव ताप्ती नदी के मध्य के कई प्रदेश जीते थे। वह जैन मतावलबी हो गया था और गोदावरी के तट पर उसने महालक्ष्मी की प्रतिमा अधिष्ठित की थी (लाहा, सम

जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 185)। अधिक विवरण के लिए, द्रष्टव्य वि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, I, 46. देखिये प्रतिष्ठान)।

पलक्कड-स्थान—यहीं से सिंहवर्मन ने उरुवपल्ली दानपत्र प्रचलित किया था। कुछ विद्वानों ने इसे पलात्कट से समीकृत किया है। किंतु यह समीकरण संदिग्ध है। पलक्कड को गुंटुर-तालुक में स्थित आधुनिक पलकलुरु से समीकृत किया गया है। कुछ विद्वानों का विचार है कि नेल्लोर जिले के कदुकूर तालुक में स्थित पलुकुरु प्राचीन पलक्कड या पल्लात्कट हो सकता है (एपि० इं०, XXIV, III, जुलाई, 1937)।

पलनी—यह मद्रास में स्थित मुरुग नामक पुण्य पहाड़ी है। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, जे० एम० सोमसुंदरम कृत पल्नी, 1941

पपापति—आधुनिक भूगोलवेत्ता इसे हाम्पी कहते है, जो तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर और विजयनगर के ध्वंसावशेषों के पश्चिमोत्तरी सिरे पर स्थित था जहाँ से कृष्णराय का एक अभिलेख भी उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, I, पृ० 351)।

पनमलाई—यह गाँव दक्षिण अर्काट जिले के विल्लुपुरम तालुक में स्थित था (सा० इ० इ०, I, पृ० 24)। पनमलाई गुहा की स्थापना राजसिंह ने की थी। राजसिंह के काल में पल्लवों ने सुदूर दक्षिण में पनमलाई तक शासन किया था।

पचधार—यहाँ कामराज नामक एक चोड राजा ने गजपति से युद्ध किया था और उसे पराजित किया था (एपि० इ०, XXVI, भाग, I, तेलुगु चोड (अन्नदेव) के राजा मुद्री-म्युजियम अभिपत्र)।

पंचधारल—यह विशाखापट्टनम जिले के यंल्लमाचिलि तालुक में स्थित है (एपि० इ०, XXV, भाग, VII, पृ० 335)।

पचपाण्डवमलाई—(या पाँच पाण्डवों की पहाड़ी)—अर्काट शहर से लगभग चार मील दक्षिण-पश्चिम में पञ्चपाण्डवमलाई नामक एक चट्टानी पहाड़ी स्थित है, जो लोक-विश्वास के अनुसार पञ्चपाण्डवों से संबंधित है (एपि० इ०, IV, 136 और आगे)।

पन्मानाडु—यह दक्षिण अर्काट जिले में मनविरकोट्टम या मनयिरकोट्टम का एक प्रभाग है (सा० इं० इ०, I, पृ० 120, 147, 155)।

परिवैनाडु—अपने नाम के लिये यह परिविपुरी की बाण-राजधानी परिवल का ऋणी है, जिसे अनंतपुर जिले में परिगियाँ से समीकृत किया जा सकता है (वही, II, पृ० 425)।

परुविषय—यह पेनुकोण्ड अभिपत्रों में वर्णित परुवि-विषय ही है। इसे

परिगि से समीकृत किया जा सकता है, जो अनतपुर जिले मे हिंदुपुर से सात मील दूर उत्तर मे है (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, पृ० 238)।

पट्टेसम—यह गाँव गोदावरी मे एक रमणीक द्वीप पर स्थित है और वर्तमान काल मे यह राजामुद्री तालुक मे समिलित है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I, 40)। यह वीरभद्र के मदिर के लिये विश्रुत है (वही, XXVI, भाग, I, 40)।

पर्यलिपट्टन—यह गाँव राष्ट्रकूट-राजधानी मान्यखेट या मलखेद की पश्चिमी सीमा पर स्थित है (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935)।

पागुणारविषय—यह अम्मराज द्वितीय के वदरम अभिपत्रो में वर्णित पावुनवारविषय ही है। ताण्डिवाड नामक गाँव पागुणारविषय मे स्थित है, जिसमें कृष्णा जिले का आधुनिक तनुकु तालुक समिलित प्रतीत होता है (एपि० इ०, XXIII, भाग, III, जुलाई, 1935, पृ० 97)।

पालक्क—इलाहाबाद स्तमलेख मे वर्णित इस राज्य को वि० स्मिथ ने पालघाट, या मलाबार के दक्षिण मे स्थित पालक्काडु से समीकृत किया है।

पालारु—यह उत्तरी अर्काट जिले की पालार नामक प्रमुख नदी है (सा० इ० इ०, I, पृ 87, 88, 134, और 155) जो लघु काञ्ची के दक्षिण मे प्रवाहित होती है।

पालार (पालेर)—इसे क्षीर नदी भी कहा जाता है। इस नदी का उद्‌गम नलगोण्डा के उत्तर मे स्थित पहाडियो मे है। यह कृष्णा मे उस स्थल पर मिलती है, जहाँ पर यह मद्रास राज्य मे प्रवेश करती है। यह उत्तरी अर्काट जिले से प्रवाहित होती है और चिगलपुट जिले में सद्रस के निकट बगाल की खाडी मे गिरती है। बेल्लोर, अर्काट और चिगल्पुत इसके तट पर स्थित है।

पालुर—यह दंतपुर ही है जो कलिंग मे स्थित एक नगर है।

पाञ्चपाली—इसे पञ्चुपाली से समीकृत किया जा सकता है, जो क्योझर (भू० पू० रियासत) के आनदपुर तहसील मे स्थित है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 173)।

पाण्ड्य—पाण्ड्य देश मे जिसका उल्लेख पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4.1.171) मे किया था, मदुरा और तिरुनेलवेलि जिले समिलित थे (सा० इ० इ०, I, पृ० 51, 59, 63)। टॉलेमी के अनुसार इसे पाडियोन (Pandion) कहा जाता था और इसकी राजधानी मोडूरा (Modoura) थी (मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बॉई टॉलेमी, मजूमदार सस्करण, पृ० 183)। राजेन्द्र चोल ने इसे जीता था। प्रथम शती ई० मे पाण्ड्य-राज्य मे त्रावणकोर भी समिलित था। मूलत. इसकी राजधानी तिरुनेलवेलि जिले में ताम्रपर्णी के

तट पर स्थित कोल्कई थी, किंतु कालांतर मे इसकी राजधानी मदुरा (दक्षिण मथुरा) हो गयी थी। महाभारत एवं अनेक जातकों मे पाण्डवो को इन्द्रप्रस्थ का शासक-वंश बतलाया गया है। कात्यायन ने अपने वार्तिक मे पाण्ड्य को पाण्डु से व्युत्पन्न बतलाया है। रामायण (IV, अध्याय, 41) मे पाण्ड्य देश का वर्णन है जहाँ सुग्रीव ने अपने वानर सैनिको को सीता की खोज मे भेजा था। महाभारत (सभापर्व, अध्याय, 31, V. 17) मे बतलाया गया है कि कनिष्ठतम पाण्डु-राजकुमार सहदेव पाण्ड्यो के राजा को जीत कर के दक्षिणापथ की ओर गये। पुराणो मे भी पाण्ड्यो का वर्णन है (मार्कण्डेय, अध्याय, 57, श्लोक, 45; वायु० 45, 124, मत्स्य, 112, 46)। अशोक के दूसरे एव तेरहवे शिलालेखो मे पाण्ड्यो का वर्णन है। उनका प्रदेश अशोक के साम्राज्य के बाहर था। पाण्डयो के साथ अशोक के संबध मैत्रीपूर्ण थे। सभवत पाण्ड्यो के दो राज्य थे, एक मे दक्षिण मे तिरुनेलवेलि जिले से लेकर उत्तर मे कोयबटूर-अतराल के निकट तक के पठारी भाग और दूसरे मे मैसूर राज्य समिलित थे। स्ट्रेबो (XV 4,73) ने किसी पाडियोन-नरेश (Pandion) द्वारा आगस्टस सीजर के यहाँ भेजे गये राजदूत का वर्णन किया है, जो समवत तमिल देश का कोई पाण्ड्य रहा होगा। विस्तृत विरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येट इडिया, पृ० 190 और आगे)।

जैन आख्यानो मे पाण्डु-पुत्रो को दक्षिण के पाण्ड्य देश से सबधित बतलाया गया है, जिसकी राजधानी मथुरा या मधुरा (आधुनिक मदुराई) थी। डॉ० बार्नेट ने ठीक ही कहा है, 'कुछ भी हो पाण्ड्यजन पाण्डव नही थे और दोनो राजवशो का जैन समीकरण समवत लोकविश्रत व्युत्पत्ति पर आधृत है। दोनो वशो को सबधित करने का इसी प्रकार का एक प्रयत्न टेलरकृत ओरियटल हिस्टॉरिकल मैनुस्क्रिप्टस (जिल्द, I, पृ० 195 और आगे) मे वर्णित एक तमिल इतिवृत्त मे किया गया है। इसमे बतलाया गया है कि भारत-युद्ध के समय मदुरा पर बभ्रुबाहन का शासन था, जो मदुरा के पाड्य-नरेश की पुत्री से उत्पन्न अर्जुन का पुत्र था। दूसरी ओर, महाभारत मे बभ्रुवाहन को मणिपुर-नरेश चित्रवाहन की पुत्री चित्रागदा से उत्पन्न अर्जुन का पुत्र बतलाया गया है।

दक्षिण के पाण्ड्यो, मथुरा के शूरसेनो और उत्तरी भारत के पाण्ड्वो का सबध संभवतः मेगस्थनीज़ के हैराक्लीज और पाडैया विषयक सभ्रमित कथन मे व्यक्त किया गया है (बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येट इडिया, पृ० 190, रायचौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव ऐंश्येट इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 272; मैक्क्रिडिल, ऐंश्येट इंडिया, (मेगस्थनीज़ ऐण्ड एरियन), पृ० 163-164)। लका

के पालि-इतिवृत्तों मे पाण्ड्यो को अपरिहार्यतः पाण्डु या पण्डु बतलाया गया है (महावंश, अध्याय, VII, श्लोक, 50; दीपवंस, अध्याय, IV, श्लोक, 41)।

तमिल देश के पाण्डय और चोल समागो का अतर सुविज्ञात है। वीरपुरुषदत्त के नागार्जुनिकोण्ड अभिलेखो मे वर्णित दमिल ही तमिल देश है। महावंस के अनुसार, विजय ने पाण्डु राजा की पुत्री से विवाह किया था जिसकी राजधानी दक्षिण भारत मे मधुरा थी। मधुरा, मद्रास राज्य के दक्षिण मे स्थित मदुरा है। इसकी एक अन्य राजधानी संभवत. कोल्कई थी। इसमे ताम्रपर्णी और कृतमाला या वैगाई नदियाँ बहती थी।

पारद—कुछ विद्वानो के अनुसार पारदो का देश दक्कन मे स्थित था किंतु पार्जिटर ने इसे पश्चिमोत्तर मे स्थित बतलाया है (ऐंश्येंट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन, पृ० 206, 268 और पा० टि०)। पारद लोग एक बर्बर कबीले प्रतीत होते है (महाभारत, सभापर्व, L, 1832; LI, 1869, द्रोणपर्व, CXXI, 4819)। हरिवंश (XIII. 763-4) के अनुसार राजा सगर ने उनका निरादर किया था। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट, इंडिया, पृ० 364, 65; बि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, I, पृ० 48)।

पारिकुड—यह पुरी जिले मे है। यहाँ से मध्यमराजदेव के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XI 281 और आगे)।

पेडकोम्डपुरी—कामराज नामक एक चोलनरेश ने डबुरुखानु और अन्य लोगो को उनकी राक्षस-सेना के साथ इसके निकट पराजित किया था (एपि० इं०, XXVI, भाग, I)।

पेड्डु-मद्दलि—यह कित्स्ना जिले के नुजविद तालुक मे स्थित एक गाँव है, जहाँ से कई अभिलेख प्राप्त हुये थे (इंडियन ऐंटक्वेरी, XIII 137)।

पेद्द-वेगी—इस गाँव को एल्लोर के अचल मे स्थित प्राचीन वेगीपुर से समीकृत किया जाता है, जहाँ से अनेक अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XIX, 258)।

पेन्नर—उत्तरी पेन्नर नदी आध्र राज्य के अनतपुर जिले मे पमिडि तक उत्तर-उत्तरपूर्वाभिमुख दिशा में प्रवाहित होती है और यहाँ से यह दक्षिण-पूर्व की ओर मुड़कर बगाल की खाड़ी मे पहुँचती है। दक्षिण पेन्नर जिसे पोन्नैय्यार भी कहा जाता है, बंगाल की खाडी मे गिरती है।

पेरंबेर—यह गाँव चिंगलपुत जिले मे स्थित है। यहाँ अनेक प्रागैतिहासिक अवशेष (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1908-9, पृ० 92 और आगे)।

पेरवली—इसे पेरवली नामक गाँव से समीकृत किया जाता है, जहाँ से एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एनुअल रिपोर्ट ऑव साउथ इंडियन एपिग्रॉफी, 1915, पृ० 90)।

पेरमुगाई—वेलूर के निकट स्थित यह आधुनिक पेरुमाई है (सा० इं० इं०, I, पृ० 75)। यह उत्तरी अर्काट जिले के आधुनिक वेल्लोर तालुक मे है।

पेरुनगर—वांडीवाश जाने वाली सडक पर काजीवरम से लगभग 13 मील दूर पर स्थित यह एक गाँव है (एपि० इं०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 146)।

पेरुंगरी—टॉलेमी ने इसे पेरिगकरेई कहा है। यह मदुरा से लगभग 40 मील और आगे वैगाई नदी के तट पर स्थित है (मैक्रिडिल, टॉलेमी कृत ऐंश्येंट इंडिया, एस० एन० मजूमदार का संस्करण, पृ० 183)।

फेरव—कुछ विद्वानो के अनुसार यह गाँव सोमपेत तालुक मे स्थित आधुनिक बरना है। किंतु यह सदिग्ध है(एपि० इ०, XXVII, भाग, III पृ० 113)।

फुलसर—यह गजम जिले के अठगड तालुक मे स्थित एक गाँव है। यहाँ से एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, जनवरी, 1937, पृ० 15)।

पिण्णि—यह एक नदी का नाम है,जिसे पेण्णई भी कहते है, जो दक्षिण अर्काट जिले से होकर बहती है (एपि० इ०, XXIV, भाग, V)।

पिप्पलाल—चदनपुरी से 12 मील दक्षिण पूर्व मे और एलोरा से लगभग 33 मील दूर पर स्थित यह आधुनिक पिपराल है (एपि० इ०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939, पृ० 29)।

पिरानमलाई—यह रामनाड जिले मे है। यहाँ पर मगईनाथेश्वर मंदिर है (एपि० इ०, XXI, भाग, III, जुलाई, 1931)।

पिसाजिपदक—(पिशाचिपद्रक) यह ल्युडर्स की तालिका के 1123 वें अभिलेख मे वर्णित है। यह तिराण्हु पर्वत (त्रिरश्मि) के पश्चिम की ओर है।

पीठपुरी—पूर्वी गोदावरी जिले मे यह पीठापुरम नामक एक पुण्य स्थल ही है, जहाँ पर किसी राजा का निवास-स्थान था (सा० इं० इं०, I, पृ० 53, 61; एपि० इ०, XII, पृ० 2)। पृथ्वी महाराज के ताण्डिवाड-दानपत्र में पिष्टपुर का उल्लेख है, जो पीठापुरम का प्राचीन नाम है(एपि० इं०, XXIII, भाग III, जुलाई, 1935, पृ० 97)। पिष्टपुर राजा गुणवर्मन के शासनकाल मे देवराष्ट्र नामक राज्य का अग था (एपि० इ०, XXIII, 57)। पिठापुरम गोदावरी

जिले मे एक प्रातीय कस्बा है। यहाँ पर कृति माधव नामक एक वैष्णव मदिर स्थित है। इस मंदिर के पूर्वी प्रवेशद्वार पर मदिर के सामने ही एक चतुःष्कोणीय पाषाण-स्तम्भ स्थित है, जिस पर विभिन्न तिथियो मे कालांकित चार अभिलेख उत्कीर्ण हैं। यहाँ के राजा एक ऐसे राजवश के थे जिसे हुल्ट्श ने 'वेलनाण्डु का प्रमुख' कहा है। वेलनाण्डु के प्रमुखगण अपनी उत्पत्ति शूद्र-जाति से बताते है। पृथ्वीश्वर के मल्ल प्रथम नामक एक दूरस्थ पूर्वज ने गगो, कलिंगों, वगो, मगधो आध्रो, और पुलिन्दो आदि के राजाओ को पराजित किया था (एपि० इं०, IV, 32 और आगे)।

पिथुण्ड—खारवेल के हाथीगुम्फा अभिलेख मे पिथुडग या पिथुंड नामक एक स्थान का वर्णन है, जिसकी स्थापना कलिग के प्राचीन राजाओ ने की थी। पिथुड पिथुडग का लघुरूप है, जो संस्कृत शब्द पृथुदक का समानार्थक है, पद्मपुराण के अनुसार जो एक तीर्थस्थान है (अध्याय, 13, तीर्थ माहात्म्य)। गण्डव्यूह मे पृथुराष्ट्र का वर्णन है, जो टॉलेमी द्वारा उसकी ज्यॉग्रेफी मे वर्णित पितुन्द्र से भिन्न नही है। सिल्वॉ लेवी ने बतलाया है कि जैन ग्रथ उत्तराध्ययनसूत्र मे (खड, XXI) पिथुण्ड (पिहुण्ड) को समुद्रतटवर्ती एक नगर कहा गया है, जो हमे खारवेल के पिथुड (पिथुडग) और टॉलेमी के पितुन्द्र का स्मरण दिलाता है। टॉलेमी ने पितुन्द्र को मैसोल्यिा (Maisolia) के अतर्भाग मे, मैसोलोस और मानदस नामक दो नदियो के मुहाने के बीच के प्रदेश मे स्थित बतलाया है, जो गोदावरी और महानदी का डेल्टा है और जो दोनो से ही समान दूरी पर स्थित है (मैक्रिडिल, ऐश्येट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 68, 185, और 386—387)। इसे कलिगपाटम के शिकाकोल के अन्तर्भाग मे नागावती, जिसे लागुलीय भी कहा जाता है, के प्रवाह की ओर स्थित किया जा सकता है। बताया जाता है कि खारवेल ने पिथुड या पिथुडग को पुन. बसाया था। पिथुण्ड को गधे से जोता गया था अथवा कुछ लोगो के अनुसार इसका भूमि-उद्धरण किया गया था।

पोदियिल—यह तिरुनेल्वेलि जिले मे स्थित एक पहाडी है। इसे दक्षिण पर्वत भी कहा गया है। इसे अगस्त्य का आवास बतलाया जाता है (सा० इ० इ०, III, 144, 464)।

पोलियूर-नाडु—इसे आधुनिक पोलुर गॉव से समीकृत किया जा सकता है, जो अर्कोनम जक्शन से उत्तर उत्तर-पश्चिम मे तीन मील दूर स्थित है (एपि० इ०, VII, पृ० 25)।

पोन्नि—यह कावेरी ही है (सा० इ० इ०, I, पृ० 94-95)।

पोन्नुटुरु—यह गाँव वंशधरा नदी के उत्तरी तट पर, विजगापट्टम जिले मे पातपटनम तालुक के पर्लकिमेडि (सम्प्रति उडीसा के गंजम जिले मे भू० पू० राज्य) मे सोमराजपुरम से कोई एक मील दूर पर स्थित है। यहाँ से 64 वे वर्ष मे उत्कीर्ण गग सामंतवर्मन के दानपत्रो का एक कुलक प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXVII, भाग, V, 216)।

पोत्तपि—यह चेय्येरु नदी के पश्चिमी तट पर और कुड्डापा जिले के राजम-पेत तालुक मे तंगटूरु के उत्तर मे स्थित है (एपि० इ०, VII, पृ० 121, टिप्पणी, 5)।

प्रश्रवनगिरि—औरगाबाद की पहाडियाँ गोदावरी के तट पर स्थित थी जिनका चित्रमय वर्णन भवभूति के उत्तररामचरित (अक, III 8) मे हुआ है। इस पहाडी मे अनेक सरिताएँ और गुफाएँ थी (उत्तररामचरित, अक, III, 8)। हेमकोष के अनुसार माल्यवनगिरि प्रश्रवनगिरि ही है जो जनस्थान तक फैला हुआ है (उत्तररामचरितम, अक, I, 26)। किंतु भवभूति के अनुसार वे दो भिन्न पहाडियाँ है, (उत्तररामचरितम, अक, I)।

प्रतिष्ठान—महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले मे गोदावरी के उत्तरी तट पर स्थित प्रतिष्ठान (आधुनिक पैठान) को साहित्य मे शातकर्णि (सातवाहन या शालिवाहन) और उसके पुत्र शक्ति कुमार, जिन्हे साधारणतया नानाघाट अभिलेखो मे वर्णित राजा शातकर्णि और राजकुमार शक्तिश्री से समीकृत किया गया है, की राजधानी बतलाया गया है। महाराष्ट्र मे गोदावरी–तट पर स्थित पैठान या प्राचीन प्रतिष्ठान या सुप्रतिष्ठाहार या सुप्रतिष्ठित वह स्थान था, जहाँ से गोविन्द तृतीय के तीन अभिपत्र (शकसवत्, 716 मे उत्कीर्ण) उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, III, 103)। प्रतिष्ठान का उल्लेख वाकाटक रानी प्रभावतीगुप्ता के पूना अभिपत्रो मे भी हुआ है (एपि० इ०, XV 39)। अशोक के पाँचवे और तेरहवे अभिलेखो मे वर्णित पेतेनिक लोगो को गोदावरी-तट-निवासी पैठानिक या पैठान के निवासियो से समीकृत किया गया है। पैठान प्राचीन प्रतिष्ठान का आधुनिक नाम है, जो सातवाहन-नरेशो के शासनकाल मे एक समृद्धिशाली नगर था। कुछ विद्वानो का अनुमान है कि वे पैठान के सातवाहन राजाओ के पूर्वज थे (ज० रा० ए० सो०, 1923, 92, बुलनर, अशोक, पृ० 113)। पेरिप्लस के लेखक के अनुसार पैठान, बैरीगाजा (जिसे भरुकच्छ, आधुनिक भडौच से समीकृत किया जाता

---

[1] **तु० पद्मपराण, अध्याय, 176, श्लोक, 20. प्रतिष्ठान में विक्रम नामक एक राजा था।**

है) के दक्षिण में 20 दिनों की यात्रा की दूरी पर स्थित था। इसे दक्षिणापथ का सबसे बडा नगर बतलाया गया था। सातवाहन ने उज्जयिनी के विक्रमादित्य को पराजित किया था और स्वय प्रतिष्ठानपुर का राजा बन गया था। उसने दक्कन और ताप्ती नदी के बीच के अनेक प्रदेशो पर बिजय प्राप्त की थी। उसने जैन धर्म अगीकार किया था; अनेक चैत्यो का निर्माण किया था और गोदावरी के तट पर महालक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित की थी (बि० च० लाहा, सम जैन कैनानिकल सूत्राज, पृ० 185)। जैन विविधतीर्थकल्प के अनुसार (पृ० 59-60) महाराष्ट्र में स्थित यह नगर कालान्तर मे एक महत्त्वहीन गाँव बन गया था।

पुदुप्पाक्कम—यह उत्तरी अर्काट जिले के वलजपेत तालुक मे स्थित है (कोप्परुजिंगदेव का वैलूर अभिलेख, एपि० इ०, XXIII, भाग, V)।

पुगर—तजौर जिले मे स्थित यह आधुनिक कावीरिपट्टिनम है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 180)।

पुलिक्कुनरम्—कुक्कानुर के उत्तर मे और पालैनेल्लूर के दक्षिण में नुगा नदी के पश्चिम मे स्थित यह एक गाँव है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 25)। पेरुजिगाई ईश्वर मदिर को उपहार स्वरूप एक गाँव दिया गया था।

पुलिनाडु—राजराज प्रथम के 36 वे वर्ष के एक आलेख मे इसे त्यागभरण वलनाडु में स्थित बतलाया गया है। कुछ विद्वानो के अनुसार बीरराजेन्द्र नामक एक परवर्ती नरेश के चौथे वर्ष के आलेख मे इसे जयगोण्डशोलमण्डलम के पडुवुर-कोट्टम से समिलित बतलाया गया है। मैसूर राज्य के समीप स्थित यह पडुवुर-कोट्टम का सबसे पश्चिमी भाग था। इस मे सपूर्ण आधुनिक पुगनुर तालुक और दक्षिण मे निकटवर्ती पालमनेर तालुक का वह भाग समिलित था, जो देवरकोण्ड और कावेरी पर्वतमाला के उत्तर मे स्थित था।

पुलिनाडु, पूर्व और दक्षिण-पूर्व मे तोण्डईमण्डलम् प्रखडो से, उत्तर मे महा-राजवाडि-देश तथा रत्तपडिकोण्डशोलमण्डलम् से, पश्चिम मे, गगरुससिर नाम से विश्रुत गग देश से और दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम मे निगरिशोलमण्डलम से परिवृत था (इंडियन ज्यॉग्रेफिकल जर्नल, भाग, XXV, स०, 2, पृ० 14-18)।

पुलिंदराजराष्ट्र—महाराज हस्तिन् के नवग्राम दानपत्र में इसका उल्लेख है, जिससे यह स्पष्ट है कि पुलिन्दों के मुखिया का राज्य नृपतिपरिव्राजक-कुल के क्षेत्र मे ही स्थित था (एपि० इ०, XXI, भाग, III)। अशोक के तेरहवें शिलालेख मे पुलिन्दों का उल्लेख एक करद कबीले के रूप मे किया गया है। ऐतरेय ब्राह्मण (III.18) मे आंध्रों के साथ पुलिंदों का वर्णन मिलता है। पुराणों

(मत्स्य, 114, 46-48, वायु० 45, 126) मे इनका वर्णन शबरो के साथ किया गया है और इन्हे वैदर्भों एव दण्डको के साथ 'दक्षिणापथवासिन.' कहा गया है। महाभारत (XII. 207, 42) मे उनको दक्षिणापथ का जन कहा गया है। पुलिन्दों की राजधानी पुलिन्दनगर मध्यप्रदेश मे जवलपुर जिले मे भिलसा के समीप थी। पुलिन्दों के क्षेत्र मे निश्चय ही रूपनाथ समिलित था, जहाँ से अशोक के लघु-शिलालेखो का एक पाठ प्राप्त हुआ था।

पुल्लमगलम—यह पुल्लमगाई है, जो तजौर से लगभग नौ मील दक्षिण में पशुपतिकोयिल के समीप एक गाँव है (राजकेशरीवर्मन् का उदयार-गुडी अभिलेख, सा० इ० इं०, जिल्द, III, पृ० 450)।

पूनक (पुण्य)—राष्ट्रकूट-नरेश कृष्ण प्रथम के दो ताम्रपत्रो के अनुसार पूनक या पुण्य आधुनिक पूना का प्राचीन नाम था आठवी शती ई० के उत्तरार्ध मे पूनक एक जिले (विषय) का मुख्यावास था और यह हवेली तालुक का वाचक था। पहले सोलहवी शताब्दी ई० मे पूना शहर को पूर्ण-नगर कहते थे, जहाँ अपने दल के साथ श्री चैतन्य गये थे जैसा कि गोविन्ददास कडचा मे कहा गया है (ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, न्यु० सप्ली०, जिल्द, VI, 1930, पृ० 231 और आगे)।

पुरंदर—पद्मपुराण के अनुसार यह कम्बा दक्षिण मे है (अध्याय, 176, श्लोक, 2)।

पुरी (पुरुषोत्तम-क्षेत्र)—यह उडीसा के पुरी जिले मे है। ब्रह्मपुराण के अनुसार (42, 13-14) यह पवित्र नगर समुद्रतट पर स्थित है। योगिनीतत्र मे इसे पुरुषोत्तम (2. 9, 2. 4 और आगे) कहा गया है। कालिकापुराण (अध्याय, 58, 35) मे भी इसे इसी नाम (पुरुषोत्तम) से सबोधित किया गया है। यह रेतीला और दस योजन विस्तृत है तथा यहाँ प्रसिद्ध देवता पुरुषोत्तम का आवास है। इसमे दो स्पष्ट भाग समिलित है। बालुखड, स्वर्गद्वार और चक्रतीर्थ नामक दो पुण्यतीर्थों के बीच में स्थित है। यह जगन्नाथ के हिंदू मदिर के लिए प्रसिद्ध है और ठीक बंगाल की खाड़ी के समुद्रतट पर स्थित है। प्रकारांतर से इसे श्रीक्षेत्र भी कहा जाता है, जो हिंदुओ का एक अत्यत पुण्य क्षेत्र है। इसे पुरुषोत्तमक्षेत्र भी कहा जाता है। यह पश्चिम मे लोकनाथ मदिर से पूर्व मे बालेश्वर मदिर तक, दक्षिण में स्वर्गद्वार से पूर्वोत्तर मे मटिया नदी तक फैला हुआ है। इसका आकार शंख के समान है, जिसके केंद्र मे जगन्नाथ मंदिर स्थित है। स्थापत्य की दृष्टि से यह मदिर उतना महत्त्वपूर्ण नही है जितना कि भुवनेश्वर का। मुख्य मदिर के अतिरिक्त, यहाँ पर अनेक लघुमदिर यथा मार्कण्डेश्वर, लोकनाथ, नील-

कण्ठेश्वर और कुछ अन्य तालाब हैं। बड़े मन्दिर से लगभग दो मील दूर पर गुण्डिका-बारी स्थित है (विस्तृत विवरण के लिये देखिए ओ, 'मैल्ली कृत, बिहार ऐंड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पुरी, 1929, पृ० 326 और आगे; जैरेट द्वारा अनूदित आइन-ए-अकबरी, II, 127, स्टर्लिंग, उडीसा, 1824)।

पुरिका—यह एक नगर का नाम है (बरुआ ऐंड सिन्हा, भरहुत इस्क्रिप्शंस, पृ० 17, 21) और यह महाभारत मे वर्णित पुलिका, खिलहरिवंश मे वर्णित पुरिका और पुराणों मे उल्लिखित पौलिक पौरिक और सौलिक ही है। पुराणों मे इसे दक्कन के देशो की सूची मे समाविष्ट किया गया है। खिल-हरिवंश मे (XCV, 5220-28) पुरिका शहर को विन्ध्य की दो पर्वतमालाओं के बीच मे, माहिष्मती के समीप और ऋक्षवन्त पर्वत से निकलने वाली एक नदी के तट पर स्थित बतलाया गया है (तु० विष्णुपुराण, XXXVIII, 20-22)।

पुरुषोत्तमपुरी—रामचन्द्र के पुरुषोत्तमपुरी अभिपत्रो मे (एपि० इं०, XXV, भाग, V, पृ० 208) पुरुषोत्तमपुरी को मीर जिले मे गोदावरी नदी के दक्षिणीतट पर स्थित बतलाया गया है।

पुष्करी—यह जैपुर (उडीसा मे भू० पू० रियासत) के पोडागढ क्षेत्र में स्थित है जो अब उडीसा के कोरापुत जिले मे स्थित है (एपि० इ०, XXVIII, भाग, I, जनवरी, 1949)।

पुष्पगिरि—यह कुडापा के उत्तर मे आठ मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, III, 24)।

पुष्पजाति (पुष्पजा या पुष्पवती)—इस नदी का वर्णन वायुपुराण मे हुआ है (XLV. 105, तु०, कूर्मपुराण, XLVII, 25)। यह मलय पर्वत से निकलती है।

रण्डुवल्ली—किसी ब्राह्मण को प्रदत्त, गुद्रहारविषय मे स्थित यह एक गाँव है। यहाँ से एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एनुअल रिपोर्ट ऑव साउथ इडियन एपिग्रेफी, 1914, पृ० 85)।

रत्नगिरि—गोपालपुर के पूर्वोत्तर मे चार मील की दूरी पर स्थित एशिया पर्वतमाला की यह एक अलग पहाडी है, जो बिरूप की एक शाखा, केलुआ नामक छोटी नदी के तट पर स्थित है। यह पहाडी वस्तुतः केलुआ के पूर्वीतट पर स्थित है और इसका शिखर चपटा है। यहाँ पर एक बडे स्तूप के भग्नावशेष है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य रा० प्र० चद, एक्सप्लोरेशन इन उड़ीसा, मे० आर्क० स० इं०, स० 44, पृ० 12-13)।

रट्टपाडि कोण्ड-शोलमण्डलम्—यह चित्तूर जिले मे पुगनूर का समीपवर्ती

क्षेत्र और मैसूर राज्य के चिन्तामणि तालुक का निकवर्ती इलाका है (एपि० इं०, XXV, भाग, VI, अप्रैल, 1940, पृ० 254)।

रागोलु—यह आंध्र प्रदेश में शिकाकोल के समीप है (एपि० इं०, XII, पृ० 1)।

राजगंभीर पहाड़ी—इसे राजगभीरन-मलाई भी कहा जाता है। संभवतः इसका नामकरण राजगंभीर संबुरायन के आधार पर हुआ था (सा० इं० इं०, I, पृ० 111)। यह उत्तरी अर्काट जिले मे है।

राकलुव—इस गाँव को आंध्र प्रदेश मे शिकाकोल के निकट रगोलु से समीकृत किया जा सकता है, जहाँ से शक्तिवर्मन के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, XII और आगे)।

रामपरकटि—इसे जोशीपुर परगना कियापिर मे स्थित रामसहि नामक गाँव से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 158)।

रामतीर्थ—विज़गापट्टम ज़िले मे स्थित यह एक गाँव है, जहाँ पर एक पहाडी की गुफा की दीवाल पर उत्कीर्ण विष्णुवर्धन महाराज का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एनुअल रिपोर्ट ऑव द साउथ इडियन एपिग्रॉफी, 1918, पृ० 133)।

रामेश्वरम्—बंगाल की खाडी में स्थित यह एक पवित्र द्वीप है। यहाँ का रामनाथस्वामी मंदिर सुविख्यात है। अनुश्रुतियो के अनुसार इसे रामचन्द्र ने बनवाया था, जब वह लका के अत्याचारी राज्य रावण के चगुल मे बदिनी अपनी पत्नी सीता को छुडाने के लिए यहाँ से लंका गये थे। यह द्रविड स्थापत्य का एक सुदर नमूना है, जिसमे बडे बुर्ज, नक्काशी हुयी दीवाले और विस्तीर्ण गलियारे हैं। मदिर चारो ओर से एक ऊँची प्राचीर से परिवेष्टित है, जो लगभग 900 वर्ग फीट जगह घेरे हुए है। गढ़े हुये पत्थरों से निर्मित इसमें अनेक गोपुरम् हैं। मंदिर के भीतर तालाब हैं। मदिर में एक शिवलिंग और अन्नपूर्णा, पार्वती तथा हनुमान की मूर्तियाँ हैं (बि० च० लाहा, होली प्लेसेज़ इन साउथ इडिया, कलकत्ता ज्यॉग्रे-फिकल रिव्यू, सितबर, 1942)।

रानी-झरियाल—यह गाँव उडीसा में पटना (पहले रियासत) में तिटीलगढ़ के पश्चिम मे 21 मील दूर पर स्थित है (एपि० इं०, XXIV, भाग, V, पृ० 239)।

राष्ट्रकूट-प्रदेश—पहले आठवी शताब्दी ई० तक इसमें कम से कम औरंगाबाद ज़िला तथा नासिक एवं खानदेश के कुछ भाग संमिलित थे (एपि० इं०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939)।

रैनाण्डु—मोटे तौर से यह देश पेन्नार नदी की दो सहायक नदियो यथा, पश्चिमोत्तर में चित्रावती और दक्षिण-पश्चिम में चेय्येरु के बीच मे स्थित है। इसमे कुड्डापा का अधिकाश भाग तथा कोलार एव चित्तूर जिले के हिस्से समाविष्ट है (एपि० इं०, XXVII, भाग, V, पृ० 225)।

रोहण—यह लंका में आदम की चोटी है (सा० इं० इं०, I, पृ० 164)।

रोहणकि—हस्तिवर्मन् के नरसिहपल्ली-अभिपत्रों मे इसका वर्णन प्राप्य है, जिसे आधुनिक रोणंकी से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXIII, भाग, II)।

ऋष्यमुख—यह पर्वत तुगभद्रा नदी के तट पर स्थित अनगंडी से 8 मील दूर है। इस पर्वत से पपा नदी निकलती है और पश्चिम की ओर बहती हुयी यह तुगभद्रा मे मिल जाती है। इसी पर्वत पर हनुमान और सुग्रीव रामचन्द्र से पहली बार मिले थे (रामायण, अध्याय, IV, किष्किन्ध्याकाण्ड)। मार्कण्डेयपुराण में (पार्जिटर द्वारा अनूदित, सर्ग, LVII, 13) ऋष्यमुख का उल्लेख है, जिसे पार्जिटर ने उस पर्वत माला से समीकृत किया है जो अहमदनगर के आगे मजीरा एवं भीमा नदियो को काटती हुयी नलद्रुग और कल्याणी तक फैली हुयी थी (ज० रा० ए० सो०, अप्रैल, 1894, पृ० 253)। बृहत्संहिता मे इसे दक्षिण का एक पर्वत बतलाया गया है (XIV. 13)।

रुद्रगया—पद्मपुराण के अनुसार (186. 1) यह दक्षिणापथ मे कोलपुर है।

सगर—यही पर चोल-राजा अन्नदेव ने कर्णाट सेना पर विजय प्राप्त की थी (एपि० इं०, XXVI, भाग, I)।

सह्याद्रि—यह पश्चिमी घाट पर स्थित एक पहाड है (सा० इ० इ०, I, 168-169)। प्राचीन लोग पश्चिमी घाट को सह्याद्रि कहते थे। यह दक्कन की पश्चिमी सीमा है। महाराष्ट्र के खानदेश जिले मे स्थित कुण्डबारी दर्रे से भारत के दक्षिणतम विंदु कन्याकुमारी तक निरतर लगभग 1000 मील तक फैला हुआ है। पश्चिमी घाट के विभिन्न स्थानीय नाम हैं। इसमे कुछ महत्त्वपूर्ण दर्रे भी हैं। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, माउटेंस ऑव इंडिया, कलकत्ता, ज्यॉग्रेफिकल सोसायटी पब्लिकेशन, स० 5, पृ०, 22–23)।

शैयम—यह सह्य पर्वत का तमिल और पश्चिमी घाट का सस्कृत नाम है (सा० इ० इं०, III, पृ० 147)।

सलेम—*यह दक्षिण भारत का एक सुप्रसिद्ध जिला है, जहाँ से छब्बीसवें* वर्ष में उत्कीर्ण राजराज का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (इंस्क्रिपशंस ऑव द मद्रास प्रेसीडेंसी, 73)।

समलिपद–(ल्युडर्स तालिका, 1134)—गोदावरी क्षेत्र के गोवर्धन विषय (जिले) मे पूर्वी सडक पर स्थित यह एक गाँव है (गोवर्धन, ल्युडर्स की तालिका, 1124-1126, 1133 आदि)।

संगुकोट्टम–समुद्र-तट पर स्थित यह एक देश (?) का नाम है (सा० इ० इं०, जिल्द, I, पृ० 99)।

संगूर—सगवूरु, चगूर और चंगापुर जैसे विविध नामों से विश्रुत संगूर उत्तरी कनाडा (कारवार) जिले मे सिरसी जाने वाली सडक पर हवेरी तालुक के दक्षिण-पश्चिम मे आठ मील की दूरी पर स्थित एक गाँव है। यहाँ से वीरभद्र मदिर के निकट स्थित नदिस्तंभ पर उत्कीर्ण एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXIII, भाग, IIV पृ० 189)।

संकरम—यह विजगापट्टम जिले मे जनकपल्ली के समीप है। 1907-08 मे इस स्थान पर किये गये पुरातत्वीय अन्वेषणो के लिए द्रष्टव्य ज० रा० ए० सो०, 1908, पृ० 1112 और आगे)।

शरपद्रक—करजिया परगने मे स्थित सरदह गाँव शरपद्रक का आधुनिक प्रतिनिधि हो सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 158)।

सरस्वती—यह एक नदी का नाम है (सा० इ० इ०, भाग, I, पृ० 57)।

सरेफा—भानुदत्त के बलसोर अभिपत्र मे इसका उल्लेख है, जिसे हम उडीसा के बलसोर जिले मे स्थित सोरो से समीकृत कर सकते है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942)।

सतियपुत्र—अशोक के दूसरे एव तेरहवे शिलालेखो मे इसका उल्लेख है। ये चोलो एवं पाण्डयो के प्रदेश के पश्चिम मे रहते थे और दक्षिण भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर फैले हुये थे (बरुआ, अशोक ऐंड हिज इंस्क्रिप्शंस, पृ० 111)। कुछ लोगो ने इसे सत्यव्रतक्षेत्र या काञ्चीपुर से समीकृत किया है (ज० रा० ए० सो०,1918, 541-42)। सतियपुत्र को सतपुते से समीकृत करने मे आयगर रा० गो० भडारकर से सहमत है। उनके अनुसार सतियपुत्र, मलाबार के तुलु एव नायरों जैसे विविध मातृप्रधान समुदायो को द्योतित करने वाला एक समूह-वाचक नाम है (ज० रा० ए० सो०, 1919, 581-84)। विंसेंट स्मिथ ने इसे पश्चिमी घाट और मैसूर, मलाबार, कोयबटूर तथा कुर्ग के सीमात पर स्थित कोयबटूर जिले के सत्यमगलम तालुक या तहसील से समीकृत किया है (अशोक, तृतीय संस्करण, पृ०161)। कुछ विद्वानो के अनुसार सतियपुत्र केरलोपट्टी की सत्यभूमि ही है, जो स्थूलरूप से दक्षिण कनाडा (मगलोर) के कसेरगोड के एक भाग सहित उत्तरी मलाबार के बराबर है (ज० रा० ए० सो०, 1923, 412)।

बार्नेट और जायसवाल के अनुसार सतियपुत्र से ही सातवाहन एवं शातकर्णि नाम व्युत्पन्न है (तु० रायचौधरी, पो० हि० ए० इं०, चतुर्थ संस्करण, पृ० 343, टिप्पणी, 2)। सतियपुत्र के सतिय की सत्य से समानता के आधार पर किये गये सभी समीकरण विवादास्पद है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, I, पृ० 58)।

सत्तेनपल्ली—यह गुटुर जिले मे है, जहाँ से चार ताम्रपत्रो का एक समूह प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 161)।

सत्यमंगलम—यह गाँव वेल्लोर तालुक मे है, जहाँ से देवराय द्वितीय के अभिपत्र प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, III, पृ० 35)।

शबरदेश—यह कही दक्षिणापथ मे है (मत्स्यपुराण, 144, 46-8); वायुपुराण, (45, 126)। महाभारत (XII 207, 42) मे इसे दक्कन में स्थित बतलाया गया है। टॉलेमी ने (मैक्रिडिल, टॉलेमीज ऐश्येट इडिया, एस० एन० मजूमदार सस्करण, पृ० 173) शबराई नामक एक देश का वर्णन किया है जिसे साधारणतया शबरो द्वारा निवसित प्रदेश से समीकृत माना गया है। कनिंघम ने टॉलेमी के सबराई को प्लिनी द्वारा वर्णित सुआरी से समीकृत किया है। उनके अनुसार सबरदेश सुदूर दक्षिण मे पेन्नर नदी तक फैला हुआ था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येट इंडिया, पृ० 172)।

शबरी-आश्रम—प्राचीन काल मे यहाँ मातग ऋषि और उनके शिष्य रहते थे। यहाँ राम और लक्ष्मण आये थे और शबरी ने उनका आदरपूर्वक स्वागत किया था। अपनी जटा-जूट, स्वल्प वसन और उत्तरीय के रूप मे कृष्णाजिन के चर्म से उसने इस आश्रम की परपरा अक्षुण्ण रक्खी थी (रामायण, I, 1, 55 और आगे; तु० सा० इ० इं०, III, 77, 6 और आगे)।

साबुले—दक्षिण-पूर्व मे लगभग तीन मील तक फैला हुआ यह सादोला है (एपि० इं०, XXV, भाग, V, पृ० 258)।

साक्षीगोपाल—यह गाँव पुरी से 10 मील दूर पर स्थित है। अनुश्रुति है कि कृष्ण यहाँ रुके थे और अपने को उन्होने यहाँ पत्थर बना दिया था। इस गाँव मे एक मदिर है, जहाँ प्राय तीर्थयात्री आया करते है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 17)।

शालग्राम—यह रामनाड जिले के परमगुडी तालुक मे स्थित एक गाँव है। यहाँ दसवी शताब्दी ई० के दो पाण्ड्य-अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एंश्येट इंडिया, आर्क० सर्वे ऑव इडिया का मुखपत्र, स० 5, जनवरी, 1949)। इस गाँव मे

शिव का एक प्राचीन मंदिर है (एपि०इ०, XXVIII, भाग, II, अप्रैल, 1949, पृ० 85 और आगे)।

सांत-बौम्मालि—यह गाँव गंजम जिले में हैं, जहाँ से ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि०, इं०, XXV, भाग, V, जनवरी, 1940, पृ० 194)।

सारद्दा—इसे सुगमतापूर्वक कोमण्ड से 10 मील पूरब में स्थित आरडा से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXIV, भाग, IV, पृ० 173)।

सासनकोट—यह गाँव अनंतपुर जिले के हिंदुपुर तालुक में स्थित है। यहाँ से गग माधववर्मन के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, XXIV, भाग, V, 1938, पृ० 234)। यहाँ पर एक विशाल टीले से पुरातन मृण्माडों, मनको और अन्य अवशेषों के नमूने सग्रहीत किये गये थे।

शेणबग-पेरुमाल-नल्लूर—यह आधुनिक शुमगिनेल्लूर है (सा० इं० इं०, जिल्द, I, पृ० 74)।

शेंदमंगलम्—इसे इसी नाम के एक गाँव से समीकृत किया गया है। यहाँ से मनवलप्पेरुमल का शेदमगलम् अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, जनवरी, 1937)। यह दक्षिण अर्काट जिले के तिन्दिवनम तालुक में स्थित है।

शेंगम—यह दक्षिण अर्काट जिले मे है (सा० इ० इ०, भाग, II, पृ० 497)।

सेतपदु—यह गुटूर तालुक मे है (सेतपदु अभिलेख, एनुअल रिपोर्ट ऑव साउथ इडियन एपिग्रेफ़ी, 1917, 116)।

सीमाचलम—यह वाल्टेयर से लगभग नौ मील दूर मे स्थित है। यहाँ एक पहाडी के शिखर पर वराह-नरसिहस्वामी को समर्पित एक प्रसिद्ध हिंदू मंदिर है।

सिहपुर—चन्द्रवर्मन के कोमर्ति अभिपत्र एव उमावर्मन के बृहत्प्रोष्ठ दानपत्र में इसका वर्णन है, जिसे शिकाकोल और नरसन्नपेत के बीच में स्थित सिंगपुरम से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, IV, पृ० 143; एपि० इ०, XXVII, पृ० 35)।

सिरिपुरम—यह गाँव शिकाकोल के निकट है, जहाँ पर कलिंग नरेश अनंत-वर्मन् के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, पृ० 47 और आगे)।

सिरितन—यह श्रीस्तन या श्रीस्थान का प्राकृत नाम प्रतीत होता है। यह तेलंगाना में कृष्णा नदी के तट पर स्थित प्रसिद्ध श्रीशैल है।

सिरियाम्बूर—इसे उत्तरी अर्काट जिले मे बलजपेत तालुक में स्थित शित्तात्तूर से समीकृत किया जा सकता है (सा० इं० इ०, जिल्द, III, पृ० 289)।

शिरुकडम्बूर—यह एक गाँव का नाम है (वही, I, पृ० 80, 82)।

शिशपालगढ़–यह उडीसा मे है, जहाँ पुरातत्त्व विभाग द्वारा उत्खनन कार्य किया जा रहा है (सम्प्रति पूर्ण हो चुका है)। शिशुपालगढ का ऐतिहासिक स्थल उड़ीसा मे भुवनेश्वर के समीप स्थित है। यह अपने मध्ययुगीन मदिरो तथा तोरणो की व्यापक व्यवस्थायुक्त एक वर्गाकार किले के लिए प्रसिद्ध है। शिशुपालगढ के भग्नावशेष उड़ीसा के पुरी जिले के अतर्गत भुवनेश्वर शहर से कोई $1\frac{1}{2}$ मील पूर्व, दक्षिण-पूर्व की ओर स्थित है। मृण्भाड एव अन्य उपकरणो के रूप मे प्राचीन आवास के चिह्न किले के बहिभाग मे दृष्टिगोचर होने हैं। किला गघवती नामक एक लघु सरिता के जल से परिवेष्टित है। किले के पश्चिमी ओर से प्रवाहित होने वाली मुख्य धारा शिशुपालगढ से लगभग 6 मील उत्तर मे मचेश्वर से पश्चिम मे स्थित पहाडी क्षेत्रो से निकलती है ओर सात मील आगे दक्षिण मे दया नदी मे मिल जाती है। किले के दक्षिण, दक्षिण-पूर्व मे लगभग 3 मील दूर पर धौली पहाडी स्थित है, जहाँ पर अशोक के अभिलेख हैं। शिशुपालगढ से लगभग छह मील पश्चिम-उत्तर-पश्चिम मे खण्डगिरि और उदयगिरि पहाडियाँ है। इस स्थान पर किये गये उत्खनन से कुछ वस्तुएँ प्रकाश मे आयी हैं, जिनमे कुछ मनको, मिट्टी के एक बुल्ला (Bulla), मिट्टी के कर्णाभरण और अनलकृत मृण्भाड का वर्णन किया जा सकता है। अपने इतिहास के आदि काल मे शिशुपालगढ मे प्रतिरक्षा की कोई व्यवस्था नही थी। प्राचीन मध्ययुग के प्रारभ मे सबसे महत्त्वपूर्ण घटना प्रतिरक्षा व्यवस्था का निर्माण थी (ऐश्येट इडिया, आर्कं० सर्वे ऑव इडिया का मुख पत्र, स० 5, जनवरी, 1949, पृ० 62 और आगे)। राजा धर्मदामघर की कुषाण-रोमन प्रकार की एक दुर्लभ स्वर्णमुद्रा उपलब्ध हुयी थी। मुद्रा की तिथि 200 ई० के पश्चात् की है (जर्नल न्यूमिसमेटिक सोसायटी ऑव इडिया, जिल्द, XII, खड, I, जून, 1950, पृ० 1-4)।

शिवनवायल—मद्रास-राज्य के चिगलपुत् जिले मे तिरुवल्लूर तालुक मे उसके इसी नाम के मुख्यावास से लगभग नौ मील दूर पूर्वोत्तर मे स्थित यह एक गाँव है (एपि० इ०, XXVII, भाग 2, पृ० 59)।

शिवीन्द्रिरम्—यह कन्याकुमारी के समीप वर्तमान शुचीन्द्रम का प्राचीन नाम है (सा० इं० इं०, जिल्द, III, पृ० 159)।

शोलापुरम्—वेल्लोर से लगभग आठ मील दक्षिण मे स्थित यह एक गाँव है, जहाँ से चार अभिलेख प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, VII, 192 और आगे)।

सोमलापुर—यह बेलारी जिले के बेलारी तालुक मे है, जहाँ से तीन ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XVII, 193 और आगे)।

शोरै—ऊति के निकट यह एक गाँव है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV)।

शोरैक्कावूर—यह तजौर जिले मे कुत्तालम् के निकट है, जहाँ से शक सवत् 1308 में उत्कीर्ण विरुपाक्ष के तीन ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, VIII. 298 और आगे)।

शोरपुरम्—वेलूर के निकट यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इं०, जिल्द, I, पृ० 78, 128)।

सोरमट्टि—इसे मदनपल्ली के समीपस्थ नोलब क्षेत्र मे स्थित बताया जा सकता है (एपि०, इ०, XXIV, भाग, IV, पृ० 191)।

श्रावणबेल्गोला—मैसूर राज्य के हस्सन जिले के अतर्गत चन्नरायपत्न तालुक मे चन्द्रबेत्त और इन्द्रबेत्त नामक दो पहाडियो के बीच मे यह स्थित है। यहाँ से प्रभाचन्द्र का अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, IV 22 और आगे; तु० एपि० इ०, III, 184)। यह जैन-शिक्षा का एक प्राचीन केद्र था और यहाँ जैन शिक्षक भद्रबाहु आया था, जिसे यही पर कैवल्य प्राप्त हुआ था, (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 54)। बताया जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य, जिसने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था, यही मरा था (राइस, मैसूर गजेटियर, I, पृ० 287)।

श्रीक्षेत्र—यह उड़ीसा मे पुरी है। यह बारहवी शती० ई० मे निर्मित जगन्नाथ मदिर के लिए विख्यात् है। यहाँ पर श्री चैतन्य आये थे (देवी भागवत, जिल्द VII, अध्याय, 30; हटर, उडीसा, आर्क० स० रि०, 1907-08)।

श्री–मधुरांतक-चतुर्वेदिमगलम्–यह जयगोण्डसोलमण्डलम के कालत्तुरकोट्टम् नामक विषय (जिले) मे स्थित एक स्वतत्र गाँव है (सा० इ० इ०, III, पृ० 204)।

श्री-मल्लिनाथ-चतुर्वेदिमंगलम्—यह उत्तरी अर्काट जिले मे स्थित एक गाँव का नाम है (वही, I, पृ० 77, 78 और 129) जहाँ के निवासी महान् बतलाये जाते है।

श्रीपर्वत—मार्कण्डेयपुराण (LVII 15), कूर्मपुराण (30. 45-48), तु० अग्निपुराण (109) और सौरपुराण (69. 22) मे इस पर्वत का उल्लेख है। इसे श्रीशैल भी कहा जाता है। पद्म पुराण (अध्याय, 21, श्लोक, 11-12) के अनुसार इस पवित्र पर्वत का शिखर सुदर है, जहाँ पर मल्लिकार्जुन नामक देवता का निवास है। यह उच्च पर्वत कुर्नूल जिले मे कृष्णा नदी के ऊपर प्रलम्बित

है। साधारणतया इसे नासिक प्रशस्ति में वर्णित सिरितन से समीकृत किया गया है। यह मल्लिकार्जुन नामक प्रसिद्ध मंदिर का स्थान है, जो बारह लिंग मंदिरों मे से एक है (आर्क० स० सा० इं०, जिल्द, I, पृ० 90; आर्क० स० वे० इ०, पृ० 223) अग्निपुराण (CXIII. 34) में कावेरी नदी के तट पर स्थित बतलाया गया है। इसके अनुसार विष्णु ने इसे देवी श्री को समर्पित किया था, क्योंकि एक बार उन्होंने कुछ तपस्या की थी (सीवेल कृत आर्क० सर्वे० ऑव साउथ इंडिया, जिल्द, I, पृ० 90; पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 290)। बाणकृत हर्षचरित के मंगलाचरण मे श्रीपर्वत का वर्णन है, जो तेलंगाना मे स्थित है एक पर्वत माला का नाम है (कावेल और टॉमस द्वारा अनूदित, हर्षचरित, पृ० 3 पा० टि०)।

इसकी स्थिति के विषय मे यह कहा जा सकता है कि यह प्राचीन धार्मिक मंदिर ऋषभगिरि पहाड़ी पर कृष्णा नदी के तट पर स्थित है (द्रष्टव्य, वि० च० लाहा, होली प्लेसेज़ ऑव इंडिया, कलकत्ता ज्यॉग्रेफिकल सोसायटी पब्लिकेशन, सं० 3, पृ० 41)।

श्रीपुर—यह आधुनिक सिरपुर है, जो गंजम जिले मे परलकिमेडि से 18 मील दूर वंशधरा नदी के बाँएँ तट पर मुखलिंगम के पश्चिमोत्तर मे स्थित है (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, पृ० 119)। आठवी एवं नवी शती मे पाण्ड्यों ने अपनी राजधानी श्रीपुर से कोशल पर राज्य किया था। यह सिरिपुर भी हो सकता है, संप्रति जो विजगापट्टम जिले मे बाविलवलस जमीदारी का एक भाग है। यह नागावती नदी के दक्षिण मे केवल तीन मील दूर पर है, जिसके उत्तरी तट पर कलिंग का सुप्रसिद्ध विषय (ज़िला) वराहवर्दिनी स्थित था (विशाख वर्मन के कोरसन्ड ताम्रपत्र, एपि० इ०, XXI, पृ० 23-24)।

श्रीरंगम्—तिरुचिरपल्ली या त्रिचिनापल्ली के निकट यह एक द्वीप का नाम है (आर्क० स० इ०, III, पृ० 168, तु० एपि० इ०, III, 7 और आगे; सुन्दर पाण्ड्य का रंगनाथ अभिलेख, माधवनायक के श्रीरंगम अभिपत्र, एपि० इ०, XIII. 211 और आगे; शक संवत् 1239 मे उत्कीर्ण काकतिय प्रतापरुद्र का श्रीरंगम अभिलेख, एपि० इ०, XXVII, भाग, VII, जुलाई, 1948)। यहाँ पर रंगनाथ मंदिर स्थित है। यह वही स्थान है, जहाँ रामानुज और मणवाल-महामुनि ने कुछ समय तक निवास किया था। अच्युतराय के श्रीरंगम् अभिलेख मे दक्षिण भारत के इस सुविख्यात तीर्थस्थान का उल्लेख है, जो असाधारण रूप से वैष्णवों के लिए पवित्र था (एपि० इ०, XXIV, भाग, VI, अप्रैल, 1938, पृ० 285)। शक संवत् 1415 मे लिखित गरुड-वाहन भट्ट के श्रीरंगम-अभिलेख

का उद्देश्य श्रीनिवास द्वारा प्रदत्त एक भूदान को निबद्ध करना था (एपि० इ०, XXIV, भाग, II, अप्रैल, 1937)। इस द्वीप मे जंबुकेश्वर का एक शैव मदिर है, जहाँ से वलककामय (शक सवत् 1403) का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इं०, III, पृ० 72)। यह द्वीप त्रिचिनापल्ली शहर के उत्तर मे तीन मील दूर कावेरी नदी की दो शाखाओ के बीच मे स्थित है। पाण्ड्य के नायक शासको द्वारा निर्मित एक विशाल मंदिर इस द्वीप के केन्द्र मे था। यह एक महान् तीर्थस्थान था जैसा कि मत्स्यपुराण, पद्मपुराण और ब्रह्माण्डपुराण के श्रीरंगमाहात्म्य-खण्ड में बतलाया गया है। ग्यारहवी शती ई० के मध्य मे विख्यात वैष्णव सुधारक रामानुज यही रहते थे और यही पर उनकी मृत्यु हुई थी। बतलाया जाता है कि लंका जाते समय रामचन्द्र ने यहाँ निवास किया था। इस अति प्राचीन विशाल मदिर का जीर्णोद्धार एव उद्धार दक्षिण भारत के चोल, पाण्ड्य एव अन्य राजाओ ने किया था। हरिहरराय के श्रीरगम ताम्रपत्र श्रीरगम मे स्थित श्रीरगनाथ के मदिर से सबधित है (एपि० इ०, XVI 222 और आगे)। यहाँ पर चोल राजा कुलोत्तुग का एक अभिलेख है (ऐश्येट इडिया, आर्क्यालाजिकल सर्वे ऑव इडिया का मुखपत्र, स० 5, जनवरी, 1949)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 40)।

श्रृंगवरपुकोट—यह गाँव विजगापट्टम जिले मे है जहाँ से कलिग-नरेश अन्दुतवर्मन के तीन पत्रो का एक कुलक उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 56)।

सुदसुण—(या सुदिसण)—गोदावरी क्षेत्र मे गोवर्धन विषय (जिले) मे दक्षिणी सड़क पर स्थित यह एक गाँव का नाम था (ल्युडर्स की तालिका स० 1134)।

सुदव—गजम जिले के परलकिमेडि (मू० पू० रियासत) के पूर्वी भाग मे स्थित इस गाँव को सुदव भी कहा जाता है जहाँ से धर्मलिंगेश्वर-मदिर के निकट किये जाने वाले उत्खनन के दौरान मे दो ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, पृ० 62)।

शूडाडुप्पारै-मलाई—यह एक पर्वत का नाम है (सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 76, 77)। अवश्यमेव यह बवाजी पहाडी का पुराना नाम रहा होगा। यह पोडुवुरकोट्टम के एक भाग पगलनाडु के उत्तर में स्थित था।

सुप्रयोगा—इस नदी का वर्णन महाभारत (भीष्मपर्व, IX. 28, वनपर्व, CCXXI) मे हुआ है। यह कृष्णा की एक पश्चिमी सहायक नदी थी।

शुरन्कुडि—यह तिरुनेलवेलि जिले के कोविलपत्ती तालुक में स्थित एक गाँव था (एपि० इं०, XXIV, भाग, IV)।

शूरवरम—यहाँ पर अन्नदेव नामक एक चोड़-नरेश ने अन्नवोत नामक एक अन्य राजा पर विजय प्राप्त की थी (एपि० इ०, XXVI, भाग, I)।

शूरुलिमलाई—यह एक पहाड़ी का नाम है जहाँ से शुरुलियारु का उद्गम होता है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 450)।

शुरुलियारु—यह नदी मदुराई जिले के पेरियकुलम तालुक के अतर्गत चुबुम से सात मील दूर शूरुलिमलाई से निकलती है और चुबुम तथा सिण्णमनुर से बहती हुयी वैगाई मे मिलती है (वही, पृ० 450)।

सुवर्णगिरि—अशोक के प्रथम लघुशिलालेख (ब्रह्मगिरि पाठ) मे वर्णित सुवर्णगिरि की स्थिति के विषय मे हमे कोकण एव खानदेश के उत्तरकालीन मौर्यों के अभिलेखो मे कुछ सकेत प्राप्त हो सकते है (एपि० इ०, भाग, III, पृ० 136)। हुल्ट्श ने इसे मास्की के दक्षिण एव विजयगर के अवशेषो के उत्तर मे स्थित मैसूर मे कनकगिरि से समीकृत किया है (का० इ० इ०, XXXVIII)। बूलर इसे कही पश्चिमीघाट मे स्थित मानने के पक्ष मे है। कृष्ण शास्त्री ने इसे मैसूर मे सिद्धापुर के पश्चिम मे स्थित मास्की से समीकृत किया है। अत. सभवत. यह थाना जिले के उत्तर मे वाद के पडोस मे और खानदेश मे बघली मे स्थित था, क्योकि खानदेश और कोकण के उत्तरकालीन मौर्यों के अभिलेख वाद से उपलब्ध हुये है। सुवर्ण-गिरि के कुमारामात्य के रूप मे कोई आर्यपुत्र नियुक्त किया गया था। वह या तो अशोक का पुत्र या भाई था (बरुआ, अशोक ऐंड हिज़ इस्क्रिप्शस, पृ० 62; विंसेट स्मिथ, अशोक, 44)।

सुवर्णमुखरी—स्कन्दपुराण के अनुसार (अध्याय, I, श्लोक, 36-48) यह 5 योजन विस्तृत हस्तिशैल नामक पर्वत के उत्तर मे स्थित एक प्रसिद्ध नदी है।

सुवर्णपुर (स्वर्णपुर)—तेल एव महानदी के सगम पर स्थित यह सोनपुर नामक आधुनिक नगर है (तैल-महानदी-सगम-विमलजलपवित्रीकृत, तु०, महामव-गुप्त द्वितीय जनमेजय के सोनपुर अभिपत्र, एपि० इ०, XXIII, भाग, VII, जुलाई, 1936, पृ० 250; रत्नदेव तृतीय का खरोड अभिलेख, ज० बि० उ० रि० सो०, II, 52; एपि० इ०, XIX, पृ० 98)।

श्वेतक—श्वेतक का वर्णन गग इन्द्रवर्मन् के इडियन म्युज़ियम अभिपत्र मे हुआ है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941, पृ० 165, और आगे, XXIV, भाग, IV, अक्टूबर, 1927; XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 29-30)। जयवर्मदेव का गजम दानपत्र श्वेतक से प्रचलित किया गया था

(एपि० इं०, IV, पृ० 199-201)। इसे आंध्रप्रदेश के श्रीकाकुलम जिले के सोमपेट तालुक मे स्थित आधुनिक चिकटि जमींदारी से समीकृत किया जा सकता है। यह श्रीकाकुलम जिले के उत्तरी भाग में स्थित प्रतीत होता है (एपि० इं०, XXVII, भाग, III, पृ० 112 द्रष्टव्य) । कुछ विद्वानो के अनुसार श्वेतक संभवत: कलिंग के पश्चिम का समीपवर्ती क्षेत्र था (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, पृ० 181)।

तदपत्रि—यह शहर पेन्नार नदी की कटान पर अनंतपुर जिले मे स्थित है। यहाँ पर श्री बग्गु रामलिंग ईश्वर नामक एक प्राचीन मदिर है (ज० इ० सी० ओ० आ०, XV)।

तगर—इस शहर को तेर से समीकृत किया गया है जो महाराष्ट्र मे (मू० पू० हैदराबाद रियासत) आधुनिक उस्मानाबाद से 12 मील उत्तर मे है (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, गण्डरादित्यदेव के कोल्हापुर ताम्रपत्र, शक सवत् 1048)। फ्लीट ने इसे तेर से समीकृत किया है जो पैठान से 95 मील दक्षिण-पूर्व मे है (ज० रा० ए० सो०, 1901, पृ० 537, और आगे, बाबे गजेटियर, भाग, I, खड, II पृ० 3, टिप्पणी, 7, वही, पृ० 16, टिप्पणी, 4)। कुछ लोगो ने इसे देवगिरि से, अन्य ने जुन्नार से और रा० गो० भडारकर ने महाराष्ट्र मे धरूर से समीकृत किया है। टालेमी ने इसे बैठान और पैठान के पूर्वोत्तर मे, और पेरिप्लस के लेखक ने इसके उत्तर-पूर्व मे दस दिनो की यात्रा की दूरी पर स्थित बतलाया है। यूले ने इसे पैठान के दक्षिण-पूर्व मे लगभग 150 मील की दूरी पर गुलबर्ग में (मैसूर राज्य) स्थित बतलाया है। डफ ने इसे गोदावरी के तट पर भीर के समीप स्थित बतलाया है। पेरिप्लस मे यह एक महानगर के रूप मे उल्लिखित है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, ज० रा० ए० सो०, 1902, पृ० 230, आर्क० स० रिपोर्ट, 1902-03, इपर्टेंट इस्क्रिप्शस फ्रॉम बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 43-44 यहाँ यह उल्लेखनीय है कि शिलाहारो का मूल स्थान तगर ही था (एपि० इ०, III, पृ० 269)।

तक्कणलाडम—यह दक्षिण लाट (गुजरात) है (आर्क० स० इं०, I, पृ० 97)। यह गण्डदेश में स्थित दक्षिण लाट है। इदिरिलिशोल शंबुवेरायन ने चिगलपुत जिले मे स्थित आरपक्कम गाँव को दक्षिण लाट के उमापतिदेव उर्फ ज्ञानशिवदेव को दिया था।

तक्कोलम—तक्कोलम से उपलब्ध परन्तक द्वितीय के दो अभिलेखो में उत्तरी अर्काट जिले के अर्कोनम् तालुक मे स्थित इस गाँव का उल्लेख है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 230)। इसे तोण्डैनाडु मे स्थित

बतलाया गया है (एपि० इ०, XIX, पृ० 81)। यहाँ पर चोल शैली का एक प्राचीन मंदिर है। प्राचीन काल में इस मंदिर के देवता को तिरुवूराल महादेव कहा जाता था।

तल्लपाक्कम्—यह अत्तिराल के पश्चिम में और चेयेर्क के दक्षिण में स्थित है (सा० इ० इ०, V, स० 284)।

तल्लारु—कोप्परुजिगदेव के वैलूर अभिलेख में तल्लारु का उल्लेख है जिसे उत्तरी अर्काट जिले में उसी नाम वाले एक गाँव से समीकृत किया जा सकता है।

तम्बपम्नी (ताम्रपर्णी)—मारवर्मन सुन्दर पाण्ड्य द्वितीय के तिन्नेवली अभिलेख के अनुसार यह तणपोरुद-आरु है (एपि०इ०, XXXIV, भाग, IV, पृ० 166)। इसे साधारणतया ताम्रपर्णी से समीकृत किया जाता है जो सामान्यतया लंका के लिए व्यवहृत होता है। कौटिलीय अर्थशास्त्र मे (II, XI) इसे पारसमुद्र कहा गया है। यूनानी लेखकों ने इसे ताप्रोबेन कहा है। इसका वर्णन अशोक के दूसरे और तेरहवें शिलालेखों में आता है। विंसेंट स्मिथ का विचार है ताम्रपर्णी नाम लंका को नहीं द्योतित करता वरन् तिन्नेवली में ताम्रपर्णी नदी के प्रति संकेत करता है। उन्होंने गिरनार पाठ 'आ ताम्बपम्नी' का उल्लेख किया है, जो उनके मतानुसार नदी के प्रति संकेत करता है न कि लंका के प्रति (अशोक, तृतीय संस्करण, 162)। भागवतपुराण (IV 28, 35, V, 19, 18, X, 79, 16, XI, 5, 39) में इसका वर्णन एक नदी के रूप में किया गया है। इस विषय में मतभेद है। यह नदी अवश्यमेव पाण्ड्य-राज्य की दक्षिणी सीमा के आगे बहती थी और इसे आधुनिक ताम्रवारी से समीकृत किया जा सकता है। टालेमी के अनुसार कोरकाई बंदरगाह इस नदी के मुहाने पर स्थित था जो मोती निकालने के लिए सुविख्यात था। कालिदास के रघुवंश (IV 49-50) के अनुसार, ताम्रपर्णी, जिसका स्थानीय नाम ताम्रवारी था, मोती निकालने के लिए विश्रुत थी। बृहत्संहिता के अनुसार ताम्रपर्णी मे मोतियाँ प्राप्त होती थी (XIV, 16, LXXXI, 2, 3)। इस नदी को गुटुर से समीकृत करने में औचित्य है, जो तीन सरिताओं के संयुक्त प्रवाह का नाम है जो दो धाराओं के माध्यम से समुद्र में गिरती है। इस नदी को ताम्रवर्णा भी कहा गया है (ब्रह्माण्ड पुराण, 49)। महाभारत (वनपर्व, LXXXVIII, 8340) के अनुसार यह एक पवित्र नदी थी। अशोक के तेरहवें शिलालेख में ताम्रपर्णी के निवासियों को स्पष्ट रूप से ताम्रपम्नीया अथवा ताम्रपर्ण्य कहा गया है। इस अभिलेख में ताम्रपर्णी या ताम्रपर्ण्यों के देश को पाण्ड्य क्षेत्र के आगे स्थित बतलाया गया है। महाभारत में भी ताम्रपर्णी को पाण्ड्य या द्राविड के आगे स्थित बतलाया गया है और वैदूर्यक पर्वत को इसका

शैल भू-चिह्न बतलाया गया है। अगस्त्य और उनके शिष्य के आश्रम एव गोकर्ण-तीर्थ यही स्थित बतलाये जाते है। ये सारे तथ्य हमे ताम्रपर्णी को युवान-च्वाङ् द्वारा वर्णित मलयकूट से समीकृत करने के लिए उत्प्रेरित करते है। मलयकूट को श्री पोतलक पर्वत (वैडूर्यक) रूपी भू-चिह्न के साथ द्राविड के आगे स्थित बतलाया गया है। ताम्रपर्णी या ताप्रोबेन से लका का आशय है। द्वीप शब्द इससे सबद्ध है। एक नागार्जुनिकोण्ड अभिलेख मे तबपम्ण को स्पष्ट रूप मे तबपण्णीद्वीप से पृथक् किया गया है (बरुआ, अशोक ऐड हिज़ इस्क्रिप्शस, अध्याय, III)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, I, पृ० 59-60.

तनसुलि—तनसुलि या तनसुलिय कलिंग-राज्य से अधिक दूर नही था। इसी स्थान से नद राजा द्वारा उद्घाटित नहर को बढ़ाकर कलिग शहर मे ले जाया गया था (द्रष्टव्य, खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इन्स्क्रिप्शस पृ० 14)।

तण्डनतोट्टम—कुम्भकोणम के निकट यह एक गाँव है (एपि० इ०, XV, 254)।

तगतुरु—यह गाँव कुड्डापा जिले के प्रोद्दत्तर तालुक मे स्थित है (एपि० इ०, XIX, पृ० 92)।

तंजौर (तजाई)—यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 92, एपि० इ०, XXVII, भाग, VII, जुलाई, 1948, चतुरत्नन पडित का तिरुवोरियुर अभिलेख)। तजोर के मदिरो मे चण्डेश्वर का एक छोटा सा मदिर है। यह चोल नरेशो, नायक राजाओ और मराठा राजाओ की राजधानी थी। यह अपने विशाल ब्रहदीश्वर (बृहदेश्वर) मदिर के लिए उल्लेखनीय है जो भारत का सर्वोच्च मदिर है। होयसल-नरेश सोमेश्वर और रामनाथ के अभिलेख सुदूर दक्षिण मे तजौर तक पाये जाते है (मद्रास आर्कयॉलाजिकल रिपोर्ट, 1896-97)। पुञ्जय (तजोर जिला) को किडारमगोण्डान कहा जाने लगा था (म० एपि० रि०, 1925 188, 191 और 196)। तजोर का प्राचीन नगर कावेरी नदी के तट पर मद्रास के दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 218 मील दूर स्थित है। बृहदेश्वर मदिर मे एक विशाल शिवलिगम है। यह 217 फीट ऊँचा है और भारतीय स्थापत्य का एक अद्भुत नमूना है। चारो ओर से यह एक लबी परिखा से परिवेष्ठित है। पत्थर से निर्मित भीमकाय नदि बैल इस विशाल मदिर के सामने बैठा हुआ दृष्टिगोचर होता है। मदिर मे विशाल तोरण एव मडप है। जो सब पत्थर के बने हुये हैं। इस मदिर का निर्माण राजा राजेन्द्र चोल के समय मे हुआ था, (लाहा, होली प्लेसेज़ ऑव इडिया, पृ० 41)।

तंकण (तंगण)—बृहत्संहिता मे इसका वर्णन एक देश के रूप मे किया गया है (XIV, 12)।

तणपोरुन्द-आरु—मारवर्मन सुन्दर पाण्ड्य द्वितीय के तिन्नेवली अभिलेखों में वर्णित यह ताम्रपर्णी नदी का एक नाम है (एपि० इ०, XXIV, भाग, IV, पृ० 166)।

तरडमसकभोग—महाशिवगुप्त के मेल्लार अभिपत्रो मे इसका वर्णन मिलता है, जिसे तलहारिमण्डल से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXIII, भाग, II)।

तालगुण्ड—यह मैसूर राज्य के शिमोगा जिले के शिकारपुर तालुक में स्थित है। यहाँ से काकुस्थ-वर्मन का एक स्तभ लेख प्राप्त हुआ था (एपि० इं०, VIII, 24 और आगे)।

तालपुरमसक—नागपुर-नन्दिवर्धन जिले मे स्थित यह एक गाँव है जो किसी ब्राह्मण को दिया गया था। दक्कन के राष्ट्रकूट वश के कृष्ण तृतीय (उर्फ अकाल-वर्ष) नामक राजा ने यह दान अपने भाई जगतुग कृष्ण द्वितीय के नाम मे दिया था। अकालवर्ष ने गुर्जरो को भयान्वित और लाडो के गौरव का मर्दन किया था। उसने गौडों को विनयशीलता सिखलायी थी तथा उसकी आज्ञाएँ अग, कलिंग, गग और मगध जन मानते थे (एपि० इ०, V, 192 और आगे)।

तालथ्थेर—कोष्टुकवर्त्तनी विषय मे स्थित यह एक गाँव का नाम है। सुदाव से उपलब्ध एक पूर्वी गग-दान ताम्रपत्र मे कहा गया है कि गगवशीय महाराजाधिराज देवेन्द्रवर्मन के पुत्र महाराज अनन्तवर्मन ने इस गाँव को विष्णुसोमाचार्य नामक एक विद्वान ब्राह्मण को दिया था (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, 65 और आगे)।

तामर—यह एक गाँव है जिसे आधुनिक दामल से समीकृत किया जाता है (सा० इ० इ०, II, 390)। इसे चिंगलपुत जिले मे स्थित नित्तविनोदनल्लूर भी कहा जाता है।

तामरचेरु—एक प्राचीन गग-दानपत्र मे वर्णित यह गाँव वराहवर्त्तिनी मे स्थित है (इ० ऐ०, XIII, 275)।

ताण्डिकोण्ड—गुटुर जिले के चकेर तालुक मे ताडिगोण्ड या ताडिकोण्ड में स्थित यह एक आधुनिक गाँव है और यह जिले के मुख्यावास के उत्तर मे लगभग आठ मील दूर स्थित है। ताण्डिकोण्ड की सीमाओ मे चयिततटाक और भीम-समुद्र दो तालाब अब भी विद्यमान है। भीमसमुद्र एक बड़ा तालाब है, जिसके तट पर एक टीला स्थित है जिसपर एक शिव मदिर के विस्तृत अवशेष है। चयित-

तटाक एक बडे तालाब का प्राचीन नाम प्रतीत होता है जो इस गाँव के निकट ही लगभग तीन या चार वर्गमील का क्षेत्र घेरे हुये है। यह उक्त गाँव के निकट एक विस्तृत क्षेत्र की सिंचाई का साधन है (अम्मराज द्वितीय का ताण्डिकोण्ड दानपत्र, एपि० इ०, XXII, भाग, V, पृ० 166)।

ताण्डिवाड—यह कोनुरूनाण्डुविषय मे स्थित एक गाँव है जो वगिपारु के एक ब्राह्मण को दिया गया था। यहाँ से एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एनुअल रिपोर्ट ऑव साउथ इडियन एपिग्रेफी, 1917)। इसे कृष्णा जिले के तनुकु तालुक में ताडिपर्रु से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXIII, भाग, III, जुलाई, 1935, पृ० 97)।

तेक्कलि—यह गजम जिले में स्थित है। यहाँ से कगोद के शैलोद्भवो से संबधित तीन अभिपत्र उपलब्ध हुए है (ज० बि० उ० रि० सो०, IV, 162-167, एपि० इ०, IX, 41-47)। देवेन्द्रवर्मन के पुत्र राजेन्द्रवर्मन के कुछ अभिपत्र यहाँ से उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XVIII, 311)।

तेलवाह—जातक (I, पृ० 111; सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 111 भी द्रष्टव्य) मे इस नदी का वर्णन है जिसके तट पर अधपुर स्थित था, जहाँ पर सेरिव राज्य से आने वाले व्यापारी इस नदी को पार करके पहुँचे थे। कुछ विद्वानो ने इसे आधुनिक तेल या तेलिगिरि से समीकृत किया है (इ० ऐ०, 1918, 71, भडारकर, अशोक, पृ० 34)।

तिरुव्वेन्दूर—यह तिरुनेलवेलि जिले मे है जहाँ वरगुणमहाराज का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXI, भाग, III)।

तिरुक्कलुकुनरम्—यह चिगलपुत जिले मे स्थित एक विशाल गाँव है जहाँ से चार प्राचीन तमिल अभिलेख प्राप्त हुए थे। यह पक्षितीर्थम् के नाम से सुविख्यात है (एपि० इ०, III, 276)।

तिरुक्कोडुन्कुनरम्—कृष्णदेवराय के पिरनमल्लाई अभिलेख में इसका उल्लेख हुआ है जो तिरुमलैनाडु मे स्थित बतलाया जाता है और जिसका नामकरण शिवगुप्त तालुक मे स्थित आधुनिक तिरुमलाई नामक गाँव के आधार पर किया गया है (एपि० इ०, XXI, भाग, III, जुलाई, 1931)।

तिरुकुडमुक्किल—तजोर जिले मे स्थित कुभकोनम का यह तमिल नाम है (सा० इ० इ०, III, पृ० 283)। यह चोल-राज्य की एक राजधानी और विद्या का महान् केंद्र था। शिव-प्रतिमा से युक्त कुम्भकोनम का मदिर दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध मदिर है।

तिरुमलाई-पहाड़ी—यह एक पहाड़ी का नाम है जिसे अर्हंमुगिरि और एणगुण-

चिराई-तिरुमलाई (सा० इ० इ०, I, पृ० 106) भी कहा जाता है (सा० इं० इं०, I, पृ० 106)। यह उत्तरी अर्काट जिले मे मद्रास के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 96 मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, XXVII, 24)।

तिरुमलाई गाँव—यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 94, 97, *100, 101, 105, 106, 108*)। यह वर्तमान चालुक्य क्षेत्र की अपेक्षा पल्लव क्षेत्र से अधिक समीप है। यह अपने मदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यह भगवान् वेंकटेश के कारण पवित्र, और एक वैष्णव केंद्र है। पहाडी के शिखर पर स्थित यह मदिर दक्षिण भारत के आनुक्रमिक राजवशो के शासको के सरक्षकत्व मे था।

तिरुमले—केलादि सदाशिव नायक के काप ताम्रपत्रो मे तिरुमले का उल्लेख है जो चित्तूर जिले मे स्थित तिरुपति है (द्रष्टव्य एपि० इ०, XIV, पृ० 83)।

तिरुमाणिकुली—यह गाँव गेडिलम् नदी के तट पर स्थित है। इसे उदवि तिरुमाणिकुली भी कहा जाता है जो कुड्डालुर के निकट स्थित है। बतलाया जाता है कि यहाँ पर सेंगाप्राण नामक एक प्राचीन चोल-नरेश ने शिव की उपासना की थी। तिरुमाणिकुली का एक भाग पेरम्बलम्पोन्मेयण्डपेरुमलनल्लूर के रूप मे गठित था (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 97)।

तिरुमुडुकुनरम—(प्राचीन पवित्र पहाड)—इसका सस्कृत समानार्थक सभवत वृद्धाचलम् है जो दक्षिण अर्काट जिले मे एक तालुक का मुख्यावास है (सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 123)।

तिरुनामनल्लूर—यह दक्षिण अर्काट जिले के तिरुक्कोवलूर तालुक मे स्थित है (वही, जिल्द, III, पृ० 197-98; तु० एपि० इं०, VII, 132 और आगे)। पहले इसे तिरुनावलूर कहा जाता था। यह तिरुकोइलूर तालुक के दक्षिण-पूर्व मे $19\frac{1}{2}$ मील दूर स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 98)।

तिरुपति—तिरुपति या त्रिपति या त्रिपदी उत्तरी अर्काट जिले मे मद्रास के पश्चिमोत्तर मे 72 मील दूर स्थित है। सात पहाडियो के झुड के शिखर पर तिरुपति मदिर स्थित है। ये सात पहाडियाँ उस साँप के सात सिर को द्योतित करती हैं जिसपर वेंकटाचलपति रहते है, सर्प के शरीर का मध्यभाग नरसिंह का है और उसकी पूँछ वाला छोर मल्लिकार्जुन का आवास है। ब्रह्मा, विष्णु और शिव द्वारा अभिरक्षित इसका आदि, मध्य और अत दक्षिण भारतीय स्थापत्य का एक अद्भुत नमूना है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, 41-42)।

तिरुप्पूवनम्—जटावर्मन कुलशेखर प्रथम के तिरुप्पूवनम् अभिपत्रो मे रामनाड जिले की शिवगंगा जमीदारी मे स्थित इस गाँव का उल्लेख हुआ है। यह वैगाई

(संस्कृत वेगावती) नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। यह मदुरा से 12 मील दक्षिण-पूर्व मे और शिवगंगा से 16 मील पश्चिम मे स्थित है (एपि० इं०, XXV, भाग, II, अप्रैल, 1938, पृ० 64)।

तिरुवदि—यह दक्षिण अर्काट जिले मे पौरुट्टू के निकट कुड्डालूर तालुक में स्थित है। यहाँ से रविवर्मन का एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इं०, VIII, 8 और आगे)। यह गाँव गेडिलम नदी के तट पर स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 97)।

तिरुवदिकुंद्रम—इस गाँव को दक्षिणी अर्काट जिले के गिंगुतालुक मे उसी नाम के एक गाँव से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXVIII, भाग, VII, जुलाई, 1948, पृ० 311)।

तिरुवल्लम्—यह उत्तरी अर्काट जिले मे स्थित एक गाँव है (सा० इ० इ०, I, पृ० 169)। यहाँ पर अनेक चोल अभिलेख है। यहाँ पर बिल्वनाथेश्वर का मदिर स्थित है (एपि० इ०, III, 70)।

तिरुवयिन्दिरपुरम्—यह कुड्डालुर तालुक मे स्थित आधुनिक तिरुवेन्दिपुरम् है (एपि० इं०, XXVII, भाग, III, पृ० 98)।

तिरुवेन्दिपुरम्—यह दक्षिण अर्काट जिले के मुख्यावास कुड्डालूर के पश्चिम-उत्तर-पश्चिम $4\frac{1}{2}$ मील दूर स्थिति एक गाँव है (एपि० इ०, VII, 160 और आगे)।

तिरुवोरियूर—राजराज तृतीय के एक समकालीन राजा, विजयगण्डगोपाल के तीसरे वर्ष मे अकित यहाँ से प्राप्त एक अभिलेख मे किसी किडारत्तैरय्यन द्वारा एक शैवमठ को प्रदत्त भूमिदान का आलेख है (मद्रास एपि० रि०, 1912 का 239 स०; बि० च० लाहा वाल्यूम, भाग, II, पृ० 423)।

तोण्डि—मदुरा जिले मे स्थित यह एक बदरगाह है (सा० इ० इ०, III, 197)।

तोण्टापर—इस गाँव का प्रतिनिधित्व शिकाकोल तालुक मे स्थित तोटाड नामक आधुनिक गाँव करता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, II, पृ० 50)।

तोसली—तोसली का वर्णन अशोक के कलिंग शिलालेख एव वीरपुरुषदत्त के नागार्जुनिकोण्ड अभिलेख मे प्राप्त होता है। यह टालेमी द्वारा वर्णित तोसलेयी (Tosalei) है। कुछ लोगो के अनुसार यह प्राचीन कोशल है। उडीसा के पुरी जिले में स्थित धौली ही तोसली है। हुल्ट्श ने कटक जिले से उपलब्ध दो ताम्रपत्र-अभिलेखो के प्रति सकेत किया है जिनमे उत्तर एव दक्षिण तोसली का उल्लेख मिलता है (एपि० इं० ,IX, 286)। अशोक के काल मे यहाँ पर एक

कुमारामात्य नियुक्त रहता था। जहाँ तक उत्तर-तोसल और दक्षिण-तोसल का संबध है (एपि० इ०, XV, 1-3, श्लोक, 5; IX. 286-7, श्लोक, 4) दक्षिण तोसल समवतः दक्षिणापथ का अमित तोसल नामक देश ही है, जिसमें गण्डव्यूह के अनुसार तोसल नामक एक नगर था। अतएव यह एक विस्तृत क्षेत्रिक संभाग का नाम था। कुछ अभिलेखो में बतलाया गया है कि इसमें अनरुद्ध नामक एक विषय (जिला) और कगोद नामक एक मडल था (एपि० इ०, VI, 141, 21)। उत्तरतोसल दक्षिण तोसल से विस्तार मे छोटा प्रतीत होता है और पञ्चाल, बुम्युदय तथा सरेफाहार इसके विषय (जिले) थे (एपि० इं०, V, 3, 6; एपि० इ०, XXIII, 202)। नेउलपुर दानपत्र मे उत्तर तोसल के कुछ ग्रामों का वर्णन है जिनको बलसोर जिले मे स्थित बतलाया गया है (एपि० इ०, XV, 2-3)। मोरो (बलसोर जिला) ताम्रपत्रो मे उत्तर तोसल मे सेरफा के निकटस्थ एक गाँव मे भूमिदान का आलेख है (एपि० इ०, XXIII, 199)। ऐसा प्रतीत होता है कि बलसोर क्षेत्र उत्तर तोसल देश का केंद्र था। उत्तर तोसल ओड्रविषय का केवल एक भाग था (इडियन कल्चर, जिल्द, XIV, पृ० 130-131)।

त्रिभुवनम्—यह तजौर जिले मे तिरुविदैमरुदूर रेलवे स्टेशन के समीप ही है। यहाँ से कम्पहरेश्वर मदिर मे दो स्थानो पर दो प्रतिलिपियो मे उत्कीर्ण कुलोत्तुग तृतीय का एक सस्कृत अभिलेख उपलब्ध हुआ है। इस अभिलेख मे चिदाम्बरम का वर्णन है और इसमे नटराज के मदिर के सामने एक मुखमण्डप के निर्माण का आलेख है। इसमे काञ्चीपुरम के एकाम्रेश्वर, मदुरा के सुन्दरेश्वर तथा मध्यार्जुन एव राजराजेश्वर के मदिरो का वर्णन प्राप्त होता है। इसमे मण्डप एव गोपुरम के निर्माण द्वारा वल्मीकेश्वर के मदिर के परिवर्द्धन का आलेख है (दे० रा० भडारकर वाल्युम, पृ० 3-4)।

त्रिकलिंग—गग इन्द्रवर्मन् के जिरजिगी अभिपत्रो मे इसका उल्लेख मिलता है (एपि०, इ०, XXV, भाग, VI, अप्रैल, 1940, पृ० 286)। इसमे वे क्षेत्र समिलित थे जिन्हें प्राचीनकाल मे कलिग, तोसल और उत्कल कहा जाता था, जबकि कुछ लोगो का विश्वास है कि इसमे उड्र (मुख्य उडीसा), कगोद, और कलिग समिलित थे (ज० बि० उ० रि० सो०, जिल्द, XIV, पृ० 145)। रामदास की धारणा है कि त्रिकलिंग, कलिग एव दक्षिण कोशल के मध्यवर्त्ती पठारी इलाके या आधुनिक छत्तीसगढ को द्योतित करता था (जर्नल ऑव द आंध्र हिस्टॉरिकल रिसर्च सोसायटी, जिल्द, I)। कुभी ताम्रपत्र मे वर्णित त्रिकलिंग (ज० ए० सो० बं०, 1839) मे प्लिनी के अनुसार कलिगो द्वारा निवसित क्षेत्र, मक्को-कलिंग और गंगारिडीज-कलिंगाई संमिलित थे (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 519)।

दक्षिण कोशल के राजाओ को त्रिकलिंग राजा कहा जाता था। कनिंघम (ए० ज्यॉ०, इ०, 1924, पृ० 591)। के अनुसार त्रिकलिंगो मे कृष्णा नदी के तट पर स्थित धनकटक या अमरावती, आध्र या वारंगल और कलिंग या राजमहेन्द्री के तीन राज्य सम्मिलित थे (मैक्रिंडिल, टालेमी, पृ० 233)। गोदावरी जिले के त्रिकलिंग देश पर एक वर्ष तक विक्रमादित्य ने शासन किया था (सा० इं० इ०, जिल्द, I, पृ० 46)। कुछ लोगो के अनुसार त्रिकलिंग का तात्पर्य पठारी या कलिंग से है जो मुख्य कलिंग एव दक्षिण कोशल के मध्य मे स्थित था। त्रिकलिंग देश उत्तर में गगा नदी से लेकर दक्षिण मे गोदावरी नदी तक फैला हुआ था (जर्नल आध्र हिस्टॉरिकल रिसर्च सोसायटी, जिल्द, VI, पृ० 203)।

त्रिपुरी—चेदि सवत् 866 मे अकित जाजल्लदेव के रत्नपुर शिलालेख मे त्रिपुरी का उल्लेख किया गया है जिस पर कोकल्ल नामक चेदि राजा के अठारह पुत्रो मे से एक ने शासन किया था (एपि० इ०, I, पृ० 33)। साहित्यिक उल्लेखो के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येट इडिया, पृ० 50, 399)।

त्रिसामा—त्रिसामा जिसे प्रकारातर से त्रिभागा या पितृसोमा भी कहते हैं तथा ऋषिकुल्या का वर्णन पुराणो मे दो पृथक् नदियो के रूप मे किया गया है, किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि एक ही नदी ऋषिकुल्या थी जिसका वर्णनात्मक नाम त्रिसामा-ऋषिकुल्या था। मार्कण्डेयपुराण के अनुसार (पार्जिटर द्वारा अनूदित, पृ० 57, 28-29) ऋषिकुल्या एव पितृसोमा महेन्द्र पर्वतमाला से निकलती थी। कूर्मपुराण (XLVII. 36) मे त्रिसामा, ऋषिकुल्या और वशधारिणी को शुक्तिमत पर्वतमाला से निकलने वाली नदियाँ कहा गया है।

त्रिशिरापल्ली—कावेरी नदी के तट पर स्थित यह आधुनिक त्रिचनापल्ली है (सा० इ० इ०, I, 28)। त्रिशिरापल्ली-शिला के शिखर के निकट ही शिला काट कर बनायी गयी एक गुफा मे दो स्तभो पर अकित दो गुहा-लेख उपलब्ध हुये हैं (एपि० इ०, I, 58)। इसके अचल मे स्थित उरैय्यूर मूलत. प्राचीन चोलो की राजधानी थी। कालांतर मे किन्ही कारणो से त्रिचिनापल्ली मदुरा के नायक राजाओं की राजधानी थी। कर्णाटक के युद्धो मे इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

तुण्डाकविषय (या तुण्डकविषय)—यह तोण्डैमण्डलम् ही है (सा० इ० इं०, I, पृ० 106, 146)।

तुंगभद्रा—पद्मपुराण मे (187. 3) इस नदी का वर्णन दक्षिण मे बहने वाली नदी के रूप मे हुआ है। इसके तट पर हरिहरपुर नामक एक अट्टालक था। भागवतपुराण (V. 19, 19) मे इसका वर्णन एक नदी के रूप मे किया गया है। कृष्णा की अवर सहायक नदियो मे यह सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। तुग और भद्रा

नामक दो सरिताओ का उद्गम-स्थल मैसूर की पश्चिमी सीमा पर स्थित पश्चिमी घाटो मे है। तुगभद्रा कुर्नूल जिले मे नदिकोतकुर के उत्तर मे कृष्णा नदी में मिलती है। कृष्णा और तुगभद्रा नदियो की मध्यवर्ती पेटी मे अशोक के अभिलेखों के चार समूह उपलब्ध हुये है।

उदगाई—इसे एक पाण्ड्य नगर माना गया है। बताया जाता है कि राजा राजराज प्रथम ने इसे अपने मलैनाडु अभियान के क्रम मे जला दिया था (तु०, वीरराजेन्द्रदेव के चरल अभिपत्र, एपि० इ०, जिल्द, XXV)।

उदयगिरि—खण्डगिरि के अतर्गत देखिये।

उदयगिरि—यह एशिया पर्वतमाला की सबसे पूर्वी चोटी है जो पतमुदाई नहर के किनारे गोपालपुर से तीन मील उत्तर मे जाजपुर तहसील मे स्थित है। यहाँ पर बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की एक द्विभुज प्रतिमा है, जिसपर सातवी या आठवी शताब्दी की लिपि मे एक अभिलेख उत्कीर्ण है (ओ'मैल्ली द्वारा लिखित बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, कटक, 1933)।

उदयगिरि—यह नेल्लोर जिले मे है। यहाँ पर कृष्णा का एक मदिर है (आर्कयालॉजिकल सर्वे ऑव इडिया, एनुअल रिपोर्ट, 1919-20, पृ० 15)।

उदयेंदिरम—यह उत्तरी अर्काट जिले के गुडियातम ताल्लुक मे स्थित है, जहाँ से बाण राजा विक्रमादित्य द्वितीय के अभिपत्र उपलब्ध हुए थे (एपि० इ०, III, 74)।

उदुंबरवती—हरिवश मे वर्णित यह दक्षिण भारत की एक नदी है (CLXV III, 9511)।

उलगाई—यह पाण्ड्यो का एक नगर रहा होगा। तक्कोलम अभिलेख मे उदगाई पाठ मिलता है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 69)।

उपलद—प्रकारातर से इसे उपलबडा कहते है। यह गजम जिले के परल-किमेडी ताल्लुक मे स्थित एक गाँव है, जहाँ से राणक रामदेव के ताम्रपत्रो का एक समूह प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 141)।

उरगपुर—यह कावेरी के दक्षिणी तट पर स्थित था। कुछ विद्वानो ने इसे उरैयूर से समीकृत किया है जो त्रिचिनापल्ली के समीप और कावेरी नदी के दक्षिणी तट पर स्थित है। हुल्ट्श ने इसे नेगपतम से समीकृत किया है जो कावेरी के मुहाने के दक्षिण में लगभग 40 मील दूर स्थित एक तटवर्ती नगर है (एपि० इं०, XXVII, भाग, III, पृ० 116)। रघुवश (VI, श्लोक, 59-60) मे इसका वर्णन है।

उरलाम—यह आंध्र प्रदेश में श्रीकाकुलम (शिकाकोल) में स्थित है (एपि० इं०, XV, पृ० 331)।

ऊर्त्तिविषय—इसे क्योझर (भू० पू० रियासत) में स्थित ऊर्त्ति नामक एक गाँव से समीकृत किया जा सकता है जो वैतरणी नदी के दाहिने किनारे पर स्थित खिचिंग के उत्तर-पश्चिम मे लगभग 12 मील दूर स्थित है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 154)।

उत्कलविषय—स्कन्दपुराण के अनुसार, तीर्थस्थानो से युक्त उत्कल दक्षिणी समुद्र के तट पर स्थित है (अध्याय, VI. 2-3, ब्रह्माण्डपुराण, II, 16. 42; III, 7. 358)। गाहडवाल गोविन्दचन्द्र के बारहवी शती के एक अभिलेख मे उत्कल देश का उल्लेख है जहाँ पर शाक्यरक्षित नामक एक बौद्ध-विद्वान रहता था। नरसिंह प्रथम के भुवनेश्वर शिलालेख मे नरसिह की बहन चन्द्रिका द्वारा उत्कल-विषय मे एकाम्र—आधुनिक भुवनेश्वर—मे एक विष्णुमदिर बनवाये जाने का उल्लेख है। इस अभिलेख से यह स्पष्ट है कि उत्कलविषय मे पुरी और भुवनेश्वर क्षेत्र सम्मिलित थे। नारायणपाल के भागलपुर दानपत्र से ज्ञात होता है कि पाल-वशीय जयपाल के आने पर उत्कलो का कोई राजा (उत्कलनामाधीश) अपनी राजधानी से भाग गया था। गुडवमिश्र के काल मे अकित बादल स्तभ लेख मे राजा देवपाल को गुर्जर एवं द्रविडो के राजाओ के मानमर्दन, हूणो के गर्वदलन के साथ ही उत्कलो की प्रजाति को नष्ट करने का श्रेय दिया गया है। महाशिव-गुप्त ययाति के एक सोनपुर दानपत्र मे उत्कलदेश को कलिग एव कगोद मे भिन्न बतलाया गया है। बृहत्सहिता (XIV, 7) मे इसका वर्णन मिलता है जिससे आधुनिक उडीसा का बोध होता है। स्कन्दपुराण (अध्याय, VI, 27) के अनुसार उत्कल मे ऋषिकुल्या नदी से सुवर्णरेखा और महानदी-नदियो तक के क्षेत्र सम्मिलित थे। उत्कल की पूर्वी सीमा कपिशा नदी तक और पश्चिम मे मेकलो के राज्य तक फैली हुयी प्रतीत होती है (रघुवश, IV, 38)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येट इडिया, पृ० 333 और आगे, एक्प्लोरेशस इन उडीसा, (मे० आर्क० स० इ०, सं० 44)।

उत्पलावती (सुत्पलावती)—इस नदी का वर्णन महाभारत मे मिलता है (भीष्मपर्व, IX, 342)। हरिवश (CLXVIII, 9510-12) मे एक अन्य पाठभेद उत्पल है। यह मलय पर्वत से निकलती है (द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 102)।

उत्तम-गंड-चोडासदेवरम—विसरी विषय मे स्थित इस गाँव का नाम-

करण चोल राजा अन्नदेव के नाम पर हुआ है और यह गंगा तथा पिमसानी नदियो के सगम पर स्थित है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I)।

उत्तम-काकुल—यह उत्तरी काकुल है। यह सदर्भ आध्र प्रदेश मे स्थित शिकाकोल (श्रीकाकुलम) के प्रति प्रतीत होता है जो अपेक्षाकृत अधिक दक्षिण मे स्थित श्रीकाकुलम से भिन्न है (सा० इ० इ०, जिल्द, II, 373)।

उत्तिरलाडम—यह उत्तरी लाट है (सा० इ० इ०, I, पृ० 97-99)।

वेंगवूर—तिरुमलाई पहाड़ी के तल मे स्थित यह एक गाँव है। यह पगलनाडु के एक भाग, मुगाईनाडु से सबधित था (वही, I, पृ० 97)।

वैगाई—यह एक पर्वत है जो तिरुमलाई ही है (सा० इ० इ०, I, पृ० 94-95)। यह एक नदी का भी नाम है जो मधुरा होकर बहती है (तु०, चैतन्यचरितामृत, अध्याय, 9, पृ० 141)। इसे कृतमाला से समीकृत किया गया है (तु०, कूर्म पुराण, XLVII, 35, वराहपुराण, LXXXV आदि)।

वैकण्ट—तिरुनेल्वेलि के पूर्व मे लगभग 22 मील दूर पर ताम्रपर्णी नदी के तट पर स्थित यह एक तीर्थस्थान है। श्रीचैतन्यचरितामृत के अनुसार श्री चैतन्य यहाँ पर आये थे।

वैलूर—यह गाँव उत्तरी अर्काट जिले के वाडीवाश तालुक मे स्थित है। यहाँ से शिला पर उत्कीर्ण एक अभिलेख प्राप्त हुआ था। यह चिगलपुत जिले मे स्थित वायलूर से भिन्न है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 174, कोप्परुंजिगदेव का वैलूर अभिलेख)।

वैतरणी—क्योझर (भू० पू० रियासत) के उत्तर-पश्चिम मे स्थित पहाडियो से निकलकर यह नदी, पहले दक्षिण-पश्चिमाभिमुख और फिर पूरब की ओर बहती हुयी क्रमश क्योझर और मयूरभज और क्योझर तथा कटक की सीमा बनाती है। यह बलीपुर नामक गाँव के निकट कटक जिले मे प्रविष्ट होती है और डेल्टा के पार, जहाँ यह कटक एव बलसोर की सीमा बनाती है, पूर्वाभिमुख होकर चक्करदार बहती हुयी यह नदी ब्राह्मणी मे मिल जाती है और चादबाली से गुजरती हुयी धर्मा नदी के नाम से समुद्र मे मिलती है। वैतरणी के दाहिने तट से फूटने वाली प्रमुख शाखाएँ प्रतिगामी धाराएँ है जो इसे खरसुआ से सबधित करती है। हिन्दू-परपरा के अनुसार दशमुख राक्षस रावण के चगुल से अपनी पत्नी सीता को छुडाने के लिए लका जाते समय राम क्योझर की सीमा पर स्थित इस नदी के तट पर रुके थे। इस घटना की स्मृति मे प्रतिवर्ष जनवरी मे बहुत बडी सख्या मे लोग यहाँ आते है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 15)। महाभारत मे वर्णित यह नदी कलिग मे स्थित है (वनपर्व, अध्याय, 113, तु०, महाभारत 85, 6-7)।

पद्म एवं मत्स्य पुराणो के अनुसार इस पुण्य-सलिला को परशुराम धरती पर ले आये थे। पद्मपुराण (अध्याय, 21) मे एक पवित्र नदी के रूप मे इसका उल्लेख है। इसका वर्णन सयुक्त निकाय (I, 21) मे है जहाँ इसे यम की नदी (यमस्य वेतरणीम) बतलाया गया है। बौद्ध अनुश्रुतियाँ वैतरणी को यम की नदी बतलाने मे ब्राह्मण परपराओं को पुष्ट करती हुयी प्रतीत होती है।

वल्लवाड—इसे वल्यवाद, जिसे वल्वाड भी कहा जाता है, से समीकृत किया जा सकता है। यह वर्तमान राधानगरी है जो कोल्हापुर के दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 27 मील दूर स्थित है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935)।

वल्लाल—इसे समवत उत्तरी अर्काट जिले के गुडियातम तालुक मे स्थित तिरुवल्लम से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941) जो प्राचीन बाण क्षेत्र मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान था।

वल्लिमलाई—आध्रप्रदेश के चित्तूर जिले मे मेलपाडि मे लगभग एक मील पश्चिम मे स्थित एक पहाडी है। यह जैन-उपासना का एक प्राचीन स्थान है (सा० इ० इ०, III, पृ० 22)। यहाँ मे जैन शिलालेख प्राप्त हुये है, जिनमे दो जैन आचार्यों और दो प्रतिमाओ के प्रतिष्ठापको के नाम वर्णित हैं (एपि० इ०, IV 140)।

वल्लूरु—आधुनिक कुडापा जिले मे स्थित यह एक गाँव है (सा० इ० इ०, III, पृ० 106)। यह त्रैलोक्यमल्ल मल्लिदेव महाराज की राजधानी थी।

वंशधरा—यह गजम की एक अनवर्ती नदी है जो इस जिले मे उत्तर से दक्षिण की ओर प्रवाहित होती है और इसमे बाँई ओर एक सहायक नदी मिलती है। यह कलिगपतम मे बगाल की खाडी मे गिरती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 44)।

बनपल्ली—यह गाँव गोदावरी जिले मे अमलपुरम तालुक मे स्थित है (एपि० इ०, III, पृ० 59 और आगे)।

बनवासी देश—बृहत्सहिता मे (XIV, 12) दक्षिणी सभाग मे स्थित इस देश का उल्लेख मिलता है। बनवासी मैसूर के उत्तरी कनारा जिले मे स्थित है (सा० इं०, इ०, I, पृ० 96)। मैसूर राज्य के शिमोगा जिले मे स्थित यह एक गाँव का नाम है (एपि० इ०, XX.)। पहले यह एक शानदार राजवश की राजधानी थी। उत्तरी कनाडा जिले के सिरसी तालुक मे स्थित यह एक विनष्ट गाँव है जहाँ से कदम्ब-नरेश कीर्तिवर्मन के दो अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XVI, 353 और आगे)। यहाँ पर कदम्ब राजकुमारो के प्राचीन आराध्य-

देव मधुकेश्वर का मंदिर है। यह वीरपुरुषदत्त के नागार्जुनिकोण्ड अभिलेख में वर्णित वनवासी के समान है। इस देश मे बौद्धधर्म का प्रचार करने के लिये प्रचारक के रूप मे थेर रक्खित भेजे गये थे।(महावंश, अध्याय, XII, श्लोक,4)। बौद्ध युग और उसके बाद भी उत्तरी कनाडा को वनवासी कहा जाता था। ब्युल्र के अनुसार यह घाटो, तुगभद्रा एव बडौदा के मध्यवर्ती क्षेत्र मे स्थित था। हरिवंश का प्रणेता इस देश से परिचित था (XCV, 5213, 5231-33)। वायुपुराण (XLV. 125) मे वनवासियो को और महाभारत के भीष्मपर्व (IX 366) मे वनवासको का वर्णन है। दशकुमारचरित्रम् (पृ० 192-193) के अनुसार वसन्तभानु ने वनवासी के नरेश भानुवर्मा को अनन्तवर्मा पर आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया था जिसने अपनी सीमा का अतिक्रमण किये जाने के पश्चात् तत्काल अपनी सेना को युद्ध के लिए अग्रसर कर दिया था। उसके नाना सामतो मे अश्मक के राजा ने सबसे पहले उसकी सहायता की थी। अन्य सामतो के एकत्रित हो जाने पर उन्होने नर्मदा के तट पर अपना स्कधावार बनाकर एक लघु अभियान किया था। वनवासी राज्य प्राचीनवैज्यन्तीपुर है जिसे कदम्बो की राजधानी जयन्तीपुर भी कहा जाता था और जो सोरले तालुक के पश्चिमी सीमात पर वरदा नदी के तट पर स्थित, अभिलेखो मे वर्णित वैजयन्ती थी (राइस, मैसूर ऐड कुर्ग, I, पृ० 289 और 295)। इसे पेरिप्लस के बुसोन्टिओन (Busantion) के समान माना जाता है। टालेमी ने इसे बनाउआसंई (Banouasei) कहा है। मत मार्टिन के अनुसार यहाँ युवान-च्वाङ् आया था जिसे उसने को-कि-ना-पु-लो : कोकणपुर कहा है (मैक्रिडिल, ऐंश्येट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टालेमी, एस० एन० मजुमदार सस्करण, पृ० 179)।

वञ्जि—प्राचीन तमिल ग्रथो मे इसे करूर भी कहा जाता है। कावेरी या पोन्नी नदी के उत्तरी तट पर स्थित यह एक नगर है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 444)। कुछ लोगो के मतानुसार मूलत. यह केरलो या चेरो की राजधानी थी जिसे अब कोचिन के निकट पेरियार नदी के तट पर तिरु-करूर कहा जाता है (कै० हि० इ०, I, पृ० 595)।

वरदा—अपना पौराणिक नाम धारण किये रहने वाली यह नदी अनतपुर के उत्तर मे पश्चिमी घाट से निकलती है और करजगी के पूर्व मे तुगभद्रा मे मिलती है। वेदवती नाम से भी विश्रुत वरदा नदी कृष्णा की एक दक्षिणी सहायक नदी है। मार्कण्डेयपुराण मे वर्णित वाह्या नदी अग्निपुराण की वरदा ही है (लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 46, 50)।

वरगुणमंगलम्—इसे राजसिग कुलक्की भी कहा जाता है। इसे शिवगंगा

(मू० पू० जमीदारी) में स्थित राजसिंगमगलम से समीकृत किया जा सकता है (सा० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 450)। पाण्ड्यदेश मे स्थित 18 वैष्णव तीर्थ स्थलो मे से यह एक है। यह तिरुनेलवेलि के पूर्वोत्तर मे 18 मील दूर स्थित है (एपि० इं०, XXI, भाग, III)।

वराहवर्त्तनी—सभवतः यह शिकाकोल के निकट है। हस्तिवर्मन के नरसिंहपुर अभिपत्रो में इसका उल्लेख है (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 65)। वराहवर्त्तनी विषय मे स्थित रोहणकी गॉव को वर्तमान रोनाकी से समीकृत किया जा सकता है जो शिकाकोल तालुक के सिंहपुर मे स्थित एक गॉव है। वराहवर्त्तनी विषय स्थूल रूप से शिकाकोल एव तेक्कलि के बीच के तटीय क्षेत्र का वाचक है (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 65)।

वत्सगुल्म—वाकाटक विन्ध्यशक्ति द्वितीय के बासिम-अभिपत्रो मे इस स्थान का उल्लेख है, जो सभवतः विन्ध्यशक्ति की राजधानी थी (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941)। राजशेखर ने अपनी कर्पूरमञ्जरी (पृ० 27) मे वच्छोमी का उल्लेख किया है जो सस्कृत वात्सगुल्मी का वाचक है। वच्छोमी नाम इसकी राजधानीवच्छोम (वत्सगुल्म) के नाम से व्युत्पन्न है ओर वैदर्भी के समान है। राजशेखर ने बतलाया है कि वच्छोम दक्षिणापथ मे स्थित था। राजशेखर के समय मे यह विद्या का एक केंद्र था। इसे महाराष्ट्र मे अकोला जिले के बासिम तालुक के मुख्यावास बासिम से समीकृत किया गया है (नाम की उत्पत्ति के लिए द्रष्टव्य, अकोला डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पृ० 325 और आगे)।

वाघौर—यह दक्षिण से पश्चिम मे चार मील विस्तृत वाघुर है (एपि० इ०, XXV, भाग, V, पृ० 208)।

वातापि—यह एक गाँव का नाम है (सा० इ० इ०, I, पृ० 144, 152)। वातापि का युद्ध 642 ई० मे हुआ था। सिरुत्तोण्ड युद्ध मे विद्यमान था।

वेहका—यह वेगवती नदी का तमिल नाम है जो काजीवरम् से बहती है और विल्लीवलम् के निकट पालारु नदी मे मिलती है (वही, III, 186)।

वेलनाण्डु—सकरबु-अभिलेख मे इसका उल्लेख है (एनुअल रिपोर्ट ऑव साउथ इडियन एपिग्राफी, 1917, पृ० 116, एपि० इ०, XXI V, भाग, VI, पृ० 273)। वेलनाण्डुविषय गुटुर जिले मे आधुनिक रेपल्ले तालुक का वाचक है (इ० ऐं०, XII, 91)। वेलनाण्डु के कुछ उत्तरकालीन प्रमुखो ने मध्यदेश मे स्थित कीर्त्तिपुर को अपना आदिस्थान माना है।

वेलपाबि—उत्तरी अर्काट जिले मे यह वेल्लोर का उपकण्ठ है (सा० इं० इ०, I, पृ० 76, एपि० इ०, IV, पृ० 81)।

वेल्लूर—बृहत्संहिता में वर्णित यह दक्षिण का एक नगर है (XIV. 14)। महाराष्ट्र में (भूतपूर्व निजाम हैदराबाद में) अपने गुहा मंदिरो के लिए सुविख्यात यह वेरुल, येरुला, एलूरा या एलौरा ही है।

वेलुकण्टक—यह जगल दक्षिणापथ मे था (अगु०, IV, 64)।

वेलुंगगुण्ट—चित्तूर जिले मे स्थित यह आधुनिक वेलिगल्लु है (एपि० इं०, XXIV, भाग, IV, पृ० 191)।

वेलुर—गग अनतवर्मन् के स्वल्प-वेलुर-दानपत्र के अनुसार इस नाम के दो गाँव है, एक छोटा और दूसरा विशाल (एपि० इ०, XXIV, भाग, III, जुलाई, 1937, पृ० 133)।

वेणा—बृहत्सहिता (XIV. 12) मे वर्णित यह दक्षिण की एक नदी है।

वेणाद—इसमे वर्तमान् त्रावणकोर समिलित माना जाता है जिसकी राजधानी कोल्लम् (क्विलोन) थी। बहुधा इसमे वे क्षेत्र समिलित है जो वञ्चि राजवश की सभी शाखाओ द्वारा प्रशासित थे (एपि० इ०, XXVII, भाग, VII, जुलाई, 1948, पृ० 305, पा० टि०)।

वेंगइ-नाडु—यह सुविख्यात देश वेगी है (सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 63)। यह पूर्वी चालुक्यो का एक देश है। कुलोत्तुगदेव या राजनारायण पहले वेंगी के सिंहासन पर आरुढ हुये। तदनतर केरल, पाण्ड्य, कुतल और अन्य देशो पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् चोल-राज्यसिहासन पर उनका अभिषेक हुआ था (वही, जिल्द, I, पृ० 51)।

वेंगी—(वेंगीपुर) इसे पेद्द-वेगी से समीकृत किया जाता है, जो गोदावरी जिले मे एल्लोर के समीप एक गाँव है (एपि० इ०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939, पृ० 45; एपि० इ०, IX, पृ० 58)। यह गोदावरी एव कृष्णा के बीच में स्थित है। सोमेश्वरदेव के कुरुम्पल शिलालेख के अनुसार वीर चोल अपने पिता द्वारा नियुक्त इस प्रदेश का उप-राजा था। वीर-राजेन्द्रदेव (शक० 991) के चरला-अभिपत्र मे वेंगी देश का उल्लेख है, जिसपर राजा वल्लभ-वल्लभ ने पुर्नविजय प्राप्त की थी (एपि० इ०, XXV, भाग, VI, अप्रैल, 1940)। नन्दिवर्मन द्वितीय के पेद्दवेगी अभिपत्रो के अनुसार वेगी-नरेश हस्तिवर्मन् को शालङ्कायन वंश का माना जाता है। कुलोत्तुग प्रथम के 1087 ई० मे अकित टेकी-अभिपत्रों से प्रकट होता है कि उसका पुत्र वीर चोड वेगी का राज्यपाल था। कुलोत्तुग के पुत्रों ने बारी-बारी से उपराजाओं के रूप मे वेगी पर शासन किया था। वेंगी की सीमा उत्तर मे महेन्द्र पर्वत और दक्षिण में नेल्लोर जिले मे मन्नेरु थी (एपि० इं०, VI, 346; एस० के० आयंगर कृत, ऐंश्येट इंडिया, पृ० 145 भी द्रष्टव्य।

वेंकटगिरि—उत्तरी अर्काट जिले मे तिरुपति के निकट यह तिरुमलाई पर्वत है जो मद्रास के पश्चिमोत्तर में लगभग 72 मील दूर पर स्थित है जहाँ प्रसिद्ध वैष्णव सुधारक रामानुज ने बारहवी शती ई० मे विष्णु की पूजा की थी (लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 21)। स्कन्दपुराण के अनुसार इसे वेकटाचल कहा जाता है (अध्याय, I, श्लोक, 36-48) जो सात योजन विस्तृत एव एक योजन ऊँचा है।

वेप्पम्दु—उत्तरी अर्काट जिले मे यह अगारपर्ण के एक भाग आन्दिनाडु से सबधित था (सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 80-82, 131)।

विजयनगर—कर्णाटदेश के मध्य मे स्थित विजयनगर बीजानगर ही है। अपने वैभव-काल मे इस राज्य मे कृष्णा नदी के उत्तर मे स्थित जिले, पश्चिमी तट पर मलाबार क्षेत्र, त्रावणकोर एव कोचिन को छोडकर सपूर्ण मद्रास राज्य, मैसूर, एव उसके धारवाड तथा उत्तरी कनाडा जिले समिलित थे। इसके सुदर राजप्रासाद पर्वतो की भाँति ऊँचे थे (सा० इ० इ०, जिल्द, I, पृ० 69-70, 161, 164)। गाँवो के अतिरिक्त यहाँ पर अनेक जन-सकुल और समृद्धिशाली नगर थे। अनेक नगर प्राचीन थे और केवल कतिपय ही विजयनगर के काल मे बसे थे। साम्राज्य की विशाल जनसख्या को विभिन्न वर्गों मे विभक्त किया जा सकता है। मोटे रूप मे उन्हें दो वर्गों मे रखा जा सकता है उपभोक्ता एव उत्पादक। कुछ विशेष वर्ग के लोग तत्कालीन सामाजिक क्रियाओ यथा खेल एव मनोरजन मे अधिक भाग लेते थे और वे राज्य तथा जनता दोनो के द्वारा ही सरक्षित थे। गाँव की एक सभा होती थी। वहाँ पर व्यावसायिक समुदाय एव श्रेणियाँ थी। यह विजय-नगर के राजाओ की राजधानी थी जो अपने मदिरो एव प्रासादो आदि के लिए प्रसिद्ध थी और जो 1565 ई० मे मुसलमानो द्वारा अशत नष्ट कर दी गई थी। मैसूर मे विजयनगर के अभिलेखो की लगभग उतनी ही सख्या है जितनी कि होयसलो के अभिलेखो की। विजयनगर के प्रसिद्ध कृष्ण-मदिर के कुछ अभिलेखो से यह ज्ञात होता है कि जब 1514 ई० मे विजयनगर राजाओ मे सर्वश्रेष्ठ कृष्ण-देवराय ने उडीसा के गजपति राजा प्रतापरुद्र से उदयगिरि का किला छीन लिया था, तब वह वहाँ से अपने साथ बालकृष्ण की एक प्रतिमा ले आया था, जिसको उसने अपनी ही राजधानी मे एक कृष्ण-मदिर मे अधिष्ठित किया था (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1916-17, भाग, I, पृ०, 14, आर्क ०स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1908-09, भाग, II मे प्रकाशित कृष्ण शास्त्री का लेख, द सेकड विजयनगर डाइनेस्टी', मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा 1951 मे प्रकाशित, टी० वी० महालिंगम की पुस्तक, 'इकॉनॉमिक लाइफ इन द विजयनगर एपायर)। प्राचीन पम्पा, जिसे अब हांपी कहते हैं, विजयनगर का नाम था।

विजयवाटि—कृष्णा नदी के तट पर स्थित यह आधुनिक बेजवाडा है (एपि० इ०, XXXII, भाग, V, 163)।

विक्रमपुर—त्रिची जिले के मुसुरि तालुक मे कण्णनूर का यह प्राचीन नाम है (एपि० इ०, III, पृ० 8-9)।

विलवट्टि—सभवत. यह वव्वेरु गाँव है। कुछ विद्वानो के अनुसार यहाँ से लगभग 12 मील दूर पूर्व मे स्थित यह विडवलूरु गाँव हो सकता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, VII, पृ० 301)।

विलिन्नम्—यह त्रावणकोर मे स्थित एक बदरगाह है(सा० इ० इ०, III, पृ० 450)।

विन्नकोट—इसे किस्ना जिले मे गुडिवाड तालुक मे स्थित आधुनिक विन्नकोट से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, III, पृ० 140)।

विषमगिरि—यह गाँव गजम जिले के अस्क तालुक मे स्थित है (एपि० इ०, XIX, पृ० 134) इन्द्रवर्मनदेव का विषमगिरि अभिपत्र)।

विसरि-नाण्डु—तेरहवी शताब्दी ई० के मध्य अकित एक अभिलेख मे इसका वर्णन, अन्नदेव के एक पूर्वज, एरुव-भीम द्वारा विजित प्रदेशो के अतर्गत किया गया है (एपि० इ०, XXVI, भाग I, पृ० 40, मद्रास एपिग्रेफिकल कलेक्शन, 1935-36 की सख्या 308, भारती, XV, पृ० 158)।

व्याघ्राग्रहार—यह पुलियूर (व्याघ्रगाँव) का सस्कृत समानार्थक है जो चिदाबरम का एक नाम है (सा० इ० इ०, भाग, I, 112 और आगे, पा० टि०)।

व्यास-सरोवर—जाजपुर रोड स्टेशन से दो मील दूर स्थित यह एक तालाब है जो अब पट गया है (ओ 'मेल्ली द्वारा लिखित, बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, कटक, 1933)।

यौगध—यह गजम से 18 मील दूर पश्चिमोत्तर मे स्थित है। यहाँ पर अशोक का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है (का० इ० इ०, जिल्द, I, आर्क० स० रि०, जिल्द, XIII)।

ययातिनगर—यह उड़ीसा मे कटक का प्राचीन नाम है (एपि० इ०, III, 323 और आगे)। कुछ लोगो ने इसे उडीसा मे जाजपुर से समीकृत किया है किन्तु यह मत ग्राह्य नही प्रतीत होता क्योकि ययातिनगर महानदी तथा जाजपुर वैतरणी नदी के तट पर स्थित था। अपिच्, अभिलेख मे निहित राजशास कटक से प्रचलित की गयी थी जो स्पष्टतः आधुनिक कटक नगर ही था (एपि० इ०, III, पृ० 341)।

येडातोर (इडंलितुरैनाडु)—यह मैसूर जिले मे स्थित एक छोटा सा गाँव है। फ्लीट ने इसे एडेडोर के परगने से समीकृत किया है (सा० इ० इं०, जिल्द, III, पृ० 465)।

येवुर—यह मैसूर राज्य (भूतपूर्व निज़ाम हैदराबाद के राज्य मे) के गुलबर्ग जिले के सोरपुर तालुक मे स्थित एक गाँव है जहाँ से जयसिंह द्वितीय और विक्रमादित्य षष्ठम के समय के अभिलेख प्राप्त हुये थे (एपि० इ०, XII पृ० 268 और आगे)।

●●

III

पूर्वी भारत

●

अग्रद्वीप—यह नदिया जिले मे भागीरथी मे स्थित एक द्वीप है (इपीरियल गजेटियर्स ऑव इडिया, ले० डब्ल्यू० डब्ल्यू० हटर, जिल्द, I, पृ० 59)।

अहियारी—यह गॉव दरभगा के पश्चिमोत्तर मे लगभग 15 मील दूर कमतौल के थोडा दक्षिण-पूर्व मे स्थित है। परपरा के अनुसार यहाँ पर गौतम ऋषि का मदिर था जिनकी पत्नी अहल्या अपने रूप-सौदर्य के लिए विख्यात् थी (ओ' मैल्ली द्वारा लिखित, बगाल डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर्स, दरभगा, पृ० 141)।

ऐरावाट्टमण्डल—यह पटोदाविषय मे समिलित था। इसे कटक जिले के बनकी थाना के अतर्गत् रटागढ़ से समीकृत किया गया है (एपि० इ०, XXVI, भाग, 2, पृ० 78, ज० बि० उ० रि० सो०, XVII, 4)।

अजय—यह नदी बर्दवान जिले के कटवा मे भागीरथी मे मिलती है और बर्दवान तथा बीरभूम जिलो की प्राकृतिक सीमा निर्मित करती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 27)। इसे अजमती भी कहा जाता है। एरिअन की इडिका के अनुसार यह काटद्वीप से प्रवाहित होने वाली अम्यस्टीज नदी है (ऐंश्येट इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज़ ऐड एरिअन, पृ० 191)। बगाली महाकवि जयदेव केंदुलि (केण्दुविल्व) के समीप इस नदी के तट पर पैदा हुये थे।

अल्लकप्प—अल्लकप्प वेठदीप से अधिक दूर नही था। इसे शाहाबाद जिले मे मसर से वैशाली जाने वाले रास्ते पर स्थित बतलाया जाता है। यह दस लीग विस्तृत था और यहाँ का राजा घनिष्ट रूप से वेठदीप के राजा वेठदीपक से सबधित था (धम्मपद कमेंटरी, अग्रेजी अनुवाद, हार्वर्ड ओरियटल सीरीज़, स० 28, पृ० 247)। गणतत्रात्मकजन बुलि अल्पकप्प के निवासी थे। उन्होंने बुद्ध के अवशेषों का एक भाग प्राप्त किया था और उनके ऊपर एक स्तूप का निर्माण कराया था (दीघ निकाय, II, पृ० 167)। कुछ लोगो के अनुसार बुलि जन गंगा के दोनों तटो पर आधुनिक मुजफ्फरपुर एव शाहाबाद जिलों मे रहते थे (एल० पीटेख, नर्दर्न इडिया एकार्डिग टु शुई-चिग-चु, पृ० 52)।

अंबलट्ठिका—दीघ निकाय (I, 1) में वर्णित राजगृह और उसके निकट

स्थित यह एक बौद्ध स्थल है। अवलट्ठिका मे स्थित राजागारक राजा बिम्बिसार का उद्यान-गृह था (सुमगलविलासिनी I, 41)। बुद्धघोष के अनुसार राजोद्यान का यह एक उचित नाम था क्योकि उसके द्वार पर एक नया आम्र-कुज था (सुमगल-विलासिनी I, पृ० 41)। यह राजोद्यान-गृह राजगृह एव नालदा के बीचोबीच था (विनय, II, पृ० 287)। बुद्ध-काल मे राजगृह से नालदा तथा और आगे पूर्व एव उत्तर-पूर्व मे जाने वाले राजपथ पर यह प्रथम विश्राम-स्थल था (दीघ निकाय, I, 1, वही, II, 72 और आगे)।

अम्बपालिवन--यह आम्र-निकुज वैशाली मे स्थित था जहाँ कुछ समय के लिए महात्मा बुद्ध रुके थे। यह नगरवधू अम्बपाली द्वारा प्रदत्त उपहार था (दीघ निकाय, II, 94)।

अम्बसण्डा (आम्रखण्ड)--वेदियक पर्वत ओर हन्दसालगुहा के उत्तर मे राजगृह के पूर्व मे स्थित यह एक ब्राह्मण गाँव था (दीघ निकाय, II, 263)। इसका नामकरण समीपस्थ आम्रवनो के कारण था (सुमगलविलासिनी, III, 697)।

अम्बवन--यह आम के वृक्षों का एक झुरमुट था (सुमगलविलासिनी, II, 399)। यह राज-वैद्य जीवक का राजगृह मे स्थित आम का बाग था। यहाँ पर बुद्ध कुछ समय तक थे रहे (दीघ, I, 47, 49)। मगध-नरेश अजातशत्रु बुद्ध का दर्शन करने यहाँ आया था।

अंधकविंद--यह मगध मे था जहाँ पर बुद्ध एक बार रुके थे। ब्रह्मा सहमपति यहीं पर तथागत से मिले थे और उनकी उपस्थिति मे उन्होने कुछ गाथाएँ कही थी (सयुत्त निकाय, I, 154)। एक कच्ची सडक द्वारा यह राजगृह मे मिला हुआ था (विनय-महावग्ग, I, 109)।

अंधपुर--सेरि राज्य के निवासियो ने, जो बर्तनों एव भाडो के व्यापारी थे, तेलवाह नदी को पार करके इस नगर मे प्रवेश किया था।

अङ्ग--अङ्ग प्राचीन भारत के षोडश्-महाजनपदो मे से एक था और बहुत सपन्न एव समृद्धिशाली था (अगु०, I, 213, बि० च० लाहा, इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन अर्ली टेक्स्टस ऑव बुद्धज्म ऐंड जैनिज्म, पृ० 19, तु० महाभारत, 822, 46, महावस्तु, II, 2, विनय टेक्स्टस, सै० बु० ई०, II, 146, टिप्पणी)। इसका वर्णन योगिनीतत्र में हुआ है (2, 2, 119)। अथर्ववेद मे अङ्गो को मगधो, मुजावंतो और गन्धारो के साथ एकवि शिष्ट जन बतलाया गया है, यद्यपि उनके प्रदेश का निर्देश कही पर नही किया गया है (V. 22 14)। उन्हे व्रात्य या कट्टर ब्राह्मण धर्म के प्रभाव के बाहर रहने वाला जन कहकर तिरस्कृत समझा जाता

था (ज०रा० ए० सो०, 1913, 155 और आगे, ज० ए० सो० बं०, 1914, 317 और आगे)। गोपथ-ब्राह्मण मे उन्हे अङ्ग, मगध कहा गया है (11. 9)। पाणिनि ने अङ्ग, वङ्ग, कलिग, पुण्ड्र आदि को एक वर्ग मे रखा है (VI.I. 170; II 4 62) जो सभी मध्यदेश मे थे। महाभारत मे अङ्ग, वङ्ग, कलिग आदि को बालि की पत्नी सुदेष्णा से ऋषि दीर्घतमस् द्वारा उत्पन्न वशज बतलाया गया है (I. 104)। त्सिमर एव ब्लूमफील्ड के अनुसार अङ्ग जन बाद मे गगा और सोन के तट पर रहते थे और अनुमानत इनका प्राचीन आवास भी वही था (अल्टिडिशेज लेबेन, 35, हिम्स ऑव द अथर्ववेद, 446, 449)। पार्जिटर ने उन्हे अनार्य बतलाया है, जो समुद्र-पार से पूर्वी-भारत मे आये थे (ज० रा० ए० सो०, 1908, पृ० 852)। प्रजात्या ये लोग कलिगो एव बगाल के मैदान के अन्य जनो से सबधित थे (कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, I, पृ० 534)। भोजवर्मन के बेलाव-ताम्रपत्र के अनुसार वर्मन् नरेशो ने अपनी सत्ता इस देश तक स्थापित कर ली थी (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिपशस ऑव बगाल, जिल्द, III, पृ० 15 और आगे)। कर्ण के रेवल शिलालेख मे अगो का वर्णन काँगडा घाटी के कीरो, लाट, कुतल एव कुलाञ्च के साथ हुआ है। अग मे आधुनिक भागलपुर के निकटवर्ती भूभाग समिलित थे (एपि० इ०, XXIV, भाग, 3, जुलाई, 1937)। कन्नौज की रानी कुमारदेवी के सारनाथ अभिलेख के अनुसार अङ्ग राजा रामपाल के अधीन मोहन नामक उपराजा द्वारा प्रशासित था जो कुमारदेवी का नाना था (एपि० इ०, IX, पृ० 311)। अमोघवर्ष के नवी शती ई० मे उत्कीर्ण नीलगुड शिलालेख मे कहा गया है कि अङ्ग, वङ्ग और मगध के राजा उसकी पूजा करते थे (एपि० इ०, VI, 103)। कृष्ण तृतीय के दिउली दानपत्र मे बतलाया गया है कि अग, मगध और अन्य जन कृष्ण द्वितीय की अभ्यर्थना करते थे (एपि० इ०, V, 193)।

अङ्ग जन का नामकरण उनके एक राजा अङ्ग के नाम पर हुआ था।[1] रामायण के अनुसार अङ्ग नाम पड़ने का यह कारण है कि कामदेव मदन रुद्र के कोप से अपनी रक्षा करने के लिए भाग कर इस देश मे आये थे और यहाँ पर अपना शरीर त्याग कर अनग हो गये थे। यह इसके नाम का एक रोचक भाषाशास्त्रीय विवेचन है।[2] आनव राज्य जिसकी धुरी अंग थी, पाँच राज्यो मे विभक्त था, जिनका

---

[1] ऐतरेय ब्राह्मण (VIII. 22) में अङ्ग वैरोचन का नाम अभिषिक्त राजाओं की सूची में संमिलित है।

[2] रामायण, 47, 14.

नामाभिधान राजा बलि के पाँच पुत्रों के आधार पर हुआ बतलाया जाता है। पार्जिटर का विचार है कि आनवों के अधिकार में सपूर्ण पूर्वी बिहार, बगाल खास और उड़ीसा थे, जिसमे अङ्ग, वङ्ग, पुण्ड्र, सुह्म और कलिंग के राज्य समिलित थे।[1] पार्जिटर के कथन की पुष्टि किसी अन्य विश्वसनीय साक्ष्य द्वारा नही होती। अङ्ग के राजकुमार बहुत सुन्दर थे और उनके निवास-स्थान को अंग कहा जाता था।[2] अगों के अधिकार मे समवत. मुगेर-सहित आधुनिक भागलपुर जिले के क्षेत्र समिलित थे।[3]

पहले अङ्गो की राजधानी को मालिनी कहते थे; बाद मे लोमपाद के प्रपौत्र[4] चपा नामक राजा के सम्मान मे इसका नाम बदलकर चपा या चपावती[5] कर दिया गया था। चपा नगरी का निर्माण महागोविन्द ने करवाया था।[6] यही पर बुद्ध ने विवश होकर भिक्षुओं को चप्पल या खडाऊँ के प्रयोग की आज्ञा दी थी।[7] बुद्ध के काल मे चपा कोई गाँव नही था, वरन् एक बडा नगर था।[8] किसी समय यहाँ पर इक्ष्वाकु-वशीय अशोक के पुत्र महिंद और उसके पुत्रो एव पौत्रो का राज्य था।[9] उवासगदसाओ नामक एक जैन ग्रथ मे[10] कहा गया है कि महावीर के एक शिष्य सुधर्मन् के काल मे चपा मे पुण्णभद्द चैत्य नामक एक देवस्थान था। बुद्ध एव महावीर के आगमन से इस नगर की श्रीवृद्धि हुयी थी। महावीर ने यहाँ पर तीन बार चातुर्मास्य व्यतीत किया था।[11] यह जैनो के बारहवे तीर्थकर वासुपूज्य

---

[1] ऐंश्येंट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन, पृ० 293.

[2] सुमंगलविलासिनी, भाग, I, पृ० 279.

[3] बि० च० लाहा, इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई अर्ली टेक्स्टस ऑव जैनिज्म ऐंड बुद्धिज्म, पृ० 50.

[4] महाभारत, XII, 5,134; XIII,42 2359; वायु पुराण, 19,1056; मत्स्य, 48, 97; ब्रह्माण्ड०, 13, 43; विष्णु०, IV, 18, 4.

[5] हरिवंश, XXXI, 1966-1700; महाभारत, शांतिपर्व, 34, 35.

[6] दीघ, II, पृ० 235.

[7] विनयपिटक, I, पृ० 179 और आगे।

[8] दीघ, II, पृ० 146.

[9] दीपवंस, पृ० 28; वंसत्थपकासिनी, (पा० टे० सो०), पृ० 128-129.

[10] हर्नले संस्करण, पृ० 2 टिप्पणियाँ।

[11] एस० स्टीवेंसन, हार्ट ऑव जैनिज्म, पृ० 41.

का जन्म एव मृत्यु-स्थान था।[1] इसे चदना और उसके पिता का मुख्यावास बतलाया गया है।[2] यह जैन मत का एक महान् केंद्र था। यहाँ प्रभव एव स्वयमव आये थे। स्वयंमव ने यही पर दशवैकालिक-सूत्र की रचना की थी।[3] चपापुरी के एक ब्राह्मण ने पाटलिपुत्र-नरेश बिन्दुसार को सुमद्रागो नामक एक लड़की दिया था।[4]

महाभारत[5] में चपापुरी या चंपानगर या चपामालिनी को एक तीर्थ-स्थान बतलाया गया है। युवान-च्वाङ ने इस पुर को चेन-पो (Chan'-po) कहा है। यह जैनियो का एक तीर्थस्थान है। चपा नगरी आधुनिक भागलपुर से थोडी ही दूरी पर स्थित है। चपा नदी अग और मगध के मध्य की सीमा थी।[6] महाभारत-काल मे भी यह चपक वृक्षो के बागो से परिवृत[7] था। बुद्धघोष नामक एक बौद्ध भाष्यकार ने पॉच प्रकार के चपक पुष्पो से युक्त गग्गरा नामक तालाब के पास एक उपवन का उल्लेख किया है।[8] जैन-ग्रथ चपकश्रेष्ठिकथा मे चपा को अति समृद्धिशाली दशा मे बतलाया गया है। वहाँ पर गधी, मसाला और मिश्री के विक्रेता, जौहरी, चर्मकार, मालाकार, बढई, स्वर्णकार और बुनकर आदि थे।[9] बिम्बिसार के पिता भट्टिय के समय से ही यह मगध के उपराजा का केंद्र था। चपा के निकट चपा की रानी गग्गरा द्वारा निर्मित गग्गरापोखरणी नामक एक सरोवर था जो परिव्राजक मुनियो और सन्यासियो के विश्राम-स्थल के रूप मे प्रसिद्ध था। यह दार्शनिक परिसवादो की ध्वनि मे गुजित रहता था (समयपवादका)। दशकुमार-चरितम् मे बतलाया गया है कि चपा मे दुष्टो का बाहुल्य था।[10] चपा पर चन्द्रवर्मन ने अधिकार कर लिया था, जहाँ का राजा सिहवर्मन सिह की भाँति दुर्दांत था,

---

[1] सी० जे० शाह, जैनिज्म इन नार्थ इंडिया, पृ० 26, पा० टि० 5.

[2] इंडियन कल्चर, जिल्द, III.

[3] हेमचन्द्र कृत परिशिष्टपर्वन्, अध्याय, IV व V.

[4] रा० ला० मित्र, नेपालीज बुद्धिस्ट लिटरेचर, पृ० 8.

[5] वनपर्व, अध्याय, 85.

[6] जातक, IV, 454.

[7] अनुशासनपर्व, अध्याय, 42.

[8] सुमंगलविलासिनी, I, 279-80.

[9] शाह, जैनिज्म इन नार्थ इंडिया, पृ० 95.

[10] (मदनमोहन तर्कालंकार संस्करण) अध्याय, I, पृ० 3, 6; अध्याय, II, पृ० 7, 11, 12.

(दशकुमारचरितम्, पृ० 52)। अङ्ग देश मे, राजधानी चपा नगरी के बाहर, गंगा नदी के तट पर मरीचि नामक एक महर्षि रहते थे (वही, पृ० 59)। इस नगर मे निधिपालित नामक एक धनी व्यापारी रहता था, जिसके नकद धन और सुरूप को लेकर वसुपालित से झगडा था (वही, पृ० 67)।

पाँचवी शती ई० मे भारत-भ्रमण करने वाले एक चीनी यात्री फाह्यान ने गगा के प्रवाह का अनुसरण करते हुये पूर्व की ओर 18 योजन आगे जाकर, इस नदी के दक्षिणी तट पर चपा राज्य को देखा था। यहाँ पर उसने कुछ स्तूप देखे थे।[1]

युवान-च्वाङ जो सातवीं शती ई० मे भारत आया था, गगा के दक्षिण की ओर स्थित चपा गया था, जिसकी परिधि 4,000 ली से भी अधिक थी। उसने अधिकाशतया नष्टप्राय विहार देखे थे। चपा नगरी में 200 से अधिक हीनयान भिक्षु थे, जहाँ बुद्ध गये थे।

अङ्ग मे ईरणपर्वत समिलित था, जहाँ से चपा के अलावा युद्ध-गज प्राप्त होते थे।[2] रामायण के अनुसार सीता की खोज के लिए सुग्रीव ने अपने अनुगामी वानरो को पूरब मे स्थित देशो मे भेजा था, जिसमे अग भी एक था।[3]

अङ्ग मे 80,000 गाँव थे, जो एक अतिरजित परपरानुगत सख्या है।[4] अङ्ग ऋग्वेद के सुविख्यात ऋषि (औरव) का देश था।[5] ललितविस्तर[6] के अनुसार अङ्ग की एक विशिष्ट स्थानीय लिपि थी। कपिल नामक एक ब्राह्मण-तरुण ने अग-नरेश द्वारा अधिकृत सपत्ति का उल्लेख किया है।[7]

प्राचीन अङ्ग मे ऋष्यश्रृग ऋषि का तपोवन, कर्णगढ या कर्ण का दुर्ग, जह्नु-आश्रम और मोदागिरि या मुगेर समिलित थे। महाभारत मे अङ्ग और वग को एक ही विषय या राज्य बतलाया गया है (44.9)। बुद्ध के काल मे अङ्ग राज्य कुछ सुविख्यात-विधर्मी शिक्षको का कार्यक्षेत्र था।[8]

---

[1] लेग्गे, द ट्रावेल्स ऑव फा-ह्यान, 100.

[2] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 181-182.

[3] रामायण, 652, 22-23.

[4] विनयपिटक, I, पृ० 179.

[5] X. 138; पार्जिटर, एं० इं० हि० ट्रै०, पृ० 132.

[6] ललितविस्तर, 125-26.

[7] रॉकहिल, लाइफ ऑव द बुद्ध, पृ० 129.

[8] मज्झिम निकाय, II, पृ० 2.

अङ्ग-राज्य मे आपन[1] और भड्डियनगर जिसमे सुमनादेवी की पुत्री विशाखा रहती थी, जैसे अनेक नगर थे।[2] भड्डिय मे आपन का मार्ग अगुत्तराप होकर के था जो स्पष्टत एक निचला क्षेत्र था।[3] अङ्गो का अस्सपुर नामक एक अन्य नगर था जहाँ पर बुद्ध गये थे।[4]

बुद्ध के काल मे अग-मगध मे कई महाशालाएँ या स्नातक-सस्थाएँ थी, जो राजा पसेनदि और बिम्बिसार द्वारा प्रदत्त राजकीय भूमिदानो के माध्यम से चलायी जाती थी। महागोविन्द सुत्तात के अनुसार महागोविन्द ने इस प्रकार के सात विद्यालयो की स्थापना अपने काल के सात प्रमुख राज्यो मे की थी जिनमे उसकी राजधानी चपा महित अङ्ग भी समिल्लित था। ये सभी धर्मशास्त्रीय विद्यालय थे, जिनमे केवल ब्राह्मण तरुणो (माणवका) को प्रवेश मिलता था। इनमे से प्रत्येक मे विद्यार्थियो की सख्या तीन सौ से कम नही थी। कुलपति की व्यापक प्रसिद्धि के कारण यहाँ पर विविध स्थानो एव विविध दिशाओ मे छात्र आकर्षित होकर आते थे।[5]

अङ्ग जनो मे स्त्री-बच्चो के विक्रय एव रोगग्रस्तो के परित्याग की प्रथा थी।[6] चपा एव राजगृह के बीच जनता से कर वसूल करने के लिए एक शुल्कगृह था।[7]

दशरथ के अश्वमेध मे अङ्ग देश का नरेश आमत्रित था।[8] बिभाण्डक के पुत्र ऋषि ऋष्यशृग रोमपाद के निमत्रण पर अङ्ग आये थे जो उस समय अङ्ग देश का शक्तिशाली राजा था। राजा रोमपाद ने उनका हार्दिक स्वागत किया और उन्होने उनसे अपनी पुत्री शान्ता का विवाह कर दिया, क्योकि उक्त ऋषि ने उनके राज्य मे पडे हुये सूखे को समाप्त करने मे सफलता प्राप्त की थी।[9] अङ्ग-नरेश रोमपाद

---

[1] **संयुक्तनिकाय, V, पृ० 225-226.**

[2] **धम्मपद-कमेंट्री, I, 384 और आगे।**

[3] **विनय, I. 243 और आगे; धम्मपद-अट्ठकथा, III, 363.**

[4] **मज्झिम निकाय, I, 281 और आगे।**

[5] **नानादिसा नानाजनपदा माणवका आगच्छन्ति-दीघं, I, 114.**

[6] **महाभारत, VIII. 45, 14-16; 28, 34.**

[7] **दिव्यावदान, पृ० 275.**

[8] **रामायण, 27, 25.**

[9] **वही, नवाँ एवं दसवाँ सर्ग, पृ० 20-22; तु०, पार्जिटर, मार्कण्डेय पुराण, पृ० 464 तथा टिप्पणियाँ।**

के निवेदन पर अपनी पत्नी शान्ता के साथ ऋष्यश्रृङ्ग रोमपाद के अनन्य मित्र राजा दशरथ का अश्वमेध संपादन करने के लिए अयोध्या आये थे।[1]

कर्ण को उसके मित्र दुर्योधन और अन्य कौरव प्रमुखों के आग्रह पर अङ्ग के सिंहासन पर अभिषिक्त किया गया था।[2] पाण्डवो और विशेष रूप से भीमसेन ने उसको सूतपुत्र कहकर अपमानित किया था, जिसको उन्होने अपने भाई अर्जुन को जोड़ न मानने की घोषणा की थी। फलत कर्ण पाण्डवों का कट्टर शत्रु हो गया था।[3] पञ्चाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री, द्रौपदी के स्वयवर-समारोह के अवसर पर कर्ण, अन्य क्षत्रिय राजकुमारो यथा, मद्र के शल्य और हस्तिनापुर के दुर्योधन के साथ वहाँ उपस्थित था। यही पर अर्जुन ने धनुर्विद्या के एक अद्भुत चमत्कार द्वारा द्रौपदी का पाणिग्रहण किया था। भीम और अर्जुन उस समय ब्रह्मणो के छद्म वेश में थे। द्रौपदी की प्राप्ति के विषय मे एक झगडा प्रारभ हुआ था जिसके कारण अर्जुन एव कर्ण मे लडाई हुयी और जिसके परिणामस्वरूप कर्ण पराजित हुआ था।[4] मणिपुर (असम) जाते समय अर्जुन एक तीर्थयात्री के रूप मे अङ्ग देश गये थे और वहाँ पर धनराशि वितरित की थी।[5] भीमसेन ने अग-नरेश कर्ण से युद्ध किया और युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ के सपादन के पूर्व ही उसे अपने पौरुष का लोहा मनवाया था। उन्होने मोदागिरि (मुगेर) के राजा की हत्या की थी।[6] बतलाया जाता है कि कर्ण इन्द्रप्रस्थ मे युधिष्ठिर के राजसूय-यज्ञ मे उपस्थित हुआ था।[7] दुर्योधन के पौण्डरीक यज्ञ के अवसर पर अङ्ग देश का उल्लेख कर्ण की दिग्विजय के सदर्भ मे हुआ था।[8] कुरुक्षेत्र के रणक्षेत्र मे शरशैय्या पर लेटे हुये भीष्म ने कर्ण को इस भ्रातृघातक युद्ध से विरत रहने के लिये कहा था क्योंकि वह वस्तुतः सूतपुत्र नही था। कुती उसकी माता थी। कर्ण ने कहा कि उसने दुर्योधन को पहले से ही पाण्डवों के विरुद्ध लड़ने का वचन दे दिया है।[9] दुर्योधन ने उसे कौरव-सेना

---

[1] रामायण, 24, 10-31.

[2] महाभारत, बंगवासी सस्करण, पृ० 140.

[3] वही, I, 25, पृ० 140-141.

[4] वही, I, 4, 178-179.

[5] वही, 9, 195; 195, 10.

[6] वही, V, 2, पृ० 242.

[7] वही, 7, 245.

[8] वही, 8-9, 513.

[9] वही, 1-39, 993-94.

का प्रधान सेनापति भी बनाया था।[1] यज्ञ के घोडे की खोज मे अर्जुन अङ्ग देश गये थे। अग, काशी, कोशल, किरातो एवं तंगणो के राजा उसके प्रति राजनिष्ठा की शपथ लेने के लिए विवश किये गये थे।[2] बताया जाता है कि राजा जरासंघ ने अङ्ग, वग, कलिंग और पुण्ड्रो के ऊपर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था।[3] महाभारत के द्रोणपर्व से ज्ञात होता है कि अङ्ग लोग किसी युद्ध मे वासुदेव से भी पराजित हुये थे। महाभारत के शान्तिपर्व[4] से ज्ञात होता है कि अङ्ग-नरेश वसूपमा हिमालय के एक कूटक पर स्थित युञ्जवत नामक सुवर्ण गिरि पर गया था।

जिस समय बुद्ध ने महाभिनिष्क्रमण किया था और महावीर जिन हुये थे, उस समय अग—मगध का राजा सेणिय बिम्बिसार था। मगध-नरेश भातिय के शासन-काल मे उसके पुत्र बिम्बिसार ने अङ्ग पर उसके उपराजा के रूप में शासन किया था।

सपूर्ण जैन वाङमय मे कूणिक अजातशत्रु को अङ्ग का राजा कहा गया है, जब कि तथ्य यह है कि वह अग का केवल उपराजा था, जो मगध-जनपद का एक भाग था।[5] अग का मगध मे मिल जाना मगध के इतिहास की एक युगातरकारी घटना है। महत्ता और आधिपत्य की दिशा मे अग्रसर होने के लिए मगध-नरेश द्वारा उठाया गया यह पहला कदम था। इस स्थिति को मगध ने अनुवर्त्ती शताब्दियो मे प्राप्त किया था। चपेय जातक मे अङ्ग और मगध नामक दो पडोसी राज्यो की लडाई का वर्णन है। समय-समय पर अग और मगध युद्धरत रहते थे। एक बार पराजित होने के पश्चात् अग की सेना द्वारा पीछा किये जाने पर मगध-नरेश ने अग और मगध के बीच प्रवाहित होने वाली चपा नामक नदी मे कूद कर अपनी जान बचायी थी। उसने पुन अङ्ग-नरेश को पराजित करके अपना अपहृत राज्य पुन: प्राप्त किया और अङ्ग पर भी विजय प्राप्त की। वह अङ्ग-नरेश से घनिष्ट रूप से सबंधित हो गया और प्रतिवर्ष चंपा नदी के तट पर वह बहुत धूमधाम से अर्घ्य अर्पित किया करता था।[6] विनय महावग्ग से सिद्ध होता है कि अङ्ग बिम्बिसार

---

[1] **महाभारत, 43, 56, पृ० 1174.**

[2] **वही, 4-5, पृ० 2093.**

[3] **वही, XII, अध्याय, 6607.**

[4] **CXXII, 4469-75.**

[5] **तु० निरयावली सूत्र, स्थविरावलिचरित, आदि।**

[6] **जातक, फासबाल, IV. 454-55.**

के अधीन था।[1] बौद्ध धर्म के उत्कर्ष के ठीक पहले उत्तर भारत मे चार शक्तिशाली राजतंत्र थे, जिनमे से प्रत्येक ने पडोसी राज्यो को हड़प करके अपनी सीमाएँ परिवर्धित की थी। इस प्रकार अङ्ग मगध मे, काशी कोशल मे, भग्ग वत्स मे और सभवत. शूरसेन अवन्ती मे मिला लिया गया था।

दीघनिकाय के सोनदण्ड सुत्तात मे राजकीय भूमिदान के रूप मे अङ्ग की राजधानी चपा को ब्राह्मण सोनदण्ड को प्रदान किये जाने का उल्लेख है।[2] मगध अङ्गराज के अधीन कर लिया गया था।[3] काशी एव अगनरेश धृतरत्थ, कलिग-नरेश सत्तमू एव मिथिला-नरेश रेणु का समकालीन था।[4] यह एक रोचक तथ्य है कि अङ्ग और मगध को वाराणसी के राजा ने जीत लिया था।[5] बिन्दुसार ने चम्पा-निवासी किसी ब्राह्मण की पुत्री से विवाह किया था, जिसने अशोक नामक एक पुत्र को जन्म दिया था।[6] श्री हर्ष ने दृढवर्मन नामक एक अग-नरेश का वर्णन किया है जिसे कौशाम्बी के राजा उदयन ने उसके राज्य मे पुन अधिष्ठित किया था।[7] हरिवंश एव पुराणों के अनुसार दधिवाहन अग का पुत्र एव उत्तराधिकारी था। यह वही दधिवाहन नही हो सकता है जिसे जैनियो ने महावीर का समकालीन एव कौशाम्बी-नरेश शतानीक का एक निर्बल प्रतिद्वंद्वी बतलाया है।[8] हाथीगुम्फा अभिलेख से हमे यह ज्ञात होता है कि राजा बहसतिमित की पराजय के पश्चात् कलिग-नरेश खारवेल अग-मगध से सग्रहीत सपत्ति को अपनी राजधानी मे ले गया।[9]

पालि बौद्ध-साहित्य से हमे अङ्गो के धर्म के विषय मे कुछ जानकारी प्राप्त होती है।[10] अग की राजधानी चपा के भिक्षुओ की आदत विनय के नियमो के

---

[1] सै० बु० ई०, XVII, पृ० 1.

[2] दीघ, I, पृ०, 111 और आगे।

[3] जातक, VI, पृ० 272.

[4] दीघ, 220 और आगे।

[5] जातक, फॉसबाल, V, 316.

[6] दिव्यावदान, पृ० 7.369-70.

[7] प्रियदर्शिका, IV अंक।

[8] ज० ए० सो० बं०, 1914, 320 और आगे।

[9] बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इंस्क्रिप्शंस, पृ० 272-273.

[10] विनय, I, 312-15, 179 और आगे; दीघ०, I, 111-26; वही, III, 272; मज्झिम, I, 271 और आगे; 281 और आगे।

प्रतिकूल कुछ आचरण करने की थी।[1] जिस समय बुद्ध चपा मे थे, उन्होंने वगीस नामक अपने एक शिष्य को अपनी प्रशसा मे एक गाथा कहते हुये सुना था।[2] अग एव मगध के गृहस्थों के अनेक पुत्रो ने राजगृह से कपिलवस्तु जाते समय बुद्ध का अनुगमन किया था।[3] पमेनदि के पिता, राजा महाकोसल का पुरोहित बहुत से अन्य जनो के साथ बुद्ध का शिष्य बना था।[4] एक आजीविक ने स्वय को बुद्ध का शिष्य घोषित किया था।[5] अङ्ग और मगध के अनेक ब्राह्मण गृहस्थो के साथ बिम्बिसार बौद्धमत मे दीक्षित हुआ था।[6] बुद्ध ने अग मे रहते समय विशाखा का धर्म परिवर्तन किया था।[7] सभी उपलब्ध साक्ष्य इस तथ्य के प्रति सकेत करते है कि बुद्ध के बोधि-प्राप्त करने के प्रथम दशक मे ही चपा-सहित अनेक महत्त्वपूर्ण नगरो के निकटवर्ती विभिन्न स्थानो मे बौद्धो के मुख्यावास स्थापित हो गये थे। इनमे से प्रत्येक स्थान पर बुद्ध के किसी न किसी प्रसिद्ध शिष्य के नेतृत्व एव पथ-प्रदर्शन मे भिक्षुओ का एक सप्रदाय विकसित हुआ।[8]

अङ्ग एव मगध के निवासियो ने गया क्षेत्र के जटिलो द्वारा उरुवेल कस्सप के नेतृत्व मे सपादित किये जाने वाले वार्षिक यज्ञ मे गहन अभिरुचि प्रदर्शित की थी।[9]

अंगार—इस गाँव को या तो मँगराँव या इसके निकटवर्ती सँगराँव से समीकृत किया गया है (एपि० इ०, XXVI, भाग, VI, अप्रैल, 1942, पृ० 245)।

अजनवन—यह साकेत मे था जहाँ पर बुद्ध एक बार रुके थे (सयुक्त०, I, 54, V 73, 219)। यह एक बाग था जहाँ पर वृक्ष लगाये गये थे (समन्त-पासादिका, I, पृ० 11)।

अतरगिरि—यह सथाल परगना जिले की राजमहल पहाडियो मे स्थित है

---

[1] विनयपिटक, I, 315 और आगे।

[2] संयुत्त०, I, 195-96.

[3] जातक, I, निदानकथा, पृ० 87.

[4] धम्मपद कमेंट्री, III, 241 और आगे।

[5] वही, II, 61-62.

[6] पेटवत्थु कमेंट्री, पृ० 22.

[7] धम्मपद कमेंट्री, I, 384 और आगे।

[8] लाहा, हिस्टॉरिकल ग्लीनिंग्स, पृ० 45.

[9] विनय, I, 27 और आगे।

(मत्स्यपुराण, अध्याय, 113, श्लोक, 44; पार्जिटरकृत मार्कण्डेयपुराण, पृ० 325, टिप्पणी)।

अप-गया—यह गया के निकट था। सुदर्शन के निमत्रण पर बुद्ध यहाँ आये थे (महावस्तु, III, पृ० 324-325; बि० च० लाहा, ए स्टडी ऑव द महावस्तु', पृ० 156-157)।

अपापपुरी—पावापुरी के अतर्गत देखिये।

अफषढ़—आदित्यसेन के अपषढ या अफषड अभिलेख मे अफषढ या अफषण्ड का उल्लेख है जिसे जफरपुर भी कहा जाता था जो सकरी नदी के दाहिने तट के समीप गया जिले मे नवादा के पूर्वोत्तर में लगभग 15 मील दूर स्थित एक गाँव था (का० इं० इ०, जिल्द, III)।

अशोकाराम—अशोक-द्वारा निर्मित पाटलिपुत्र मे यह एक बौद्ध सस्थान था (महावंस, V, श्लोक, 80)। इस सस्थान के भवन की देखरेख इन्दगुत्त नामक एक थेर किया करता था (समन्तपासादिका, I, पृ० 48-49)। अशोक के काल में यहाँ पर तृतीय बौद्ध सगीति हुयी थी (वही, पृ० 48)। मिलिन्दपञ्हो (पृ० 17-18) के अनुसार पाटलिपुत्र के एक व्यापारी ने पाटलिपुत्र के निकट ही एक चौराहे पर खड़े हुये स्थविर नागसेन को बतलाया था, 'यही सडक अशोकाराम को जाती है। कृपया मेरा मूल्यवान कंबल ग्रहण करे।' नागसेन ने इसे स्वीकार किया और उक्त व्यापारी बहुत प्रसन्न होकर वहाँ से चल पडा। नागसेन तब थेर धम्मरक्खित से मिलने के लिये अशोकाराम गये। उन्होने उनसे त्रिपिटको मे सकलित बुद्ध के अमृत वचनो और उनके गहन अर्थों को समझा। इसी समय हिमालय पर्वत के रक्खिततल पर एकत्रित अनेक स्थविरो ने नागसेन को बुलवाया जो अशोकाराम छोडकर उनके पास गये।

महावस मे अशोकाराम मे स्थित एक सरोवर का उल्लेख है (V. 163)। अशोक ने अपने एक अमात्य को इस आराम मे भेजकर भिक्षु-सप्रदाय से उपोसथ-समारोह का समारंभ वही पर करने का निवेदन किया था (वही, V. 236)। इस आराम में यथार्थ धम्म का सकलन किया गया था (वही, V. 276)। अनेक भिक्षुओं के साथ मित्तिण्ण नामक एक स्थविर इस आराम से पाटलिपुत्र आया था (वही, XXIX, श्लोक, 36)।

औदंबरिक—जयनाग के वप्पघोषवाट अभिलेख में इस विषय का वर्णन है (एपि० इं०, XVIII, पृ० 60 और आगे)। कुछ लोगों ने सरकार औदबर के उदुंबर (तु०, एपि० इं०, XIX, पृ० 286-89) और बगाल के बर्दवान मडल

मे मल्लसारुल गाँव के दक्षिण मे (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, विजयसेन का मल्लसारुल ताम्रपत्र) भौगोलिक सबंध स्थापित किया है।

अविपुर—यह गाँव उड़ीसा मे मयूरभज की पाचपिर तहसील मे है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939)।

आलवी—एक प्रदेश के रूप में यह कोशल-साम्राज्य मे समिलित था। यह नगर श्रावस्ती से 30 योजन एव वाराणसी से 12 योजन दूर था (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, 61)। यह श्रावस्ती एव राजगृह के बीच मे स्थित था। श्रावस्ती से आलवी का मार्ग किटागिरि से होकर गुजरता था (विनय, II, 170, और आगे)। कुछ लोगो का विचार है कि आलवी गंगा के तट पर स्थित था। कुछ लोगो के अनुसार इसे उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले मे स्थित नेवल या नवल से समीकृत किया जा सकता है जबकि अन्य लोगो के अनुसार यह इटावा से 27 मील पूर्वोत्तर मे स्थित अविव है। आलवी नगर के निकट अग्गालव चेतिय नामक एक मदिर था, जहाँ पर एक बार बुद्ध रुके थे (जातक, I, पृ० 160)।

आमगाचि—बगला देश के दिनाजपुर जिले मे स्थित यह एक गाँव है जहाँ सेविग्रहपाल तृतीय का एक ताम्रपत्र अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XV, 293 और आगे)।

आम्रगर्त्तिका—यह आधुनिक अबहुला हो सकता है जिसे मल्लसारुल के दक्षिण मे स्थित सीमासिमी भी कहते है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 158)।

आरणघाटा—नदिया जिले मे रानाघाट से लगभग छह मील उत्तर में स्थित यह एक गाँव है। इस गाँव से चूर्णी नदी बहती है और इसके तट पर जुगलकिशोर का हिंदू मदिर स्थित है। यह हिंदुओ का एक तीर्थ-स्थान है (विस्तृत विवरण के लिए, द्रष्टव्य, लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ 2)।

आराम—ऊँची इमारतो, मदिरो और तालाबो आदि से युक्त यह उडीसा का एक समृद्धिशाली नगर बतलाया गया है। यह सोनपुर नगर से अधिक दूर पर नही प्रतीत होता है। यथार्थत. यह एक प्रमद वन था, जहाँ पर राजा यदा-कदा रहता था (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII)।

आरियालखाल—पद्मा के दाहिनी ओर से, जिसके निचले प्रवाह को बगला देश मे फरीदपुर जिले के राजनगर मे राजा राजवल्लभ के स्मारको एव इमारतो के बीच कीर्तिनाशा कहा जाता है, फरीदपुर नगर के आगे आरियालखाल नदी निकलती है। बाकरगज (बगला देश) जिले एव फरीदपुर की मदारीपुर तहसील से गुजरती हुयी यह बंगाल की खाडी मे गिरती है। एक छोटी नदी इस रवाल और मधुमती को मिलाती है जो मदारीपुर नगर के थोड़ा पहले रवाल से निकलती

है और मदारीपुर तहसील मे गोपालगज के थोड़ा पहले मधुमती मे मिलती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 28)।

आत्रेयी—आत्रेयी नदी और छोटी यमुना राजशाही जिले (बगला देश) मे परस्पर मिलती है, और तब इस सयुक्त प्रवाह मे दो छोटी उपनदियाँ एक दाहिनी ओर से और दूसरी बाँई ओर से मिलती है। तत्पश्चात् यह नटोर के पूरब मे दो शाखाओं मे बँट जाती है। मुख्य प्रवाह राजशाही जिले मे बोल्यिा के दक्षिण-पूर्व मे गंगा में मिलती है, और छोटी सरिता करतोया मे मिलती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 29)।

बड़गंगा—डबोका के लगभग 14 मील पश्चिमोत्तर मे यह एक क्षुद्र सरिता है (एपि० इ०, XXVII, 18)।

बदाल—यह उत्तर बंगाल के दिनाजपुर जिले (बगला देश) मे है। यहाँ से तीन मील दूर नारायणपाल के समय का एक स्तभ लेख उपलब्ध हुआ है। यहाँ पर एक स्तभ प्राप्त हुआ है जिस पर पौराणिक गरुड पक्षी की आकृति बनी हुयी है (एपि० इ०, II, 160-167)। गुडवमिश्र के समय मे अकित बदाल स्तभ लेख मे देवपाल को उत्कल प्रजाति और हूणो के दर्पदलन करने का श्रेय दिया गया है।

बडकाम्ता—यह मेघना नदी के उत्तरी तट के समीप स्थित है। बगला देश मे कोमिल्ला शहर के निकट इसे कर्मात कहा जाता था। आधुनिक गाँव बडकाम्ता (जय-कर्मांत्तवासकाट, एपि० इ०, XVIII, पृ० 35) कोमिल्ला नगर से 12 मील पश्चिम मे स्थित है।

बहुपुत्त—वैशाली मे स्थित यह एक चैत्य था (दीघ, II, पृ० 118)।

बैद्यनाथ—इसे हार्द्पीठ और देवघर भी कहा जाता है। पूर्वी रेलवे के जसीडीह जक्शन स्टेशन से चार मील दक्षिण मे और कलकत्ता से कोई 200 मील ठीक पश्चिम मे स्थित यह एक छोटा-सा कस्बा है। उत्तरकालीन मुसलमानो के शासनकाल मे यह बीरभूम जिले मे समिलित था। अब यह बिहार के सथाल परगना जिले मे समिलित है। यह हिंदुओ का एक तीर्थ-स्थान है। यह एक चट्टानी-मैदान मे स्थित है जिसके उत्तर मे एक छोटा सा जगल, पश्चिमोत्तर मे एक निचली पहाड़ी, पूरब मे कोई पाँच मील दूर त्रैकूट-पर्वत नामक एक बडी पहाडी, दक्षिण-पूर्व, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम मे विभिन्न दूरियों पर अन्य पहाड़ियाँ स्थित है। कस्बे के ठीक पश्चिम मे यमुनाजोर नामक एक क्षुद्र सरिता है। इसका क्षेत्र लगभग दो मील है। यहाँ की भूमि उर्वर एव फसले धान्यपूर्ण होती है। यह दुमका की एक तहसील है। बैद्यनाथ का मदिर बिहार के प्रसिद्ध मंदिरों मे से एक है। यहाँ वर्ष-पर्यंत तीर्थयात्री आते रहते है। डा० राजेन्द्रलाल मित्र के अनुसार

इसकी प्राचीनता कुछ पुराणो[1] मे सृष्टि के त्रेता युग तक बतलायी गयी है। बैद्यनाथ का मदिर नगर के बीच मे स्थित है और एक विषम चतुर्भुजकार आँगन द्वारा परिवृत है। मुख्य मंदिर एक सादा पत्थरो का भवन है। इसका धरातल चार-खानेदार आकार वाले लंबवत और पडी रेखाओ के साँचो मे ढला हुआ है। इस मंदिर के अधिष्ठाता देवता ज्योतिलिंग या बैद्यनाथ है। इसकी पूजा-विधि पर्याप्त सरल है। पूजा के मत्र थोडे एव आहुतियाँ सीमित है। यह मदिर अब बिना किसी जाति भेद के सभी हिंदुओ के लिए मुक्त कर दिया गया है (25 सितबर 1953 से)। देवघर (जिसे अब बैद्यनाथ धाम कहा जाता है) मे अनेक लघु मदिर, तथा मुख्य मदिर के अधिष्ठाता देवता की पत्नी पार्वती, काल भैरव, शुक्र या सान्ध्य-देवी और सूर्य-पत्नी सावित्री देवी के मदिर है।[2]

बलबलभी—भुवनेश्वर प्रशस्ति मे बलबलभी का उल्लेख है। हरप्रसाद शास्त्री ने इसे बागडी से समीकृत किया है।

बसी—मदर पहाडी के तल के निकट स्थित यह भागलपुर जिले मे एक गाँव है। इस पुण्य पहाडी के तल के चारो ओर प्राप्त होने वाले असख्य भवन, विशाल कुएँ, तालाब एव पत्थरो की प्रतिमाओ से यह प्रकट होता है कि यहाँ पर कभी एक बडा नगर रहा होगा। यह पुर कैसे नष्ट हो गया—यह अज्ञात है, यद्यपि स्थानीय अनुश्रुतियो मे कालापहाड को इसके नाश का कारण बतलाया गया है। मदर पहाडी पर स्थित मधुसूदन के मदिर के नष्ट हो जाने के पश्चात् देवता की प्रतिमा बसी ले आयी गयी थी, यह अब वहाँ पर है। प्रतिवर्ष बगाली पौषमास की पूर्णमासी के दिन उक्त प्रतिमा को बसी से पहाडी के पाद तक ले जाया जाता है। पहाड़ी की तलहटी मे एक पुण्य सरोवर है, जिसमे तीर्थयात्री स्नान करते है क्योकि वे इसके जल को पवित्र मानते है (बिर्न, बगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, 1911, पृ० 162-163, भागलपुर)।

बराबर पहाडी (द्रष्टव्य खलतिक)—गया से लगभग 16 मील उत्तर में स्थित इन पहाडियो मे कुछ गुफाएँ स्थित है। सातघरा नाम से विश्रुत ये गुफाएँ दो वर्गों मे विभक्त हैं, जिनमे बराबर-समूह की चार सबसे दक्षिणी गुफाएँ प्राचीनतम

---

[1] **शिवपुराण का 'बैद्यनाथ माहात्म्य', अध्याय, 4; पद्मपुराण का बैद्यनाथ माहात्म्य', अध्याय, 2.**

[2] **विस्तृत विवरण के लिये, द्रष्टव्य, ज० ए० सो० बं०, 1883, पृ० 164 और आगे में प्रकाशित डा० राजेन्द्र लाल मित्र का निबंध, 'ऑन द टेंपुल्स ऑव देवघर'।**

हैं। न्यग्रोध-गुहा स्फटिक-कूटक (Granite ridge) में काटी गयी है और दक्षिणाभिमुख है। यहाँ पर एक अभिलेख है, जिसमे अशोक-द्वारा आजीविको को दिये गये गुहा-दान का उल्लेख है। लोमसऋषि गुहा इसके सदृश है किंतु यह अपूर्ण है। बाह्य कक्ष की पार्श्व-दीवाले तराशी हुयी और ओपदार है किंतु भीतरी कक्ष का आतरिक भाग बहुत बेडौल है। प्रवेश-द्वार समापित है और निस्संदेह यह शिला मे काटे हुये चैत्य महाकक्ष का प्राचीनतम प्रमाण है। बराबर-समूह की चौथी गुफा विश्व-झोपडी है। इसमे कक्ष है। किंतु यह अपूर्ण है। बाह्य कक्ष की दीवाल पर एक अभिलेख है, जिसमे अशोक के द्वारा गुफा-दान का आलेख है (लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 17, 341)।

बरनार्क—जीवितगुप्त द्वितीय के देव-बरनार्क अभिलेख मे इसका उल्लेख हुआ है। शाहाबाद जिले मे आरा के दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 25 मील दूर स्थित यह प्राचीन वारुणिक नामक गाँव है (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

बरतपुर (बरतपुर)—यह भागलपुर जिले मे मधिपुर से लगभग 15 मील दूर स्थित है। यहाँ पर एक दुर्ग के भग्नावशेष है जिसे महाभारत मे वर्णित राजा विराट का आवास बतलाया जाता है। महाभारत के अनुसार पाण्डवो ने गुप्त वेष मे उनके यहाँ सेवावृत्ति स्वीकार की थी। राजा विराट के साले कीचक ने पाण्डव बधुओ की पत्नी द्रौपदी का अपहरण करना चाहा था, जिसकी हत्या भीमसेन ने इस गाँव मे की थी। बताया जाता है कि राजा दुर्योधन के एक दल ने राजा-विराट के अनेक पशुओ का अपहरण किया था। अर्जुन ने उनके साथ लड़ाई की और पशुओ को पुनर्प्राप्ति किया। उत्तरगोगृह या उत्तरी चारागाह इस गाँव के समीप ही स्थित था (बिर्ने, बगाल डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर्स, 1911, पृ० 162, भागलपुर)।

बराकर—यह वर्दवान जिले मे है। यहाँ पर कुछ उत्तर मध्यकालीन मदिर हैं (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1917, 18, जिल्द, I, पृ० 9)। इसका प्राचीन नाम अज्ञात है।

बसाढ़—हाजीपुर से 20 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित इस गाँव को वैशाली से समीकृत किया गया है (जो 'मॅल्ली, बिहार, डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर्स, पृ० 138-139, मुजफ्फरपुर)।

बानगढ़—यह बगाल के दिनाजपुर जिले मे स्थित है जहाँ से महीपाल प्रथम का दानपत्र उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XIV, 324 और आगे)। बानगढ या बाननगर के भग्नावशेष पुनर्भवा नदी के पूर्वी तट पर प्राप्त हुये है, जो दिनाजपुर के 18 मील दक्षिण मे स्थित गंगारामपुर से डेढ मील उत्तर मे है। विस्तृत विवरण

के लिए, द्रष्टव्य, इट्रोड्यूसिंग इंडिया, भाग, I, 79-80; प्रोसीडिंग्स ऑव इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, III, 1939-40; के० जी० गोस्वामी, एक्सकेवेशस ऐट बाँगढ (कलकत्ता, 1948)। कोटिवर्षविषय देखिये।

बारिपादा—यह उड़ीसा के मयूरभज जिले मे स्थित है (एपि० इं०, XXVI, भाग, II, पृ० 74)।

बेलुगाम—यह वैशाली मे स्थित एक गाँव था (सयुत्तनिकाय, V, 152)।

बेलवा—यह हिली स्टेशन के पूर्व मे लगभग 15 मील दूर स्थित है। यह दिनाजपुर जिले के घोडाघाट थाने (बगला देश) के अतर्गत है (ज० ए० सो०, लेटर्स, भाग, XVII, स० 2, 1951)।

भद्दियनगर—यह नगर अङ्ग जनपद मे स्थित था, जहाँ पर विशाखा का जन्म हुआ था (धम्मपद कामेंट्री, जिल्द, I, पृ० 384)।

भगवानगंज—यह गाँव भरतपुर से कुछ मील दूर दक्षिणपूर्व मे दिनाजपुर तहसील के दक्षिणपूर्व मे स्थित है। यहाँ पर एक स्तूप के अवशेष है, जिसे युवान-च्वाड द्वारा वर्णित द्रोण-स्तूप से समीकृत किया गया है। यह द्रोण एक ब्राह्मण था जिसने बुद्ध के महापरिनिर्वाण के पश्चात् बुद्ध के अवशेष वितरित किये थे। (तु० महापरिनिब्बान सुत्तात, दीघ० II)। यह स्तूप लगभग 20 फीट ऊँचा लघु वृत्ताकार एक टीला है। इसके निकट ही पुनपुन नदी बहती है (आर्क्० स० इ०, रिपोर्ट्स, भाग, VIII)।

भण्डगाम—यह वज्जियो के देश मे स्थित था (अगुत्तर निकाय, II, I)।

भागीरथी—इस नदी का वर्णन हरिवश (I, 15) और योगिनीतत्र (2 4, पृ० 128-129) मे मिलता है। भगीरथ द्वारा लाये जाने के कारण इस पुण्य-सलिला का नाम भागीरथी है (ब्रह्माण्ड-पुराण, II, 18 42)। बगाल मे यह सुह्म से होकर बहती है (धोयीकृत पवनदूत, V. 36)। सेन और चन्द्र ताम्रपत्रों के अनुसार, भागीरथी गगा ही है (इस्क्रिपशस ऑव बगाल, जिल्द, III, पृ० 97)। बल्लालसेन के नैहटि ताम्रपत्र मे बतलाया गया है कि भागीरथी को गगा के समान माना जाता था और राजमाता ने सूर्यग्रहण के अवसर पर इसके तट पर एक महान् धार्मिक अनुष्ठान सपादित किया था (वही, पृ० 74)। लक्ष्मणसेन के गोविन्दपुर ताम्रपत्र से ज्ञात होता है कि हुगली नदी को जाह्नवी कहा जाता था, जो हावड़ा जिले मे बेतड के किनारे से बहती थी (वही, पृ० 94, 97)।

भानी—गोविन्दचन्द्र के (विक्रमसवत्, 1184) कमौली अभिपत्र मे मडवत्तल नामक पट्टल मे स्थित भानी गाँव के दान का उल्लेख है (एपि० इ०, XXXVI, भाग, 2, अप्रैल, 1941)।

भाटेरा—यह गाँव सिलहट (बंगला देश) से लगभग 20 मील दूर पर स्थित है (एपि०, इ०, XIX, पृ० 277, गोविन्द-केशवदेव का भाटेरा ताम्रपत्र अभिलेख, 1049 ई०)।

भाटशाल—दिनाजपुर जिले के घोड़ाघाट (बगला देश) थाने के अतर्गत् यह एक गाँव है (ज० ए० सो०, लेटर्स, भाग, XVII, न०, 2, 1951, पृ० 117)।

भोजपुर—बक्सर तहसील में डुमराँव से दो मील उत्तर मे यह गाँव स्थित है। यहाँ पर भोजराजो के प्राचीन स्थानो के अवशेष है (ओ 'मैल्ली, बिहार ऐंड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर्स, 1924, पृ० 158, शाहाबाद)।

बोध-गया (बुद्ध-गया)—इसका प्राचीन नाम उरुविल्व या उरुवेला था जो बुद्धघोष के अनुसार एक विशाल रेतीले टीले का वाचक था (महावेला)। समन्त-पासादिका (V. 952) के अनुसार जब किसी पुरुष मे बुरे विचार उत्पन्न होते थे, तब उसे निकटवर्ती एक स्थान तक मुट्ठी पर बालू ले जाने का आदेश दिया जाता था। इस प्रकार ले जायी गयी बालू मे शनै-शनै एक विशाल टीला बन गया। यह गया से छह मील दक्षिण मे स्थित है। बुद्ध-गया से गया की दूरी तीन गावुत या छह मील से थोडा अधिक थी (पपञ्चसूदनी, II, पृ० 188)। इसे बुद्ध-गया कहा जाता था, क्योकि यहाँ पर गौतम बुद्ध ने प्रसिद्ध वट-वृक्ष (Bo-tree) के नीचे बोधि या सम्बोधि प्राप्त किया था। महानामन के बोधगया अभिलेख मे (169 वाँ वर्ष) बोधगया के विख्यात् बौद्ध-स्थल का वर्णन मिलता है (का० इ० इ०, जिल्द, III, स० 71, पृ० 274 और आगे)। इस अभिलेख मे वट-वृक्ष के चतुर्दिक् बने हुये घेरे को 'बोधिमण्ड' कहा गया है। बोध-गया अभिलेख के एक अनुलेख से हमे ज्ञात होता है कि कोई चीनी तीर्थयात्री महाबोधि बिहार मे लटकाने के लिए एक स्वर्ण-खचित काषाय ले आया था।

देवपालदेव के घोस्रवन अभिलेख के[1] अनुसार इन्द्रगुप्त का पुत्र वीरदेव नगरहार (आधुनिक जलालाबाद) मे उत्पन्न हुआ था। वेदो का अध्ययन करने के पश्चात् उसने बौद्ध धर्म ग्रहण करने का निश्चय किया और इस उद्देश्य से वह कनिष्कविहार गया। सर्वज्ञशान्ति से दीक्षा लेने के पश्चात् उसने बौद्ध धर्म का वरण किया और महाबोधि मे वज्रासन जाने के विचार से वह पूर्वी भारत मे आया। वहाँ वह बहुत दिनो तक यशोवर्मपुरमहाविहार मे रहा और देवपाल से समादरपूर्ण ध्यान पाता

---

[1] **ज० ए० सो० बं०, XVII, जिल्द, I, पृ० 492-501; इं० ऐं०, XVII, 307-12, गौडलेखमाला।**

रहा। वज्रासन की पूजा करने के लिए वीरदेव महाबोधि आया था। तत्पश्चात् अपने प्रांत के कुछ भिक्षुओं से मिलने के लिए वह यशोवर्मपुरमहाविहार की ओर बढ़ा।[1]

ब्रह्मपुत्र—ब्रह्मपुत्र असम की एक प्रमुख नदी है। योगिनीतंत्र (जीवानंद विद्यासागर सस्करण, 1 11, पृ० 60; 2-4, पृ० 128-129) मे इसका वर्णन मिलता है। इसे लौहित्य भी कहा जाता है (ब्रह्मपुराण, अध्याय, 64; रघुवश, IV, 81; योगिनीतंत्र, 2.2. 119) जो कालिदास के अनुसार, प्राग्ज्योतिष की पश्चिमी सीमा थी। जम्बुदीवपण्णत्ति के अनुसार इस नदी का स्रोत उसी सरिता से माना जाता है जो पूर्वी मानससरोवर झील की पूर्वी कुल्या से निकलती है। आधुनिक भौगोलिक अनुसधानो से यह प्रकट होता है कि इसका स्रोत मानससरोवर के पूर्वी क्षेत्र मे है। ब्रह्मपुत्र की तीन महत्त्वपूर्ण अग्र धाराएँ है : कुपि, चेम-युगदुग और अगसी चु। ये अग्रधाराएँ हिमानी-प्रवाहो से फूटती है। कुपि नदी का सर्वाधिक निस्सारण होने के कारण, स्वेन हेडिन ने कुपि हिमनद को ही ब्रह्मपुत्र का स्रोत माना है। कैलास तीर्थ एव मानससरोवर के स्वामी प्रणवानद के अनुसार ब्रह्मपुत्र चेम-युगदुग हिमनद से निकलती है (विस्तृत विवरण के लिए, द्रष्टव्य, एस० पी० चटर्जी, प्रेसीडेंशियल ऐड्रेस टु द ज्यॉग्रफिकल सोसायटी ऑव इडिया, ज्यॉग्रेफिकल रिव्यू ऑव इडिया, सितबर, 1953)। कालिकापुराण (अध्याय, 82) मे ब्रह्मपुत्र की उत्पत्ति का एक पौराणिक विवरण प्राप्त होता है। इसमे बतलाया गया है कि ब्रह्मपुत्र चार पर्वतो के बीच मे स्थित है, जिसके उत्तर और दक्षिण मे क्रमश: कैलाश और गधमादन है (अध्याय, 82, 36)। सदिया से यह दक्षिण-पश्चिम की ओर गारो पहाडियो के पहले तक बहती है। यह पुनः दक्षिण की ओर बहती है जिधर यह गोलद घाट (बगला देश) के थोडा पहले गगा में मिलती है। दक्षिणी तिब्बत के पठार से प्रवाहित होने वाले ब्रह्मपुत्र के प्रवाह को सुन्प कहा जाता है। विस्तृत विवरण के लिए, द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 29-30.

असम के लखीमपुर जिले की पूर्वी सीमा पर ब्रह्मपुत्र मे ब्रह्मकुण्ड नामक एक गहरा कुड है। विष्णु के दशावतारो में से एक, भगवान् परशुराम ने अपना परशु इसी सरोवर मे अर्पित कर दिया था जिससे उन्होंने क्षत्रियो का विनाश किया था। यह कुड उस स्थान पर स्थित है, जहाँ नदी पहाडो से बाहर निकलती है,

---

[1] साहित्यिक उल्लेखों के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 45 और आगे; लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, I, पृ० 35 और आगे; बरुआ, गया ऐंड बुद्ध गया, 162 और आगे।

और चारों ओर से पहाड़ियो से घिर जाती है। भारत के प्रत्येक भाग से यहाँ प्रायः हिंदू, तीर्थयात्री आते हैं।

ब्राह्मणी—यह एक पवित्र नदी है जो उड़ीसा के बलसोर जिले से होकर पश्चिमोत्तर से दक्षिण-पूर्व की ओर प्रवाहित होती है (महाभारत, भीष्म पर्व, अध्याय, 9, पद्मपुराण, अध्याय, 3)।

बुरबलंग—यह नदी करकई का निचला प्रवाह है, जो दलभूम की पहाड़ियो से निकलती है और बलसोर जिले से होकर बहती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 45)।

बुरीदिहिंग—यह नदी जो ब्रह्मपुत्र की एक महत्त्वपूर्ण सहायक नदी है, असम मे लखीमपुर के दक्षिण मे ब्रह्मपुत्र मे मिलती है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ०, 30

चंपा—यह नदी पूरब मे अङ्ग एव पश्चिम मे मगध की सीमा है।[1] सभवतः यह वही नदी है जो भागलपुर शहर के अचल मे चपानगर एव नाथनगर के पश्चिम मे है। पहले इसे मालिनी कहा जाता था।[2] कालिदास ने मालिनी नदी की तरगों का उल्लेख किया है, जिसके पुलिन पर अपनी सहेलियो के साथ शकुतला आयी थी (अभिज्ञानशकुन्तलम्, तृतीय अक)। पद्मपुराण (अध्याय, 11) के अनुसार, यह एक तीर्थ स्थान था।

चंपापुरी (चंपा)—यह अङ्ग की राजधानी थी और पहले इसे मालिनी कहा जाता था (मत्स्य पुराण, अध्याय, 48)। जैन-ग्रंथ औपपातिक सूत्र मे तोरणो, प्राकारो, प्रासादों, उपवनो और बागो, से अलकृत एक नगर के रूप मे इसका उल्लेख हुआ है। इसके अनुसार धन, ऐश्वर्य, आतरिक आनद एव सुख से परिपूर्ण यह पुर यथार्थतः धरती का स्वर्ग था (बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 73)। यहां पर वासुपूज्य नामक बारहवे जिन उत्पन्न हुये थे, जिन्होने केवलज्ञान एव निर्वाण प्राप्त किया था। करकण्डु ने कुण्ड-सरोवर मे पार्श्वनाथ की प्रतिमा अधिष्ठित की थी। बाद मे उन्होने निर्वाण प्राप्त किया। श्रेणिक के पुत्र कुणीक ने अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् राजगृह त्याग कर चपा को अपनी राजधानी बनाया था।[3] चपा के समुद्री-व्यापारियो का एक सुदर वर्णन हमे जैनग्रथ नाया-

---

[1] जातक, IV, 454.

[2] महाभारत, XII, 5. 6-7; विष्णु०, IV, 18-20; मत्स्य०, 48, 97; वायु०, 99 105; हरिवंश, 31-49.

[3] बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 176.

धम्म कहा[1] में प्राप्त होता है। इसे चंपानगर, चंपामालिनी, चंपावती, चंपापुरी और चंपा आदि विविध नामो से पुकारा जाता था। यहाँ पर प्रायः आजीविक मत के प्रवर्तक गोशाल और जमालि आया करते थे (भगवती, 15; आवश्यक चूर्णि, पृ० 418)। यह नगर भागलपुर के पश्चिम मे लगभग चार मील दूर स्थित था। महाभारत के अनुसार (वनपर्व, अध्याय, 85) यह एक तीर्थस्थान था। युवान-च्वाङ् यहाँ आया था और उसने इसे तीर्थस्थल कहा है। इसकी परिधि लगभग 4000 ली थी और चीनी इसे चेन-पो (Chenpo) कहते थे। यहाँ की भूमि समतल और उर्वर थी तथा सदा जोती जाती थी। यहाँ के निवासी सरल एवं ईमानदार थे। यहाँ पर सघाराम थे जो अधिकाशतः नष्टप्राय थे। यहाँ पर कुछ देव मदिर भी थे।[2]

चन्द्रद्वीप—श्रीचन्द्र के रामपाल दानपत्र मे चन्द्रद्वीप का उल्लेख है जिस पर दसवी या ग्यारहवी शताब्दी ई० में मे राजा त्रैलोक्यचन्द्र का शासन था।[3] इस देश मे बाकरगज (बगला देश) के कुछ भाग समिलित थे। कुछ विद्वानो के अनुसार प्राचीन साहित्य मे बकला चन्द्रदीप ही अकेला चन्द्रदीप था, जब कि अन्य लोगो के भिन्न विचार है।[4] यह बकला चन्द्रद्वीप का वाचक था।[5] विश्वरूपसेन के मघ्यपाडा अभिलेख मे—'न्द्रद्वीप' का वर्णन है, जिसे कुछ विद्वानो ने कन्द्रद्वीप, इन्द्रद्वीप और चन्द्रद्वीप के रूप मे पूर्ण किया है। यह इस तथ्य से पुष्ट होता है कि विवादग्रस्त क्षेत्र मे घाघरकाट्टिपाट्टक समिलित था। घाघरा पद्रहवी शती ई० मे बाकरगज के पश्चिमोत्तर मे फुल्लश्री से प्रवाहित होने वाली एक सरिता थी (हिस्ट्री ऑव बगाल, जिल्द, I, 18)।

चन्द्रनाथ—इस चोटी को शिव का एक प्रियस्थान माना जाता है क्योकि परंपरा के अनुसार विष्णु के चक्र से कटकर सती का दाहिना हाथ यही पर गिरा था। वह चटगाँव जिले (बगला देश) मे है और बगाल के सभी भागो से यहाँ तीर्थयात्री आते है। सीताकुण्ड के समीप ही चन्द्रनाथ एव शभुनाथ का मदिर है। पहाडी की चोटी पर स्थित मदिर मे शिव का प्रतीक लिङ्गम् है और बतलाया जाता

---

[1] 97 और आगे; द्रष्टव्य, पीछे, अङ्ग के अन्तर्गत्।

[2] बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 191-192.

[3] न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शंस ऑव बंगाल, जिल्द, III, 2 और आगे।

[4] हिस्ट्री ऑव बंगाल, ढाका यूनिवर्सिटी, पृ० 18; भारत-कौमुदी, भाग, I, पृ० 53-54.

[5] ज० रा० ए० सो०, 1874.

है कि इस मदिर पर चढने से तीर्थयात्री पुनर्जन्म के कष्ट से मुक्त हो जाते हैं (इंट्रोड्यूसिंग इडिया, भाग I, पृ० 83-84)।

चंडीमऊ—पटना जिले की बिहार तहसील मे सिलाओ से गिरियेक जाने वाली प्राचीन सडक पर गिरियेक थाने से लगभग तीन मील दूर यह गाँव स्थित है। यहाँ से अति सुदर अनेक बौद्ध-प्रतिमाएँ उपलब्ध हुयी थी, (आर्क० स० इं०, एनुअल रिपोर्ट, 1911-12, पृ० 161 और आगे)।

चत्तिवण्णा—(बृहत)-राजा नयपालदेव के इर्दा दान-ताम्रपत्र मे वर्णित यह एक गाँव है। कुछ लोगो ने इसे बगाल के मिदनापुर जिले मे दासपुर थाने के अंतर्गत् आधुनिक चटना से समीकृत किया है (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, 1937, जनवरी, 43-47)।

छिन्नमस्ता—यह गाँव हजारीबाग जिले की गोला तहसील मे है जहाँ पर पहले नरबलि करके देवता को अर्पित किया जाता था। यह एक जगल के बीच मे स्थित है और भारत के सभी भागो से आने वाले तीर्थयात्री इस देवता की उपासना करते है। हजारीबाग शहर से तीस मील की दूरी पर स्थित रामगढ से यहाँ तक बस से पहुँचा जा सकता है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 14)।

चोरपपात—यह राजगृह के समीप एक पहाडी प्रतीत होती है (दीघ०, II, पृ० 116)।

दण्डभुक्ति—राजा नयपालदेव के इर्दा दान-ताम्रपत्र मे दण्डभुक्ति का उल्लेख है। ऐसा प्रतीत होता है कि मूलत: यह गाँव दण्डनाम से विश्रुत था जो किसी भुक्ति का मुख्यावास था। इस नाम की उत्पत्ति अज्ञात है। मूलत एक भुक्ति होने पर भी दण्ड वर्धमानभुक्ति के अधीन एक मडल था (उत्तर राढ) (एपि० इ०, जिल्द, XXIV, भाग, I, 1937, जनवरी, पृ० 46-47)। दण्डभुक्ति जिसे अन्यत: दण्डभुक्ति भी कहते है, एक प्रदेश का नाम है जहाँ के बाग मधुमक्खियों से भरे हुये थे (हुल्ट्श, सा० इं० इ०, I, पृ० 99)।

डवाक—डवाक को, जिसका वर्णन इलाहाबाद स्तभ लेख मे समतट, कामरूप और कर्त्तृपुर के साथ हुआ है असम के नवगाँव जिले मे स्थित आधुनिक डबोक से समीकृत किया गया है। के० एल० बरुआ ने इसकी समानता असम की कोपिलि घाटी से की है (हिस्ट्री ऑव कामरूप, पृ० 42)। फ्लीट के अनुसार यह ढाका का प्राचीन नाम था।[1] बी० ए० स्मिथ ने इसे बोगरा, दिनाजपुर और राजशाही जिलों (बगला देश) का बाचक बतलाया है।

---

[1] तु०, राय चौधरी, पो० हि० एं० इं०, चतुर्थ संस्करण, पृ० 456, नोट, 4.

दामोदर—भागीरथी की सहायक नदी दामोदर हजारीबाग जिले में बगोदर की निकटवर्ती पहाडियो से निकलती है और दक्षिण-पूर्व की ओर हजारीबाग से गुजरती हुयी, मानभूम एव सथाल परगने जिलों के बीच मे बहती है और तत्पश्चात् यह बर्दवान और हुगली जिलो में प्रवाहित होती है। हुगली जिले में बहती हुयी दामोदर नदी कई धाराओ मे हुगली मे गिरती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 27)।

दामोदरपुर—यह गाँव दिनाजपुर जिले में फूलबारी थाने से लगभग आठ मील पश्चिम में स्थित है, जहाँ से गुप्तयुगीन पाँच ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XV, पृ० 113)।

दापणिया-पाटक—लक्ष्मणसेन के माधैनगर ताम्रपत्र मे उल्लिखित यह गाँव पौण्ड्रवर्धनभुक्ति के अतर्गत् वरेंद्री मे कातापुरी के निकट स्थित् था।

देहार—यह बॉकुडा जिले मे विष्णुपुर के निकट है। यहाँ पर सरेश्वर का एक छोटा-सा मदिर है (आर्क० स० इ०, एनुअल, रिपोर्ट, 1913-14, भाग, I, पृ० 5)।

देव-बरुनारक—यह महादेवपुर से छ मील पूर्वोत्तर मे और आरा से 27 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है। यहाँ पर सूर्य को समर्पित एक मदिर है, जिसमे विष्णु की एक प्रतिमा है (ओ 'मैल्ली, बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पृ० 167, शाहाबाद)।

देवकालि—यह गॉव सीतामढी से 11 मील पश्चिम मे स्थित है। यहाँ पर महाभारत-कीर्त्ति वाले राजा द्रुपद का एक दुर्ग है(आर्क० स० इ०, रिपोर्टस , भाग, XVI, 29-30, ओ 'मैल्ली, बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पृ० 144, मुजफ्फरपुर)।

देवपनि—यह असम के शिबसागर जिले मे एक नदी है। इसके निकट ही एक जगल मे विष्णु-प्रतिमा पर उत्कीर्ण एक अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XVIII, 329)।

दिउलबाड़ी—कोमिल्ला से चटगॉव (बगला देश) जाने वाले महापथ पर लगभग 14 मील दक्षिण मे यह गॉव स्थित है (एपि० इ०, XVII, 357)।

देवग्राम—भुवनेश्वर-प्रशस्ति मे देवग्राम का उल्लेख है जो प० बगाल के कोमिल्ला नदिया जिले में स्थित बतलाया जाता है (तु०, बादाल-मैत्र की शिलालेख, गौडलेखमाला, I; पृ० 70 और आगे)।

धलेश्वरी—ढाका जिले (**बंगला देश**) मे यह एक अत्यत महत्त्वपूर्ण नदी है।

हबीगंज के आगे चौड़े पाट की एक नदी के रूप में मेघना मे मिलने से पूर्व इसमें लक्ष्या का जल मिलता है। (विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 33)।

ढेक्करी—ईश्वरघोष के रामगंज ताम्रपत्र में ढेक्करी का उल्लेख प्राप्त होता है। कुछ लोगो ने जतोदा नदी और उसके तट पर स्थित ढेक्करी को बर्दवान समाग मे कटवा के समीप स्थित बतलाया है (यथा, द्रष्टव्य, एच० पी० शास्त्री, इट्रोडक्शन टु रामचरित, पृ० 14)। अन्य जनो के अनुसार दोनो ही असम के गोलपारा एव कामरूप जिले मे स्थित है (यथा, द्रष्टव्य, एन० एन० वसु, वगेर जातीय इतिहास, पृ० 250-51)।

ध्रुविलती—धर्मादित्य एव गोपचन्द्र के ताम्रपत्रो मे इसका वर्णन है। पार्जिटर ने इसे बगला देश के फरीदपुर जिले मे स्थित आधुनिक धुलत से समीकृत किया है।

दिसरा—दिसरा पटकई पहाडियो से निकलती है। असम मे शिबसागर शहर के पश्चिमोत्तर मे ब्रह्मपुत्र मे मिलने के लिए यह पश्चिमोत्तर एव पश्चिम मे बहती है। यह ब्रह्मपुत्र-मेघना नदी-समूह मे समिल्ति है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 30)।

दुआरबासिनी—अपने मदिर के लिए प्रसिद्ध यह स्थान मालदा जिले मे है। यहाँ पर प्राय हिंदू तीर्थयात्री आते रहते है (लाहा, होली प्लेसेज़ ऑव इडिया, पृ० 1)।

दुर्वासा-आश्रम—इसे खल्लीपाहाड नामक पहाडी की सर्वोच्च चोटी पर स्थित बतलाया जाता है। यह भागलपुर जिले मे कोलगोग से दो मील उत्तर मे और पाथारघाटा के दो मील दक्षिण में स्थित है (मार्टिन, ईस्टर्न इडिया, II, पृ० 167, जे० ए० सो० ब०, 1909, पृ० 10)।

एकनाला—राजगृह पहाडी के दक्षिण मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान, दक्षिण-गिरि में स्थित यह एक ब्राह्मण गॉव था। यहाँ पर एक बौद्ध अधिष्ठान की स्थापना की गयी थी (सारत्थप्पकासिनी, I, पृ० 242)। संयुत्त निकाय (I, पृ० 172) मे इसे स्पष्टया मगध मे राजगृह के क्षेत्र के बाहर स्थित बतलया गया है।

गग्गरा—चपा शहर के समीप ही यह एक सरोवर था। इसे गग्गरा रानी ने खुदवाया था। इस तालाब के तट पर बुद्ध ने चंपा के निवासियो को अपने मत की दीक्षा दी थी (सुमगलविलासिनी, I, 279)। इस तालाब को चंपानगर की सीमा पर स्थित उस विशाल पंकिल झील से समीकृत किया जा सकता है जिसे

अब सरोवर कहते हैं और जिसके तल से बौद्ध एव जैन प्रतिमाएँ उपलब्ध हुयी है (जे० ए० सो० ब०, 1914, पृ० 335)।

गराई-मधुमती—गराई फरीदपुर जिले (बगला देश) मे पानसा से पहले गंगा नदी से निकलती है। वह फरीदपुर एव जैसोर जिलो के बीच की सीमा निर्मित करती हुई मधुमती नाम से प्रवाहित होती है और बाकरगंज जिले मे फिरोजपुर के थोडा पहले हरिघाटा नाम से बगाल की खाड़ी मे गिरती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 28)।

गरगाँव—शिबसागर जिले मे यह नजीरा के समीप है (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1918, 19, भाग, I, पृ० 7)।

गारो—गारो पहाडियाँ मेघलय पठार का पूर्वी प्रसरण है।[1] ये पहाड़ियाँ अकस्मात ब्रह्मपुत्र-घाटी मे उत्तर एव पश्चिम मे उठती है, और असम तथा बगाल के मैदानो की ओर एक विषम ढलान प्रस्तुत करती है (लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 9)।

गौड—हिंदू और मुसलमान-कालो मे यह बगाल की राजधानी थी। जैन ग्रथ आचारागसूत्र (II, 361a) की टीका के अनुसार गौडदेश दुकूल के लिए विख्यात् था। कुछ लोगो के अनुसार गौड नाम गुड या राब से व्युत्पन्न था, क्योकि प्राचीन काल मे गौड गुड एव राब का व्यापारिक केंद्र था। गौड के भग्नावशेष वर्तमान माल्दह नगर के दक्षिण-पश्चिम मे 10 मील की दूरी पर स्थित है। गगा एव महानदा के सगम पर स्थित यह एक प्राचीन नगर था। इसका वर्णन महाकाव्यो एव पुराणो मे मिलता है। पद्मपुराण (189 2) मे गौडदेश का उल्लेख हुआ है, जिसपर नरसिंह नामक राजा राज्य करता था। यह देवपाल, महेन्द्रपाल, आदिसूर बल्लालसेन तथा लगभग सोलहवी शती ई० के अत तक मुसल्मान शासको की राजधानी थी। चौथी, पाँचवी एव छठी शताब्दी ई० मे यह गुप्त सम्राटो की राजधानी थी। इस समय रामावती का लेशमात्र पता नही है जो पाल-नरेशो के अधीन प्राचीन गौड की राजधानी थी। कालिन्दी नदी के समीप यह भग्नावशिष्ट गौड के वर्तमान स्थल के उत्तर मे कई मील दूर पर स्थित था। लक्ष्मणसेनद्वारा निर्मित लक्ष्मणावती सेन एव मुसलमान शासको के काल मे गौड की उत्तरकालीन राजधानी थी। गौड के वर्तमान स्थल के निकट रामकेलि नामक प्राचीन स्थान है जहाँ पर चैतन्यदेव गये थे। राजा बल्ललासेन ने गौड मे एक किला बनवाया था, जिसे बल्लालबाडी या बल्लाल मीटा कहते थे। इस किले के ध्वसावशेष

---

[1] **एस० पी० चटर्जी, ल' प्लेटयू डी मेघलय, पेरिस, 1937.**

शाहदुल्लापुर में प्राप्त होते हैं। बगाल के सागरदीघि नामक एक सबसे बड़े तालाब के निर्माण का श्रेय उसे दिया जाता है। रूप और सनातन के निवास, रूपसागर तालाब, कदब वृक्ष, कुछ कुएँ और मदनमोहन का प्राचीन मदिर वहाँ पर अब भी है। वहाँ पर मुसलमान युग के कुछ उल्लेखनीय पुरावशेष यथा, जान जान मियाँ की मस्जिद, हवेली खास के अवशेष, सोणा मस्जिद, लोटन मस्जिद, कदम रसूल मस्जिद एव फीरोज मीनार हैं। इनके अतिरिक्त वहाँ पर गौडेश्वरी, जहर-वासिनी और शिव आदि के मंदिर है। गौड के प्राचीन स्थल के निकट खलीमपुर नामक एक अन्य गाँव है जहाँ से बगाल के पालवशीय राजा धर्मपाल का एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, IV, 243, और आगे)। गौड का पहला अभिलेखीय वर्णन 554 ई० मे अकित हराहा अभिलेख (एपि० इ०, XIV, पृ० 110, और आगे) में है, जिससे हमे यह ज्ञात होता है कि मौखरि वशीय राजा ईशाणवर्मन् ने गौडो और गौडदेश पर विजय प्राप्त करने का दावा किया है। आदित्यसेन के अफसढ अभिलेख (655 ई०) मे भी गौडदेश का उल्लेख है जिसमे अभिलेख के उत्किरणकार सूक्ष्मशिव को गौडदेश का निवासी बतलाया गया है। गौड का उल्लेख लक्ष्मणसेन के इडिया ऑफिस अभिपत्र मे भी है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I)। बादल के गौड स्तभ लेख मे देवपाल को गौड देश का राजा बतलाया गया है (एपि० इ०, II, 160 और आगे)। दिउली अभिपत्रो मे राष्ट्रकूट-नरेश कृष्ण द्वितीय को गौड को विनयशीलता सिखाने का श्रेय दिया गया है (वही, V, पृ० 190)। बतलाया जाता है कि राष्ट्रकूट-नरेश कृष्ण तृतीय ने गौडदेश के निवासियो का मानमर्दन किया था। (वही, IV, पृ० 287)। अमोघवर्ष प्रथम (866 ई०) के सिरुर एव नीलगुड अभिलेखो मे गौड-निवासियो का उल्लेख है। वैद्यदेव के कामरूप ताम्रपत्र मे गौडाधिपति का उल्लेख है (एपि० इ०, II, पृ०, 348)। लक्ष्मणसेन के माधाईनगर ताम्रपत्र-अभिलेख मे कहा गया है कि लक्ष्मणसेन ने अचानक ही गौड राज्य छीन लिया था। उस दानपत्र से यह भी ज्ञात होता है कि अपने यौवन मे लक्ष्मणसेन ने कलिग की रमणियो के साथ विहार किया था। मालव राजाओ (1104-05 ई०) के नागपुर शिलालेख से ज्ञात होता है कि परमार राजा लक्ष्मणदेव ने गौडाधिपति को पराजित किया था (तु०, एपि० इ०, II, पृ० 193)। 554 ई० के हराहा-अभिलेख मे मदोद्धत शत्रुओ को समुद्रतट पर रहने वाला (समुद्राश्रय) कहा गया है (एपि० इ०, XIV, पृ० 110 और आगे)। कुछ लोगों ने मदोद्धत शत्रुओं को गौड बताया है, जो छठी शती० ई० मे प्रायश विजयरत रहते थे। अमोघवर्ष के सजन दानपत्र मे कहा गया है कि ध्रुव ने गौड-नरेश के राजछत्र का अपहरण कर लिया था जब कि वह गंगा-यमुना

के मध्यवर्ती क्षेत्र से भाग रहा था (एपि० इ०, XVIII, पृ० 244)। राज्य-वर्द्धन के उत्तराधिकारी हर्ष ने कामरूप के राजा भाष्करवर्मन से संधि कर ली थी जिसके पिता सुस्थितवर्मन् मृगाक ने महासेनगुप्त से युद्ध किया था। भाष्कर के निधानपुर अभिपत्रो के अनुसार यह सधि गौडो के लिए हितकर नही सिद्ध हुयी। जिस समय ये अभिपत्र प्रचलित किये गये थे, कर्णसुवर्ण पर भाष्कर-वर्मन् का अधिकार था जो गौडाधिपति शशांक की राजधानी थी। भाष्कर द्वारा पराजित राजा जयनाग रहा होगा, जिसका नाम वप्पघोषवाट अभिलेख मे आया है (एपि० इ०, XVIII, पृ० 60 और आगे)। गौड अपनी स्वतत्रता खोकर मौन नही रहे।

गौतम-आश्रम——रामायण (आदिकाण्ड, 48 सर्ग, श्लोक, 15-16) के अनुसार यह आश्रम देवताओ द्वारा सुसम्मानित था। यहाँ पर महर्षि गौतम ने अहल्या के साथ कई वर्षो तक तपस्या की थी। योगिनीतत्र (2.7 8) में इसका वर्णन आता है। यह जनकपुर के समीप स्थित था। कुछ लोगो के मतानुसार यह गोंडा मे था। गौतम न्यायदर्शन के प्रणेता थे। जनक के राजप्रासादकी ओर जाते समय विश्वामित्र, राम एव लक्ष्मण के साथ इस आश्रम मे पधारे थे। वहाँ पर उन्होने गौतम की पत्नी अहल्या के पति द्वारा अभिशप्त होने के कारण जड होने की घटना सुनाई की थी। इस दु:खद घटना के पश्चात् ऋषि ने आश्रम छोड दिया और हिमालय मे आध्यात्मिकचर्या मे तल्लीन रहे। राम ने इस आश्रम को निर्जन पाया था।

गया——महाभारत मे इस पुण्य नगर का वर्णन है (अध्याय, 84,82-97, तु० ब्रह्म पुराण, 67. 19; कूर्मपुराण, 30, 45-48, तु०, अग्निपुराण, 109)। योगिनीतत्र मे भी इसका वर्णन है (1.11,62-63, 2 5,141 और आगे 2.5,166)। गया मे उत्तर की ओर आधुनिक साहबगज शहर और दक्षिण की ओर प्राचीन गया शहर समिलित है। वायु पुराण, II,105 और आगे) मे गया के पुण्य-स्थलों का विवरण है, जिसमें अक्षयवट भी समिलित है (वायु पुराण, 105, 45, 109. 16)। इसी पुराण (अध्याय, 105, श्लोक, 7-8,) के अनुसार गया का नामकरण गय के आधार पर हुआ है, जिन्होने यहाँ पर यज्ञ किया था। गयातीर्थ[1] एक पुण्यस्थल है जहाँ गयासूर ने तपस्या की थी। ब्रह्मा ने गयासूर के सिर पर रखे हुए एक शिला-पट्ट पर एक धार्मिक यज्ञ किया था (वायु-पुराण, अध्याय, 105, 4-5)। एक बार बुद्ध गया में रुके थे और उनसे यक्ष

---

[1] तु०, कूर्म-पुराण, पूर्वभाग, अध्याय, 30, श्लोक, 45-48; अग्निपुराण, अध्याय, 109.

सुचिलोम मिला था (सुत्तनिपात, पृ० 47)। बौद्ध-साहित्य मे गया का वर्णन एक गांव (गाम) और एक तीर्थ (तित्थ) के रूप मे हुआ है।[1] यह वायु पुराण के गयामाहात्म्य मे वर्णित गयापुरी का वाचक है।

फाह्यान्, जो पाँचवी शती ई० मे गया नगर मे आया था, के अनुसार नगर के भीतर चारो ओर सुनसान एव निर्जनता थी (लेग्गे, ट्रावेल्स ऑव फाह्यान, पृ० 87)। युवान-च्वाङ के अनुसार गया की स्थिति सुदृढ थी। यहाँ पर थोडे निवासी और एक हजार से अधिक ब्राह्मण परिवार थे। इस पुर के उत्तर मे तीस 'ली' पहले एक निर्मल स्रोत था, जिसका जल पवित्र माना जाता था। नगर के दक्षिण-पश्चिम मे, पांच या छह ली की दूरी पर गहरे नदकदर एव दुरारोह शिखरो वाला गया पर्वत (गयाशिरस्) स्थित था। इस पर्वत के शिखर पर अशोक द्वारा निर्मित 100 फीट से भी अधिक ऊँचा एक पाषाण स्तूप था। गयापर्वत के दक्षिण-पूर्व मे, कश्यप की नगरी मे भी एक स्तूप था (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ II, पृ० 110 और आगे)।

गयासीस––गयासीस जो गया की प्रमुख पहाडी है, (विनयपिटक, I, 34 और आगे, II, 199; लाहा, ए स्टडी ऑव द महावस्तु, पृ० 81) आधुनिक ब्रह्मयोनि है और महाभारत (III, 95, 9) मे वर्णित गयाशिर एव पुराणो के गयशिर के समान है, (द्रष्टव्य बरुआ, गया ऐड बुद्ध गया, I, पृ० 68)। गया-शीर्ष या गयाशिर गया शहर के दक्षिण मे विषम पहाडी है जो नगर से लगभग 400 फीट ऊँची है (बे० मा० बरुआ, गया ऐड बुद्ध गया, I, 11)। अग्निपुराण (अध्याय, 219, V, 64) मे एक तीर्थस्थान के रूप मे इसका वर्णन हुआ है। योगिनीतंत्र (2. 1. 112-113) मे गयशिर का उल्लेख मिलता है। वाई-कुओ-शिह ने गलती से इस पहाड़ी को धर्मारण्य-आश्रम की सज्ञा दी थी। बौद्धसघ मे भेद उत्पन्न करने के अनतर देवदत्त पाँच सौ भिक्षुओ के साथ गयासीस पर रहा था (जातक, I, 142, विनय पिटक, II, 199; जातक, II,196)। जब तक वह इस पहाडी पर था, उसने यह घोषणा की थी कि जो कुछ भी बुद्ध ने बतलाया है, वह सम्यक सिद्धात नही था और उसका सिद्धात ही ठीक था (जातक, I, 425)। यहाँ पर उसने बुद्ध के कार्यों का अनुकरण करने की भी चेष्टा की थी, किंतु वह असफल रहा (जातक, I, 490 और आगे, जातक, II, 38)। बुद्ध ने यही पर अग्नि-स्कध का प्रवचन दिया था और इसको सुनने के बाद एक हजार जटिलो

---

[1] **सारत्थप्पकासिनी, I, 302; परमात्थजोतिका, II, पृ० 301; तु०, उदान कामेंट्री, (स्यामी संस्करण) पृ० 94.**

ने अर्हत्पद प्राप्त किया था (जातक, IV. 180; संयुत्त० IV, 19; विनय-पिटक, I, 34-35)। यही पर बुद्ध ने अतर्ज्ञान पर भिक्षुओ के समक्ष एक प्रवचन दिया था (अगुत्तर०, IV. 302 और आगे)। राजकुमार अजातशत्रु ने इस पहाडी पर देवदत्त के लिए एक विहार बनवाया था और उसके अनुगामियों को वह नित्यप्रति भोजन दिया करता था (जातक, I, 185 और आगे, 508)। प्राचीन बौद्ध भाष्यों में इसके आकार की हाथी के सिर से अद्भुत समानता के माध्यम से इसके नाम की उत्पत्ति का विवरण दिया है (सारत्थप्पकासिनी, सिंहली सस्करण, 4)।

घोसवान–यह गॉव बिहार के दक्षिण-पश्चिम मे सात मील दूर पर स्थित है। यह एक प्राचीन बौद्ध-सनिवेश का स्थल है, जिसके अवशेष कई टीलो से लक्षित होते है। यहाँ पर वीरदेव ने जिसे देवपाल ने सरक्षित किया था, एक मदिर बनवाया था। यहाँ पर एक बिहार भी बनवाया गया था (आर्क० स० इ०, रिपोर्ट, जिल्द, I, जे० ए० सो० ब०, भाग, XLI, 1872)।

गिञ्जकाबसथ—*यह पाटलिपुत्र के समीप नादिका मे स्थित था* (अगुत्तर०, III, 303, 306, वही, IV, 316; V. 322)।

गिरिव्रज—इस नगर को वसुमती भी कहते थे क्योकि इसका निर्माण वसु ने करवाया था (रामायण, आदिकाण्ड, सर्ग, 32, श्लोक, 7)। इसे राजगृह भी कहा जाता था, जो मगध की प्राचीन राजधानी थी। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, राजगृह।

गोधग्राम—इसे मल्लसारुल के दक्षिण-पूर्व मे दामोदर के तट पर स्थित गोहग्राम से समीकृत किया जा सकता है जो पश्चिमी बगाल मे बर्दवान जिले के गलसी थाने के अधिक्षेत्र के अतर्गत् एक गॉव है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 158)।

गोकुल—यह गाँव बोगरा जिले (बागला देश) मे महास्थान के निकट है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, आ० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1935, 36, पृ० 67)।

गोंद्रम—देवानददेव के बरिपद सग्रहालय के अभिपत्रो एव उड़ीसा के चार अन्य ताम्रपत्रो मे गोद्रम का नाम वर्णित है, जो संक्षाम के बेतुल अभिपत्रो मे वर्णित अष्टादशाटवी राज्य (अठारह आटविक राज्य) के समान प्रतीत होते है (एपि०, इ०, VIII, पृ० 286-87)।

गोपिका—यह नागार्जुनि पहाड़ी की सबसे बडी गुफा का नाम है। यह 40 फीट से अधिक लंबी और 17 फीट से अधिक चौड़ी है और इसके दोनो छोर अर्ध

वृत्ताकार है। इसकी महराबदार छत 4 फीट उन्नत है। प्रवेशद्वार के ठीक ऊपर एक छोटे फलक पर एक अभिलेख है, जिसमे अपने सिंहासनारोहण के अवसर पर दशरथ द्वारा आजीविकों को समर्पित गुहा का आलेख है, (लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज़, पृ० 196, रा० कु० मुकर्जी, अशोक, पृ० 89)।

गोरथगिरि (गोरधगिरि)—यह आधुनिक बराबर पहाडी है (ज० बि० उ० रि० सो०, जिल्द, I, खड, II, पृ० 162; बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इस्क्रिप्शंस ऑन द उदयगिरि ऐंड खडगिरि केव्स, पृ० 224)। इसका वर्णन महाभारत मे हुआ है (सभापर्व, अध्याय, XX, श्लोक, 30—गोरथगिरि आसाद्य दद्दशुर मागधम् पुरम्)। गोरथगिरि से मगध नगर देखा जा सकता है। कुछ लोगो के अनुसार पासाणकचेतिय को या तो गोरथगिरि मे या इसके निकट किसी अन्य पहाड़ी से समीकृत किया जा सकता है (बरूआ, गया ऐंड बुद्ध गया, भाग, I, पृ० 84)। गोरथगिरि को कलिंग-नरेश खारवेल ने ध्वस्त किया था जिसने तब मगध पर आक्रमण किया था। जैन-ग्रथ निसीथचूर्णी (पृ० 18) मे इस पहाडी को गोरगिरि कहा गया है।

गोसिनशालवन—नादिका के समीप यह एक जगली क्षेत्र था। बुद्धघोष के अनुसार इसके नाम पड़ने का यह कारण था कि इस जगल मे स्थित एक विशाल शालवृक्ष के तने से गाय की सीग की भाँति शाखाएँ फूटी थी (पपञ्चसूदनी, II, पृ० 235)।

गोतमक—यह वैशाली मे स्थित एक चैत्य या मदिर था (दीघ, III, पृ० 9-10)।

गोविन्दपुर—यह बिहार के गया जिले मे नवादा तहसील मे स्थित है। यहाँ से कवि गगाधर का एक शिलालेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, II, पृ० 330 और आगे)।

गृध्रकूटपर्वत—(पालि, गिज्झकूट)—यह उन पाँच पहाडियो मे से एक थी जो राजगृह के भीतरी क्षेत्र, गिरिव्रज को परिवृत किये हुये थी। या तो इसके गृद्धाकार शिखर के कारण या इसके शिखर पर चीलो के बैठने के कारण इसका नाम गृध्रकूट पडा था। फाह्यान् के अनुसार गृध्रकूट के शिखर पर पहुँचने के लगभग 3 ली पहले दक्षिणाभिमुख शिला मे एक गुहा है, जहाँ पर बुद्ध ने ध्यान लगाया था। इसके तीस कदम पश्चिमोत्तर मे एक अन्य गुफा है जहाँ आनन्द ने ध्यान लगाया था। जब आनन्द ध्यानस्थ था, तब मार ने एक विशाल गृद्ध का रूप धारण करके इस गुहा के सामने बैठ कर आनन्द को भयभीत किया था। बुद्ध ने अपनी अलौकिक शक्तियो से शिला मे दरार उत्पन्न करके अपने हाथ से आनन्द के कंधे

का स्पर्श किया जिससे तत्काल उसका भय समाप्त हो जाता। चूंकि पक्षी के पदचिन्ह एव बुद्ध के हाथ की दरार अब भी वहाँ पर है, इसीलिए इस पहाड़ी का नाम 'गृध्रगुहाकूट' प्रचलित हो गया है(लेग्गे, ट्रावेल्स ऑव फा-ह्यान्, पृ० 83)। यह वेपुल्ल के दक्षिण मे स्थित था। विमानवत्थु की टीका (पृ० 82) के अनुसार यह मगध मे स्थित एक पहाडी थी। यहाँ नगर के पूर्वी फाटक से पहुँचा जा सकता था। इस पर्वत को गिरियेक पहाडी या युवान-च्वाङ द्वारा वर्णित इन्दसिलागुहा भी कहा जाता था, जो पञ्चाना नदी जो गिञ्झकूट पर्वत से निकलने वाली प्राचीन सप्पिनी ही है, के पार पटना जिले की दक्षिणी सीमा पर स्थित है। कनिघम के अनुसार गिज्झकूट पर्वत शैलगिरि का एक भाग है तथा फाह्यान् द्वारा वर्णित गृध्र शिखर ही है जो राजगिर के दक्षिण-पश्चिम मे छह मील दूर स्थित है। चीनी स्रोतो के प्रमाण को मानकर गृध्रकूट को रत्नगिरि के निकट कही पर स्थित माना जा सकता है। (इस विषय पर चर्चा के लिए द्रष्टव्य, एल० पीटेख, नार्दर्न इडिया, एकार्डिग टु द शुइ-चिग-चु, सीरी ओरियण्टाले रोमा, II, पृ० 45-46)। इस पहाडी के शिखर से एक पत्थर का टुकडा फेंक कर देवदत्त ने बुद्ध की हत्या करने की चेष्टा की थी। इसिगिलि (ऋषिगिरि) के एक ओर इसके सामने कालशिला स्थित थी। मद्दकुच्ची का मृगवन भी इसके निकट ही स्थित था। चूंकि महर्षियो ने यहाँ पर तपस्या करके परम पद प्राप्त किया था इस कारण इसे गृध्रकूट कहा जाता था। इस पर एक शिवलिंग स्थापित किया गया था। इस पहाडी पर शिव के पदचिह्न भी विद्यमान है। यहाँ पर एक गुहा है जहाँ पर तीर्थयात्री अपने पितरो को आहुतियाँ अर्पित किया करते है। यहाँ पर एक वटवृक्ष है। वायु पुराण (108, 61-64) मे यहाँ पर मृत-पूर्वजो की प्रेतात्माओ की स्वर्गप्राप्ति के लिए पिण्डदान देने के लिए एक पुण्य-क्षेत्र का उल्लेख है। गृध्रकूट गया के प्राचीन नगर के निकट था। डॉ० बरुआ के अनुसार यह सोचना कि गयामाहात्म्य मे वर्णित गृध्रकूट, मगध की प्राचीन राजधानी गिरिव्रज या प्राचीन राजगृह को परिवेष्ठित करने वाली पाँच पहाडियों मे से एक थी, गलत है (बे० मा० बरुआ, गया ऐंड बुद्धगया, पृ० 13)।

गुप्तेश्वर--शेरगढ से लगभग आठ मील दूर कैमूर पठार की एक सँकरी विषम घाटी मे स्थित गुफाएँ यही पर है (ओ 'मैल्ली, बिहार ऐंड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर्स, पृ० 170, शाहाबाद)।

हबुवक--पुष्पगिरि-पञ्चाली विषय मे स्थित इस गाँव के दान का उल्लेख एक पूर्वी गंग ताम्रपत्र मे हुआ है। यह दान गुणार्णव के पुत्र महाराज देवेन्द्रवर्मन्

ने पतगशिवाचार्य नामक एक विद्वान् ब्राह्मण शिक्षक को दिया था (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941, पृ० 62 और आगे)।

हजो—यह गाँव असम के कामरूप जिले मे ब्रह्मपुत्र के उत्तरी तट पर गौहाटी से सडक-मार्ग से 15 मील दूर स्थित है। यह एक शिवमदिर के लिए प्रसिद्ध है, जिमे मूलतः किसी ऋषि ने बनवाया था और मुसलमान सेनापति कालापाहार द्वारा नष्ट किये जाने के पश्चात् इसका जीर्णोद्धार किया गया था। यह न केवल हिंदुओ की ही वरन बौद्धो की भी श्रद्धा की वस्तु है (लाहा, होली प्लेसेज़ ऑव इडिया, पृ० 13, असम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, भाग, IV, पृ० 93-94)।

हरिकेल—हरिकेल एक पूर्वी देश था। कुछ लोगो ने इसे वग से समीकृत किया है (इ० हि० क्वा०, II, 322, वही, XIX, 220)। कुछ लोगो की धारणा है कि यह समतट एव उडीमा के मध्य स्थित एक तट-प्रदेश था (हिस्ट्री ऑव बगाल, जिल्द, I, 134-135)। कुछ लोगों का विचार है कि इसे वाकरगज और नोआ-खाली (बागला देश) के कुछ भागो से समीकृत किया जा सकता है (पी० एल०, पाल, अर्ली हिस्ट्री ऑव बगाल, भाग, I, पृ० iii-iv)। कुछ लोग तो यहाँ तक कहते है कि इसे चटगाँव और स्थूल रूप से टिपरा जिले (मेमनसिह) के दक्षिण भाग वाले क्षेत्र से समीकृत किया जा सकता है (इ० हि० क्वा०, XX, 5)।[1] इत्सिग के अनुसार हरिकेल[2] मे (O-li-ki-lo या A-li-ki-lo) दो चीनी पुरोहित आये थे। ये दोनो पुरोहित दक्षिणी समुद्र-मार्ग से हरिकेल आये थे। ऐसा प्रतीत होता है कि हरिकेल एक अतर्वर्ती देश था। यह ताम्रलिपि के उत्तर मे लगभग 40 योजन दूर पर स्थित था। यह पूर्णत मेघना नदी के पश्चिम मे स्थित था। कर्पूरमञ्जरी (निर्णयसागर संस्करण, पृ० 13) के अनुसार यह पूर्वी भारत मे स्थित था (तु०, इडियन कल्चर, XII, 88 और आगे)।

हत्थिगाम—यह वज्जिदेश मे था। राजगृह से कुशीनारा जाते समय बुद्ध यहाँ से गुजरे थे (दीघ निकाय, II, पृ० 123, सयुत्त निकाय, IV. 109)।

हिरण्यपर्वत (सुवर्णपर्वत)—कनिंघम के अनुसार यह पहाड़ी गगा के तट पर स्थित थी (आर्क० स० रि०, XV, पृ० 15-16)। प्राचीन काल के लोग

---

[1] हरिकेल के समीकरण के विषय में द्रष्टव्य, प्रोसीडिंग्स ऑव द इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस, VII, 1944.

[2] इत्सिंग, ए रिकार्ड ऑव द बुद्धिस्ट रिलीजन, तकाकुसू कृत अनुवाद, पृ० xlvi.

इसे मोदागिरि कहते थे जैसा कि महाभारत मे कहा गया है। इसे मुद्गलगिरि भी कहते थे जिसे बिहार मे आधुनिक मुगेर से समीकृत करते है। ग्यारहवी शताब्दी में इसे मुन-गिरि कहा जाता था (अल्बेरुनी कृत 'इडिया', I, पृ० 200)। उत्तर मे इसकी सीमाएँ गगातट पर स्थित लक्ष्मीसरॉय से सुल्तानगज तक और दक्षिण मे पार्श्वनाथ पहाड़ो के पश्चिमी सिरे से बराकर एव दामुदा नदी के सगम तक निर्धारित की जा सकती है (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 545 और आगे)।

इचामती—इचामती ढाका जिले (बागला देश) की एक प्राचीनतम नदी है। यह घलेश्वरी और पद्मा के बीच मे प्रवाहित होती है। विस्तार के लिए द्रष्टव्य, लाहा रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 33)।

इन्दकूट—यह राजगृह के समीप एक पहाड़ी थी (सयुत्त, I, 206)। इस पहाडी पर इदक यक्ख का निवास था। अनुमानत. यह एक प्रागैतिहासिक मदिर था (सयुत्त०, I, 206)। या तो पहाड़ी का नामकरण यक्ख के आधार पर या यक्ख का नाम पहाडी के आधार पर पडा था (सारत्थप्पकासिनी, I, 300)। यक्ख का निवासस्थान पत्थर से बने हुये एक महाकक्ष की भाँति था, जो एक पुण्यवृक्ष से लक्षित होता था। यह पहाडी या तो गिज्झकूट के सामने या इसके पार्श्व मे स्थित थी (सयुत्त०, I, 206)।

इन्दसाल-गुहा—इन्दसाल-गुहा का वर्णन भरहुत के छठे जातक लेपपत्र मे प्राप्त होता है। इसका नामकरण इसके द्वार पर स्थित इन्दसाल वृक्ष के आधार पर हुआ है (बरुआ ऐड सिन्हा, भरहुत इस्क्रिप्शस, पृ० 61)। अम्बसण्ड नामक गाँव, जो राजगृह के क्षेत्र के बाहर किंतु मगध के अन्तर्गत् है, मे वेदियक पर्वत मे इस गुहा की स्थिति का आभास मिलता है जो इसके उत्तर मे है। इसी गुफा मे बुद्ध ने देवराज इन्द्र के लिए सक्कपञ्ह सुत्तात का प्रवचन किया था (दीघ०, II, पृ० 263-4, 269)। फाह्यान एव युवान-च्वाड् ने इस गुफा के लिए एक चीनी नाम इन-टो-लो- शी-ओ-किया- हो-शन (In-to-lo-shi-io-kio-ho-shan) बतलाया है जो सस्कृत इन्द्रशैलगुहा-पर्वत का वाचक है। फाह्यान् के अनुसार यह गुफा और पर्वत पाटलिपुत्र के दक्षिण- पूर्व मे 9 योजन दूर पर और युवान-च्वाङ के अनुसार कालपिनाक शहर के पूर्व मे 30 ली (लगभग 5 मील) दूर पर स्थित था। कनिघम ने इसे येनकेन प्रकारेण राजगिरि से छह मील दूर स्थित गिरियेक पर्वत से समीकृत किया है (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, मजूमदार सस्करण, 539 और आगे, बरुआ ऐड सिन्हा, भरहुत इस्क्रिप्शस, पृ० 126, लाहा, ज्यॉग्रफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 42)।

इसिगलिपिस्स–यह राजगृह को परिवेष्ठित करने वाली पाँच पहाडियो मे से एक है (मज्झिम, III, 68 और आगे; परमात्थजोतिका, II, 382, विमान वत्थु अट्ठकथा, पृ० 82)। विभिन्न युगो मे इसिगिलि के अतिरिक्त सभी पाँचो पहाडियों के भिन्न-भिन्न नाम रहे है (मज्झिम, III, 68 और आगे)। महाभारत (II, 21. 2) मे इस पर्वत को ऋषिगिरि कहा गया है। सन्यासी गुरुओ का निगरण कर लेने के कारण (इस गिलतीति इसिगिलि) (मज्झिम, III, 68, पपञ्चसूदनी, II, पा० टे० सो०, पृ० 63) इस पर्वत का नाम इसिगिलि पडा (चाल्मर्स, फरदर डायलाग्स ऑव द बुद्ध, II, पृ० 192)। इस पहाडी के पार्श्व मे कालशिला नामक एक पहाडी थी जिस पर गोधिक एव वक्कलि ने आत्महत्या की थी (सयुत्त०, I, 120 और आगे, III, 123-124)। इसिगिलिपस्स की कालशिला पर भिक्षु निवास करने के लिए इच्छुक रहते थे (विनय, II, पृ० 76)। बुद्ध राजगृह मे इस पर्वत पर रुके थे और उन्होने भिक्षुओ के समक्ष प्रवचन दिया था (मज्झिम, III, पृ० 68)। राजगृह के स्थलो के उनके सुखद सस्मरण सुस्पष्ट रूप से महापरिनिब्बान सुत्तात मे सकलित है। उन्होने आनन्द से कहा था कि वह इसिगिलिपस्स मे कालशिला पर रहेगे (दीघ०, II, 116, और आगे)। एक बार बुद्ध यहाँ महामोग्गलान सहित अनेक भिक्षुओ के साथ रुके थे। बुद्ध की उपस्थिति मे ही थेर वगीस ने महामोग्गलान की बहुत प्रशसा की थी (सयुत्त०, I, 194-195)। सारिपुत्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही बुद्ध राजगृह आये और वेणुवन मे अपना आवास बनाया। इस समय एक स्थविर जिसने दैवी शक्तियो मे पूर्णसिद्धि प्राप्त की थी, इसिगिलि पर्वत के ढाल पर रहता था। विधर्मियो ने उनकी हत्या करने के कई निष्फल प्रयत्न किये थे (जातक, स० 522, भाग, V)। पालिग्रथ इसिगिलिसुत्त के अनुसार 500 प्रत्येक बुद्ध (पच्चेकबुद्ध) इस पहाडी के चिर निवासी थे (चिरनिवासिनो)। उन्हे इस पहाडी मे प्रविष्ट होते हुये देखा गया था किंतु निकलते हुये नही। इस सुत्त मे उनमे से अनेक का नाम वर्णित है (मज्झिम III, 68-71)। डॉ० बरुआ का विचार है कि इन तपस्वियो के निधन से इसिगिलि पर्वत पवित्र हुआ था (कलकत्ता रिव्यू, 1924, पृ० 61)।

इसिगिलि नाम स्पष्टत. सस्कृत शब्द ऋषिगिरि, जिसका अर्थ तपस्वियो का पर्वत है, का स्थानीय या मागधी रूप था। बुद्ध के काल मे ही अपनी प्राकृतिक वर्त्तिनी मे इस नाम को एक जनप्रिय व्युत्पत्ति मिल गयी थी, जो विलक्षण होते हुये अपना कुछ महत्त्व रखती थी।

इटखोरी—यह चपारन से लगभग 10 मील दक्षिण मे है जो ग्रैंड ट्रंक रोड पर गया से देनुआ दर्रे के सिरे पर स्थित है। हजारीबाग जिले का यह एक अत्यत

उपेक्षित स्थान है, जहाँ पर हिंदू, बौद्ध एवं जैन देवताओ की कई पाषाण-प्रतिमाएँ बिखरी हुयी मिली हैं। इसके समीप ही एक विस्तृत जगल है। यहाँ से तारा की प्रतिमा पर उत्कीर्ण राजा महेन्द्रपाल का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है (आर्क्० स० इ० रि०, 1920-21, पृ० 35, लिस्टरकृत बिहार ऐड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, 1917, पृ० 201, हजारीबाग)।

जह्नु-आश्रम—जह्नु-ऋषि का यह आश्रम भागलपुर के पश्चिम मे सुल्तानगज में स्थित था। इस आश्रम-स्थल पर स्थित गैबीनाथ महादेव का मदिर, सुल्तानगज के सामने गगा के तट से निकलने वाली एक शिला पर स्थित है,। समुद्र की ओर गगा के प्रवाहपथ मे जल के वेग के द्वारा उक्त ऋषि की समाधि मे विघ्न उत्पन्न होने के कारण उन्होने इसे एक ही घूँट मे पी लिया था। बाद मे भगीरथ की मध्यस्थता से जह्नु ने इसे अपनी जाँघ या जह्नु काट कर मुक्त किया। इसी कारण गगा को जाह्नवी या जह्नु ऋषि की पुत्री कहा जाता है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 14, ज० ए० सो० ब०, X 1914, XXXIII, पृ० 360, कनिघम, आर्क्० स० रि०, XV 21)।

जैन्तिया—यह पहाडी बरैल पर्वत माला के पूर्व मे स्थित है। उत्तर मे यह क्रमश ब्रह्मपुत्र की घाटी से उठती है और दक्षिण मे सूरमा की घाटी की ओर एकाएक ढाल बनाती है (लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 9)।

जपला—सोन नदी के तट पर स्थित हुसेनाबाद नामक एक छोटे परगने का यह प्राचीन नाम है। पहले यह गया जिले मे था (ओ 'मैल्ली, बिहार ऐड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पृ० 183, पालामऊ)।

जयपुर—देवानददेव के बरिपद सग्रहालय अभिपत्र मे इस स्थान का उल्लेख प्राप्त होता है। अनुमानतः यह उडीसा के नदवश की राजधानी थी और इसे धेनकनल मे स्थित जैपुर नामक एक गाँव से समीकृत किया गया है (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, पृ० 74 और आगे, ज० बि० उ० रि० सो०, XV, 89, XVI, 457 और आगे, XVII, 17, भंडारकर की तालिका, न० 2076)।

जीवक-अंबवन—यह वेणुवन की अपेक्षा जीवक के आवास के अधिक समीप था (सुमगलविलासिनी, I, 133)। जीवक ने इस आम्रवन को एक विहार के रूप में परिवर्तित कर के इसे बुद्ध और इनके सघ को दान दे दिया था। यहाँ मगध-नरेश अजातशत्रु आया था (विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा का लेख, राजगृह इन ऐश्येट लिटरेचर, मे० आर्क्० स० इ०, न० 58)।

झामटपुर—यह कटवा से (काटद्वीप) चार मील उत्तर मे स्थित एक

गाँव है। कटवा श्रीचैतन्यचरितामृत के प्रसिद्ध लेखक कृष्णदास कविराज का निवास स्थान था (लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज़, पृ० 220)।

कैलान—समतट के श्रीधरण राट के नये कैलान-अभिपत्र में इस गाँव का उल्लेख हुआ है जो त्रिपुरा की सदर तहसील मे चादीना थाने के अतर्गत् है। यह चादीना से लगभग 10 मील दक्षिण मे है (इ० हि० क्वा०, XXII और XXIII)।

कजंगल (कयंगल)—यह विस्तृत पहाडी क्षेत्र अङ्ग के पूर्व मे स्थित था और उत्तर-पूर्व मे गगा से दक्षिण-पूर्व मे सुवर्णरेखा तक फैला हुआ था। यह एक ब्राह्मण गाँव था जो नागसेन का जन्मस्थान था (मिलिन्दपञ्हो, पृ० 10)। एक बार बुद्ध कजंगल के वेलुवन मे ठहरे थे (अगुत्तर निकाय, V. 54)। कजगल के मुखेलुवन मे अपने प्रवास के समय बुद्ध ने इन्द्रियभावनामुत्त का प्रवचन दिया था (मज्झिम निकाय, III. 298)। बुद्ध के काल मे यहाँ पर सुगमता मे भोजन मिल जाता था (दव्बसंभारा सुलभा—जातक, IV, 310)। महावग्ग (विनय टेक्स्ट्स, सैं० बु० ई०, II, 38) और सुमगलविलासिनी (II. 429) मे इसे महाशाल नामक ब्राह्मण गाँव के आगे मध्यदेश की पूर्वी सीमा बतलाया गया है। यह युवान-च्वाङ द्वारा वर्णित का-चु-वेन-की-लो (Ka-chu-wen-ki-lo) है। इसकी परिधि 2000 'ली' थी और उत्तर मे गगा नदी इसकी सीमा थी। यह कही राजमहल क्षेत्र मे स्थित था। यह पूर्वदेश की पश्चिमी सीमा थी। इसके दक्षिण पूर्व मे सलल्वती नाम की एक नदी थी।

कलंदकनिवाप—यह वनस्थली राजगृह के वेलुवन मे थी जहाँ पर बुद्ध एक बार ठहरे थे (अगुत्तर०, II पृ० 35, 172, 179, III, 35, IV 402, मज्झिम०, III, पृ० 128)। राजा बिम्बिसार ने इस वेणुवन को बुद्ध को दान दे दिया था। यह बाग राजगृह के बहिर्माग मे न तो बहुत दूर और न तो बहुत निकट ही स्थित था किंतु फिर भी अत्यत अनुकूल वातावरण मे स्थित यह एक शान्तिपूर्ण आवास था (विनयमहावग्ग, I, 39; फॉसबाल, जातक, I, 85)। यहाँ पर नियमित रूप से गिलहरियो को भोजन दिये जाने के कारण, इसका यह नाम पड़ा था (समन्तपासादिका, III, 575)। जिस समय बुद्ध यहाँ ठहरे थे उस समय छह भिक्षुणियो का एक समूह गिरग्गसमज्जा नामक एक प्रकार के पर्व मे भाग लेने के लिए कलंदकनिवाप मे आया था (विनय, IV. 267)। जब बुद्ध यहाँ पर थे उस समय उस युग का गिरग्गसमज्जा नामक एक अत्यत लोकप्रिय सगीत छह भिक्षुओं के दल की उपस्थिति मे आयोजित किया गया था (विनय, II, 107)।

कलवालगाम—यह गाँव मगध मे था। सघ मे दीक्षित होने के सातवे दिन

इस गाँव के निकट रहते हुए मोग्गलान तद्रा के वशीभूत हुये थे। बुद्ध की प्रेरणा से मोग्गलान ने तद्रा का परित्याग करके ध्यान को पूर्ण किया। तब उन्होंने अर्हतपद प्राप्त किया (धम्मपद कामेट्री, I, 96)।

कपिलाश्रम—योगिनीतत्र (2 9, पृ० 214 और आगे) मे इसका वर्णन आता है। बृहद्धर्मपुराण (अध्याय, 22) मे भी इसका उल्लेख प्राप्त होता है। यह आश्रम गगा के मुहाने के निकट सागर द्वीप मे स्थित है।

करणगढ (करणागढ़)—भागलपुर जिले मे भागलपुर शहर के समीप यह एक पहाडी है और धर्मात्मा हिंदू राजा कर्ण के आधार पर इसका यह नाम पड़ा है। यहाँ की एक मात्र उल्लेखनीय वस्तुओ मे स्वल्प ख्याति वाले शैवमदिर हैं, जिनमे मे एक अत्यत प्राचीन है (बिर्ने, बगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, 1911, पृ० 166, भागलपुर)।

करतोया—यह ब्रह्मपुत्र की एक शाखा है। यह कामरूप की पश्चिमी सीमा थी (तु० महाभारत, वनपर्व, अध्याय, 85)। पद्मपुराण (अध्याय, 21) मे यह एक पुण्य नदी के रूप मे वर्णित है। मार्कण्डेय पुराण (57, 21-25) और योगिनीतत्र (1 11.60; 1 12, 69; 2 1, 114) मे भी इसका वर्णन आता है। कालिकापुराण (अध्याय, 51, 65 और आगे, अध्याय, 58, 37) के अनुसार यह नदी 30 योजन लबी एव 100 योजन चौडी थी। यह नदी रंगपुर जिले (बागला देश) मे दोमाग के पहले निकलती है और इसी जिले मे बाँई ओर मे इसमे एक सहायक नदी तथा बोगरा जिले (बागला देश) में बाँई ओर से एक अन्य नदी मिलती है। कुछ लोगो ने इसे सदानीरा मे समीकृत किया है (तु० अमरकोष, I 2, 3, 32, हैमकोष, IV. 151; लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 24 विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 32-33)।

कर्णफुली—कर्णफुली, जिसका कैचा नाम अधिक लोकप्रिय है, चटगाँव (बांगला देश) और चटगाँव के पहाडी क्षेत्र की तीन प्रमुख नदियो मे सबसे बड़ी है। यह ल्युशाई पहाडियों से निकलती है जो चटगाँव के पर्वतीय क्षेत्र को असम के दक्षिण-पश्चिमी भाग से मिलाती है, और यह दक्षिण-पश्चिम मे चटगाँव के पहाड़ी क्षेत्र के मुख्यावास राँगामाटी तक बहती है। राँगामाटी और चटगाँव शहर के बीच इसे कई छोटी सहायक नदियाँ आपूरित करती है। यह राँगामाटी तक संतरणीय है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 36)।

कर्णसुवर्ण—भास्करवर्मन् के निधानपुर-अभिपत्रो के प्रचलन करते समय,

कर्णसुवर्ण, जो किसी समय गौडाधिपति शशाक की राजधानी थी, भाष्कर के अधिकार में थी (एपि० इ०, XII, पृ० 65-79)। जयनाग कर्णसुवर्णक का निवासी था और जिस समय वह यहाँ था, उसने एक दानपत्र प्रचलित किया था, जिसकी तिथि छठवी शती ई० के उत्तरार्द्ध मे अनुमानित की जाती है (एपि० इ०, XVIII, पृ० 63)। महासामंत शशाकदेव की मुहर के पत्थर के साँचे मे इसका वर्णन मिलता है (का०इ० इ०, जिल्द, III)। मुर्शिदाबाद जिले मे गंगा के पश्चिमी तट पर स्थित राँगामाटी को कर्णसुवर्ण का स्थल माना जाता है। यह बदेल से 94 मील दूर और चिरती रेलवे स्टेशन से $1\frac{1}{2}$ मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है। यहाँ की मिट्टी लाल और कठोर है और इससे इस स्थान के नामकरण का सूत्र मिलता है। कुछ लोगो के अनुसार यह नाम रक्तभृत्ति या रक्तभित्ति (लो-तो-वेई-ची) (Lo-to-wei-chi) नामक एक प्राचीन बौद्ध विहार के नाम से ग्रहण किया गया है, जिसे युवान-च्वाड ने सातवीं शताब्दी ई० मे कर्णसुवर्ण मे स्थित देखा था। इस राज्य की परिधि, जिसे चीनी लोग की-लो-ना-सु-फा-ला-ना (Kie-lo-na-su.fa-la-na) कहते थे, 1400 या 1500 'ली' थी। यहाँ की आबादी घनी थी, और गृहस्थ धनी थे। यहाँ की भूमि पर नियमित रूप से खेती होती थी और यहाँ फूलो का प्रचुर उत्पादन होता था। यहाँ की जलवायु सुखद थी। यहाँ के निवासी ईमानदार, मृदुव्यवहारी तथा मिलनसार थे। वे विद्या-प्रेमी थे। जनता मे आस्तिक एव विधर्मी दोनो ही थे। वहाँ पर कुछ संघाराम एव देवमदिर थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 201)। यहाँ पर कुषाण एव गुप्तयुगीन अनेक मुद्राएँ, ठाकुर-वाडी-दाँगा, राजवाडीदाँगा, सन्यासी-दाँगा आदि नामो से विश्रुत ईंटे और मिट्टी के कुछ टीले तथा कई तालाब उपलब्ध हुये है। यहाँ से महिषमर्दिनी नामक एक अष्टभुजी हिंदू देवी की पाषण-प्रतिमा प्राप्त हुयी है।

करूष—रामायण के अनुसार (बालकाण्ड, XXVII, 18-23) करूषो का देश या करुषदेश शाहाबाद जिले (बिहार) मे स्थित।प्रतीत होता है। सोन और कर्मनासा नदियो के बीच मे स्थित दक्षिणी-शाहाबाद जिले को करूषदेश कहते थे (मार्टिन, ईस्टर्न इडिया, I, पृ० 405)। इसकी पुष्टि शाहाबाद जिले मे मसार से उपलब्ध एक आधुनिक स्थानीय अभिलेख से होती है, जिसमे इस क्षेत्र को करूषदेश की सज्ञा से अभिहित किया गया है (कनिंघम, आर्क० स० रि०, III, 67-71)। ब्रह्माण्ड पुराण मे (पूर्वखड, अध्याय, 5) वेदगर्भपुरी या आधुनिक बक्सर को करूषदेश मे स्थित बतलाया गया है। इस देश के करूष नामक निवासियो ने कुरुक्षेत्र के युद्ध मे पाण्डवों के साथ लडाई की थी (द्रष्टव्य, महाभारत के उद्योग,

भीष्म एवं द्रोणपर्व)। उन्हे क्रिसेई (Chrysei) से समीकृत किया जा सकता है (एम० वी० सेंट मार्टिन, एतुदे सुर ला ज्यॉग : ग्रेक, पृ० 199 (Etude sur la Geog : Grecque)। करूषों के दध्र नामक एक राजा की हत्या उसके पुत्र ने की थी (हर्षचरित्, छठवाँ उच्छवास)। कौटिल्य के अर्थशास्त्र (पृ० 50) के अनुसार करूषदेश के हाथी, अङ्ग एव कलिंग के हाथियो से हीन थे। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया, पृ० 87-89)।

कस्सपकाराम—यह विहार राजगृह मे था (सयुत्त, III, पृ० 124)।

कौशिकी—कामरूप-नरेश भाष्करवर्मन् के निधानपुर-राजपत्र मे वर्णित यह एक नदी है। रामायण (आदि पर्व, अध्याय, 34); महाभारत, (अध्याय, 110, 20-22), वाराहपुराण, (अध्याय, 140) और पद्मपुराण (अध्याय, 21) मे भी इस नदी का उल्लेख हुआ है। हिमालय पर्वत से निकलने वाली महाकौशिकी नदी के रूप मे कालिकापुराण मे भी (अध्याय, 14 14, अध्याय, 14 31) इसका वर्णन आता है। पच-खड नामक क्षेत्र से बहने वाली सिलहट की कुमियारा नदी से इसे समीकृत किया गया है। किंतु, इसके समीकरण के विषय मे मतभेद है (इडियन कल्चर, I, पृ० 421 और आगे)। हटर ने बतलाया है कि कुशी या कौशिकी पहले करतोया नदी मे मिलती थी (स्टेटिस्टिकल एकाउट ऑव बगाल, पूर्णिया)। इस नदी के प्रवाह मार्ग मे परिवर्तन होते रहते है (ज० ए० सो० ब०, LXIV, पृ० 1-24)।

कादबरी—यह चपा के निकट एक जगल था। इसके समीप काली नामक एक पहाड था। पार्श्वनाथ यहाँ लगभग चार महीनो तक कालीकुण्ड के सामने घूमते रहे जो एक विशाल सरोवर था (बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 177)।

कालशिला—ऋषिगिरि (इसिगिलि) के ढाल पर यह एक काली चट्टान थी (दीघ, II, 116, पपञ्चसूदनी, II, 63)। यह शिला गिज्झकूट के इतनी समीप थी कि बुद्ध के लिए वहाँ से जैन मुनियो को देखना सभव था जो आसनों का बहिष्कार करके वहाँ खडी मुद्रा मे घोर तप का अभ्यास कर रहे थे (मज्झिम निकाय, I, 92)। इसी शिला पर गोधिक एव वक्कलि ने आत्महत्या की थी (सयुक्त निकाय, I, 120 और आगे; III, 124)। कालशिला जैनग्रथ उवासग-दसाओ मे वर्णित गुणशिलाचैत्य नामक स्थान के अतिरिक्त सभवतः और अन्य कोई जगह नही थी।

कालना—यह वर्दवान जिले मे है और हिंदुओ का एक अत्यत पवित्र स्थान

माना जाता है। यह सूर्यदास, गौरीदास, जगन्नाथदास और भगवानदास नामक प्रसिद्ध वैष्णव संतों का आवास था। यह अंबिका-कलना नाम से भी प्रसिद्ध है (इंट्रोड्यूसिंग इंडिया, भाग, I, पृ० 76)।

कामरूप—यह उत्तर में भूटान से, पूरब मे दरंग और नवगाँव जिलों से, दक्षिण मे खासी पहाड़ियों और पश्चिम मे गोलपारा से घिरा हुआ है। कामरूप का बृहत्तर भाग एक विशाल मैदान है जिसके निचले भाग से ब्रह्मपुत्र अविरत रूप से पूर्व से पश्चिम में प्रवाहित होती रहती है। इस नदी के दक्षिण मे यह मैदान पहाडियो द्वारा बहुत खंडित है (बी० सी० एलेन, असम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, भाग, IV, अध्याय, I, कामरूप)। इलाहाबाद स्तभ लेख मे इसका वर्णन गुप्त-साम्राज्य की सीमाओ के बाहर स्थित एक प्रत्यत राज्य के रूप मे हुआ है, जिसकी राजधानी प्राग्ज्योतिषपुर थी (कालिकापुराण, अध्याय, 38) जिसे आधुनिक गौहाटी से समीकृत किया गया है (ज० रा० ए० सो०, 1900, पृ० 25)। कामरूप के प्राचीन राज्य मे साधारणतया आधुनिक असम प्रदेश की अपेक्षा अधिक विशाल क्षेत्र समिलित था और पश्चिम मे यह करतोया नदी तक फैला हुआ था। योगिनीतत्र (1.11, 60.61, 1 12, 68, 2 2, 119) के अनुसार कामरूप-राज्य मे रंगपुर (बागला देश) और कूचबिहार के सहित ब्रह्मपुत्र (लौहित्य) की सपूर्ण घाटी समिल्ति थी (इपीरियल गजेटियर ऑव इडिया, XIV, पृ० 331)। इस राज्य मे मनीपुर, जैन्तिया, कछार, पश्चिमी असम और मैमनसिंह (बागला देश) तथा सिल्हट (बागला देश) के कुछ भाग समिलित थे। आधुनिक जिले गोल्पारा मे गौहाटी तक फैले हुए थे (लासेन, इ० ऐ०, I, 87, II, 973)। कामरूप देश की परिधि लगभग 10,000 ली और इसकी राजधानी की लगभग 30 ली थी। यहाँ की भूमि नीची होने के बावजूद भी निरतर जोती जाती थी। वैद्यदेव कामरूप राज्य का शासक था। (एपि० इ०, II, पृ० 355)। वैद्यदेव के कमौली-दानपत्र मे प्रदत्त गॉव को कामरूपमडल एव प्राग्ज्योतिष-भुक्ति मे स्थित बतलाया गया है (एपि० इ०, II, 348)। कामरूप का नरेश समुद्रगुप्त को कर दिया करता था (फ्लीट, का० इ० इ०, III, पृ० 6-8)। ग्यारहवी शताब्दी ई० मे उत्कीर्ण सिल्मिपुर-अभिलेख के अनुसार, कामरूप-नरेश जयपाल ने वरेंद्री के एक ब्राह्मण को स्वर्णमुद्राएँ दी थीं (एपि०इ०, XIII, 292, 295)। देवपारा एव माधाईनगर से उपलब्ध ताम्रपत्र के अनुसार, विजयसेन और लक्ष्मणसेन ने कामरूप पर विजय प्राप्त की थी। भोजवर्मन् के वेलाव ताम्रपत्र से हमें ज्ञात होता है कि राजा वज्रवर्मन् ने कामरूप-नरेश को अशक्त कर दिया था (न० गो० मजूमदार, इन्स्क्रिप्शंस ऑव बगाल, भाग, III, पृ० 15

और आगे)। लक्ष्मणसेन के इंडिया-आफिस के अभिपत्रों मे कलिंग, काली आदि के साथ कामरूप का उल्लेख हुआ है (एपि० इं०, XXVI, भाग, I)। कामरूप को प्राग्ज्योतिष भी कहा जाता है, किंतु रघुवश मे (IV. 83-84) का रूप एव प्राग्ज्योतिष के जनो को दो भिन्न राष्ट्र बतलाया गया है। प्राग्ज्योतिष के राजा ने अपनी पग-धूलि से अभिचार-कृत्य किये थे (विस्तार के लिए द्रष्टव्य बि० च०, लाहा, प्राग्ज्योतिष, ज० उ० प्र० हि० सो०, XVIII, भाग, I, और II, पृ० 43 और आगे)।

1912 मे सिलहट जिले (बागला देश) के पच खड परगने के अतर्गत् निधानपुर[1] नामक गाँव से तीन ताम्रपत्र प्राप्त हुये थे। ये अभिपत्र कामरूप-नरेश भास्कर-वर्मन् द्वारा उसके कर्णसुवर्ण के स्कधावार से ब्राह्मणो को दिये गये भूमिदान के अश है। बाद मे दो और अभिपत्र उपलब्ध हुये थे। कामरूप-नरेश वैद्यदेव की आज्ञा से उत्कीर्ण ताम्रपत्र वाराणसी के समीप कमौली से प्राप्त हुये है (एपि० इ०, II, 347 और आगे)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, इ० हि० क्वा०, भाग, VI, न० 1, पृ० 60 और आगे)।

चीनी तीर्थयात्री युवान-च्वाड् के अनुसार कामरूप देश, जिसे चीनी लोग किया-मो-लिउ-पो (Kia-mo-leu-po) कहते थे, पुण्ड्रवर्धन के पूरब मे 900 'ली' (या 150 मील) आगे स्थित था और इसकी परिधि 10,000 'ली' थी। यह स्थान नीचा और नम था और यहाँ पर फसले नियमित रूप से होती थी। यहाँ की जलवायु सुखद और निवासी ईमानदार थे। वे अध्यवसायी विद्यार्थी होते थे और छोटे कद तथा साँवले रंग के थे। चीनी तीर्थयात्री ने यहाँ पर अशोक-युगीन कोई स्मारक नही देखा था। यहाँ के निवासी बौद्ध-मत मे विश्वास नही करते थे। कुछ लोगो की धारणा है कि कुछ शताब्दियो तक कामरूप मे महायान बौद्धधर्म का एक अत्यत विकृत रूप प्रचलित था (के० एल० बरुआ, अर्ली हिस्ट्री ऑव कामरूप, पृ० 304)। यहाँ पर बहुसख्यक देवमदिर और विविध सप्रदायो के निष्ठावान समर्थक थे। राजा विद्या-प्रेमी था और उसकी प्रजा उसका अनुगमन करती थी। यद्यपि राजा स्वय बौद्ध नही था, किंतु वह प्रवीण भिक्षुओ का यथोचित सम्मान करता था।

उत्तर-पूर्व मे कामरूप स्वतत्र प्रतीत होता है और यह अशोक के धर्मप्रचार

---

[1] भास्करवर्मन् के निधानपुर दानपत्र को नाधनपुर दानपत्र भी कहते हैं (द्रष्टव्य कत्रे एवं गोडे द्वारा संपादित, ए वाल्यूम ऑव ईस्टर्न ऐण्ड इंडियन स्टडीज प्रजेंटेड टु एफ० डब्ल्यू० टॉमस, पृ० 85 और आगे)।

के क्षेत्र के बाहर बना रहा। प्रत्यंत नृपतियो एव गणराज्यो की गणना से, जिनके शासक समुद्रगुप्त की अधीनता मानते थे ओर उसे कर देते थे, उसके राज्य की निश्चित सीमाएँ निर्धारित करने और चौथी शताब्दी ई० में भारत के राजनीतिक प्रभागों का स्वरूप समझने मे हमे सहायता मिलती है (वी० ए० स्मिथ, अशोक, तृतीय सस्करण, पृ० 81; अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, 1924, स० 302)। दीर्घकाल तक यहाँ पर ब्राह्मण धर्म का प्रभुत्व बना रहा। यद्यपि यह गुप्तवंशीय महान् राजाओ को कर देता था, किंतु आतरिक प्रशासन मे इसकी स्वाधीनता बनी रही। राज्यवर्धन के उत्तराधिकारी हर्ष ने कामरूप-नरेश भाष्करवर्मन् से संधि कर ली थी, जिसके पिता सुस्थितवर्मन मृगाक ने महासेनगुप्त से युद्ध किया था। सुस्थितवर्मन् के लौहित्य (लौहित्य) या ब्रह्मपुत्र नदी से सबधित होने से यह स्पष्टत प्रकट होता है कि वह कामरूप का राजा था। पालवशीय धर्मपाल के पुत्र एव उत्तराधिकारी देवपाल ने कामरुप पर विजय प्राप्त की थी। रामचरित् के अनुसार रामपाल ने भी इसे जीता था। वारबार गौड नरेशो ने भी इसे जीता था। कामरूप राज्य बगाल के कुछ पाल-नरेशों के साम्राज्य मे समिलित था। चन्द्र-नरेश बालचन्द्र के पुत्र विमलचन्द्र ने कामरुप पर शासन किया था। तेरहवी शताब्दी ई० के प्रारंभ से इस देश पर अहोम प्रमुख ने अपना शासन स्थापित कर लिया था।

कामाख्या—असम मे यह एक तीर्थस्थान है (बृहत्-धर्मपुराण, I, 14, कालिकापुराण, अध्याय, 62)। गौहाटी के समीप कामाख्या मे स्थित शिव की पत्नी, शक्ति का मदिर प्राचीनकाल मे प्रसिद्ध था। तत्रो मे समझायी गयी ऐंद्रिय पूजा-पद्धति का यह महान् केंद्र था। यहाँ पर महामाया नामक एक देवी थी जो मानवीय इच्छाओ को पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर रहती थी (कालिकापुराण, पूर्व खड, अ० 12) और योगिनीतंत्र मे कई राजाओ के नाम सुरक्षित है, जिनकी उपाधियों से आदिमवासियो से उनकी उत्पत्ति का रहस्य प्रकट होता है और जिनका उत्तराधिकारी प्राग्ज्योतिष्पुर नामक प्राचीन एव प्रसिद्ध शहर का सस्थापक नरक था। परपरा के अनुसार नरक ने करतोया नदी से ब्रह्मपुत्र-घाटी के पूर्वी छोर तक शासन किया था। नरक का पुत्र भगदत्त, दुर्योधन का मित्र था (महाभारत, उद्योगपर्व, अध्याय, 4)। कामरूप मे कामाख्या का मदिर इस मत के उपासको की श्रद्धा की एक विशेष वस्तु है क्योकि यह उस स्थान पर स्थित बतलाया जाता है जहाँ पर विष्णु द्वारा शक्ति का शरीर छिन्न-भिन्न किये जाने पर उसकी जननेंद्रिय गिरी थी। किंतु असम के निवासियो मे शाक्त मत लोकप्रिय नही है। शक्ति की पुरुष-प्रतिमूर्ति शिव के उपासक, अधिकांशतः सूरमा-घाटी मे पाये

जाते हैं। अपने सिद्धातों की विलक्षणता के लिए उल्लेखनीय सहजभजन एक अन्य छोटा संप्रदाय है। इस मत का प्रत्येक उपासक किसी स्त्री को अपना आध्यात्मिक मार्ग-दर्शक मान कर मुक्ति प्राप्त करने की चेष्टा करता है। गौहाटी के समीप नीलाचल पहाडी पर स्थित कामाख्या और गौहाटी के पश्चिमोत्तर मे सडक मार्ग पर लगभग 15 मील दूर पर स्थित हजो मे हयग्रीव माधव के मदिर महत्त्वपूर्ण देवालय है। (विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बनीकात ककती कृत, द मदर-गॉडेस कामाख्या, 1948)।

कामतापुर—यह कूच बिहार शहर के दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 19 मील की दूरी पर स्थित है। अब यह उजाड है। अपने ईस्टर्न इडिया नामक ग्रथ मे डॉ० बुखनान हैमिल्टन ने इस स्थान का एक रोचक विवरण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार काम्तापुर तीन ओर से लगभग 20 से 40 फीट ऊँची मिट्टी के एक प्राकार से सुरक्षित था। पठानो ने अत्यत महत्त्वपूर्ण काम्तेश्वरी मदिर को नष्ट किया था।

केदारपुर—फरीदपुर जिले (बागला देश) मे पालग थाने के अधिकारक्षेत्र के अन्तर्गत् यह एक गाँव है। यहाँ से श्रीचन्द्रदेव का एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है, जिसपर बौद्ध-प्रतीक धर्मचक्र और दो तरफ बैठे हुये मृगो के चित्र है (इ० हि० क्वा० भाग, II, पृ० 313 और आगे)।

केन्दुलि—(केन्द्रबिल्ल)—सूरी तहसील के बोलपुर थाने मे स्थित यह एक गाँव है। यह बीरभूम जिले मे सूरी से लगभग 22 मील दक्षिण और इलमबाजार के कुछ मील पश्चिम मे अजय नदी के उत्तरी तट पर स्थित है। यह बारहवी शती० ई० के महान् सस्कृत कवि जयदेव का जन्मस्थान होने के कारण प्रसिद्ध है, जिन्होने राधिका एव कृष्ण की प्रशसा मे गीतगोविन्द नामक एक सुप्रसिद्ध सस्कृत गीति-काव्य की रचना की थी। उनकी मृत्यु के बाद उनके शरीर को जलाया न जाकर दफ़नाया गया था, और यहाँ पर सुदर कुजो एव वृक्षो से परिवृत्त उनकी समाधि को अब भी देखा जा सकता है। यहाँ पर अधिकाशत वैष्णव तीर्थयात्री आया करते है (इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, रा० ए० सो० ब० का प्रकाशन, 1947, पृ० 72)।

केरकेर—आदिपुर परगने मे स्थित यह एक गाँव का नाम है जो खिजिग के दक्षिण—दक्षिण-पूर्व मे लगभग 12 मील दूर स्थित है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939)।

केशिपुर—योगिनीतत्र (1.14, 84-85) मे इसका वर्णन मिलता है।

खड-दह—कलकत्ता के 12 मील उत्तर हुगली नदी के तट पर, बैरकपुर तहसील मे स्थित यह एक गाँव है। यह वैष्णवो का एक तीर्थस्थान है। चैतन्य के एक महान शिष्य नित्यानद, कुछ समय तक यहाँ रहे थे। वे यहाँ पर तपस्या करने के लिए आये थे। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रे-फिकल ऐसेज, पृ० 219)।

खलतिक पहाड़ियाँ—ये गया जिले मे स्थित आधुनिक बराबर पहाड़ियाँ हैं। अशोक के बराबर पहाड़ी-गुहालेखो से हमे ज्ञात होता है कि खलतिक पहाडियो मे अशोक ने आजीविको को चार गुहावास समर्पित किये थे (तु०, पतञ्जलि का महाभाष्य, I, 2. 3, बि० च० लाहा, इडिया ऐंज डिस्क्राइब्ड इन द अर्ली टेक्सट्स ऑव बुद्धिज्म ऐड जैनिज्म, पृ० 27)। उत्तरकालीन अभिलेखो मे खलतिक (गजी पहाडी) पहाड़ी को गोरथगिरि (गोरघगिरि) तथा और बाद मे प्रवरगिरि कहा जाने लगा था (देखिए, बि० च० लाहा, राजगृह इन ऐश्येंट लिट्रेचर, मे० आर्क्० स० इ०, न० 58)।

गया जिले की जहानाबाद तहसील मे स्थित बराबर पहाड़ी मे अशोक और उसके पौत्र दशरथ के काल की सातघरा और नागार्जुनी गुफाएँ स्थित है। यह पटना-गया रेलपथ पर बेला स्टेशन से लगभग 7 मील दूर पूरब मे स्थित है। दक्षिण मे, और गिरि-पाद के निकट शिला काट कर बनायी गयी सातघरा नामक सात गुफाएँ है। इन सात गुफाओ मे से तीन नागार्जुनी पहाडी पर है।

विशाल शिला पर स्थित एक मदिर को बुद्ध के काल मे पासाणकचेतिय नामक एक बौद्ध विहार के रूप मे परिवर्तित किया गया था जो मगध के धार्मिक क्षेत्र के अतर्गत् स्थित था। कुछ लोगो ने इसे गोरथगिरि या इसके समीप किसी अन्य पहाडी से समीकृत किया है।

खण्डजोतिक—सभवत यह बगाल के वर्दवान सभाग के मल्लसारुल और गोहग्राम के बीच मे स्थित खण्डजुली है (एपि० इ०, XXIII, V, पृ० 158)।

खरगपुर पहाड़ियाँ—मुगेर शहर के ठीक दक्षिण मे एक पर्वतमाला स्थित है। यह पहाडी जो विन्ध्य पर्वत के उत्तरी मुख से अकुरित होने वाली एक प्रशाखा है, 30 मील लबी है (ज० ए० सो० ब०, भाग, XXI)।

खसिया—गारो के अतर्गत् देखिए।

खाड़ी—बारहवी शती ई० के सेन ताम्रपत्रो मे खाडिविषय और खाडि-मण्डल का उल्लेख मिलता है। खाडि को सुदरबन (डायमड हार्बर तहसील) मे स्थित खाडि परगने से समीकृत किया गया है (इस्क्रिप्शस ऑव बंगाल, III, 60, 170)।

खालिमपुर—यह माल्दह जिले मे गौड के समीप है, जहाँ से धर्मपालदेव का एक अभिपत्र प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, IV, 243)।

खानुमत—यह मगध का एक समृद्धिशाली ब्राह्मण गाँव था, जहाँ राजा बिम्बिसार द्वारा प्रदत्त एक भूमिदान पर एक वैदिक संस्था चलाई जा रही थी (सुमगलविलासिनी I, 41; दीघ, I, 127)। मगध-नरेश बिम्बिसार ने ब्राह्मण कूटदत को यह दान दिया था। यह वही स्थान था जहाँ ब्राह्मण कूटदंत जीवन और धन पर सपूर्ण अधिकार के साथ रहता था जैसे कि वह स्वयं राजा हो। प्रतिवर्ष यहाँ पर एक महायज्ञ होता था, जिसमे अनेक बैल, बछडे, बकरे और भेडों की बलि दी जाती थी (दीर्घ०, I, 127)।

खेतुर—यह राजशाही जिले (बगला देश) मे स्थित एक गाँव है। सोलहवी शताब्दी ई० के एक महान् हिंदू धर्म-सुधारक श्रीचैतन्य यहाँ पर आये थे, जिनके सम्मान मे यहाँ पर एक मदिर बनवाया गया था (इट्रोडचूसिंग इडिया, भाग, II, पृ० 78)।

कोल्हुआ—यह बसाढ के पश्चिमोत्तर मे तीन मील दूर स्थित है। यहाँ पर सिह-शीर्षक एक पाषाण-स्तभ, एक भग्नस्तूप, एक प्राचीन तालाब और प्राचीन भवनो का स्थान लक्षित करने वाले कुछ लघु टीले है। ये सब अवशेष वैशाली के पश्चिमोत्तर मे स्थित अवशेषो के विवरण से स्पष्ट रूप से सगत है (ओ 'मैल्ली बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पृ० 141-42, मुजफ़्फरपुर)।

कोलिकगाम—यह गाँव नालदा विहार से 8 या 9 ली ($1\frac{1}{2}$ मील) दूर दक्षिण-पश्चिम मे स्थित था। यह सारिपुत्त से सबंधित है (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, 171)। इस गाँव मे मोग्गलान जन्मे और मरे थे (धम्मपद कमेट्री, पा० टे० सो०, भाग, I, 89)।

कोल्लाग—यह सनिवेश कुण्डपुर के आगे और अधिक पूर्वोत्तर दिशा मे स्थित था। ऐसा प्रतीत होता है कि मुख्य रूप से यहाँ पर नाय या ज्ञात्री कुल के क्षत्रिय रहते थे, जिसमे स्वयं महावीर उत्पन्न हुये थे (हर्नले द्वारा अनूदित, उवासगदसाओ, भाग, II, पृ० 4, टिप्पणी, 8)।

कोटिगाम—यह विज्जियो का एक गाँव था (सयुत्त निकाय, V, 431)। राजगृह से कुशीनारा जाते समय बुद्ध यहाँ से गुजरे थे (दीघ निकाय, II, 90-91)।

कोटिशिला—यह मगध में एक तीर्थ था। यहाँ पर अनेक संतों ने तपस्या की और सिद्धि प्राप्त की थी (लाहा, सम जैन कैनॉनिकल, सूत्राज, पृ० 178)।

कोटिवर्षविषय—(जैनकोडिवरिस या कोडिवरिसिया)—इसे पुण्ड्रवर्धन-भुक्ति की एक तहसील बतलाया गया है। बगाल के पालो एवं सेनो के अभिलेखों मे प्राय. यह नाम आता है। निश्चय ही इसमे संपूर्ण दिनाजपुर या इसका एक भाग संमिलित रहा होगा। बाणग्राम, आधुनिक बानगढ, कोटिवर्ष का मुख्य नगर था। जैनग्रंथ आवश्यक निर्युक्ति (1305) के अनुसार कोडिवरिस का राजा कालिय एक जैन मुनि हो गया था। दिनाजपुर से 18 मील दक्षिण मे स्थित गगारामपुर से 1½ मील उत्तर मे पुनर्भवा नदी के पूर्वी तट पर बानगढ के भग्नावशेष प्राप्त होते है। गगारामपुर के परिवर्ती क्षेत्र को, उत्तरी बगाल मे कोटिवर्ष की राजधानी, कोटिकपुर या प्राचीन देवकोट से समीकृत किया जा सकता है। अनुश्रुतियो के अनुसार बानगढ़ असुर-राजा बाण का सुरक्षित शहर था। बताया जाता है कि उसकी पत्नी कालाराणी ने गगारामपुर मे कालदीघि नामक एक तालाब खुदवाया था। बानगढ से उपलब्ध महीपाल प्रथम के ताम्रपत्र के अनुसार महीपाल ने अपना खोया हुआ पैतृक राज्य पुन. प्राप्त किया था। बानगढ से प्राप्त कुछ प्राचीन अवशेष अब दिनाजपुर प्रासाद मे रखे गये है। यहाँ पर हमे निकष-प्रस्तर मे निर्मित एक अतिशय अलकृत पाषाण-स्तभ, एक शिवमदिर और लगभग ग्यारहवी शती का बना हुआ एक बौद्ध चैत्य प्राप्त हुआ है। बुधगुप्त और जयदत्त के समय के दामोदरपुर दानपत्र के अनुसार (एपि० इ०, XV, 138 और आगे) दोगा नामक एक गाँव पुण्ड्रवर्धनभुक्ति के कोटिवर्षविषय की हिमवच्छिखर (शाब्दिक रूप से हिमालय का शिखर) नामक तहसील मे स्थित था (इ० क०, V, पृ० 433)।

कोट्याश्रम—वशिष्ठ के इस आश्रम को बारीपादा से 32 मील दूर कुटिंग से समीकृत किया गया है (एपि० इं०, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1938)।

कौन्थस्वभ्र—धर्मपालदेव के खलीमपुर दान ताम्रपत्र मे वर्णित यह एक प्रदत्त गाँव का नाम है (गौडलेखमाला, I, पृ० 9 और आगे)। यह पौण्ड्रवर्धन-भुक्ति के व्याघतटी-मण्डल के अधिकार-क्षेत्र के अतर्गत् महताप्रकाश विषय (जिले) मे स्थित था (एपि० इ०, IV, पृ० 243 और आगे)।

क्रिमिल—समुद्रगुप्त के नालदा अभिपत्र मे उल्लिखित इस विषय का वर्णन देवपाल के मुगेर दानपत्र मे भी है। इसके अनुसार यह श्रीनगरभुक्ति या पटना में स्थित बतलाया जाता है (एपि० इ०, XXV, भाग, II, अप्रैल, 1939)।

कृपा (या कूपा)—इस नदी को आधुनिक कोपा से समीकृत किया जा सकता

है, जो पूर्वी भारत मे बाबला की एक सहायक नदी थी (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 45)।

कुक्कुटपादगिरि (गुरुपादगिरि भी इसका नाम है)—स्टाइन ने इसे कुर्किहार के और आगे दक्षिण-पश्चिम मे और वज़ीरगज गाँव से लगभग 4 मील दूर पर स्थित पर्वतमाला के सर्वोच्च शिखर, सोभनाथ पहाड़ी पर स्थित बतलाया है (इ० ऐ०, मार्च, 1901, पृ० 88)। कुछ लोगों ने इसे बोध गया से लगभग 100 'ली' पूरब मे स्थित गुरपा पहाड़ी से समीकृत किया है (जे० ए० सो० ब०, 1906, पृ० 77)। कनिघम ने इसे कुर्किहार के उत्तर मे लगभग एक मील और गया के पूर्वोत्तर मे 16 मील दूर स्थित तीन शिखरो से समीकृत किया है (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, मजूमदार सस्करण, पृ० 721)। ये तीन शिखर बौद्ध सत महाकाश्यप के कुछ अलौकिक कार्यो के स्थल बतलाये जाते है। युवान-च्वाङ के अनुसार कुक्कटपाद या गुरुपाद के उत्तुग शिखर अनत है और इसकी गहन घाटियाँ अपरिमित कन्दराएँ है। इसके निचले ढलानो की कुल्याये लबे वृक्षो से और इसकी दुरारोह ऊँचाइयाँ विपुल वनस्पति-राशि से आच्छादित है। एक त्रिकूट शैल अपने एकाकी गगनचुबी और बादलो से मिलती-सी उत्तुगता मे ऊपर निकला हुआ है। महाकाश्यप ने इसी पर्वत पर अपना आवास बनाया था (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, पृ० 143)।

कुक्कुटाराम—यह विहार पाटलिपुत्र मे था (सयुत्त, V, 15, 17, 171, 173)। मुण्ड नामक एक मगध-नरेश यहाँ पर नारद ऋषि को देखने और उनका उपदेश सुनने आया था। ऋषि ने उनको उपदेश दिया और रानी भद्दा की मृत्यु के दुःख से अभिभूत होने के कारण उसे सान्त्वना दी। तत्पश्चात् उन्होने सदा की भाँति अपने कर्त्तव्यपालन किये (अगुत्तर, III, 53 और आगे)। इस आराम मे भद्द नामक एक भिक्षु रहता था और उसने बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य आनन्द से बातचीत की थी (सयुत्त, V, 15-16, 171-72)। बुद्धघोष के अनुसार कुक्कुटसेट्ठी ने इस आराम का निर्माण कराया था (मज्झिम कामेट्री, II, 571)। युवान-च्वाङ का कथन है कि यह पाटलिपुत्त के प्राचीन नगर के दक्षिण-पूर्व मे स्थित था और बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पश्चात् अशोक ने इसका निर्माण करवाया था (बील, रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 95)। दिव्यावदान मे प्राय. इसका उल्लेख हुआ है (पृ० 381 और आगे, 430 और आगे)। यह आराम कौशाम्बी मे स्थित कुक्कुटाराम से भिन्न था (विनय, I, 300)।

कुलाञ्च—इस नगर की स्थापना काचर नामक ऋषि ने की थी। इसे कोलाञ्च, क्रोडाचि या क्रोडाज से समीकृत किया गया है। यह स्थान शाण्डिल्य-

गोत्रीय ब्राह्मणों का केंद्र प्रतीत होता है। राजा आदिसूर के निमंत्रण पर एक वैदिक यज्ञ का सपादन करने के लिए इन ब्राह्मणों के पाँच पूर्वज कौलाञ्च से वग गये थे। यह स्थान गंगा-तट पर स्थित प्रतीत होता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, III, जुलाई, 1937)। कुछ लोगो की धारणा है कि यह पूर्वी या उत्तरी भारत मे स्थित है।

कुलुह पहाड़ी—यह हटरगज से छह मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है। यहाँ पर कई भग्न मदिर है। यह हिदुओ का एक तीर्थस्थान है (बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, हजारीबाग, 1917, पृ० 202)।

कुमारी—इस नदी को आधुनिक कुमारी से समीकृत किया जा सकता है जो मानभूम मे डल्मा पहाडियों को सींचती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 45)।

कुभीनगर—कुभीनगर को बगाल मे बीरभूम जिले के रामपुरहाट मे स्थित कुम्हीर से समीकृत किया जा सकता है (द्रष्टव्य, लक्ष्मणसेन का शक्तिपुर ताम्रपत्र एपि० इ०, XXI, पृ० 214)।

कुण्डपुर—इसे खत्तिय कुण्डग्गाम भी कहा जाता है। इसे वैशाली के उपकंठ मे स्थित बसुकुण्ड से समीकृत किया जाता है। यह महावीर का जन्म-स्थान था (आवश्यक चूर्णि, पृ० 243)।

लक्ष्या—इसका वर्णन योगिनीतत्र (1.11, पृ० 60-61 मे लक्ष्यासगम के रूप मे मिलता है। यह ढाका जिले (बगला देश) की कमनीयतम नदी है। यह प्राचीन ब्रह्मपुत्र से निकलनेवाली तीन सरिताओ से बनी है। यह मदनगज मे धलेश्वरी मे मिलती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 34)।

लंबेव—इसे उडीसा राज्य के नरसिहपुर के अतर्गत् लिबु से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, पृ० 78)।

लठिठवन-(सस्कृत यष्टिवन)—यह गया जिले मे तपोवन से लगभग 2 मील उत्तर मे स्थित है। पालि भाष्यकार बुद्धघोष के अनुसार यह एक ताडवन (तालुज्जान) था (समन्तपासादिका, सिहली सस्करण, पृ० 158, पा० टे० सो०, सस्करण, V. 972)। बुद्ध ने यहाँ पर बिम्बिसार को धर्म-परिवर्तित किया था (मनोरथपूरणी, पृ० 100)। यह बाग जो राजगृह नगर की सीमा पर स्थित (राजगृहनगरुपचारे) था, वेणुवन की तुलना मे अधिक दूर माना जाता था (जातक, I, 85, तु०, विनयमहावग्ग, I, 35)। यह बिम्बिसार के राजोद्यान का नाम था जहाँ बुद्ध गयासीस से आकर राजगृह जाते समय धर्म परिवर्तन करने वाले जटिलों के साथ रुके थे (विनय-महावग्ग, I,35)। युवान-च्वाङ् ने इसे

बाँसों का एक घना जंगल बतलाया है जो एक पहाड़ को आच्छादित किये था और इसके 10 ली दक्षिण-पूर्व मे दो गरम कुड थे (वाटर्स. ऑन युवान-च्वाङ, II, 146)।

लौहित्य—ब्रह्मपुत्र के अतर्गत् देखिए। इसका वर्णन योगिनीतत्र (2.5, 139 और आगे) मे मिलता है। इसे एक अत्यन्त पुण्य स्थान माना जाता है (कालिका पुराण, अध्याय, 58 39)।

लौरिया-नदनगढ़—यह गाँव अशोक के स्तभ के लिए विख्यात है। यह चपारन जिले मे बेतिया से कोई 16 मील पश्चिमोत्तर मे गडक नदी की घाटी मे स्थित है जहाँ पर नेपाल की सीमा की ओर जाने वाले दो प्रमुख मार्ग मिलते है। अत्यत प्राचीन काल से यह अवश्यमेव बहुत महत्वपूर्ण स्थिति मे रहा होगा। इस स्थान पर किये गये उत्खनन के विवरण के लिए, द्रष्टव्य, आर्क्० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1906-1907, पृ० 119 और आगे, 1935-36 पृ० 55 और आगे, पहले के अन्वेषण के लिए, द्रष्टव्य, आर्क्० स० इ० रिपोर्ट, I, पृ० 68 और आगे। XVI, 104 और आगे, XXII, 47 और आगे।

लोहित—सदिया जिले मे ब्रह्मपुत्र मे मिलने वाली बडी सहायक नदी लोहित या लौहित्य है (महाभारत, भीष्मपर्व, अध्याय, 9, अनुशासनपर्व, 7647, तु०, रामायण, किष्किन्ध्याकाण्ड, XL. 26, एशियाटिक रिसचर्ज, भाग, XIV, पृ० 425)। यह नमकिउ पर्वत के पहले उत्तर-पूर्व से चार नदियो के सयुक्त प्रवाह के रूप मे प्रवाहित होती है, (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 30)। यह नदी असम मे प्राग्ज्योतिष या गौहाटी की सीमा थी (रघुवश, IV. 81)।

लुपतुरा—सभवतः यह पटना (उडीसा राज्य मे, पहले एक रियासत) की लिपतुगा ही है। कुछ लोगों ने इसे पटना (रियासत मे) बोलंगिर से छह मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित लेप्ता से समीकृत किया है (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII)।

लुशाई—लुशाई पहाडियाँ मणिपुर राज्य से दक्षिण की ओर फैली हुई है। ये पूरब मे चिन और पश्चिम मे चटगाँव पहाडियो से घिरी हुयी है। अराकान योमा लुशाई पहाडियो के दक्षिण मे स्थित है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 9)।

मकलगाम—यह मगध में एक सुमापित गाँव था, जहाँ पर लोग सूर्य एव चन्द्र देवता की उपासना करते थे। बुद्ध के आविर्भाव के बहुत पहले ही यह सडको, विश्रामगृहों, सरोवरों एव विशाल भवनों से सुशोभित था (जातक, I, 199,

206; धम्मपद कामेंट्री, I, 265-80, सुमगलविलासिनी, III, 710 और आगे)।

मद्दकुच्ची-मिगदाय (मिगदाव)—मद्दकुच्ची मे स्थित मृगवन राजगृह मे या इसके समीप एक महत्त्वपूर्ण स्थान था (विनय, I, 105; सयुत्त०, I, पृ० 27)। बुद्धघोस ने मद्दकुच्ची को इसका वास्तविक नाम माना है जहाँ पर कृष्णसागर मृग स्वच्छंदतापूर्वक रहा करते थे (सारत्थप्पकासिनी, I, 77)। स्पष्टतया यह स्थान मैदान में स्थित था। यह राजगृह की एक पहाड़ी पर किसी मोड के समीपवर्ती रिक्त स्थान मे स्थित था।

मगध—पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4. 1 170) और पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (1 1 2, पृ० 56 मे इसका उल्लेख किया है। पाणिनि ने मागध एवं पतञ्जलि ने भी सुमगधा रूप का प्रयोग किया है (2 1. 2, पृ० 48)। दशकुमारचरितम् (एच० एच० विल्सन सस्करण) के अनुसार मगध के अधिपति ने मालवा नरेश से युद्ध किया जिसके परिणामस्वरूप मालव-नरेश पराजित हुआ और जीवित ही बदी बनाया गया। किन्तु मगध-नरेश ने उदारता-पूर्वक उसे उसके राज्य मे पुनरधिष्ठित किया (पृ० 3 और आगे)। मगध के राजकुल की नारियो को सुरक्षित रूप से विन्ध्याटवी मे किसी स्थान पर रखा जाता था जो शत्रुओ के लिए दुर्गम था (पृ० 6)। रघुवश (सर्ग, I, श्लोक, 31) से ज्ञात होता है कि राजा दिलीप की मगध के राजकुल से सबधित सुदक्षिणा नामक एक विधि-विवाहिता रानी थी।

मगध का वर्णन अशोक के भाब्रू शिलालेख तथा भागवत पुराण (IX. 22, 45, X. 2, 2; X. 52, 14, X 73, 33, X. 83, 23) मे भी मिलता है। तिब्बती बौद्ध-भूगोल मे मगध प्राची मे न होकर मध्यदेश मे बतलाया गया है। इसमे गया और पटना जिले समिलित है। कुछ लोग इसे अङ्ग के पश्चिम मे स्थित बतलाते है जिसे चपा नदी अङ्ग से विभक्त करती थी। अपने भाब्रू शिलालेख मे सघ का अभिवादन करने के पश्चात् अशोक ने उनके लिए अपाबाधता और सुख-विहारता (स्वास्थ्य और सुखद गतिविधि) की कामना की थी। यह सभव प्रतीत होता है कि अशोक के सारनाथ स्तभ लेख मे हमे पाटलिपुत्र के नाम के प्रथम दो अक्षर (पाट) लिखे हुये मिलते है। भरहुत अभिलेखो से यह निश्चित होता है कि पाटलिपुत्र से तीन पुरुष वहाँ गये थे। हाथीगुम्फा अभिलेख से प्रकट होता है कि जिस समय बृहस्पति मित्र अग-मगध का राजा था (दूसरी शताब्दी ई० पू०) कलिंग-नरेश खारवेल ने गोरथगिरि को ध्वस्त करके मगध की ओर प्रयाण किया था और मगध की प्राचीन राजधानी राजगृह को परिपीड़ित किया

था (राजगृहम उपपीडापयति,—एपि० इ०, X, संभावित सं० 1345; तु०, एक्टा ओरियंटेलिया, II, 265, बरुआ, ओल्ड ब्राह्मी इस्क्रिप्शंस इन द उदयगिरि ऐंड खण्डगिरि केव्स, पृ० 17[1] स्कन्दगुप्त को मृत्यु के पश्चात् मगध का साम्राज्य पूर्णतः नही नष्ट हो गया था। यहाँ पर पुरगुप्त, नरसिहगुप्त, कुमारगुप्त द्वितीय और बुधगुप्त ने शासन किया था। तत्पश्चात् सम्राट-परपरा ग्यारह गुप्तवशीय राजकुमारो के हाथ मे चली गयी। दामोदरपुर अभिपत्रो, सारनाथ के अभिलेखों, बुद्धगुप्त के एरण अभिलेख और 518 ई० मे अंकित परिव्राजक महाराज सक्षोभ के बेतुल अभिपत्रो से इस तथ्य की पुष्टि होती है कि गुप्त साम्राज्य का सार्वभौम अधिकार पाँचवी शती के उत्तरार्द्ध तथा छठी एव सातवी शताब्दी ई० तक निरतर बना रहा। सातवी शताब्दी ई० के पूर्वार्द्ध मे पहले से ही निष्प्रभ गुप्त सत्ता को आदित्यसेन ने नष्ट कर दिया था, जिसने परमभट्टारक एव महाराजाधिराज की उपाधियां धारण की थी। जैसा कि अफसढ एव देव बरनार्क अभि लेखो से सिद्ध होता है, आदित्यमेन और उसके उत्तराधिकारी मगध एव मध्यदेश पर यथार्थत प्रभुत्व स्थापित करने वाले एकमात्र उत्तरभारतीय राजा थे। लगभग आठवी शताब्दी ई० के प्रारभ मे मगध के सिहासन पर एक गौड राजा गोपाल ने अधिकार कर लिया जैसा कि पाल-अभिलेखो से प्रकट होता है। शक्तिवर्मन् के रघोली अभिपत्रो के अनुसार, कलिग-नरेश शक्तिवर्मन मगध-कुल से सबधित था। अभिपत्रो मे स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्रतापी महाराज शक्तिवर्मन् मगध-कुल (मागध-कुलातक) के थे (एपि० इ०, XII, 2 और आगे)। महाशिवगुप्त के शासनकाल के सीरपुर शिलालेख मे (एपि० इं०, XI, 184 और आगे) महाशिवगुप्त की माता, वासला को सूर्यवर्मन् नामक मगध-नरेश की पुत्री (मगधाधिपत्या बतलाया गया है। मगलेश के महाकूट-अभिलेख मे बतलाया गया है (इ० ऐ०, XII, 14 और आगे) कि कीर्त्तिवर्मन् प्रथम उर्फ पुरु-रणपराक्रमाक ने मगध सहित अनेक नगरों के राजाओ पर विजय प्राप्त की

---

[1] अधोलिखित उद्धरण के विविध शब्दों के पाठ एवं अर्थ-निर्णय के विषय में मतभेद है: "अठमे च वसे महता सेन (आ) गोरधगिरिम घातापयिता राजागहम उपपिडापयति। जायसवाल और रा० दा० बनर्जी ने गोरधगिरि शब्द का अर्थ राजगृह की सीमा पर स्थित एक पहाड़ी दुर्ग से लगाया है, किन्तु डॉ० बरुआ ने इसे किसी व्यक्ति का नाम माना है (द्रष्टव्य, ओल्ड ब्राह्मी इंस्क्रिप्शंस इन द केव्स ऑव उदयगिरि ऐंड खंडगिरि, पृ० 223-27; तु० बि० उ० रि० सो०, I, 162)।

थी। काठमांडू स्थित जयदेव के अभिलेख मे मगध-नरेश महान् आदित्यसेन की पौत्री का उल्लेख मिलता है (मगध-दौहित्री मगधाधिपस्य महतः आदित्यसेनस्य)।

महामण्डलेश्वर चामुण्ड द्वितीय के ऐहोल अभिलेख मे कहा गया है (इ० ऐ०, IX. 96 और आगे) कि मगध, गुर्जर, आध्र, द्राविड और नेपाल के राजा शक्तिशाली राजा चामुण्डराज की प्रशसा किया करते थे (प्रबल-बल्युतम वीर चामुण्ड-भूपालाम्)। अमोघवर्ष प्रथम के काल के सिरपुर अभिलेख से ज्ञात होता है (एपि० इ०, VII. 202 और आगे) कि वग, अग, मगध, मालव और वेगी के राजा-गण अतिशय धवल (अमोघवर्ष प्रथम) की अर्चना करते थे (वङ्ग-अङ्ग मगध-मालव-वेगीशैर अर्चितोतिशयधवल :)। इसी प्रकार अमोघवर्ष प्रथम के काल के नीलगुड अभिलेख मे हमे इस तथ्य का विशद् विवरण मिलता है। इसमे बताया गया है कि वैरी राजाओ के मुकुट अतिशयधवल का चरण चूमते थे। और आगे कहा गया है कि उसकी वीरता की प्रशसा इस ससार मे सर्वत्र होती है एव उसकी उपासना उपर्युक्त स्थानो के राजागण किया करते है। कवि गगाधर के गोविन्दपुर शिलालेख (एपि० इ०, II, 330 और आगे) से हमे ज्ञात होता है कि मगध के श्रीमान् राजा (श्री मगधश्वर) ने उसे व्यास की सज्ञा दी थी। अब्लुर अभिलेख के अनुसार (एपि० इ०, V, 237 और आगे) कल्चुरि नरेश बिज्जन (बिज्जल) ने आध्र, गुर्जर, वग, कलिग, चोल, लाटो आदि के साथ मगध को पराजित किया था। मगध के पूर्ण विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, द मगधाज इन ऐंश्येंट इंडिया, (रा० ए० सो० मोनोग्राफ, सख्या, 24)।

महादेव—युवान-च्वाङ के वर्णन के अनुसार यह एक लघु, एकाकी और दो शिखरो वाली पहाडी थी। यहाँ पर बुद्ध ने यक्ख वकुल पर विजय प्राप्त की थी। कुछ लोगो के अनुसार यह हिरण्यपर्वत की पश्चिमी सीमा पर स्थित था इसके पश्चिम मे कुछ गरम कुंड थे (ज० ए० सो० ब०, भाग, XI, खड, I, 1892)।

महानदी—योगिनीतत्र (2.5, पृ० 139-140) मे इसका वर्णन मिलता है। महानदी उडीसा की सबसे बडी नदी है जो बरार के दक्षिण पूर्वी कोण मे स्थित पहाड़ियो से निकलती है। यह सिहोआ से होती हुयी मध्यप्रदेश मे बस्तर से गुजरती है। यह बिलासपुर जिले की दक्षिणी सीमा पर पहुँचती है। यह पाँच सहायक नदियों द्वारा आपूरित है। यह दक्षिण-पूर्वी दिशा मे प्रवाहित होती है और कटक शहर से गुजरती है। विस्तृत विवरण के लिए, द्रष्टव्य लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 44)।

महास्थान—पौण्ड्रवर्द्धनभुक्ति देखिये। पकी मिट्टी की बनी हुयी किसी देवी की शुगयुगीन एक प्रतिमा बोगरा जिले मे महास्थानगढ़[1] (बगला देश) से एक नाली खोदते समय प्राप्त हुयी थी। इससे यह तथ्य पुष्ट करने मे हमें सहायता मिलती है कि महास्थान बगाल के प्राचीनतम नगरो मे से एक था और दूसरी शती० ई० पू० से बारहवी शती० ई० तक आबाद था (आर्क्० स० इ०, एनुअल रिपोर्टस, 1930-34, पृ० 128)।

महास्थान से पीले बालुकाश्म से निर्मित एक लघु-गुटिका की उपलब्धि सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसपर लगभग तीसरी शताब्दी ई० पू० की प्राचीन ब्राह्मी-लिपि मे छह पक्तियाँ उत्कीर्ण है और बगाल से कभी उपलब्ध होने वाला अपनी तरह का यह पहला आलेख है। इस अभिलेख मे पुडनगर (सस्कृत, पुण्ड्रनगर) के स्पष्ट वर्णन से पुण्ड्रवर्धन या पुण्ड्रनगर से महास्थान के समीकरण की पुष्टि होती है जिसे सर्वप्रथम जनरल कनिघम ने प्रस्तावित किया था (आर्क्० स० रि०, XV, 104 और आगे)। अन्वेषण के विवरण के लिए द्रष्टव्य, आर्क्० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट्स, 1934-35, पृ० 40 और आगे; एक्सकेवेशस ऐट महास्थान, ले० टी० एन० रामचन्द्रन, आर्क्० स० इ० एनुअल रिपोर्ट, 1936-37 (1940)।

महावन—वैशाली नगर के बाहर स्थित यह एक प्राकृतिक वन था जो एक क्रम मे हिमालय तक फैला हुआ था। एक विशाल भूखड पर फैले होने के कारण इसे महावन कहा जाता था (सुमगलविलासिनी, I, 309, सयुक्त, I, 29-30)।

महावन-बिहार—महावस (IV. 32) के अनुसार यह बिहार वृज्जि देश मे था। फाह्यान् ने अपने यात्रा-वृत्तातो मे इसका उल्लेख किया है।

मैनामाटी—शक सवत् 1141 मे स्थित रनवकमल्ल हरिकालदेव के मैनामाटी ताम्रपत्र मे कोमिल्ला शहर (बगला देश) से लगभग 5 मील पश्चिम मे स्थित मैनामाटी पहाडियो का उल्लेख है। ताम्रपत्र मे लालमाई की अपेक्षा केवल मैनामाटी पहाडियो का वर्णन है (हरप्रसाद मेमोरियल वाल्यूम, पृ० 282 और आगे)। मैनामाटी नाम सभवत चन्द्रो के राजा, मानिकचन्द्र की रानी मयनामती से सबधित है, जिन्होने दसवी और ग्यारहवी शताब्दी ई० मे बगाल पर शासन किया था। इस रानी और इसके पुत्र गोपीचन्द्र ने बगाली लोक गीतो में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका सपादित की है। रानी मयनामती गोरक्षनाथ

[1] इंट्रोड्यूसिंग इंडिया, भाग, I, पृ० 79.

नामक एक महान् शैवयोगी की शिष्या प्रतीत होती है जब कि उसका पुत्र किसी निम्नजातीय सिद्ध का शिष्य था। वर्णन है कि राजभवन के एक अधिकारी ने पट्टिकेरक मे सहजयान बौद्ध मत का वरण कर लिया था। मैनामाटी पहाड़ियों तक फैले हुये कोमिल्ला के एक गाँव का नाम अब भी पाटिकारा या पैटकारा चला आ रहा है। पट्टिकेर राज्य के अस्तित्व की प्राचीनता आठवी शती ई० तक बतलायी जा सकती है। मैनामाटी से चन्द्रवश की मुद्राओ के सदृश मुद्राएँ और अराकानी एवं बर्मी नर-नारियो की आकृतियो के मृण्फलक उपलब्ध हुये है। इन मुद्राओ मे पटिकेर का नाम आता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बर्मा एव पट्टिकेर राज्य मे घनिष्ठ सबंध था। रनवंकमल्ल हरिकालदेव इस स्थान का प्रमुख था जब कि देव लोग उस समय स्वतत्र शासक थे। पालयुगीन पट्टिकेरक विहार एक महत्त्वपूर्ण विहार था। मैनामाटी का एक टीला, जिसे आनन्दराजा के महल का खंडहर कहते है, एक विहार प्रतीत होता है। अभिलेखो मे वर्णित चन्द्रवंशीय कुछ नरेशो यथा, श्रीचन्द्र, गोविन्दचन्द्र, सुवर्णचन्द्र और पूर्णचन्द्र ने 900 और 1050 ई० के मध्य पूर्वी एव दक्षिणी बगाल पर अपनी राजधानी रोहितगिरि से शासन किया था। मैनामाटी से उपलब्ध एक जैन तीर्थकर की नग्न पाषाण-प्रतिमा से इस क्षेत्र मे जैन मत का प्रभाव प्रकट होता है। गणेश, हर-गौरी और वासुदेव, जैसे देवताओ की उपलब्धि से वहाँ पर हिंदू धर्म का प्रभाव व्यक्त होता है। आनन्दराजा और भोजराजा के प्रासाद, चण्डीमुरा, रूपबानमुरा, शालबनराजा के प्रासाद, यहाँ पर स्थित कुछ उल्लेखनीय टीले है। इनमे से एक टीले पर हमे शिव एव चण्डी के मदिर मिलते है। पहाडपुर विहार के सदृश यहाँ पर एक वर्गाकार विहार स्थित था। केंद्रीय मदिर की दीवालों पर उभरे हुये चित्र एव कमल की पखुंडियाँ आदि बनी है। यहाँ से नक्काशी किये हुये अनेक मृण्फलक, जिन पर यक्षो, किंपुरुषों, गधर्वो, विद्याधरो, किन्नरों, बुद्ध, पद्मपाणि, योद्धाओ, पशुओ और कमल के पुष्पो की आकृतियाँ बनी हुयी है, उपलब्ध हुये है। यहाँ से प्राप्त मृण्भाड अधिकाशतः खडित है। यहाँ से बुद्ध की कुछ छोटी कास्य प्रतिमाएँ भी उपलब्ध हुयी है।[1]

---

[1] विस्तृत बिवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, वाल्यूम, भाग, II, पृ० 213 और आगे में प्रकाशित टी० एन० रामचन्द्रन का लेख, 'रीसेंट आर्क्यालॉजिकल डिस्कवरीज एलांग द मैनामाटी ऐंड लालमाई रेंजेज'; इंट्रोड्यूसिंग इंडिया, भाग, I, पृ० 82-83, हरिकेल ऐंड द रुइंस ऑव मैनामाटी; इं० हि० क्वा०, XX, 1944, पृ० 1-8.

मकुलपर्वत—कुछ लोगो ने इसकी पहचान कलुहा पहाडी से की है जो बुद्ध गया के लगभग 26 मील दक्षिण मे और हजारीबाग जिले मे चातरा से लगभग 16 मील उत्तर मे स्थित है। यहाँ पर बौद्ध-शिल्प के अवशेष और बुद्ध की प्रतिमाएँ अधिकता से मिलती है। बताया जाता है कि बुद्ध ने अपना छठवाँ चार्तुमास्य (वस्स) इसी पर्वत पर व्यतीत किया था।

मल्लपर्वत—यह हजारीबाग जिले मे इसरी रेलवे स्टेशन से दो मील दूर पर स्थित परेशनाथ पहाडी है। यह जैनो की एक पुण्य-पहाडी है। यह यूनानियों द्वारा वर्णित मलायुस पर्वत (Mount Maleus) है। मैक्रिडिल, मेगस्थनीज ऐंड एरिअन, पृ० 63, 139 इसे समेतशिखर, समिदगिरि और समाधिगिरि भी कहते है।

मल्लसारुल—यह बगाल के बर्दवान जिले मे जलसी थाने के अधिकार क्षेत्र मे दामोदर नदी के उत्तरी तट से लगभग डेढ़ मील दूर स्थित एक गाँव है। यहाँ से विजयसेन का एक ताम्रपत्र मिला था (एपि० इ० XXIII भाग, V, पृ० 155)।

मदार पहाड़ी—कालिकापुराण (अध्याय, 13 23) मे इस पर्वत का वर्णन मिलता है। यह भागलपुर जिले की बका तहसील मे भागलपुर से 30 मील दक्षिण मे और बसी से तीन मील उत्तर मे स्थित है। यह पहाडी लगभग 700 फीट ऊँचा है। यहाँ के प्राचीनतम भवन दो मदिर है जो अब खडहर हो चुके है। यहाँ पर सीताकुड सरोवर सबसे विशाल है जिसकी लबाई 100 फीट और चौड़ाई 500 फीट है। फ्लीट के अनुसार यह भागलपुर से लगभग 35 मील दक्षिण मे स्थित है (का० इ० इ०, 211; आर्क० स० इ०, VIII, 130)। मेगस्थनीज और एरियन ने इसे मल्लुस (Mallus) कहा है। यह एक एकाकी पहाड़ी है जिसके शिखर पर एक हिंदू मदिर स्थित है। यहाँ पर बौद्ध मदिर और प्रतिमाओं के अवशेष भी है (बर्ने, बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, भागलपुर पृ० 162, 163, 169)। इस पहाड़ी का विशद् वर्णन बर्ने द्वारा लिखित भागलपुर नामक पुस्तक के दूसरे अध्याय (पृ० 31 और आगे) मे दिया गया है।

मँगराँव—यह बिहार मे शाहाबाद जिले को बक्सर तहसील मे, वहाँ से लगभग 14 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित एक गाँव है। यहाँ से विष्णुगुप्त के काल का (17 वे वर्ष का) एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है (एपि० इ०, XXVI, भाग, VI, अप्रैल, 1942, पृ० 241 और आगे)।

मरकटह्रद—जब बुद्ध वैशाली मे थे तब वह मरकटह्रद के तट पर स्थित कूटागारशाला (कगूरेदार महाकक्ष) मे रुके थे (दिव्यावदान, पृ० 200)।

महावस्तु में मरकटह्रद चैत्य का उल्लेख है, जहाँ पर बुद्ध भी रुके थे (लाहा, ए स्टडी ऑव द महावस्तु, पृ० 44)।

मसार—आरा से लगभग 6 मील पश्चिम मे स्थित इस गाँव की पहचान मो-हो-सो-लो (Mo-ho-so-lo) से की गयी है जहाँ सातवी शती ई० मे युवान-च्वाङ् गया था। इसका पुराना नाम महासार था (आर्क्० स० इं०, रिपोर्ट्स, जिल्द, III)।

मेघना—ढाका जिले (बागला देश) से प्रवाहित होने वाले सुरमा नदी के निचले प्रवाह को साधारणतया मेघना कहते हैं। यह नदी सुरमा, बराक एव पुइनी नदियो का संयुक्त प्रवाह है। ढाका एव त्रिपुरा जिलो के बीच मुशीगज के थोडा आगे घलेश्वरी मे मिलने के पूर्व मेघना वक्र गति से बहती है। मेघना एव पद्मा का सयुक्त प्रवाह एक साथ ही बंगाल की खाडी मे गिरता है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 25)।

मेहार—यह गाँव कोमिल्ला जिले की चाँदपुर तहसील मे स्थित है, जहाँ से दामोदरदेव का एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ था। इसे मेहारग्राम भी कहा जाता है। दामोदरदेव के मेहार अभिपत्र मे मेहार को वायिसग्राम तहसील मे स्थित बतलाया गया है, जो पौण्ड्रवर्धनभुक्ति के अनर्गत् समतटमण्डल के परलायि-विषय मे समिलित था (एपि० इ०, XXVII, भाग, IV, पृ० 182 और 185)।

मेसिका—देवपालदेव के मुगेर दान ताम्रपत्र मे वर्णित यह एक प्रदत्त गाँव है (गौडलेखमाला, I, पृ० 33 और आगे)। यह श्रीनगरभुक्ति के अधिकार-क्षेत्र के अतर्गत् क्रिमिल विषय (जिले) मे स्थित था। कुछ लोगो के अनुसार जिसमे दक्षिणी बिहार के जिले समिलित थे, (इ० हि० क्वा०, XXVI, भाग, II, पृ० 138)।

मिश्मि—यह पर्वत ब्रह्मपुत्र के पूर्वी मोड पर छाया हुआ, असम के उत्तरी सीमात का भाग है। अपक्षरण की शक्तियो ने इसे काफी विरदित किया है, जिसके फलस्वरूप 15,000 फीट ऊँचे शिखरो से मडित शैल शिलाओ का यह एक जटिल पुज बन गया है (बि० च० लाहा, माउटेंस ऑव इडिया, पृ० 9)।

मिथिला—मिथिला विदेह की राजधानी थी (महाभारत, वनपर्व, 254; तु०, महावस्तु, III, पृ० 172, दिव्यावदान पृ० 424) जिसे तीरभुक्ति (आधुनिक तिरहुत) भी कहा जाता था। रामायण के अनुसार (आदिकाण्ड, XLIX, 9-16; तु० महाभारत का शातिपर्व, CCCXXVII, 12233-8)। यह देश और राजधानी दोनो का ही नाम था। इसे नेपाल की सीमा पर स्थित आधुनिक जनकपुर नामक एक छोटे कस्बे से समीकृत किया गया है। इसके

उत्तर मे मुजफ्फरपुर और दरभगा जिले मिलते है (लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 31; कनिंघम, ऐश्येंट ज्यॉग्रेफी ऑव इंडिया, एस० एन० मजुमदार संस्करण, पृ० 718; कनिंघम, आर्क० स० रि०, XVI, 34)। बील ने विव्यान डी सेंट मार्टिन को उद्धृत किया है, जिन्होने चैन-सु-ना नाम (Chen-su-na) को जनकपुर से सबंधित किया है (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, पृ० 78, टिप्पणी)। विदेह-राज जनक के शासन काल मे राजर्षि विश्वामित्र को अयोध्या से मिथिला पहुँचने मे चार दिन लगे थे जब कि मार्ग मे विश्राम-हेतु वह केवल एक रात के लिये विशाला मे रुके थे (रामायण, बगवासी संस्करण, 1-3, वही, ग्रिफिथ का अनुवाद, पृ० 90-91)। रीज डेविड्स के अनुसार, मिथिला वैशाली से लगभग 35 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित थी। यह सात लीग और विदेह राज्य 300 लीग विस्तृत था (जातक, III, 365, वही, IV, पृ० 316)। यह अग की राजधानी चपा से 60 योजन की दूरी पर स्थित थी (जातक, VI, पृ० 32)। तीरभुक्ति (आधुनिक तिरहुत) पूरब मे कौशिकी (कोसी) नदी से, दक्षिण मे गगा, पश्चिम मे सदानीरा (गण्डक या राप्ती) और उत्तर मे हिमालय से घिरा हुआ था (लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, 30-31)। तीरभुक्ति, से व्युत्पन्न है, जिनका अर्थ क्रमश. तट और सीमा है। कनिंघम ने ठीक ही बतलाया है कि उक्त नाम किसी जिले की सीमाओ की अपेक्षा नदियो के तटवर्ती प्रदेशो का उल्लेख करती है। इन भूखडो को बूढी गण्डक और बागमती नदियो की घाटी से समीकृत किया जा सकता है (कनिंघम ऐड गैरिक, रिपोर्ट्स ऑव टुअर्स इन नार्थ ऐड साउथ बिहार इन 1880-81, आर्क० स० इ०, पृ० 1-2)। विदेह का नामकरण विदेघ माथव के नाम पर हुआ है, जिसने शतपथ ब्राह्मण के अनुसार (I IV. 1) यहाँ पर उपनिवेश स्थापित किया था। विदेह का नाम सिनेरु पर्वत के पूर्व मे स्थित एशिया के पूर्वी उपमहाद्वीप पुब्बविदेह के प्राचीन आप्रवासियो या आगंतुको से ग्रहण किया गया है (पपञ्चसूदनी, सिंहली संस्करण, I, पृ० 484; धम्मपद अट्ठकथा, सिहली सस्करण, II, 482)। महाभारत मे इसी क्षेत्र को भद्राश्ववर्ष कहा गया है (महाभारत, भीष्मपर्व, 6, 12, 13, 7,13, 6,31)।

भविष्यपुराण के अनुसार निमि के पुत्र, मिथि ने मिथिला के सुरम्य नगर की स्थापना की थी। इस शहर का सस्थापक होने के कारण उन्हें जनक कहा जाने लगा (तु० भागवतपुराण, IX, 13.13)। दीघ निकाय (II, पृ० 235) के महागोविन्द सुत्तांत के अनुसार विदेह को एक राज्य के रूप से सीमांकित किया गया था जिसकी राजधानी गोविन्द द्वारा निर्मित मिथिला थी। विष्णुपुराण

(388 और आगे) मे मिथिला के नाम की व्युत्पत्ति का एक काल्पनिक विवरण दिया गया है। इन्द्र के यज्ञ का अनुष्ठान करने के पश्चात् वशिष्ठ राजा निमि का यज्ञ प्रारभ करने के लिए मिथिला गये थे। वहाँ पहुँच कर उन्होने देखा कि कर्मकाड सपादित करने के लिए राजा ने गौतम को नियुक्त कर लिया था। राजा को सोता हुआ देख कर उन्होने राजा निमि को शरीर रहित होने का शाप दिया। जागने पर राजा ने वशिष्ठ को नष्ट हो जाने का शाप दिया, क्योकि उन्होने एक सोते हुए राजा को अभिशप्त कर दिया था। ऋषियो ने निमि के मृत शरीर का मथन किया और इसके परिणामस्वरूप एक शिशु उत्पन्न हुआ जो कालातर मे मिथि नाम से विश्रुत हुआ (तु०, भागवतपुराण, IX,24. 64)। मिथि के आधार पर मिथिला नाम पडा था और वहाँ के नरेशो को मैथिल कहा गया (वायुपुराण, 89. 6, ब्रह्माण्डपुराण, III, 64. 6. 24, वायु० 89, 23, विष्णु०, IV, 5, 14)।

मिथिला के चार प्रवेश-द्वारो मे प्रत्येक पर एक बाजार था (जातक, VI, पृ०, 330)। यहाँ पर हाथी, घोडो, रथो, बैलो, भेडो और इसी प्रकार के अन्य पशुधनो के साथ ही सोने, चाँदी, मुक्ता और मणियो एव अन्य मूल्यवान वस्तुओ का बाहुल्य था (बील, रोमाटिक लीजेड ऑव शाक्य बुद्ध, पृ० 30)। यह नगर भव्य और विस्तृत था तथा प्राकारो, फाटको, कँगूरेदार दुर्ग और प्राचीरो-सहित शिल्पियो ने भली प्रकार से इसे अभिकल्पित किया था। प्रत्येक ओर से यहाँ पर पारगामी सडके थी तथा यह रमणीक सरोवरो एव उद्यानो से अलकृत था। यह एक उल्लासपूर्ण नगर था। इस शहर मे रहने वाले ब्राह्मण काशी मे बने वस्त्र धारण करते, चदन, सुवासित और मणियो से अलकृत रहते थे। यहाँ के प्रासाद एव सभी रानियाँ राजसी वस्त्रो एव मुकुटो से अलकृत रहती थी (जातक, VI. 46 और आगे; तु०, महाभारत, III, 206, 6-9)। यह गगा के उत्तरी तट पर स्थित एक उर्वर नगर था (ग्रिफिथ द्वारा अनूदित रामायण, XXXIII, पृ० 51)। लबी प्राचीरो से आवेष्ठित यह एक शान्त नगर था, (वही, अध्याय, LXVI, पृ० 89)। रामायण के अनुसार मिथिला एक मनोरम एव स्वच्छ नगर था। इसके निकट एक प्राचीन और निर्जन जगल था (वही, अध्याय, XLVIII, पृ० 68)। यह नगर सुरक्षित और यहाँ पर सुयोजित सड़के थी। यहाँ के निवासी स्वस्थ थे जो नित्य उत्सवों मे भाग लिया करते थे (महाभारत, वनपर्व, 206, 6-9)। यह उन उन्नीस नगरों मे से था, जिस पर सूर्यवशी विविध राजवशो के राजकुमारो ने निरतर कई बार राज्य किया था (वसत्थपकासिनी, I, पृ० 130)। मिथिला मे एक मंदिर था जहाँ पर महागिरि अध्यापक रहते थे (लाहा,

पञ्चालाज ऐंड देयर कैपिटल अहिच्छत्र, मे० आर्क्० स० इ०, न० 67, पृ० 11)।

विदेह-राजाओं में बहुविवाह की प्रथा प्रचलित होती है (जातक, IV, 316, और आगे)। बुद्ध-युग मे विदेह व्यापार का एक केंद्र था। विदेहो की महती समृद्धि दूसरे देशों यथा, वाराणसी से व्यापार करने के कारण थी। अपना माल बेचने के लिए लोग श्रावस्ती से विदेह आते थे। बुद्ध का एक शिष्य ढेर का ढेर माल लेकर व्यापार के लिए विदेह गया था (परमात्थदीपनी ऑन द थेरगाथा, सिंहली सस्करण, III, 277-78)।

मिथिला के राजाओं मे जनक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण था जिसने मिथिला मे अपना यज्ञ सपादित किया था (महाभारत, वनपर्व, अध्याय, 132, 134) आदि)। मिथिला के निवासी जनक का साम्राजिक प्रभुत्व मानते थे। वह अयोध्या के राजा दशरथ का मित्र था। वह अत्यत सस्कृत और दृढ निश्चय वाला व्यक्ति था (ग्रिफिथ द्वारा अनूदित रामायण, अध्याय, XII, पृ० 23, 95)। जनक की एक उक्ति बतलायी जाती है। अपने नगर को आग मे जलता हुआ देख कर उसने यह गीत कि 'इसमे मेरा कुछ नहीं जल रहा है' गाया था (महाभारत, XII, 17, 18-19, 219, 50, तु०, उत्तराध्ययन सूत्र, जैन सूत्राज, II, 37)। कुछ विवाहार्थी जनक की पुत्री सीता को लेने आये थे (रामायण, XXXIII, पृ० 89)। शिव के धनुर्भग का प्रतिशोध लेने के लिये परशुराम मिथिला आये, राम का अपमान और युद्ध के लिए आह्वान किया जिसमें वह पराजित हुये थे (कीथ, सस्कृत ड्रामा, पृ० 245)। निमि मिथिला के राजवश के आदिपुरुष थे (रामायण, I, 71. 3)। मिथिला-नरेश अगति के पास उसके प्रशासन मे सहायता करने के लिए तीन मत्री थे। सूर्यप्रज्ञप्ति के अनुसार जियसत्तु मिथिला का राजा था। वह कोशलाधिपति प्रसेनजित् के अतिरिक्त और कोई अन्य न था (तु०, भगवती सूत्र, पृ० 244, हर्नेल द्वारा अनूदित, उवासगदसाओ, पृ० 6)। जैन-ग्रथ निरयावलिय सुत्त के अनुसार विदेह-जन चेटक को अपना राजा मानते थे (जैन सूत्राज, I, पृ० xiii)। वह लिच्छवि राज्यसघ का एक प्रभावशाली नेता था। उसकी पुत्री छलना का विवाह मगध के श्रेणिक बिम्बिसार के साथ हुआ था और वह अजातशत्रु की माँ बनी। राजा पुष्पदेव मिथिला का शासक था जिसके चन्द्र और सूर्य नामक दो धर्मात्मा पुत्र थे (बोधि सत्त्वावदान-कल्पलता, 83वाँ पल्लव, पृ० 9)। दानी मिथिलानरेश विजितावी को उसके राज्य से निर्वासित कर दिया गया था (महावस्तु, III, पृ० 41)। अपनी दिग्विजयों के अतर्गत् कर्ण ने मिथिला को जीत लिया था (महाभारत, वनपर्व, 254)।

मिथिलानरेश साधिन अनेक वर्षों तक सुख से था। उसने न्यायपरायणता से इस नगर पर राज्य किया था (जातक, भाग, IV, 355 और आगे)। मिथिला पर शासन करने वाला राजा महाजनक था। उसकी मृत्यु के उपरात उसका ज्येष्ठ पुत्र उसका उत्तराधिकारी बना और उसका कनिष्ठ पुत्र उपराजा या वाइसराय बनाया गया। मिथिला शहर में ज्येष्ठाधिकार-नियम प्रचलित प्रतीत होता है (जातक, VI, 30 और आगे)। पालवशीय रामपाल ने कैवंत अपहर्त्ता को पराजित करके मिथिला पर विजय प्राप्त की थी। वरेंद्र एवं मगध पर बगाल के सेनो का अधिकार हो जाने के बाद तिरहुत में नानदेव के नेतृत्व मे एक नये राजवश का उदय हुआ (कनिंघम ऐंड गैरिक, रिपोर्ट्स ऑव टुअर्स इन नार्थ ऐंड साउथ बिहार इन 1880-81, आर्क० स० इ०, पृ० 1-2)।

मिथिला जैन धर्म के वर्द्धमान महावीर और बौद्ध मत के प्रवर्त्तक गौतम बुद्ध के चरण-रज से पवित्र हुयी थी। अपने सिर मे उखाडे हुए एक पके बाल को देखकर मिथिला के राजा मखादेव को सासारिक वस्तुओ की नश्वरता का अनुभव हुआ था। बाद मे वह सन्यासी हो गये थे और उन्होने एक श्रेष्ठ आध्यात्मिक अतर्दृष्टि अर्जित कर ली थी (जातक, I, 137-38)। मिथिला के साधिन नामक एक धर्मात्मा राजा ने पचमहाव्रतो का पालन और निर्धारित उपवास दिवसो के व्रतों का अनुपालन किया था (जातक, IV, 355 और आगे)।

भारतीय तपस्वियो के इतिहास मे विदेह-राज्य ने महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की है (मज्झिम, II, 74 और आगे)। बुद्ध मिथिला मे रुके थे और वही उन्होने मखादेव तथा ब्रह्मायुसुत्तो का प्रवचन दिया था (मज्झिम, II, 74 और आगे, 133 और आगे)। वासिट्ठी नामक एक थेरी मिथिला मे बुद्ध से पहली बार मिली थी और उनके धार्मिक उपदेशो को सुन करके बौद्ध-सघ मे प्रविष्ट हुयी थी (थेरथेरीगाथा, पा० टे० सो०, 136-137)। कोणागमन बुद्ध ने भी मिथिला मे प्रवचन दिया था और पदुमुत्तर बुद्ध ने मिथिला के एक उद्यान मे अपने संभ्राताओ को अपने उपदेश दिये थे (बुधवस कामेट्री, सिहली संस्करण, पृ० 159)।

भागवतपुराण (IX, 13, 27) मे मैथिलों को साधारणतया आत्मन विषयक ज्ञान मे दक्ष बतलाया गया है। बुद्ध के काल मे विदेह में ब्राह्मण-धर्म प्रचलित था (मज्झिम, II, 74 और आगे; 133 और आगे)। विदेह और मिथिला मे बुद्ध के धर्म-प्रचार कार्य के विषय मे बौद्ध निकाय मौन है। केवल मज्झिम निकाय से हमे ज्ञात होता है कि बुद्ध मिथिला मे मखादेव के आम्र-वन मे रुके थे और उन्होंने ब्रह्मायु नामक एक विख्यात् ब्राह्मण शिक्षक का धर्म-परिवर्तन किया था।

मिथिला के राजा सुसंस्कृत व्यक्ति थे। जनक ब्राह्मण युग के एक महान् ऋषि थे। वह न केवल एक महान् और श्रेष्ठ यज्ञकर्त्ता वरन् संस्कृति एवं दर्शन के एक महान् संरक्षक भी थे (आश्वलायन श्रौतसूत्र, X. 3, 14)। उसकी राजसभा कोशल एवं कुरु-पञ्चाल देशों के विद्वान् ब्राह्मणो से सुशोभित रहती थी।

बौद्ध युग मे मिथिला के राजा सुमित्र ने धम्म के अभ्यास मे अपना मन लगाया था (बील, रोमाटिक, लीजेड ऑव द शाक्य बुद्ध, पृ० 30)। मिथिला-नरेश विदेह को धर्मोपदेश देने के लिए उनके पास चार ऋषि थे (जातक, VI. 333)। उनके पुत्र की शिक्षा तक्षशिला मे हुयी थी (ज० ए० सो० ब०, XII, 1916)। पिगुत्तर नामक मिथिला का एक युवक तक्षशिला गया और उसने एक प्रसिद्ध शिक्षक से शिक्षा ग्रहण की थी। उसने शीघ्र ही अपनी शिक्षा पूर्ण कर ली थी (जातक, VI, 347 और आगे)। ब्रह्मायु नामक मिथिला का एक ब्राह्मण इतिहास, व्याकरण तथा किंकर्त्तव्य-मीमासा मे भली भाँति निष्णात् था और वह एक महा-पुरुष के सभी लक्षणो से सपन्न था (मज्झिम, II, पृ० 133-34)।

मिथिला पच-भारत मे से एक थी। बगाल की सभ्यता, विशेषतया तर्कशास्त्र की नयी विद्या, जिसने नदिया के विद्यालयो को सपूर्ण भारत मे प्रसिद्धि दी थी, मिथिला से आयी थी, जब कि मगध ने पूर्वी भारत को प्रकाश देना बद कर दिया था (वी० ए० स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 353, पा० टि० 2)।

भारत पर मुसलमानो की विजय के पश्चात भारतीय तर्कशास्त्र की नयी शाखा की स्थापना गगेश ने मिथिला मे की थी और मिथिला से ही यह मत बगाल के नवद्वीप मे प्रचलित हुआ था। प्रसिद्ध वैष्णव कवि एव गायक विद्यापति बगाल, असम और उडीसा के वैष्णव कवियो के पूर्वगामी थ। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, III, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया, अध्याय, XLVII.

मोर—मोर नदी आधुनिक मोर ही है (जिसे मयूराक्षी भी कहते है)। इसका वर्णन लक्ष्मणसेन के शक्तिपुर ताम्रपत्र मे हुआ है (एपि० इ०, XXI, पृ० 124)। कुछ लोगो ने मोरखी से इसकी पहचान की है। यह नदी उत्तरराढ़ क्षेत्र मे बहा करती थी। यह बीरभूम जिले मे पश्चिम ओर से सथाल परगना से प्रवेश करती है और पूर्व की ओर प्रवाहित होती है। मयूराक्षी नदी योजना पश्चिमी बंगाल मे अपनी तरह की प्रथम योजना है।

मोरनिवाप—यह सुमागधा के तट पर स्थित था। बुद्ध यहाँ पर आये थे। यह राजगृह मे था (दीघ, III, पृ० 39; अगुत्तर, I, पृ० 291)।

मुद्गगिरि—धर्मपाल के पुत्र, देवपालदेव के मुगेर दानपत्र में इसका वर्णन मिलता है, जिसकी पहचान चार्ल्स विल्किसन ने आधुनिक मुगेर से की है (गौड-लेखमाला, I, पृ० 33 और आगे)। इससे प्रकट होता है कि मुगेर (मोदागिरि या मुद्गगिरि) देवपाल के राज्य मे समिलित था। मुद्गगिरि या मोदागिर को साधारणतया बिहार मे स्थित मुगेर की पहाडियो से समीकृत किया गया है। मुगेर को मुद्गलपुरी, मुद्गलाश्रम आदि भी कहते थे। मुद्गलो या मुगेर के निवासियो का उल्लेख महाभारत (द्रोण पर्व, XI, 397) मे प्राप्त होता है। यह एक रोचक तथ्य है कि अङ्ग-राज कर्ण को पराजित करने के पश्चात् भीमसेन ने मोदागिरि पर एक युद्ध किया था और इसके प्रमुख को मार डाला था। यह स्थान दसवी शताब्दी ई० मे पाल राजाओ के शाही पडाव का स्थल था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, आर्क० स० इ०, रिपोर्ट्स, भाग, XV; ओ'मैल्ली द्वारा सपादित बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, मुगेर, पृ० 232-48)।

मुक्शुदाबाद या मुक्शुसाबाद (मुर्शिदाबाद)—यह भागीरथी नदी के तट पर कलकत्ता से 122 मील की दूरी पर स्थित है। यह बगाल के अतिम स्वतत्र शासक, नवाब मुर्शिदकुली खाँ की सुनिर्मित राजधानी थी जो उस समय बगाल का सूबेदार था। इस शहर मे अनेक भव्य भवन और महल थे। यह विस्तृत, जनसकुल एव समृद्ध था। इमामबाडा, मोती झील, हजारदुआरी, नवाब शरफराज खाँ का मकबरा, जो शुजा खाँ की मृत्यु के बाद एक वर्ष के लिए मुर्शिदाबाद के नवाब हुये थे, त्रिपोलिया दरवाजा, तोपखाना, निजामत-अदालत और सदर दीवानी अदालत उल्लेखनीय है। नवाब सिराज-उद्-दौला का मकबरा बेरहाम-पुर शहर से बहने वाली गगा के दूसरे तट पर स्थित है (इट्रोडयूसिग इडिया, भाग, I, पृ० 76-77)।

नगरभुक्ति—धर्मपालदेव के नालदा अभिपत्र मे इसका उल्लेख है, जिसे आधुनिक पटना से समीकृत किया गया है। एक मडल के रूप मे इसमे गया, पटना, और शाहाबाद के जिले संमिलित थे (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII, पृ० 291)। देवपाल के नालंदा-अभिलेख से हमें ज्ञात होता है कि नगरभुक्ति मे राजगृह एव गया विषय समिलित थे।

नंदपुर—बुधगुप्त के नंदपुर ताम्रपत्र में (गुप्त सवत् 169 मे लिखित) नंदपुर का उल्लेख हुआ है जो मुगेर जिले में स्थित एक गाँव है। यह मुगेर जिले

मे सूरजगढ़ा के पूर्वोत्तर में लगभग 2 मील दूर गगा के दक्षिणी तट पर स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 53)।

नवद्वीप—यह वष्णवो का एक तीर्थस्थान है। नौ द्वीपो का समुच्चय होने के कारण इसे नवद्वीप कहा जाता है। यह वर्तमान नवद्वीपघाट रेलवे स्टेशन के पश्चिम मे स्थित है जो नदिया जिले मे कृष्ण नगर कस्बे से आठ मील दूर है।

बगाल मे नूतन वैष्णवमत के महान् प्रवर्तक श्रीचैतन्य ने अपने इस जन्म-स्थान को 24 वर्ष की आयु मे छोड दिया था और एक सन्यासी का जीवन व्यतीत करने लगे थे। बल्लालसेन द्वारा विनिर्मित प्रासाद के भग्नावशेष वर्तमान् मायापुर से आधा मील दूर उत्तर मे, गगा के पूर्वी तट पर अब भी प्राप्त होते है। लक्ष्मणसेन के पौत्र और बल्लालसेन के प्रपौत्र, अशोकसेन ने यहाँ पर एक न्यायालय की स्थापना की थी। किसी समय यह सस्कृत विद्या का एक महान केंद्र था (इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, 73-74)।

नवग्राम—दक्षिण राढ मे स्थित नवग्राम की पहचान बगाल मे हुगली जिले के भुरशुन परगने मे इसी नाम के एक गाँव से की गयी है। अमरेश्वर मंदिर के हलायुध स्तोत्र में इसका उल्लेख हुआ है (इडियन-कल्चर, I, 702, II, 360; एपि० इ०, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939, पृ० 184)।

नागवन—यह वृज्जियो के देश मे स्थित था (अगुत्तर, IV 213)।

नागा पहाड़ियाँ—नागा पहाडियाँ नागालैंड की पूर्वी सीमाएँ हैं। नागा हिल्स उत्तर मे शिबसागर और पश्चिम मे शिबसागर, नवगॉव तथा उत्तरी कछार पहाडियो, दक्षिण मे मणिपुर और पूरब मे स्वतत्र नागा कबीलो द्वारा निवसित पर्वतमालाओ से घिरी हुयी है। सपूर्ण क्षेत्र मे पहाडी प्रदेश की एक पतली पट्टी समिलित है और इसकी अधिकतम् लबाई 138 मील तथा औसत चौडाई लगभग 25 मील है। ये पहाडियाँ सघन सदाबहार वनो से आच्छादित है। कोहिमा के उत्तर मे मुख्य पर्वतमाला की ऊँचाई क्रमश. कम होती जाती है। नागा पहाडियाँ साधारणतया प्राक्-तृतीयक शिलाओ से निर्मित है, जिनके ऊपर तृतीयक स्तर की शिलाएँ है। नागा पहाडियो का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कोयला-क्षेत्र इस की सीमाओ के बाहर स्थित है।

शीत-ऋतु मे इन ऊँची पहाडियो की जलवायु ठंडी और स्फूर्तिदायक है। यहाँ के दिन साधारणतया प्रकाशमान एव दीप्तमान होते है किंतु रात का कुहरा भी किसी प्रकार साधारण नही है। मैदानों की निकटवर्ती पहाडियों की नीची श्रृखलाएँ अस्वास्थ्यकर हैं। वहाँ पर रहने वाले नाग ज्वर से अधिक पीड़ित रहते है और साधारणतया उनका स्वास्थ्य गिर जाता है।

नागों का विशाल समूह अब भी अपने पूर्वजो के धर्म मे निष्ठावान है। वे सर्वोच्च स्रष्टा के अस्तित्व मे विश्वास करते है। बीमारियो और अपने ऊपर पडने वाली अन्य विपत्तियो को वे प्रेतात्माओं के अनिष्टकारक प्रभाव का परिणाम मानते है। यज्ञो से वे उनको तुष्ट करने की चेष्टा करते है। उनमे से बहुतो का विश्वास है कि मनुष्य मे कोई ऐसी वस्तु है जो शरीर की मृत्यु के बाद भी जीवित रहती है परतु वे यह नही कह सकते कि वह कौन सी वस्तु है और कहाँ चली जाती है (बी० सी० एलेन, असम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, भाग, IX, 1905, पृ० 1-39, नागाहिल्स ऐड मनीपुर)।

नागार्जुनि पहाड़ी—अनतवर्मन् के नागार्जुनि पहाडी के गुहा-लेख मे इस पहाड़ी का वर्णन है जो विन्ध्य-पर्वत माला का एक भाग है। यह जफरा नामक गाँव से उत्तर की ओर लगभग एक मील दूर पर स्थित है जो गया के पूर्वोत्तर मे लगभग 15 मील दूर पर है (का० इ० इ०, जिल्द, III, खलतिक पहाडियाँ भी देखिये)।

नालकगाम—यह मगध मे स्थित एक गाँव था जहाँ पर सारिपुत्त की मृत्यु हुयी थी (सयुत्त०, V. 161)। कुछ लोगो ने इसे मगध के उत्तरी भाग मे स्थित बतलाया है (विमानवत्थु कामेंट्री, पा० टे० सो०, पृ० 163)। इस गाँव को नलगामक से समीकृत किया जा सकता है, जो राजगृह के समीप ही स्थित था (सयुत्त०, V. 161)। जातक (I 391) मे उस गाँव का नाम जहाँ थेर सारिपुत्र उत्पन्न हुये थे, नाल बतलाया गया है। इस जातक मे कहा गया है कि उनकी मृत्यु वरक मे हुयी थी।

नालंदा—नालदा मगध मे राजगृह के अचल मे स्थित है। नालदा नाम इसी नाम वाले एक नगर से ग्रहण किया गया है जो नालदा-बिहार के दक्षिण मे एक आम्र-कुज मे स्थित किसी तालाब मे रहा करता था। पू-सा (Pu-sa) के रूप मे जु-लाई (Ju-lai) किसी समय एक राजा था, जिसकी राजधानी नालदा थी। चूँकि राजा को उसकी करुणहृदयता और दानशीलता के कारण "न+अलं+दा" या 'दान देने से कभी न तृप्त होने वाले' की उपाधि देकर सम्मानित किया गया था, इसलिए विहार का नामकरण भी इसी उपाधि से हुआ था। इस अधिष्ठान की भूमि मूलत. एक आम्र-कुज थी जिसे 500 व्यापारियों ने 10 कोटि स्वर्ण-मुद्राओ से खरीदा था और उन्होने इसे बुद्ध को दान दे दिया था। बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद, शीघ्र ही, इस देश के एक भूतपूर्व राजा शक्रादित्य ने एकयान मे आदर, और त्रिरत्नो मे श्रद्धासहित इस विहार का निर्माण कराया (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, पृ० 164)। युवान-च्वाङ

नालदा शब्द की उस व्याख्या को नही मानता जिसके अनुसार इसका नाम आम्रवन मे स्थित सरोवर के नालदा नामक नगर से ग्रहण किया गया है। वह जातक की कहानी को वरीयता प्रदान करता है जो इस नाम को न-अलम्-दा या'दान देने से कभी न थकने वाले' विरुद से सबधित बतलाती है। उक्त उपाधि बुद्ध को उनके एक पूर्वजन्म मे दी गयी थी जब वह यहाँ के राजा थे (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, 166)।

राजगृह (आधुनिक राजगीर) से नालदा की दूरी एक योजन है (सुमगल-विलासिनी, I, 35)। किंतु महावस्तु के अनुसार यह राजगृह से केवल आधे योजन की दूरी पर स्थित है (भाग, III, 56)। इसमे एक समृद्ध गाँव के रूप मे इसका वर्णन है। इसे आधुनिक बडा-गाँव मे समीकृत किया जाता है जो पटना जिले मे राजगीर से सात मील पश्चिमोत्तर मे स्थित है (कनिघम, ऐश्येंट ज्यॉग्रेफी, एस० एन० मजूमदार सस्करण, पृ० 537)। राजगृह से नालदा तक एक सडक थी और बुद्ध ने अपनी यात्रा में इसी सडक का अनुसरण किया था। गौतम को इस सडक पर बैठे हुये देखा गया था (सयुत्त निकाय, II, पृ० 220)।

नालदा प्रभावशाली, समृद्धिशाली, लोकयुक्त और महात्मा बुद्ध के भक्तों मे परिपूर्ण था। यहाँ पर कई सौ इमारते थी। नालदा के एक धनी एव समृद्ध गृहस्थ के यहाँ एक सुदर स्नानागार था जिसमे कई सौ स्तभ थे। यहाँ पर हस्तियाम नामक एक उद्यान था (जैन सूत्राज, II, 419 और आगे)। प्राचीन सरोवरो और विनष्ट टीलो से परिवृत बडागॉव या नालदा मे मूर्ति-कला के उत्कृष्ट नमूने थे। वहाँ के अवशेषो मे ईटो के असख्य खडहरो के समूह है जिनमे सर्वाधिक मनोहर, उत्तर से दक्षिण फैले हुये सूच्याकार उत्तुग टीलो की पक्ति है। ये ऊँचे टीले नालदा के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय से सलग्न भीमकाय मंदिरों के अवशेष है। बडागॉव के अवशेषो पर अनेक बिहार और कई उत्कीर्ण गुबद बिखरे पडे है। बडागाँव मे अनेक उल्लेखनीय वस्तुएँ है, उदाहरणार्थ साधक बुद्ध की एक भीमकाय प्रतिमा, तपस्वी बुद्ध की एक देहदीर्घ मूर्ति तथा एक हिंदू मदिर मे अवस्थित कई छोटी प्रतिमाएँ, बडागाँव ग्राम के उत्तर मे दो नीचे टीले है जिनमे से एक पर गरुड पर स्थित चतुर्भुज विष्णु की प्रतिमा और दूसरे पर कुर्सी पर बैठे हुये बुद्ध की दो मूर्तियाँ तथा बुद्ध गया के महा-मदिर जैसी शिल्प-शैली मे निर्मित एक जैन मदिर है। वहाँ पर कई जैन मूर्तियाँ भी हैं। वहाँ पर सरोवर है, जिन्होंने अवशेषो को चारो ओर से परिवृत कर रखा है (द्रष्टव्य, कनिघम, आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव इडिया, रिपोर्ट्स, 1862-1865; जिल्द, I, पृ० 28 और आगे; एनुअल रिपोर्ट ऑव द आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव इडिया,

1915-16, भाग, I, पृ० 12-13)। इनके अतिरिक्त नालंदा से अनेक लघु-प्रतिमाएँ और मुहरें प्राप्त होती हैं। यहाँ पर अनेक बिहारो के अवशेष प्राप्त हुये है और नालदा अधिष्ठान की सरकारी मुहर की प्राप्ति पुरातत्व विभाग की एक महत्त्वपूर्ण खोज है (एनुअल रिपोर्ट ऑव द आर्कयॉलॉजिकल सर्वे ऑव इडिया, भाग, I, 1916-17, पृ० 15)। सभी उपलब्ध साक्ष्य इस तथ्य के प्रति संकेत करते है कि बुद्ध के महाबोधि प्राप्त करने के बाद कतिपय वर्षों मे ही अनेक महत्त्वपूर्ण स्थानों मे बौद्ध महाविहार स्थापित किये गये थे, जिनमे नालदा का नाम भी आता है (द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, लाइफ ऐंड वर्क्स ऑव बुद्धघोष, पृ० 49)। टी० डब्ल्यू० रीज डेविड्स ने बतलाया है कि सावत्थी से राजगृह जाने वाले व्यापारिक मार्ग के यात्रियो के लिये नालदा एक पडाव था (बुद्धिस्ट इडिया, पृ० 103)। पाँचवी शताब्दी ई० मे गुप्तवशीय नरसिंह-गुप्त ने मगध में नालदा मे 300 फीट से भी अधिक ऊँचा ईंटो का एक मदिर बनवाया था। यह मदिर अपने अलकरण की मजुलता और अपने उपस्कर की अपरिमित साज-सज्जा के लिये उल्लेखनीय है (वी० ए० स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 329)।

बुद्ध ने अपना अधिकाश समय नालदा मे पावारिक के आबवन (आम्रवन) मे व्यतीत किया था। इसी स्थान पर सारिपुत्त उनका दर्शन करने के लिये आये थे और उनमे धर्म की परपरा के विषय मे परिचर्चा हुयी थी (दीघ निकाय, II, 81-83)। भिक्षुओ के साथ बुद्ध ने सम्यक् आचार, सम्यक् सकल्प और सम्यक् वाक् के विषय मे व्यापक वार्ता की थी (दीघ निकाय, II, 83-84)। जिस समय बुद्ध यहाँ पर थे, एक धनी पौर ने बुद्ध को एक विहार और एक वन की भेंट प्रदान की थी। सारिपुत्त उनके पास आये और बोले, 'क्या भिक्षु—क्या ब्राह्मण, कोई भी व्यक्ति ऐसा नही है जो तथागत से तत्त्व-ज्ञान मे बडा हो और यही विश्वास है जो मैं अपने मन मे सजोये हुये हूँ।' इसके उत्तर मे बुद्ध ने धर्म के विषय मे एक प्रवचन दिया जिससे उनको सन्तोष हुआ (तु०, दीघ निकाय, III, 99)। यहाँ पर दीघतपस्सी नामक एक जैन बुद्ध से मिला था। उक्त जैन से उन्होने निगण्ट नाथपुत्त द्वारा बताये गये कर्मों की सख्या पूँछा जिनसे पापकर्मों को नष्ट किया जा सकता है (मज्झिम; भाग, I, पृ० 371 और आगे)। उपालि नामक एक गृहस्थ बुद्ध का दर्शन करने नालंदा आया था और उसने इस जीवन में अपने मरने का कारण पूछा (सयुत्त, IV, 110)। एक गाँव का असिबधकपुत्त नामक मुखिया बुद्ध के पास गया था। बुद्ध ने उसे बताया कि मनुष्य को भूमि की उर्वरता के अनुसार बीज बोना चाहिये (संयुत्त, IV, पृ० 311 और आगे)। जिस

समय बुद्ध नालंदा मे रुके थे, उन्होने केवढ्ढ नामक एक तरुण गृहस्थ को देवताओं के तीन चमत्कार के विषय मे बताया (दीघ, I, केवढ्ढसुत्त)। जब बुद्ध नालदा के आम्रवन मे रुके थे, उन्होंने तीन प्रकार के दडों आदि के विषय मे जैन दीघतपस्सी के साथ विचार-विमर्श किया था। बुद्ध ने मानसिक विकारो को सर्वाधिक कलुषित माना है (लाहा, हिस्टॉरिकल ग्लीनिंग्स, पृ० 91-92)। नालदा मे ही महावीर मक्खलि गोसाल से मिले थे। इस मिलन के परिणाम भीषण प्रतीत होते हैं। छः वर्षों तक महावीर और मक्खलि गोसाल ने एक साथ रहकर घोर तपस्या की किंतु बाद में गोसाल ने महावीर से अलग होकर अपना एक निजी धार्मिक सप्रदाय प्रचलित किया (उवासगदसाओ, पृ० 109 और आगे, तु०, कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, भाग, I, पृ०, 158-59)। नालदा के उपकठ मे महावीर ने चौदह चार्तुमास्य व्यतीत किये थे और उन्होने अपने धर्मप्रचारक जीवन का अधिकतर भाग इसी स्थान पर व्यतीत किया था। यहाँ पर महावीर का एक सुदर जैन मदिर है (न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 137)।

बालादित्य का शिलालेख नालदा मे स्थित एक मदिर के द्वार पर मिला था (गौडलेखमाला, I, पृ० 102)। बालादित्य ने नालदा मे बुद्ध के लिए यह मदिर बनवाया था (एपि० इ०, XX, 37 और आगे)। विष्णुगुप्त की मृण्मुहर नालदा के विहारस्थल स० 1 से खोदकर निकाली गयी थी (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942)। नालदा के विहारस्थल सख्या 1 से दो मौखरि-मुहरे भी उपलब्ध हुयी थी (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, अप्रैल, 1938)। आदित्यसेन के शाहपुर पाषाण-प्रतिमा अभिलेख मे शाहपुर के निकटवर्ती क्षेत्रों मे इसका उल्लेख है जिसे कनिंघम ने राजगिरि के सात मील उत्तर मे स्थित आधुनिक बड़ागाँव से समीकृत किया है। नालदा के भग्नावशेषो से एक पाषाण तिमा लेख जिसका नाम नालदा-वागीश्वरी पाषाण-प्रतिमा अभिलेख है, प्राप्त हुआ था। इस अभिलेख मे गोपालदेव के शासनकाल के प्रथम वर्ष मे नालंदा में वागीश्वरी की मूर्ति की प्रतिष्ठापना का आलेख है (ज० ए० सो० ब०, 1908, VI, नयी माला, पृ० 105-106)। देवपालदेव के काल के घोस्रवन अभिलेख मे (इ० ऐ०, XVII, 307 और आगे) नगरहार के इन्द्रगुप्त के पुत्र वीरदेव को नालदा का प्रशासन सौपा गया था (नालंदा परिपालनाय नियतः सघशिते यः स्थितः)। बौद्ध संघो से संबधित मुहरों मे अधिकाश नालदा के महाविहार की हैं (एपि० इ०, XXI, 72 और आगे; वही, 307 और आगे)। नालदा में शास्त्रों और कलाओं मे निष्णात् सुविख्यात् विद्वान् थे (एपि० इं०, XX, 43)।

बुद्ध की मृत्यु के पश्चात् शक्रादित्य, बुधगुप्त, तथागतगुप्त, बालादित्य एव वज्र नामक पाँच राजाओं ने नालदा मे पाँच विहार बनवाये थे (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, पृ० 164-65)। नालदा विश्वविद्यालय को 450 ई० मे राजकीय मान्यता प्राप्त हुयी (स० चं० विद्याभूषण, हिस्ट्री ऑव इडियन लॉजिक, पृ० 515)। तिब्बती विवरणो के अनुसार वह दिशा, जिसमे अपने विपुल पुस्तकालय के साथ विश्वविद्यालय स्थित था, धर्मगञ्ज कही जाती थी। यहाँ पर तीन भव्य भवन थे जिन्हें क्रमश रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरञ्जक कहा जाता था। रत्नोदधि में, जो एक नौमजिली इमारत थी, प्रज्ञापारमिता नामक धर्मलिपियाँ और समाजगुह्य नामक तान्त्रिक ग्रथ रखे हुये थे (वही, 516)। काञ्चीपुर जिसे मद्रास राज्य मे आधुनिक काजीवरम् कहते हैं, के धर्मपाल नामक एक निवासी ने इस विश्वविद्यालय मे अध्ययन किया था और विशेष योग्यता प्राप्त की थी। कालातर मे वह इस विश्वविद्यालय का कुलपति हो गया था (वही, पृ० 302; तु० बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 110)। शीलभद्र नामक एक ब्राह्मण, जो समतट (निचले बगाल) के राजवश से सबधित था, धर्मपाल का शिष्य था। वह भी इस विश्वविद्यालय का कुलपति बन गया था (बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, पृ० 110)। इत्सिग जो 671 ई० मे भारत यात्रा के लिए चला था, 672 ई० मे हुगली नदी के मुहाने पर स्थित ताम्रलिप्ति पहुँचा था। उसने राजगृह के पूर्वी छोर पर स्थित बौद्ध शिक्षा के केद्र नालदा मे अध्ययन किया था (इत्सिग, ए रिकार्ड ऑव द बुद्धिस्ट रिलीजन, भूमिका, पृ०, XVII)। उसने बतलाया है कि नालदा विश्वविद्यालय के श्रद्धास्पद एव विद्वान पुरोहित कभी घोडो पर नही चलते थे बरन् पालकियो मे यात्रा करते थे (वही, पृ० 30)। उसके अनुसार नालदा के विहार मे पुरोहितों की सख्या 3000 से अधिक थी। इस विहार मे आठ महाकक्ष और तीन सौ कमरे थे। पूजा केवल पृथकत: की जा सकती थी (वही, 154)। इत्सिग ने इस विश्वविद्यालय मे बौद्ध-साहित्य का अध्ययन करते हुये कई वर्ष व्यतीत किये थे। चीनी यात्री युवान-च्वाङ भी कई वर्षों तक इस विश्वविद्यालय का विद्यार्थी था। उसके अनुसार भारत मे इस प्रकार के हजारो विद्यालय थे। किंतु महत्ता की दृष्टि से कोई भी नालदा के समान नही था। यहाँ पर 10,000 विद्यार्थी थे, जो विविध विषयों का, जिनमे बौद्ध एव ब्राह्मण साहित्य समिलित थे, अध्ययन करते थे और यहाँ पर प्रतिदिन सौ मचो से उपदेश दिये जाते थे। वहाँ पर व्याख्यान-कक्ष थे और शिक्षको एव विद्यार्थियो के विशाल समागम के लिये सभी आवश्यक सामग्रियाँ प्रदान की जाती थी। इस उद्देश्य के लिए लगभग

100 गाँवो का राजस्व प्रदत्त था और इस प्रकार के दो सौ गाँव बारी-बारी से अतेवासियों की दैनिक आवश्यकताओ की पूर्ति करते थे। अतः यहाँ के विद्यार्थी इतने प्रचुर रूप से समरित या आपूर्त थे कि उनको चार आवश्यकताओ, यथा, भोजन, वस्त्र, बिस्तर एवं औषधि की अपेक्षा नही करनी पडती थी। प्रातः-काल से रात्रि तक विद्यार्थी एव शिक्षक स्वय परिचर्चाओ मे लीन रहते थे। अपनी शकाओ का समाधान करने के लिए विभिन्न नगरो से वहाँ बहुसख्या मे विद्वज्जन आया करते थे और नालदा के छात्र, जहाँ कही भी जाते थे, सर्वत्र सर्वोत्तम विद्यार्थी माने जाते थे। नालंदा उच्च-विद्यार्थियो के लिए था और विद्यार्थियों को एक कठिन प्राथमिक परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती थी। नालदा विश्वविद्यालय निश्चय ही शिक्षा के उच्चतम आदर्श का प्रतिरूप था। विस्तृत विवरण के लिये, द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, द मगधाज इन ऐन्श्येंट इडिया, रा० ए० सो० मोनोग्राफ न० 24, पृ० 41-43; हीरानद शास्त्री, नालदा ऐड इट्स एपिग्रेफिक मैटिरियल (मे० आर्क० स० इ०, न० 66), नीलकठ शास्त्री का जर्नल ऑव द मद्रास यूनिवर्सिटी, भाग, XIII, न० 2 मे प्रकाशित लेख. 'नालदा, ए० घोष, ए गाइड टु नालदा, दिल्ली, द्वितीय सस्करण, 1946, नालदा इन ऐश्येंट लिटरेचर, पचम इडियन ओरियटल कान्फ्रेस, 1930. रा० कु० मुकर्जी, द यूनिवर्सिटी ऑव नालदा, ज० बि० उ० रि० सो०, XXX, भाग, II, 1944, आर्क० स० इ०, रिपोर्ट्स, ईस्टर्न सर्किल, 1901-02, 1915-16, 1919-20, ज० बि० उ० रि० सो०, मार्च, 1923, ओ' मैल्ली, बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पटना, पृ० 217-223 नालदा के उत्खनन के विवरण के लिए द्रष्टव्य, आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट्स, 1930-34, पृ० 130-140, 1936-1937 (1940)।

नान्यमण्डल—इसका वर्णन श्रीचन्द्र के रामपाल ताम्रपत्र मे आता है और यह पौड्रवर्धनभुक्ति से संबधित था (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शस ऑव बगाल III, पृ० 2)।

नेहकाष्ठि—पौण्ड्रवर्धनभुक्ति के नान्यमण्डल के अंतर्गत् स्थित एक गाँव के रूप मे इसका वर्णन श्रीचन्द्र के रामपाल ताम्रपत्र मे है (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शस ऑव बगाल, III, पृ० 2)।

नेरञ्जरा—(नैरञ्जना, चीनी, नी-लिएन-चॉन—Ni-lien-ch' an)—यह फल्गु नदी है। नीलाजना और मोहना इसकी दो शाखाएँ है और इनके सयुक्त प्रवाह का नाम फल्गु है। इस नदी का उद्गम-स्थल हजारीबाग जिले मे सिमेरिया के समीप है। इस नदी के पश्चिम मे थोडी दूर पर बुद्ध-गया (बोध गया) स्थित

है। पालि धर्म-ग्रथो के साक्ष्य के आधार पर डॉ० बरुआ की धारणा है कि नैरञ्जना नदी को फल्गु नदी या गया से नही समिश्रित करना चाहिए। उनके अनुसार दोनों पृथक नदियाँ हैं (गया ऐंड बुद्ध गया, पृ० 101)।

नेरञ्जरा नदी, जो घनिष्ट रूप से ऊरुवेला से संबधित थी, का जल निर्मल, शुद्ध, नीला और शीतल था जिसमे स्नान करने के लिए घाट बने थे, जिनमे नीचे उतरने के लिए सीढियाँ थी (पपञ्चसूदनी, पा० टे० सो०, II, 173, तुलनीय, ललितविस्तर, बिबिल्योथेका इडिया सीरीज़, पृ० 311; महावस्तु, II, 123-124)। इसके तट पर सुप्पतिट्ठित (सुप्रतिष्ठित) एक घाट था जहाँ पर बोधिसत्तजन अपने निर्वाण के दिन स्नान करते थे (जातक, I, 70)। इसके तट पर एक विशाल शालवन था (महाबोधिवस, पृ० 28)। यहाँ पर हिरन पाये जाते थे (जातक, IV, 392-397)। प्राय यह नदी नागकन्याओं की उपस्थिति से सुशोभित रहती थी जो इसमे जलविहार का आनद लेती थी (ललितविस्तर, पृ० 386, महावस्तु, II, 264)। जटिल बघु भी शरद् ऋतु मे रात मे इसमे गोता लगाने का अभ्यास करते थे (विनय, I, 31)।

जब सिद्धार्थ एक बोधिसत्त थे, वह इस नदी तक आये थे। वह सोने की तश्तरी जिसमे सुजाता ने खीर दी थी, बोधिसत्त ने इसके तट पर रखी थी। तब उन्होने स्नान किया था और चावल की खीर खायी थी। उन्होने तब इस तश्तरी को नदी मे यह कहते हुये फेक दिया कि यदि मै आज बुद्ध हूँ तो इसे प्रवाह के प्रतिकूल बहना चाहिए, (जातक, I, 70, वही, I, 15-16, थूप०, V, पा० टे० सो०, पृ 5; बुद्ध० V, अध्याय, II, श्लोक, 64; वही, अध्याय, XX, श्लोक, 16; महाबोधि, V, पृ० 8; जिनचरित्त, V, 207, ललितविस्तर, अध्याय, 18, पृ० 267; धम्मपद कामेंट्री, I, 86, पपञ्चसूदनी, II, 183)।

इस नदी के समीप एक विशाल झुरमट था, जिसमे बोधिसत्व ने एक बार दिन व्यतीत किया था (धम्मपद कामेंट्री, I, 86, तुलनीय, महाबोधि, V, पृ० 29)। जब बोधिसत्व इसके तट पर ठहरे थे, उनसे पाँच भिक्षु मिले थे जो उनके शिष्य हो गये थे (मज्झिम, I, 170; वही, II, 94; सयुत्त, III, 66; विनय टेक्स्ट्स, सै० बु० ई०, I, पृ० 90)। इस के तट पर मार ने उन्हे प्रलोभित करने का दु:साहस किया था, किंतु उसके सारे प्रयत्न निष्फल रहे (संयुत्त, I, 103 और आगे; वही, I, 122 और आगे; सुत्तनिपात, पा० टे० सो०, पृ० 74; V 425; निद्देस, I, 455; जिनचरित्, श्लोक, 239-245; ललितविस्तर, अध्याय, 20; महावस्तु, II, 315; दिव्यावदान, पृ० 202; राकहिल, द लाइफ ऑव द बुद्ध, पृ० 31)।

इस नदी के तट पर बुद्ध के कार्य-कलाप कुछ कम महत्त्वपूर्ण न थे। सबोधि प्राप्त करने के पश्चात् यहाँ बट-वृक्ष के तले बुद्ध ने कुछ समय व्यतीत किया था (विनय, I, 1; तुलनीय, बुद्धचरित, बुक, XII, श्लोक, 87-88)। प्रसिद्ध जटिल बधुओ को बुद्ध ने यही पर अपने मत मे दीक्षित किया था, (विनय, I, 25 और आगे)। बुद्ध इस नदी के तट पर उरुवेला मे अजपाल नामक वट-वृक्ष के नीचे रहते थे। यहाँ पर ब्रह्मा उनसे मिले थे, जिन्होंने उनसे अनेक विषयो पर परिचर्चा की थी। बुद्ध ने इस विचार के लिए उनका समर्थन प्राप्त किया कि उन्हें धम्म का आदर और इसका प्रचार करना चाहिए, (अगुत्तर, II, 20-21; सयुत्त, I, 136 और आगे)। ब्रह्मा ने बुद्ध को बतलाया कि उन्होने सावधानी से पचेद्रियो की क्रियाशक्ति पर मनन किया है (सयुत्त, V, 232 और आग)। कुछ ब्राह्मणो को उन्हे यह स्पष्ट करने का अवसर भी मिला था कि उनके मन मे वयोवृद्ध ब्राह्मणो के प्रति आदर भाव था (अगुत्तर, II, 22-23)। उन्होने निर्वाणप्रद चतुर्विध विद्या का अनुभव किया था (सयुत्त, V, 167 और आगे, वही, 185 और आगे)। सबोधि-प्राप्ति के दिन बुद्ध ने अपने प्रयोग मे आने वाले पात्र को महाकाल नाग को इस नदी के तट पर दिया था (महाबोधिवस, पृ० 157)। सबोधि प्राप्ति के बाद बुद्ध ने यही पर अपने प्रतीत्यसमुत्पाद्य सिद्धान्त का क्रमवद्ध विवेचन किया था (उदान, पृ० 1-3)। इसी नदी के तट पर बुद्ध ने नागराज मुचलिद को मुर्चालद वृक्ष के नीचे उपदेश दिया था और उन जीवों के विषय मे बतलाया था जो नश्वर और दु खपूर्ण है (वही, पृ० 32-33)।

निग्रोधाराम—यह विहार राजगृह मे था (दीघ, II, 116)।

ओलाङ्ग—इस गाँव को क्योझर (एक भूतपूर्व रियासत) की आनदपुर तहसील मे देलाग गाँव से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939)।

पलाशी—यह कलकत्ता से 93 मील दूर नदिया जिले मे है। इसका नाम पलाश-वृक्षो (Butea Frondosa) से गृहीत है, जिनकी वहाँ पर प्रचुरता थी। वह रणक्षेत्र जहाँ लार्ड क्लाइव के नेतृत्व मे अग्रेजो ने 23 जून 1757 को बगाल के अतिम स्वतत्र शासक, सिराज-उद्-दौला की सेना को पराजित किया था, रेलवे स्टेशन से लगभग 2 मील पश्चिम मे स्थित है। आम्रकुज के इस ऐतिहासिक युद्ध का पद्यवद्ध वर्णन नवीनचद्र ने अपने 'पलाशीर युद्ध' नामक काव्य मे योग्यतापूर्वक किया है। पलाशी से लगभग चार या पाँच मील की दूरी पर सिराजुद्दौला के सेनापति मीर मदन की समाधि है (इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, पृ० 74)।

पलाशिनी—कुछ लोगों ने इस नदी को आधुनिक परास से समीकृत किया है जो छोटा नागपुर मे कोयल की एक सहायक नदी है। यह एक नदी है, जो मार्कण्डेयपुराण के अनुसार शुक्तिमत पर्वत माला से निकली हुयी बतायी जाती है, जिसे मध्यप्रदेश के रायगढ मे शक्ति से मानभूम मे डल्मा पहाडियो तथा शायद सथाल परगना मे भी स्थित पहाडियो तक फैली पहाडियो की शृखला से समीकृत किया गया है (बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 45)।

पञ्चपाली (पाँचपाली)—इस गाँव को क्योझर मे आनदपुर तहसील के पञ्चपाली से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939)।

पंडुआ—यह हुगली जिले मे है जिसे प्रद्युम्ननगर भी कहा जाता है। सामान्यता इसे पेडो कहा जाता है। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, पृ० 76.

परिब्बाजकाराम—गृध्रकूट और राजगृह के समीप स्थित उदुबरदेवी जमीदारी मे परिब्राजको के लिये निर्मित किया गया यह एक उल्लेखनीय विहार था (दीघ, III, 36; सुमगलविलासिनी, III, 832)। सुमागध सरोवर के किनारे मोरनिवाप से यह कुछ कदम की दूरी पर स्थित था (दीघ, III, 39)।

पश्चिम-खाटिका—इसका वर्णन लक्ष्मणसेन के गोविदपुर अभिपत्र मे हुआ है। यह वर्धमान-भुक्ति मे समिल्लित था। वर्तमान हुगली नदी, पूर्व और पश्चिम दोनो खाटिको के मध्य की प्राकृतिक सीमा थी (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, 121)।

पटिभाणकूट—गिज्जकूट के निकट यह एक भयकर ढलानवाली एक चोटी थी (संयुत्त, V, 448)। पालि भाष्यकार बुद्धघोष के अनुसार यह एक सीमा-वर्त्ती पहाड़ था जो एक विशाल पर्वत की तरह परिलक्षित होता है (सारत्थपकासिनी, III, 301)।

पटकाई पहाड़ी—असम के लखीमपुर जिले के दक्षिण मे ये औसतन लगभग 4000 फीट ऊँची पहाडियाँ फैली हुयी है। मुख्य पर्वत-माला मे लगभग 7000 फीट ऊँचे शिखर है। इन पहाडियो के पार जाने वाले दर्रे बर्मा और असम के मध्य यातायात के एकमात्र स्थलमार्ग हैं (लाहा, माउटेंस ऑव इडिया, पृ० 9)।

पट्टिकेरा—मैनामाटी ताम्रपत्र मे बेजखड नामक एक गाँव में भूमिदान का उल्लेख है, जो पट्टिटकेरा नगर मे स्थित एक बौद्ध-विहार के लिये दिया गया था। उक्त अभिलेख में एक राजा का नाम सुरक्षित है जो 1203-04 मे

पट्टिटंकेरा के सिंहासन पर आरूढ़ हुआ था (हरप्रसाद मेमोरियल वाल्यूम, पृ० 283 और आगे; बि० च० लाहा बाल्यूम, भाग, I, पृ० 215-216)।

पौण्ड्रवर्धनभुक्ति (पुण्ड्रवर्धन-भुक्ति)—कई बार महाभारत मे वर्णित पौण्ड्र या पौण्ड्रकों को कभी तो वगो और किरातो से (सभापर्व, XIII, 584) सबधित बतलाया गया है जबकि अन्य स्थानों पर उनका वर्णन उड्रों, उत्कलो, मेकलो, कलिगो एव आध्रो के साथ किया गया है (वनपर्व, LI, 1988, भीष्मपर्व, IX, 365, द्रोणपर्व, IV, 122)। ऐतरेय ब्राह्मण (VII. 18) मे भी उनका वर्णन हुआ है। दशकुमारचरितम् के अनुसार (पृ० 111) पुण्ड्र देश पर विशालवर्मा की सेना ने आक्रमण किया था। उत्तर बगाल का एक विशाल खड जिसे उस समय पुण्ड्रवर्धनभुक्ति कहा जाता था, 443 ई० से 543 ई० तक गुप्त-साम्राज्य का एक अभिन्न भाग था और जिस पर गुप्त सम्राट् के सामतो के रूप मे उपरिक महाराजो की एक पक्ति ने शासन किया था।[1] भानुगुप्त के काल के (533-34 ई०) दामोदरपुर ताम्रपत्र अभिलेख के अनुसार अयोध्या के एक कुलपुत्र ने पुण्ड्रवर्धन भुक्ति के प्रातीय राज्य के अधीन कोटिवर्ष के स्थानीय प्रशासन के राज्यपाल स्वयभुवदेव से मिलकर निवेदन किया था कि उसे प्रचलित प्रथा के अनुसार एक ताम्रपत्र के दस्तावेज के माध्यम से थोडी बजरभूमि का हस्तातरण करने की आज्ञा दी जाय। उसकी प्रार्थना स्वीकृत की गयी थी। पुण्ड्रवर्धन युवान-च्वाड द्वारा वर्णित पुन-न-फ-टन-न (Pun-na-fa-tan-na) के समान है। पाजिटर का विचार है कि एक समय पौण्ड्रों का अधिकार उन प्रदेशो पर था जिनमे आज सथाल परगना तथा बीरभूम के आधुनिक जिले और हजारीबाग के उत्तरी भाग समिलित है। पुण्ड्रवर्धन को मिलाने के लिये मध्यदेश की पूर्वी सीमा को और आगे पूरब मे बढ़ा दिया गया है (तुलनीय, दिव्यावदान, पृ० 21-22)। प्राचीन युगो मे पुण्ड्रवर्धनभुक्ति मे वरेद्र समिलित था जो स्थूल रूप से उत्तर बगाल के समान है। पुण्ड्रवर्धन-भुक्ति मे सपूर्ण बगाल समिलित प्रतीत होता है। धर्मपाल के खलीमपुर दानपत्र, देवपाल के नालदा अभिलेख और लक्ष्मणसेन के अनुलिया ताम्रपत्र में वर्णित व्याघ्रतटी (बागड़ी) नामक एक गाँव, कालिदास के रघु-विजय के विवरण के अर्थानुसार बंगाल के संभागो मे से एक था। ह० प्र० शास्त्री ने बलवलभी को बागड़ी से समीकृत किया है। अनुलिया ताम्रपत्र मे व्याघ्रतटी के अधिकार-क्षेत्र के अंतर्गत् प्रदत्त भूदान का उल्लेख है जो पुण्ड्रवर्धनभुक्ति मे था।

[1] **रायचौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑब ऐंश्येंट इंडिया, चतुर्थ सं०, पृ० 456-457.**

एस० एन० मजूमदार ने व्याघ्रतटी को बागड़ी से समीकृत किया है (सर आशुतोष कम्मेमोरेशन वाल्युम, ओरियटेलिया, भाग, II, पृ० 424) पुण्ड्रवर्धन नगर का उल्लेख अधोलिखित पाल-अभिलेखो मे भी है: धर्मपाल का खलीमपुर दानपत्र, देवपाल का नालदा दानपत्र, महीपाल प्रथम का बानगढ दानपत्र, विग्रहपाल तृतीय का आमगचिया दानपत्र और मदनपाल का मनहली दानपत्र। सेन अभिलेख के अतर्गत् इसका उल्लेख विजयसेन के बैरकपुर दानपत्र, लक्ष्मणसेन के अनुलिया, तर्पणदीघि, माधाईनगर और सुदरबन ताम्रपत्रो, केशवसेन के एडिलपुर ताम्रपत्र और विश्वरूपसेन के मदनपाडा और साहित्य परिषत् ताम्रपत्रो मे है। पुण्ड्रवर्धन भुक्ति के एक सक्षिप्त रूप पौण्ड्रभुक्ति का वर्णन श्रीचन्द्रदेव के रामपाल ताम्रपत्र, भोजवर्मन् के बेलाव ताम्रपत्र और श्रीचन्द्र के घुल्ल अभिपत्र मे है (द्रष्टव्य, न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शन्स ऑव बगाल, जिल्द, III, पृ० 2,15)।[1] राष्ट्रकूट-नरेश गोविन्द चतुर्थ के सगल्ी अभिपत्र मे पौण्ड्रवर्धन का उल्लेख है। लक्ष्मणसेन के तर्पण दीघि दानपत्र मे वरेद्री को पौण्ड्रवर्धन के अतर्गत् बतलाया गया है। विजयसेन के देवपाड़ा अभिलेख मे वरेद्र के कलाकारो की एक श्रेणी का उल्लेख है जिसमे पुण्ड्रवर्धन का एक विशाल भाग समाविष्ट था। वैद्यदेव के कमौली अभिपत्र मे, विष्णु-प्रतिमा और देवपाडा अभिलेखो मे भी वरेद्र का उल्लेख है।

पालो के काल मे (लगभग, 730-1060 ई०) पुण्ड्रवर्धनभुक्ति मे निश्चय ही एक विशाल भूभाग समिलित था, जब कि सेनो ने अपेक्षाकृत एक बृहत्तर भूभाग पर शासन किया था। इन दोनो राजवशों के अभिलेखो मे पुण्ड्रवर्धनभुक्ति के विशालतर मडल मे समिलित निम्नलिखित उपमडलो का उल्लेख है कोटि-वर्षविषय (दिनाजपुर), व्याघ्रतटी मडल (मालदह), खाडि-विषय (जो सुन्दरबन और चौबीस परगनो के समान है), वरेद्री (मोटे तौर पर राजशाही, बोगरा, रगपुर और दिनाजपुर के समान) और वग (पूर्वी बगाल, विशेष रूप से ढाका प्रभाग— संप्रति बंगला देश मे)। यह तथ्य कि पुण्ड्रवर्धन मे वरेद्री और गौड (माल्दह और दिनाजपुर) समिलित थे, पुरुषोत्तम-कोष (ग्यारहवी शताब्दी ई०) के इस उल्लेख से भी सिद्ध होता है जहाँ यह लिखा है कि 'पुण्ड्रा. स्युर वरेंद्री-गौड-निवृत्ति, जिसका तात्पर्य यह है कि पुण्ड्रो मे वरेद्री और गौड-देश समिलित थे। सन्ध्याकर-नदी (ग्यारहवी शताब्दी ई०) के रामचरितम् के अनुसार श्री पुण्ड्रवर्धनपुर

[1] विस्तार के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 37; लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 33 और 68.

वरेंद्री मे स्थित प्रतीत होता है क्योकि उसमे कहा गया है कि वरेंद्री पूर्व का अग्रतम स्थान था और पुण्ड्रवर्धनपुर इसका मुकुटमणि या सर्वसुंदर अलकार था (कवि प्रशस्ति V.1)। यह गौड-साम्राज्य का सबसे बडा प्रात था। दामोदरपुर से प्राप्त एक अभिपत्र के अनुसार यह उत्तर मे हिमालय से दक्षिण मे सुदरबन क्षेत्र मे स्थित खाडि तक फैला हुआ था। विश्वरूपसेन के मध्यपाडा अभिपत्र मे इसकी पूर्वी सीमा समुद्र तक फैली हुयी बतलायी गयी है। तेरहवी शताब्दी ई० के मेहेर ताम्रपत्र के अनुसार इसमे त्रिपरा का एक भाग समिलित था (हिस्ट्री ऑव बगाल, भाग, 1, पृ० 24; विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, समतट)। सामत लोकनाथ के त्रिपरा दान ताम्रपत्र मे (एपि० इ०, XV, 301-15)। त्रिपरा के समीपवर्ती क्षेत्रो मे शासन करने वाले कुछ करद प्रमुखो का उल्लेख है। कोमिल्ला शहर से लगभग 18 मील पश्चिमोत्तर मे और देवीद्वार थाने से डेढ मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित गुनैघर मे एक तालाब से कीचड निकालते समय किसी ग्रामवासी को एक नया ताम्रपत्र प्राप्त हुआ था। इसे वैण्यगुप्त का गुनैघर दानपत्र भी कहा जाता है (इ० हि० क्वा०, VI, 45 और आगे)। एपिग्रेफिया इडिका (XXI, पृ० 85) से हमे ज्ञात होता है कि मौर्य-युग मे पुण्ड्रवर्धन नगर एक महामात्र का केद्र था, किंतु यह सदेहास्पद है। डा० दे० रा० भडारकर के अनुसार महास्थान अभिलेख के काल मे सवगीयो की राजधानी पुण्ड्रनगर थी जो वगीयो का नही वरन् पुण्ड्रो का मुख्यावास था, निश्चय ही जिनके आधार पर इसे पुण्ड्रनगर कहा जाता था (एपि० इ०, XXI, पृ० 91)।

महास्थान या महास्थानगढ के वर्तमान् अवशेष बोगरा के आधुनिक नगर से सात मील उत्तर मे स्थित है। कनिंघम ने पुण्ड्रवर्धन के प्राचीन नगर से इस स्थान की पहचान बतलायी है। करतोया नदी जो अब भी महास्थान के टीले के मूल का प्रक्षालन करती है, पुण्ड्रवर्धनभुक्ति को और पूरब मे स्थित असम के प्राग्ज्योतिष या कामरूप से पृथक करती है। सातवी शती ई० में युवान-च्वाङ पुण्ड्रवर्धनभुक्ति आया था। इस चीनी तीर्थयात्री के अनुसार इसकी परिधि 4000 ली से अधिक थी और इसकी राजधानी की 30 ली से अधिक। इस शहर की महत्ता बारहवी शती ई० के तीसरे चतुर्थक से समाप्त हो गयी क्योकि बंगाल के उत्तरकालीन सेन राजाओ ने अपनी राजधानी पहले तो राजशाही जिले मे देवपाड़ा मे और बाद में माल्दह जिले मे गौड मे स्थानातरित कर दी। तेरहवी शती० ई० के अत या चौदहवी शती ई० के प्रारभ मे पुण्ड्रवर्धन पर मुसलमानों का अधिकार हो गया था।

पाहाड़पुर—सोमपुर को बंगाल के दिनाजपुर जिले मे पाहाडपुर से समीकृत किया गया है (विपुलश्रीमित्र का नालदा अभिलेख, एपि० इ०, XXI, भाग, III, जुलाई, 1931)। पाहाडपुर मे 80 फीट ऊँचे ईंटो के विशाल टीले के कारण सभवतः इसका यह नाम पडा था क्योकि यह एक पहाड की भाँति दिखलायी पडता था। सोमपुर मे धर्मपाल के नाम पर अभिहित एक विहार था जिसे दीक्षित ने पाहाडपुर से समीकृत किया है। बौद्ध भिक्षुओ के लिये भारत मे किसी भी समय निर्मित किये गये विहारो मे पाहाडपुर का विहार एक सबसे बडा आराम था। इसका निर्माण आठवी शताब्दी ई० मे बंगाल के पाल राजाओ के अधीन हुआ था। पाहाडपुर से उपलब्ध पुरानिधियो मे मृण्फलक के बहुसख्यक नमूने है। यहाँ पर ब्राह्मण और बौद्ध देवता समान रूप से प्राप्त होते है। उनमे चित्रित ब्राह्मण देवताओ मे ब्रह्मा, विष्णु, गणेश और सभवत. सूर्य है। उत्तर भारत मे बौद्ध धर्म के एक केद्र के रूप मे पाल युग मे इस स्थान को निश्चय ही अतिशय महत्त्व प्राप्त हुआ।

पाहाडपुर के अवशेष राजशाही जिले (बंगला देश) मे जमालगज रेलवे स्टेशन से पश्चिम मे तीन मील की दूरी पर स्थित है। पाहाडपुर-बिहार जावा के बोरोबुदुर और प्रांबनान एव कबोडिया के अकोरवट जैसे बडे स्तूपो एव मदिरो के सदृश है। पाहाडपुर के बौद्ध विहार मे हमे एक वर्गाकार मदिर मिलता है, जिसमे अनेक कक्ष है, जिनमे से प्रत्येक के सामने एक आँगन और एक लघु ओसारा है। एक ऊँची वेदी प्राप्त होती है जो सभवत. धार्मिक उपासना के लिए थी। इस मदिर के पूर्व मे सत्यपिरेरभिटा नामक एक लघु-स्तूप है जहाँ पर हमे तारा का एक मदिर मिलता है। विहार की दीवालो के मृण्फलको पर पञ्चतत्र एव हितोपदेश की कहानियाँ चित्रित है। यहाँ पर राधा और कृष्ण की पाषाण प्रतिमाएँ, कृष्ण की जीवनगाथा, धेनुकासुर के बध और कृष्ण द्वारा गोवर्धन-धारण की कहानियाँ कहने वाली कुछ मनोहर आकृतियाँ प्राप्त होती है। बालि-सुग्रीव का युद्ध, बालि-वध, सुभद्राहरण आदि के समान महाकाव्यो एव पुराणो के दृश्य यहाँ प्राप्त होते है। पाँचवी शती ई० मे पाहाडपुर मे एक जैन मंदिर था। बताया जाता है कि दीपंकर श्रीज्ञान नामक प्रसिद्ध तिब्बती बौद्ध विद्वान् ने अपने गुरु रत्नाकर शान्ति के चरणो मे सोमपुरमहाविहार में अनेक वर्ष व्यतीत किये थे। पाहाडपुर के उत्खननो के विवरण के लिये द्रष्टव्य आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1920-30, पृ० 138 और आगे; आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्टस, 1930-34, पृ० 113-128, के० एन० दीक्षित, एक्सकेवेशंस ऐट पाहाडपुर, मे० आर्क० स० इ०, स० 55; इंट्रोड्यूसिंग इडिया, भाग, I, पृ० 78; पाहाड़पुर मंदिर की तिथि

के विषय में एस० के० सरस्वती के विचार के लिये द्रष्टव्य, इडियन कल्चर, VII, 1940-41, पृ० 35-40

पालामक—देवपाल के नालदा दानपत्र मे गया-विषय मे स्थित इस गाँव का वर्णन है (एपि० इ०, XVII, पृ० 318 और आगे)।

पाण्डवपर्वत—इसे राजगृह के उत्तर उत्तर-पूर्व मे स्थित आधुनिक विपुलगिरि से समीकृत किया जा सकता है (बि० च० लाहा, राजगृह इन ऐश्येंट लिटरेचर, मे० आर्कि० स० इं०, 58, पृ० 3-6, 28-30)।

पाण्डुया—(1) यह स्थान जिसे सामान्यतया पेडो कहा जाता है, कलकत्ता से 38 मील दूर पर स्थित है। यह हुगली जिले मे है और माल्दह जिले के पाण्डुया से बिल्कुल भिन्न है। पद्रहवी शती ई० मे गौड राजा समसुद्दीन ईसुफ शाह ने पाण्डुया के हिंदू राज्य को जीत लिया था, जहाँ पर अनेक हिदू मदिर थे। सूर्यदेवता को समर्पित एक प्राचीन हिदू मदिर को मस्जिद के रूप मे परिवर्तित कर दिया गया था। यहाँ पर 127 फीट ऊँची एक मीनार और जोरापुकुर एव पीरपुकुर नामक दो सरोवर है।

(2) माल्दह जिले मे पाण्डुया के अवशेष महानदा नदी के पूर्व में स्थित है। यहाँ पर एक भग्न नाले में हिंदू अवशेषो के स्पष्ट चिन्ह दिखायी पडते है जिसके नीचे हिदू देवताओ की प्रतिमाएँ दबी है। मुसलमान युग के अनेक अवशेष यथा, आदिना मस्जिद, सोणा मस्जिद, आसानसाही दरगाह, सलामी दरगाह, बायेस्क-हाजारी दरगाह, और एक्लाखी मस्जिद आदि पाये जाते है (इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, पृ० 76)।

पापहारिणी—यह बिहार मे एक पहाडी का नाम है। पापहारिणी पहाड़ी के तल मे एक रमणीक सरोवर है जहाँ पौष मास की पूर्णिमा को प्रायः लोग आते है जब मधुसूदन की मूर्ति बशी से इस पहाडी के तल मे स्थित एक मदिर मे लायी जाती है। इस सरोवर को आदित्यसेन की पत्नी कोणदेवी ने खुदवाया था। आदित्यसेन हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज राज्य के छिन्न-भिन्न हो जाने पर, सातवी शती ई० मे मगध का स्वतत्र राजा बन गया था (का० इ० इ०, III, 211)।

पार्श्वनाथ—यह हजारीबाग जिले मे है जहाँ बहुधा जैन मतावलबी आते है। यह पहाडी लगभग 5000 फीट ऊँची है। हिमालय के दक्षिण मे यह सबसे ऊँचा पहाड है। एक उभरे हुये भूखड से निकलता हुआ, पर्याप्त ऊँचाई वाला चित्ताकर्षक यह एक अति सुदर पहाड है (विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बिहार ऐड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, हजारीबाग, पृ० 202 और आगे)। इसके

शिखर पर एक दिगंबर जैन मदिर और इसके तल से कुछ श्वेताबर मंदिर प्राप्त होते हैं। समेतशिखर नाम से भी विख्यात यह पहाडी वन्य-पशुओ से आकीर्ण एक घने जंगल मे स्थित है। अपनी मृत्यु के पहले पार्श्वनाथ इस पहाड़ी के तल मे आये थे और मुक्ति प्राप्त किया था (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज़, पृ० 213)।

पाटलिपुत्र—मगध की उत्तरकालीन राजधानी पाटलिपुत्र (आधुनिक पटना) थी। राजोद्यान के अहाते मे उगे हुये बहुसख्यक पुष्पो के कारण इसके प्राचीन सस्कृत नाम कुसुमपुर और पुष्पपुर थे। यूनानी इतिहासकार इसे पलिबोथ्रा और चीनी तीर्थयात्री पा-लिन-टु (Pa-lin-tou) कहते थे।

महान् चीनी यात्री युवान-च्वाङ ने इस नगर के नाम की उत्पत्ति का एक पौराणिक विवरण दिया है (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, भाग, II, पृ० 87)। जैन अनुश्रुतियों के अनुसार दर्शक के पुत्र उदय ने इस नगर का निर्माण किया था। मगधनरेश अजातशत्रु ने इसका प्रथम सूत्रपात किया था। मगध से वैशाली जाते समय बुद्ध ने अजातशत्रु के अमात्यो को नगर-मापन करते हुये देखा था (द्रष्टव्य, माडर्न रिव्यू, मार्च, 1918)।

पाटलिपुत्र मूलत मगध मे स्थित पाटलिग्राम नामक एक गाँव था, जो गगा के दूसरी ओर कोटिग्राम के समुख था। यह मागधी गाँव राजगृह से वैशाली और अन्य स्थानो को जाने वाले महापथ पर स्थित एक पडाव था। पाटलिग्राम के दुर्गीकरण मे, जिसे बुद्ध के जीवन काल मे सुनीध और वर्षकार नामक मगध के दो मत्रियो ने प्रारभ किया था, पाटलिपुत्र के महानगर की नीव पडी थी (दीघ, II, 86 और आगे, सुमगलविलासिनी, II, पृ० 540)। इस प्रकार अजातशत्रु को मगध का वास्तविक सस्थापक माना जा सकता है।

पाटलिपुत्र का निर्माण मध्यदेश की गगा, सोन और गडक नामक महानदियो के सगम के समीप हुआ था, किंतु सोन नदी अब यहाँ से कुछ दूर हट गयी है। यह नगर 600 फीट चौड़ी और तीस हाथ गहरी एक परिखा से सुरक्षित था। मेगस्थनीज़ के अनुसार यह 80 स्टेडिया लबा और 15 स्टेडिया चौडा था (मैक्रिडिल, ऐश्येंट इडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज़ ऐड एरियन, पृ० 65)।

अतस्थ परिखा से चौबीस फीट की दूरी पर एक प्राकार था, जिसमे 570 अट्टालक और 64 फाटक थे (मैक्रिडिल, ऐश्येट इडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज़ ऐड एरिअन, पृ० 67)। इस नगर के चार फाटक थे, जिनसे अशोक

की दैनिक आय, 4,00,000 कहापण थी। सभा मे नित्य उसे 1,00,000 कहापण मिला करते थे (समन्तपासादिका, I, पृ० 52)।

फा-ह्यान् जो पाँचवी शती ई० मे इस पुर मे आया था, इसकी गरिमा और वैभव से बहुत प्रभावित हुआ था। वह कहता है कि नगर के मध्य मे स्थित राज-प्रासाद और महाकक्ष भव्य थे। इस नगर मे महायान धर्म का राधसामि नामक एक ब्राह्मण आचार्य था। अशोकद्वारा निर्मित स्तूप के पार्श्व मे एक हीनयान-विहार था। यहाँ के निवासी धनी, समृद्ध और धर्मात्मा थे (लेग्गे, फा-ह्यान्, पृ० 77-78)। फा-ह्यान् ने आगे पाटलिपुत्र के एक भव्य बौद्ध जुलूस का रोचक वर्णन किया है (वही, पृ० 79)। युवान-च्वाङ के अनुसार, जो सातवी शती ई० मे यहाँ आया था, गगा के दक्षिण में लगभग 70 ली से अधिक परिधि वाला एक प्राचीन नगर स्थित देखा था, जिसकी नीवे तब भी दृष्टिगोचर होती थी, यद्यपि नगर बहुत पहले ही वीरान हो चुका था। उसके अनुसार यह प्राचीन नगर पाटलिपुत्र था (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, भाग, II, पृ० 87)। कवि दण्डिन् ने पाटलिपुत्र को सभी नगरो मे श्रेष्ठ और रत्नो से युक्त बतलाया है (दशकुमार-चरितम्, प्रथम उच्छवास, श्लोक, 2, पूर्व पीठिका)।

पाटलिपुत्र उत्तरकालीन शिशुनागों, नदो और महान् मौर्यसम्राट् चन्द्रगुप्त एव अशोक की राजधानी थी, किंतु समुद्रगुप्त की विजयो के समापन के पश्चात् यह गुप्त सम्राटो का साधारण आवास नही रहा (वि० स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 309)। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के शासनकाल मे यह एक भव्य एव जन-संकुल नगर था और छठी शताब्दी ई० मे हूण-आक्रमण के समय तक स्पष्टत यह नष्ट नही हुआ था। हर्षवर्धन, जो सातवी शताब्दी ई० मे उत्तरी भारत का परमाधिपति सम्राट् था, ने इसे पुनरस्थापित करने की कोई चेष्टा नही की (वि० स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 310)। गौड एव कर्णसुवर्ण के राजा शशाक नरेन्द्रगुप्त ने पाटलिपुत्र मे बुद्ध के पद्‌चिन्हो को नष्ट और अनेक बौद्ध मंदिरो एव विहारो को ध्वस्त किया था (स० च० विद्याभूषण, हिस्ट्री ऑव इडियन लॉजिक, पृ० 349)। बगाल और बिहार के पाल नरेशो मे सर्वाधिक शक्तिशाली धर्मपाल ने पाटलिपुत्र के गौरव का पुनर्नवीकरण करने के लिए कदम उठाया (वि० स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 310-311)।

पाटलिगाम के उपासको ने एक आवसथागार के उद्‌घाटन-समारोह के अवसर पर बुद्ध को आमंत्रित किया था (विनयपिटक, I, पृ० 226-28)। वाराणसी के एक प्रभावशाली ब्राह्मण गृहस्थ ने उदेन नामक एक बौद्ध भिक्षु

के लिए पाटलिपुत्र में एक विहार का निर्माण कराया था (मज्झिम०, II, 157 और आगे)। भद्दनामक एक भिक्षु पाटलिगाम के निकट कुक्कुटाराम में रहता था और उसने बुद्ध के प्रसिद्ध शिष्य आनन्द के साथ बातचीत की थी (सयुत्त, V, 15-16; 171-172)। पाटलिपुत्र का राजा पाण्डु बौद्ध धर्म मे दीक्षित किया गया था (लाहा, दाथावस, इंट्रोडक्शन, xii-xiv)। कतिपय जैन भिक्षुओं के नेता स्थूलभद्र ने महावीर की मृत्यु के लगभग 200 वर्षों के बाद जैन धार्मिक-साहित्य का सकलन करने के लिए पाटलिपुत्र मे एक सगीति बुलायी थी। भद्रबाहु ने इस सभा का कार्य करने से अस्वीकार कर दिया था (स्टीवेसन, हार्ट ऑव जैनिज्म, पृ० 72)।

भारत सरकार के पुरातत्व विभाग द्वारा पाटलिपुत्र मे रोचक अनुसधान किये गये है। यहाँ कुछ का वर्णन किया जा सकता है .

1 लोहनीपुर, बुलदीबाग, महाराजगज मे काष्ठ के स्तभ वलय, और मगली सरोवर,

2. गोलकपुर से उपलब्ध पचाहत मुद्राएँ,

3. दीदारगज से उपलब्ध प्रतिमा,

4 दारुखियादेवी एव पारसीक-यवनानी शैली का स्तभ शीर्ष,

5 सभवत शुगयुगीन जँगल के स्तभ.

6 कुषाण एव गुप्त नरेशो की मुद्राएँ,

7. पूरब दरवाजा के निकट से प्राप्त मिट्टी की पूजा-गुटिका,

8. फा-ह्यान् के काल के हीनयान और महायान विहारो के अवशेष, स्थूलभद्र के तथा अन्य जैनमदिर और छोटी एव बडी पटनदेवी के मदिर (मनोरजन घोष कृत पाटलिपुत्र, पृ० 14-15)। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, III; लाहा, द मगधाज इन ऐंश्येट इडिया, (ज० रा० ए० सो० प्रकाशन, सख्या, 24), लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येट इडिया, अध्याय, XLVI.

पाथरघाटा—यह पहाड़ी भागलपुर जिले मे गगा के तट पर स्थित है। इस पहाडी के उत्तर की ओर पत्थर की कुछ प्राचीन मूर्तियाँ है। इस पहाड़ी मे कुछ गुफाएँ भी है। कुछ लोगों ने इसे विक्रमशिला से समीकृत किया है (बर्न, बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, भागलपुर, पृ० 171)।

पावापुरी—पावापुरी प्राचीन पापा या अपापपुरी का आधुनिक नाम है। यह बिहार तहसील मे गिरियेक से तीन मील उत्तर मे स्थित एक गाँव है। इसी

स्थान पर जैन धर्म के प्रवर्त्तक महावीर की मृत्यु हुयी थी जब वे पावा के षष्टिपाल के प्रासाद मे रुके हुये थे।

जिस स्थान पर महावीर ने अपने नश्वर शरीर का परित्याग किया था वहाँ चार सुदर जैन मंदिर बनवाये गये थे। यही पर बुद्ध ने चुड लोहार के घर पर अपना अतिम भोजन ग्रहण किया था और उसके बाद ही वह पेचिश रोग के शिकार हुये। यहाँ पर मल्लगण रहा करते थे। महान् जिन की मृत्यु की स्मृति के लिए भी जिन लोगो ने शुक्ल पक्ष की परिवा के दिन प्रकाश-सज्जा की प्रथा यह कह कर आरभ की थी कि "चूँकि ज्ञान का प्रकाश चला गया, इसलिए हम सबको भौतिक पदार्थो के माध्यम से प्रकाश करना चाहिए," उनमे नवमल्ल-प्रमुख भी थे।

पावा, पापा या पावापुरी की स्थिति के विषय मे मतभेद है। कुछ लोगों के अनुसार यह गोरखपुर जिले के पूर्व मे छोटी गडक के तट पर स्थित कसिया ही है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह नगर बिहार मे राजगीर के समीप स्थित था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल ऐसेज़, पृ० 210; पी० सी० नाहर, तीर्थ पावापुरी, 1925, आर्क् स० इ०, रिपोर्ट्स, भाग, VIII, और IX; ओ' मैल्लीकृत बिहार ऐंड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पटना, पृ० 223-224)।

पावारिक-अबवन––यह नालदा के पावारिक नामक श्रेष्ठि का आम्र-वन था, जिसका प्रयोग प्रमद-वन के रूप मे किया जाता था। बुद्ध का प्रवचन सुनने के बाद प्रसन्न होकर पावारिक ने यहाँ पर एक विहार का निर्माण कराया था। इसे उसने बुद्ध के सभापतित्व मे भिक्षुओ के एक सघ को समर्पित कर दिया था (पपञ्चसूदनी, III, पृ० 52)। एक बार बुद्ध यहाँ रुके थे और किसी गृहस्थ के केवद्ढ नामक पुत्र को चमत्कारो के विषय मे बतलाया था (दीघ निकाय, I, 211)।

फल्गु––यह नदी लक्खीसराय के पूर्वोत्तर मे मुगेर जिले मे गगा में मिलती है। यह नैरञ्जना (आधुनिक नीलाजान) और महानद (आधुनिक मोहना) नामक दो पर्वतीय सरिताओ के सयुक्त प्रवाह के अतिरिक्त और कुछ नही है जो बोधगया के आगे परस्पर मिलता है। इसमे दो सहायक नदियाँ : एक पटना जिले मे और दूसरी मुगेर जिले मे मिलती है। नीलाजान या निरञ्जना का उद्गम-स्थल हज़ारीबाग ज़िले में समेरिया के निकट है। इस नदी के पश्चिम में थोड़ी दूर पर बुद्धगया स्थित है। मज्झिमनिकाय (स्यामी सस्करण), भाग, II, पृ० 233) की टीका के अनुसार इस नदी की निर्मल धारा प्रवाहित होती

है, जिसमे स्नान के लिए क्रमिक अवरोह वाली सीढियोंयुक्त घाट बने हुये हैं। इसका जल, शीतल, निर्मल, पकहीन और शुद्ध है (पपञ्चसूदनी, भाग, II, पृ० 233; तु० ललितविस्तर, पृ० 311, महावस्तु, भाग, II, पृ० 123)। ललितविस्तर मे वृक्षो एव झाडियों से सुशोभित तटवाली एक नदी के रूप में इसका बर्णन है। पालि भाष्यकारो के अनुसार नेरञ्जरा नाम से निर्मल जलवाली (नेला-जला) या नीले जल वाली (नीला-जला) एक सरिता का बोध होता है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बे० मा० बरुआ, गया ऐड बुद्धगया, पृ० 5, 103-104 आदि।

फलगुग्राम—विश्वरूपसेन का मदनपाडा एव केशवसेन का एदिलपुर दानपत्र फल्गुग्राम से प्रचलित किया गया था। कुछ लोगो ने इसे गया जिले मे फल्गु नदी के एक स्थान से समीकृत किया है, किंतु यह सदेहास्पद है।

फुलिया—यह एक गाँव है जो नदिया जिले मे शान्तिपुर से लगभग चार मील दूर पर स्थित है। यह रानाघाट मे 9 मील और कलकत्ता से 54 मील दूर है। यह महान् बगाली कवि कीर्तिवास का जन्मस्थान है जो बगाली रामायण के प्रणेता थे। यहाँ श्रीचैतन्य के सुविख्यात् मुसलमान अनुयायी यवन हरिदास ने धार्मिक तपस्या मे अपने दिन व्यतीत किये थे। हाल मे सरकार ने फुलिया मे एक नया नगर बसाना प्रारभ किया है (इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, पृ० 74)।

पिञ्जोकाष्टि—इस गाँव का वर्णन विश्वरूपसेन के मदनपाडा दानपत्र मे है। यह पौण्ड्रवर्धनभुक्ति के अतर्गत् वग के विक्रमपुर मडल मे स्थित है।

पिप्पलगुहा या पिप्पलिगुहा या पिप्फलिगुहा—यह वैभारगिरि के ऊपर उत्तर में स्थित थी। यह गुहा कब्रस्तान के दक्षिण-पश्चिम मे कोई 300 कदम पर थी (लेग्गे, फा-ह्यान्, पृ० 84-85)। यह महाकस्सप का एक प्रिय स्थान था (सयुत्त, V, 79; उदान, पृ० 4)। फा-ह्यान कहता है कि यह पहाड मे स्थित एक आवास था जिसमे दोपहर का भोजन करने के बाद बुद्ध नियमित रूप से ध्यानावस्थित होते थे (लेगे, फा-ह्यान, पृ० 85)। युवान-च्वाङ के अनुसार बुद्ध इस गुहा मे आये थे। यहाँ पर वे प्राय रहा करते थे (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, 154)। जब महाकस्सप गभीर रूप से बीमार थे, तब बुद्ध यहाँ आये थे (सयुत्त, V, 79)। इस गुहा को पिप्पलि या पिप्फलि कहते थे क्योंकि इसके बगल मे पिप्पलि या पिम्फलि का एक वृक्ष था (उदानवण्णना, पृ० 77)। मञ्जुश्रीमूलकल्प (पृ० 588) में इसे वराह पर्वत पर स्थित बतलाया गया है। कुछ चीनी वृत्तातो मे इसे गिज्झकूट पर्वत पर स्थित बतलाया गया है (तुलनीय, वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ् II, 155)।

पिप्फलिवन—यह मौर्यों की राजधानी थी जिसकी पहचान युवान-च्वाङ द्वारा वर्णित न्यग्रोधवन या पिप्पलिवन से की गयी है जहाँ पर प्रसिद्ध अगार स्तूप स्थित था (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, पृ० 23-24)। यह दुल्व मे दिये गये तिब्बती विवरण से मेल खाता है (राकहिल, लाइफ ऑव द बुद्ध, पृ० 147)। कुछ लोगो की धारणा है कि पिप्फलिवन सभवत. नेपाल की तराई मे रुम्मिनदेई और गोरखपुर जिले मे कसया के मध्य स्थित था। (हे० च० रायचौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव ऐश्येट इडिया, चतुर्थ सस्करण, पृ० 217)। पिप्फलिवन के मोरिय बुद्धयुगीन एक गणतत्रात्मक जन थे (दीघ, II, 167)। उन्होने बुद्ध के अवशेषो का एक अश प्राप्त किया और उनके ऊपर उन्होने एक स्तूप का निर्माण किया था (बुद्धिस्ट सुत्ताज, सै० बु० ई०, पृ० 135)। महावस के अनुसार (श्लोक, 16) अशोक का प्रपिता चन्द्रगुप्त मोरिय खत्तियों के वश मे उत्पन्न हुआ था।

प्रभासवन—यह राजगृह मे गृध्रकूट पहाडी पर स्थित है (रा० ला० मित्र, नर्दर्न बुद्धिस्ट लिटरेचर, पृ० 166)।

प्रवरगिरि—अनन्तवर्मन् के बराबर पहाडी गुहालेख मे पनारी गाँव के उत्तर की ओर स्थित प्राचीन प्रवरगिरि का उल्लेख है जो गया जिले के मुख्यावास गया नगर से पूरब और उत्तर की ओर लगभग 14 मील दूर पर स्थित है (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

प्राग्ज्योतिष—दोनो महाकाव्यो के अनुसार प्राग्ज्योतिष[1] एक प्रसिद्ध देश था। योगिनीतत्र (1.12, पृ० 65) मे भी इसका वर्णन प्राप्य है। कालिका-पुराण (अध्याय, 40 73) के अनुसार यह नरक के प्रभुत्व मे एक सुदर पुर था। विदेह-नरेश इसे अलकापुरी (इन्द्र के सौध या सदन) के समान मानता था (अध्याय, 38 152)। इसमे न केवल कामरूप देश वरन् उत्तर-बगाल और सभवतः उत्तर-बिहार का भी एक बडा भाग समिलित प्रतीत होता है। वैद्यदेव के कमौली दानपत्र मे कामरूप-मडल एव प्राग्ज्योतिष-विषय का उल्लेख है, जिसका तात्पर्य है कि प्राग्ज्योतिष-विषय एक विशालतर प्रशासकीय प्रभाग था, जिसमे कामरूप समिलित था। इसका अर्थ पूर्वी ज्योतिष का नगर है। सर एडवर्ड गैट के अनुसार प्राग्ज्योतिष आधुनिक गौहाटी शहर का प्रतिरूप है। यहाँ पर इन्द्रपाल का शासन था जिसे महाराजाधिराज की उपाधि दी गयी थी (प्राग्ज्योतिष के इन्द्रपाल का

---

[1] **साहित्यिक एवं अन्य साधनों के लिये द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, प्राग्ज्योतिष, ज० उ० प्र० हि० सो०, जिल्द, XVIII, खंड, I और II.**

गौहाटी दान ताम्रपत्र)। यहाँ पर कृषकों से करों की वसूली और दंड-यातना बिरले ही होती थी (द्रष्टव्य, नवगाँव ताम्रपत्र)। लक्ष्मणसेन के इंडिया आफिस अभिपत्र के अनुसार (एपि० इं०, XXVI) प्राग्ज्योतिष-नरेश ने राजा लक्ष्मणसेन की पगधूलि से कुछ अभिचार कृत्य सपादित किये थे। रत्नपाल के बडागाँव दानपत्र मे प्राग्ज्योतिषपुर को अभेद्य और ब्रह्मपुत्र या लौहित्य नदी द्वारा सुशोभित होने वाला बतलाया गया है (एपि० इं०, XII, पृ० 37 और आगे)। प्राग्ज्योतिष दोनों महाकाव्यों मे सुप्रसिद्ध है। महाभारत मे इसे एक म्लेच्छ राज्य बतलाया गया है, जिस पर राजा भगदत्त शासन करता था (कर्णपर्व, V, 104-05, सभापर्व, XXV, 1000 और आगे)। इसी महाकाव्य मे इसका उल्लेख एक असुर राज्य के रूप मे भी हुआ है (वनपर्व, XII, 488)। यह देश किरातो एवं चीनो के राज्य की सीमा पर स्थित प्रतीत होता है (महाभारत, उद्योगपर्व, XVIII, 584 और आगे)। रघुवश के अनुसार यह स्पष्टत· ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तर मे स्थित था।

हेमचन्द्र के अभिधानचिन्तामणि (IV. 22) मे 'प्राग्ज्योतिषा. कामरूपा." का वर्णन है। पुरुषोत्तम (त्रिकाण्ड पृ० 93) के अनुसार प्राग्ज्योतिष कामरूप है। बृहत्सहिता (XIV. 6) में इसका वर्णन है। कालिकापुराण (अध्याय, XXXVIII) के अनुसार प्राग्ज्योतिष की राजधानी को कामाख्या या गौहाटी से समीकृत किया गया है (ज० रा० ए० सो०, 1900, पृ० 25)। राजशेखर की काव्यमीमांसा (अध्याय, XVII) मे प्राग्ज्योतिष को पूर्व मे स्थित बताया गया है। हर्षचरित के अनुसार प्राग्ज्योतिष के राजकुमार ने भास्करद्युति नामक एक दूत श्रीहर्ष के पास भेजा था। कीलहार्न के अनुसार इस राजकुमार का नाम कुमार था। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, ज० उ० प्र० हि० सो०, जिल्द XVIII, खड, 1 व 2 मे बि० च० लाहा का लेख 'प्राग्ज्योतिष', मार्डन रिव्यू, मार्च, 1946, मे एस० सी० राय का लेख 'प्राग्योतिषपुर', बी० के० बरुआ ए कल्चरल हिस्ट्री ऑव असम, जिल्द, I, पृ० 9 और आगे)।

प्रेतकूट (प्रेतशिला)—गया माहात्म्य में वर्णित यह एक शिखर है। गया से पाँच मील पश्चिमोत्तर मे स्थित यह 540 फीट ऊँची एक पहाड़ी है। तीर्थयात्रियों के लिए यह एक पुण्यस्थल है। इस पहाड़ी के शिखर पर बैठे हुये हाथी के समान प्रतिभासित होने वाला एक स्फटिक (granite) गोलाश्म है (बे० मा० बरुआ, गया ऐंड बुद्धगया, पृ० 14)। प्रेतकूट के पाद मे प्रेतकुण्ड नामक एक स्नान-स्थल है, जिसे ब्रह्मकुण्ड भी कहते है (वायुपुराण, 108.67)।

पुनपुन्न—यह आधुनिक पुनपुन है जो पटना के ठीक आगे गगा मे मिलती है।

डाल्टनगज जिले (पलामू) मे इसका स्रोत है और इसमें दो उपनदियाँ मिलती हैं (लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 26)।

पुण्ड्रवर्धनभुक्ति—देखिये पौण्ड्रवर्धनभुक्ति।

पूर्वखाटिका—वह पश्चिमी सुदरबन क्षेत्र के एक विशाल भाग पर फैला हुआ प्रतीत होता है (एपि० इं०, XXVII, भाग, III, पृ० 121)।

पुष्करण—चन्द्रवर्मन् के सुसुनिया शिलालेख मे पुष्करण का उल्लेख है, जो सुसुनियाँ पहाडी से लगभग 25 मील पूर्व मे बाँकुडा जिले मे दामोदर नदी के तट पर स्थित आधुनिक पोखरन है। यह राजा चन्द्रवर्मन् के राज्य की राजधानी थी, (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1927-1928, पृ० 188, इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, पृ० 72)।

पुष्करारम्बुधि—ल्युडर्स की तालिका मे एक देश के रूप मे इसका वर्णन है. (स० 961)।

राढ़—भट्टट-भवदेव के भुवनेश्वर-अभिलेख मे इस प्रात का उल्लेख है। राजेन्द्र चोल के तिरुमलाई शिलालेख मे दो पृथक् जनपदो के रूप मे उत्तर राढ और दक्षिण राढ का वर्णन है। भोजवर्मन् के बेलाव और बल्लालसेन के नैहटि ताम्रपत्रों मे भी उत्तर राढ का वर्णन है जो वर्धमानर्भुक्ति मे सबंधित है। कुछ लोगो के अनुसार उत्तर राढ, जिसका वर्णन गण्डरादित्य देव के कोल्हापुर ताम्रपत्र (शक सवत् 1048, एपि० इ०, XXIII, भाग, II) और गग देवेन्द्रवर्मन् के398वे वर्ष मे कालाकित इडियन म्यूजियम अभिपत्र मे भी है (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 76) बगाल का वह भाग है जिसमे मुर्शिदाबाद जिले का एक अश समिलित है। राढ प्रात मे हुगली, हाबडा, बर्दवान और बाँकुडा, जिले तथा मिदनापुर जिले के अधिकाश भाग समाविष्ट प्रतीत होते हैं। आचाराग-सूत्र (आयाराग सुत्त) मे एक दुर्गम देश के रूप मे (राढ) का वर्णन है, जिसके दो उप-प्रभाग है : सुम्भभूमि (जो सभवत:, सस्कृत सुह्म है) और वज्जभूमि जिसे आधुनिक मिदनापुर जिले का वाचक माना जाता है। इसमे राढ़ देश के निवासियो को रुक्ष और साधारणतया मुनियो के प्रति विद्वेषी बतलाया गया है। जैसे ही मुनि उनके गाँवों के समीप दृष्टिगत होते थे, वैसे ही राढ़ के निवासी उनके पीछे कुत्ते छोड देते थे (1, 8, 3-4)। वे उपद्रवी जिनसे एकाकी मुनियो को निपटना पड़ता था, गोपालक थे जो उनसे व्यावहारिक मजाक किया करते थे (अचाराङ्ग सूत्र, 18,3-10; तुलनीय, मज्झिम, I, 79)।

राजगह (राजगृह)—इस नाम के एक नगर का वर्णन महाभारत (84, 104) और ल्युडर्स-तालिका, सख्या, 1345 मे है। यह मगध की प्राचीन राजधानी थी जिसे गिरिव्रज भी कहते थे। एक राजा द्वारा निर्मित होने के कारण इसका यह नाम था और इसका प्रत्येक घर एक महल के सदृश था। इसे कुशाग्रपुर भी कहा जाता था (श्रेष्ठ कुश घास का नगर)। पाँच पहाडियो[1] से परिवृत्त होने के कारण इसका नाम गिरिव्रज पडा था, महाकाव्यो मे जिसका वर्णन मगध-नरेश जरासंध की राजधानी के रूप में आया है। सासनवश के अनुसार इसे मान्धाता ने बनवाया था (पृ० 152)। इसमे 32 फाटक और 64 पृष्ठद्वार थे (स्पेस हार्डी, मैनुअल ऑव बुद्धिज्म, पृ० 323)। विनयपिटक के अनुसार (जिल्द, IV, पृ० 116-117) इस शहर मे एक द्वार था जो सायकाल बद कर दिया जाता था और कोई भी व्यक्ति यहाँ तक कि राजा को भी द्वार बद हो जाने के बाद नगर मे प्रवेश नही करने दिया जाता था। पूरब से पश्चिम मे राजगृह विस्तृत और उत्तर से दक्षिण मे सकीर्ण था (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ II, पृ० 148)। यह एक उल्लासपूर्ण नगर था जहाँ पर उत्सव मनाये जाते थे जिनमे लोग अपने को मदिरापान, मांस-भक्षण, नृत्य और सगीत मे लिप्त रखते थे (जातक, I, 489)। यहाँ पर नक्खट्टकीडा नामक एक पर्व होता था जो एक सप्ताह तक चलता था और जिसमे धनी लोग भाग लेते थे (विमानवत्थु कामेट्री, पृ० 62-74)। इस नगर मे गिरग्गसमज्जा नामक एक अन्य उत्सव आयोजित किया गया था और छ भिक्षुओ के एक दल ने इसमे भाग लिया था (विनयपिटक, II, 107; तुलनीय, वही, IV, 267)। यह पुर अनेक धनी श्रेष्ठियो का आवास था (पेतवत्थु कामेट्री, पृ० 1-9)। राजगृह के सथागार मे सभाएँ होती थी, जिनमे लोग मिलते थे और लोक-कल्याण के साधनो पर परिचर्चा करते थे (जातक, IV, पृ० 72 और आगे)। यहाँ के निवासी भिक्षुओ की आवश्यकताओ को तृप्त करने के लिए इस विश्वास से सदैव तत्पर रहते थे कि इस प्रकार के पुण्य कर्मों से किसी उच्चतम क्षेत्र मे उनका पुनर्जन्म होगा (विमान वत्थु कमेंट्री, पृ० 250-51)। सारिपुत्त और मोग्गलान सहित बुद्ध के अनेक प्रसिद्ध शिष्य इस नगर मे आये और बुद्ध ने यही पर उनका धर्म परिवर्तन किया था (कथावत्थु, I, पृ० 97)। यही पर उपालि को भी भिक्षु के रूप मे दीक्षित किया

---

[1] **इन पहाड़ियों-विषयक पूर्ण विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, राजगृह इन ऐंश्येंट लिटरेचर, मे० आर्क० स० इं०, सं० 58; बि० च० लाहा, द मगधाज इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 33 और आगे।**

गया था। इस नगर में बुद्ध की क्रियाशीलता उल्लेखनीय है।[1] महावीर ने यहाँ चौदह चार्तुमास्य व्यतीत किये थे (नायाधम्मकहाओ, II, 10)। यह बीसवे तीर्थकर का जन्मस्थान था (आवश्यक निर्युक्ति, 325, 383)। यहाँ पर बुद्ध ने सभी भिक्षुओ को बुलाया और बौद्ध सघ के लिये कल्याण की सात दशाओं के कई वर्ग निर्धारित किये। मगध-नरेश अजातशत्रु ने राजगृह के चारों ओर धातु-चैत्य बनवाये (महावस, I, गाइगर सस्करण, पृ० 247) और 18 महा-विहारो का जीर्णोद्धार कराया (समन्तपासादिका, I, पृ० 9-10)।

मगध-नरेश बिम्बिसार का राजवैद्य जीवक राजगृह का निवासी था, (विनयपिटक, II, 119 और आगे)। इस नगर का आकासगोत्त नामक एक अन्य वैद्य था (विनयपिटक, I, 215)।

बौद्ध धर्म के इतिहास में राजगृह एक ऐसे स्थान के रूप में प्रसिद्ध है जहाँ 500 प्रसिद्ध स्थविरो ने महाकस्सप के नेतृत्व में मिलकर बुद्ध के अभिधम्म एव विनय सूत्रों का पाठ किया और बौद्ध-शास्त्र को स्थिर किया (विनय-चुल्लवग्ग, XI)। इस उद्देश्य के लिए राजगृह को चुनने का मुख्य कारण यह था कि यहाँ पर 500 स्थविरो के लिए पर्याप्त स्थान की व्यवस्था की जा सकती थी। राजगृह नगर मे बुद्ध और उनके शिष्य प्राय बहुत आते थे (विमानवत्थु कामेट्री, पृ० 250-51, धम्मपद कामेट्री, I, पृ० 77 और आगे, समन्तपासादिका, I, पृ० 8-9)। विनय-चुल्लवग्ग मे राजगृह के एक श्रेष्ठि का उल्लेख है, जिसने चदन की लकडी का टुकडा प्राप्त करके इससे भिक्षुओ के लिए एक कटोरा बनवाया था (विनय टेक्स्ट्स, III, 78)। राजगृह के एक अन्य श्रेष्ठि ने भिक्षुओ के लिए एक विहार बनवाया था। वहाँ इसमे भिक्षुओ के निवास के लिये उसे बुद्ध की सहमति लेनी पडी थी (विनय पिटक, II, 146)। जब बुद्ध इस नगर मे थे देवदत्त की अभिवृद्धि एव कीर्ति पूर्णत नष्ट हो गयी थी (विनय पिटक, IV, 71)। इसी नगर मे बुद्ध ने श्रावस्ती के अनाथपिण्डिक नामक महाश्रेष्ठि को बौद्ध धर्म मे दीक्षित किया था। (सयुत्त, I, 55-56)। व्यापारी अपने माल का क्रय या विक्रय करने के लिये यहाँ आया करते थे (विमानवत्थु कामेट्री, पृ० 301)।

---

[1] **विनयपिटक, IV, पृ० 267; II, पृ० 146; दीघ, II, पृ० 76-81; III, पृ० 36 और आगे; संयुत्त, I, पृ० 8 और आगे; पृ० 27-28, 52, 160-161, 161-63, 163-64; अंगुत्तर०, II, पृ० 181-82; III, 366 और आगे, 374 और आगे, 383 और आगे; थेरीगाथा, पृ० 16, 27, 41, 142; जातक, I, पृ० 65-84, 156.**

राजगृह के बहुत से लोग वाणिज्य और व्यापार मे लगे हुये थे (जातक, I, पृ० 466-467; पेटवत्थु कामेंट्री, पृ० 2-9)। इसके लंबे इतिहास-क्रम मे इस नगर के अनेक नाम थे (सुमंगलविलासिनी, I, 132; उदानवण्णना, पृ० 32 और आगे)।

बिम्बिसार और अजातशत्रु के शासनकाल मे राजगृह अपने वैभव की चरम-सीमा पर था। बुद्ध की मृत्यु के कोई 28 वर्ष के पश्चात् उदायिभद्र द्वारा पाटलिपुत्र को राजधानी बना लेने पर अवश्य ही इसकी गरिमा समाप्त हो गयी थी।

न केवल बौद्ध धर्म के विकास के साथ ही वरन् जैन धर्म तथा नाग और यक्ख-पूजा जैसे प्राचीन धर्मों के साथ भी इसका घनिष्ट सबध था। यह उस युग के विधर्मियो एव वामपथियो का ज्ञात प्राचीनतम केंद्र था (तुलनीय, मज्झिम, I, पृ० 1-22)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, राजगृह इन ऐंश्येंट लिटरेचर, मे० आर्क० स० इ०, स० 58, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, जिल्द, I, 208 और आगे, ज्याग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 6, 8, 9, 15, 16, 28, 31, 33 आदि; मगधाज इन ऐंश्येंट इडिया, पृ० 24-33; कुरेशी द्वारा लिखित एव अ० घोष द्वारा पुनरावृत्त, 'ए गाइड टु राजगिरि, 1939; राजगिरि के 'उत्खनन के लिये, ए० रि० आर्क० स०, 1936-37, (1940); आर्क० स० इ० रि०, I, (1871), पृ० 21 और आगे, ऐ० रि० आर्क० स० इ०, 1905-1906 (1909), 86 और आगे, 1913-14 (1917) पृ० 265; 1925-26 (1928), 121 और आगे; 1930। 1934, भाग, I, (1936), 30 और आगे, 1935-36 (1938), पृ० 52 और आगे।

राजमहल पर्वतमाला—महाभारत के भीष्मपर्व मे वर्णित अंतर्गिरियो द्वारा निवसित दो पर्वतमालाएँ बिहार के सथाल परगने मे स्थित है। भागलपुर एवं मुगेर क्षेत्रो की पहाडियो की सीमाओ पर रहने वाले लोग, अतागिर्य थे। पतञ्जलि के अनुसार इसे कालकवन भी कहा जाता था (महाभाष्य, II, 4, 10; तुलनीय, बौधायन० I, 1. 2)।

राक्षसखालि—यह द्वीप हुगली नदी के मुहाने पर पुनीत सागर नामक द्वीप से लगभग 12 मील दूर पूरब मे स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 119)।

रामकेलि—यह गाँव (बगला देश) माल्दह से लगभग 18 मील दूर दक्षिण पूरब मे राजशाही जिले मे स्थित है। यहाँ श्रीचैतन्य आये थे (चैतन्य भागवत, अध्याय, IV)।

रामपूर्वा—यह गाँव बिहार के चपारन जिले मे है। यह 1877 ई० मे कार्लाइल द्वारा खोजे गये अशोक के स्तभ के लिये सुविख्यात् है (ज० रा० ए० सो० 1908, 1085 और आगे)।

राणीपुर-झरियल—यह उडीसा मे पटना (पहले रियासत) मे तितिलागढ से लगभग 21 मील पश्चिम मे स्थित एक गाँव है जहाँ से कुछ अभिलेख उपलब्ध हुये थे। यह अनेक प्राचीन मदिर के लिए विख्यात है (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, जनवरी, 1938)।

रेवतिका—समुद्रगुप्त के जाली गया ताम्रपत्र मे गया-विषय मे स्थित इस गाँव के दान का उल्लेख है, जिसे समुद्रगुप्त ने किसी ब्राह्मण को दिया था (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

रोहितागिरि—महासामत शशाकदेव के रोहतासगढ से प्राप्त पत्थर की मुहर के साँचे मे रोहतासगढ़ के पहाडी दुर्ग का वर्णन है जो शाहाबाद जिले मे सहसराम तहसील के मुख्यावास सहसराम से 24 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है (का० इ० इ०, जिल्द, III)। श्रीचन्द्र के रामपाल ताम्रपत्र के अनुसार चन्द्र लोग रोहितागिरि के शासक थे जिसे बिहार मे शाहाबाद जिले के रोहतासगढ से समीकृत किया जा सकता है (न० गो० मजुमदार, इस्क्रिप्शस ऑव बगाल, जिल्द, III, पृ० 2 और आगे)। रोहतास के प्राचीन पहाडी दुर्ग रोहतासगढ का नामकरण सूर्यवशी राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र राजकुमार रोहिताश्व के नाम पर हुआ है (हरिवश, अध्याय, 13)। इसका वर्णन तुग वश से सबधित उडीसा से उपलब्ध ताम्रपत्रो मे भी हुआ है। उडीसा के तुग एव बगाल के चन्द्र—दोनों ही रोहितागिरि से आये थे (इ० हि० क्वा०, II, 655-656)। कुछ लोगो के अनुसार रोहतास पहाडी, विन्ध्य पर्वत की एक शाखा—कैमूर पर्वतमाला का एक पर्वत प्रक्षेप है (न० ला० दे, ज्यॉग्रफिकल डिक्शनरी, पृ० 170)। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, ओ' मैल्लीकृत बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, शाहाबाद, पृ० 174 और आगे।

ऋषिगिरि—(पालि, इसिगिलि)—यह राजगृह के समीप है। यह गिरिव्रज को परिवेष्टित करने वाली पाँच पहाडियो मे से एक है। गिरिव्रज राजगृह का प्राचीन नाम था (विमानवत्थु कामेंट्री, पा० टे० सो०, पृ० 82)।

ऋष्यशृंग आश्रम—ऋषि ऋष्यशृग का आश्रम, भागलपुर से 28 मील पश्चिम और बरियारपुर से चार मील दक्षिण-पश्चिम में ऋषिकुण्ड मे था। यह मैरा पहाडी (मरुक पहाड़ी) द्वारा निर्मित एक गोलाकार घाटी मे स्थित था। इस आश्रम के समीपस्थ ऋषिकुण्ड एक सरोवर था जो ठडे और गरम

स्रोतों की एक समवायित जलराशि थी। इस सरोवर के उत्तर की ओर ऋषि ऋष्यभृग और उनके पिता बिभाण्डक ध्यान लगाया करते थे। कजरा स्टेशन के दक्षिण में आठ मील की दूरी पर स्थित ऋष्यभृग पर्वत को ऋषि का तपोवन होने का सम्मान प्राप्त है (रामायण, आदिकाण्ड, अध्याय, 9)। गगा से ऋषिकुण्ड की निकटता के कारण, जिससे अग-नरेश लोमपाद द्वारा इस तरुण ऋषि को तपस्या से विमुख करने के लिये भेजी गयी वेश्याओ को सुविधा मिली थी, इसी स्थान को वरीयता दी जानी चाहिए, जहाँ सभवत ऋषि और उनके पिता ने तपस्या की थी। महाभारत (वनपर्व, अध्याय, 110 और 111) के अनुसार यह आश्रम कुशी नदी के (प्राचीन कौशिकी) के निकट ही और चपा से 24 मील दूर पर स्थित बतलाया जाता है।

रूपनारायण—यह नदी हबडा और मिदनापुर जिलो की सीमा है। यह मानभूम की पहाड़ियो से निकलती है और बाँकुडा, हुगली तथा मिदनापुर जिलो से बहती हुयी तामलुक के समीप हुगली नदी मे मिलती है। (विस्तार के लिये देखिये, लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 27)।

सलदि—क्योझर (एक भूतपूर्व रियासत) की पहाडियो से निकलकर यह नदी वैतरणी के पहले बलसोर जिले से बहती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 45)।

समतट—समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तभ लेख मे (का० इ० इ०, जिल्द, III, न० 1) पूर्वोत्तर भारत के प्रत्यन्त राज्यो के एक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण राज्य के रूप मे समतट का वर्णन है, जिसने शक्तिशाली गुप्त-सम्राट् की अधीनता स्वीकार की थी। चूँकि यहाँ की नदियो के दोनो ओर समान ऊँचाई वाले चौरस और समतल तट थे, इसलिये इसका यह नाम था (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, एस० एन० मजूमदार सस्करण, पृ०, 729)। यह वग के विशालतर प्रभागो मे समिलित था। कुछ विद्वानों की धारणा है कि यह वग से भिन्न था जो पूर्व मे मेघना, दक्षिण मे समुद्र और उत्तर मे गगा के प्राचीन प्रवाह बूढी गगा के बीच मे स्थित था। समतट का वर्णन बृहत्सहिता मे है (अध्याय, XIV) और यह गगा और ब्रह्मपुत्र के डेल्टा के समान प्रतीत होता है तथा अभिलेखीय साक्ष्यो के अनुसार इसमे त्रिपुरा, नोआखाली, सिलहट (बागला देश) (ज० ए० सो० ब०, 1915, पृ० 17-18) जिलो और सभवत. बरीसाल के कुछ भाग अवश्यमेव समिलित रहे होंगे। कर्मात जिसे कोमिल्ला से 12 मील पश्चिम मे स्थित बडकाम्ता से समीकृत किया जाता है, से प्रायः समतट की राजधानी की पहचान की गयी है (दे, ज्यॉग्रफिकल डिक्शनरी, पृ० 175, ज० ए० सो० ब०, 1914, पृ० 87;

भट्टसालि, स्कल्पचर्स इन द ढाका म्युजियम, पृ० 6)। नारायणपाल के भागलपुर दानपत्र मे, महीपाल प्रथम के बघौरा अभिलेख मे, विजयसेन के बैरकपुर दानपत्र मे, वीर्येन्द्रभद्र के बोधगया अभिलेख और असरफपुर ताम्रपत्र में समतट का उल्लेख है (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शस ऑव बगाल, जिल्द, III)। दामोदर-देव के मेहरग्राम ताम्रपत्र से (बरुआ और चक्रवर्ती द्वारा सपादित) हमे पुण्ड्र-वर्धनभुक्ति के अंतर्गत् समतटमण्डल की स्थिति का निश्चित पता लगता है। इसमे परणयी (विषय) जिले और वैसग्राम उपप्रभाग (खण्डल) का उल्लेख है जिसमे कोमिल्ला जिले की वर्तमान चाँदपुर तहसील मे स्थित मेहर नामक गाँव समिलित था। पुण्ड्रवर्धनभुक्ति मे दशरथदेव द्वारा सेनो का उन्मूलन किये जाने के पूर्व, तेरहवी शताब्दी ई० के प्रारभ मे कोमिल्ला जिले एव चटगाँव (बागला देश) मे देव राजाओ का शासन था। कोमिल्ला शहर से लगभग 18 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित गुनैघर नामक गाँव से एक नया ताम्रपत्र उपलब्ध हुआ है। यह अभिपत्र बागला देश मे प्राप्त होने वाला सर्वप्राचीन प्रलेख है। यह फरीदपुर के चार अभिपत्रो मे प्राचीन है, जिनके साथ इसकी लाभप्रद तुलना की जाती है। इस अभिपत्र मे अपने सामत महाराज रुद्रदत्त के कहने पर महाराज वैन्यगुप्त द्वारा उसके क्रीपुर के जयस्कधावार से महायान धर्म के वैवर्तिक सप्रदाय के भिक्षुओ के एक बौद्ध-सघ को दिये गये भूदान का उल्लेख है। इस सघ की स्थापना आचार्य शान्तिदेव नामक एक बौद्ध भिक्षु ने अवलोकितेश्वर को समर्पित एक बिहार मे की थी। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, इ० हि० क्वा०, जिल्द, VI, न० 1, पृ० 45 और आगे। गुनैघर दानपत्र मे गुनैकाग्रहार मे भू-दान का प्रलेख है, जिसे त्रिपुरा मे 508 ई० मे तिथित दानपत्र के प्राप्तिस्थान गुनैघर से समीकृत किया जा सकता है। दूतक महासामत महाराज विजयसेन था जो अपने समय का कोई महत्त्वपूर्ण व्यक्ति प्रतीत होता है।

जब युवान-च्वाङ (640 ई०) इस देश मे आया था, तब समतट एक महत्त्वपूर्ण राज्य था। उसने इसे दोनो ओर समान ऊँचाई वाले समतल और चौरस तटो वाली नदियो वाला देश बतलाया है। इस देश की परिधि, जिसे चीनी लोग सन-मो-ता-चा (San-mo-ta-cha) कहते थे, लगभग 3000 ली थी। यह फल-फूल और धान्य से समृद्ध था। यहाँ की जलवायु सम और लोग सुभग थे। यहाँ के लोग स्वभाव से निर्भीक, छोटे कद और कृष्ण-वर्ण के थे। वे विद्याव्यसनी थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 199)। यहाँ पर अनेक बौद्ध संघाराम एव हिंदू मदिर थे। इस देश मे अनेक जैन मुनि थे। युवान-च्वाङ और सेंगची के यात्रा-काल मे समतट खड्ग वश के शासन के

अधीन प्रतीत होता है (मे० आर्क० सं० ब०, जिल्द, I, न० 6)। ऐसा प्रतीत होता है कि समतल समेत सपूर्ण वग पर चन्द्रवश का आधिपत्य था। ग्यारहवी शती ई० के प्रारभ में वर्मनों ने समतट को चन्द्रों के अधिकार से छीन लिया था, जिन्होने उसी शताब्दी के अत मे क्रमशः सेनो के लिये स्थान दिया।

सप्पसोण्डिक-पब्भार—यह निकटवर्ती एक शिला का सर्प के फन के आकार वाला एक ढाल है (सारत्थप्पकासिनी, III, 17)। यह राजगृह मे सीतवन के समीप था।

सप्पिनी—यह राजगृह के निकट एक नदी या क्षुद्र नदी थी। यह तिर्यक् प्रवाह वाली एक सरिता थी। प्राय बुद्ध इस नदी के तट पर प्रवास किया करते थे (सयुत्त, I, 153)। ऐसा प्रतीत होता है कि बुद्ध-काल मे यह राजगृह के दक्षिण मे बहती थी। कुछ पारिव्राजको से मिलने के लिए (परिब्बाजक) बुद्ध गिज्झकूट से इस नदी के तट पर आये थे। पञ्चान नदी सभवतः प्राचीन सप्पिनी है।

सप्तग्राम—पूर्व काल मे इसका तात्पर्य सात गाँवो से था : बसबेरिया, कृष्ण-पुर, बासुदेवपुर, नित्यानदपुर, शिवपुर, सवचोरा और बलदघाटी। प्राचीन सप्तग्राम के अवशेष कलकत्ता से लगभग 27 मील दूर आदिसप्तग्राम नामक वर्तमान रेलवे स्टेशन के समीप प्राप्त होते है। यह एक महत्त्वपूर्ण नगर एव गगा के तट पर स्थित राढ का एक बदरगाह था। चूंकि यहाँ पर राजा प्रियव्रत के सात पुत्र तपस्या करके ऋषि हुये थे इसलिए इसका यह नाम है। सरस्वती नदी के तल के सादपूर्ण हो जाने के कारण एक बदरगाह के रूप मे इसका महत्त्व समाप्त हो गया। नवी शती ई० मे श्री-श्री रूपनारायणसिंह नामक एक शक्तिशाली बौद्ध राजा सप्तग्राम मे शासन करता था। तेरहवी शती ई० मे मिस्री यात्री इब्नबतूता यहाँ आया था। बाद मे जफर खाँ ने इसे जीत लिया था जिसका मकबरा अब भी त्रिवेणी मे प्राप्त होता है। यहाँ पर मुसलमान शासको की बहुत मुद्राएँ प्राप्त हुयी है। गौड के अलाउद्दीन हुसेनशाह के शासनकाल मे यह एक शाही टकसाल का केंद्र था। सोलहवी शती ई० मे राजीवलोचन नामक एक हिंदू राजा ने इसे गौड के तत्कालीन मुल्तान सुलेमान से जीत लिया था। यह चण्डी के प्रणेता का जन्म-स्थान है। बकिमचन्द्र के कपाल-कुण्डला एव हरप्रसाद शास्त्री के बेनेर मेये से हमें इसकी समृद्धि की एक झलक मिलती है। श्रीचैतन्य के एक अनुयायी उद्धारण दत्त का घर होने के कारण यह वैष्णवो का एक तीर्थस्थल है। श्रीचैतन्य के दाहिने हाथ-तुल्य नित्यानद ने इस स्थान पर अनेक वर्ष व्यतीत किये थे। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया,

ज० ए० सो० बं०, 1810; पेरिप्लस०, 26; इंट्रोड्यूसिंग इंडिया, भाग, I, पृ० 75.

सतट-पद्मावती—ग्यारहवी शती० ई० के श्रीचन्द्र के एदिलपुर ताम्रपत्र मे इस विषय (ज़िले) का उल्लेख है (एपि० इ०, XVII, 190)।

सत्तपण्णिगुहा—यह वेभार पर्वत के एक ओर थी, जहाँ पर राजा अजातशत्रु की सरक्षता एव महाकस्सप के सभापतित्व मे प्रथम बौद्ध सगीति हुयी थी (समन्त-पासादिका, I, पृ० 10)। इसका नाम सप्तपर्ण लता से ग्रहण किया गया है जो इसे लक्षित करती हुयी, इसके पार्श्व मे थी। महावस्तु के (जिल्द, I, पृ० 70) अनुसार यह वैहार पर्वत की एक सुदर ढलान के उत्तर की ओर थी। यह फा-ह्यान् के विवरण से मिलता है जिसने गुहा को पहाड़ी के उत्तर मे स्थित बतलाया है (लेग्गे, फा-ह्यान्, पृ० 84-85)। फा-ह्यान् से सहमत युवान च्वाङ् ने गुहा को वेणुवन के दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 5 या 6 ली की दूरी पर एक विशाल वेणुवन मे दक्षिणपर्वत के उत्तर की ओर स्थित बतलाया है (वाटर्स, ऑन युवान च्वाङ्, II, 159)।

सालिन्दिय—यह राजगृह के पूर्व मे एक ब्राह्मण गाँव था (जातक, II I, 293)।

शाल्मली—इसकी पहचान बगाल के बर्दवान जिले मे गलसी थाने के अधिकार क्षेत्र के अतर्गत् दामोदर नदी के उत्तरीतट से कोई $1\frac{1}{2}$ मील दूर स्थित मल्लसारुल नामक एक गाँव से की जा सकती है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 158)।

शानबत्य—महाभारत (II, 48, 15) मे वर्णित यह देश गया जिले मे है। कुछ लोगो ने इस देश के निवासियो को संथालो से समीकृत किया है जो मेरे विचार से सदिग्ध है (मोतीचन्द्र, ज्यॉग्रेफिकल ऐंड इकॉनॉमिक स्टडीज़ इन द महाभारत, पृ० 110)।

शान्तिपुर—यह स्थान नदिया जिले मे गगातट पर स्थित है। यहाँ पर अनेक हिंदू मदिर है। यहाँ पर श्रीचैतन्य के समकालीन एव प्रशसक महान् वैष्णव सुधारक अद्वैताचार्य रहते थे जो तपस्या किया करते थे (इट्रोड्यूसिंग इडिया, भाग, I, पृ० 74)।

सावथिदेश (या सावथिका)—यह स्थूल रूप से बंगाल मे दक्षिण दिनाजपुर और उत्तर बोगरा (बागला देश) का वाचक है (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 103, गाओनरी से उपलब्ध तीन ताम्रपत्र।

सेनानिगाम—(बुद्धघोष[1] के अनुसार सेनानि-निगम)—यह एक मागधी

[1] सारत्थप्पकासिनी, I, 172.

गाँव था जहाँ पर एक रमणीक वन एवं नदी थी। यह एक समृद्ध गाँव था जहाँ पर भिक्षा सुलभ थी (विनय महावग्ग, I, पृ० 166-167)।

सेनापतिगाम—यह उरुविल्व मे था जहाँ पर छः वर्षों तक बुद्ध गभीर चिंतन मे लीन थे। गवा नामक एक नगर-वधू ने एक वृक्ष पर समाधि के बाद बुद्ध के प्रयोग के लिए मोटा कपड़ा रख दिया था (बि० च० लाहा, ए स्टडी ऑव द महावस्तु, पृ० 154)।

यह उल्लेखनीय है कि सेनानिगाम, जो बुद्ध के युग मे वास्तव मे उरुवेला की प्रमुख बस्ती थी, सस्कृत बौद्ध ग्रथो मे वर्णित सेनापतिग्राम का वाचक है (ललित-विस्तर, मित्र द्वारा सपादित, पृ० 311; महावस्तु, II, 123)। बुद्धघोष के अनुसार प्राचीन काल मे यह एक सैनिक पडाव के रूप में काम आता था (बे० मा० बरुआ, गया ऐड बुद्धगया, पृ० 103)।

शाहपुर—आदित्यसेन के शाहपुर पाषाण-प्रतिमा अभिलेख मे इसका उल्लेख है। यह गाँव सकरी नदी के दाहिने तट पर बिहार के दक्षिण-पूर्व मे कोई 9 मील दूर पर स्थित है (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

शिबसागर—सभवतः यह कामरूप के प्राचीन राज्य का अग था। असम मे शिबसागर जिला उत्तर मे लखीमपुर और दरग जिलो से, पूर्व मे लखीमपुर और स्वतत्र नाग कबीलो द्वारा अधिकृत पहाडियो से, दक्षिण मे उक्त पहाडियो एव नागा हिल्स (त्वेनसाग जिला, नागालैंड) से तथा पश्चिम मे नवगाँव जिले से परिवृत है। शिबसागर के तीन प्राकृतिक भाग है। यहाँ का सबसे अधिक जन-संकुल एव महत्वपूर्ण भाग नागा हिल्स एव ब्रह्मपुत्र के बीच मे स्थित एक चौडा एव स्वास्थ्यकर मैदान है। ब्रह्मपुत्र एव धनसिरि इस जिले मे दो प्रसिद्ध नदियाँ है।

मैदान कछारी उत्पत्ति का है और इसमे विभिन्न अनुपातो मे चिकनी मिट्टी एव रेत का मिश्रण है। ब्रह्मपुत्र के समीप यहाँ पर शुद्ध रेत है और कही पर इतनी कडी मिट्टी है जो कृषि के सर्वथा अनुपयुक्त है।

शेष ऊपरी असम की भाँति शिबसागर मे ठडा शरद् और शीतल एव सुहावना बसंत होता है। वर्ष भर मे औसत वर्षा 90 से 95 इच के मध्य घटती-बढती रहती है। इस नगर मे बिरले ही सहारक तूफान आया होगा, यद्यपि शेष असम की भाँति यहाँ भूकंप आ सकते है।

चावल यहाँ के निवासियो का प्रमुख भोजन, एवं कृषि प्रधान उद्यम है। अन्य महत्त्वपूर्ण फसलें चाय एव बाग-बगीचो की फसले हैं। लाख एव सिल्क के कीड़ो का पालना, मिट्टी के बैडोल बर्तनो, धातु के बर्तनो एव आभूषणों का निर्माण, चटाई बनाना एवं बुनना शिबसागर के उद्योग हैं। इस जिले मे तीन विभिन्न

प्रकार के सिल्क का उत्पादन होता है (बी० सी० एलेन, असम डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स जिल्द, VII, शिबसागर, 1906)।

शिबसागर मे अहोम राजाओ द्वारा बनवाये गये अनेक मदिर है, जो उच्च कोटि की पतली ईटो से बने है और साधारणतया अध्युच्चित्र द्वारा अलंकृत हैं। ऊँटो की आकृतियाँ जो प्रायश दृष्टिगत होती है, यह व्यजित करती है कि ये मदिर विदेशी कलाकारो के निर्देशन मे बने थे, क्योकि असम जैसे दलदली देश मे ऊँट सदा ही अत्यत दुर्लभ रहे है। वहाँ पर मदिर साधारणतः विशाल तालबो के तट पर बने हुये थे। वहाँ पर एक जीर्ण छोटा मदिर था जहाँ चुतिया पुरोहित प्रतिवर्ष देवता को नरबलि चढाया करते थे।

सिद्धल—यह उत्तर-राढ मे स्थित एक गाँव का नाम है और इसका वर्णन भोजवर्मन् के बेलाव ताम्रपत्र एव भट्ट भवदेव के भुवनेश्वर अभिलेख मे है। (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शस ऑव बगाल, भाग, III, पृ० 16 और आगे)। कुछ लोग सिद्धल को बीरभूम जिले मे अहमदपुर के समीप सिघल नामक वर्तमान् गाँव से समीकृत करते है (द्रष्टव्य, एच० के० मुखर्जी कृत बीरभूम विवरण, भाग, II, 234)।

शिला-सगम (या विक्रमशिला सघाराम)—इस पहाडी मे शिला काट कर तराशी हुयी सात अत्यत प्राचीन गुहाएँ है जिनमे देवताओ की प्रतिमाओ को रखने के ताख बने हुये हैं। सातवी शती ई० मे जब युवान-च्वाङ चम्पा आया था तब उसने इसका वर्णन किया था। कुछ लोगो ने इसकी पहचान पाथरघाटा पहाडी से की है (द्रष्टव्य विक्रमशिला)।

सिलिमपुर—यह राजशाही मडल के बोगरा जिले (बागला देश) मे है जहाँ पर जयपालदेव के काल का एक शिलापट्ट अभिलेख प्राप्त हुआ था (एपि० इ०, XIII, 283 और आगे)।

सिलुआ—यह बागला देश के नोआखली मे है। इस स्थल के प्राचीन अवशेषों मे एक नीचा टीला है जिस पर किसी भीमकाय प्रतिमा के विशीर्ण टुकडे है। इसकी पीठिका पर दूसरी शताब्दी ई० पू० का एक अभिलेख है (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्टस, 1930-34, पृ० 38)।

सिहपुर—सिहपुर की पहचान अनिश्चित है। कुछ लोग इस स्थान को सीहपुर से समीकृत करते है जो महावश के अनुसार (VI. 35 और आगे) लाढ़ या राढ़ देश मे स्थित था। संभवत. यह कलिंग का एक भाग था जिसमे राढ़ का एक भाग शामिल रहा होगा। अन्य लोगो के अनुसार यह शिकाकोल एवं नरसन्नपेत के मध्य आधुनिक सिंगुपुरम हो सकता है (एपि० इं०, IV, 143)। भोजवर्मन्

के बेलाव ताम्रपत्र से सिद्ध होता है कि सिंहपुर पर वर्मनों ने शासन किया था, (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शंस ऑव बंगाल, जिल्द, III, पृ० 16)।

सिंगटिया—यह बल्लालसेन के नैहटि ताम्रपत्र मे वर्णित एक नदी का नाम है। यह खाण्डयिल्ला, जिसे आधुनिक खारुलिया से समीकृत किया जाता है, नामक गाँव के उत्तर से और बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले मे आबयिल्ला (अम्बग्राम) नामक गाँव के पश्चिम से प्रवाहित होती है (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शस ऑव बगाल, जिल्द, III, पृ० 71 और आगे)।

सितहाटि—यह वर्दबान जिले की कटवा तहसील मे है। नैहटि और इस गाँव के बीच मे बल्लालसेन का दान-पत्र उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XIV, पृ० 156)।

सीतवन—यह एक सीतवन अर्थात् शवस्थान-कुज था (सारत्थप्पकासिनी, III, पृ० 17, स्यामी सस्करण)। यह स्थल शवाधिस्थान (शव-क्षेत्र) के रूप मे प्रयुक्त होता था, जहाँ शव स्वाभाविक रूप से नष्ट होने के लिए फेक या छोड दिये जाते थे (सयुत्त, I, पृ० 210-11) या मांसभक्षी पशुओं, पक्षियो एव कीडो के खाने के लिये डाल दिये जाते थे (दीघ निकाय, II, 295,296)। यह बाग एक प्राचीर से घिरा हुआ था और इसमे दरवाजे लगे थे जो रात मे बद रहते थे (सयुत्त, I, पृ० 211)। यह वेणुवन के आगे बैभार पहाडी के निकट उत्तर की ओर स्थित था। निश्चय ही इसकी स्थिति जरासघ की बैठक के आगे थी (बि० च० लाहा, राजगृह इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 10–11)।

सीताकुण्ड—यह चटगाँव जिले (बागला देश) मे स्थित एक गाँव है जो चटगाँव कस्बे से 24 मील दूर पर है। इसी नाम पर एक पर्वतमाला का नामकरण हुआ है, जो चटगाँव कस्बे से उत्तर की ओर फैली हुयी है जिसकी ऊँचाई सीताकुण्ड मे सबसे अधिक हो जाती है। चटगाँव जिले मे यह हिंदुओ का पवित्रतम स्थान है क्योंकि ऐसी अनुश्रुति है कि वनवास काल मे राम और सीता इस पहाड़ी पर और इसके निकट घूमे थे और सीता ने यहाँ के तप्तजलकुड मे स्नान किया था जो उनके नाम से सबद्ध है।

इसी नाम का एक गाँव मुगेर तहसील मे भी है जो मुगेर शहर से चार मील पूरब में स्थित है जहाँ सीताकुण्ड नामक गरम जल का एक कुड है, जिसका नामकरण रामायण के सुप्रसिद्ध उपाख्यान के आधार पर हुआ है। विस्तृत बिवरण के लिए द्रष्टव्य, ज० ए० सो० ब०, 1890; ओ 'मैल्ली कृत बिहार ऐड उड़ीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, मुगेर, पृ० 259-262)।

सोमपुर—पाहाड़पुर देखिए।

श्रीहट्ट—योगिनीतंत्र (2.1, 112-113; 2.2.119) में इसका वर्णन है। सिलहट (बांगला देश) सुरमा नदी की निचली घाटी में स्थित है। इसके उत्तर मे खासी और जैन्तिया पहाड़ियाँ, पूरब मे कछार, दक्षिण मे टिपरा पहाड़ी (जो पहले एक रियासत थी) और पश्चिम में टिपरा और मेमनसिंह जिले (बांगला देश) हैं। यह एक विस्तीर्ण और समतल घाटी है जिसके प्रत्येक ओर बड़ी ऊँची पहाड़ियाँ हैं। बरक यहाँ का प्रधान नदी है जो मणिपुर, कछार और सिलहट से बहती हुई अत मे भैरब बाजार के समीप ब्रह्मपुत्र के पुराने नदी तल मे गिरती है। सिलहट की जलवायु ऊष्णतर है और असम की घाटी की तुलना मे कम नम नही है (बी० सी० एलेन, असम डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर्स, जिल्द, II, सिलहट)।

श्रीनगरभुक्ति—देवपालदेव के मुगेर दान ताम्रपत्र मे इसका वर्णन है जिसे चार्ल्स विल्किसन ने आधुनिक पटना से समीकृत किया है।

शृंङ्गवेर—इसे राजशाही जिले (बागला देश) की नतोर तहसील मे स्थित सिंगरा थाने से समीकृत किया गया है (इ० हि० क्वा०, XIX)।

सुह्म—सुह्मदेश एक अधिक व्यापक क्षेत्र का अंग था, जिसे बाद मे राढ कहा जाता था। यह गगातट पर था (धोयी कृत पवनदूत, V. 27)। सुब्भभूमि सुह्मो का देश ही प्रतीत होता है। महाकाव्यो और पुराणो के अनुसार सुह्मदेश बग एव पुण्ड्र से पृथक् था। महाभारत मे दिये गये भीम की पूर्वी विजय के विवरण मे सुह्मो के देश को बग एव ताम्रलिप्त से भिन्न बतलाया गया है। महा भारत पर नीलकण्ठ की टीका से हमे ज्ञात होता है कि सुह्म एव राढगण एक ही लोग थे। जैन ग्रंथ आयाराग-सुत्त से हमें ज्ञात होता है कि सुह्मदेश राढ देश का एक भाग था। महाभारत (सभापर्व, अध्याय, 30, 16) से हमे ज्ञात होता है कि पाण्डवो की विजयिनी सेना सुह्म गयी थी। सुह्म पर पाण्डु (महाभारत, आदिपर्व, 113) और कर्ण ने क्रमश. विजय प्राप्त की थी (महाभारत, कर्णपर्व, 8, 19)। जिस समय बुद्ध सुह्म मे थे, उन्होने जनपद-कल्याणी सुत्त का प्रवचन किया था (जातक, I, 393)। रघु के प्रति समर्पण करके सुह्म के निवासियो ने अपनी रक्षा की थी (रघुवश, 49, 35)। रघु ने कापिसा नदी पार की और कलिंग की ओर आगे बढे। उत्कल-नरेश ने उनका पथ-प्रदर्शन किया था। (वही, 49, 38)। मित्रगुप्त की यात्रा के विवरण मे सुह्म देश का उल्लेख है जहाँ पर उस समय तुगधन्वा नामक राजा शासन करता था (दशकुमारचरित, छठवाँ उच्छवास, पृ० 102)। उस राजा ने गगा के पवित्र जल मे उपवास करके प्राणोत्सर्ग किया था (दशकुमारचरित, पृ० 119)। राजशेखर की काव्यमीमांसा (अध्याय, 17) में

सुह्य् सहित अनेक देशों का उल्लेख है। हर्षचरित (षष्ठम उच्छवास) के अनुसार सुह्यों के राजा देवसेन की हत्या देवकी ने की थी।

दशकुमारचरित् में दामलिप्ति का वर्णन सुह्यो के एक नगर के रूप मे किया गया है (अध्याय, VI; ज० ए० सो० ब०, 1908, 290, नोट)। सुह्यदेश मे दामलिप्ति नगर के बाहर एक महान् समारोह का आयोजन किया गया था। यहाँ के नि:संतान राजा तुगधन्वा ने दो सतानो की प्राप्ति के लिये पार्वती के चरणो की वदना की थी (दशकुमारचरितम् विल्सन सस्करण, पृ० 141-142)।

शुक्तिमत पर्वतमाला—कनिघम ने इसे सेहोआ और कॉकर के दक्षिण मे स्थित उन पहाड़ियो से समीकृत किया है जो छत्तीसगढ को वस्तर से थक करती है (आर्क० स० रि०, XVII, पृ० 24, 26)। बेगलर ने इस पर्वतमाला को हजारीबाग जिले के उत्तर मे स्थित बतलाया है (वही, VIII, पृ० 124-125)। पार्जिटर ने इसकी पहचान गारो, खासी और टिपरा पहाडियो से की है (मार्कण्डेय पुराण, 285, 306, नोटस)। चि० वि० वैद्य ने इसे पश्चिमी भारत मे स्थित बतलाया है और इसकी पहचान काठियावाड पर्वतमाला से की है (एपिक इडिया, पृ० 276)। अन्य लोगों ने शुक्तिमन को सुलेमान पर्वतमाला से समीकृत किया है (जेड० डी० एम० जी०, 1922, पृ० 281, नोट)। कुछ लोगो ने उस पर्वत-माला को शुक्तिमत नाम दिया है जो मध्यप्रदेश के रायगढ मे कुमारी नदी द्वारा सिंचित शक्ति से मानभूम मे डल्मा पहाडियो तक फैली हुयी है। बाबला की सहायक नदियों द्वारा परिक्षालित सथाल परगने की पहाड़ियों का भी शायद यह नाम है (हे० च० रायचौधरी, स्टडीज़ इन इडियन ऐटक्विटीज, पृ० 113 120)।

सुल्तानगज—यह गाँव भागलपुर जिले मे गगा के निकट स्थित है। यहाँ पर बौद्ध विहारो के विस्तृत अवशेष है। रेलवे स्टेशन के समीप एक प्राचीन स्तूप है। यहाँ पर दो बडी स्फटिक-शिलाएँ है, जिनमे से एक पर गैविनाथ (घैबीनाथ) महादेव का प्रसिद्ध मदिर है, जो हिंदुओं की दृष्टि मे एक अत्यत पवित्र स्थान है (बर्न कृत बिहार डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, भागलपुर, पृ० 175)।

सुमागधा—यह राजगृह के समीप एक तालाब था (सयुत्त निकाय, V, पृ० 447)।

सुंभ—यह सुभों का देश था जिसकी राजधानी सेतक थी। कुछ लोगो ने इसे सुम्ह (आधुनिक मिदनापुर जिला, प० बगाल मे) से समीकृत किया है, किंतु इसकी स्थिति अनिश्चित है। इस देश मे बुद्ध आये थे जो इस देश मे देसक

शहर के निकट एक जगल में रुके थे जहाँ पर उन्होंने जनपदकल्याणीसुत्त विषयक एक कहानी कही थी (कावेल, जातक, I, पृ० 232)।

सुंदरबन—सुंदरबन (बगाल) मे एक दानपत्र की उपलब्धि बतलायी जाती है जो अब खो गया है। सुदरबन का वन्य क्षेत्र पहले समतट या बागड़ी (व्याघ्रतटी) मे समिलित था। सातवी शती ई० मे चीनी तीर्थ यात्री युवान-च्वाङ् ने समतट मे अनेक हिंदू, बौद्ध और जैन मंदिर देखे थे, किंतु अभी तक उनका कोई पता नहीं लग पाया है। यहाँ से कुछ अलकृत ईंटे, पत्थर की मूर्तियो के टुकडे, हुविष्क और स्कन्दगुप्त की मुद्राएँ, सूर्य की एक प्रतिमा और एक नवग्रह-पट्ट उपलब्ध हुये है (इट्रोड्यूसिंग इडिया, भाग, I, पृ० 84)।

सुर्मा—यह असम की दूसरी महत्त्वपूर्ण नदी है। इसे मेघना का ऊपरी प्रवाह समझा जाता है। हबीबगज मे बराक मे संगमित होने के पूर्व इसमे दाहिनी ओर से पाँच सहायक नदियाँ मिलती हैं। (विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 34)।

सुसुनिया पहाड़ी (देखिये पुष्करण)—यह प० बंगाल के बाँकुड़ा जिले मे स्थित एक पहाडी का नाम है जो बाँकुडा से लगभग 12 मील दूर पश्चिमोत्तर मे स्थित है (एपि० इ०, XIII, पृ० 133)।

सुवर्णपुर—तेल और महानदी के सगम पर स्थित यह आधुनिक सोनपुर शहर ही है (का० इ० इ०, XXIII, जिल्द, VII; ज० बि० उ० रि० सो०, II, 52; भडारकर की तालिका, सख्या, 1556)।

सुवर्णरेखा—यह नदी मानभूम जिले से निकलती है और जमशेदपुर से होती हुयी बगाल की खाड़ी मे गिरने के लिए आगे धलभूम और मिदनापुर जिले से प्रवाहित होती है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 43)।

तर्पनदीघि—यह गाँव दिनाजपुर जिले (बागला देश) मे स्थित है, जहाँ से लक्ष्मणसेन का एक दान ताम्रपत्र उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XII, पृ० 6)।

तर्पणघाट—यह दिनाजपुर जिले (बागला देश) के नवाबगज थाने मे है। यह वह स्थान है जहाँ रामायण के प्रणेता महर्षि वाल्मीकि ने स्नान किया था और धार्मिक कृत्य सपादित किये थे (इट्रोड्यूसिंग इडिया, भाग, I, पृ० 80)।

ताम्रलिप्ति—ताम्रलिप्ति प० बंगाल के मिदनापुर जिले मे रूपनारायण और हुगली के संगम से लगभग 12 मील दूर पर स्थित तामलुक ही हैं। यह अब मिदनापुर जिले मे सिलै (सिलावती) और दलकिसोर (द्वारिकेश्वरी) के संयुक्त प्रवाह रूपनारायण के पश्चिमी तट पर स्थित है। रघुवंश (IV, 38)

के अनुसार तामलुक कपिशा नदी के तट पर स्थित है, जिसे पार्जिटर ने मिदनापुर जिले से प्रवाहित होने वाली कसई नदी से समीकृत किया है। इस प्राचीन नगर का वर्णन महाभारत (भीष्मपर्व, अध्याय, 9; सभापर्व, अध्याय, 29, 1094-1100) में है, जिसके अनुसार ताम्रलिप्त और सुह्म दो पृथक देश थे। टॉलेमी ने इसे टमेलाइटीज (Tamalites) कहा है। दूधपानी शिलालेख (एपि० इ०, II, 343-45) के अनुसार तीन भाई व्यापार करने के लिये अयोध्या से ताम्रलिप्ति गये और उन्होंने प्रभूत धन अर्जित किया। छठीं शताब्दी ईसवी में यह सुह्म के प्राचीन राज्य की राजधानी थी और मौर्यों के अधीन यह मगध राज्य का एक भाग था (स्मिथ, अशोक, पृ० 79)। छठी शती ईसवीं मे होने वाले दशकुमारचरित् के लेखक दण्डिन् के अनुसार, विन्दुवासिनी का मदिर ताम्रलिप्ति मे स्थित था जहाँ पाँचवी शताब्दी ईसवी में चीनी तीर्थयात्री फाह्यान् और सातवी शताब्दी ईसवी मे युवान-च्वाङ् गये थे। यह प्राचीन मदिर रूपनारायण नदी के क्रोध से नष्ट हुआ था।

फाह्यान् ने ताम्रलिप्ति को चम्पा के पूर्व मे 50 योजन दूर पर समुद्र-तट पर स्थित बतलाया है (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, एस० एन० मजूमदार संस्करण, पृ० 732)। सातवी शती इसवी मे इत्सिंग ताम्रलिप्ति के बराह नामक एक प्रसिद्ध विहार मे रहता था। परंपरानुसार ताम्रलिप्ति या दमलिप्ति मयूरध्वज और उसके पुत्र ताम्रध्वज की राजधानी थी जो अर्जुन और कृष्ण के साथ लड़े थे। कथासरित्सागर (अध्याय, 14) के अनुसार ताम्रलिप्ति चौथी से बारहवी शती ईसवी तक एक समुद्री बंदरगाह और वाणिज्य का एक केंद्र बना रहा। वायुपुराण के अनुसार गगा इससे होकर बहती है। ब्रह्मपुराण मे वर्णित बर्गभीमा का मदिर, जो एक प्राचीन विहार था, अब भी ताम्रलिप्ति (तामलुक) मे स्थित है। जैन धर्मग्रंथ प्रज्ञापणा में ताम्रलिप्ति का उल्लेख मिलता है। महावस (XI, 38; XIX, 6) से यह ज्ञात होता है कि अशोक के धर्मप्रचारको ने लका के लिये इसी बंदरगाह से प्रस्थान किया। ताम्रलिप्ति, जिसे चीनी तन-मो-ली-ती (Tan-mo-li-ti) कहते थे, की परिधि 1400 या 1500 ली थी। यहाँ की भूमि नीची और उर्वर थी, जिस पर निरतर खेती होती थी। यहाँ की जलवायु उष्ण थी। यहाँ के निवासी निर्भीक एव वीर थे। यहाँ पर कुछ सघाराम एवं मदिर थे (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 200)। विस्तृत विवरण के लिये द्रष्टव्य, इंट्रोड्यूसिंग इडिया, भाग, I, पृ० 73)।

1940 मे पुरातत्व-विभाग द्वारा तामलुक के प्राचीन स्थल पर उत्खनन-कार्य किया गया था। यहाँ की पुरानिधियो मे विचित्र आकार वाले मृण्पात्र थे

जिनमें से कुछ अच्छी दशा में थे। तामलुक से उपलब्ध नमूनो की कोई निश्चित तिथि बताना कठिन है, किंतु निश्चय ही ये मिस्र एवं भारतीय बंदरगाह ताम्रलिप्ति के बीच व्यापारिक संबंधों के साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं (जे० पीएच० फोगेल, नोट्स ऑन टॉलिमी, बु० स्कू० ओ० ऐं० अ० स्ट०, XIV, भाग, I, पृ० 82)।

ताराचण्डी—यह दक्षिण बिहार के शाहाबाद जिले मे सहसराम (सासाराम) के निकट स्थित है। यहाँ पर शिला पर उत्कीर्ण एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है (एपि० इं०, V, परिशिष्ट, पृ० 22)।

तेत्रावान—यह गाँव बिहार तहसील के दक्षिण मे, गिरियेक से 10 मील पूर्वोत्तर मे और बिहार से 6 मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है। इसमे प्राचीन बौद्ध-भवनो के स्थानों को लक्षित करने वाले कई टीले है। यहाँ का विहार महत्त्वपूर्ण था (आर्कि० स० इ०, रिपोर्ट्स, जिल्द, XI, ज० ए० सो० ब०, जिल्द, XLI, 1872)।

तेजपुर—यह असम के दरंग जिले का मुख्यावास है जहाँ से वल्लभदेव के पाँच ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, V. 181)।

तीरभुक्ति (तिरहुत)—यह उत्तर मे हिमालय से, दक्षिण मे गगा, पश्चिम मे गंडक और पूर्व मे कोसी नदी से घिरा हुआ था। इसमे चपारन, मुजफ्फरपुर और दरभंगा के आधुनिक जिले तथा नेपाल तराई की पट्टी समिलित थे। परपरा के अनुसार तीरभुक्ति का अर्थ उस भूमि से है जिसमे तीन महान् यज्ञाग्नियाँ सपादित की गयी थी (देवीपुराण, अध्याय, 64)। कनिंघम (आर्कि० सं० इ०, रिपोर्ट्स, जिल्द, XVI) की धारणा है कि छोटी गंडक और बाघमती नदियों मे स्थित क्षेत्र तीरभुक्ति मे समिलित थे (ओ 'मैल्ली, बगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, दरभंगा, पृ० 157-158, ओ 'मैल्ली, बंगाल डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पृ० 159-160, मुजफ्फरपुर)।

तोसड़ड—इसे पटना ई० एस० ए० (भूतपूर्व रियासत, उडीसा मे) में तोसरा गाँव से समीकृत किया जा सकता है। कुछ लोग इसे अरंग के दक्षिण-पूर्व में लगभग 30 मील दूर डुमरपल्ली के निकट तुसदा से समीकृत करते हैं (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, 20)।

त्रिस्रोता—कालिकापुराण (अध्याय, 78, 43; तुलनीय, 78, 60) में इस नदी का वर्णन है जो इसमे स्नान करने वाले व्यक्ति की मनोकामना पूर्ण करती है।

त्रिवेणी—इसे मुक्तवेणी भी कहा जाता है (बृहत् धर्म पुराण, पूर्व खण्ड, अध्याय, 6)। यह वर्तमान् बदेल जक्शन स्टेशन से 5 मील दूर है। भागीरथी और

सरस्वती के सगम पर स्थित यह हिंदुओ का एक तीर्थस्नान है। यह एक प्राचीन स्थान है क्योंकि इसका वर्णन धोयी के पवनदूत (श्लोक, 33)। मे है। कालिदास ने अपने रघुवंश (XIII. 54 और आगे) मे इस नदी का उल्लेख किया है। मुस्लिम इतिहासकारों ने इसे तिरपाणि या फिरोजाबाद कहा है। मुसलमान काल में यह एक महत्त्वपूर्ण नगर एवं बदरगाह था। किसी समय यह सस्कृत विद्या का केंद्र था। मध्ययुगीन बगाली कवि मुकुदराम ने इसका वर्णन एक पुण्यस्थल के रूप मे किया है। यहाँ पर सप्तग्राम के विजेता जफर खाँ का मकबरा है जो एक हिंदू-मदिर के ऊपर बनाया गया था जिसमे महाकाव्यो के कुछ दृश्य उत्कीर्ण थे (इट्रोड्यूसिंग इडिया, भाग, I, 75-76)।

उबेन—वैशाली के पूर्व मे स्थित यह एक चैत्य या मदिर था (दीघ, II, 102-103, 118)।

उदुंबरपुर—यह मगध जनपद मे एक नगर था जिसका वर्णन मञ्जु-श्रीमूल-कल्प मे हुआ है (गणपति शास्त्री सस्करण, पृ० 633—मागधम् जनपदम् प्राप्य पुरे उदुबराह्वये)।

उक्काचेला—यह वज्जि जनपद मे गगा नदी के तट पर स्थित था। (मज्झिम निकाय, I, पृ० 225-27)। अपने दो प्रमुख शिष्यो, सारिपुत्त एव मोग्गलान की मृत्यु के थोडे ही समय बाद, तथागत भिक्षुओं की एक बडी सख्या के साथ यहाँ रुके थे (सयुत्त निकाय, V, पृ० 163)।

उपतिस्सगाम—यह गाँव राजगृह के समीप था (धम्मपद कामेंट्री, I, 88)।

उप्पलिका—यह गाँव कौशाम्बी-अष्टगच्छखण्डल से सबधित था जो पौण्ड्रवर्धनभुक्ति के अध·पट्टन-मण्डल मे था (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शस ऑव बगाल, जिल्द, III, पृ० 15 और आगे)।

उरेन—यह गाँव मुगेर तहसील मे कजरा रेलवे स्टेशन से तीन मील पश्चिम में स्थित है। यहाँ पर कई बौद्ध अवशेष है, जिनका कर्नल वैड्डेल ने सर्वप्रथम पता लगाया था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, ज० ए० सो० बं०, जिल्द, I, 1892 मे वैड्डल का लेख, 'डिस्कवरी ऑव बुद्धिस्ट रिमेस ऐट माउट उरेन इन मुगेर (मुगेर) डिस्ट्रिक्ट, ओ, 'मैल्ली कृत, बिहार ऐड उडीसा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स, पृ० 263-67)।

ऊत्तिविषय—इसे क्योझर (जो पहले एक रियासत थी) मे ऊत्ति नामक एक गाँव से समीकृत किया जा सकता है जो वैतरणी नदी के उत्तरी तट पर खिचिंग के पश्चिमोत्तर में लगभग 12 मील दूर पर स्थित है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939)।

उरुवेला (उरुविल्व)—यह मगध में था। बोधिसत्त्व ने सन्यासी जीवन ग्रहण करने के पश्चात् ध्यान एवं सबोधि प्राप्ति के लिए इस स्थान को सबसे अधिक उपयुक्त स्थान चुना था (जातक, I, 56)। बोधि प्राप्त करने के ठीक पश्चात् बुद्ध नेरञ्जना नदी के तट पर अजपाल वटवृक्ष के नीचे उरुवेला मे रहते थे (सयुत्त, I, 103 और आगे; 122, V, 167, 185)। यहाँ पर उनसे कुछ वयोवृद्ध ब्राह्मण मिले थे, और उनके साथ उन्होने वृद्धो का आदर करने के विषय में विवाद किया था (अगुत्तर, II, 20 और आगे)। इसिपतन मे अपने प्रथम चालीस दिन व्यतीत करके बुद्ध पुन उरुवेला आये थे (जातक, I ,86)। उरुवेला आते समय उन्होने कप्पासिय नामक एक उद्यान मे तीन भद्दवग्गिय राजकुमारो का धर्म-परिवर्तन किया था। उरुवेला पहुँच कर उन्होने तीन-जटिल बधुओ को उनके अनुगामियो सहित गयासीस मे धर्म-परिवर्तित किया था (जातक, I, 82; IV, 180)। राजगृह और उरुवेला के मध्य आराल कालाम एवं उद्र रामपुत्र नामक दो व्यक्ति रहते थे, जिन्होने योग मे शिष्यो को प्रशिक्षण देने के लिये विद्यालय खोले थे (मज्झिम, I, 163 और आगे, जातक, I, 66 और आगे; ललितविस्तर, 243 और आगे; महावस्तु, II, 118; III, 322; बुद्धचरित, VI, 54, वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, 141)। बुद्ध यहाँ पर आये थे और यहाँ पर उन्होने सुन्दर वृक्ष, मनोहर झीलें, समतल मैदान और नैरञ्जना नदी के निर्मल जल को देखा था (महावस्तु, II, 123)। उरुवेला या उरुवेल को बोध-गया के समीप उरेल नामक आधुनिक गाँव से समीकृत किया जा सकता है (द्रष्टव्य, आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1908-9, पृ० 139 और आगे)।

वदथिक—यह नागार्जुनि पहाडियो मे स्थित एक गुहा है जिसमे दशरथ के अभिलेख है।

बहियका—यह गया के समीप नागार्जुनि पहाडियो मे स्थित एक गुहा है जिसमे दशरथ के अभिलेख है।

वैभारगिरि—(पालि, वेभार, सस्कृत व्यवहार)—यह मगध मे है। यह पहाडियो से घिरे हुये गिरिव्रज नामक प्राचीन नगर को परिवेष्टित करनेवाली पाँच पहाड़ियों मे से एक है (तुलनीय, विमानवत्थु कामेट्री, पृ० 82)। यह दक्षिण और पश्चिम की ओर फैली हुयी है, जिससे अतत सोणगिरि के साथ राजगिरि का पश्चिमी प्रवेशद्वार बनता है। जैन ग्रंथ, विविधतीर्थकल्प मे वैभारगिरि को एक पवित्र पहाड़ी के रूप मे बतलाया गया है जिसमे गरम और शीतल जल-कुडो (तप्तशीताम्बुकुण्डम्) के निर्माण की सभावनाएँ व्यक्त की जाती हैं। बुद्धघोष ने तपोदा नदी के उद्गम-स्थल तप्त-जलकुडो को बेभार पर्वत से सबद्ध

बतलाया है। यह वैहार पर्वत ही है, महाभारत मे जिसका वर्णन विपुलशैल के रूप में हुआ है। राजगृह नगर, त्रिकूट, खण्डिक और अन्य प्रदीप्त शिखरो के सहित वैभारगिरि की घाटी में देदीप्यमान था। इस पहाड़ी मे कुछ अँधेरी गुफाएँ भी थी। इस पहाड़ी के निकट सरस्वती तथा अन्य सुखद जलवाली सरिताएँ थी जिनमें रोगों को दूर करने की शक्ति थी। इस पहाडी पर बौद्धो ने विहार और जैनियों ने इस पर निर्मित मदिरों मे तीर्थकरो की प्रतिमाएँ अधिष्ठित की थी। वेभार एव पाण्डव दो ऐसी पहाड़ियाँ प्रतीत होती है, जो गिरिव्रज के उत्तर की ओर स्थित थी और अपनी शैलगुहाओ के लिए विख्यात् थी (थेरगाथा, XLI, श्लोक, 1)। वैभ्राज निश्चय ही राजगृह मे स्थित वैभारगिरि है।

बहुत बाद की अनुश्रुतियो पर विश्वास करके जैनियो ने राजगृह को परिवेष्टित करने वाली सात पहाडियो की स्थिति इस प्रकार बतलायी है. यदि कोई व्यक्ति उत्तर से राजगृह मे प्रवेश करे तो दाहिनी ओर स्थित पहाडी वैभारगिरि है; इसके बाँई ओर विपुलगिरि; विपुलगिरि के समकोण पर वैभारगिरि के समानांतर दक्षिण की ओर नाले वाली पहाड़ी रत्नगिरि है, रत्नगिरि का पूर्वी प्रसार चठागिरि और चठागिरि के बाद स्थित पहाडी शैलगिरि है। चठागिरि के सामने उदयगिरि और रत्नगिरि के दक्षिण और उदयगिरि के पश्चिम में स्थित पहाड़ी सोणगिरि है (लाहा, राजगृह इन ऐश्येंट लिटरेचर, मे० आर्क्० स० इ०, सं० 68, पृ० 3)।

वैशाली—विशाल नगरी वैशाली लिच्छवियो की राजधानी थी जो छठवीं शताब्दी ई० पू० मे पूर्वी भारत के एक महान् एव शक्तिशाली जन थे। भारतीय इतिहास में यह लिच्छवि राजाओ की राजधानी तथा महान् एव शक्तिशाली वज्जिसघ के मुख्यावास के रूप मे विश्रुत है। कनिघम ने इस विशाल नगरी को तिरहुत मे मुजफ्फरपुर जिले मे स्थित बसाढ नामक वर्तमान् गाँव से समीकृत किया है जो प्राचीन काल मे वैशाली की स्थिति को लक्षित करता है (आर्क्० सर्वे रिपोर्ट, जिल्द, I, पृ० 55-56 और जिल्द, XVI, पृ० 6)। विवियेन डी सेंट मार्टिन उनसे सहमत हैं। इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये कनिंघम द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य अधिक पूर्णता एव स्पष्टता के साथ नही रखे गये थे। रिज़ डेविड्स का कथन है कि वैशाली तिरहुत में ही कही पर स्थित थी (बुद्धिस्ट इंडिया, पृ० 41)। डा० डब्ल्यू हो ने वैशाली को छपरा या सारन जिले मे चेरांद से समीकृत करने की चेष्टा की है (ज० ए० सो० ब०, 1900, जिल्द, LXIX, भाग, I, पृ० 78-80, 83)। वी० ए० स्मिथ ने अपने वैशाली-विषयक निबंध में इस समीकरण को पूर्णतः अमान्य बतलाया है (ज० रा० ए० सो०, 1902, पृ० 267, नोट, 3)।

वह यह सिद्ध करने में सफल रहे है कि आधुनिक बसाढ़ का वैशाली से कनिघम द्वारा प्रस्तावित समीकरण असदिग्ध है। यह समीकरण और निश्चयात्मक रूप से डा० टी० ब्लाख द्वारा 1903-04 मे इस स्थान पर किये गये पुरातत्वीय उत्खननों से सिद्ध होता है। ब्लाख ने राजा विशाल का गढ़ नामक एक टीले को खोदा था और परीक्षणार्थ केवल आठ खत्तियाँ खोदी गयी थी। यहाँ पर तीन स्पष्ट परतें प्राप्त हुयी थी, जिनमे सबसे ऊपरी परत इस स्थान के मुसलमानयुगीन आवास की है, दूसरी परत, जो धरातल से लगभग 5 फीट गहरी है, गुप्त सम्राटो के काल की तथा तीसरी और अधिक गहरी है जो प्राचीन युग की किसी अनिश्चित तिथि की है (आर्क् ० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1903-04, पृ० 74)। दूसरे परत या स्तर की उपलब्धियां, विशेषत. एक छोटे कक्ष से उपलब्ध मिट्टी की सात सौ मुहरो का एक ढेर मूल्यवान है जो स्पष्टत पत्रो या अन्य साहित्यिक आलेखो के ऊपर लगायी जाती थी। ये अशतः अधिकारियो और अशत. अशासकीय व्यक्तियो —साधारणत. व्यापारियो या श्रेष्ठियो से सबधित थी, किंतु एक नमूने पर दोनों ओर त्रिशूलसहित लिग की आकृति है और इस पर आम्राटकेश्वर विरुद अकित है जो स्पष्टत किसी मदिर से सबधित थी (आर्क् ० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1903-4, पृ० 74)।

कतिपय मुहरो पर गुप्त-राजाओ, रानियो एव राज-कुमारों के नाम और पुरालिपि-साक्ष्य यह स्पष्टत प्रदर्शित करते है कि ये चौथी और पाँचवी शताब्दी की थी, जब गुप्त सम्राट् राज्य कर रहे थे (वही, पृ० 110)। कुछ मुहरो से व्यक्त होता है कि उस प्राचीन काल में भी इस प्रात को तीरभुक्ति की सज्ञा दी गयी थी, और कुछ मे स्वय नगर का नाम वैशाली लिखा हुआ है। एक गोलाकार मृण्मुहर पर पुष्प-समूह के बीच मे दो परिचारको से सेवित एक खड़ी हुयी नारी-प्रतिमा अकित है जिसके नीचे दो पडी पक्तियो में यह लिखा हुआ है, "वैशाली के · गृहस्थो की मुहर" (वही, पृ० 110)। इनसे वैशाली से इस स्थान की पहचान सिद्ध होती है और अब इस निष्कर्ष पर सदेह करने का कोई आधार नही प्रतीत होता है। यह दयनीय है कि अर्थाभाव के कारण पुरातत्व विभाग ने इस स्थान का उत्खनन बद कर दिया है।

क्षेत्र के विशाल या लंबा-चौडा होने के कारण इसका वैशाली नाम पडा है। रामायण (अध्याय, 47, श्लोक, 11, 12) के अनुसार इसकी स्थापना इक्ष्वाकु और अलम्बुषा नामक एक दिव्य-अप्सरा के एक पुत्र ने की थी। उसके नाम विशाल के आधार पर इस शहर का नाम विशाला पड़ा। विष्णुपुराण (विल्सन सस्करण, भाग, III, पृ० 246) मे कहा गया है कि अलम्बुषा द्वारा उत्पन्न तृणबिन्दु का विशाल नामक एक पुत्र था, जिसने इस नगर की स्थापना की थी।

पाँचवीं शताब्दी ई० मे चीनी तीर्थयात्री फाह्यान् वैशाली आया था। उसके अनुसार इसके उत्तर मे एक विशाल वन था जिसमे दो गलियारे वाला एक बिहार था जहाँ पर बुद्ध रहते थे और आनन्द के शरीरार्ध के ऊपर निर्मित एक स्तूप था (लेग्गे, फाह्यान्, पृ० 72)। युवान-च्वाङ् नामक एक अन्य चीनी तीर्थयात्री जो सातवीं शताब्दी ई० में यहाँ आया था, ने बतलाया है कि वशाली के प्राचीन नगर की नीव की परिधि 60 या 70 ली थी और महल के नगर की परिधि 4 या 5 ली थी (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ् भाग, II, पृ० 63)। इस नगर की परिधि 5000 ली से अधिक थी और यह आमो, केलो तथा अन्य फलो से युक्त एक अत्यत उपजाऊ क्षेत्र था। यहाँ के लोग ईमानदार, सत्कार्यों मे अभिरुचि रखने वाले और ज्ञान का समादर करने वाले थे। विश्वासो मे वे धर्मी एव विधर्मी दोनो ही थे (वही, II, पृ० 63)। तिब्बती विवरण (दुल्व, III, पृ० 80) के अनुसार वैशाली मे तीन विषय (जिले) थे। पहले जिले मे सुनहली मीनारो वाले 7000 घर, बीच के जिले मे रजत मीनारो वाले 14000 घर और तीसरे जिले में ताम्र मीनारो वाले 21000 घर थे। इनमे उच्च, मध्य एवं निम्नवर्ग के लोग अपनी मर्यादा के अनुसार रहते थे (राकहिल, लाइफ ऑव द बुद्ध, पृ० 62)। बुद्ध के काल मे यह नगर तीन प्राचीरों से परिवृत था जो एक दूसरे से एक गावुत (गव्यूति) की दूरी पर थी और तीन स्थानो पर पहरे की मीनारो और इमारतो सहित फाटक बने हुये थे (जातक, I, 504)।

वैशाली एक वैभवपूर्ण, समृद्धिशाली, जनसकुल और प्रचुर खाद्य-पदार्थो वाला नगर था। यहाँ पर अनेक ऊँचे भवन, कँगूरेदार इमारते प्रमद-वन और पुष्कर थे (विनय टेक्स्ट्स, सँ० बु० ई०, भाग, III, पृ० 171, तुलनीय, ललित-विस्तर, लेफमान सस्करण, अध्याय, III, पृ० 21)। यह नगर जैन एव बौद्ध दोनो ही धर्मो के प्रारभिक इतिहास के साथ घनिष्ठ रूप से सबधित है। इसके साथ पूर्वोत्तर भारत मे 500 ई० पू० मे विकसित होने वाले दो महान् धर्मो के प्रवर्त्तकों की पुण्य-स्मृतियाँ जुड़ी हुयी है।

जैन धर्म के प्रवर्त्तक महावीर को वैशाली अपना ही नागरिक मानती है। इसीलिए उन्हे वेसालिये या वैशालिक—वैशाली नगर का निवासी कहा जाता था (जैन सूत्राज, सँ० बु० ई०, भाग, I, इण्ट्रोडक्शन, XI,)। वैशाली के उपकण्ठ मे स्थित कुण्डग्राम वास्तव में उनका जन्म स्थान था (वही, XXII, पृ० XXI)। अपने तपस्वी जीवन मे भी उन्होने अपने जन्म-स्थान की उपेक्षा नही की और उन्होने कोई बारह वस्सा काल वैशाली में व्यतीत किये थे (जैकोबी, जैन सूत्राज, भाग, I, कल्पसूत्र, 122वाँ खड)।

वैशाली से बुद्ध का सबध कुछ कम निकट और घनिष्ट नही है। उनके श्रमण-जीवन के प्रारभ मे उनके चरण-रज से इस नगर की श्रीवृद्धि हुयी थी और उनके अनेक अमर प्रवचन यही पर दिये गये थे (अगुत्तर, पा० टे० सो०, II, 190-94; 200-02; संयुत्त, V, 389-90; अगुत्तर, III, 75-78; 167-68, V 133; थेरीगाथा, V, 270, मज्झिम, I, 227-37)।

बुद्ध के निर्वाण प्राप्त कर लेने के पश्चात् वैशाली के प्रति संपूर्ण बौद्ध संघ का ध्यान और अवधान आकर्षित हुआ था। सपूर्ण संघो के प्रतिनिधि यहाँ पर मिले थे और उन्होने अपने सुखकामी भिक्षुओ के आचरण की भर्त्सना की थी। यह बौद्ध-सघ की द्वितीय सगीति थी (कर्न, मैनुअल ऑव इडियन बुद्धिज्म, पृ० 103-109)। वैशाली के विषय मे विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, सम क्षत्रिय ट्राइब्स ऑव ऐश्येंट इडिया, अध्याय, I, लाहा, ऐश्येंट इडियन ट्राइब्स, पृ० 294 और आगे, लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, III)।

वैतरणी—यह भारत की पवित्र नदियो मे से एक है जो सिहभूम जिले के दक्षिणी भाग मे स्थित पहाडियो और उस स्थान से थोडा आगे जहाँ यह उडीसा मे प्रविष्ट होती है, से निकलती है (विस्तार के लिए द्रष्टव्य लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 43)।

वक्कतक—यह आघुनिक बक्ता प्रतीत होता है जो प० बगाल के बर्दवान मडल मे दामोदर नदी के तट पर गोहग्राम के ठीक पूर्व मे स्थित है। वर्धमान-भुक्ति के एक भाग वक्कटविथी मे दामोदर नदी के उत्तरी तट पर स्थित भूभाग की एक पट्टी समिल्लित थी (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 158)।

वक—यह राजगृह के समीप एक पर्वत था। इसका प्राचीन नाम वेपुल्ल था (द्रष्टव्य, एनल्स ऑव द भडारकर ओरियंटल रिसर्च इस्टीट्यूट, VIII, 164; तुलनीय, संयुत्त, II, 191-92)। इसका वर्णन जातक (VI. 491, 513, 520, 524-25, 580, 592) मे हुआ है।

वंशवाटी—यह हुगली जिले मे है जहाँ हंसेश्वरी का एक प्राचीन मदिर है। वासुदेव का मदिर भी जिसकी दीवालो पर पौराणिक दृश्य है, एक प्राचीन मंदिर है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 44)।

वंग—यह बगाल का प्राचीन नाम है (द्रष्टव्य, प्राकृत इस्क्रिप्शंस फ्रॉम ए बुद्धिस्ट साइट ऐट नागार्जुनिकोण्ड)। वग का वर्णन जो मुख्य बगाल का अभिधान है, ऐतरेय आरण्यक (II. 1. 1; तुलनीय, कीथ, ऐतरेय आरण्यक, 200) और बौधायन धर्मसूत्र (I, 1 14) मे हुआ है। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4. 1. 70) में वग का उल्लेख किया है। भागवतपुराण (IX. 23, 5) और

काव्यमीमांसा (अध्याय, 3) मे एक देश के रूप में इसका वर्णन है। योगिनी-तंत्र (2.2, 119) में वग का वर्णन है। ग्यारहवी शती ई० के राजेन्द्र चोल के तिरुमलाई शिलालेख और चेदि कर्णदेव के गोहरवा अभिपत्र मे बंग देश को बंगालदेशम कहा गया है, जिसे तेरहवी शताब्दी ई० मे बंगाल और मुसलमान युग मे बगला कहा जाने लगा था। तिरुमलाई अभिलेख मे वग को न केवल दक्षिण राढा (तक्कन लाढ़म) से ही वरन् उत्तर राढ़ा (उत्तिल लाढ़म) से भी पृथक बतलाया गया है। सिहली ग्रंथों मे वंग राज्य की यही स्थिति बतलायी गयी है जिसके अनुसार लाल्ह बग एव कलिग के बीच मे स्थित था। वग का प्रथम अभिलेखीय वर्णन सभवत. मैहरोली के लौह-स्तभ लेख मे किया गया है (का० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 141 और आगे) जहाँ पर 'चन्द्र नामक एक प्रबल राजा ने वग देश मे युद्ध मे अपने सीने से शत्रुओं को विमुख किया था जो सगठित होकर उसका विरोध करने आये थे और युद्ध करते करते जिसने सिन्धु (Indus) के सात मुहानों को पार करके वाल्हीको पर विजय प्राप्त की थी।' हरप्रसाद, शास्त्री ने शक्तिशाली राजा चन्द्र को प्रयाग स्तभलेख मे वर्णित राजा चन्द्रवर्मन् से समीकृत किया है जो पोखराणा का उसी नाम का एक राजा था। पोखराणा को उन्होने राजस्थान मे मारवाड मे स्थित बतलाया है। वग देशो का उल्लेख महाकूट स्तंभ-लेख मे भी है (एपि० इ०, जिल्द, V) जिससे हमे ज्ञात होता है कि छठवी शताब्दी ई० में चालुक्यवशीय कीर्त्तिवर्मन् ने वग, अङ्ग, और मगध, जिसे त्रिकलिंग कहा जाता था, के राजाओ पर विजय प्राप्त की थी। पृथ्वीसेन के पीठपुरम अभिपत्र मे (1108 ई०) वगदेश के नरेश को राजा मल्ल द्वारा पराजित बतलाया गया है। वगदेश का वर्णन कामरूप के वैद्यदेव के दान ताम्र-पत्र मे भी हुआ है जिसने दक्षिण-वग मे विजय प्राप्त की थी (एपि० इ०, जिल्द, II, पृ० 335)। इसका वर्णन केशवसेन के एदिलपुर अभिपत्र, विश्वरूपसेन के मदनपाडा और साहित्य परिषद् अभिपत्रों मे भी किया गया है (इस्क्रिप्शस ऑव बगाल, भाग, III, पृ० 119, 133, 141)। श्रीचन्द्रदेव के रामपाल-अभिपत्र (एपि० इ०, जिल्द, XII, पृ० 136,) से हमे यह ज्ञात होता है कि किसी चन्द्रवश ने समतट-सहित सपूर्ण वग पर अधिकार कर लिया था। लक्ष्मीकर्ण के गोहरवा-दानपत्र के अनुसार लक्ष्मणराज ने बग, पाण्ड्य, लाट, गुर्जर और काश्मीर के राजाओं पर विजय प्राप्त की थी (एपि० इ०, XI, 142)। साहित्यिक उल्लेखो के लिये द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइव्स इन ऐश्येट इडिया, अध्याय, LI.

अल्हणदेवी के भेड़ाघाट अभिलेख से हमे यह ज्ञात होता है कि गांगेयदेव

के पुत्र एव उत्तराधिकारी चालुक्य-नरेश कर्ण ने वग या पूर्वी बंगाल के राजा पर विजय प्राप्त की थी (एपि० इ०, XXIV, भाग, III, जुलाई, 1937)।

पूर्व बगाल के वैष्णव वर्मन् वश के राजा भोजवर्मन् के बेलाव ताम्रपत्र के साक्ष्य के आधार पर चूलवश मे वर्णित विजयबाहु प्रथम की द्वितीय रानी त्रिलोक-सुदरी को त्रैलोक्यसुदरी से समीकृत करने का प्रयत्न हाल मे ही किया गया है, जिसकी प्रशसा बेलाव अभिलेख मे भोजवर्मन् के निकटतम पूर्वज और पिता, राजा सामलवर्मन् की पुत्री के रूप मे की गयी है।

यह ठीक ही बताया गया है कि बेलाव ताम्रपत्र मे पूर्वी बगाल के वर्मनो ने सिहपुर के राजवश से अपनी उत्पत्ति बतलायी है और भोजवर्मन् ने करुणापूर्ण शब्दो मे राक्षसो द्वारा किये गये बैरपूर्ण कृत्यो से तत्कालीन सिहली नरेश के लिये उत्पन्न कठिनाइयो के लिये चिता व्यक्त की है। यदि थोडी देर के लिए भोजवर्मन् और विजयबाहु प्रथम के मध्य व्यक्तिगत सबध को एक ऐतिहासिक तथ्य मान लिया जाय तब यह समझना कि क्यो भोजवर्मन् ने लका के राजा के प्रति चिता व्यक्त की थी, सरल हो जाता है। पूर्वी बगाल के वर्मन् वश के साथ विजयबाहु प्रथम का वैवाहिक सबध इस तथ्य से भी व्यक्त होता है कि विजयबाहु और उसके उत्तराधिकारी सिहपुर के राजवश से अपनी उत्पत्ति बताने मे अपने को गौरवान्वित अनुभव करते थे। सिहपुर सभवत कलिग मे स्थित एक स्थान था (ज० रा० ए० सो०, 1903, पृ० 518, दे० रा० भडारकर वाल्यूम, पृ० 375)। विश्वरूप-सेन के एक दान ताम्रपत्र के अनुसार नाव्य वग का एक भाग था (वग नाव्ये)।

उत्तरी बगाल पर किसी बगाल-नरेश की सेना ने आक्रमण किया था जिसके क्रम मे सोमपुर विहार (आधुनिक पहाडपुर) मे स्थित बौद्ध शिक्षक करुणाश्रीमित्र के घर मे आग लगा दी गयी थी और वह जल मरे थे (एपि० इ०, XXI, 97-131)। विपुलश्रीमित्र के नालदा-अभिलेख के अनुसार (जिसकी तिथि बारहवी शताब्दी ई० का मध्य है), करुणाश्रीमित्र, विपुलश्रीमित्र से शिक्षको की दो पीढी बाद मे हुआ था।

बंगाल—राजेन्द्र चोल प्रथम के तिरुमलाई अभिलेख और डाकार्णव नामक महायान ग्रथ मे वर्णित यह सभवतः पूर्वी बगाल है (एपि० इ०, XXI, भाग, III; वग भी द्रष्टव्य)।

बर्धमानभुक्ति—मल्लसारुल ताम्रपत्र मे वर्धमानभुक्ति का उल्लेख है और इसमे पाँच महायज्ञो को संपादित करने के लिये किसी ब्राह्मण को दिये गये भूमिदान का भी उल्लेख है। यह अभिलेख बंगाल के बर्दवान जिले में स्थित

29

गलसी के निकट एक गाँव मे मिला था। नैहटि ताम्रपत्र मे वर्णित वर्धमानभुक्ति कलकत्ता के समीप कम से कम गगा के पश्चिमी तट तक फैली हुयी थी। नवीं शताब्दी ई० के कान्तिदेव के चटगाँव अभिपत्र मे वर्धमानपुर का वर्णन है। राजा नयपालदेव के इर्दै दान ताम्रपत्र जिसमे वर्धमानभुक्ति के दण्डभूतिमण्डल मे किसी ब्राह्मण को दी गई कुछ भूमि का आलेख है, का प्रचलन प्रियंगु की राजधानी जिसकी स्थापना राजा राज्यपाल ने की थी, से की गई थी। वर्धमानभुक्ति उत्तर-राढ मे और प्रियगु की राजधानी बगाल मे दक्षिण-राढ मे है (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, जनवरी, 1937)। वर्धमान या वर्धमानभुक्ति की पहचान आधुनिक बर्दवान से की जाती है।

वट्टम्बी—यह आवृत्ति बाश्चस का भाग है जो पौण्ड्रवर्धनभुक्ति मे स्थित है (एपि० इ०, XXVI, भाग, I)।

बाल्लहिट्ठ—यह एक प्रदत्त गाँव का नाम है जो वर्धमानभुक्ति के उत्तर-राढामण्डल से सबंधित स्वल्प दक्षिणविथी मे स्थित था। इसे बर्दवान जिले की उत्तरी सीमा नैहटि से लगभग 5 मील पश्चिम मे स्थित वर्तमान् बालुटिया से समीकृत किया जाता है (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिप्शस ऑव बगाल, भाग, III, बल्लालसेन का नैहटि ताम्रपत्र, पृ० 69 और आगे)।

वालुकाराम—कालाशोक के शासन काल मे वैशाली के बालुकाराम मे द्वितीय बौद्ध सगीति आयोजित की गयी थी (समन्तपासादिका, पृ० 33-34)।

वाणियगाम—इसे मुजफ्फरपुर मे बसाढ के निकट बनिया नामक एक गाँव मे समीकृत किया जाता है। यहाँ प्राय महावीर आया करते थे (आवश्यक निर्युक्ति, X. 496)।

बारहकोना—मोर के लगभग एक मील उत्तर मे और सैन्थिया रेलवे स्टेशन से $1\frac{1}{4}$ मील दूर पर सूरी मे आधुनिक बरकुण्ड से वारहकोना को समीकृत किया जाता है (लक्ष्मणसेन का शक्तिपुर ताम्रपत्र, एपि इ०, XXI, पृ० 124)।

वारकमण्डलविषय—राजा धर्मादित्य के फरीदपुर दान ताम्रपत्र मे वारकमण्डलविषय का उल्लेख है, जो पूर्वी बगाल मे फरीदपुर जिले की आधुनिक गोलन्दो एव गोपालगज नामक तहसील है।

वातसवन—यह एक पहाडी है, जिसे दक्षिण बिहार मे बठन से समीकृत किया गया है (आर्क० स० रि०, VIII, 46)।

बेभार—यह पहाड़ी मगध देश मे है। यह गिरिव्रज को परिवृत करने वाली पाँच पहाडियो मे से एक है (विमानवत्थु कामेन्ट्री, पृ० 82)। द्रष्टव्य, बैभार-गिरि)।

वेवथिका—गया के समीप नागार्जुनि पहाडियो मे स्थित यह एक गुहा है (ल्युडर्स की तालिका, संख्या, 956)।

वेदियक—कनिंघम ने इस पहाडी को गिरियेक से समीकृत किया है। इसमें इन्दसालगुहा नामक प्रसिद्ध गुहा है (दीघ, II, 263, सुमगलविलासिनी, III 697, वि० च० लाहा, इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन द अर्ली टेक्स्ट्स ऑव बुद्धिज्म ऐड जैनिज्म, पृ० 29)।

वेलुवन— (वेणुवन)—राजगृह मे स्थित यह एक मनोहर उद्यान था, जो बाँसो से घिरा हुआ था (सयुत्त, I, 52, सुत्तनिपात कामेट्री, पृ० 419; दिव्यावदान, पृ० 143, 554)। यह अठारह हाथ ऊँची एक दीवाल से सुरक्षित था और जिसमे सुदर फाटक एव लैपिस लाजुली से अलंकृत मीनारें बनी हुयी थी (समन्तपासादिका, III, 575)। इस स्थल का पूरा नाम वेलुवन कलन्दकनिवाप था। इस नाम के द्वितीय पद से यह प्रकट होता है कि यहाँ गिलहरियाँ स्वच्छता-पूर्वक विचरण करती थीं और उनके चुगने के लिये यह एक सुदर स्थान था।[1] यह स्थान राजगृह नगर के प्रातर के बाहर—न तो इसके बहुत समीप और न बहुत दूर पर था। चीनी तीर्थयात्रियो ने इस वन की विभिन्न स्थितियाँ बतलायी है। फाह्यान् और युवान-च्वाङ् दोनो के सम्मिलित विवरण के आधार पर यह आन्तरिक नगर के उत्तरी फाटक से एक 'ली' की दूरी पर श्मशान से आधे मील दक्षिण, वैभार पर्वत की पिप्पलगुहा से 300 कदम पूर्वोत्तर और कलन्द सरोवर से 200 कदम दक्षिण मे स्थित था।

वेपुल्ल—यह मगध मे एक पर्वत है। बहुत प्राचीन काल मे इसका नाम पाचीनवस था जिसे बाद मे बदल कर वकक कर दिया गया था। इसके बाद इसका नाम सुपस्स पडा और इसके भी बाद इसे वेपुल्ल कहा जाने लगा (सयुत्त, II, 190 और आगे) और इसके निवासियो को मागध कहा जाने लगा (तुलनीय, वि० च० लाहा, इडिया ऐज डिस्क्राइब्ड इन द अर्ली टेक्स्ट्स ऑव बुद्धिज्म ऐड जैनिज्म, पृ० 29-30)। यह राजगृह को परिवृत करने वाली पाँच पहाडियों मे से एक थी। राजा वेस्सन्तर को इस पहाडी पर निष्कासित कर दिया गया था। इसके शिखर तक पहुँचने मे उन्हे तीन दिन लगे थे (विनयपिटक, II, 191-192)। विपुल पर्वत थोडी दूर तक दक्षिण-पूर्व मे बिहारशरीफ-नवादा रोड पर स्थित गिरियेक नामक गाँव तक फैली हुयी उत्तरी पर्वतमाला तक फैला हुआ है। युवान-च्वाङ ने इस पर्वत को निश्चयपूर्वक पि-पु-लो (Pi-pu-lo) कहा है जो शब्दशः विपुल

[1] समन्तपासादिका, III, 575; पपंचसूदनी, II, पृ० 134.

के समान है। उसने बताया है कि गिरिब्रज के उत्तरी फाटक के पश्चिममें विपुल पर्वत था। उसने आगे और बतलाया है कि दक्षिण-पश्चिमी ढाल के उत्तर में किसी समय गर्म जल के पाँच सौ कुड थे, जिनमे से उसके समय तक कई बचे हुये थे जिनमे कुछ गर्म एव कुछ ठडे जल के थे। इन कुडो का स्रोत अनवतप्त झील थी। यहाँ का जल निर्मल था और यहाँ पर विभिन्न क्षेत्रो से लोग इस जल में स्नान करने के लिये आया करते थे जो पुराने रोगो से पीडित जनो के लिए लाभकर था। विपुल पर्वत पर एक स्तूप था जहाँ पर एक बार बुद्ध ने प्रवचन दिया था। इस पर्वत पर प्राय दिगम्बर जैनी आया करते थे (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 153-54)। राजगृह के पर्वतो मे विपुल पर्वत को सर्वश्रेष्ठ बतलाया गया है (सयुत्त, I, 67)। यह गिज्झकूट के उत्तर मे और मगध की पर्वत मेखला के बीच मे स्थित था।

बेठदीप—युवान-च्वाङ् ने द्रोणस्तूप नामक स्थान को जो वेठद्वीप ही है, महासागर से 100 ली दक्षिण-पूर्व में स्थित बतलाया है जिसे आरा के पश्चिम मे छ. मील दूर पर स्थित मसार नामक गॉव से समीकृत किया गया है। कुछ लोगो ने इसे कसिया से (ए० ज्यॉ० इ०, 1924, 714) और बिहार के चपारन जिले मे बेतिया से समीकृत किया है (ज० रा० ए० सो०, 1906, 900)। वेठदीप, जो ब्राह्मण द्रोण का घर था, अल्लकप्प से अधिक दूर नही था (बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 25)।

वत्रगर्त्ता—यह वक्कट्टोकवीथी के अतर्गत् स्थित था जो वर्धमानभुक्ति के एक भाग का प्रतिरूप प्रतीत होता है (प० बगाल का आधुनिक बर्दवान मडल, एपि० इ०, XXIII, भाग, V)।

विड्डारशासन—यह एक गाँव था, गगा जिसकी पूर्वी सीमा थी। इसे हावड़ा जिले मे आधुनिक बेतड से समीकृत किया जा सकता है।

विक्रमपुर—यह ढाका (बागला देश) की मुशीगज तहसील मे स्थित है। इसका एक भाग फरीदपुर जिले (बांगला देश) मे सम्मिलित है। विक्रमपुर नाम साधारणतया उस भूभाग को दिया जाता है, जो उत्तर मे धलेश्वरी, दक्षिण मे इदिलपुर परगना, पूरब मे मेघना और पश्चिम में पद्म द्वारा घिरा हुआ है। इस स्थान का नाम विक्रम नामक एक राजा के आधार पर पड़ा है जिसने कुछ समय तक यहाँ शासन किया था। विक्रमपुर की प्राचीन राजधानी रामपाल, मुशीगज से तीन मील पश्चिम मे स्थित थी। श्रीविक्रमपुर नाम बल्लालसेन के सीताहाटी ताम्रपत्र मे आया है। यहाँ पर चन्द्रवशीय श्री चन्द्रदेव का एक ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है। नालदा के प्रसिद्ध बौद्ध विश्वविद्यालय के प्रधानाचार्य, शीलभद्र का

जन्म-स्थल रामपाल कुछ समय तक बगाल के हिंदू राजाओं का पूर्वी मुख्यावास था। यहाँ पर बल्लालबाडी, अनेक प्राचीन सरोवर और पालयुगीन अनेक हिंदू और बौद्ध देवताओ के अवशेष उपलब्ध हुये है। रामपाल के दक्षिण-पश्चिमी कोने मे स्थित बज्रयोगिनी नामक गाँव, दसवी शती ई० के प्रसिद्ध बौद्ध-विद्वान दीपङ्कर श्रीज्ञान का जन्मस्थान था। श्रीचन्द्र के केदारपुर, केशवसेन के एडिलपुर, विजयसेन के बैरकपुर, लक्ष्मणसेन के अनुलिया और भोजवर्मन् के बेलाव ताम्रपत्रो मे विक्रमपुर का उल्लेख है, जिसका अब भी यही नाम है। केवल थोडे समय के लिये बर्मनों ने इस पर राज्य किया था। विजयसेन के बैरकपुर ताम्रपत्र से प्रकट होता है कि सभवत विक्रमपुर विजयसेन की एक राजधानी थी, जिसका वहाँ पर प्रायः स्थायी निवास-स्थान सा था। सेन राजाओ के प्राय सभी दानपत्र विक्रमपुर से प्रचलित किये गये थे (न० गो० मजूमदार, इस्क्रिशस आँव बगाल, भाग, III, पृ० 10 और आगे, 60 और आगे; इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, पृ० 81-82)।

विक्रमशिला––यह गॉव बिहार तहसील मे, बिहार से दस मील दक्षिण में स्थित है। यह अपने बौद्ध विहार के लिए विख्यात् है जो ग्यारहवी शताब्दी ई० मे विद्या का एक महान् केंद्र था। यह बिहार मुसलमानो की विजय तक अस्तित्व-शील था, जब कि इसे आक्राताओ ने जला दिया था। इस गाँव का आधुनिक नाम शिलाओ है जो विक्रमशिला का सक्षिप्त रूप है (आर्क० स० इ०, रिपोर्ट्स, भाग, VIII, ज० ए० सो० ब०, जिल्द, LX, भाग, I, 1891)। विक्रमशिला गगा के दाहिने तट पर एक चौडे मोड पर स्थित एक बौद्ध बिहार था। इसमे 8000 व्यक्तियो के एकत्रित होने भर को पर्याप्त स्थान था। इसमे अनेक मदिर एवं इमारते थी। पाथरघाटा की विकासशील उत्तुग पहाडी के शिखर पर एक बौद्ध बिहार के अवशेष है। यह पाथरघाटा प्राचीन बिक्रमशिला थी (ज० ए० सो० बं०, न्यू सीरीज, भाग, V, न०, I, पृ० 1-13)। इस विश्वविद्यालय मे अनेक भाष्य लिखे गये थे। यह तत्र-विद्या का एक केंद्र था। इस विश्वविद्यालय का प्रधानाचार्य सदैव एक अत्यन विद्वान् एव पुण्यात्मा ऋषि हुआ करता था। यहाँ पर विशेष रूप से व्याकरण, अध्यात्म विद्या, (तर्कशास्त्र) और कर्मकाण्ड-विषयक पुस्तको का अध्ययन किया जाता था। इस विश्वविद्यालय की दीवालों पर विद्वानों के चित्र अकित थे जो अपनी विद्या एव चरित्र के लिये विख्यात् थे। विश्वविद्यालय के फाटकों, जिनकी सख्या 6 थी, की रक्षा करने के लिए अत्यत विद्वान् ऋषियों की नियुक्ति की जाती थी (वि० च० लाहा, द मगधाज इन ऐश्येट इंडिया, पृ० 43-44)।

विझाटवी—यह एक निर्जन वन था। यह उस वन का प्रतिरूप था जिससे होकर पाटलिपुत्र से ताम्रलिप्ति का मार्ग गुजरता था (महावस, XIX. 6; दीप बंस, XVI, 2; समन्तपासादिका, III, 655)।

विष्णुपुर—यह पश्चिम बंगाल के बाँकुडा जिले मे है। इसका नामकरण राजवश के देवता विष्णु के आधार पर हुआ है। दीर्घकाल तक यह मल्लराजाओ की राजधानी थी, जिन्होने अपने द्वारा शासित देश को मल्लभूमि (पहलवानो का देश) की संज्ञा दी थी। मल्लभूमि मे सपूर्ण आधुनिक बाँकुडा जिला एव बर्दवान, मिदनापुर, मानभूम, और सिंहभूम, के निकटस्थ जिलो के कुछ भाग समिलित थे। आदिमल्ल जो प्रथम मल्लराजा था, कुश्ती एव धनुर्विद्या के क्षेत्र मे अपनी महती प्रतिभा के लिये प्रसिद्ध था। रघुनाथ विष्णुपुर के मल्लवश का सस्थापक था। उसने जयपुर थाने के अतर्गत् स्थित प्रद्युम्नपुर के निकटवर्ती प्रमखो को पराजित किया जिसे उसने अपनी राजधानी बनाया था। मल्लभूमि के शासको के राजचिह्न पर साँप के फन की मुहर बनी हुयी थी। बख्तियार खिल्जी द्वारा की गयी मुस्लिम विजय के पूर्व पश्चिमी बगाल के अधिकाश भाग पर विष्णुपुर हिंदू राजा राज्य करते थे। विष्णुपुर के एक राजा जगतमल्ल ने प्रद्युम्नपुर से राजधानी बदल कर विष्णुपुर कर दी थी। विष्णुपुर के राजा शैव थे। मल्लेश्वर-महादेव का मदिर यहाँ पर उपलब्ध मदिरो मे सर्वप्राचीन है। कालातर मे यहाँ के राजा मृण्मयी के कट्टर उपासक हो गये थे, जो शक्ति का एक स्वरूप थी और वहाँ पर अब भी जिसका एक मदिर है। रमई पडित द्वारा प्रचलित की गयी धर्म की पूजा यहाँ पर अत्यधिक लोकप्रिय हुयी। प्रसिद्ध बगाली गणितज्ञ शुभंकर राय विष्णुपुर के मल्ल राजाओ के अधीन थे। विष्णुपुर के मदिर अधिकाशतया वर्गाकार भवन है, जिनकी छते गोलाकार है, जिनके मध्य मे एक छोटी मीनार होती है। कुछ मे छत के चारो कोने मे मीनारे है। कुछ मंदिरो की दीवालो पर रामायण एव महाभारत के दृश्य अकित है। श्यामराय का मदिर बगाल मे पंचरत्न शैली का एक प्राचीनतम मदिर है। सोलहवी शती ई० मे बीर हम्मीर ने रासमच का भव्य मदिर बनवाया था, जिसे विष्णुपुर के दुर्ग के विशाल पाषाण-तोरण और दलमर्दन नामक बड़ी तोप के निर्माण का श्रेय दिया जा सकता है (इट्रोड्यूसिग इडिया, भाग, I, पृ० 71-72)।

दलमर्दन तोप लालबध झील के बगल मे अधगडी हुयी पडी थी और यह 'ऐश्येंट मानुमेंट प्रिजर्वेशन ऐक्ट' के अंतर्गत् चढाई गयी और सुरक्षित रखी गयी है। यह एक साथ संधानित पिटे हुये लोहे की तिरसठ छरपट्टियो या लघु बेलनो से निर्मित है और पिटे हुए लोहे के एक अन्य बेलन के ऊपर स्थित है। यद्यपि यह सब

ऋतुओ मे खुली रहती थी, किंतु अब भी इसमें मोर्चा नही लगा है और इसका पृष्ठ भाग काला ओपयुक्त है। इसकी लबाई 12 फीट 5½ इच है और इसकी नली का व्यास नालमुख पर साढे ग्यारह इच है। यह वही तोप है जिसे मदन-मोहन ने चलाया था जब कि मराठो ने भास्कर पडित के नेतृत्व मे विष्णुपुर पर आक्रमण किया था। सामने के फाटक के ठीक बाहर ऊँचे प्राकार पर अब भी दो तोपे पडी हुयी हैं।

विष्णुपुर का दुर्ग मिट्टी की एक ऊँची दीवाल से घिरा हुआ है और इसके चारो ओर एक चौडी परिखा है। प्रवेश-मार्ग ककडाश्म के बने हुए एक सुदर विशाल द्वार से है। प्रवेशमार्ग के दोनो ओर धनुर्धरो एव तुपकधारियो के लिये झिरियाँ बनी हुयी थी।

नगर के अचल मे और प्राचीन किलेबदियो के बीच सात सुरम्य झीले है, जिनको प्राचीन शासको ने बनवाया था, जिन्होने प्राकृतिक गढ्ढों का लाभ उठाकर उनके ऊपर बाँध बनवाया। इनसे नगर एव किले को निरंतर ताजा जल की पूर्ति मे सहायता मिलती थी। ये झीले अब पट गयी है और उनके अधिकाश भाग धान के खेत बन गये है।

पाषाण-निर्मित प्रवेशद्वार के उत्तर मे स्थित अनेक ऐतिहासिक घटनाओ का मौन द्रष्टा, मुर्चपाहार नाम से अधिक विश्रुत प्राकार सदैव विचारशील मस्तिष्को के लिये एक अनुकूल आश्रय स्थल रहा है। वहाँ खड़े होने पर चतुर्दिक ऐतिहासिक दृश्यो के परिदृश्य को देखने से जब कि सूर्य मदगति से महाराष्ट्र डाँग के पीछे पश्चिम मे अस्तमित होता है, मनुष्य का मस्तिष्क विषण्ण हो जाता है। इस ऐतिहासिक नगर और इसके अवशेषो पर अब अधकार का आवरण चढ चुका है (जे० एन० मित्र, द रूइन्स ऑव विष्णुपुर, पृ० 13-16)।

विश्वामित्र-आश्रम—यह बिहार के शाहाबाद जिले मे बक्सर मे स्थित था। बताया जाता है कि रामचन्द्र ने यहाँ पर ताडका नामक राक्षसी की हत्या की थी (तुलनीय, रामायण, बालकाण्ड, अध्याय, 26)।

व्याघ्रतटी—इसकी पहचान बागडी से की जाती है जो बगाल के चार परपरानुगत मडलो मे से एक है। बागडी मे गगा एव ब्रह्मपुत्र का डेल्टा समिलित था (कनिघम, आर्क० स० रि०, XV, पृ० 145-46)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, पौण्ड्रवर्धन।

यष्टिवन (लाठी या यष्टि का वन)—ग्रियर्सन ने इसे गया जिले मे सुप-तीर्थ के निकट तपोवन से लगभग 2 मील उत्तर मे स्थित जेठियन से समीकृत किया है (नोटस ऑन द डिस्ट्रिक्ट ऑव गया, पृ० 49)। यह राजगृह से लगभग 12

मील दूर पर स्थित था। बुद्धघोष के अनुसार यह एक खजूरवन था (समन्तपासादिका, सिंहली संस्करण, पृ० 158)। यह बिम्बिसार के राजवन का नाम था, जहाँ पर गयासीस से बुद्ध गये थे। राजगृह नगर जाते समय जटिल धर्म-परिवर्तन कारियों के साथ बुद्ध यहाँ रुके थे (विनय महावग्ग, I, पृ० 35; फासबाल, जातक, I, 83)। राजगृह नगर की सीमाओं पर स्थित यह खजूर बन वेणुबन की अपेक्षा अधिक दूर माना जाता था (जातक, I, 85)। बुद्ध के काल मे यह सुपतित्थ चेतिय नामक एक वट-मंदिर के लिए प्रसिद्ध था (समन्तपासादिका, सिंहली सस्करण, पृ० 158)। निश्चय ही यह स्थान राजगृह के पश्चिम मे था। महावस्तु में इसे एक पहाडी के अभ्यतर मे स्थित बतलाया गया है (अन्तरगिरिस्मिन, III, 441)। युवान-च्वाङ ने यष्टिवन को बाँस का एक घना जगल बतलाया है जो एक पर्वत को आच्छादित किये हुए था और जिसके दक्षिण-पश्चिम मे दस ली (लगभग 2 मील) आगे दो तप्त जलकुड थे (वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, 146)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, राजगृह इन ऐंश्येट लिटरेचर, मे० आर्क० स० इ०, न० 58, पृ० 16-18, 25, 39, 40

यतोद्भव—इस नदी को यतोदा भी कहा जाता है जो जलपाईगुडी और कूच बिहार जिलों से होकर प्रवाहित होने वाली, ब्रह्मपुत्र की एक सहायक नदी है (तुलनीय, कालिका पुराण, अध्याय, 77)।

IV

पश्चिमी भारत

अब्लूर—यह मैसूर के धारवाड जिले के कोड तालुक के मुख्यावास कोड़ मे लगभग दो मील पश्चिम मे स्थित एक गाँव है। प्राचीन अभिलेखो मे इसका अधिक पूर्ण नाम अब्बलूर मिलता है (एपि० इ०, V, 213 और आगे)।

अद्रिजा—इस नदी का वर्णन महाभारत मे है (अनुशासन पर्व, CLXV, 7648)। यह ऋक्ष एव विन्ध्य पर्वतो से निकलती है।

अगस्त्य-आश्रम—यह आश्रम नासिक के पूर्व मे अकोल्हा मे स्थित था (रामायण, आरण्यकाण्ड, अध्याय, 11, महाभारत, अध्याय, 96, 1-3, पद्म-पुराण, अध्याय, 6, श्लोक, 5)। रामायण (आरण्यकाण्ड, सर्ग, 11, श्लोक, 40-41) मे बतलाया गया है कि यह आश्रम अगस्त्य के भाई के आश्रम के दक्षिण मे उससे एक मील की दूरी पर स्थित था। योगिनीतत्र (2.7 8) मे इस आश्रम का उल्लेख है। कुछ लोगो की धारणा है कि नासिक के दक्षिण-पूर्व 24 मील दूर स्थित अगास्तपुरी मे अगस्त्य ऋषि का आश्रम था। कुछ लोगो का विचार है कि यह आश्रम मलयकूट के शिखर पर, जिसे श्रीखण्डाद्रि या चदनाद्रि भी कहा जाता था, स्थित था (तुलनीय, धोयीकृत पवनदूतम्)। बलराम यहाँ पर आये थे। मनु ने यहाँ पर तपस्या की थी (भागवत, VI. 3 35; X.79.16; मत्स्य, I . 12)। अगस्त्य, जो अगस्त्यसहिता के प्रसिद्ध लेखक थे, दक्षिण भारत में आर्य सभ्यता के परिचायक थे। यह आश्रम हर प्रकार के कष्टो के लिए अभेद्य था क्योंकि इस शक्तिशाली ऋषि ने अपनी आध्यात्मिक शक्तियो से राक्षसों को मार डाला था। जिस समय वह हवन कर रहे थे, राम, लक्ष्मण और सीता उनसे मिले थे। ऋषि ने उनका स्वागत किया और राम को उन्होने अपना दिव्य धनुष, बाण एव अन्य शस्त्रास्त्र प्रदान किये। इस आश्रम से लगभग सात मील दूर पंचवटी वन स्थित था।

अलंदतीर्थ—इसे भोर (भू० पू० रियासत) के मुख्य नगर भोर से पाँच मील पूर्वोत्तर मे और सतारा से लगभग 35 मील उत्तर मे आधुनिक आलुदा से समीकृत किया जा सकता है (इ० ऐं० XX, 304)।

अलिना—शीलादित्य सप्तम के अलिना ताम्रपत्र मे (वर्ष 447) गुजरात के नाडियाद तालुक के मुख्य नगर नडियाद से लगभग 14 मील पूर्वोत्तर मे स्थित इस गाँव का उल्लेख है (का० इ० इ०, III)।

आमलकटक—आम्टी से 12 मील दक्षिण पश्चिम मे स्थित, यह अमोड है (इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ्राम द बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 20)।

अंबरनाथ—यहाँ पर 9वी शती ई० का एक सुदर मदिर है जो विशुद्ध हिंदू स्थापत्य-कला का एक सुदर नमूना है। यह कल्याण के समीप है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 42)।

अंबापाटक—पूरवी या पूर्णा के तट पर और नौसारी से लगभग पाँच मील दूर पर स्थित यह आमडपुर ही है। कुछ शताब्दियो पूर्व इस गाँव को आम्रपुर कहा जाता था (एपि० इ०, XXI, जुलाई, 1931)।

अमरेली—यह काठियावाड के दक्षिण मे अमरेली नामक जिले का मुख्यावास है। इसकी प्राचीनता खरग्रह प्रथम के अमरेली अभिपत्रो से सिद्ध होती है (इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ्रॉम द बड़ौदा स्टेट, जिल्द, I पृ० 7)।

अणस्तु—यह बड़ौदा जिले मे करजन नामक एक तालुक के इसी नाम के मुख्यावास करजन से लगभग 2½ मील पश्चिमोत्तर मे स्थित एक गाँव है जहाँ से दो दान ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ्रॉम बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 16)।

अंजनेरि—यह नासिक जिले के मुख्यावास मे स्थित एक गाँव है जहाँ से पृथ्वीचन्द्र भोगशक्ति के दानपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XXV, भाग, V, जनवरी, 1940, पृ० 225)।

अंतिका—इसे बडौदा जिले के पादरा तालुक मे आधुनिक आम्ती से समीकृत किया जाता है (इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ्रॉम बडौदा स्टेट जिल्द, I, पृ० 20)।

अनूपनिवृत—अनूप देश (ल्युडर्स की तालिका, सख्या, 965) अनूपो का देश सुराष्ट्र एवं आर्नत्त के समीप स्थित था। अभिलेखीय साक्ष्य से यह धारणा पुष्ट होती है कि अनूप जन नर्मदा-तट पर स्थित माहिष्मती के परित. सुराष्ट्र के दक्षिण-वर्ती क्षेत्र में रहते थे। रानी गौतमी बलश्री के नासिक गुहा-लेख मे कहा गया है कि अन्य देशों सहित अनूप पर उसके पुत्र ने विजय प्राप्त की थी। रुद्रदामन के जूनागढ शिलालेख मे इस देश पर उसके अधिकार विस्तार का उल्लेख है। विस्तार के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 389; बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग I, पृ० 53-54.

असिक—यह असंक या फारस के सुविख्यात् पार्थियन राजा अर्सकिडाई

के नाम का वाचक प्रतीत होता है। नासिक-अभिलेख मे गौतमीपुत्र को इस पर शासन करते हुए कहा गया है (द गज़ेटियर ऑव द बाबे प्रेसिडेंसी, 1883, जिल्द, XVI)।

असितमसा--भरहुत-अभिलेखो मे इसका उल्लेख है (बरुआ ऐंड सिन्हा, पृ० 32)। कनिंघम ने इसे कही तमसा या टोंस के तट पर स्थित बतलाया है। वामनपुराण मे पश्चिमी भारत के देशो मे असिनील और तमसा का वर्णन है।

अय्यपोलिल--यह अय्यवोले का तमिल नाम है जिसे मैसूर के बीजापुर जिले के हुनगुड तालुक मे स्थित ऐहोड से समीकृत किया जाता है। यह एक अति समृद्धिशाली व्यापार-निगम के मुख्यावास के रूप मे प्रसिद्ध था (एपि० इं०, XXIII, भाग, VII)।

आभीर देश--अबिरिया या आभीर देश पर पश्चिमी क्षत्रपो या पश्चिमी भारत के शक राजाओ ने राज्य किया था जिनका अधिकार यूनानी भूगोलवेत्ता टॉलेमी द्वारा वर्णित इडो-सीथिया के सपूर्ण राज्य पर प्रतीत होता है (तुलनीय, एपि० इ०, VIII, पृ० 36 और आगे)। शकाधिपति रूद्रसिह (181 ई०) के गुड अभिलेख के अनुसार उसके राज्य मे रुद्रभूति नामक एक आभीर सेनापति ने एक तालाब खुदवाया था। थोडे दिनो के बाद (भडारकर के अनुसार 188-90 ई० मे, रैप्सन के अनुसार 236 ई० मे) आभीर जाति के ईश्वरदत्त नामक एक व्यक्ति ने महाक्षत्रप का पद धारण किया था। सभवत. इसकी पहचान ईश्वर-सेन नामक आभीर राजा से की जा सकती है जो पश्चिमी भारत का महाक्षत्रप बना था और जिसने तीसरी शताब्दी ई० मे सातवाहन राजाओ से महाराष्ट्र के कुछ भूभाग छीन लिये थे। यह कहा जाता है कि ईश्वरसेन के राजवश की पहचान अपरात के त्रैकूटक वश से की सकती जा है और 248 ई० मे प्रारंभ होने वाले त्रैकूटक सवत की स्थापना उत्तरी महाराष्ट्र और निकटवर्ती क्षेत्र के राज्य पर सातवाहनो के बाद आभीरो के अधिकार को लक्षित करता है (तुलनीय, रायचौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव ऐश्येट इडिया, चतुर्थ सस्करण पृ० 418, पा० टि० 2)। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तभ लेख मे पश्चिमी एव दक्षिण-पश्चिमी भारत के एक गण-राज्य के रूप मे आभीर देश का भी वर्णन है जो इस महान् गुप्त सम्राट् के करद, प्रणामी एव आज्ञाकारी थे और जो उसके साम्राज्य की सीमाओ के बाहर रहने वाली एक अर्ध-स्वतत्र जाति थी। (उनके पूर्ण इतिहास के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येट इडिया, पृ० 81; एपि० इ०, X, पृ० 99 और 127)। कुछ लोगों ने उन्हे मध्य प्रदेश के पार्वती और बेतवा नदियों के बीच मे स्थित अहिरवाडा क्षेत्र से समीकृत किया है।

आमीर शूद्रो से संबद्ध थे, जिनकी पहचान अति संभवतः सिकदर युगीन यूनानी इतिहासकारो द्वारा वर्णित सोड्राई या सोग्डाई से की जाती है जो विष्णुपुराण के अनुसार (विल्सन, II, अध्याय, III, पृ० 132-135) पारिपात्र, पर्वत के पास रहने वाले सुराष्ट्रो, शूद्रों, अर्बुदो, कारुषो और मालवो के साथ सुदूर पश्चिम में स्थित बतलाये गये हैं। मार्कण्डेय पुराण (अध्याय, 57, श्लोक, 35-36) मे उनका वर्णन वाह्लीकों, वाटधानो, शूद्रो, मद्रकों, सुराष्ट्रो तथा सिन्धु-सौवीरो के साथ हुआ है जिनमे सभी का अधिकार अपरातक मे (पश्चिमी भारत) मे समिलित देशो पर था। पार्जिटर ने बतलाया है कि आभीर गण महाभारत-युद्ध की अनुवर्त्ती घटनाओ से कुछ सबधित थे। गुजरात के यादवो पर क्रूर आभीरो ने आक्रमण किया और उन्हें ध्वस्त किया था (ऐं० इ० हि० ट्रे०, पृ० 284)। महाभारत (सभापर्व, अध्याय, 51) के अनुसार वे भारत के पश्चिमी प्रभाग मे स्थित थे। महाभारत का यह साक्ष्य 'पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन सी' के लेखक एव टॉलेमी द्वारा पुष्ट होता है। महाभारत (IX 37,1) मे आभीरो को निश्चित रूप से पश्चिमी राजस्थान मे स्थित बतलाया गया है जहाँ सरस्वती नदी लुप्त हो जाती है। पतञ्जलि सभवत' प्रथम व्यक्ति है जिन्होने अपने महाभाष्य (1 2.3) मे उनका भारतीय इतिहास मे परिचय दिया है। दूसरी शताब्दी ई० पू० के मध्य आभीरों एव उनके देश पर निश्चय ही बाख्त्री-यवनों का आधिपत्य हो गया था जिन्होने उनके सपूर्ण देश पर अधिकार कर लिया था जिसे टॉलेमी ने इडो-सीथिया कहा है और जिसमे अबेरिया या अबीरिया समिलित था। मार्कण्डेय पुराण (अध्याय, 57-58, श्लोक, 45-48 और श्लोक, 22) मे उन्हें दक्षिणात्य जनो के साथ स्थित बतलाया गया है। वायुपुराण (अध्याय, 45, 126) से इसकी पुष्टि होती है और इसमे आभीरो को "दक्षिणापथ-वासिन" कहा गया है। विस्तृत विवरण के लिए बि० च० लाहा कृत इडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, I, पृ० 54 और आगे द्रष्टव्य।

आलूर—यह मैसूर के धारवाड़ जिले गडगतालुक मे स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, XVI, पृ० 27)।

आनंदपुर—धरसेन द्वितीय के मल्लिय ताम्रपत्र मे इसका उल्लेख है। इसका आधुनिक नाम आनद है जो आनद तालुक का मुख्यावास है (का० इ०, इं०, जिल्द, III)।

आनंदपुर या वडनगर—इसे नगर भी कहा जाता है जो गुजरात के नागर ब्राह्मणों का मूल-स्थान था। कुमारपाल ने इसके चारो ओर एक प्राकार बनवाया था (एपि० इ०, I, पृ० 295)।

आनर्त—यह उत्तर काठियावाड में स्थित एक देश का नाम है (ल्युडर्स की तालिका, स० 965)। कुछ लोगो के अनुसार यह क्षेत्र द्वारका के समीप और कुछ अन्य के अनुसार वडनगर के समीप स्थित था (तुलनीय, बाबे गजेटियर I, 1 6)। शक महाक्षत्रप रुद्रदामन ने इस देश को गौतमीपुत्र से पुन जीत लिया था (द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 52-53)। स्कन्दपुराण (अध्याय, I, 5-6) के अनुमार इस देश मे वैदिक ऋचाओ का पाठ करने वाले यतियो से भरा हुआ एक आश्रम था।

आसट्टिग्राम—ब्यूलर ने इस गाँव को नवसारी से सात मील दक्षिण-पूर्व मे अष्टगाम से समीकृत किया है (एपि० इ०, VIII, 229 और आगे, इंडियन ऐटिक्वेरी, XVII, पृ० 198)। कुछ लोगो की धारणा है कि इसका मुख्य नाम अष्टग्राम है न कि आसट्टिग्राम (एपि० इ०, VIII, पृ० 231)।

आटविकराज्य—फ्लीट (का० इ० इ०, III, 114) का कथन है कि आटविक राज्य घनिष्ट रूप से डभाला—आधुनिक जवलपुर क्षेत्र से सबधित थे (एपि० इ०, VIII, 284-87, बि० च० लाहा, द मगधाज इन ऐश्येट इडिया, रायल एसियाटिक सोसायटी मोनोग्राफ, सख्या, XXIV, पृ० 19)। समुद्रगुप्त ने आटविक राजाओ को परिचारिकी-कृत किया था (तुलनीय, समुद्रगुप्त का प्रयाग स्तभलेख, परिचारिकीकृत सर्वाटविकराज्यस्य)। आटव्य[1] या आटविक जन मभवत. मध्य प्रदेश के वन्य क्षेत्रो मे निवास करने वाली आदिवासी प्रजातियाँ थी।

बदरिका—दन्तिदुर्ग के एलौरा अभिपत्रो मे इसका वर्णन है जो दक्षिण गुजरात मे स्थित है (एपि० इ०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939, पृ० 29)।

बहाल—यह गाँव महाराष्ट्र के खानदेश जिले की चालिसगाँव तहसील मे स्थित है। यहाँ पर यादव नरेश सिंहन का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (शक सवत् 1144) (एपि० इ०, III, 110)।

बलेग्राम—इस गाँव को नासिक जिले के ईगतपुरी तालुक मे स्थित आधुनिक बेलगाम तरल्हा से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, भाग, V, जनवरी, 1940, पृ० 230, पृथ्वीचन्द्र भोगशक्ति के दो दानपत्र)।

बलिस—अल्लशक्ति के एक दानपत्र मे (भारत इतिहास सशोधक मडल, पूना, द्वारा प्राप्त किये गये) इस गाँव का वर्णन है जिसे सेन्द्रक राजकुमार अल्लशक्ति

---

[1] **वायुपुराण, XLV, 126; मत्स्यपुराण, CXIII, 48; लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 383**

ने दिया था। इस गाँव की पहचान सूरत जिले के बारदोली तालुक में स्थित वनेस से की गई है (दे० रा० भडारकर वाल्यूम, पृ० 53)।

बलसाणे—यह महाराष्ट्र में पश्चिम खानदेश जिले के पिम्पलनेर तालुक में स्थित है। यह चालुक्य शैली मे निर्मित कई मदिरो के लिये विश्रुत है (एपि० इं०, XXVI, भाग, VII, जुलाई, 1942, पृ० 309 और आगे)।

बंकापुर—इसे मैसूर के धारवाड़ जिले मे स्थित बकापुर तालुक भी कहा जाता था। प्राचीन शहर जिसे मले बकापुर कहा जाता था, आधुनिक नगर मे दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 2 मील की दूरी पर स्थित है (एपि० इ०, XIII, पृ० 168)।

बरगाँव—यह जबलपुर जिले की मुरवारा तहसील के मुख्यावास मुरवारा के उत्तर-पश्चिम मे 27 मील दूर स्थित एक गाँव है। यहाँ पर खडित शिला-पट्ट पर उत्कीर्ण एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है (एपि० इ०, XXV, भाग, VI, अप्रैल, 1940)।

बामणी—यह गाँव कोल्हापुर जिले के कागल (एक भूतपूर्व रियासत) के मुख्यावास कागल से पाँच मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है। यहाँ पर शिलाहार वशीय विजयादित्य का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, III, 211)।

बासुरविषय—इसमे 140 गॉव थे और इसके अतर्गत् धारवाड जिले के हवेली तालुक के दक्षिणी भाग समिलित थे (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 194)।

बेलवोला—अमोघवर्ण के वेकटपुर अभिलेख (शक सवत, 828) मे इस स्थान का उल्लेख है जिसमे धारवाड जिले के आधुनिक गडग, रोग और नवलगड ताल्लुक स्थित थे (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941, पृ० 59 और आगे)।

भद्रकसत—यह कान्यकुब्ज या कन्नौज मे स्थित था। वाराणसी के राजकुल एव भद्रकसत के आदिवासी नरेश राजा महेन्द्रक मे वैवाहिक सबध थे (रा० ला० मित्र, नर्दर्न बुदिस्ट लिटरेचर, 143, और आगे)।

भद्रारक—इसकी पहचान भदर से की जा सकती है जो आम्ती के दक्षिण-पश्चिम में लगभग 2 मील दूर पर स्थित था (इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ्रॉम बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 20)।

भैरणमट्टी—मैसूर के बीजापुर जिले के बागलकोट तालुक के मुख्यावास बागलकोट से दस मील पूर्व मे स्थित यह एक गाँव है। यहाँ से एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, III, 230)।

भरण—यह (गुजरात के जामनगर जिले मे) कच्छ की खाडी मे खभलिया नामक एक बंदरगाह के निकट स्थित एक गाँव है। यहाँ पर एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था।

भरुकच्छ (भृगुकच्छ)—भरुकच्छ (समुद्री दलदल) भृगुकच्छ, भीरुकच्छ'[1] सभी की पहचान आधुनिक भड़ौच या ब्रोच से की जाती है जो टॉलेमी[2] एवं पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन[3] सी द्वारा वर्णित बैरीगाजा है। काठयावाड आधुनिक भड़ौच है। टॉलेमी द्वारा दिया गया इसका नाम भृगुक्षेत्र या भृगुकच्छ का यूनानी अपभ्रंश है (ऐंश्यंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 153-4)। भरुकच्छ एक बदरगाह था। जूलियन ने इसका नाम बराउ-गचेव (Barougatcheva) बतलाया था जिसे सन्त मार्टिन ने बारुकटचेव (Baroukatcheva) बतलाया था। चीनी तीर्थयात्री, युवान-च्वाङ के काल में इसे पो-लु-का-चे,-पो (Po-lu-ka-che,-po) कहा जाता था। भृगुकच्छ, भरुकच्छ का सस्कृत रूप है जिसका तात्पर्य ऊँचा तट-प्रदेश है। यह नगर ठीक एक ऊँचे तट देश पर स्थित था। बृहत्सहिता (XIV 11) और योगिनीतत्र (2 4) मे इसका उल्लेख है। इसका वर्णन हुविष्क के मथुरा बौद्ध-प्रतिमा-लेख में भी है। गुर्जर-नरेश जयभट्ट तृतीय के एक दानपत्र मे भी (कल्चुरि सवत्, 486, एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, तुलनीय, ल्युडर्स की तालिका, सख्या, 1131) इस नगर का वर्णन हुआ है। भागवतपुराण (VIII 18 12) मे इसे नर्मदा के उत्तरी तट पर स्थित बतलाया गया है। यूनानी भूगोलवेत्ता टॉलेमी के अनुसार समुद्र से कोई तीन मील दूर पर, नर्मदा नदी के उत्तर की ओर स्थित बैरीगाजा एक बडा पुर था (ऐंश्येट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 153)। मार्कण्डेयपुराण (बगवासी सस्करण, अध्याय, 58, श्लोक, 21) मे इसे वेण्वा नदी पर स्थित बतलाया गया है।

दिव्यावदान (पृ० 545-576) के अनुसार भरुकच्छ घना बसा हुआ एक सपन्न एव समृद्धिशाली नगर था। युवान-च्वाङ, जो सातवी शती ई० मे यहाँ आया था, ने इसकी परिधि 2400 या 2500 ली बतलाया है। यहाँ की भूमि लवणयुक्त थी। यह लवणाक्त थी और यहाँ पर विरल हरियाली थी। समुद्री जल को गरम करके नमक बनाया जाता था और लोगों की जीविका का आधार समुद्र

---

[1] **मत्स्य पुराण, CXIII, 50; मार्कण्डेयपुराण, LVII, 51.**

[2] **ऐंश्यंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 38, 153.**

[3] **वही, पृ० 40, 287.**

था। वृक्ष एवं झाड़ियाँ कम एव बिखरी हुयी थी। जलवायु गरम थी। यहाँ के निवासी क्षुद्र, धोखेबाज, मूर्ख एव कट्टरपथ तथा विधर्म दोनों में विश्वास करते थे। यहाँ पर दस से अधिक बौद्ध विहार थे जिनमे महायान स्थविर सप्रदाय के अनुयायी 300 भिक्षु रहते थे। यहाँ पर लगभग दस देव मंदिर थे जिनमे विविध सप्रदायो के मतावलबी रहते थे।[1]

दिव्यावदान (पृ० 544-586) मे भरुकच्छ या भृगुकच्छ नाम के विषय में एक अत्यत रोचक कहानी है। कहा जाता है कि सौवीर मे स्थित रोरुक (जिसे कुछ लोग सिघ के एक प्राचीन शहर अलोर से समीकृत करते है) के राजा रुद्रायन की हत्या उसके पुत्र-शिखण्डिन ने कर दी थी। इस अपराध के दडस्वरूप पितृ-हता राजा शिखण्डिन का राज्य बालू की दुघर्ष वर्षा द्वारा नष्ट कर दिया गया। केवल तीन पुण्यात्माये दो मंत्री और एक बौद्ध भिक्षु बच रहे थे। ये नये भूभाग की खोज मे निकले। भिरू जो उक्त दो मत्रियो मे से एक था, ने एक नये नगर की स्थापना की जिसे उसके नाम के आधार पर भिरुक या भिरुकच्छ कहा गया जिससे भरूकच्छ नाम पडा। भिरुराज्य और इसकी राजधानी की बुद्धकाल मे स्थापना विषयक अनुश्रुति मे केवल इस कारण विश्वास नही किया जा सकता क्योकि यह राज्य और इसका बदरगाह बुद्धयुग के बहुत पहले से ही था।

आर्य-जन काठियावाड से भरुकच्छ और भरुकच्छ से शूर्पारक की समुद्र-यात्रा करते थे।[2] प्राचीन बौद्ध-साहित्य एव ईस्वी सन् की प्रारभिक शतियो मे भरुकच्छ समुद्री व्यापार एव वाणिज्य का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र था। स्थानीय उपभोग के लिये प्रत्येक माल उज्जयिनी से बैरीगाजा लाया जाता था (भृगुकच्छ, पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन सी, खड, 48)। पेरिप्लस (खड, 49) मे कहा गया है कि बैरीगाजा मे सुलेमानी पत्थरो का आयात होता था। टॉलेमी के अनुसार यह पश्चिमी भारत मे व्यापार का सबसे बडा केंद्र था।[3] सुसोन्दि जातक मे गधर्व सग्ग की वाराणसी से भरुकच्छ की यात्रा का उल्लेख है जो एक बदरगाह (पत्तनगाम) था जहाँ से विभिन्न देशो को जहाज जाया करते थे। इस बदर-गाह के कुछ व्यापारी सुवर्णभूमि (लोअर बर्मा से समीकृत) के लिए प्रस्थान कर रहे थे। भरुकच्छ आने वाले एक गधर्व ने उनसे मुलाकात की और गाना

---

[1] **वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 241; बील, रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, पृ० 259, 260.**

[2] **भंडारकर, कार्माइकेल लेक्चर्स 1918 पृ० 23.**

[3] **एंश्येंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 153.**

गाने का वचन दिया यदि वे उसे अपने जहाज पर ले जाते। वे उसे जहाज पर ले गये और उसके सगीत ने समुद्र में मछलियो को इतना अधिक उत्तेजित किया कि जहाज बुरी तरह से ध्वस्त हो गया[1]। भरुकच्छ मे खारे पानी से आहत होने के कारण एक महानाविक की दोनो आँखे जाती रही। राजा ने तब उसे मूल्य-निरूपक के रूप मे नियुक्त किया। उसने यह नौकरी छोड दी और भरुकच्छ में आकर रहने लगा। कुछ व्यापारियो ने उससे अपना जहाज चलाने को कहा यद्यपि वह अधा था। उनके द्वारा अधिक विवश किये जाने पर उसने अपनी सम्मति दे दी। अतत· उसने जहाज को विनष्ट होने से बचाया और उसे सुरक्षित रूप से उसके गतव्य तक पहुँचाया जो कि भरुकच्छ का बदरगाह था[2]।

क्षेमेन्द्र कृत बोधिसत्त्वावदानकल्पलता मे कहा गया है कि अपनी वृद्धावस्था मे सुरपारग ने कुछ व्यापारियो के साथ भरुकच्छ के निवासियो से व्यापार करने के लिए समुद्रयात्रा की[3]। गण्डव्यूह नामक एक महायान बौद्ध ग्रथ मे भरुकच्छ के मुक्तसार नामक एक स्वर्णकार का उल्लेख हुआ है[4]।

मिलिन्दपञ्हो[5] मे किसी एक कुशल शिल्पी द्वारा एक नगर निर्माण के सदर्भ मे अनेक देश के निवासियो के साथ भरुकच्छ के निवासियो (भरुकच्छक) का उल्लेख है। वढढ भरुकच्छ के एक सामान्य कुल का था। उसने गृहस्थ जीवन का परित्याग करके बौद्ध-सघ में प्रवेश किया था[6]। वढढ की माँ का पुनर्जन्म इस नगर के एक स्वजातीय परिवार मे हुआ था। बाद मे अपने सबधियो को अपना पुत्र देकर उसने बौद्ध-सघ मे प्रवेश किया[7]।

सीहवाहु का पुत्र लाढ-देशीय विजय तीन महीने तक भरुकच्छ मे रुका था और तब उसने जहाज से पुनः यात्रा की[8]।

इस पत्तन ग्राम में कोरिण्ट नामक एक वन था। यह नर्मदा के तट पर था।

[1] जातक III, पृ० 188 और आगे।
[2] वही, IV, पृ० 137, और आगे।
[3] तुलनीय, रा० ला० मित्र, नार्वर्न बुद्धिस्ट लिटरेचर, पृ० 51.
[4] वही, पृ० 92.
[5] ट्रेंवनर संस्करण, पृ० 331.
[6] मिसेज रीज डेविड्स, साम्स ऑव द ब्रेदेरेन, पृ० 194.
[7] थेरीगाथा कामेंट्री, पृ० 171.
[8] दीपवंस, IX. V. 26.

जिन सुव्रत यहाँ जितशत्रु को उपदेश देने के लिए आये थे जो उस समय अश्वमेघ यज्ञ का सपादन कर रहा था।

भरुकच्छ में अनेक लोकप्रिय मदिर थे। उदय के पुत्र वाहडदेव ने सितुज्ज और उसके अनुज अम्ब ने शकुणिका-विहार का जीर्णोद्धार कराया था[1]।

भाजा—यह बबई-पूना मार्ग से लगभग $2\frac{1}{2}$, मील दक्षिण मे और मलव्ली रेलवे स्टेशन से कोई एक मील दूर पर स्थित है। प्रथम गुहा एक प्राकृतिक गुफा है। अन्य गुहाएँ सादे विहार है। छठवी गुफा एक अत्यत जीर्ण विहार है। इसमे एक विषम महाकक्ष या हाल है जिसमे तीन कोठरियाँ है। यहाँ पर एक सुदर चैत्य है। गुफाएँ 2000 ई० पू० से अधिक प्राचीन है। यहाँ पर मेहराब एव अलंकृत कोनियाँ हैं। चार स्तभों मे बौद्ध प्रतीक लक्षित किये जा सकते है। छत धनुषाकार है और इसके सामने अलकृत मेहराब एव दोहरा जँगला या वेदिका है। इसके निकट चारों ओर अनेक छोटे विहार हैं।

भाण्डुप—यह महाराष्ट्र मे थाना जिले के साल्सेट तालुक मे स्थित एक गाँव है जहाँ से चित्तराजदेव के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XII, 250 और आगे)।

भेटालिका—यह गाँव पच्छात्री विषय (जिला) मे स्थित था (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 209)।

बिल्वीश्वर—कीर्तिराज के सूरत अभिपत्र मे वर्णित बिल्वीश्वर को पलसेना मे दो मील उत्तर मे स्थित बलेश्वर या बलेसर नामक एक छोटे कस्बे से समीकृत किया जा सकता है (इ० ऐ०, XXI, पृ० 256)।

ब्रह्मगिरि—नासिक जिले मे त्र्यबक के समीप यह एक पर्वत है जहाँ से गोदावरी निकली है।

ब्रह्मणापुरी—यह पचगगा नदी के तट के समीप कोल्हापुर के एक भाग का स्थानीय नाम है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935; एपि० इ०, XXIII, भाग, II)।

ब्राह्मणाबाद—यूनानियो द्वारा अभिहित पेटेलीन के लघुराज्य का नामकरण उसकी राजधानी पट्टल के आधार पर हुआ था। साधारणतया पेटेलीन को सिन्धु नदी के डेल्टा से समीकृत किया जाता है और इसकी राजधानी पाटल (सस्कृत, प्रस्थल) को आधुनिक ब्राह्मणाबाद मे या इसके समीप स्थित माना जाता है। डायोडोरस के अनुसार पाटल (टौआल, Tauala) का सविधान

---

[1] जिन विजय सूरि द्वारा संपादित विविधतीर्थकल्प, पृ० 20-22.

स्पार्टा के सविधान जैसा था। वहाँ ज्येष्ठको की एक परिषद् थी जिसमें व्यवस्था एव सामान्य प्रशासन के सचालन के लिए सर्वोच्च अधिकार निहित थे। स्ट्रेबो के अनुसार (एच० ऐंड एफ०, II, 252-253) सिकंदर के आक्रमण के बहुत दिन बाद पेटलीन पर बारव्त्री-यवनों का अधिकार हो गया था। कालान्तर मे यह इडो-ग्रीक राजाओ के शिकजे से निकलकर शकों या इडो-सीथियन राजाओ के अधिकार मे चला गया था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 37; कै० हि० इ०, I, 378-79; इ० ऐ०, 1884, 354

कडिज—इसे महाराष्ट्र के पनवेल तालुक मे उरन से लगभग 2 मील पश्चिम मे उसके पास गजे से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII)।

कंम्बे (खभात)—यह गुजरात के खैरा जिले मे है। यहाँ पर एक जैन मदिर मे एक शिलालेख उपलब्ध हुआ है। स्तभतीर्थ आधुनिक खभात (Cambay) है।

चपक—यह आधुनिक चपानेर है (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, पृ० 217)। इसे चपकपुर भी कहा जाता है (वही, पृ० 219)।

चपानक—घुम्ली से उपलब्ध सैन्धव दान ताम्रपत्र मे इस गाँव का वर्णन है जिसे जूनागढ से उत्तर मे लगभग 15 मील दूर पर स्थित चावण्ड से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 223)।

चन्द्रपुरी—इसकी पहचान सभवत. अजनेरी से 12 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित चन्द्राचीमेट से की जाती है (एपि० इ०, XXV, भाग, V, पृ० 230)।

चिकुल—भरहुतअभिलेखो मे इसका वर्णन हुआ पे (बरुआ ऐंड सिन्हा, पृ० 14)। चिकुल, चेकुल या चिउल है जो सभवत. बबई के निकट चाउल है (एपि० इ० II, 42)।

चिप्लून—यह रत्नगिरि जिले के चिप्लून तालुक का मुख्य नगर है जहाँ से पुल्केशिन् द्वितीय के दो अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, III, 50 और आगे, इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ्रॉम द बडौदा स्टेट, I, पृ० 44)।

दधिपद्र—इसे कुमारपाल द्वारा स्थापित द्रोहद से समीकृत किया जाता है। जयसिह के अभिलेखो मे इसका वर्णन है (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, पृ० 220)।

दधिपद्रक—यह गाँव पच्छत्री विषय (जिले) मे स्थित था जो घुमली से 6 मील पश्चिम मे पक्तार्दी ही है (एपि० इ०, XXVI, भाग V, जनवरी, 1942, पृ० 204)।

दण्डकवन—दण्डकवन (दण्डकारण्य) जो रामायण मे (आदिकाण्ड, सर्ग, I, श्लोक, 46) राम के बनवास के संबंध मे विश्रुत है, सपूर्ण मध्य प्रदेश मे बुदेल खंड क्षेत्र से कृष्णा नदी तक फैला हुआ था (ज० रा० ए० सो०, 1894, 241; तुलनीय, जातक, V, 29); किंतु महाभारत (सभापर्व, XXX, 1169, वन पर्व, LXXXV, 8183-4) मे दण्डकवन को केवल गोदावरी के उदगम-स्थल तक ही सीमित बतलाया गया है। भागवत पुराण (IX. 11. 19, X 79. 20) के अनुसार दक्कन मे स्थित इस वन मे राम एव बलराम गये थे। पद्मपुराण (अध्याय, 21) मे इसका वर्णन अन्य तीर्थ स्थानो मे हुआ है। इस वन मे एक सरिता थी। यहाँ पर एक गुहा भी थी (दशकुमारचरितम्, पृ० 20)। इस वन को जनस्थान के पश्चिम मे चित्रकुञ्जवन भी कहा जाता था (उत्तर चरितम्, अक, I, 30)। दण्डकारण्य क्षेत्र मे अनेक जलकुण्ड, आश्रम, पहाडियाँ, सरिताएँ एव झीले आदि थी (वही, अक, II, 14)। बाण ने अपने हर्षचरित (प्रथम उच्छ्वास) मे इस वन का उल्लेख किया है। मिलिन्दपञ्हो (पृ. 130) मे भी इस वन का वर्णन है। जैन ग्रथ निशीथचूर्णी मे इस वन के जलकर भस्मीभूत हो जाने की एक विचित्र कहानी है (16 1113)। विन्ध्य के पार्श्व मे स्थित दण्डकारण्य वस्तुतः मज्झिमदेश को दक्खिणापथ से पृथक करता था।

दशपुर—बृहत्सहिता (अध्याय, XIV. 20) मे एक नगर के रूप मे इसका वर्णन प्राप्य है। पश्चिमी रेल-पथ की राजस्थान-मालवा शाखा पर यह एक सुप्रसिद्ध स्थान है। इसे मध्यप्रदेश के मदसोर जिले से समीकृत किया जाता है का० इं० इं०, III, 79, फ्लीट की टिप्पणी, बाणकृत कादम्बरी (बबई सस्करण, पृ० 19) के अनुसार यह उज्जयिनी के निकट मालवा मे स्थित था। अति सभवत. यह पश्चिमी मालवा में था (गजेटियर ऑव बाबे प्रेसीडेसी, 1883, नासिक, पृ० 636)। प्राचीन दशपुर शिप्रा की एक सहायक नदी सिवन के उत्तरी या बाएँ तट पर स्थित था। यशोधर्मन के मदसोर पाषाण-स्तभ लेख मे मदसोर या, और औचित्य से दसोर का वर्णन है जो मदसोर जिले का मुख्य नगर है (ग्वालियर स्टेट गजेटियर, I, 265 और आगे)। बन्धुवर्मन के मंदसोर-अभिलेख मे लाट एवं दशपुर का वर्णन है। कुमार गुप्त प्रथम के अभिलेखो मे उल्लिखित दशपुर अनुमानतः मालवगण या पश्चिमी मालवों का मुख्य नगर था। नरवर्मन् एवं उसका पुत्र विश्ववर्मन यहाँ पर राज्य करते थे जो स्वतत्र राजा थे। यह

प्रारभिक गुप्त साम्राज्य का एक महत्त्वपूर्ण प्रदेश (भुक्ति) या प्रांत था। पूर्व-कालीन सातवाहनों ने स्पष्टत: क्षहरात क्षत्रप नहपान के अधिकार से दशपुर, नासिक, शूर्पारक, भृगुकच्छ एव प्रभास जैसे स्थान छीने थे। क्षहरात क्षत्रप नहपान के शासनकाल मे उसके दामाद उषवदात ने दशपुर मे लोकोपयोगी अनेक कार्य करके अशोक जैसी ख्याति अर्जित की थी। दशपुर एवं विदिशा दो पडोसी नगर थे जो गुप्तकाल मे उज्जयिनी की शान से स्पर्धा करते थे। गुप्त-वशीय सम्राटों के शासन काल मे मालव या कृत सवत् का प्रयोग दशपुर तक ही सीमित था। मालवगण सभवत मदसोर क्षेत्र मे चले गये थे जहाँ समुद्रगुप्त के उत्तराधिकारियो से सबधित अधिकाश लेख उपलब्ध हुये है। इस क्षेत्र को अगुत्तरनिकाय मे वर्णित प्राचीन महाजनपद अवन्ती, रुद्रदामन के जूनागढ-शिलालेख मे अवन्ती तथा जैनग्रन्थ भगवतीसूत्र मे वर्णित मलय (मालवा) से समीकृत किया जाता है। जैनग्रथ आवश्यक चूर्णी (पृ० 400 और आगे) से विदित होता है कि दशपुर मे कुछ व्यापारी निवास करते थे और तब से इसे दशपुर कहा जाता था। मदसोर के राजा 58 ई० पू० मे प्रारभ होने वाले कृत संवत् का प्रयोग करते थे जिसे परपरागत रूप से मालवगण ने आगे चलाया था। इस सवत् से मालवो को सबद्ध करने वाले अभिलेख न केवल मदसोर क्षेत्र मे ही वरन् अन्य स्थानो यथा उदयपुर जिले मे नागरी एव कोटा जिले में कांसुवाम मे भी प्राप्त हुये है। यशोधर्मन के पाषाण-स्तंभ लेख मे मालवा के राजा यशोधर्मन द्वारा हूण आक्राता मिहिरकुल की पराजय का उल्लेख है (का० इ० इ०, III; तुलनीय, एपि० इ०, XII, 315 और आगे, तुलनीय, नरवर्मन के काल का, मालव सवत् 461 का मदसोर अभिलेख)। पाँचवी शताब्दी ई० के मध्य इस पर हूणों का अधिकार हो गया था जिन्हे मालवा से भगाया गया था। मंदसोर मे सूर्य का एक प्राचीन मदिर है जिसका निर्माण कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल मे हुआ था। मंदसोर से 3 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित सोन्दनी गाँव मे सिंह एव घटाकार शीर्षवाले दो भव्य एकाश्मक प्रस्तर स्तभ है।

कुमारगुप्त एव बन्धुवर्मन के मदसोर शिला-लेख मे दशपुर का वर्णन एक नगर के रूप मे हुआ है। दशपुर-नरेश यशोधर्मन के राजकवि ने रेवा नदी से पारिपात्र पर्वत और अवर सिन्धु क्षेत्र तक फैले राज्य क्षेत्र का विशद् कवित्वपूर्ण वर्णन किया है (विस्तृत विवरण के लिए दृष्टव्य, लाहा, उज्जयिनी इन ऐश्येंट इडिया)।

दाभिग्राम—(एपि० इ० I, 317)—इसे उत्तर गुजरात मे स्थित डाभी से समीकृत किया जा सकता है।

देवल—यह मध्ययुग में एक बदरगाह, और सिन्धु नदी की एक मडी थी। कुछ लोग इसे करांची (पाकि०) मे स्थित बतलाते है। अन्य लोगो के अनुसार यह करांची एवं थथा (पाकि०) के बीच मे किसी स्थान पर स्थित था। इसे बघार नदी पर स्थित बतलाया जा सकता है। हैमिल्टन के अनुसार यह लारीबंदर के निकट था। विसेट स्मिथ का विचार है कि यह पीर पठो के वर्त्तमान मदिर के पास था (अर्ली हिस्ट्री ऑव इडिया, तृतीय सस्करण, पृ० 105)। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 340 और आगे)।

देवधन—नासिक जिले मे योला से कोई 16 मील पूरब मे योला तालुक मे स्थित यह एक गॉव है। यहाँ औरगाबाद जाने वाली पक्की सडक पर 14 मील तक कार द्वारा पहुँचा जा सकता है (आर्क० स० इ० एनुअल रिपोर्ट्स, 1930-34, पृ० 318)।

धम्भिक—नासिक जिले मे स्थित यह एक गॉव है (ल्युडर्स की तालिका, सख्या, 1142)।

धंकतीर्थ—यह पच्छत्री विषय (जिले) मे स्थित एक गॉव था। यह स्पष्टत धुमली से लगभग 25 मील दूर पूरब मे गोन्दल मे स्थित घाँक ही है। घाँक इसी नाम की एक पहाडी की सीमा पर स्थित है और यह जैनियो का एक तीर्थ-स्थान है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 199)।

धुलिया—यह महाराष्ट्र के खानदेश जिले मे स्थित है जहाँ पर कर्कराज के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, VIII, 182, और आगे)।

दोहद—यह गुजरात के पञ्चमहल जिले की दोहद तहसील का प्रमुख नगर है जो बड़ौदा से 77 मील पूर्वोत्तर मे स्थित है (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, जनवरी, 1938, पृ० 212)।

द्वारवती-(द्वारका-जैन बारवं)—इसे कुशस्थली भी कहा जाता है। स्कन्दपुराण (अध्याय, I, 19-23) के अनुसार यह एक तीर्थस्थान है। योगिनी-तंत्र 2 4, पृ० 128-129) मे भी इसका उल्लेख हुआ है। मूलत यह गिरनार पर्वत के समीप स्थित थी किंतु बाद मे इसे काठियावाड के सुदूर पश्चिमी तट पर समुद्र तट पर स्थित माना जाने लगा। यह पेरिप्लस द्वारा वर्णित 'बराके' है (पृ० 389)। जैनग्रंथ नायाधम्मकहाओ में (V, पृ० 68) कहा गया है कि बारवै द्वारावती कृष्ण वासुदेव (कण्ह वासुदेव) का निवास-स्थान था। इसे रेवत ने बसाया था। कृष्ण ने यहाँ अश्वमेघ किया था (भागवत, I. 8, 10-27, X. 89 22)। अन्तगडदसाओ (पृ० 5) मे भी इसे अधक-वृष्णियों (अन्धग वण्हि) का निवास-स्थान बतलाया गया है। हरिवंश (अध्याय, CXV,

45-49) के अनुसार यह नगर फाटकों द्वारा समुचित रूप से सुरक्षित, अतिसुन्दर भित्तियों से अलंकृत, परिखाओ द्वारा परिवेष्टित, प्रासादो से युक्त, पुष्करो और निर्मल जलवाली लघुसरिताओ तथा वाटिकाओ से सुसज्जित था। दश-बधुओं ने जो अधक वेण्हु के पुत्र थे, सपूर्ण भारत पर विजय प्राप्त करने की इच्छा की थी। अयोध्या पर विजय प्राप्त करने के बाद वे द्वारावती की ओर बढ़े जिसके एक ओर समुद्र और दूसरी ओर पर्वत थे। इस नगर में चार फाटक थे। पहले तो वे इस पर अधिकार करने मे असफल रहे किंतु बाद मे वे सफल हुये। इसको दस भागो मे विभक्त करने के अनतर वे इस नगर मे रुके (जातक, IV, पृ० 82-84)। उक्त दश-बधुओ मे सबसे बडे वासुदेव की जबावती नामक एक प्रिय पत्नी थी जो चण्डाल जाति की थी। एक दिन वह द्वारावती के बाहर गये और एक उद्यान मे जाते समय मार्ग मे उन्होने एक सुदरी लडकी को देखा। वह उससे प्रेम करने लगे और उसे अपनी महारानी बनाया। उसने शिवि नामक एक पुत्र को जन्म दिया जो अपने पिता की मृत्यु के बाद द्वारावती का राजा बना (जातक, VI, पृ० 421)। इस नगर मे एक अति सुदर हिंदू मदिर है। कुकुरों ने द्वारका क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था जिसे 'कुकुरान्ध वृष्णिभि गुप्ताः', कहा गया है। भागवत[1] एव वायुपुराणो मे इस जाति का उल्लेख है जब इसमे यादवो के राजा उग्रसेन को कुकुर जाति मे उत्पन्न बतलाया गया है (कुक्कुरोद्भव)। काम्बोजो का देश द्वारका से सबधित एक सार्थ-पथ पर स्थित था (पेटवत्थु, पृ० 23)। चण्डाल-स्त्री से उत्पन्न वासुदेव का पुत्र यहाँ राज्य करता था (जातक, VI, पृ० 421)। द्वारावती का राजा विजय, उन कतिपय प्राचीन नरेशो मे था जिन्होने सन्यासियो के रूप मे पूर्णता प्राप्त की थी (उत्तराध्ययन-सूत्र, XVIII)। द्वारावती के अधकवेण्हु तरुणो ने कण्हदीपायन के साथ दुर्व्यवहार किया और अत मे उनकी हत्या कर दी। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकिल स्टडीज, I, पृ० 52)।

एरण्डपल्ल--(इलाहाबाद स्तंभ लेख मे वर्णित)—इसे एरण्डोल से समीकृत किया जा सकता है जो महाराष्ट्र के पूर्वी खानदेश जिले मे इसी नाम की एक तहसील का मुख्य नगर है (ज० रा० ए० सो०, 1898, पृ० 369-70)। कुछ लोगों के अनुसार इसे संभवतः आंध्रप्रदेश के समुद्र-तट पर शिकाकोल के निकट

---

[1] इं० ऐं०, जिल्द, XXVIII, (1899), पृ० 2, भागवत पुराण की भौगोलिक तालिका द्रष्टव्य।

एरण्डपली से समीकृत किया जा सकता है जिसका वर्णन देवेन्द्रवर्मन के सिद्धांतम् अभिपत्रो मे हुआ है (एपि० इं०, XII, पृ० 212)।

एरण्डि—यह नर्मदा की एक सहायक नदी उरी है (पद्म पुराण, अध्याय, IX)।

एरुथन—इसका वर्णन कीर्तिराज के सूरत अभिपत्रों में है। यह बलेसर से दो मील पश्चिमोत्तर मे स्थित आधुनिक एरथन है।

गदग—यह मैसूर के धारवाड़ जिले के गदग तालुक का मुख्य नगर है। यहाँ पर त्रिकूलेश्वर का मदिर स्थित है। इस मदिर की पार्श्व प्राचीर के सामने स्थित एक शिला पर उत्कीर्ण एक अभिलेख मिला है।इ स अभिलेख मे होयसल राजा वीरवल्लाल द्वितीय द्वारा प्रदत्त एक भू-दान का उल्लेख है (एपि० इ०, VI, 89 और आगे; एपि० इं०, XV, 348 और आगे)। गदग के त्रिकूलेश्वर मदिर से यादव भिल्लम का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ० III, 217)।

गंधारिकाभूमि—यह कल्याण मे एक स्थान है (ल्युडर्स की तालिका, स० 998)।

गाभलाग्राम—(एपि० इ० II, 26)—उत्तर गुजरात मे सभवत. यह दिल्मल के निकट है।

गाधिपुर—कन्नौज (द्रष्टव्य, कन्नौज)।

घरपुरी—यह अपोलोबदर से लगभग 6 मील पूर्वोत्तर मे बबई पोताश्रय में स्थित सुविख्यात एलीफेंटा द्वीप है। पुर्तगालियो ने इसे इस कारण एलीफेंटा की सज्ञा दी है क्योंकि इस विशाल गुहा के प्रवेशद्वार पर पत्थर का एक भीमकाय हाथी बना हुआ था। एलीफेंटा की गुफाऐं ब्राह्मण एव बौद्धमत से प्रभावित है। यहाँ की तीन गुफाएँ नष्ट हो चुकी हैं। एक गुफा मे यहाँ पर एक बौद्ध चैत्य है। मुख्य कक्ष की दीवाल पर ब्राह्मणधर्म के त्रिदेवो की प्रतिमा त्रिमूर्ति मिलती है।

घुम्ली—यह काठियावाड़ मे नवनगर मे स्थित है जहाँ से छः दान ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे। प्राचीन काल के लोग इसे भूतांबिलिका कहते थे। अनुश्रुतियों के अनुसार भूतांबिलिका जेठवा राजपूतो की प्राचीन राजधानी थी, पोरबदर के राणा जिनके आधुनिक प्रतिनिधि है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941, पृ० 185 और आगे)।

गिरिनगर—(गिरनार)—ल्युडर्स की तालिका (स० 965-966) में इसका वर्णन एक नगर के रूप में हुआ है। जैनग्रन्थ अनुयोगद्वार (सूत्र 130, पृ० 137)। के अनुसार गिरिनयर या गिरिनगर ऊर्जयतपर्वत के समीप स्थित

था। स्कन्दगुप्त के जूनागढ शिला-लेख मे गुजरात के काठियावाड़ द्वीपकल्प में जूनागढ़ के मुख्य-नगर जूनागढ का वर्णन है। इसे गिरिनगर या गिरनार भी कहा जाता है जिसे अभिलेखों मे ऊर्जयत भी कहा गया है (का० इं० इं०, III)। महाक्षत्रप रुद्रदामन के जूनागढ़-शिलालेख से हमे ज्ञात होता है कि राजा अशोक के शासन-काल में तुषास्फ नामक एक अधीनस्थ यवनराज राष्ट्रिक (राज्यपाल) के रूप मे सुराष्ट्र पर राज्य करता था जिसकी राजधानी गिरिनगर थी। जूनागढ के समीप ही गुजरात मे गिरनार या रैवतक पहाडी स्थित है जिसे जैन तीर्थङ्कर नेमिनाथ का जन्म-स्थल माना जाता है। इस पहाडी पर गुरुदत्तचरण नामक पदचिह्न है। यह जैनियो का एक तीर्थ-स्थल है क्योकि यहाँ पर नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ के मदिर हैं। यहाँ पर दत्तात्रेय ऋषि का आश्रम भी है। सुवर्णरेखा नदी(-पलाशिनी) इस पहाडी के नीचे बहती है। जैनग्रथ उत्तराध्ययन सूत्र (अध्याय, XLV) के अनुसार यहाँ पर वृद्धावस्था मे अरिष्टनेमि की मृत्यु हुयी थी। गोविन्ददास की कर्चा से हमे ज्ञात होता है कि प्रसिद्ध वैष्णव सुधारक श्री चैतन्य गिरिनगर आये थे। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, सम जैन कैनॉनिकल, सूत्राज, पृ० 180; ऊर्जयत भी द्रष्टव्य।

गिरणा—यह नदी सह्य या पश्चिमी घाट से निकलती है और पूर्वोत्तर दिशा मे बहती हुयी खानदेश मे चोपदा के आगे ताप्ती नदी मे मिलती है। यह ताप्ती नदी-समूह से समिलित है और दाहिनी ओर से एक तथा बाँईं ओर से दो सरिताओं द्वारा आपूरित है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 42)।

गोपालपुर—यह गाँव जबलपुर जिले मे भेडाघाट से कोई तीन मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है। यह नर्मदा नदी के दाहिने तट पर स्थित है (एपि० इ० XVIII, 73)।

गोवर्धन—योगिनीतत्र (1.14, पृ० 83)के अनुसार यह पर्वत केशी नामक राक्षस की पार्थिव भस्म के पुज से निर्मित थे। चूंकि इस पर उगी घास से गायों का भरण-पोषण होता था, इसलिए इसका नाम गोवर्धन पडा था। हरिवंश (अध्याय, LXII, 25-26) के अनुसार मदार पर्वत की भाँति यह एक ऊँचे शिखर वाला विशाल पर्वत है। इसके केंद्र मे अंजीर का एक विशाल वृक्ष है जिसकी शाखाएँ ऊँची एव एक योजन तक फैली हुयी हैं। यह एक तीर्थस्थान है और यहाँ आकर लोग पाप-मुक्त होते हैं। यह महाराष्ट्र राज्य मे आधुनिक नासिक के पास है (हुविष्क का मथुरा बौद्ध प्रतिमा लेख)। इसे गोवर्धनपुर भी कहा जाता है, (द्रष्टव्य, मार्कण्डेयपुराण, अध्याय, 57; भंडारकर, अर्ली हिस्ट्री ऑव द डेकन, पृ० 3)। नहपान एवं पुलुमावि के शासनकाल में यह

कुछ महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। उषवदात ने गोवर्धन मे एक विश्राम-गृह का निर्माण कराया था। अभिलेखो से प्रतिभासित होता है कि नहपान के शासन-काल मे और बाद मे पुलुमावि के अधीन गोर्वधन राजधानी थी। इसे नासिक से छ मील पश्चिम मे गोदावरी के दाहिने तट पर स्थित गोवर्धन गगापुर नामक विशाल आधुनिक गाँव से समीकृत किया जा सकता है (गज़ेटियर ऑव द बाबे प्रेसिडेसी, भाग XVI, 1883, नासिक, पृ० 636-637)।

गुर्जर—युवान-च्वाङ ने इसे कियु-चे-लो (Kiu-che-lo) कहा है। यह वलभी से 300 मील उत्तर मे एव उज्जैन से 467 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित था। यहाँ के निवासी किसी समय पजाब मे रहते थे और बाद मे काठियावाड द्वीपकल्प मे आये जिसे अब उनके कारण गुजरात कहा जाता है (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 357 और आगे, 696)। प्राचीनकाल मे जयसिहदेव ने गुर्जर देश मे नेमि का एक नया मदिर बनवाया था। गुर्जर-नरेश के दो प्रसिद्ध मत्री वास्तुपाल एव तेजपाल थे। कान्यकुब्ज-नरेश की पुत्री महानदेवी ने अपने पिता से गुर्जर का उत्तराधिकार प्राप्त किया था। तेजपाल ने गिरनार मे एक सुदर नगर एव पार्श्वनाथ के मदिर का निर्माण कराया था। उसने कुमारसर नामक एक सुदर झील भी बनवाई थी। दशदशा का मदिर सुवर्णरेखा के तट पर स्थित है। उसने तीन चैत्य बनवाये थे। वस्तुपाल ने मरुदेवी का मदिर बनवाया था (लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 181-182)।

हरिश्चन्द्रगढ़—पश्चिमी घाट के एक अत्यत मनोरम स्थल और अकोला से 19 मील दक्षिण-पश्चिम मे महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के अकोला तालुक मे स्थित यह एक दुर्ग है। यह समुद्रतल से 4,000 फीट से भी अधिक ऊँचाई पर स्थित है। इसके शिखर पर स्थित किले एव मदिरो को देखने प्रतिवर्ष असख्य तीर्थयात्री आते हैं (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 43)

हरिसेणाणक—यह गाँव स्वर्ण मञ्जरी विषय (जिले) मे स्थित था। यह सभवत. नवनगर मे स्थित हरियासन नामक आधुनिक गाँव ही है (एपि०, इं०, XXVI, V, जनवरी, 1942, पृ० 218)

हस्तवप्र—(हस्तकवप्र)—यह आधुनिक हाटब है जो काठियावाड़ में भावनगर जिले मे गोघा के छह मील दक्षिण मे स्थित एक गाँव था जिसपर शीला-दित्य तृतीय का अधिकार था। यह भडौच जिले के ठीक सामने है (इपार्टेंट इंस्क्रिप्शंस ऑफ द बडौदा स्टेट, जिल्द 1, पृ० 18)। छठी शती ईस्वी के कई वलभी ताम्रपत्र राज्याज्ञाओ मे इसे किसी विषय (जिले) का मुख्यावास बतलाया

गया है (जे० पीएच० फोगेल, नोट्स ऑन टॉलेमी, बु० स्कू० ओ० अ० स्ट०, जिल्द, XIV, भाग, I)।

हुलुम्गूर (हुल्गूर)—यह गाँव मैसूर के धारवाड जिले की बकापुर तहसील मे, शिवगाँव से कोई 8 मील पूर्वोत्तर मे स्थित था जहाँ से विक्रमादित्य षष्ठम के राज्यकाल के अभिलेख उपलब्ध हुये है (एपि० इ० VIII, पृ० 329)।

इँटवा—इँटवा का प्राचीन स्थल किसी गहन वन के बीच मे स्थित एक पहाडी पर था जो सौराष्ट्र मे अशोक, रुद्रदामन एव स्कन्दगुप्त के अभिलेखो के लिए विश्रुत जूनागढ की विख्यात चट्टान से लगभग 3 मील दूर पर थी (एपि० इं०, XXVIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1949, पृ० 174)।

जरक—यह छोटा कस्बा सिन्धु नदी के पश्चिमी तट पर, हैदराबाद एव थथा (पाकि०) के प्राय: बीच मे स्थित है। यह मध्य सिधु एव अवर सिधु के बीच की वर्त्तमान सीमा है (कनिघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 329-30)।

जयपुर—यह गाँव आधुनिक जितपुर ही है जो नदोद से 6 मील पूर्व एव तोरन से लगभग आठ मील दक्षिणपूर्व मे स्थित है (एपि० इ० XXV, भाग, VII, जुलाई, 1940)।

जीर्णदुर्ग—इसे आधुनिक जूनागढ से नही किंतु एक दुर्ग से समीकृत किया जा सकता है। जूनागढ नगर के भीतर दामोदर घाट की सीमा और गिरनार के उन्नत ढलान पर स्थित दुर्ग को जीर्णदुर्ग कहा जाता था (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, पृ० 221)।

जूनागढ़—द्रष्टव्य गिरिनगर (गिरनार)।

जुन्निनगर—इसकी पहचान सभवत पूना से लगभग 55 मील उत्तर मे स्थित जुन्नार नामक प्रसिद्ध स्थान से की जा सकती है (एपि० इ०, XXV, भाग, IV, पृ० 168)।

कच्छ—यह पश्चिमी भारत का एक देश है (ल्युडर्स तालिका, स० 965)। इसे कूच या मरुकच्छ से समीकृत किया जा सकता है (तुलनीय, बृहत्सहिता अध्याय, XIV)। पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (2.4.1.133) मे इसका वर्णन किया है।

कलियाणग्राम—(इ० ऐ०, VI, 205, और आगे) यह उत्तर गुजरात मे है और इसे कालियना से समीकृत किया जा सकता है।

कल्लिवन—यह नासिक जिले के पश्चिमोत्तर भाग मे स्थित कल्वान है (एपि० इं०, XXV, भाग, V, पृ० 230—पृथ्वीचन्द्र भोगशक्ति के दो दानपत्र)।

कन्हेरी—बंबई से लगभग 20 मील उत्तर में कन्हेरी नामक की गुफाओं का एक विशाल समूह स्थित है। अनेक वर्षों तक इन गुफाओं मे बौद्ध भिक्षुओं का निवास था। ये थाना के निकट स्थित हैं। ये गुहाएँ एक सघन वन के बीच में स्थित एक पहाड़ी की विशाल कंदरा में बनायी गयी हैं। इन गुहाओ में से अधिकांश में एक कमरा है जिसके सन्मुख एक छोटी दालान स्थित होती है। शिल्प परवर्त्ती आठवी या नवी शताब्दी ई० का है। इन गुफाओ से उत्तर में एक विशाल गुहा है जिसमें तीन डगोबा एव कुछ मूर्त्तियाँ है। फर्ग्यूसन के अनुसार यह गुहा मंदिर 86 फीट लंबा एवं 39 फीट चौड़ा है। इसमे 34 खभे एव एक सादा डगोबा है। यहाँ पर बुद्ध की दो भीमकाय प्रतिमाएँ एवं बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की एक खडी हुयी प्रतिमा है। यहाँ पर अनेक लघु कोठरियाँ है जो एक के ऊपर एक बनी हुयी हैं। दसवी गुफा दरबारहाल (महाकक्ष) है जो तगघाटी के दक्षिण की ओर स्थित है। कदरा के दक्षिण की ओर पहाड़ी के ढाल पर खोदी गयी कोठरियों की कई पक्तियाँ हैं। गुफा के बाहर पत्थरों की कुछ चौकियाँ हैं। यहाँ पर एक डगोबा भी है जिसकी छत मे एक छत्र खुदा हुआ है। इन गुफाओं का काल-निर्णय करना कठिन है किंतु इतना अवश्य स्वीकार्य होना चाहिए कि कार्ली एव यहाँ पर स्थित गुहाओं के बीच मे शैली का अधिक अपकर्ष हुआ है। यहाँ की कुछ मूर्तियाँ नि सदेह बहुत बाद की हैं।

करहकट—(करहाटनगर या करहाट)—भरहुत अभिलेखों मे इसका वर्णन हुआ है (बरुआ ऐड सिन्हा, पृ० 11, 12, 17, 33)। यह एक नगर है जिसे हुल्ट्श ने महाराष्ट्र के सतारा जिले मे स्थित आधुनिक करहद से समीकृत किया है जहाँ से कृष्ण तृतीय के ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, IV, 278 और आगे)। एपि० इं०, (XXVI, पृ० 323) के अनुसार यह आधुनिक कराड है।

कर्दम-आश्रम—कर्दम ऋषि का आश्रम गुजरात मे सिद्धपुर मे था (भागवत पुराण, III, 24.9)।

कालयान—(**कालिअन, कलियान, कालियन**)—यह एक नगर का नाम है (ल्युडर्स की तालिका, सख्या, 1024, 986, 1032, 998)।

काल्लण—(कल्याण या कालयन)—यह एक पुर का नाम है (ल्युडर्स की तालिका, सं० 988)।

कान्हैरी—इसे खानदेश मे चालिसगाँव से आठ मील दक्षिण पश्चिम में स्थित कन्हेर से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXV, भाग, V, जनवरी, 1940, पृ०, 208)।

कार्ली—बंबई एवं पूना के बीच बोरघाटा पहाड़ी मे कार्ली और भाजा

नामक दो प्रसिद्ध बौद्ध गुहा-मंदिर है। उनकी तिथि लगभग ईसवी सन् के प्रारंभ मे बतलाई जाती है। कार्ली की गुफाएँ बबई-पूना पथ के लगभग 2 मील उत्तर मे स्थित है। निकटतम रेलवे स्टेशन मलवली है। इन गुफाओ मे उत्कीर्ण अभिलेखों मे नहपान एव ऊषवदात के नाम आते है। दो अभिलेखो मे धूतपाल नामक किसी महान राजा का वर्णन है जिसे शुगवशीय देवभूति माना जाता है। इन गुहाओ के स्तंभ पूर्णतः लबवत है। मूल रक्षावरण पर मूर्त्तियो से अलकृत एक पत्थर का पर्दा डाल दिया जाता है। इन गुहाओ के प्रवेशद्वार पर चार सिहो से मडित एक स्तभ है जिसके मुख खुले हुये और चारों दिशाभिमुख है। दाहिने हाथ की ओर एक शिव मदिर है और उसके निकट ही चक्र से मडित एक दूसरा स्तभ है। बाहरी द्वार मडप भवन के आकार से अधिक चौड़ा है। यहाँ पर चैत्य-गोमुखो से सज्जित अनेक लघुरूप मदिरो के अग्र भाग है। द्वारो के दोनो ओर विशाल युग्म आकृतियाँ कान्हेरी की प्रतिमाओ के समान प्रतीत होने है। यहाँ पर बुद्ध के साथ पद्मपाणि चित्रित किये गये है और अति सभवत कमल पर अपना पैर रखे हुये सिंहासन पर बैठे हुये मजुश्री को चित्रित किया गया है। प्रवेश द्वार मे गलियारे के नीचे से तीन दरवाजे है। यहाँ पर पद्रह स्तभ है जिनके आधार-पीठ लक्ष्मी के जलकलश है, दण्ड अष्ट पार्श्वीय है जो सघ का प्रतिरूपक है। स्थापत्य की दृष्टि से ये सभी गुफाएँ श्रेष्ठ हैं। जाली का काम प्राय. सर्वश्रेष्ठ है। पहली एव दूसरी गुफाओं का चैत्य एक तिमजिला विहार है। सर्वोच्च मजिल मे चार स्तभो युक्त एक दालान है। सर्वोच्चमजिल की बाँई ओर पाँच कोठरियो के सामने एक ऊँचा चबूतरा है। दरवाजे अच्छी तरह से लगे है। तीसरी गुफा एक दुमजिला विहार है। चौथी गुफा चैत्य के दक्षिण मे स्थित है और अभिलेखों से यह विदित होता है कि आध्र-नरेश गौतमी पुत्र पुलमायि के शासन काल मे हरफन ने इसे दान दिया था (कार्ली की गुफा मे स्थित अभिलेखों के लिए द्रष्टव्य, एपि० इ०, VI, 47 और आगे)।

केलोडि (केलवडी)—बीजापुर जिले के मुख्य नगर बादामी से लगभग 10 मील उत्तर मे स्थित यह एक गाँव है जहाँ से सोमेश्वर प्रथम के शासनकाल का एक अभिलेख (1053 ई० मे लिखित) उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, IV, 259 और आगे)।

खर्जूरिका—यह गाँव मालवा के समीप या मालवा क्षेत्र के अतर्गत् स्थित था। उज्जैन के परितः खजुरिया सामान्य वस्तु है (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935)।

खानापुर—यह महाराष्ट्र राज्य के सतारा जिले के खानापुर तालुक का

प्रमुख शहर है (एपि० इ०, XXVI, भाग, VIII, जुलाई, 1948, पृ० 312)।

खेद—युवान-च्वाङ के अनुसार यह मालवा से 50 मील पश्चिमोत्तर में स्थित था। कुछ लोगो ने इसे गुजरात मे स्थित बतलाया है। चीनी तीर्थयात्री के अनुसार इसकी परिधि 500 मील थी (कनिंघम, ए० ज्या० इ०, पृ० 563 और आगे)।

खेटक—यह गुजरात मे आधुनिक खेरा है (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 103)। कुछ लोगो ने इसे कैरा से समीकृत किया है (इपार्टेट इस्क्रिप्शस फ्रॉम द बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 29)।

कोडवल्ली—इसकी पहचान कोल्हापुर से लगभग सात मील पूरब मे स्थित कोडोली से की जा सकती है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I व II, 1925)।

कोल्लगिरि—इसका वर्णन बृहत्सहिता (XIV, 13) मे है। कुछ लोगो ने उसे कोल्हापुर से समीकृत किया है।

कोल्लापुर—यह आधुनिक कोल्हापुर का प्राचीन नाम है (एपि० इ०, III, 207, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 30)।

कोलूर—यह गाँव करजगीशहर मे प्राय पश्चिम मे लगभग तीन मील दूर पर धारवाड जिले के करजगी तालुक मे स्थित है (एपि० इ०, XIX, पृ० 179)।

कोटिनारा—यह सुराष्ट्र का एक महत्त्वपूर्ण नगर है जहाँ वदो एव आगमो मे मुनिष्णात सोम नामक एक ब्राह्मण रहता था। वह नियमत छ विहित कर्मों को सपादित किया करता था (लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 181)।

कुकुर—यह उत्तरी काठियावाड मे आनर्त्त के समीप एक देश था (ल्युडर्स की तालिका, स०, 965)। भागवत पुराण मे वर्णित कुकुर द्वारका क्षेत्र मे निवास करते प्रतीत होते है। बृहत्सहिता (XIV 4) मे उन्हे पश्चिमी भारत मे स्थित बतलाया गया है। गौतमी बलश्री के नासिक गुहालेख के अनुसार उसके पुत्र ने सुरठो, मूलकों, अपरान्तो, अनूपो, विदर्भों एव अन्य जनो के साथ कुकुरो को भी जीता था। रुद्रदामन के जूनागढ शिलालेख से हमे ज्ञात होता है कि कुकुरो-समेत उनमे से अधिकाश इन जनों को उसने पुन. पराजित किया था। अति सभवतः इन लोगो को दक्कन के तत्कालीन सातवाहन नरेश के अधिकार से अपहृत कर लिया गया था। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, ट्राइब्स ऑव ऐश्येंट इडिया, पृ० 390)।

कुलेनूर—यह मैसूर के धारवाड जिले मे स्थित एक गाँव है जहाँ पर जयसिंह द्वितीय के शासनकाल का अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XV, 329 और आगे)।

कुंभारोटकग्राम—(एपि० इ०, XIX, 236)—यह उत्तरी एव मध्य गुजरात मे है और इसकी पहचान मोदस से 13 मील पूर्व मे स्थित कामरोद से की जाती है।

कुशस्थलपुर—इलाहाबाद स्तभ मे इसका वर्णन कुस्थलपुर के रूप मे किया गया है। कुशस्थलपुर द्वारका[1] के एक तीर्थस्थान का नाम है। यह आनर्त्त की (काठियावाड) राजधानी थी।

कुशावर्त्त—योगिनीतंत्र (2.4, पृ० 128-129) मे इसका वर्णन है। यह गोदावरी के स्रोत के निकट, नासिक से 21 मील दूर एक पुण्य सरोवर है।

लक्ष्मेश्वर—यह मैसूर के धारवाड जिले की सीमा के अतर्गत् लक्ष्मेश्वर तालुक का मुख्यावास है जहाँ से युवराज विक्रमादित्य का स्तभ-लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XIV, 188 और आगे)।

लाट—बधु-वर्मन के मदसोर-अभिलेख मे लाट का वर्णन मिलता है। प्रतीहार-नरेश कक्कुक के घाटियाला अभिलेख के अनुसार उसने लाट देश मे बहुत यश पाया था (एपि० इ०, IX, 278-80)। कुछ लोगो के अनुसार लाट माही एव निचली ताप्ती नदियो के मध्य स्थित खानदेश सहित दक्षिण गुजरात था। कुछ लोग उसे मही एव किम नदियो के मध्य स्थित मानते है (इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ्रॉम द बडौदा स्टेट, जिल्द I, पृ० 29)। इसमे सूरत, भडौच, खेदा जिले एव बडौदा के कुछ भाग समिलित थे (न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 114)। यह उत्तरी कोकण एव गुजरात का प्राचीन नाम था। ब्युलर के अनुसार लाट मही एव किम नदियो के बीच का क्षेत्र केंद्रीय गुजरात है और इसका मुख्य नगर भडौच था। कर्ण के (रीवाँ शिलालेख मे लाट का उल्लेख है जिसकी पहचान साधारणतया केंद्रीय एव दक्षिण गुजरात से की जाती है (एपि० इ०, XXIV, भाग, III, जुलाई, 1937, पृ० 110)। लाटराष्ट्र (पालि लालरट्ठ—दीपवस, पृ० 54, महावस, पृ० 60) की पहचान गुजरात के प्राचीन राज्य लाट से की जाती है, दीपवस (पृ० 54) के अनुसार जिसकी राजधानी सिंहपुर (सीहपुर) थी।

---

[1] **तुलनीय, भागवत पुराण, I, 10, 27; VII. 14. 31; IX, 3 28; X. 61. 40; X. 75 29; X. 82. 36; XII. 12. 36**

इस देश का प्रथम वर्णन सभवतः टॉलेमी ने किया था। उसके अनुसार लारिके (Larike) इडो-सीथिया (Indo-Scythia) के पूर्व में समुद्र-तट पर स्थित था (मैक्रिंडिल, टॉलेमीज ऐंश्येंट इडिया, पृ० 38, 152-153)। लका के पालिवृत्तों मे लाल देश का उल्लेख राजकुमार विजय के नेतृत्व मे लका मे आर्यों के प्रथम देशातर के सदर्भ मे हुआ है। लाल को गुजरात मे लाट या लाड तथा बंगाल मे राढ दोनों से समीकृत करने की चेष्टा की गयी है और दोनो देश लका में आर्य-सस्कृति के प्रसार के श्रेय के लिए समान रूप से दावेदार है। प्राचीन गुप्त सम्राटो के काल मे लाट देश को लाट विषय के अतर्गत एक प्रशासकीय प्रात के रूप मे गिना गया था। लाटदेश अतिसभवत गुर्जर एव राष्ट्रकूट अभिलेखो मे वर्णित लाटेश्वर देश ही है। बड़ौदा ताम्रपत्र मे (श्लोक, 11) एलपुर को लाटेश्वर की राजधानी बतलाया गया है। अणहिल्वाडपाटन (961 ई०) के चालुक्यो की अधीनता मे धीरे-धीरे लाट नाम के स्थान पर गुर्जर भूमि सज्ञा व्यवहृत होने लगी थी। लास्सेन ने लारिके को सस्कृत शब्द राष्ट्रिक के प्राकृत रूप लाटिक से समीकृत किया है जो सुगमता से लाट के समान हो जाता है यद्यपि राष्ट्रिक एव लाटिक का तादात्म्य ग्राह्य नही है। अधिक विवरण के लिये द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 27, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येट इडिया, पृ० 351-53

लोन—इसकी पहचान भिवडी तालुक मे भिवंडी से 6 मील पूर्व मे स्थित लोनद नामक एक गाँव से की जाती है (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII, पृ० 257)।

महल्ल-लाट—इसका अर्थ बृहत्तर लाट है जो बेलोरा से लगभग 18 मील पश्चिम-उत्तर मे स्थित, अमरावती जिले के मोर्सी तालुक मे स्थित लडकी का प्रतिरूप है (एपि० इ०, XXIV, भाग, VI, अप्रैल, 1928)।

मोहनजोदड़ो—यह सिध (पाकिस्तान) के लरकाना जिले मे है। यहाँ के अवशेष तृतीय सहस्राब्दी के उत्तरार्ध की एक सुविकसित नागरीय सभ्यता का परिचय देते है। यह साधारणतया स्वीकार किया जाता है कि मोहेनजोदड़ो मे ताम्रपाषाणिक-युग की सभ्यता के प्रचुर अवशेष हमें प्राप्त होते हैं। अभी तक उत्खनित सिन्धु-घाटी के प्रागैतिहासिक स्मारको का अध्ययन सतर्कतापूर्वक विभिन्न दृष्टिकोणो से किया जा चुका है कितु अभी तक की शोधो का सर्वाधिक अद्भुत अंश-सिन्धु के अभिलेखो को पढना अभी शेष है। भूमिगत जलनि:सारण प्रणाली सुदर थी। यहां के 39 फीट लंबे, 29 फीट चौड़े एवं 8 फीट गहरे विशाल स्नानागार में नीचे उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हुयी थी। कुछ भवन एक मजिले

एवं कुछ दो मजिलें थे। विवरण के लिए द्रष्टव्य, जे० मार्शल, मोहेनजोदड़ो ऐंड इडस सिविलाइज़ेशन, I-III, मेके, फर्दर एक्सकेवेशस एट मोहेन-जोदड़ो, III, रायल एशियाटिक सोसायटी, बगाल के सभापति-भाषण, 1948

मही—इसके अन्य नाम महती (वायु० XLV, 97), महित (महाभारत, भीष्मपर्व, XI, 328) एव रोही (वराहपुराण, (lxxxv) है। यह नदी पारिपात्र पर्वत से निकलती है और खभात की खाडी मे गिरती है। बसवाड़ा (राजस्थान मे) तक इसका प्रवाह दक्षिण-पश्चिमाभिमुख है जहाँ से यह दक्षिण की ओर मुडकर गुजरात से प्रवाहित होती है।

ममजरबाटक—यह सतारा जिले मे तासगाँव नामक तालुक के उसी नाम के मुख्यावास से 9 मील पूर्वोत्तर मे मामजारडे नामक आधुनिक गाँव है (एपि० इं०, XXVII, भाग, V, पृ० 210)।

मनगोलि—यह बीजापुर जिले के बागेवाडी तालुक के मुख्यावास बागेवाडी से लगभग 11 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, V, 9 और आगे)।

मंदसोर—देखिये दशपुर।

मंकणिका—यह बडौदा जिले के संखेडा तालुक मे स्थित आधुनिक मामकणी है (इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ़्रॉम द बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 4)।

मौरेयपल्लिका—यह नासिक से तीन मील दक्षिण–पश्चिम मे स्थित मोरवाडी है (एपि० इ०, XXV, भाग, V, जनवरी, 1940, पृ० 230, पृथ्वीचन्द्र भोग-शक्ति के दो दानपत्र)।

मयूरखण्डी—गोविन्द तृतीय के अञ्जनवती अभिपत्रो मे इसका उल्लेख है जो गोविन्द तृतीय के काल मे राष्ट्रकूटो की राजधानी रही होगी। ब्युलर ने मयूरखण्डी को सातमाला या अजता पर्वतमाला मे, सप्तश्रृंगि के निकट और नासिक जिले में वणी के उत्तर मे स्थित मोरखण्ड नामक एक पहाडी दुर्ग से समीकृत किया है (इ० ऐ०, VI, पृ० 64)।

मिन्नगर—दूसरी शताब्दी ई० मे यह अवर सिध की राजधानी थी। इस स्थान की वास्तविक स्थिति सदिग्ध है (कनिघम, ए० ज्या० इं०, पृ० 330 और आगे)। 'पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन सी' के अनुसार यह इडो-सीथिया की राजधानी थी। टॉलेमी ने इसे बिनगर कहा है। मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बॉई टॉलेमी, पृ० 152)। डा० दे० रा० भडारकर की धारणा है कि इसे मंदसोर से समीकृत किया जा सकता है। पेरिप्लस के लेखक ने राजा

मेम्बेरस का उल्लेख किया है (जिसे कुछ लोग नहपाण से समीकृत करते हैं) जिसकी राजधानी एरियाके, जो अपरान्तिक है, मे मिन्नगर थी।

मिराज—यह महाराष्ट्र मे दक्षिणी सतारा जिले मे स्थित मिराज नामक स्थान है जहाँ पर जयसिंह द्वितीय के 1024 ई० के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, XII, पृ० 303)।

मिरिञ्जी—इसकी पहचान मिराज से की जा सकती है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, 1935, पृ० 30)।

मोहडवासक—इसका वर्णन हरसोल दानपत्र मे है (एपि० इं०, XIX, 236)। इसकी पहचान अहमदाबाद जिले में प्रतेज तालुक मे मोहदसा नामक आधुनिक गाँव से की जा सकती है।

मुकुडसिवायिवा—यह कल्याण मे एक स्थान है (ल्युडर्स की तालिका, स० 998)।

मूलवासर—यह गाँव काठियावाड के ओखा मंडल क्षेत्र मे द्वारका से लगभग 10 मील दूर पर स्थित है जहाँ पर 200 ई० मे लिखित महाक्षत्रप रुद्रदामन प्रथम का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (इपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ्रॉम द बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 1)।

मुलगुण्ड—इसे धारवाड जिले के गडग तालुक मे स्थित इसी नाम के एक आधुनिक गाँव से समीकृत किया जाता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941, पृ० 61)।

मूषिक—मूषिक या मूषक (महाभारत, भीष्मपर्व, IX, 366, 371) लोग एक उत्तरी कबीले की प्रशाखा थे जिन्हे सिकदर के इतिहासकारो ने मौसिकेनोज कहा है। मौसिकनोज के देश मे आधुनिक सिंध (सप्रति, पाकिस्तान मे) का एक विशाल भाग सम्मिलित था। इसकी राजधानी को सिखूर जिले मे स्थित अलोर से समीकृत किया गया है। एरियन के अनुसार (चिन्नॉक, एरियन, पृ० 319) इस क्षेत्र मे ब्राह्मण लोग बहुत प्रभावशाली थे। कहा जाता है कि मकदूनियाँ के आक्राता के विरुद्ध जन-विद्रोह कराने मे ये लोग प्रमुख अभिकर्त्ता थे। किंतु सिकदर ने उन पर अचानक आक्रमण किया और उन्हे उसके सामने शस्त्र डाल देना पडा (कै० हि० इ०, I, 377)। स्ट्रेबो ने इस प्रदेश के निवासियो का एक रोचक विवरण प्रस्तुत किया है (एच० ऐंड एफ० द्वारा अनूदित, III, पृ० 96)। भारतीय साहित्य में हमे मूषिको के प्रति प्रायः उल्लेख प्राप्त होते हैं। मार्कण्डेयपुराण (LVIII 16) मे वर्णित मूषिक अति सभवतः मूषक या मूषिक ही थे जो पार्जिटर के अनुसार (मार्कण्डेय पुराण, 366) सभवतः मूषी

नदी के तट पर निवास करते थे, जिसके तट पर आधुनिक हैदराबाद (पाकि०) अवस्थित है। मूषिको का यह नाम सभवतः इसलिए पड़ा था कि उनका क्षेत्र पश्चिमोत्तर सार्थ-पथ के उस भाग मे स्थित था जिसे मूषिक-पथ (Red-tract) कहते थे, (बरुआ, अशोक ऐंड हिज इस्क्रिप्शस, अध्याय, III)। पतञ्जलि द्वारा उसके महाभाष्य (IV 1 4) मे वर्णित मौषिकार जन अति सभवतः मूषिको से सबधित थे।

नंदिवर्धन—इसका तादात्म्य रामपुर* जिले मे रामटेक के समीप नगरधन या नदरधन से किया जा सकता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, VI, अप्रैल, 1938)। इसका वर्णन कृष्ण तृतीय के दिउली अभिपत्रो मे भी हुआ है।

नरवन—रत्नगिरि जिले के गुहागडपेट मे समुद्रतट पर स्थित यह एक गाँव है। नरवन से कोई चार मील पूर्वोत्तर के चिन्द्रमाड स्थित है जो आधुनिक चिन्द्रवल है (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 127)।

नरेन्द्र—यह गाँव मैसूर के धारवाड जिले मे स्थित है। यह धारवाड बेलगाँव राज-पथ के समीप, धारवाड से लगभग $4\frac{1}{2}$ मील, उत्तर, उत्तर-पश्चिम मे स्थित है (एपि० इ०, XIII, पृ० 298)।

नौसारी—द्रष्टव्य, नागसारिका।

नवपट्टला—उस जिले मे, जिसमे यह स्थित था, आधुनिक नयाखेडा के परिवर्ती क्षेत्र समिलित हो सकते है जो तिखारी से लगभग आठ मील पश्चिम मे स्थित है (एपि० इ०, XXV, भाग, VII, जुलाई, 1940)।

नागसारिका—कक्कराज सुवर्णवर्ष के सूरत अभिपत्रो मे नागसारिका (नवसारिका) का वर्णन है जो सूरत के दक्षिण मे लगभग बीस मील दूर पर स्थित आधुनिक नौसारी है (दतिदुर्ग के एलोरा अभिपत्र भी द्रष्टव्य, एपि० इं०, XXV, जनवरी, 1939, पृ० 29, एपि० इ० XXI, भाग, III, जुलाई, 1931; ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, 26, 250)। नौसारी गुजरात के सूरत जिले के नौसारी मंडल का मुख्यावास है जहाँ से 421 वर्ष मे अकित शीलादित्य के ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ० VIII, 229 और आगे)। इसे नवराष्ट्र भी कहते हैं जो भडौच जिले मे स्थित टॉलेमी के नोआग्राम्म के समान है (तुलनीय, महाभारत, सभापर्व, अध्याय, 31)।

नागुम—इसे नागौन से समीकृत किया जा सकता है जो महाराष्ट्र के पनवेल

***यह रामपुर भूल से लिखा गया है। वस्तुत इसे नागपुर होना चाहिए।**

तालुक में उरन के दक्षिण-पश्चिम में लगभग दो मील दूर पर स्थित है (एपि० इं०, XXIII, भाग, VII)।

नांदिपुरविषय—गुर्जर जयभट्ट तृतीय के अञ्जनेरी अभिपत्रों मे इसका वर्णन है जिसकी पहचान गुजरात (भूतपूर्व राजापिप्ला रियासत) में करजन नदी के तट पर स्थित नान्दोद से की जा सकती है (एपि० इं०, XXV, भाग, VII, जुलाई, 1940)। लाटदेश मे स्थित नादिपुर नर्मदा-तट पर स्थित आधुनिक नान्दोद है (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 103)।

नासिक—(नसिक)—गुहाओ मे स्थित यह दो प्राचीनतम अभिलेखो (20 व 22) में वर्णित है। बीसवे अभिलेख मे नासिक के लोग दान देते हुये वर्णित है और उसी अभिलेख मे एक गुफा का भी वर्णन है। बाईसवे अभिलेख मे नासिक के श्रमण अमात्य द्वारा प्रदत्त एक गुफा का वर्णन है। नासिक का वर्णन अड़तीसवी भरहुत पूजापरक नाम-पत्र (Votive label) मे भी हुआ है। यह पुराणो मे वर्णित नासिकी या नैसिक तथा रामायण का जनस्थान ही है। यह बृहत्संहिता (XIV. 13) मे वर्णित नासिक्या है। ल्युडर्स की तालिका (स० 799, 1109) मे इसका वर्णन एक नगर—नासिक के रूप मे हुआ है। ब्रह्माण्ड पुराण के अनुसार यह नर्मदा के तट पर स्थित था। जनस्थान गोदावरी-तट पर स्थित पञ्चवटी के निकट ही था। लक्ष्मण द्वारा यहाँ शूर्पणखा की नाक काट लिये जाने के कारण इसका नाम नासिक पडा। नासिक आधुनिक नासिक है जो बबई से लगभग 75 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित है। नासिक जिले का मुख्यावास नासिक गोदावरी के दाहिने तट पर नासिक रोड स्टेशन से लगभग चार मील पश्चिमोत्तर मे स्थित है। आंध्र के सातवाहन-नरेशो के शासन-काल मे नासिक बौद्धो के भद्रयानिय सप्रदाय का गढ था (बरुआ ऐंड सिन्हा, भरहुत इंस्क्रिप्शस, पृ० 16, 128; तुलनीय, ल्युडर्स की तालिका, स०, 1122-1149)।

नासिक की जलवायु स्वास्थ्यकर एव सुखद है। नौ पहाड़ियो पर स्थित होने के कारण इस मत की पुष्टि होती है कि यह नौ कोणो वाला था। नगर के तीन भाग है . गोदावरी नदी के बाएँ तट पर स्थित पञ्चवटी या प्राचीन नासिक, पञ्चवटी के दक्षिण मे, गोदावरी नदी के दाहिने तट पर नौ पहाडियों पर स्थित मध्य नासिक और पञ्चवटी के पश्चिम मे उक्त नदी के दाहिने तट पर स्थिन आधुनिक नासिक (गज़ेटियर ऑव बाबे प्रेसिडेंसी, नासिक, बंबई, 1883, जिल्द XVI, पृ० 466 और आगे)। गोदावरी नदी के दाहिने तट पर उमा महेश्वर के मंदिर से लगभग 70 गज दक्षिण-पूर्व मे नीलकण्ठेश्वर का मदिर स्थित है।

यह रुचिर ढंग से तराशे एव अच्छी तरह से नक्काशे हुये कूट से दृढ़ बना हुआ है। यह नदी के पार पूर्व की ओर अभिमुख है और इसमे द्वार-मडप का एक गुबद एवं सुष्ठु आकार वाला एक शिखर है। आराध्य एक अत्यत प्राचीन लिंग बतलाया जाता है जो राम के श्वसुर राजा जनक के काल का बतलाया जाता है (नासिक, गज़ेटियर, ऑव बाबे प्रेसीडेसी, जिल्द, XVI, 1883, पृ० 505)।

पञ्चवटी से लगभग एक मील पूर्व मे तपोवन स्थित है। यहाँ पर एक प्रसिद्ध मदिर एवं राम की प्रतिमा है जो इस वन से लक्ष्मण द्वारा सचित किये हुए फलों पर जीवन निर्वाह करते थे (वही, 537)।

नासिक की बौद्ध गुहाएँ सुविख्यात हैं। उनको पाण्डुलेण कहा जाता है। वे सडक-तल से लगभग 300 फीट की ऊँचाई पर है। वे हीनयान बौद्धो के एक सप्रदाय भद्रयानिको द्वारा खुदवायी गयी है। वहाँ पर कुल तेईस गुफाएँ है। सबमे प्राचीन चैत्य गुफा है जिसकी तिथि ईस्वी सन् के प्रारभ मे है। वहाँ पर चार विहार है। पहली गुफा एक अपूर्ण विहार है। दूसरी गुफा मे उत्तर कालीन महायान बौद्धों द्वारा अनेक सवर्द्धन किये गये हैं। तीसरी गुहा एक बड़ा विहार है जिसमे 41 फीट चौडा एव 46 फीट गहरा एक महाकक्ष है। प्रवेश-द्वार पर बोधि-वृक्ष, डगोबा, चक्र एव द्वारपाल दृष्टिगत् होते है। दसवी गुहा एक विहार है जिसमे नहपाण के कुल का एक अभिलेख है जिसने 120 ई० के पूर्व उज्जैन मे शासन किया था। दालान के स्तभो पर घटाकार पारसीक शीर्ष है। तीन सादे दरवाजों एव दो खिड़कियो से युक्त महाकक्ष लगभग 43 फीट चौड़ा और 45 फीट गहरा है। सत्रहवी गुहा का महाकक्ष 23 फीट एव 32 फीट गहरा है। बरामदे मे सामने स्थित छह सीढियो से पहुँचा जाता है जो दो केंद्रीय अष्टकोणीय स्तभो के बीच बनी हुयी है। पिछली दीवाल पर बुद्ध की एक खड़ी हुयी प्रतिमा है। दाहिनी ओर चार कोठरियाँ हैं। यहाँ पर एक अभिलेख है जिससे हमें ज्ञात होता है कि गुहा का निर्माण सुवीर देश के निवासी धर्मदेव के पुत्र इन्द्रानिदत्त ने कराया था। सत्रहवी गुहा बहुत बाद की है। उन्नीसवी गुहा लगभग दूसरी शताब्दी ई० की एक विहार गुहा है। तेइसवी गुहा मे पद्मपाणि एव वज्रपाणि द्वारा परिसेवित बुद्ध की मूर्ति है। धर्मचक्रमुद्रा एव ध्यानमुद्रा दोनो मे ही बुद्ध की कतिपय प्रतिमाएँ है। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, गज़ेटियर ऑव बाबे प्रेसिडेंसी, भाग, XVI, नासिक, पृ० 542 और आगे।

निवगुण्डि—यह मैसूर के धारवाड़ जिले मे बंकापुर तालुक के मुख्यावास, शिवगाँव से लगभग चार मील दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम में स्थित यह एक गाँव है

जहाँ पर विक्रमादित्य षष्ठम् का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ० XXIII, 12 और आगे)।

निर्गुण्डिपद्रक—इसकी पहचान दभोई से 12 मील दूर, आधुनिक नागरवाडा से की जाती है (एपि० इं०, II, '23)।

निषाद—निषाद-जनपद का प्रथम अभिलेखीय वर्णन रुद्रदामन के जूनागढ-शिलालेख मे हुआ है, जिसे निषाद् समेत पूर्वी-पश्चिमी मालवा, प्राचीन माहिष्मती क्षेत्र, गुजरात मे द्वारका का परिवर्ती जिला, सुराष्ट्र, अपरान्त, सिन्धु-सौवीर एव अन्य देशों पर विजय प्राप्त करने का श्रेय दिया जाता है। इस देश का वर्णन ल्युडर्स की तालिका (सख्या, 965) मे भी हुआ है। विक्रम सवत् 1485 मे लिखित मोकल के चितौरगढ-अभिलेख मे कहा गया है कि मोकल ने अगो, कामरूपो वङ्गो, चीनो एव तुरुष्कों समेत निषाद के जनपद को पराजित किया था (एपि० इ० II, 416 और आगे)। निषादो का वर्णन पहली बार उत्तरकालीन सहिताओ और ब्राह्मणो (तैत्तिरीय सहिता, IV, 5.4.2; काठक सहिता, XVII, 13, मैत्रायणी सहिता, II, 9, 5, वाजसनेयी सहिता, XVI 27; ऐतरेय ब्राह्मण, VIII, 11; पञ्चविंश ब्राह्मण, XVI, 6 8 आदि) मे हुआ है। लाट्यायन श्रौतसूत्रमे (VIII 2.8) निषादो के एक गाँव का एव कात्यायन श्रौतसूत्र मे (I.1.12) मे किसी प्रकार के कौशल मे अग्रणी निषादस्थपति का उल्लेख है। मछली मारकर मानवीय उपभोग के लिये प्रदान करना निषादो का विहित सामाजिक कर्त्तव्य था (मनु, X.48)। पालिग्रथो के अनुसार वे जगली आखेटक एव मछुवारे थे (फिक, डी सोश्यॅल ग्लीडेरुग, 12, 160, 206 और आगे)। पार्जिटर का अभिमत है कि वे लोग बर्बर सस्कृति वाले या आदिवासी जन थे (ऐं० इ० हि० ट्रे०, पृ० 290) और वे आर्यावर्त्त के बाहर रहते थे। इसकी पुष्टि रामायण (आदिकाण्ड, अध्याय, I, अयोध्याकाण्ड, अध्याय, 51) मे वर्णित निषादराज गुह की कहानी से होती है जो एक वन्य जाति के बतलाये गये है। मनु ने निषादो की उत्पत्ति किसी ब्राह्मण पिता एव शूद्रा माता से उत्पन्न सतति के रूप मे बतलायी है (मनुसहिता, X, 8)। महाकाव्यो एवं पुराणो के काल मे निषादो का सन्निवेश झलवर एव खानदेश की सीमा निर्धारित करने वाली विन्ध्य एव सतपुडा पर्वत-मालाओ के मध्य स्थित पर्वतो मे था (मैल्कम, मेमायर्स ऑव सेंट्रल इडिया, जिल्द, I, पृ० 452)। यह महाभारत से सिद्ध होता है (III, 130 4) जिसमे निषादराष्ट्र को पारिपात्र या पारिपात्र के समीप पश्चिमी विन्ध्य एव सरस्वती के क्षेत्र मे स्थित बतलाया गया है (महाभारत, XII, 135. 3-5)। इसी महाकाव्य मे निषादो को वत्सो एवं भर्गों से सबधित बतलाया गया

है (II. 30. 10-11)। उनका संनिवेश पूर्व मे भी था (बृहत्संहिता, XIV. 10)। रामायण के (II. 50, 33; 52, 11) अनुसार प्रयाग के सामने गंगा के उत्तरी तट पर स्थित शृंगवेरपुर निषाद-राज्य की राजधानी थी। यह राम के मित्र निषाद-राजा गुह द्वारा शासित एक विशाल नगर था। उसने राम की सत्कारपूर्वक अभ्यर्थना की थी (अयोध्याकाण्ड, XLVI, 20, XLVII 9-12; तुलनीय, ज० रा० ए० सो०, 1894, पृ० 237, एफ० ई० पार्जिटर, द ज्यॉग्रफी ऑव रामाज इक्जाइल)। दूसरी शताब्दी ईस्वी के मध्य निषाद देश पर पश्चिमी क्षत्रपो का आधिपत्य था (बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इंडिया, अध्याय, XXV)। अधिक विवरण के लिये द्रष्टव्य बि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 42-43)।

ओस्सडियोई—सत मार्टिन जैसे कुछ विद्वानों के अनुसार ओस्सडियोई की पहचान अति सभवत महाभारत मे वर्णित, सिन्धु-सौवीरो एव शिवियो से सबद्ध वशाति से की जाती है (महाभारत, VII, 19, 11, 89, 37; VIII. 44-49; VI 106. 8, 51. 14)। इस कबीले की ठीक भौगोलिक स्थिति नही निश्चित की जा सकती (लाहा, इडोलॉजिक्ल स्टडीज, भाग I, पृ० 33-4)।

ओसुम्भल—इस गाँव का तादात्म्य कमरेज से सात मील दक्षिण मे स्थित आधुनिक उबेल से किया जाता है। सूरत से प्राप्त अल्लशक्ति के एक दानपत्र से इस गाँव मे एक खेत के दान का निबधन है (दे० रा० भडारकर वाल्यूम, पृ० 54-55)।

पछत्रि—इस गाँव का समीकरण घुमली से छ मील पश्चिम मे स्थित आधुनिक पछर्तादि नामक गाँव से करना चाहिए (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 199)।

पडिवस—इसका तादात्म्य या तो उरान से दो मील उत्तर-पूर्व में स्थित फुद से या महाराष्ट्र राज्य के पनवेल तालुक मे उरान से लगभग तीन मील उत्तर में पज से किया जा सकता है (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII, पृ० 279)।

पलाशवनक—यह कीर्त्तिराज के सूरत अभिपत्र मे उल्लिखित है। इसका समीकरण सूरत जिले मे पलसना तहसील के मुख्यावास आधुनिक पलसना से किया जा सकता है (एपि० इ०, XXI, पृ० 256)।

पंपा—यह तुगभद्रा नदी की सहायक नदी है। इसका उद्गम अनगण्डि पहाड़ियों से आठ मील दूर ऋष्यमुख पर्वत मे है (तुलनीय बाबे गजेटियर, भाग, I, खड ,II, पृ० 369)। इस नदी के तट पर राम हनुमान से मिले थे, (रामायण, आदिकाण्ड, सर्ग, I, श्लोक, 58)। लक्ष्मण भी यहाँ आये थे। यह नदी रक्त-

कमलों से सुशोभित थी। इसका जल निर्मल और मनोरम था (रामायण, किष्किन्ध्याकाण्ड, सर्ग, I, श्लोक, 64-66, सर्ग, I, श्लोक, 1-6)। वहाँ पर पंपा नामक एक सरोवर था जो अत्यंत सुदर भी था। इसका जल निर्मल था (रामायण, किष्किन्ध्या काण्ड, सर्ग, I, श्लोक, 1-6)।

पञ्चवटी—यह पहले जनस्थान मे अथवा उसकी सीमा पर थी। दो रघुवशियों के साथ सीता यहाँ आयी थीं। जनस्थान की निवासिनी शूर्पणखा यहीं राम से मिली थी (रामायण, आदिकाण्ड, I, 47, आरण्यकाण्ड, XXIII; 12; महाभारत, 83, 162; ज० रा० ए० सो०, 1894, पृ० 247)। यहाँ पर लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक-कान काट लिये थे (रामायण, आरण्यकाण्ड, सर्ग, 21, श्लोक, 7; उत्तररचरितम्, प्रथम अक, 28)। यह वन गोदावरी नदी के समीप अगस्त्य के आश्रम के निकट था (वही, सर्ग, 13, श्लोक, 13-19, बगवासी सस्करण)। वन-पशुओं, मृगों आदि तथा फल-फूलो से सज्जित यह गोदावरी के तट पर स्थित थी। यह एक समतल, आनंदकर एव सुदर स्थान था। यह पक्षियों से परिपूर्ण था (रामायण, आरण्यकाण्ड, सर्ग 15, 1-5, 10-19)। यहाँ पर एक पर्ण-कुटी बनवायी गयी थी जिसमे सीता एव लक्ष्मण के साथ कुछ समय के लिये रामचन्द्र रुके थे (वही, 20-31)।

पञ्चाप्सर—यह सरोवर पञ्चवटी एव चित्रकूट के मध्य कही पर स्थित था (रघुवश, XIII, 34-47)। इसका वर्णन शातकर्णि के विहार-कुण्ड के रूप मे किया गया है (रघुवश, XIII, 36)।

पढारपुर—यह नगर भीमा नदी के दाहिने तट पर स्थित है और यहाँ पर विठोबा का प्रसिद्ध मदिर है (लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 43)।

पलासिनी—यह एक नदी का नाम है जो ऊर्जयत (ऊर्जयंत) पर्वत से निलकती है (ल्युडर्स की तालिका, सं० 965)। कुछ लोग इस नदी को छोटा नागपुर की कोयल की सहायक नदी परास से समीकृत करते है (लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 45)।

पलिताना—यह भावनगर जिले (गुजरात) में है जहाँ पर सिंहादित्य के दो ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, X I, पृ० 16)।

पट्टदकल—यह मैसूर राज्य के बीजापुर के बादामी तालुक या तहसील के मुख्यावास बादामी से उत्तर एवं पूर्व में लगभग आठ मील दूर पर स्थित एक गाँव है जहाँ से कीर्तिवर्मन द्वितीय के काल का एक स्तंभ लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, III, 1 और आगे)।

पानाड—इसकी पहचान महाराष्ट्र के कोलाबा जिले में अलीबाग से लगभग

आठ मील पूर्व और उत्तर में स्थित पेनाद से की जा सकती है (एपि० इ०, भाग, VI, अप्रैल, 1942, पृ० 287)।

पारसिक—यह थाना के समीप कोई द्वीप हो सकता है। इसकी स्मृति पारसिक नामक एक पहाडी द्वारा सुरक्षित है। कुछ लोगो के अनुसार यह फारस की खाड़ी मे स्थित ओरमुज नामक द्वीप हो सकता है (इंपार्टेंट इंस्क्रिप्शंस फ्रॉम द बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 66)।

पावकदुर्ग—इसे गुजरात में गोध्रा से लगभग पच्चीस मील दक्षिण मे और बडौदा से सड़क मार्ग से 29 मील दूर पञ्चमहल जिले मे पावागढ नामक पहाडी दुर्ग से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXIV भाग, V, पृ० 221)।

प्रभास—इसका वर्णन नहपाण के काल के नासिक गुहालेख मे (119-124 ई०) हुआ है। यह काठियावाड मे है (तुलनीय, मथुरा बुद्धिस्ट इमेज इस्क्रिप्शंस ऑव हुविष्क)। यह काठियावाड मे दक्षिणी समुद्रतट पर स्थित सुप्रसिद्ध प्रभास-पाटन या सोमनाथ पाटन है (गजेटियर ऑव बाबे प्रेसीडेंसी, 1883, नासिक, 637)। इसे प्रभासतीर्थ कहते है (ल्युडर्स की तालिका, स० 1099-1131)। भागवत पुराण (X. 45, 38; X. 78, 18, X. 79 9-21; X. 86, 2, XI 6 35, XI. 30, 6, XI. 30. 10) मे इस पुण्यतीर्थ को समुद्र-तट पर स्थित बतलाया गया है। भागवतपुराण (VII 14. 31) के अनुसार हरि के लिये पवित्र यह तीर्थ स्थान पश्चिम की ओर प्रवाहित होने वाली सरस्वती के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर अर्जुन एव बलराम आये थे (भागवत, X. 86, 2; X. 78, 18)। महाभारत (118 15, 119. 1-3) मे प्रभासतीर्थ का वर्णन है। कूर्मपुराण मे इसका उल्लेख भारत के एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल के रूप मे हुआ है (अध्याय, 30, श्लोक, 45-48; तुलनीय, अग्निपुराण, अध्याय, 109)। योगिनीतंत्र (2 4. 128; 2. 5. 141) में भी इसका वर्णन है। पद्मपुराण (अध्याय, 133) में प्रभास में सोमेश्वर का वर्णन है।

प्रायेस्तिक्षेत्र—आक्सीकेनोस के देश के लोगों को प्रायेस्ति कहा जाता था जो महाभारत (VI. 9, 61) में वर्णित प्रोष्ठों के वाचक हैं। कनिघम के अनुसार आक्सीकेनोस का क्षेत्र सिन्धु नदी के पश्चिम में लारखान (पाकि०) के परिवर्त्तीय समतल क्षेत्र मे स्थित था (इनवेज़न ऑव अलेक्जेंडर, पृ० 158)। आक्सीकेनोज ने सिकंदर का विरोध करने की चेष्टा की थी किंतु निष्फल रहे (कै० हि० इं०, 377)।

पुरंधर—सास्वद के निकट पूना के दक्षिण-पश्चिम में यह एक पहाड़ी दुर्ग है। यहाँ पर अनपहचानी गुहाएँ है और इस प्रकार की गुहाएँ भारत मे अभी तक नहीं मिली हैं (ज० रा० ए० सो०, भाग, 3 व 4, 1950, पृ० 158 और आगे)।

पूरावि—पूरावि पूर्णा नदी है जिसके तट पर नौसारी स्थित है (एपि० इ० XXI, भाग, III, जुलाई, 1931)।

रैवतक पहाड़ी—रैवत या रैवतक द्वारका के समीप थी। महाभारत में (आदिपर्व, CCXIX, 7906-17) कहा गया है कि इस पहाड़ी पर एक उत्सव हुआ था जिसमें द्वारका के नागरिको ने भाग लिया था। पार्जिटर इसे हलार मे बरदा पहाडियों से समीकृत करने के पक्ष मे है (मार्कण्डेय पुराण, पृ० 289)। स्कन्दगुप्त के जूनागढ अभिलेख मे रैवतक पहाडी का वर्णन है जो ऊर्जयत के सामने है (द्रष्टव्य, एपि० इ०, XXIV, भाग, V, जनवरी, 1938, पृ० 216 मे प्रकाशित महमूद का दोहत शिलालेख)। ईश्वरवर्मन मौखरि के जौनपुर शिलालेख मे इसका वर्णन विन्ध्य पर्वत के साथ हुआ है (का० इ० इ० जिल्द, III)। फ्लीट ने रैवतक को गिरनार की दो मे से एक पहाडी से समीकृत किया है न कि मुख्य गिरनार से (का० इ० इ०, III, पृ० 64, नोट, 11, इ० ऐ०, VI पृ० 239)। बृहत्सहिता (XIV. 19) मे इसको दक्षिण-पश्चिम सभाग मे स्थित बतलाया गया है। प्राचीन काल मे रैवत एव ऊर्जयत गिरनार में स्थित दो भिन्न पहाडियो के नाम रहे होगे किंतु बाद मे उन्हे एक ही माना जाने लगा (बाबे गजेटियर, जिल्द, VIII, पृ० 441)। महमूद के दोहद शिलालेख में वर्णित रैवतक वह पहाडी है जिस पर मंदिर है और जिसे अब गिरनार कहा जाता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, पृ० 222)। गुजरात मे जूनागढ़ के समीप रैवतक पहाडी या गिरनार स्थित है जिसे राजा दत्तात्रेय के धर्म-गुरु (पुरोहित) नेमिनाथ का जन्म-स्थान माना जाता है। इस पहाड़ी के पाद मे सुवर्णरेखा नदी प्रवाहित होती है। गिरनार पहाड़ी पर गुरुदत्तचरण नामक एक पदचिन्ह है। यहाँ पर नेमिनाथ एवं पार्श्वनाथ के मदिर प्राप्त होते हैं। गिरिनगर का नाम बृहत्सहिता (XIV. 11) मे आता है। गिरनार अशोक, रुद्रदामन एवं स्कन्दगुप्त के अभिलेखो मे प्रसिद्ध है। जूनागढ के पूर्व में अनेक बौद्ध गुहाएँ है। रुद्रदामन एवं स्कदगुप्त के अभिलेखो से हमे ज्ञात होता है कि गिरनार मे चन्द्रगुप्त, अशोक और गुप्त सम्राटो के प्रातीय राज्यपाल रहते थे। इसके निकट ही वहाँ पर स्वयवर झील है। यहाँ पर सुराष्ट मे रैवतक पहाडी के शिखर पर नेमिनाथ का एक ऊँचा शिखरयुक्त मदिर है। अधिक विवरण के लिये द्रष्टव्य बि० च० लाहा, समजैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 181-182.

रञ्जपुर—यह अहमदाबाद जिले मे धन्धुक के तीन मील पश्चिमोत्तर में या लिंबडी के मुख्यावास लिंबडी से बीस मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है। विवरण के लिए द्रष्टव्य, आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्टस, 1934-35, पृ० 34 और आगे।

रामतीर्थ—यह सोरपारग (ल्युडर्स की तालिका, सं० 1131) मे है। यह बबई से लगभग 40 मील उत्तर मे, बसीन के समीप सोपारा मे एक पुण्य झील है। उषवदात वहाँ रहने वाले कुछ भिक्षुको को दिये गये दान का उल्लेख करता है (गजेटियर ऑव द बाबे प्रेसीडेंसी, नासिक, भाग, XVI)।

रामतीर्थिका—यह उस तहसील का मुख्यावास है जिसमे किणिहिका समिलित थी। अति सभवतः इसकी पहचान रामतीर्थ से की जा सकती है जहाँ पर नासिक गुहालेख के अनुसार उपवदात ने ब्राह्मणो को कुछ दान दिया था (एपि० इ० XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939, पृ० 168)।

राष्ट्रिक—अशोक के पचम शिलालेख मे राष्ट्रिको का उल्लेख है।

रायगढ़—यह महाराष्ट्र के कोलाबा जिले मे है जहाँ से विजयादित्य के तीन ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, X, 14 और आगे)।

रेट्टुरक—यह सतारा जिले के करहाद तालुक मे स्थित रेटरे है। कृष्णा नदी के दोनो तटो पर स्थित इसी नाम के दो गाँव है (एपि० इ०, XXVII, भाग, VII, जुलाई, 1948, पृ० 316)।

रोन—रोन मैसूर के धारवाड जिले मे रोन तालुक का मुख्यावास आधुनिक रोउ है (एपि० इ०, XX, पृ० 67)।

रोरुक—दिव्यावदान (पृ० 544 और आगे) के अनुसार रोरुक एक महत्त्वपूर्ण नगर था। यह आदित्त जातक मे वर्णित (जातक, III, 470) सोवीर की राजधानी थी। रोरुव का भरत नामक राजा अत्यत लोकप्रिय एव धर्मात्मा था। उसने निर्धनो, परिब्राजको, मित्रको एव पच्चेक बुद्धो को बहुत दान दिया था (जातक, III, 470-474)। कनिघम ने सोवीर की गुजरात राज्य मे खम्भात की खाडी के मुख पर स्थित एडर नामक स्थान से समीकृत किया है। बोधिसत्वावदानकल्पलता मे रौरुक या रौरुक के रुद्रायन नामक एक प्रसिद्ध राजा का उल्लेख है (चालीसवाँ पल्लव)। रोरुक-नरेश रुद्रायन मगध-नरेश बिम्बिसार का समकालीन था और वे दोनो घनिष्ट मित्र थे। राजगृह एव रोरुक मे व्यापारिक सबध थे।

साबरमती—यह नदी पारिपात्र पर्वत से निकलती है और अहमदाबाद से गुजरती हुयी खभात की खाडी मे गिरती है।

शकदेश—पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4 1.175) मे इसका उल्लेख किया है। बृहत्संहिता (XIV 21) में शको के देश के रूप मे इसका वर्णन है। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, 3-6, 77, 84, 92, 94, 157

शभु (सैम्बोस प्रदेश)—यूनानी लेखको के अनुसार सैम्बोस, मौसिकेनोस क्षेत्र के निकटवर्ती पहाडी प्रदेश पर राज्य करते थे। इन दो पडोसियो में पारस्परिक ईर्ष्या एव शत्रुता थी। इस देश की राजधानी सिन्दिमन थी जिसकी पहचान सिन्धु नदी के तट पर स्थित सेहवन नामक नगर से की जाती है (मैक्रिडिल, इन-वेज़न ऑव अलेक्जेंडर, पृ० 404)। सैम्बोस ने सिकदर के प्रति समर्पण किया था। अधिक विवरण के लिये द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़ भाग, I, पृ० 36-37.

समुद्रपाट—इसकी पहचान जबलपुर से चार मील दक्षिण मे समद पिपारिया से की जा सकती है (एपि० इ०, XXV, भाग, VII, जुलाई, 1940)।

शरभपुर—राजा महासुदेवराज के रायपुर ताम्रपत्र मे इसका उल्लेख है (का० इ० इं०, जिल्द, III)।

शत्रुञ्जय या सिद्धाचल—जैनियो के अनुसार यह काठियावाड़ मे स्थित पाँच पहाड़ियो में सबसे पवित्र है। इसके पूर्व में सूरत से 70 मील पश्चिमोत्तर मे, पलितना नामक नगर स्थित है। शत्रुञ्जय मदिर का जीर्णोद्धार गुजरात मे स्थित बाघभट्टदेव नामक राजा कुमार पाल के एक अधिकारी ने कराया था। शत्रुञ्जय पहाडी के शिखर पर स्थित समस्त जैन मदिरो मे चौमुख मदिर सब से ऊँचा है। शत्रुञ्जय पहाडी पर स्थित जैन मंदिरो मे कुछ अभिलेख मिले थे (एपि० इ०, II, 34 और आगे)। शत्रुञ्जय जिसे सिद्धक्षेत्र भी कहा जाता था, मे बड़ी सख्या मे ऋषभसेन जैसे सिद्ध ऋषि आये थे। अनेक सतो एव राजाओ ने पूर्णत्व का आनद प्राप्त किया था। यही पर कुती सहित पाँचो पाण्डवो ने भी पूर्णता प्राप्त की थी। जैनियो का यह तीर्थस्थान पाँच कूटो से अलंकृत है। श्रीमद्-ऋषभ के उत्तर मे पाण्डवो द्वारा स्थापित गुहा अब भी स्थित है। अजित चैत्य के निकट अनुपम झील है। मरुदेवी के समीप शान्ति का भव्य चैत्य है। राजा मेघघोष ने यहाँ पर दो मदिरो का निर्माण कराया था। शत्रुञ्जय उसके एव उसके पिता धर्मदत्त के शासन के अतर्गत् था। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य लाहा, सम जैन कैनॉनिकल, सूत्राज पृ० 179-180.

सालोटगि—यह मैसूर के बीजापुर जिले के इण्डि तालुक के मुख्यावास इण्डि से छः मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित एक विशाल गाँव है (एपि० इ० IV, पृ० 57)।

सातोदिक—यह सुराष्ट्र देश की एक नदी थी। राजगुरु का पुत्र जोतिपाल, जो तक्षशिला में शिक्षित हुआ था, सन्यासी हो गया था। उसने ध्यान मे पूर्णता प्राप्त की थी। उसके अनेक शिष्य थे और उनमे से एक सुरट्ठ देश गया था और इस नदी के तट पर निवास किया था (जातक, III, पृ० 463 और आगे)।

सेरिव—जातक मे इसका वर्णन है। सेरि राज्य मे दो व्यापारी थे जो भाडो एव कडाहो का व्यापार करते थे। वे अपना माल सड़को पर बेचा करते थे (जातक, I, पृ० 111-114)। कुछ लोगो के अनुसार इसकी पहचान सेरियापुट (सेरिया का बंदरगाह) से की गयी है जिसका वर्णन भरहुत स्तूप के एक पूजा-पट्ट मे हुआ है। अन्य लोगो के अनुसार इसकी पहचान श्रीराज्य या मैसूर के परवर्ती गग राज्य से की जा सकती है (रायचौधरी, 'पो० हि० ए० इ०, पृ० 64; बरुआ ऐंड सिन्हा, भरहुत इस्क्रिप्शस, पृ० 32)। बरुआ एव सिन्हा की यह धारणा ठीक है कि सेरियापुट, शूपरिक एव भरुकच्छ की भाँति भारत के पश्चिमी समुद्रतट पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण बदरगाह था और इसका तादात्म्य सेरिव मे किया जा सकता है (वही, पृ० 132)।

सेरियापुट—भरहुत-अभिलेखो मे इसका वर्णन है (बरुआ ऐंड सिन्हा, पृ० 32)। सुप्पारक एव भरुकच्छ की भाँति भारत के पश्चिमी समुद्रतट पर स्थित यह एक महत्त्वपूर्ण बदरगाह प्रतीत होता है। तेलवाह नदी पार करके सेरिव के व्यापारी अधपुर पहुँचते थे (जातक, न० 3)।

सिग्गावे—इसे धारवाड़ जिले के सिरगाँव से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, VI, पृ० 257)।

सिहरग्राम—(एपि० इ०, VIII 222)—यह दक्षिणी गुजरात मे है और इसकी पहचान देलवाड से आठ मील पूर्वोत्तर मे स्थित सेरसे की जा सकती है।

सिन्धु-सौवीर—पणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4 2 66, 4 1.148) मे सोवीर एव सुवीर का वर्णन किया है। पतञ्जलि ने भी अपने महाभाष्य मे (4 2 76) इसका उल्लेख किया है। सिन्धु-सौवीर नाम से यह व्यजित होता है कि सौवीर सिन्धु और झेलम के तट पर स्थित था। यह तथ्य कि सौवीर प्रायः सिन्धु से संबधित थे, यह निश्चित करता है कि ये दोनो जन जिन्हे कालातर मे एक ही माना जाने लगा,—सिन्धु के तट पर रहते थे। इन्होने कुरु-क्षेत्र के युद्ध में महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया था। रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख मे (150 ई०) पूर्वापराकरावन्ती, अनूपनित, आनर्त सुराष्ट्र, स्वप्न, मरु,

कच्छ, कुकुर, अपरान्त और अन्य देशों के समेत सिन्धु-सौवीर पर महाक्षत्रप की विजय का उल्लेख है। इसका वर्णन ल्युडर्स की तालिका सं०, 965, मे हुआ है। बृहत्सहिता (XIV.17) मे इसका वर्णन है।

भगवती-सूत्र के अनुसार सौवीर देश के उदयन का उत्तराधिकारी उसका भतीजा केशी हुआ था जिसके राज्य मे वीतहव्य पूर्णरूपेण विनष्ट हुआ था। वह ससार का परित्याग करने तक को उद्यत हो गया था किंतु जब उसके पुत्र अभि के उत्तराधिकार का प्रश्न उसके समक्ष आया तब उसने स्वयं अपने से यह कहा कि 'यदि मैं अभि को राज्याभिषेक करके ससार से सन्यास लूं तब अभि राजसुख और मानवीय आनदो के उपभोग का अभ्यस्त हो जायेगा। तब वह इस ससार मे भ्रमण करता रहेगा। इसके अनतर उसने अपने भानजे केशी का राज्याभिषेक करके (पृ० 619-20) ससार का परित्याग किया। यह सौवीर देश मे प्रचलित मातृप्रधान व्यवस्था का एक उदाहरण प्रतीत होता है।

क्षत्रपों ने सिन्धु-सौवीर देश को कुषाणो से मुक्त किया था। क्षत्रपो के पश्चात् सभवत. यह देश गुप्तो के अधिकार मे और तदनतर वलभी के मैत्रको के अधीन हो गया था। गुजरात के चालुक्यो के एक नौसारी दान-ताम्रपत्र मे पुलकेशीराज (8 वी शती ई०) को ताजिको को पराजित करने का श्रेय दिया गया है जिन्हे साधारणतया अरबो से समीकृत किया जाता है। इसमे बतलाया गया है चालुक्य नरेश द्वारा पराजित होने के पूर्व ताजिको ने सैन्धवों, कच्छेलो, सुराष्ट्रो, कावोटको, गुर्जरो एव मौर्यों को पराजित किया था (बाबे गज़ेटियर, जिल्द, I, पृ० 109)। कनिंघम ने सौवीर को गुजरात मे खंभात की खाडी के मुहाने पर स्थित एडर नामक स्थान से समीकृत किया है। रौरुक इसकी राजधानी थी (जानक, III, पृ० 470)। सिन्धु-सौवीर सज्ञा से यह व्यजित होता है कि सौवीर झेलम एव सिन्धु के बीच मे स्थित था। राजगृह एव रौरुक के मध्य घनिष्ट व्यापारिक सबध थे (दिव्यावदान, 544 और आगे)। रौरुक नरेश रुद्रायन एव मगधनरेश बिम्बिसार घनिष्ट मित्र थे। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, I, पृ० 40 और आगे।

शिरीषपद—शिरीष की समता श्रीस से की जा सकती है (बरुआ ऐड सिन्हा, इस्क्रिप्शस, पृ० 21, पूजा-पट्ट, न० 43)। यह दो गुर्जर अभिलेखों मे वर्णित शिरीष-पद्रक नामक गाँव है (इ० ऐ०, XIII)।

सिरर—यह सिरवुर का प्राचीन नाम है। यह मैसूर के धारवाड़ जिले के गडक तालुक मे आलूर से लगभग तीन मील दूर पर स्थित एक गांव है जहाँ

से जयसिंह द्वितीय के शासनकाल का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इं०, XV, 334, और आगे)।

शिवपुर—शिवपुर को शोरकोट अभिलेख मे वर्णित शिविपुर से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, 1921, पृ०16)। डा० फोगेल ने शोरकोट के टीले को शिबियों के नगर का स्थल माना है। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्यंट इंडिया, पृ० 83.

सोगल—यह मैसूर के बेलगाँव जिले के परषगड़ तालुक मे एक गाँव है (एपि० इं०, XVI, पृ० 1)।

सोमनाथदेवपट्टन—यह काठियावाड मे स्थित है और इसका आधुनिक नाम वेरावल है जहाँ से एक प्रतिमा-लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, III, 302)।

सोमनाथ—यह जूनागढ़ मे है और इसे चन्द्रप्रभास भी कहते हैं। यह जैनियों का एक तीर्थस्थान है। पहले यहाँ पर एक काष्ठ-मदिर था किन्तु कालातर मे इसे सगमरमर का बना दिया गया था (लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 212)।

सोन्नलिगे—यह आधुनिक सोलापुर का एक भाग है (एपि० इ०, XXIII, भाग, V, पृ० 194)।

सोन्ने—यह आधुनिक शास्त्री नदी है जो नरवन के दक्षिण मे प्रवाहित होती है (एपि० इ०, XXVII, भाग, III, पृ० 127)।

श्रीमत-अणहिलपुर—(एपि० इ०, VIII, 219-29)—इसे उत्तर गुजरात मे अणवाडा से समीकृत किया जा सकता है।

सुदर्शन—यह गिरिनगर से थोडी दूर पर स्थित एक झील है (गिरनार, दक्षिण काठियावाड मे जैन गिरिनार)। मूलत. मौर्यनरेश चन्द्रगुप्त के वैश्य पुष्यगुप्त नामक एक राष्ट्रिय ने उस झील का निर्माण कराया था। तदनतर यवन-राजा तुसाष्फ ने इसे प्रनाडी-सेतु से सज्जित किया था। बाद मे यह एक तूफान मे सुवर्णसिकता नदी के जल द्वारा नष्ट हो गयी थी (ल्युडर्स की तालिका, स०, 965)।

सुदि—यह मैसूर के धारवाड़ जिले के रोन तालुक मे स्थित सुण्डि नामक एक प्राचीन गाँव है। यह रोन शहर से लगभग 9 मील दूर उत्तर एव पूर्व की ओर है (एपि० इं०, XV, 73)।

शूद्र-देश—मार्कण्डेय पुराण (अध्याय, 57, 35) के अनुसार शूद्रों का देश अपरान्त क्षेत्र या पश्चिमी क्षेत्र मे स्थित था। महाभारत (IX. 37, 1) के अनुसार शूद्र लोग उस क्षेत्र मे रहते थे जहाँ सरस्वती मरु मे अदृष्ट हो जाती

है जो कि पश्चिमी राजस्थान में स्थित विनशन ही है (शूद्राभीरान् प्रतिद्वेषाद् यत्र नष्टा सरस्वती)। उनके प्रदेश की सही स्थिति के विषय मे मतभेद हैं। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 34)।

शूलिक—शूलिकों की पहचान गुजरात के लेखो मे वर्णित सोलकी या सोलंकी से की जा सकती है। कुछ लोगों ने उन्हें चालुक्यो से समीकृत किया है। ईषाणवर्मन मौखरि के हरहाअभिलेख मे उनका वर्णन है। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च०, लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इडिया, पृ० 384-85

सुनकग्राम—यह उत्तर गुजरात मे है और इसकी पहचान उत्तर गुजरात मे पट्टन से लगभग 15 मील पूर्व-दक्षिण पूर्व मे और उझा रेलवे स्टेशन से लगभग पाँच मील पश्चिम मे स्थित सुनक नामक एक गाँव से की जा सकती है (एपि० इ०, I, 316)।

सुरथा—कूर्म (XLVII. 30), वराह, (LXXXV) एव भागवत पुराणो (XIX. 17) मे इस नदी का वर्णन है। इसका एक पाठातर सुरसा है। यह ऋक्ष एव विन्ध्य पर्वतो से निकलती है। द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 111)।

सुराष्ट्र—प्राचीन भारत मे सुराष्ट्र एक प्रसिद्ध जन थे। सुराष्ट्र देश (पालि, सुरठ, चीनी, सु-ल-च) का वर्णन रामायण (आदि काण्ड, अध्याय, XII), अयोध्याकाण्ड, X, किष्किन्ध्याकाण्ड, XLI) तथा पतञ्जलि के महाभाष्य (I.1 1, पृ० 31) मे है। इसका वर्णन ल्युडर्स की तालिका, स०, 965 मे भी है। इसे सुरठ भी कहा जाता है (वही, 1123)। पद्मपुराण (190 2) के अनुसार यह गुर्जर में है। भागवतपुराण (I.10 34, I.15.39, VI 14.10, X.27 69; XI.30.18) मे एक देश के रूप मे इसका वर्णन है। बृहत्संहिता (XIX 19) मे भी इसका वर्णन है। राजशेखर ने भी अपनी काव्यमीमासा (गायकवाड ओरियंटल सीरीज, पृ० 93-94) मे सुराष्ट्र को भृगुकच्छ, आर्नत्त, अर्बुद, दशेरक एव अन्य देशो के साथ ही पश्चिमी सभाग मे रखा है। सुराष्ट्र मे आधुनिक काठियावाड एव गुजरात के अन्य भाग समाविष्ट हैं। कौटिलीय अर्थशास्त्र के अनुसार (पृ० 50) अग एव कलिंग के हाथियों की तुलना मे सौराष्ट्र के हाथी अत्यत हीन होते थे। सरभंग जातक (जातक, V.133) के अनुसार सतोदिका नामक एक नदी सुराष्ट्र देश की सीमा पर प्रवाहित होती थी और इसके तट पर निवास करने के लिये ऋषि भेजे जाते थे। कविठ्ठक आश्रम के सालिस्सर नामक एक ऋषि ने उक्त आश्रम को सुरठ्ठ

देश जाने के लिये त्याग दिया था वहाँ पर वह सतोदिका नदी के तट पर ऋषियो के साथ रहने लगा था। (जातक, III, पृ० 463)। इस नगर की समृद्धि व्यापार के कारण थी (अपदान, II, 359, मिलिन्द, 331, 359, जातक, III, 463, V.133)। मौर्यों के एक अधीनस्थ सामत के रूप मे पिङ्गल नामक एक राजा ने सुराष्ट्र पर शासन किया था (पेटवत्थु, IV, 3, डा० दे० रा० भडारकर वाल्यूम, 329 और आगे)। जैन ग्रथ दसवेयालिय चूर्णी मे (I, पृ० 40) सुरट्ठ या सुराष्ट्र का उल्लेख है जो प्राचीन काल मे एक व्यापारिक केंद्र था।

चीनी तीर्थयात्री युवान-च्वाङ के अनुसार सुराष्ट्र की राजधानी युह-शान-टा-पर्वत (प्राकृत उज्जत, रुद्रदामन एव स्कन्दगुप्त के अभिलेखो मे वर्णित सस्कृत ऊर्जयत और इसकी पहचान जूनागढ, प्राचीन गिरिनगर या गिरनार से की गयी है) के पाद मे स्थित थी। महाभारत काल मे सुराष्ट्र देश पर यादवों का राज्य था। कौटिल्य के अर्थशास्त्र (पृ० 378) से प्रकट होता है कि सुराष्ट्र में सघात्मक शासन व्यवस्था थी। स्ट्रैबो के अनुसार (बुक, XI, खड, XI, 1, एच० ऐड एफ०, भाग, II, पृ० 252-3) भारत मे बाख्त्री-यवनो की विजय अशत: मिलिन्द एवं अशत यूथेडेमास के पुत्र दिमित द्वारा प्राप्त की गयी थी। उन्होंने न केवल पेटेलेन पर ही वरन् सराओस्टोस (सुराष्ट्र) एव साइगरडिस राज्यों पर भी अधिकार कर लिया था। टॉलेमी ने सिराष्ट्रेने नामक एक देश का उल्लेख किया है जिसे अनिवार्यतः सुराष्ट्र (कच्छ की खाडी पर स्थित आधुनिक सूरन) ही होना चाहिए। सिन्धु के मुहाने से कच्छ की खाडी तक फैला हुआ सिरास्ट्रेने टॉलेमी के काल मे इंडो-सीथिया के तीन प्रभागो मे से एक था। 'पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन सी' मे भी सिरास्ट्रेने का वर्णन अबेरिया के समुद्र-तट के रूप मे हुआ है जिसकी पहचान इसके द्विभाजन से निर्मित होने वाले द्वीपीय भाग के आगे सिन्धु नदी के पूर्व मे स्थित क्षेत्र मे की जाती है। शको के आधिपत्य के पश्चात् सुराष्ट्र पर गुप्तवशीय राजाओ का अधिकार हो गया था (बि० च० लाहा, ट्राइब्स ऑव ऐंश्येंट इडिया, पृ० 347-48)। इसका निश्चायक साक्ष्य हमे स्कन्दगुप्त (455-480 ई०) के जूनागढ अभिलेख मे मिलता है। (का० इ० इ०, जिल्द III)। उदयगिरि गुहालेख से हमे यह ज्ञात होता है कि स्कन्द-गुप्त ने यह निश्चय करने के पूर्व कि सुराष्ट्र देश की रक्षा का महत्त्वपूर्ण दायित्व किसके विश्वास पर छोड़ दिया जाय कई दिनो तक निरतर विचार किया था। समुद्रगुप्त के काल मे सुराष्ट्र पर शकाधिपतियो का शासन था (शक-मुरुण्ड) (तुलनीय, समुद्रगुप्त का इलाहाबाद स्तभ लेख)। सुराष्ट्र देश चन्द्रगुप्त के शासन

काल में ही मौर्यों के साम्राज्य में मिला लिया गया था क्योंकि रुद्रदामन के जूनागढ़ शिलालेख मे चन्द्रगुप्त के राष्ट्रिय वैश्य पुष्यगुप्त का उल्लेख है जिसने सुदर्शन झील का निर्माण करवाया था। यह अशोक[1] के साम्राज्य मे संमिलित था क्योंकि उसी अभिलेख मे अशोक के उपराजा और उसके समकालीन पारसीक तुषास्फ का उल्लेख है जिसने झील के अवशिष्ट निर्माण-कार्य को पूर्ण करवाया था। रुद्रदामन के अभिलेख से यह स्पष्ट है कि यवनराज तुषास्फ सुराष्ट्र का एक स्वतत्र शासक बन गया था। जूनागढ के प्राचीन नाम से यह प्रकट होता है कि इसके पर्वतीय दुर्ग के साथ ही इस नगर का निर्माण किसी यवन राजा ने कराया था (इ० ऐ०, भाग, X, 87 और आगे)। सुराष्ट्र अशोक के काल मे एक गणराज्य था। यह उसके पाँचवे शिलालेख से सभावित प्रतीत होता है।[2] अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य वि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 50-52)।

शूर्पारक—(पालि सुप्पारक)—यह महाराष्ट्र मे बबई से 37 मील उत्तर मे और बस्सिम से लगभग चार मील पश्चिमोत्तर मे थाना जिले मे सुपारा या आधुनिक सोपारा है। यह सुनापरान्त या अपरान्त की राजधानी थी (मज्झिम III, 268, सयुक्त, IV, 61 और आगे)। पालि ग्रथो के अनुसार सुनापरान्त के निवासी भयकर एव हिंस्र बतलाये गये है। सावत्थी से सुप्पार की दूरी 120 लीग थी (धम्मपद कामेंट्री, II, पृ० 213)। इसे सोपारग सोपारक, सोरपारग (ल्युडर्स की तालिका, स० 995, 998, 1095, और 1131) सौरपारक एवं सुप्पारिक भी कहा जाता है। प्रिंस ऑव वेल्स म्यूजियम मे सगृहीत शिलाहार-अभिलेखो मे सूरपारक का उल्लेख है जो महाराष्ट्र के बस्सिम तालुक मे स्थित आधुनिक नल्ल सोपर है (एपि० इ०, XXIII, भाग, VII)। शक उषवदात के एक अभिलेख मे शूर्पारक का वर्णन है। यह समुद्रतट पर स्थित एक बडा पत्तन था (धम्मपद कामेंट्री II, 210) जिसे प्राचीन यूनानी भूगोलवेत्ताओ द्वारा वर्णित सोपारा से ठीक ही समीकृत किया गया है। हरिवश के अनुसार (XCVI, 50) राम जामदग्न्य नामक एक ऋषि को शूर्पारक नगर के निर्माण का श्रेय दिया गया है। मार्कण्डेय पुराण (57) मे इस नगर का वर्णन है। सभी पुराण समान

---

[1] द्रष्टव्य अशोक के पंचम शिलालेख का मानसेहरा संस्करण।

[2] द्रष्टव्य, अशोक के पंचम शिलालेख का मानसेहरा संस्करण; रा० कु० मुकर्जी, अशोक, पृ० 140, पा० टि० 6; हे० रायचौधरी, पो० हि० एं० इं०, चतुर्थ संस्करण, पृ० 236.

रूप से इसे पश्चिम मे स्थित बतलाते है किंतु महाभारत मे इसे दक्षिण मे स्थित बतलाया गया है (सभापर्व, XXX, 1169; वनपर्व, LXXXVII, 8337)। सात सौ यात्रियो सहित एक पथभ्रष्ट जलपोत सुप्पार के बंदरगाह पर आया था। सुप्पार के निवासियो ने उन्हे पोत से उतरने का आमत्रण दिया और खूब खिला पिलाकर उनका स्वागत किया (दीपवस, IX, श्लोक, 15-16)। महावस (VI. 46) के अनुसार विजय भारत के पश्चिमी समुद्रतट पर स्थित सुप्पारक बदरगाह पर आये थे। सूरपारक वाणिज्य एव व्यापार का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र प्रतीत होता है जहाँ अपने व्यापारिक माल को लेकर व्यापारी एकत्र होते थे (दिव्यावदान, 42 और आगे)। इस नगर मे भव नामक एक गृहस्थ था जो बुद्ध का समकालीन था (दिव्यावदान, 24 और आगे)।

सूर्यपुर—यह आधुनिक सूरत है (ज० ए० सो० बं०, VI, 387)। यहीं पर शकराचार्य ने वेदान्त पर अपना भाष्य लिखा था (न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 198)।

सुसक—नासिक-अभिलेख मे इसका वर्णन है जिस पर गौतमीपुत्र का शासन बतलाया जाता है। इसका तात्पर्य सु या यु-ची शक था जिनके अधिकार मे पजाब एव गंगा के कुछ क्षेत्र थे।

सुतीक्ष्ण-आश्रम—यह दण्डक वन मे स्थित था। सुतीक्ष्ण ऋषि ने यज्ञाग्नि मेआत्मदाह करके अपना प्राण-त्याग दिया था। इस तपोवन मे राम, लक्ष्मण एव सीता के साथ आये थे।

स्वभ्र—इसका वर्णन रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ शिलालेख मे (150 ई०) हुआ है। यह साबरमती के तट पर है (तुलनीय, पद्मपुराण, उत्तरखण्ड, अध्याय 52)। यह एक देश है (ल्युडर्स की तालिका, सख्या, 965)।

तलेगाँव—यह पूना जिले मे है। यहाँ पर राष्ट्रकूट-नरेश कृष्ण प्रथम के काल का एक ताम्रपत्र उपलब्ध हुआ था।

तौरणक—यह करजन नदी के तट पर आधुनिक तोरन प्रतीत होता है (एपि० इ०, XXV, भाग, VII, जुलाई, 1940)।

तालध्वज—यह काठियावाड मे है और इसकी पहचान सभवतः तलज से की जा सकती है (इं० ऐं०, XV, 360)।

टेकभर—विमलशिव के जबलपुर शिलालेख मे इसका वर्णन है जिसकी पहचान जबलपुर से दक्षिण एव पश्चिम मे पाँच मील दूर तिखारी से की जा सकती है (एपि० इ०, XXV, भाग, VII, जुलाई, 1940)।

तिडगुण्डि—यह गाँव मैसूर के बीजापुर जिले के बीजापुर तालुक में बीजापुर

शहर से 20 मील उत्तर में स्थित है जहाँ पर, विक्रमादित्य षष्ठम के काल के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, III, 306)।

तोरंबगे—सभवतः इसकी पहचान कोल्हापुर मे तुबबे से की जा सकती है (एपि० इ०, XIX, पृ० 32)।

तोरणग्राम—यह दक्षिण गुजरात मे है और इसका तादात्म्य तोरंगम से किया जा सकता है (ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, जिल्द, 26)।

तोरखेडे—यह खानदेश जिले मे स्थित एक गॉव है जहाँ से शक सवत् 735 मे अकित गुजरात के गोविन्दराज का एक दान ताम्रपत्र उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, III, 53 और आगे)।

त्र्यंबकेश्वर—यह एक गहनवन मे स्थित है और महाराष्ट्र मे हिंदुओ का एक महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थान है। यहा मे गोदावरी नदी निकलती है।

तुप्पडकुरहट्टि—यह धारवाड जिले के नवबुद तालुक मे स्थित एक गॉव है जहाँ पर अकालवर्ष कृष्ण तृतीय के शासनकाल का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XIV, 364 और आगे)।

उज्जंत गिरि—ऊर्जयन्त देखिये।

ऊना—यह जूनागढ के काठियावाड प्रायद्वीप के सुदूर दक्षिणी भाग मे स्थित एक नगर है जहाँ मे ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण दो सस्कृत अभिलेख उपलब्ध हुये है (एपि० इ०, IX, पृ० 1)।

उरण—यह आधुनिक उरन है (एपि०ई०, XXIII, भाग, VII, पृ० 279)

ऊर्जयत—रुद्रदामन एव स्कन्दगुप्त के जूनागढ के अभिलेखो मे वर्णित ऊर्जयत (उज्जंत) को जूनागढ के समीप गिरनार पहाडी से समीकृत किया जाता है। केलादि सदाशिव नायक के कप ताम्रपत्र मे उज्जतगिरि का उल्लेख है जो गिरनार है (एपि० इं०, XXIV, भाग, V, जनवरी, 1938, तुलनीय, फ्लीट, गुप्त इंस्क्रिप्शस, का० इ०, इ०, जिल्द, III, पृ० 60)। इसे ऊर्जयतगिरि भी कहा जाता है (तुलनीय, रुद्रदामन का जूनागढ अभिलेख)। ल्युडर्स की तालिका के 965 वे अभिलेख मे उसे ऊर्जयत कहा गया है। श्रीनेमि द्वारा पवित्र इस पर्वत को रेवतक, ऊर्जयत आदि कहा जाता है। यह पर्वत सुराष्ट्र मे स्थित है। वास्तुपाल ने यहाँ पर लोक कल्याण के लिए तीन मदिरो का निर्माण कराया था। वास्तुपाल द्वारा निर्मित शत्रुञ्जय के मदिर मे ऋषभ, पुण्डरीक एवं अष्टापद की प्रतिमाएँ है (बि० च० लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 180)।

वडाल—वडाल पच्छत्री विषय (जिले) में भेटलिका का आधुनिक नाम

है। जूनागढ से लगभग सात मील उत्तर में पश्चिमी रेलवे मे यह एक स्टेशन है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 210)।

वडनगर—इसकी पहचान सिद्धपुर से 70 मील दक्षिण मे उत्तरी गुजरात मे आनंदपुर से की जाती है।

वैदूर्यपर्वत—यह गुजरात मे स्थित सतपुड़ा पर्वत माला है। इस पहाडी पर अगस्त्य ऋषि का आश्रम था (महाभारत, वनपर्व, अध्याय, 88)। इसका नाम बहुमूल्य लाजावर्द पत्थर मिलने के कारण वैदूर्य पर्वत है। सह्य पर्वत से सबद्ध सब से अधिक महत्त्वपूर्ण लघु पर्वत वैदूर्य है जिसकी पहचान साधारणतया टॉलेमी द्वारा वर्णित ओरडियान पर्वत से की जाती है। यह पश्चिमी घाट के सब से उत्तरी हिस्से मे अतविष्ट है किंतु महाभारत से ज्ञात होता है कि इसमे दक्षिणी विन्ध्य एव सतपुडा पर्वतमाला का एक भाग भी समिलित था।

वल्लभी—यह गुर्जर देश मे एक समृद्धिशाली नगर था जहाँ पर शीलादित्य नामक राजा राज्य करता था (लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज, पृ० 183-184)। वल्भी या वल्लभी नगर के अवशेष गुजरात के पूरब मे भावनगर के समीप प्राप्त हुये थे (आर्क० स० वे० इ०, जिल्द, II))। पाँचवी शताब्दी ई० के एक अभिलेख मे इसका वर्णन बलभद्र की सुदर राजधानी के रूप मे हुआ है (ज० ए० सो० ब०, 1838, पृ० 976)। सौराष्ट्र के इस नगर मे गृहगुप्त नामक एक धनी महानाविक रहता था जिसके रत्नवती नामक एक पुत्री थी जिससे व्याह करने के लिए एक व्यापारी का बलभद्र नामक पुत्र मधुमती से आया था (दशकुमारचरितम्, पृ० 158)। युवान-च्वाङ ने इसे फा-ल-पी-कहा है। युवान-च्वाङ के अनुसार वलभी राज्य मे सपूर्ण गुजरात प्रायद्वीप, भडौच तथा सूरत के जिले समिलित थे (कनिघम, ए० ज्या० इ०, पृ० 363 और आगे; पृ० 697)।

वल्लवाड़—इसकी पहचान वलयवाड से की जा सकती है जिसे वलवाड़ भी कहा जाता है जो कोल्हापुर से लगभग 27 मील दक्षिण-पश्चिम में वर्तमान राधानगरी का स्थल है (एपि० इ०, XXIII भाग, I, एव II)।

वंकिका—यह नदी वकी नाला है जो नौसारी से लगभग 30 मील दक्षिण मे स्थित है (एपि० इ०, XXI, भाग, III, जुलाई, 1931)।

वरदाखेट—सभवतः यह अमरावती जिले के मोरसी तालुक मे स्थित वरुड है (एपि० इ०, XXIII, भाग, III)।

वटपर्दक—(**वटपद्रपुर**)—यह वटपट्टन का एक प्राचीन नाम है। इसका

वर्णन शक सवत् 734 मे अंकित कर्कराज द्वितीय के बडौदा अभिपत्रों मे है (इपार्टेंट इंस्क्रिप्शंस फ्रॉम द बडौदा स्टेट, जिल्द, I, पृ० 97)।

वट्टार—इसकी पहचान नल-सोपर से लगभग 7 मील पश्चिमोत्तर में एवं महाराष्ट्र के बॉस्सिम तालुक मे अगाशी से चार मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित वतर नामक गाँव से की जाती है (एपि० इं०, XXIII, भाग, VII)।

वाघली—यह खानदेश जिले मे चालीसगाँव मे सात मील पूर्व या पूर्वोत्तर मे स्थित एक गाँव है जहाँ से शक संवत् 991 मे अंकित एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था। इस गाँव मे तीन मंदिर है : मघाई देवी का एक प्राचीन मंदिर, एक लघु जीर्ण मंदिर एवं मानभाव संप्रदाय का एक मंदिर (एपि० इ०, I,, 221 और आगे)।

वाहाउल—इसे गुजरात मे बडौदा के अन्तर्गत् भिलोदिया से लगभग चार मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित वाहोरा नामक एक गाँव से समीकृत किया जाता है (एपि० इं०, XXVI, भाग, VI, अप्रैल, 1942, पृ० 251)।

वालुरक— नहपान के काल के (119-24 ई०) कार्ले गुहालेख मे वर्णित वालुरक (वलूरक) कार्ले क्षेत्र का एक प्राचीन नाम प्रतीत होता है। कार्ले महाराष्ट्र के पूना जिले मे स्थित है। ल्युडर्स की तालिका (म० 1099, 1100) वालूरक एक गुहा का नाम है।

वेलग्राम—इसकी पहचान किरात मे तीन मील दक्षिण-पूर्व और पलघर से 14 मील पूर्व-पूर्वोत्तर मे स्थित वेलगाँव से की जाती है (एपि० इ०, भाग, XXVIII, भाग, I, जनवरी, 1949)।

वेगवती—जैन अनुश्रुतियो मे इस नदी को सौराष्ट्र मे ऊर्जयत पर्वत से सबद्ध बतलाया गया है।

वेणाकटक—गौतमीपुत्र शातकर्णि के नासिक गुहा लेख मे वेणाकटक का उल्लेख है जो नासिक जिले में वेण्वा नदी के तट पर स्थित है।

वेरावल—काठियावाड मे स्थित यह प्राचीन सोमनाथ देवपट्टन है जहाँ से एक प्रतिमा-लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, III, 302)।

विन्ध्यपादपर्वत—महाभारत मे इसका उल्लेख विन्ध्यपर्वत के रूप में हुआ है (अध्याय, 104, 1-15)। पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-38) मे इसका वर्णन है। इस पर्वत से सलग्न विन्ध्याटवी का वर्णन दशकुमारचरितम् (पृ० 18) मे है जो मनुष्यो की पहुँच से दूर, वन्य पशुओ के लिए एक उपयुक्त स्थल एवं एक भयावह गहन जगल था। टॉलेमी ने इसे क्विडोन कहा है। यह उत्तरी एव दक्षिणी भारत के मध्य की सीमा है। ऋक्ष, विन्ध्य एवं पारिपात्र

उस संपूर्ण पर्वतमाला के अंग हैं जिसे संप्रति विन्ध्य कहा जाता है (लाहा, ज्यॉग्रैफिकल एसेज, 107 और आगे)। इस पर्वत में रेवा नदी द्वारा अभिसंचित एक सुंदर कदरा है (मार्कण्डेयपुराण, वंगवासी संस्करण, पृ० 19)। इसका वर्णन ल्युडर्स की तालिका, स० 1123, मे है।

विज्झा नामक एक अन्य संज्ञा से प्रसिद्ध इस पर्वत को सतपुडा पर्वतमाला से समीकृत किया जा सकता है। इस पर्वतमाला के एक पर्वत-प्रक्षेप पर शिला में कटी हुयी बावनगज नामक एक भीमकाय जैन प्रतिमा है। आधुनिक भूगोल-वेत्ताओं के अनुसार विन्ध्यपर्वत पश्चिम मे गुजरात से पूरब मे बिहार तक लगभग 700 मील तक भरनेर. कैमूर आदि विभिन्न स्थानीय नाम धारण करता हुआ फैला है। इस पर्वत की औसत ऊँचाई 1500 से 2000 फीट तक है; इसके कुछ शिखर 5,000 फीट तक ऊँचे है। यह पर्वत एक वास्तविक विवर्तनिक प्रकार का नही है। यह मालवा के पठार के दक्षिणी छोर का प्रतिनिधित्व करता है जो किसी प्राचीन भू-वैज्ञानिक काल मे भ्रशित हो गया जिसके परिणामस्वरूप विन्ध्य पर्वत का निर्माण हुआ। ऐसा विश्वास किया जाता है कि विन्ध्य अरावली पर्वत से गृहीत तलछटों (अवसादो) से निर्मित हुआ था।

विझाटवी—इस वन मे खानदेश एव औरंगाबाद जिले समिलित है जो नासिक समेत विन्ध्यपर्वत माला के पश्चिमी सिरे के दक्षिण मे स्थित है। देवानमपियतिस्स का अरिट्ठ नामक एक अमात्य जिसे अशोक के पास बोधिवृक्ष की एक शाखा लाने के लिए भेजा गया था पाटलिपुत्र जाते समय इस वन से गुजरा था (दीपवस, 15 87)।

वला—महाराज धरसेन द्वितीय के मलिय ताम्रपत्र मे (152 वर्ष) काठियावाड़ मडल मे वला नामक भू० पू० रियासत के मुख्यावास वला का उल्लेख है (का० इ० इ० ,जिल्द, III, एपि० इ०, XIII, पृ० 338)।

येक्केरि—यह बेलगॉव जिले के परषगड तालुक के मुख्यावास सौन्दत्ति से लगभग चार मील उत्तर-पूर्व मे स्थित एक गॉव है जहाँ से पुलकेशिन् द्वितीय के काल का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ० V, 6 और आगे)।

V

मध्य भारत*

●

अचलपुर—यह एक ग्राम है जो अमरावती जिले मे आधुनिक एलिचपुर के समान है (एपि० इ० XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 13, एपि०, इ०, XXVIII, भाग, I, जनवरी, 1949)।

अचावड (अच्चावट)—यह ऋक्षवत पर्वत है जहाँ पर कुरर-निवासी नागपिय नामक एक श्रेष्ठि रहता था। इसका उल्लेख ल्युडर्स की तालिका मे है (स० 339, 348, 581 और 1123)। ऋक्षवत टॉलेमी द्वारा वर्णित औक्सेन्टन है। यह उस संपूर्ण पर्वतमाला के एक भाग का नाम है जिसे सामान्यतः विन्ध्य नाम से जाना जाता है। टॉलेमी ने ऋक्षवत को तूडिस (Toundıs), दोसरोन (Dosaron), अदमस (Adames), क्विंदोन (Quındon), नेमेडोस (Namados) तथा ननगूना (Nanagouna) का उदगम-स्थल बतलाया है। ऋक्षवत या ऋक्षवन्त से टॉलेमी का आशय नर्मदा के उत्तर मे आधुनिक विन्ध्य पर्वतमाला के केंद्रीय भाग से था (लाहा, माउटेस ऑव इडिया, पृ० 17, लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 107 और आगे)।

अचेय—यह सिउना नदी के दाहिने तट पर परताबगढ-मार्ग से कोई एक मील दक्षिण मे, मदसोर से लगभग 12 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है।

अगर (शाजपुर)—यह उज्जैन के उत्तर मे सडक मार्ग से 41 मील दूर है।

ऐरिकिन—समुद्रगुप्त के एरण शिलालेख मे इसका उल्लेख है जिसे बीणा के बाएँ तट पर स्थित एरण नामक गाँव से समीकृत किया गया है जो मध्य प्रदेश के सागर जिले की खुरई तहसील के मुख्यावास, खुरई से 11 मील पश्चिम एवं उत्तर मे स्थित है (का० इ० इ० भाग, III)।

अजयमेरु—चाहमान सोमेश्वर के बिझोली शिलालेख (वि० सं० 1226)

---

*भूतपूर्व मध्यभारत संप्रति मध्यप्रदेश राज्य राजस्थान एवं गुजरात महाराष्ट्र द०पू०उ०प्र०एवं उड़ीसा में संमिलित है। —अनु०

में अजयमेरु का उल्लेख है। चाहमान राजकुमार अजयदेव या अजयराज द्वारा 1100 और 1125 ई० के मध्य स्थापित यह वस्तुतः अजमेर ही है (एपि० इ०, XXVI, भाग, VII, जुलाई, 1941; इं० ऐ०, XVI, पृ० 163)।

अजयगढ़—यह कालञ्जर से सीधे दक्षिण-पश्चिम मे लगभग 16 मील दूर पर एक पहाड़ी दुर्ग है जहाँ से दो चदेल अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, I, 325)। यह कालञ्जर के चदेल दुर्ग से लगभग 20 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित रायपुर दुर्ग का आधुनिक नाम है (ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, जिल्द, 23, 1947, पृ० 47)।

अमरकण्टक—यह पहाडी नागपुर क्षेत्र के गोडवाना मे मेखल पहाडियो का एक भाग है जहाँ से नर्मदा एवं मोन नदियाँ निकलती है। इसलिए नर्मदा को मेखलसुता कहते है (पद्मपुराण, अध्याय, VI)। कुछ लोगो के अनुसार यह मेकाल पर्वत माला के सब से पूर्वी छोर पर रीवा मे है, जो शहडोल रेलवे स्टेशन मे कच्ची सडक से 25 मील दूर, समुद्रतल से 3000 फीट ऊँचा है। यह हिंदुओं का एक तीर्थ स्थल है (अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, वि० च० लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया पृ० 34)। अमरकण्टक कालिदास के मेघदूत मे वर्णित (I, 17) आम्रकूट है। इसे सोमपर्वत एव सुरथाद्रि भी कहा जाता है (मार्कण्डेय पुराण, अध्याय, 57)। मत्स्यपुराण के अनुसार यह पुण्य-पहाडी कुरुक्षेत्र से अधिक प्रकृष्ट थी (22-28, 186, 12-34, 188, 79, 82, 191 25)। पद्मपुराण (अध्याय, 133, श्लोक, 21) मे अमरकण्टक मे चण्डिका-तीर्थ नामक एक तीर्थ-स्थान का वर्णन है।

अबर—जयपुर रेलवे स्टेशन से लगभग सात मील पूर्वोत्तर मे स्थित यह राजस्थान के जयपुर (भू० पू० रियासत) की प्राचीन राजधानी थी। जयपुर मे अबर के मार्ग मे पहाड़ियो एवं जंगलो का एक विहंगम दृश्य दृष्टिगत होता है। वहाँ पर कुछ सुदर मंदिर है।

जयपुर—(भू० पू० रियासन) की क्रमानुसार तीसरी राजधानी, अबर नगर की स्थापना 10-11 वी शताब्दी ई० मे हुयी मानी जाती है। इसे अबावती भी कहा जाता है जो धुण्ड या धुण्ढाहृद् नामक क्षेत्र की राजधानी थी। कनिंघम ने अबर के विशाल अबिकेश्वर के मदिर के नाम से अबर का नाम गृहीत बतलाया है (दया राम साहनी, आर्क्यॉलाजिकल रिमेंस ऐड एक्सकेवेशस ऐट बैराट, पृ० 9 और आगे)।

आमेर—यह उदयपुर से लगभग डेढ मील दक्षिण मे है।

अमोदा—यह बिलासपुर जिले मे एक गाँव है। यहां पर दो विशाल पत्रों

पर उत्कीर्ण एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है (एपि० इं०, XIX, 209 और आगे)।

अमरोल (ग्वालियर)—यह सेंट्रल रेलवे के अत्री नामक स्टेशन से लगभग 10 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित है।

अनर्घवल्ली—यह बिलासपुर जिले की आधुनिक जाँजगिर तहसील को द्योतित करता है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 3, प्रतापमल्ल के पेण्ड्राबध अभिपत्र)।

अंघोर—यह कडवाह से ढाई मील दक्षिण मे है।

अञ्जनवती—यह महाराष्ट्र मे अमरावती से ठीक पूर्व मे लगभग 22 मील दूर पर चदुर तालुक मे स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 8)

अंत्रि—(ग्वालियर)—यह दिल्ली से दक्कन जाने वाले प्राचीन मार्ग पर ग्वालियर से लगभग 16 मील दक्षिण मे स्थित है। यही पर अबुल फजल की हत्या की गयी थी।

अरञ्जरा—यह मज्झिमदेश मे एक पर्वतमाला है। यहाँ पर यह एक बडे जगल मे स्थित बतलाया गया है (जातक, V, 134)।

अरावल्ली—कुछ लोगों ने इस पर्वतमाला की पहचान अपोकोप से की है। सभवतः यह भारत का सर्वप्राचीन विर्वतनिक पर्वत है। यह पश्चिमी राजस्थान की रेतीली मरु-भूमि को पूर्वी राजस्थान के अधिक उर्वर क्षेत्रो से पृथक करता है। यह पर्वतमाला दिल्ली से जयपुर तक एक नीची पहाडी के रूप मे फैली हुई है। और आगे दक्षिण मे यह अधिक प्रखर हो जाती है। मारवाड के आगे इसकी ऊँचाई और अधिक बढ जाती है और इसके सर्वोच्च शिखर की ऊँचाई 4315 फीट हो जाती है। मुख्य पर्वतमाला सिरोही के दक्षिण-पश्चिम मे तिरोहित हो जाती है। अरावली पर्वतमाला प्राक्-विन्ध्य युग की है। अर्बुद पर्वत भी जो एक सँकरी घाटी द्वारा अरावली पर्वतमाला से पृथक होता है प्राक-विन्ध्ययुग का है (अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य-,डब्ल्यू०-डब्ल्यू० हटर कृत, इपीरियल गजेटियर्स ऑव इडिया, पृ० 214-215)।

अर्बुद—यह राजस्थान के सिरोही में अरावली पर्वतमाला मे स्थित आबू पर्वत है। इसे बुद्धिमत्ता की पहाडी (Hill of wisdom) कहा जाता है। यहाँ पर ऋषि वशिष्ठ का आश्रम एव अबा भवानी का प्रसिद्ध मदिर है। मेगस्थनीज एव एरियन के अनुसार पुण्य अर्बुद या आबू पर्वत की पहचान कैपिटेलिया (Capitalia) से की जानी चाहिए जो 6500 फीट ऊँची होने के बावजूद भी

अरावली पर्वतमाला के किसी अन्य शिखर से कही अधिक ऊँचा है (मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया ऐंज डिस्क्राइब्ड बाई मेगस्थनीज़ ऐंड एरियन, पृ० 147)। साभ्रमती नदी का स्रोत अर्बुदपर्वत मे है (पद्मपुराण, अध्याय, 136)। अधिक विवरण के लिय द्रष्टव्य, लाहा, सम जैन कैनानिकल सूत्राज़, पृ० 184-185; एर्सकाइन द्वारा सकलित राजपूताना गजटियर्स ,भाग, III, पृ० 284 और आगे डब्ल्यू० डब्ल्यू० हटर कृत इंपीरियल गज़ेटियर्स ऑव इडिया, भाग, I पृ० 2 और आगे)।

अर्थूणा—यह राजस्थान के बाँसवाडो से पश्चिमाभिमुख दिशा मे कोई 28 मील से अधिक दूर है (एपि० इ०, XIV, पृ० 295)।

अशी—यह उस तहसील का मुख्यावास है जिसमे महल्ला-लाट स्थित था। इसे अश्टि से समीकृत किया जा सकता है जो बेलोरा से केवल 10 मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है (एपि० इ ०, XXIV, भाग, VI, अप्रैल, 1938, पृ० 263)।

असीरगढ़—यह मध्य प्रदेश के निमाड जिले मे खँडवा मे $29\frac{1}{2}$ मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित एक दृढ किला है (इपीरियल गजेटियर्स ऑव इंडिया, भाग, I, पृ० 230)। शर्ववर्मन के असीरगढ ताम्र-अभिमुद्रा लेख मे मध्य प्रदेश के निमाड जिले की बुरहानपुर तहसील के मुख्यावास बुरहानपुर से लगभग 11 मील पूर्वोत्तर मे स्थित असीरगढ के पहाडी-दुर्ग का वर्णन है जो पहले सिंधिया के अधिकार मे था (का० इ० इ०, जिल्द, III)।

अवन्ती—ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार इसे अवन्तिका भी कहा जाता था (IV, 40 91)। रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ-अभिलेख मे अनूप प्रदेश (माहिष्मती राजधानी), आनर्त्त (उत्तर काठियावाड), सुराष्ट्र (दक्षिण काठियावाड), साबरमती के तट पर स्थित श्वभ्र, कच्छ, (पश्चिमी भारत मे स्थित कूच), सिंध (अवरसिन्धु नदी के पश्चिम मे), सौवीर (उत्तर भारत मे अवरसिन्धु के पूरब मे), कुकुर (उत्तर काठियावाड मे आनर्त्त के समीप), अपरान्त (पश्चिमी भारत मे उत्तरी कोकण), निपाध[1] एव बिजयगढ मे रहने वाले यौधेयो के साथ आकरावन्ती (मालवा)[2], आकर (पूर्वी मालवा से समीकृत

---

[1] **बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 98 और आगे (निषाद या निषध), पृ० 75 और आगे।**

[2] **अवन्ती मालवा का प्राचीन नाम है (तुलनीय, कथासरित्सागर, अध्याय, XIX)।**

जिसकी राजधानी विदिशा है) एवं अवन्ती (पश्चिमी मालवा से समीकृत जिसकी राजधानी उज्जयिनी है) का वर्णन है। अवन्ती, जिसकी राजधानी उज्जयिनी[1] थी, का वर्णन वाशिष्ठीपुत्र, पुलुमावि के नासिक गुहालेख में आकरावन्ती[2] के रूप में हुआ है, जबकि रुद्रदामन प्रथम के जूनागढ-शिलालेख में पूर्व एवं अपर (पश्चिमी)—दो आकरावन्तियो का उल्लेख है। अशोक के प्रथम पृथक् शिला-लेख मे उज्जयिनी का उल्लेख है जहाँ से कुमार महामात्रों को भेजता था। अशोक के अभिलेखो मे भोज एव ऋष्टिक-राष्ट्रिक क्षेत्र और उनकी प्रशाखाएँ अवन्ती नामक तत्कालीन मौर्य प्रात की क्षेत्रीय सीमाओं के बाहर स्थित बतलायी गयी थी (बरुआ, अशोक ऐंड हिज इस्क्रिप्शस, अध्याय, III)। पश्चिमी एव दक्षिणी भारत के क्षहरात क्षत्रप नहपाण के समय के उषवदात के अभिलेखो पर जब सातवाहनो एव शक क्षत्रपो के अभिलेखो के सदर्भ में विचार किया जाता है तब कालक्रम की एक जटिल समस्या उठती है। ऐसा कोई निश्चायक साक्ष्य नही है जिससे यह सिद्ध किया जा सके कि उज्जयिनी या मुख्य अवन्ती नहपाण के राज्य के अंतर्गत थी। सामान्यतया उषवदात के नासिक गुहालेख मे मालयों (मालवो) के वर्णन से उज्जयिनी को नहपाण के राज्य मे समिलित होने का अनुमान लगाया जाता है किंतु अब भी यह प्रस्थापित करना यह शेष है कि उस समय अवन्ती मालवो की राजधानी थी।

जहाँ तक अवन्ती की स्थिति का प्रश्न है, महाभारत मे इसे पश्चिमी भारत मे स्थित बतलाया गया है (अवन्तिषु प्रतीच्या वै-वनपर्व, III, 89, 8354), और पुण्यसलिला नर्मदा का वर्णन है जिसके तट पर अवन्ती स्थित है। महाभारत के विराट (IV, 1-12) मे अर्जुन के मुख से पश्चिमी भारत के अन्य राज्यो यथा सुराष्ट्र एव कुति के साथ अवन्ती का भी वर्णन किया गया है। श्रीमती रीज डेविड्स की धारणा है कि अवन्ती विन्ध्य पर्वत के उत्तर मे और बम्बई के पूर्वोत्तर मे स्थित था (साम्स ऑव द ब्रेदेरेन, पृ० 107, टिप्पणी, 1)। टी० डब्ल्यू० रीज डेविड्स का मत है कि दूसरी शताब्दी ई० तक इसे अवन्ती कहा जाता था किंतु

---

[1]ल्युडर्स की तालिका संख्या 172, 173, 210, 212, 218, 219, 231-237, 238 आदि में इसका वर्णन उज्जेनी नामक एक नगर के रूप में हुआ है। इस सूची में उजेनीहार नामक एक विषय (जिले) (सं० 268) का वर्णन आता है जिसकी पहचान करना कठिन है।

[2]इसे आकरावती भी कहा जाता है (ल्युडर्स की तालिका, संख्या 965)।

सातवी या आठवी शताब्दी ई० के पश्चात् इसे मालव कहा जाने लगा (बुद्धिस्ट इडिया, पृ० 28)। उज्जयिनी जो अवन्ती या पश्चिमी मालव की राजधानी थी एव जो चर्मण्वती (चम्बल) की सहायक शिप्रा नदी के तट पर स्थित थी, मध्य प्रदेश मे आधुनिक उज्जैन है (रैप्सन, ऐंश्येंट इडिया, पृ० 175)। अवन्ती स्थूल रूप से आधुनिक मालवा, निमाड एव मध्य प्रदेश मे इनके निकटवर्ती भागो को द्योतित करती है। यह दो भागो मे विभक्त थी : उत्तरी भाग जिसकी राजधानी उज्जयिनी थी एव दक्षिणी भाग जिसकी राजधानी माहिस्सती या माहिष्मती थी।

अवन्ती-जन प्राचीन भारत के एक अत्यन्त शक्तिशाली क्षत्रिय कबीले थे। उन्होने विन्ध्य पर्वत के उत्तर मे स्थित क्षेत्रो को अधिकृत किया था। बौद्ध धर्म के उत्कर्ष-काल मे वे भारत के चार प्रमुख जनपदो मे से एक थे जो कालातर मे मौरिय-साम्राज्य मे विलयित हो गये थे[1]। वे एक प्राचीन जन थे जैसा कि हमे महाभारत से ज्ञात होता है। विद एव अनुविद नामक उनके दो राजाओ ने कुरुक्षेत्र के युद्ध मे दुर्योधन की सेना का नेतृत्व किया था। वस्तुत: अवन्ती-जन सपूर्ण कुरु-सेना के पचमाश थे[2]। दृढ शक्ति एव पौरुष से युक्त, युद्धों मे निष्णात वे दोनो महान् योद्धा एव सर्वोत्तम सारथि थे[3]। सपूर्ण युद्ध-काल मे वे प्रमुख रूप से अत्यधिक क्रियाशील थे और उन्होने अनेक शानदार एव वीरतापूर्ण कार्य सपादित किये थे। अपने वैयक्तिक पुरुषार्थ एव सेनापतित्व तथा रणक्षेत्र मे अपने नेतृत्व मे विविध प्रकार के सैनिको की असख्य सेना के माध्यम से उन्होंने कौरव पक्ष की बहुत लाभप्रद सेवा की थी। युद्ध के प्रारभिक चरण मे उन्होने भीष्म की सहायता की थी[4]। उन्होने दुधर्ष अर्जुन के विरुद्ध आक्रमण किया था[5]। उन्होने अर्जुन के पुत्र शक्तिशाली इरावत के साथ बहुत वीरतापूर्वक युद्ध किया था। उन्होने पाण्डवो के सेनानायक धृष्टद्युम्न पर आक्रमण किया था। उन्होने अर्जुन को घेरा और भीमसेन से युद्ध किया था[6]। इस प्रकार वे अपने अतिम क्षण तक रणक्षेत्र मे वीरतापूर्वक युद्ध करते रहे जब तक कि कुछ

---

[1] साम्स ऑव द ब्रेदेरेन, पृ० 107, सं० 1

[2] महाभारत, V, 19-24.

[3] महाभारत, V, 166.

[4] वही, VI, 16; IV, 17 आदि।

[5] वही, VI, 59.

[6] वही, VI, 102 और 113.

लोगों के अनुसार उनका वध अर्जुन ने[1] और अन्य जनों के अनुसार भीम ने नही कर दिया[2]।

मत्स्यपुराण (अध्याय, 43) के अनुसार अवन्तियों की उत्पत्ति हैहय राजवंश से हुयी थी[3] जिनका सब से अधिक प्रतापी राजा कार्त्तवीर्य अर्जुन था। अवन्तियो एव यदुओं के राजकुल मे वैवाहिक संबंध होते थे। एक यदु राजकुमारी-राज्याधिदेवी का विवाह अवन्ती के राजा के साथ हुआ था[4]। उससे विद और उर्पावद नामक पुत्रो का जन्म हुआ था जिनकी पहचान अतिसभवत. विद एव अनुविद नामक अवन्ती के दो वीर राजकुमारों से की जा सकती है, कुरुक्षेत्र मे किये गये जिनके साहसिक कार्यों की कथा महाभारत[5] मे वर्णित है।

सुविख्यात व्याकरणी पाणिनि ने अपने एक सूत्र मे (IV, 1.176) अवन्ती का उल्लेख किया है। पतञ्जलि के महाभाष्य मे भी इसका उल्लेख है (4 1 1, पृ० 36)। भागवत पुराण मे एक नगर के रूप मे इसका वर्णन है (X, 45, 31; X, 58-30; XI, 23.6, 23, 31)। स्कन्दपुराण मे एक पुण्य नगर के रूप मे इसका उल्लेख है (अध्याय, I, 19-23)। योगिनीतंत्र (2 2.119) मे इसका वर्णन है।

यह एक रोचक तथ्य है कि अधिकाशत उर्वर भूमिवाले अवन्ती देश को सिन्ध नदी से आगे आने वाले आर्यजनो ने उपनिवेशित या विजित कर लिया था। वे कच्छ की खाडी से पूरब की ओर मुड गये थे। कम से कम दूसरी शताब्दी ई० तक इसे अवन्ती कहा जाता था जैसा कि हमे रुद्रदामन के जूनागढ-अभिलेख से विदित होता है किन्तु टी० डब्ल्यू० रीज़ डेविड्स के मतानुसार सातवी या आठवी शताब्दी ई० के पश्चात् इसे मालवा कहा जाने लगा[6]।

अवन्ती प्राचीन भारत के अत्यत समृद्धिशाली राज्यो और जबुदीप के षोडस् महाजनपदो मे से एक था। इस देश मे प्रचुर अन्न उपजता था और यहाँ के निवासी संपन्न एव समृद्धिशाली थे[7]। कुछ लोगो के अनुसार पालि भाषा, जिसमे

---

[1] वही, VII, 99.

[2] वही, XI, 22.

[3] पार्जिटर, ऐंश्येंट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन, पृ० 102, 267.

[4] विष्णुपुराण, IV, 12; अग्नि-पुराण, अध्याय, 275.

[5] महाभारत, IV, 14.

[6] बुद्धिस्ट इंडिया, पृ० 28.

[7] अंगुत्तर निकाय, IV, 252, 256, 261.

हीनयान बौद्धों के ग्रंथ लिखे गये हैं, अवन्ती या गन्धार में ही विकसित हुयी थी[1]।

अवन्ती बौद्ध धर्म का एक महान केंद्र था। इस धम्म के कई अत्यंत निष्ठावान एवं उत्साही अनुयायी यथा, अभयकुमार,[2] इसिदासी,[3] इसिदत्त,[4] धम्मपाल[5], सोण कूटिकण्ण[6] और विशेष रूप से महाकच्चान[7] या तो यहाँ उत्पन्न हुये थे या यहाँ पर रहते थे।

महाकच्चायन उज्जयिनी मे राजा चण्ड पज्जोत के पुरोहित के परिवार मे उत्पन्न हुये थे। उन्होंने तीनो वेदो का अध्ययन किया। अपने पिता के निधन के पश्चात् वह पुरोहित-पद पर उनका उत्तराधिकारी बना। वह बुद्ध के पास गये थे जिन्होने उसको धम्म की इतनी प्रभावशाली शिक्षा दी कि दीक्षा के पश्चात् वह अपने अनुयाइयो के साथ अर्हत पद मे प्रतिष्ठित हुआ। उसे धम्म के शब्दार्थ का गहन बोध था। अपने प्रयास से ही वह पज्जोत का धर्म-परिवर्तन करने मे भी सफल हुआ था। स्वय अवन्ती का निवासी होने के कारण उसने अपने प्रदेश-वासियो मे इस नूतन धर्म का प्रचार करने में उत्साहपूर्वक कार्य किया। अपनी जन्म-भूमि मे उसके धर्म-प्रचार की महती सफलता का बहुत कुछ रहस्य इस बात मे है कि वह प्रारभ मे ही वहाँ के राजा चण्ड पज्जोत का धर्म-परिवर्तन कर सका[8]। जिस समय वह अवन्ती मे निवास कर रहा था, उसने मुख्यतया कषिणो से संबधित एक गाथा के अर्थ की विशद व्याख्या काली नामक एक उपासिका से इतनी सफलतापूर्वक की थी कि वह उसकी व्याख्या से अत्यधिक सतुष्ट हुयी थी। उसने हलिद्दिकानि नामक अवन्ती के एक गृहस्थ से वेदना, रूप, सञ्ञा (सज्ञा), विज्ञान, धातु एव सस्कार के प्रश्नो से सबधित एक गाथा की व्याख्या की थी और उक्त गृहस्थ अत्यधिक सतुष्ट हुआ था। वही निष्ठावान एव जिज्ञासु

---

[1] इलियट, हिंदुइज्म ऐंड बुद्धिज्म, I, 282.

[2] थेरगाथा कामेंट्री, 39.

[3] थेरीगाथा कामेंट्री, 261-4.

[4] थेरगाथा, 120.

[5] वही, 204.

[6] वही, 369.

[7] संयुक्त निकाय, III, पृ० 9; IV, 117; अंगुत्तर निकाय, I, 23; V, 46; मज्झिमनिकाय, III, 223.

[8] साम्स ऑव द ब्रेदेरेन, 238-9.

गृहस्थ पुनः बौद्ध-धर्म के कुछ जटिल प्रश्नो के स्पष्टीकरण के लिये उसके पास गया था और उसने उसे उनको समझाया था (सयुक्त, IV, पृ० 115-116)। जब कभी बुद्ध धम्म के विषय मे कोई प्रवचन देते थे, महाकच्चायन उपस्थित रहा करता था। इसलिये भिक्षु उसके लिये एक आसन[1] रिक्त रखते थे। अतएव यह स्पष्ट है कि निश्चय ही अवन्ती के पश्चिमी प्रात मे बौद्धमत के अनुयायी बहुसख्यक होने के साथ ही प्रभावशाली भी थे जिससे यह प्रकट होता है कि थेर महाकच्चायन के सक्रिय नेतृत्व मे शान्ति एव निर्वाण का यह नूतन धर्म सपूर्ण प्रात मे दूर दूर तक फैल गया था।

कहा जाता है कि जैन-मत के महान् प्रवर्त्तक महावीर ने अवन्तीदेश मे अपनी कुछ तपस्याएँ की थी। वह अवन्ती की राजधानी उज्जयिनी भी गये थे जहाँ उन्होने एक श्मशान के निकट तपस्या की थी जबकि रुद्र एव उसकी पत्नी ने व्यर्थ ही उनके मार्ग मे विघ्न उपस्थित करना चाहा था।[2]

लिङ्गायत सप्रदाय का एक तीर्थस्थल अवन्ती के उज्जयिनी मे स्थित है जहाँ पर प्राय भ्रमणशील लिङ्गायत मुनि आया करते है।[3]

प्रद्योत-जन अवन्ती के राजा थे। राजा चण्ड पज्जोत (चण्ड प्रद्योत) बुद्ध का समकालीन था। बुद्ध के काल मे मधुरा के राजा को अवन्तीपुत्त कहा जाता था जिससे यह प्रकट होता है कि मातृपक्ष मे वह उज्जयिनी के राजकुल से सबधित था।[4] भारत के राजनीतिक इतिहास मे उज्जयिनी की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। प्रद्योतो की अधीनता मे यह अति उन्नत स्थिति मे पहुँच गया था और इसकी शक्ति एव पौरुष से मगध के महान् सम्राट् भी डरते थे। उज्जैनी के राजा पज्जोत के एक सभावित आक्रमण की आशका से अजातशत्रु ने अपनी राजधानी राजगृह को प्राकारावेष्ठित किया था। अवन्ती एव कौशाम्बी के राजकुलों मे वैवाहिक सबध हुआ था। अवन्ती-नरेश पज्जोत ने क्रुद्ध होकर कोसाम्बी के राजा उदेन (कौशाम्बी-नरेश उदयन) पर यह जानते हुये भी कि उदेन की गरिमा उससे (पज्जोत से) अधिक है, आक्रमण करने का निश्चय किया था। पज्जोत ने काष्ठ का एक हाथी बनवाया और इसमे उसने साठ योद्धाओ को छिपा दिया। पज्जोत यह जानता था कि सुदर हाथियो के प्रति उदेन की विशेष अभिरुचि थी।

---

[1] धम्मपद कामेंट्री, II, पृ० 176-77.

[2] स्टीवेंसन, द हार्ट ऑव जैनिज्म, पृ० 33.

[3] ईलियट, हिंदुइज्म ऐंड बुद्धिज्म, II, 227.

[4] दे० रा० भंडारकर कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 53.

उसने अपने गुप्तचरों से उसके पास यह सूचना भिजवायी कि सीमावर्ती जंगल में एक अद्वितीय एवं भव्य हाथी मिल सकता है। उदेन जगल मे आया और शिकार की खोज मे वह अपने अनुचरो से अलग हो गया। वह बंदी बना लिया गया। एक बंदी के रूप में वह राजा पज्जोत की पुत्री वासवदत्ता से अनुरक्त हो गया। राजधानी से पज्जोत की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर वह वासुलदत्ता के साथ उसकी राजधानी से भाग आया। वासुलदत्ता को साथ लिये हुये, उदेन अपनी राजधानी पहुँचने मे सफल रहा। उसने उसे अपनी रानी बनाया।[1] चौथी शती ई० पू० मे उज्जैनी मगध के अधीन हो गयी। चन्द्रगुप्त का पौत्र अशोक अवन्ती देश के कुमारामात्य के रूप मे उज्जैन मे नियुक्त किया गया था।[2] उज्जैन के विख्यात् राजा विक्रमादित्य ने शको को निष्कासित करने के पश्चात् भारत के एक विशाल भाग पर अपना अधिकार कर लिया था। उन्होने हिंदू-राजतंत्र को उसकी प्राचीन गरिमा से पुनर्विभूषित किया[3]। परवर्ती युगो मे अवन्ती के कुछ राजकुलो ने भारतीय इतिहास पर अपनी छाप छोड़ी है। पाल-वशीय धर्मपाल ने इन्द्रायुध को अपदस्थ करके निकटवर्ती उत्तरी शक्तियो, यथा अवन्तियो, भोजो एवं यवनो की सहमति से उसके स्थान पर चक्रायुध को नियुक्त[4], किया। मालवा (प्राचीन काल मे जिसे अवन्ती कहते थे) के परमार-वश की स्थापना नवी शताब्दी ई० के प्रारभ मे उपेन्द्र या कृष्णराज ने की थी। अपनी विद्वत्ता एव वक्तृत्व के लिए प्रसिद्ध मुञ्ज न केवल कवियो का ही सरक्षक था वरन् वह स्वय भी एक विश्रुत कवि था। मुञ्ज का भतीजा प्रसिद्ध भोज धारा के सिहासन पर अधिष्ठित हुआ जो उस समय मालवा की राजधानी थी और उसने चालीस से अधिक वर्षों तक उस पर शान से शासन किया। तेरहवी शताब्दी ई० के प्रारभ तक मालवा का परमारवश एक विशुद्ध स्थानीय सत्ता के रूप मे अस्तित्वशील रहा। इस शताब्दी मे तोमर–कुल के प्रमुखो ने इस राजवश का अधिक्रमण किया जिनके पश्चात् चौहान राजाओ का आधिपत्य हुआ। 1401 ई० मे यहाँ का राज्य चौहानो से मुसलमान राजाओ के हाथ में चला गया।

---

[1] तुलनीय, बुद्धिस्ट इंडिया, 4-7, और भास कृत स्वप्नवासवदत्ता।

[2] स्मिथ, अशोक, पृ० 235

[3] मैक्रिंडिल, ऍश्यंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाइ टॉलेमी, पृ० 154-55.

[4] स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया, चतुर्थ संस्करण, पृ० 413.

अवन्ती एक महान व्यापारिक केंद्र बन गया। सुरपारक (सोपारा) और भृगुकच्छ (भड़ौच) बंदरगाहो वाले पश्चिमी समुद्रतट, दक्कन एवं कोशल (उ० प्र०) के श्रावस्ती से आने वाले तीन पथ यहाँ पर मिलते थे। पेरिप्लस आॅव द एरिथ्रियन सी (खड, 48) से ज्ञात होता है कि ओजीनी (उज्जैन) से स्थानीय उपभोग या भारत के अन्य भागों में निर्यात के लिये बैरीगाजा में सुलेमानी पत्थर, पोर्सीलेन, अच्छी मलमल, बैंगनी रग की रूई आदि माल आया करते थे।

अवन्ती विद्या का भी एक महान केंद्र था। हिंदू ज्योतिर्विद अपने देशांतर का प्रथम याम्योत्तर उज्जयिनी से गिनते थे। बसतोत्सव के अवसर पर चतुर्थ शती ई० में प्राताधिपति के दरबार के समक्ष कालिदास के नाटक अभिनीत होते थे[1]। उज्जयिनी-नरेश विक्रमादित्य की सभा को नव प्रसिद्ध व्यक्ति, जिन्हें नवरत्न कहा जाता था, सुशोभित करते थे।

उज्जयिनी का निर्माण अच्चुतगामी[2] ने किया था। स्कन्दपुराण के अवन्त्य-खण्ड (अध्याय, 43) के अनुसार महादेव, महान् त्रिपुरासुर को मारने के पश्चात् अवन्तियों की राजधानी अवन्तीपुर आये थे, जिसे महादेव की इस महती विजय के सम्मान मे उज्जयिनी कहा जाने लगा।

सातवी शताब्दी ई० मे चीनी तीर्थयात्री युवान-च्वाङ यहाँ आया था। उसके अनुसार उज्जयिनी की परिधि 6,000 ली थी। यह एक जन सकुल नगर था। यहा पर कई सघागार थे किंतु वे अधिकाशतया भग्न थे। वहाँ पर अनेक पुरोहित थे। वहाँ का राजा ब्राह्मण जाति का था। नगर के समीप ही एक स्तूप था[3]।

उज्जैन मे प्रचलित मुद्राओ का एक विशेष चिह्न था। कुछ दुर्लभ मुद्राओं पर दूसरी शताब्दी ई० पू० की ब्राह्मी लिपि मे 'उजेनिय' शब्द उत्कीर्ण है। साधारणतया मुद्रा के एक ओर सूर्य प्रतीक के साथ एक व्यक्ति बना हुआ है और दूसरी ओर उज्जैन का विशेष चिह्न बना हुआ है। कुछ मुद्राओ पर एक ओर घेरे मे एक बैल, (नदि) या बोधिवृक्ष या सुमेरु पर्वत या लक्ष्मी की आकृति बनी हुयी है। उज्जैन की कुछ मुद्राएँ चतुष्कोणीय हैं जबकि अन्य वृत्ताकार[4]। शाहजहाँ

---

[1] रैप्सन, एँश्येंट इंडिया, पृ० 175.

[2] दीपवंस (ओल्डेनबर्ग), पृ० 57.

[3] बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस आॅव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 270-271.

[4] रा० दा० बनर्जी, प्राचीन मुद्रा, 108.

के काल तक इस नगर मे वर्गाकार मुग़ल ताम्रमुद्राएँ निर्मित होती थीं[1]। उज्जैन से प्राप्त गोलाकार मुद्रा-समूह पर एक विशेष चिह्न या लक्षण (*) (Cross and balls) अंकित किया गया है जिसे उज्जैन अभिलक्षण (Ujjain Symbol) कहा जाता है[2]। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येंट इंडिया, अध्याय, IX, बि० च० लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज़, पृ० 33, 170; बि० च० लाहा, उज्जयिनी इन ऐश्येंट इंडिया (ग्वालियर आर्क्योलॉजिकल विभाग); बि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज़, I, 54

आबुयग्राम—(एपि० इ०, VIII, 222)—इसकी पहचान आबू से की जा सकती है।

आमतरी—चाहमान सोमेश्वर के बिझोली शिलालेख मे (विक्रम सवत् 1226) इसका उल्लेख है जिसकी पहचान उपरम्वाल-अनरी से की जा सकती है। यह उस क्षेत्र का नाम है जिसमे बेगून, सिंगोली, कदवास, रतनगढ एव खेडी आदि समिलित है।

आनंदपुर—हरसोल दानपत्र मे इसका वर्णन है (एपि० इ०, XIX, 236)। इसकी पहचान गुजरात मे आधुनिक बडनगर से की जा सकती है।

आर्थुन—यह गाँव राजस्थान मे बाँसवाडा से पश्चिम मे लगभग 28 मील दूर पर स्थित है जहाँ से परमार चामुण्डराज का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XIV, 295)।

आवरकभोग—इसकी पहचान सभवत. उज्जैन के पूर्वोत्तर मे अगर नामक नगर के परिवर्ती क्षेत्र से की जा सकती है (एपि०, इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, 102)।

बधेर—यह शामशाबाद से पूर्वोत्तर मे कच्ची सडक पर लगभग दस मील दूर पर स्थित है जो भिलसा से पश्चिमोत्तर मे पक्की सडक से कोई 31 मील है।

बदोह—यह कुल्हर रेलवे स्टेशन से कोई 12 मील दूर स्थित है।

बडवा—यह अत: से लगभग पाँच मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित एक विशाल गाँव है। यह राजस्थान मे कोटा मे है जहाँ पर यूपों पर कृत सवत् 295 में

---

[1] ब्राउन, क्वायंस ऑव इंडिया, पृ० 87.

[2] वही, पृ० 20; विक्रम वाल्यूम (सिंधिया ओरियंटल इंस्टीट्यूट, 1948) पृ० 281-288 पर प्रकाशित बि० च० लाहा का लेख अवन्ती इन ऐंश्येंट इंडिया भी द्रष्टव्य।

अंकित तीन मौखरि अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XXIII, भाग, II, अप्रैल, 1935, पृ० 42)।

बैराट—वैराट देखिये।

बलेव—यह राजस्थान मे स्थित संचोर है। यहाँ से दो अभिपत्रो पर अंकित एक अभिलेख मिला है (एपि० इ०, X, 76 और आगे)।

बम्हनी—यह मध्य प्रदेश के रीवाँ जिले की सोहागपुर तहसील मे है। यहाँ से एक ताम्रपत्र शास प्राप्त हुआ था जो प्राचीन भारतीय इतिहास के विद्यार्थी के लिए बहुत मूल्यवान है (द्रष्टव्य, भारत कौमुदी, भाग, I, पृ० 215 और आगे, तुलनीय, एपि० इ०, XXVII, स० 24, पृ० 132)।

बँगला—यह नरवर दुर्ग से लगभग पाँच मील पूर्व मे है।

बरई—यह पनिहर रेलवे स्टेशन से लगभग तीन मील दूर है (ग्वालियर शिवपुरी रेल-पथ)।

बरगाँव—यह गाँव मध्यप्रदेश के जबलपुर जिले की मुरवारा तहसील के मुख्यावास, मुरवारा से पश्चिम और उत्तर मे 27 मील दूर स्थित है (एपि० इ०, XXV, भाग, VI, पृ० 278)।

बरणाल—यह राजस्थान मे है। यह बरणाल के अतर्गत् एक छोटा सा गाँव है जो लोलसोते—गगापुर के मौसमी मार्ग से लगभग आठ मीलदूर पर स्थित है जहाँ से दो यूप-अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 118)।

बरो—यह निकटवर्ती पाथार नगर तक फैले हुए एक प्राचीन नगर के अवशेषो वाला प्राचीन स्थल है। मुख्य अवशेषो मे हिद्व एव जैन मदिर है (ग्वालियर स्टेट गज़ेटियर, I, पृ० 199 और आगे)।

बाघ—यह गाँव धार से लगभग 25 मील दक्षिण-पश्चिम मे मालवा के दक्षिण मे स्थित है। यह बाघ या वाघ तथा गिरना नदियो के सगम पर अवस्थित है। यह कुक्षी से 12 मील उत्तर मे, उदयपुर घाट के निकट एक प्रमुख प्राचीन मार्ग पर स्थित है (ग्वालियर स्टेट गज़ेटियर, I, 196-197)। इस गाँव के दक्षिण मे एक विहार स्थित है जो अधिकाशत. भग्न हो चुका है। यहाँ पर नौ गुहाएँ है। इन गुहाओ मे कोई अभिलेख नही प्राप्त होता है। दो अनुचरों द्वारा परिसेवित बुद्ध या किसी बोधिसत्व की प्रतिमाएँ है और वे दक्षिण-पश्चिमी समूह की दूसरी गुहा मे प्राप्त होती है। बाघ की चित्रकला की तिथि छठवी शताब्दी या सातवी शताब्दी ई० का पूर्वार्द्ध हो सकती है। इनमे से कुछ गुहाओ मे प्राप्त होने वाले डगोबा मे बुद्ध की कोई प्रतिमा नही है। किंतु इन गुहाओ में यत्र-

तत्र बुद्ध की प्रतिमाएँ हैं। यहाँ का वास्तु-शिल्प नासिक की गुहाओं के सदृश नहीं है। पण्डवोंकीगुम्फा नामक दूसरी गुहा भली प्रकार से सुरक्षित है। यह एक वर्गाकार विहार है जिसके तीन ओर कोठरियाँ ओर पीछे की ओर स्थित चैत्य मे एक स्तूप है। पार्श्वकक्ष के सामने स्तंभ हैं और इसकी दीवारे मूर्तियो से अलकृत है। तीसरी गुहा एक विहार है। चौथी गुहा शिल्पकला का उज्ज्वलतम उदाहरण है। बाइस स्तभों पर अवलबित यहाँ पर 220 फीट से भी अधिक लबा एक ओसारा है। पाँचवी गुहा एक आयताकार गुफा है जिसकी छत स्तंभ की दो पक्ति पर अवलंबित है। छठी गुफा की छत भग्न है। दूसरी गुहा के सदृश प्रतिभासित होने वाली सातवी गुहा भी जीर्ण है। ये सभी गुहाएँ विहार हैं। और स्पष्टतया इसमे सलग्न कोई चैत्य महाकक्ष या बौद्ध सघाराम नहीं है।

बाघेलखंड—त्रिलोक्यवर्मन् के रीवाँ दानपत्रो से यह प्रकट होता है कि बाघेलखड का उत्तरी भाग तेरहवी शताब्दी ई० मे चदेलो के अधीन था (इ० एँ०, XVII, 230 और आगे)।

बालाघाट—यह मध्यप्रदेश मे स्थित एक जिला है जहाँ से पृथ्वीसेन द्वितीय के पाँच अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, IX, 267 और आगे)।

बालि—इस नगर मे दो मदिर है जिनमे से एक जैन मदिर है जिसमें बारहवी शती ई० का एक अभिलेख है। वह फलना रेलवे स्टेशन से कोई पाँच मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है (एर्सकिन, राजपूताना गज़ेटियर, जिल्द, III, पृ० 178)।

बारदूला—यह मध्यप्रदेश के सारगढ मे स्थित एक गाँव है, (एपि० इ०, XXVII, भाग, VI, पृ० 287) जहाँ से महाशिवगुप्त के ताम्रपत्र (नवे वर्ष में कालाकित) उपलब्ध हुये थे।

बर्णासा—(बणासा)—यह एक नदी है जो पर्णाशा नदी के समान ही हो सकती है (ल्युडर्स की तालिका, स० 1131)।

बासिम—यह महाराष्ट्र मे अकोला जिले के बासिम तालुक का मुख्यावास है जहाँ से वाकाटक नरेश विन्ध्यशक्ति द्वितीय के कुछ अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941)।

बेण्णकट—इस विषय (जिले) मे भाडर जिले (महाराष्ट्र) की गोंदिया तहसील में कोसम्बा से 35 मील पूर्व मे स्थित बेणी नामक आधुनिक गाँव के परिवर्ती क्षेत्र समिलित थे (एपि० इ०, XXII, पृ० 170)।

बेतुल—यह मध्य प्रदेश के बेतुल जिले मे है जहाँ से गुप्त संवत 199 मे अंकित संक्षोभ के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, VIII, 284 और आगे)।

भैंसड़ा—उदयपुर के जगन्नाथराय मंदिर के अभिलेखों में इस गाँव का वर्णन है जो चित्तौड़ के समीप स्थित है (एपि० इ०, XXIV, भाग, II, अप्रैल, 1937, पृ० 75)।

भैंसरोरगढ़—राजस्थान के उदयपुर में भैंसरोरगढ़ से लगभग तीन मील पूर्वोत्तर में स्थित बरोल्ली में भव्य हिंदू-मंदिरों का एक समूह है। घटेश्वर को समर्पित प्रमुख मंदिर प्राचीरावेष्टित एक आहाते में स्थित है। यहाँ पर शेष-शय्या पर लेटे हुये विष्णु की एक प्रतिमा है जो फर्ग्युसन के मतानुसार विशुद्ध हिंदू मूर्ति कला का एक अति सुंदर नमूना है।

भरुंड—यह राजस्थान में गोदवर में स्थित एक गाँव है जहाँ से एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है।

भाब्रू—भाब्रू शासन या वैराट शिला-शासन भाब्रू की छावनी से लगभग 12 मील दूर पर स्थित बैराट की एक पहाड़ी से प्राप्त हुआ है (रिपोर्ट ऑव द आर्कयॉलॉजिकल सर्वे, वेस्टर्न सर्किल, 1909-1910)। परवर्ती युगों में मत्स्य देश को विराट या वैराट कहा जाता था। वैराट में जयपुर (भूतपूर्व रियासत) का अधिकांश भाग समिलित रहा होगा। इसकी निश्चित सीमा नहीं निर्धारित की जा सकती है किंतु उसका निर्धारण अनुमानतः उत्तर में झुनझुन से कोट कासिम तक 70 मील व पश्चिम में झुनझुन से अजमेर तक 120 मील, दक्षिण में अजमेर से बनास एवं चबल के संगम तक 150 मील और पूरब में उक्त संगम से कोट कासी तक 150 मील या कुल मिलाकर 490 मील तक किया जा सकता है। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, मत्स्यदेश तथा वैराट।

भाण्डक—महाराज पृथ्वीसेन के नचने-की-तलाई शिलालेखों में वाकाटक का वर्णन है जो महाराष्ट्र के चाँदा में भाण्डक परगने के मुख्यावास आधुनिक भाडक का प्राचीन नाम है (का० इ० इ०, जिल्द, III, तुलनीय एपि० इ०, XIV, 121 और आगे)।

भेड़ाघाट—यह मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले में नर्मदा के तट पर है। यहाँ रानी अल्हण देवी का 907 चेदि सवत् में लिखित एक शिलालेख उपलब्ध हुआ है (एपि० इ०, II, 7 और आगे)।

भिलय—यह उदयपुर से लगभग छह मील पूरब में और सीधे मार्ग से बसोदा से लगभग 18 मील दूर स्थित है।

भिल्लमाल—घुमली से प्राप्त सैन्धव दान-ताम्रपत्रों में इसका वर्णन है जिसकी पहचान राजस्थान में आबू पर्वत से 40 मील पूर्व में और पाटन के 80

मील उत्तर में स्थित आधुनिक भिनमल से की जा सकती है (एपि० इं०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 204)। यह छठवी एवं नवी शताब्दियों के मध्य गुर्जरो की प्राचीन राजधानी थी।

भिलसा—यह बंबई से 535 मील की दूरी पर स्थित है। यह बेतवा नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। कनिघम के अनुसार इसकी स्थापना गुप्तयुग मे हुयी थी। यहाँ के अवशेषों मे साठ-बौद्ध स्तूपो की एक शृखला है जिनमें से अनेक मे अस्थि-मजूषाएँ हैं। भिलसा के पश्चिमोत्तर मे बेतवा एव बेश नदियों के कांठे मे प्राचीन बेसनगर का स्थल है जो अतीत काल में अशोक के समय से ही एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। चौथी एव पाँचवी शती ई० मे इस नगर पर गुप्त-वशीय नरेशो का अधिकार था। इस पर नवी शताब्दी ई० मे मालवा के परमारो एव बारहवी शती ई० मे चालुक्यो का अधिकार था (ग्वालियर स्टेट गज़ेटियर, I, पृ० 203 और आगे)। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य विदिशा।

भीमवन—यह पथार नामक विशाल पठारी भाग की पर्वत-माला के परिवर्ती विस्तृत वन्य-क्षेत्र का प्राचीन नाम प्रतीत होता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई 1941, पृ० 101)।

भिनमाल—यह नगर सिरोही जिले के जसवन्तपुर मे स्थित है जहाँ से उदयसिंहदेव का शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XI, पृ० 55)।

भितरवार—यह दबरा रेलवे स्टेशन के पश्चिम मे सडक-मार्ग से 19 मील दूर है।

भूमरा—गुप्त सम्राटो के काल के भूमरा स्तम्भलेख मे इस गाँव का वर्णन है जो मध्य प्रदेश के सतना जिले मे नागौद मे उचेरा से 9 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित था (इ० हि० क्वा०, XXI, भाग, 2)।

भूखाडा—यह गाँव मध्य प्रदेश के राजनगर मे है (एपि० इं०, XXIV, भाग, II, अप्रैल, 1937)।

बिहार-कोट्रा—यह मध्य प्रदेश के राजगढ मे है जहाँ से एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 130)।

बीजापुर—यह निमाड जिले में है। यह सतपुडा मे स्थित एक प्राचीन पहाड़ी दुर्ग है (लुअर्ड ऐंड दुबे, इदौर स्टेट गजेटियर, II, 259)।

बिजयगढ़—यौधेयो के बिजयगढ शिलालेख मे राजस्थान के भरतपुर जिले की बयाना तहसील मे बयाना से लगभग दो मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित बिजय-गढ़ के पहाड़ी दुर्ग का वर्णन है (का० इं० इ०, जिल्द, III)

बिजोलिया-(बिझोली)—यह मेवाड में उदयपुर से लगभग 100 मील दूर एक गाँव है। इस गाँव मे एक शिलालेख उपलब्ध हुआ है। यह एक जैन अभिलेख है जिसमें पार्श्वनाथ एव अन्य जैन देवताओ की स्तुतियाँ प्राप्य हैं। चाहमान सोमेश्वर के बिझोली शिलालेख के अनुसार यह उदयपुर से लगभग 112 मील पूर्वोत्तर में स्थित एक सुदृढ़ एव सुदर नगर है। यह अरावली पहाड़ियों में पठार नामक पठारी क्षेत्र में सब से ऊपरी क्षेत्र के मध्य मे स्थित है। यह पठार दक्षिण मे बारोल्ली एवं भैंसरोरगढ से मेनाल, बिझोली और मंडलगढ से गुजरते हुए, उत्तर में जहाजपुर तक फैला हुआ है जो किसी समय साँभर एव अजमेर के चाहमान राज्यों का एक महत्वपूर्ण भाग था (एपि० इं०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941)। संप्रति यह राजस्थान के उदयपुर जिले मे है। बिझोली या बिझौली का प्राचीन सस्कृत नाम विन्ध्यावल्ली है जो कुछ अद्वितीय आकार वाले प्राचीन मदिरो एव अत्यधिक मूर्तियो से युक्त एक महत्त्वपूर्ण पुरातत्वीय स्थल है (एपि० इं०, XXIV, भाग, II, 84-85)। यह बिजोलिया या बिजोलिआ के नाम से लोक विश्रुत है। यह शब्द विन्ध्यवल्लिका मे गृहीत है।

बोंथिकवाटक—प्रवरसेन द्वितीय के कोठुरक दानपत्र मे बोथिकवाटक का उल्लेख है (एपि० इ०, XXVI, भाग V, अक्टूबर, 1941)। यह नागपुर जिले मे मनगाँव से लगभग साढ़े तीन मील पश्चिम एव उत्तर मे एव दो मील उत्तर मे स्थित आधुनिक बोठद है।

बुक्कला—यह राजस्थान के जोधपुर मडल मे बिलाडा मे है जहाँ सवत् 872 मे अकित नागभट्ट का अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, IX, 198 और आगे)।

चैत—यह करहैय्या से लगभग पाँच मील उत्तर मे है जो भिटवार-हरसी मार्ग पर स्थित देवरी गाँव से लगभग 12 मील उत्तर मे है।

चम्मक—वाकाटक वशीय महाराज प्रवरसेन द्वितीय के चम्मक ताम्रपत्र अभिलेख में भोजकट राज्य मे स्थित चम्मक का वर्णन प्राप्य है जो (भूतपूर्व बरार अमरावती जिले (महाराष्ट्र) मे या प्राचीन विदर्भ के एलिचपुर जिले के मुख्यावास) एलिचपुर से लगभग चार मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित चर्मांक नामक प्राचीन गाँव है। चर्मांक नामक यह गाँव मधुनदी के तट पर स्थित है (का० इ० इं०, जिल्द, III)।

चंदेरी—यह मध्य प्रदेश के गुणा जिले मे स्थित है और यहाँ पर एक पुराना दुर्ग है (ग्वालियर स्टेट गजेटियर, पृ० 209 और आगे)।

चन्द्रपुर—इसका तादात्म्य आधुनिक चाँदपुर से किया जा सकता है जो

सिवनी के दक्षिण में और वेन-गंगा नदी के पश्चिम में स्थित है (एपि० इं०, III, 260)।

चन्द्रावती—कुछ लोगो ने इस प्राचीन नगर की पहचान टॉलेमी के संद्राबतिस (Sandrabatis) से की है। इस नगर के अवशेष आबू-रोड से लगभग चार मील दक्षिण-पश्चिम में और पश्चिमी बनास नदी के बाँए तट के समीप देखे जा सकते हैं (एर्सकाइन द्वारा संकलित राजपूताना गजेटियर्स, III-ए, पृ० 298)।

चर्मण्वती—पद्मपुराण (उत्तर खण्ड, श्लोक, 35-38), योगिनीतंत्र (2 5; पृ० 139-140) एव पाणिनि की अष्टाध्यायी (VIII, 2, 12) मे इस नदी का वर्णन हुआ है। चर्मण्वती या चबल इंदौर के पश्चिमोत्तर मे अरावली पर्वत-माला से निकलती है और पूर्वोत्तर की ओर पूर्वी राजस्थान से प्रवाहित होती हुयी यमुना मे मिलती है। यह यमुना की एक सहायक नदी है। यह परिपात्र या पारियात्र पर्वत से सबद्ध है (मार्कण्डेयपुराण, 57 19-20)।

चहंद—यह परमारों की राजधानी थी जिसे संभवत: महाराष्ट्र के चाँदा जिले के मुख्यावास चाँदा से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941, पृ० 182)।

चेदि देश—पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी (4 2 116) मे इसका वर्णन किया है। यह यमुना के समीप एव कुरु जनपद से मिला हुआ था। स्थूल-रूप से यह आधुनिक बुदेलखड एव निकटवर्ती क्षेत्र को द्योतित करता है। चेदि देश की राजधानी सोत्थिवती पुरी थी (जातक, स० 422) जिसे अतिसंभवतः महाभारत मे वर्णित (III, 20 50, XIV, 83 2) शुक्तिमती नगर से समीकृत किया जा सकता है। चेदि देश बौद्धधर्म का एक उल्लेखनीय केद्र था (अंगुत्तर, III, 355-56, IV, 228 और आगे, V, 41 और आगे; 157 और आगे; दीघ० II, 200, 201, 203, सयुत्त, V, 436-437)। वेस्सन्तर जातक के अनुसार चेत या चेतिराष्ट्र राजा वेस्सन्तर के जन्मस्थान जेतुत्तरनगर से तीस योजन दूर था (जातक, VI, 514-15)।

पूर्व वैदिक काल में चेदि-नरेश निश्चय ही अत्यत एक शक्तिशाली राजा रहा होगा क्योकि ऋग्वेद मे (VIII, 5, 37, 39) उसे अपने एक यज्ञ मे ब्रह्मा का पद सुशोभित करने वाले एक पुरोहित को दास के रूप में दस राजाओं का दान करते हुए बतलाया गया है। चेदि राजा कशु निश्चय ही ऋग्वेदिक-युग में एक प्रभविष्णु व्यक्तित्व रहा होगा क्योकि उसने अनेक राजाओं को अपने अधीन किया था। महाभारत के अनुसार (एम० एन० दत्त, महाभारत, पृ०

83) चेदियों की सुंदर एव श्रेष्ठ राजधानी को वसु पौरव ने जीता था। उसकी राजधानी शुक्तिमती नदी के तट पर स्थित शुक्तिमती थी। उसने अपना अधिकार पूरब में मगध तक एवं पश्चिमोत्तर मे स्पष्टतया मत्स्य तक फैला लिया था। प्रतीत होता है कि महाभारत-काल मे महान् चेदि-नरेश शिशुपाल अत्यधिक शक्तिशाली हो गया था। वह सभी पाण्डवो के सहित कृष्ण की हत्या करना चाहता था किंतु कृष्ण ने उसका बध कर दिया था। युधिष्ठिर ने उसके पुत्र को चेदियो के राज्य पर अधिष्ठित किया।

दे० रा० भंडारकर का कथन है कि चेत या चेतिय मोटे तौर पर आधुनिक बुंदेलखड को द्योतित करता है (कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 52)। उनके मत को कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इडिया, पृ० 84 पर स्वीकृत किया गया है। रैप्सन का मत है कि चेदि मध्य प्रदेश के (भूतपूर्व सेंट्रल प्रांविस) उत्तरी भाग पर राज्य करते थे (ऐंश्येंट इडिया, पृ० ,162)। पार्जिटर का अभिमत है कि चेदि यमुना के दक्षिण में है (ऐ० इ० हि० ट्रे०, 272)। कुछ लोगों की धारणा है कि चेदि मे बुदेलखड का दक्षिणी भाग एव जबलपुर का उत्तरी भाग अतर्विष्ट था। चेदि को त्रिपुरी भी कहा जाता था (न० ला० दे, ज्यॉ० डि०, 14)। सहजाति नामक एक चेदि नगर यमुना के दाहिने तट पर स्थित था। वत्स के पूर्व मे स्थित पाचीनवस मे एक मृगवन था। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया, अध्याय, VI; एफ० ई० पर्जिटर, ऐंश्येंट चेदि, मत्स्य ऐंड करुष, ज० ए० सो० ब०, LXIV, भाग, I, (1895) पृ० 249 और आगे।

छत्तीसगढ़—यह हैहयो की तुम्माण शाखा के अधीन एक स्वतत्र राज्य था (एपि० इ० ,XIX, 75 और आगे)।

छोटी देवरी—यह मध्यप्रदेश के जब्बलपुर जिले की मुरवारा तहसील मे जोकाही से लगभग 16 मील पश्चिम मे केन्न के बाँएँ तट पर स्थित है। यह गहन वन मे दबे हुये अनगिनत लघु मदिरो के कारण इसे माढा देवरी भी कहा जाता है। कनिंघम के अनुसार ये सभी देवालय अति सभवत: शैव मंदिर थे (शकरगण का छोटी देवरी शिलालेख, एपि० इ०, XXVII, भाग, IV, पृ० 170)!

चिञ्चापल्ली—यह नागपुर जिले मे मनगाँव से आधे मील दक्षिण मे बुन्ना नदी के दाहिने तट पर स्थित चिकोली ही है (एपि० इं०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941)।

चिरवा—उदयपुर से लगभग दस मील उत्तर एव नगदा से दो मील पूरब मे स्थित यह एक गाँव है। यहाँ पर किसी विष्णु-मंदिर के दरवाजे पर उत्कीर्ण

एक शिलालेख प्राप्त हुआ है। शिलालेख का सपादन बी० गाईगर ने किया है (डब्ल्यू० जेड० के० एम०, XXI)।

चित्तौड़गढ़—वह राजस्थान मे उदयपुर मे है (भंडारकर द्वारा पुनरावृत्त, इंस्क्रिप्शस ऑव नार्दन इडिया, नं० 570, श्लोक, 1324)।

चित्रकूट—कुछ लोगों ने इसे बाँदा जिले में कालंजर के समीप चित्रकूट से समीकृत किया है। यह बुदेलखड मे कपला के समीप आधुनिक चित्रकोट या चतुरकोट पहाड़ी या जिला है। बृहत्सहिता (XIV.13) मे इसका वर्णन किया गया है। इसे चित्तूर नामक दुर्ग से भी समीकृत किया जाता है जिसे कृष्ण तृतीय ने गुर्जर-प्रतीहारो से जीत लिया था (द्रष्टव्य, ज० बि० उ० रि० सो०, 1928, पृ० 481; अभिलेखीय उल्लेखो के लिये द्रष्टव्य एच० सी० रे, डाइनेस्टिक हिस्ट्री ऑव नार्दन इंडिया, जिल्द I, पृ० 589)। जैन पद्मपुराण (चिन्ताहरण चक्रवर्ती द्वारा बगला मे लध्वीकृत, पृ० 20) के अनुसार राम एव लक्ष्मण मालव देश में चित्रकूट पहाडी के पाद तक आये थे। यहाँ वन इतना सघन था कि मनुष्य के निवास का पता लगाना दुष्कर था।

चित्रकूट—यह ऋक्ष से निकलने वाली नदियो मे से ,एक है जिसका कोई सबध चित्रकूट पर्वत से हो सकता है (मार्कण्डेय पुराण, 57, 21-25, लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 48, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ०, 110)।

कुर्ली—यह ग्वालियर-झाँसी मार्ग पर तेकनपुर सिंचाई बाँध से आधे मील दक्षिण मे है।

डबोक—यह गाँव मेवाड मे उदयपुर से आठ मील पूर्व मे स्थित है (एपि० इ०, XX, पृ० 122)।

दमोह—दमोह जिले के बतिहगढ अभिलेख मे खरपरो का वर्णन है जिन्हें डा० भडारकर समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तभ लेख मे वर्णित खर्परिको के समान मानते है (एपि० इ० ,XII, 46, इ० हि० क्वा०, I, 258; बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐश्येट इडिया, पृ० 356)।

दंगुन—प्रभावतीगुप्ता के पूना-अभिलेखो मे वर्णित यह एक गाँव का नाम है (एपि० इ०, XV, 39 और आगे)। इन अभिपत्रो मे सुप्रतिष्ठाहार मे स्थित इस ग्राम के दान का आलेख है। यह विल्वणक के पूर्व मे, शीर्ष-ग्राम के दक्षिण मे कदापिञ्जन के पश्चिम मे और सिदिविवरक के उत्तर में स्थित था। दगुन का प्राचीन गाँव नागपुर जिले में आधुनिक हिंगणघाट से समीकृत प्रतीत होता है।

दशार्ण—साधारणतया इसे मध्य प्रदेश मे बेदिस या भिलसा क्षेत्र से

समीकृत किया जाता है। इसका वर्णन महाभारत (II, 5-10) एवं कालिदास के मेघदूत (24-25) मे हुआ है। पुराणो मे दशार्ण देश के निवासियो को मालवों, कारूषों, मेकलों, उत्कलों एवं निषधो के साथ संबद्ध किया गया है। रामायण (किष्किन्ध्याकाण्ड 41.8-10) मे उनके देश को मेकलों एवं उत्कलों के देश से संबंधित बतलाया गया है जहाँ सुग्रीव ने सीता की खोज मे अपनी *वानरसेना भेजी थी। दशार्ण जन नदी के तट पर किसी स्थल पर रहते थे जिसे* अब भी सागर के निकट आधुनिक धसन के रूप मे देखा जा सकता है जो भोपाल से निकल कर बुदेलखंड से प्रवाहित होती हुई बेतवा (वेत्रवती) मे गिरती है। यह उल्लेखनीय है कि रामायण एव पुराणो मे वर्णित दशार्ण-देश मेघदूत के दशार्ण-देश से भिन्न प्रतीत होता है (पूर्वमेघ, श्लोक, 24)। विल्सन के अनुसार (विष्णुपुराण, II, 160, पा० टि० 3) पूर्वी या दक्षिण-पूर्वी दशार्ण मध्य प्रदेश में छत्तीसगढ का एक भाग था (तुलनीय, ज० ए० सो० ब०, 1905, पृ० 7, 14)। दसरोन दशार्णों द्वारा निवसित क्षेत्र की नदी है (मैक्रिंडिल, ऐंश्येट इंडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाइ टाल्मी, मजूमदार सस्करण, पृ० 71)। कुरुक्षेत्र के महायुद्ध मे क्षत्रदेव नामक दशार्ण के एक राजा ने, जो एक शक्तिशाली योद्धा था हाथी पर सवार होकर पाण्डवों की ओर से वीरतापूर्वक युद्ध किया था (कर्णपर्व, अध्याय, 22,3, द्रोणपर्व, अध्याय, 25, 35)। यह एक रोचक तथ्य है कि दशार्ण-नरेश क्षत्रदेव के सभी योद्धा शक्तिशाली नायक थे और हाथी पर सब से अच्छा युद्ध कर सकते थे। पार्जिटर (ऐ० इ० हि० ट्रे०, पृ० 280) का मत है कि कुरुक्षेत्र-युद्ध के काल मे दशार्ण एक यादव राज्य था। जैसा कि पेतवत्थु एव उसके भाष्य मे वर्णित है—एरकच्छ दसण्ण मे (दशार्ण) एक नगर था (पेतवत्थु 20; पेत्वत्थु कामेंट्री, 99-105)। दशार्ण (दसण्ण) असि-निर्माण की कला के लिए प्रसिद्ध था (जातक, , III, 338; दसण्णकम तिक्खिण-धारम् असिम)। महावस्तु (I, 34) एव ललितविस्तर मे यह षोड्श महाजन-पदों मे से एक बतलाया गया है। दसण्ण के निवासियो ने बुद्ध के लिए एक विहार बनवाया था और उन्होने उनके बीच ज्ञान बिखेरा था (लाहा, ए स्टडी ऑव द महावस्तु, पृ० 9)। दशार्णों के देश मे नीच नामक एक पहाडी थी (मेघदूत, पूर्वमेघ, श्लोक, 26)।

डवानीग्राम—(एपि० इं० VIII, 221)—इसकी पहचान आबू पर्वत मे दिलवाड से सात मील पश्चिमोत्तर मे डवानी से की जा सकती है।

देवगढ़—यह झाँसी जिले की ललितपुर तहसील के दक्षिणी-पश्चिमी सीमा के निकट बेतवा (वेत्रवती) नदी के दाहिने तट पर छाये हुये एक अर्द्ध गोलाकार

मोड़ पर स्थित है। यह ललितपुर से 19 मील एवं जखलौन से सात मील है। यहाँ पर ललितपुर से जिला-परिषद् के एक मौसमी मार्ग द्वारा मोटरकार या ताँगा से पहुँचा जा सकता है। यहाँ पर एक ऊँचे मैदान के पश्चिमी छोर पर स्थित एक एकाकी गुप्त युगीन मंदिर है जिसे स्थानीय रूप से सागर-मठ कहा जाता है। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य मे० आर्क० स० इं०, स० 70; मा० स्वं० वत्स, द गुप्त टेंपुल ऐट देवगढ़।

दिवली—यह नागपुर के समीप वर्धा से लगभग 10 मील दक्षिण पश्चिम मे है (एपि० इ०, V, 188 और आगे)।

देवलिया—घुम्ली से 13 मील पूर्वोत्तर मे स्थित यह एक गाँव है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 204)।

बाड़ा—इसे आबू पर्वत पर स्थित दिलवारा नामक आधुनिक गाँव से समीकृत किया जाता है (एपि० इ० VIII, 208 और आगे)।

दिउला-पंचला—यह देवग्राम पटटल मे एक गाँव है जिसकी पहचान कुछ लोगो ने रीवाँ मे (म० प्र०) खैरहा के निकट देवगाँवाँ से की है।

युथ—कर्ण देव ने इस गाँव को गगाधरशर्मन् नामक एक ब्राह्मण को दान दे दिया था (एपि० इ० XII, 205 और आगे)।

देवदह—यह गाँव चित्तोर के समीप स्थित है (एपि० इं० XXIV, भाग, II, अप्रल, 1937, पृ० 65)।

देवगिरि—कालिदास ने इसे चबल के निकट मदसोर एव उज्जैन के बीच में स्थित बतलाया है (मेघदूत, पूर्वमेघ, 42)।

धनिक—725 ई० के दबोक (मेवाड) अभिलेख मे इसका वर्णन हुआ है (एपि० इ० XII)। दे० रा० भडारकर ने इस स्थान के अधिपति धवालप्पदेव की पहचान, 738 ई० के कनस्वा (राजस्थान में कोटा) अभिलेख मे वर्णित मौर्य-वशीय राजा धवल से की है।

धंकतीर्थ—यह घुमली से लगभग 25 मील पूर्व मे गदल (भूतभूर्व रियासत) मे स्थित धाँक ही है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942)।

धोवहट्ट—त्रैलोक्यमल्लदेव के काल के रीवाँ अभिपत्रो मे इसका उल्लेख है जिसे मध्यप्रदेश मे धुरेटी से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXV, भाग, I, जनवरी, 1939, पृ० 5)।

धुरेटी—रीवाँ शहर से लगभग सात मील दूर यह एक गाँव है (एपि० इं०, XXV, भाग, I, पृ० 1)।

दिनार—यह झाँसी शिवपुरी मार्ग पर, झाँसी से लगभग 16 मील पश्चिम में स्थित है।

दीर्घद्रह—यह अतिसंभवतः दीघि है जो अप्टि से लगभग 30 मील दक्षिण मे वर्धा नदी के बाँएँ तट पर स्थित है (एपि० इ०, XXIV, भाग, VI, अप्रैल, 1938, पृ० 263)।

दिवरा—यह दक्षिण राजस्थान मे डूंगरपुर (भूतपूर्व रियासत) मे है। यहाँ से उपलब्ध एक प्रतिमा-लेख मे वैज नामक किसी व्यक्ति द्वारा देवकर्ण (दिवरा) मे एक प्रतिमा के निर्माण का आलेख है (एच० सी० रे, डाइनेस्टिक हिस्ट्री ऑव नार्दर्न इडिया, जिल्द, II, पृ० 1006)।

दोंगरग्राम—यह गाँव महाराष्ट्र के योतमल जिले मे पूसद से लगभग 10 मील दूर दोंगरगाँव के समान है। यह एक पहाडी पर स्थित है। इस गाँव मे दो प्राचीन मदिर है। यहाँ पर शक सवत् 1034 मे लिखित जगदेव के काल का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ है जिसमे इस गाँव के दान का आलेख है (एपि० इ, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941, पृ० 177 और आगे)।

दुदिया—यह मध्य प्रदेश के छिंदवाडा जिले मे है जहाँ पर प्रवरसेन द्वितीय के चार सुरक्षित ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, III, 258)।

दुई—चाहमान सोमेश्वर (विक्रम सवत् 1226) के बिझोली-शिलालेख मे दुर्द का उल्लेख है जिसे पूर्व की दिशा मे चाहमान-राज्य के समीप मध्य प्रदेश मे आधुनिक दुद्दई या दूधाई से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941, पृ० 84 और आगे)।

एरक्क—सवत् 1230 (1173 ई०) मे तिथित चदेल परमर्दि के एक महोबा दान-ताम्रपत्र मे एक जिले के मुख्यावास के रूप मे एरक्क का वर्णन है।

फ़तेहाबाद—यह पश्चिमी रेलवे के राजपूताना-माल्वा खड मे उज्जैन मे एक रेलवे स्टेशन है। यह रणक्षेत्र है जहाँ शाहजहाँ एव उसके पुत्र औरगजेब मे युद्ध हुआ था।

गंगाभेद—चाहमान सोमेश्वर (विक्रम सवत् 1226) के बिझाली शिला-लेख में गगाभेद का उल्लेख है (एपि० इ०, XXVI, 101 और आगे) जो स्पष्टतः टॉड के राजस्थान मे वर्णित बारोल्ली मे स्थित गगाभेद है (III, 1766-1768)।

गंगधार—विश्ववर्मन् के गगधार-प्रतिमा-लेख मे वर्णित यह गाँव पश्चिमी मालवा मे झलवाड़ (भूतपूर्व एक रियासत) के मुख्यावास, झलरापाटन से लगभग 52 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है (का० इ० इं०, जिल्द, III)।

गौनरी—उज्जैन-देवास मार्ग पर उज्जैन से 11 मील दक्षिण-पूर्व में नरवल (भूतपूर्व एक रियासत) के मुख्यावास नरवल से तीन मील पूर्वोत्तर मे स्थित यह एक गाँव है (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 101, थ्री कॉपरप्लेट इस्क्रिप्शंस फ्रॉम गौनरी)।

गालवाश्रम—यह राजस्थान में जयपुर से तीन मील दूर पर स्थित था। बृहत्-शिवपुराण (अध्याय, I 83) के अनुसार यह चित्रकूट पर्वत पर स्थित था।

घटियाला—यह जोधपुर से 22 मील पश्चिम-पश्चिमोत्तर मे स्थित है जहाँ से कक्कुक के अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, IX, 277 और आगे)।

घोसुण्डी—यह राजस्थान मे चित्तौड़गढ जिले मे नागरी के निकट एक गाँव है जहाँ से एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०,-XVI, 25 और आगे)।

गोदुरपुर—यह मध्य प्रदेश के निमाड जिले में नर्मदा के दक्षिणी तट पर स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, IX, 120)।

गोहसोदवा—यह मध्य प्रदेश मे अञ्जनवती से $1\frac{1}{2}$ मील दक्षिण मे स्थित आधुनिक गहवा है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 13)।

गोशृंगपर्वत—यह मध्य प्रदेश मे निषधभूमि के समीप है (महाभारत, सभापर्व, अध्याय, 31)।

गुञ्जि—यह मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ मे गुजि के मुख्यावास शक्ति से 14 मील उत्तर और पश्चिम मे स्थित एक लघु गाँव है। इस गाँव के समीप एक पहाडी के पाद मे एक जल-कुड है जिसमे निकटवर्ती पहाडियो से जल आता रहता है। इस कुड के एक ओर शिला पर एक अभिलेख उत्कीर्ण है। यह किरारी से लगभग 40 मील पश्चिमोत्तर मे है जहाँ से दूसरी शताब्दी ई० की ब्राह्मी लिपि मे अंकित एक काष्ठ स्तभ-लेख उपलब्ध हुआ है (कुमारवरदत्त का गुजी शिलालेख, एपि० इ०, XXVII, भाग, I, पृ० 48)। यह उस देश के एक भाग मे स्थित था जो ईस्वी सन् के प्रारंभ के पूर्व एवं पश्चात् एक समृद्धिशाली नगर था।

गुर्जरत्रा—दिदवाना, सीव एव मगलोना से फैले हुये राजपूताना के इस भाग को गुर्जरत्रा (एपि० इ०, IX, पृ० 280) या [गुर्जरभूमि कहा जाता था।

हर्ष—यह एक पहाड़ी है जिसके शिखर पर एक प्राचीन मंदिर के अवशेष प्राप्त होते हैं। इसे ऊँचापहाड़ भी कहा जाता है जो राजस्थान मे जयपुर से

60 मील पश्चिमोत्तर एव सीकर से लगभग सात मील दक्षिण में जयपुर के अंतर्गत् शेखावती मे स्थित हर्षनाथ नामक गाँव के समीप है। यहाँ से विक्रम संवत् 1930 में अकित चाहमान विग्रहराज का एक शिला लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, II, 116, और आगे)।

हरसौद—यह मध्य प्रदेश के होशगाबाद जिले मे करवा नगर से कुछ मील दूर पर स्थित एक गाँव है (इ० ऐं०, XX, 310)। हर्षपुर को हरसौद से समीकृत किया जा सकता है जहाँ से एक मदिर के खडहर मे एक शिलालेख प्राप्त हुआ है।

होली—यह गाँव गिरवा विषय (जिले) मे है (एपि० इं०, XXIV, भाग, II, अप्रैल, 1937)।

जजा भुक्ति—जजा-भुक्ति या जेजाभुक्ति या जेजाकभुक्ति या जेजाभुक्तिक बुदेलखड का प्राचीन नाम है (एपि० इ०, I, 35, तुलनीय कल्चुरि जाजल्लदेव का मदनपुर शिलालेख; कनिंघम, आर्क० स० रि०, भाग, X, फलक, XXXII)।

जाबालिपुर—यह राजस्थान के जोधपुर मे है। यहाँ से उपलब्ध एक शिला-लेख मे जाबालिपुर (जो आधुनिक जालोर है) के कचनगिरि विषय (जिले) मे पार्श्वनाथ की प्रतिमा से युक्त एक जैन विहार के निर्माण का उल्लेख प्राप्य है (एपि० इ०, XI, 54 और आगे)। इस प्राचीन नगर के मध्य मे पुरातत्वीय महत्त्व के दो स्मारक पहला तोपखाना और दूसरा लगभग 1000 फीट ऊँची एक पहाड़ी पर स्थित एक किला है आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्टस, 1930-34, पृ० 50)।

जेतुत्तर—इसकी पहचान चित्तौड़ से 11 मील उत्तर मे स्थित नागरी नामक स्थान से की जाती है (न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 81)। स्पष्टत. यह अल्बेरुनी द्वारा वर्णित मेवाड़ की राजधानी जतरूर है (अल्बेरुनीज इडिया, I, पृ० 202)।

कागपुर—(काकपुर)—इसे स्थानीय रूप से गघला-कागपुर कहा जाता है यह भिलसा-पचर मार्ग पर स्थित है और भिलसा से 17 मील उत्तर मे स्थित है। जायसवाल ने इसे इलाहाबाद स्तभ मे वर्णित काको की राजधानी से समीकृत किया है। यह बहुत पुरातत्वीय महत्त्व का है (ज० बि० उ० रि० सो०, XVIII, पृ० 212-213)।

काकंदकुडु—इसे देवरी से लगभग 6 मील पूरब में स्थित खुटुड से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXVII, भाग, IV, पृ० 171)।

कणस्व—यह राजस्थान मे कोटा में है।

कंखल—यह राजस्थान में आबू पर्वत में है (नं० 454, विक्रम सं०, 1265; डा० दे० रा० भंडारकर द्वारा पुनरावृत्त, इंस्क्रिप्शस ऑव नर्दर्न इंडिया)।

कपिलधारा—इसका एक अन्य नाम मदाकिनी है जो महाकाल-मंदिर के समीप बिझोली मे एक पवित्र जलाशय है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 101)।

करीकतिन—यह लगभग पूरब मे स्थित कारीतलाई के सदृश है। यह देवरी माढ़ा से चार मील दक्षिण मे स्थित खुरई से लक्षित होती है (एपि० इ०, XXVI, भाग, IV, पृ० 171)।

कस्रवद—यह मध्य प्रदेश के निमाड़ जिले मे नर्मदा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित एक नगर है। यहाँ से उपलब्ध पुरानिधियो मे छिद्रिल मृण्भाड, मृत्तिका-शकु आदि है। कस्रवद से सत्तर मील उत्तर मे उज्जैन है। अधिक विवरण के लिये द्रष्टव्य, एनुअल रिपोर्ट ऑव आर्क० सर्वे०, ग्वालियर, 1938-39 इं० हि० क्वा०, मार्च, 1949)।

कबिलासपुर—इसे बेलगाँव जिले के हुक्केरी तालुक मे नुलेग्राम के समीप इसी नाम के एक आधुनिक गाँव से समीकृत किया जाता है। एपि० इ०, XXI, पृ० 11, XXIII, पृ० 194)।

कालिंसिंध—निर्बिन्ध्या के अंतर्गत् देखिये।

कामन—यह राजस्थान मे भरतपुर जिले मे है जहाँ से एक शिलालेख उपलब्ध हुआ है। इसकी पहचान काम्यक से की जा सकती है (एपि० इ०, XXIV, भाग, VII, जुलाई, 1938, पृ० 329 और 332)।

काम्वा—यह बिझोली से लगभग 2 मील पूरब मे स्थित आधुनिक कामा है।

कांतिपुर—कनिघम ने इसे ग्वालियर से 20 मील उत्तर मे कोतवल से समीकृत किया है (स्कदपुराण, अध्याय, 47, आर्क० स० रि०, जिल्द, II, पृ० 308)।

कारीतलाई—यह मध्य प्रदेश मे जबलपुर जिले की मुडवारा तहसील मे स्थित एक गाँव है जहाँ से चेदि लक्ष्मणराज के शासनकाल का एक शिला-लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, II, 174 और आगे)। यह मुडवारा से 29 मील पूर्वोत्तर मे स्थित एक छोटा गाँव है। यह बहुत प्राचीन प्रतीत होता है। यहाँ पर कई प्राचीन मदिर है (एपि० इ०, XXIII, जुलाई, 1936, पृ० 255)।

कायथा—अनर्घमंडल मे स्थित यह एक गाँव है। यह बिलासपुर जिले की जाँजगीर तहसील की दक्षिणी सीमा से लगभग चार मील आगे और पेण्ड्रबंध

से लगभग 14 मील प्राय: ठीक पश्चिम मे आधुनिक कैता को द्योतित करता है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 3)।

केसला—यह गाँव प्राचीन कैलाशपुर का वाचक माना जा सकता है। यह गाँव मल्लार के निकट लगभग आठ मील दक्षिण-पूर्व मे है जहाँ पर एक प्राचीन मदिर के खडहर हैं (एपि० इं०, XXIII, भाग, IV, पृ० 120)।

खडुंवरा—यह बिझोली से लगभग छह मील दक्षिण-पूर्व में आधुनिक खडिपुर प्रतीत होता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941)।

खजुराहो (खजरहो)—यह मध्य प्रदेश के छत्तरपुर जिले मे झाँसी (उ०प्र०) से लगभग 100 मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित है (दे० रा० भडारकर द्वारा पुनरावृत्त इस्क्रिप्शस ऑव नार्दर्न इंडिया, न० 300, विक्रम स०, 1215)। खजुराहो के लक्ष्मण-मदिर की नीव के अवशेषो मे एक शिलालेख प्राप्त हुआ था और एक अन्य अभिलेख यहाँ पर जिन-मदिर के चौखटे के बाँएँ बाजू पर उत्कीर्ण बतलाया जाता है (एपि० इ०, I, 123-35, 135-36, ज० ए० सो० ब०, XXXII, 279)।

चीनी तीर्थयात्री युवान-च्वाङ् ने इस स्थल का उल्लेख किया है। वह कहता है कि इस गाँव मे अनेक विहार एव लगभग दस मदिर थे। वहाँ पर बुद्ध की एक भीमकाय प्रतिमा है जिस पर सातवी या आठवी शती ई० की लिपि मे लोक-धम्म उत्कीर्ण है। इसका महत्त्व पूर्णत यहाँ के भव्य मदिरो की शृखला के कारण है जो तीन मुख्य वर्गों मे विभक्त है . पश्चिमी, उत्तरी एव दक्षिण-पूर्वी । पश्चिमी मदिर-समूह मे मुख्यतया ब्राह्मण मदिर, शैव एव वैष्णव है। उत्तरी मदिर-समूह मे एक विशाल एव कुछ लघु मदिर है जो सभी वैष्णव है। दक्षिण-पूर्वी समूह में मुख्यतया जैन मदिर है। पश्चिमी-समूह मे सर्वप्राचीन मदिर चौसठ-योगिनी-मदिर है। कडरिया महादेव का मदिर सर्वसुन्दर है। अधिक विवरण के लिये द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 34-37)

खलारी—यह मध्य प्रदेश के रायपुर शहर से लगभग 45 मील पूर्व मे स्थित एक गाँव है। यहाँ से विक्रम सवत् 1470 मे अकित हरिवर्मदेव के शासन काल का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ है (एपि० इ०, II, 228 और आगे)।

खानदेश—यहाँ पर अम्मदेव नामक एक प्रसिद्ध श्वेतांबर जैन शिक्षक रहता था जिसने अनेक लोगों को जैन धर्म मे दीक्षित कर लिया था (एपि० इं०, XIX, 71)।

खर्परिक—मध्य प्रदेश के दमोह के बातिहागढ़-अभिलेख में वर्णित खरपर को सभवत: खर्परिक से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XII, पृ० 46; इं० हि० क्वा०, I, पृ० 258)।

खेजड़िया भोप—यह गाँव मदसोर जिले मे है जहाँ पर अनेक बौद्ध गुहाएँ उपलब्ध हुयी थी (अधिक विवरण के लिये द्रष्टव्य, आर्क० स० इं०, एनुअल रिपोर्ट, 1916-17, भाग, I, पृ० 13-14)।

खोह—महाराज हस्तिन् के खोह ताम्रपत्र लेख मे इसका वर्णन है। यह मध्य प्रदेश के बघेलखड मडल के नौगढ मे उचहरा से लगभग तीन मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है (का० इ० इं०, जिल्द, III)।

किरारी—यह मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ संभाग मे स्थित एक गाँव है जहाँ से काष्ठ स्तंभ पर उत्कीर्ण एक ब्राह्मी अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XVIII, 152)।

किराडु—यह जोधपुर मे बाडमेर से लगभग 16 मील पश्चिम-उत्तर-पश्चिम मे स्थित हाथमा के निकट खडहरो मे है। यहाँ से अल्हणदेव का एक प्रस्तर लेख उपलब्ध हुआ है (एपि० इ०, XI, पृ० 43)।

किरीकैका—भोज के देपालपुर ताम्रपत्र मे वर्णित यह गाँव उज्जयिनी के पश्चिम मे स्थित है भोज ने जिसकी कुछ भूमि मान्यखेट से आने वाले एक ब्राह्मण को दान दी थी (इ० हि० क्वा०, VIII, 1932)।

कोनी—मध्य प्रदेश के छत्तीसगढ़ मडल मे बिलासपुर जिले के मुख्यावास, बिलासपुर से लगभग 12 मील दक्षिण एव पूरब मे आरपा नदी के बाँएँ तट पर स्थित यह एक लघु गाँव है। यहाँ पर कल्चुरि-नरेश पृथ्वी देव द्वितीय का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि०, इ० XXVII, भाग, VI, पृ० 276)।

कोठुरक—प्रवरसेन द्वितीय के कोठुरक दान मे इस गाँव का वर्णन एक प्रदत्त स्थल के रूप मे हुआ है। यह सुप्रतिष्ठाहार मे स्थित था। यह उमा नदी के पश्चिम मे, चिञ्चापल्ली के उत्तर मे बोथिकवाटक के पूरब में एव मण्डुकीग्राम के दक्षिण मे स्थित है। यह स्थल वुन्ना नदी के दाहिने तट पर मनगाँव मे स्थित प्रतीत होता है, जो नागपुर जिले मे जाँब से लगभग 2½ मील उत्तर एवं पश्चिम मे स्थित था (एपि० इं०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941)।

कुडोपलि—यह गाँव उडीसा के सभलपुर जिले की बरगढ़ तहसील मे स्थित है जहाँ महाभवगुप्त द्वितीय के काल के अभिपत्र भूमि में दबे हुये पाये गये थे (एपि० इ०, IV, 254, और आगे)।

कुंभी—यह जबलपुर से 35 मील पूर्वोत्तर में हेरन नदी के दाहिने तट पर

स्थित है। यहाँ से दो ताम्रपत्रो पर उत्कीर्ण एक लेख उपलब्ध हुआ है (ज० ए० सो० बं०, 1839, जिल्द, VIII, भाग, I, पृ० 481 और आगे)।

कुररघर-पर्वत—यह अवन्ती मे था। किसी समय यहाँ पर महाकच्चायन रहते थे। काली नामक एक नारी उपासिका शिष्या उनके पास आयी और उनसे एक सूत्र (सुत्त) का सविस्तार अर्थ-निरूपण करने को कहा। उन्होंने अर्थ व्याख्या करके उसको सतुष्ट किया (अंगुत्तर, V, पृ० 46-47)।

कुरे—यह अञ्जनवती से तीन मील पश्चिमोत्तर मे स्थित आधुनिक कुढा है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 13)।

कुरुस्पाल—यह नारायणपाल से एक मील एव बस्तर जिले मे जगदलपुर से 22 मील दूर पर स्थित एक गाँव है जहाँ पर सोमेश्वर देव के काल के धारण महादेवी के दो अभिलेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, X, 31 और आगे)।

लघु-बिझोली—इस समय इसे छोटी बिझोलिया कहा जाता है और यह बिझोली से लगभग तीन मील पश्चिम मे है (एपि० इ०, XXVI, पृ० 102 और आगे)।

बेव—इसकी पहचान नरसिमपुर मे लिबु से की जा सकती है (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941, पृ० 78)।

लोधिया— यह मध्य प्रदेश के सारगढ के सरिया परगना मे स्थित एक लघु गाँव है (एपि० इ०, XXVII, भाग, VII, जुलाई, 1948, पृ० 316)।

लोहनगर—यह एक प्राचीन मडल का मुख्यावास है जिसका प्रतिरूप वरूड से लगभग नौ मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित लोणी हो सकता है (एपि० इं० XXIII, भाग, III, जुलाई, 1935, पृ० 84)।

लोहरी—यह उदयपुर के जहाजपुर मे स्थित एक गाँव है। यहाँ पर भूतेश्वर-मदिर के स्तभ पर उत्कीर्ण एक प्रस्तर लेख उपलब्ध हुआ है।

मदनपुर—यह मध्य प्रदेश के सागर जिले मे है (दे० रा० भंडारकर द्वारा पुनरावृत्त, इस्क्रिप्शस ऑव नर्दर्न इडिया, न० 684, विक्रम, 1385)। मदनपुर गाँव मे एक प्राचीन मदिर के मडप के स्तभो पर अंकित कुछ प्रस्तर लेख उपलब्ध हुये थे। यह गाँव दुदही से 24 मील दक्षिण-पूर्व मे और सागर से 30 मील उत्तर मे स्थित है (आ० स० इ० रि०, जिल्द, X, पृ० 98-99)।

मद्दकभुक्ति—सभवत. इसे इदौर के निकट सुप्रसिद्ध मऊछावनी से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXIII, भाग, IV)।

महल्ला-लाट—इसका अर्थ विशालतर लाट प्रतीत होता है। यह बेलोरा से लगभग 18 मील पश्चिमोत्तर मे, अमरावती जिले के मोरसी तालुक मे घाट

लाडकी या लाडकी से प्रतिनिधित्व होता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, VI, पृ० 263)।

महौद—इसकी पहचान सतजुन से लगभग 25 मील दक्षिण मे स्थित महोद गाँव से की जाती है (एपि० इ०, IX, 106)।

महाद्वादशक-मंडल—इसमे अवश्यमेव भोपाल के दक्षिण मे राजशयन तक, उदयपुर एवं मध्यप्रदेश मे स्थित भिलसा समिलित थे (एपि० इ०, XXIV, भाग, V, पृ० 231)।

महानाल—चाहमान सोमेश्वर (विक्रम सवत् 1226) के बिझौली शिला-लेख मे महानाल का उल्लेख है (एपि०इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941) जिसकी समानता मेनाल से की जा सकती है, जिसका विवरण टॉड ने अपने 'राजस्थान, (जिल्द, III, पृ० 1800-05) मे किया है।

मक्करकट—यह अवन्ती मे एक वन था जहाँ पर एक पर्ण-कुटी मे महा-कच्चायन रहते थे और जहाँ पर लोहिच्च के शिष्य उनसे मिले थे। उन्होंने उनको धम्म पर एक प्रवचन दिया (सयुक्त, IV, 116-117)। एक भाष्यकार के अनुसार यह एक नगर था (सारत्थप्पकासिनी, पा० टे० सो०, II, 397)।

मकसी (उज्जैन)—यह बबई-आगरा मार्ग पर देवास के उत्तर मे है।

मल्हार—यह मध्य प्रदेश मे है जहाँ चेदि सवत् 919 मे अकित जाजल्लदेव का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, I, 39)।

मल्लाल—यह मध्य प्रदेश मे बिलासपुर से 16 मील दक्षिण-पूर्व मे आधुनिक मल्लार है (एपि० इ०, XXVI, भाग, VI, अप्रैल, 1942, पृ० 258)।

मल्लार—यह मध्य प्रदेश के बिलासपुर जिले के मुख्यावास बिलासपुर से 16 मील दक्षिण-पूर्व मे स्थित एक विशाल गाँव है जहाँ से महाशिवगुप्त के ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 113; एपि० इ०, XXVI, भाग, III, अप्रैल, 1941)।

मंडलकर—यह उदयपुर मे आधुनिक माण्डलगढ है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 101)।

मण्डल—इस नगर को महेशमतीपुर भी कहा जाता था (ज० ए० सो० ब०, 1837, 622)। यह अपर नर्मदा के तट पर स्थित देश की मूल राजधानी थी जिसे कालातर मे जबलपुर से छह मील दूर त्रिपुरी या तेवर ने स्थानापन्न कर दिया था। कनिघम के अनुसार अपर नर्मदा के तट पर स्थित महेशमतीपुर को युवान-च्वाङ् द्वारा वर्णित महेश्वरपुर से समीकृत किया जा सकता है (कनिंघम, ए० ज्यॉ० इ०, पृ० 559-60)।

मण्डप—यह धार जिले मे स्थित: आधुनिक नगर माण्डू है (एपि० इं०, IX, 109)।

मंदाकिनी—कनिंघम ने इस ऋक्ष-नदी को आधुनिक मंदाकिन से समीकृत किया है जो बुंदेलखंड मे पैसुन्दि (पैसुनी) की एक लघु सहायक नदी है जो चित्रकूट पर्वत के किनारे प्रवाहित होती है (आर्क्० सं० इं० रि०, XXI, 11)। भागवत (V.19.18) एव वायुपुराणो के अनुसार (45.99) यह गगा नदी है।

मंदार—यह तीर्थस्थान जाह्नवी नदी के दक्षिण की ओर विन्ध्य पर्वत पर स्थित है (वराह पुराण, 143 2)। यहाँ पर समतपञ्चक नामक एक आश्रम स्थित है (वही, 143, 48)।

मनसियागढ़—यह भिचोर से लगभग डेढ मील दक्षिण में है जो सिंघोली से कोई 30 मील पश्चिम मे है।

मत्स्यदेश—यह भारत के महाजनपदो मे से एक है (अगुत्तर, I, 213, IV, 252, 256, 260; तुलनीय, पद्मपुराण, अध्याय, 3; विष्णुधर्मोत्तर पुराण, अध्याय, 9)। वैदिक युग मे इस देश के निवासियों को थोडी महत्ता मिली थी किंतु रामायण-काल मे उन्होने अपनी महत्ता खो दी थी। शतपथ ब्राह्मण (XIII, 5 4 9 मे कहा गया है कि मत्स्यदेश के एक राजा की गणना प्राचीन भारत के उन महान् नरेशो मे की जाती थी जिन्होने अश्वमेघ सपादन करके प्रसिद्धि प्राप्त की थी। मत्स्यो का वर्णन उशीनरो, कुरु-पञ्चालो एव काशी-विदेहो के साथ हुआ है (कौषीतकि उपनिषद्, IV 1)। वे अपने पडोस मे स्थित शाल्व नामक एक क्षत्रिय जाति से सबधित थे (गोपथ ब्राह्मण, 1.2 9)। महाभारत से भी शाल्वो और मत्स्यो के सबध की पुष्टि होती है (विराटपर्व अध्याय, 30, पृ० 1-2)। कालातर मे मत्स्य चेदि एव शूरसेनो से सबद्ध थे कुरुक्षेत्र के युद्ध मे अपने आचरण और परपराओ की शुद्धता तथा अपने साहस एव शौर्य के कारण उनकी विशिष्ट स्थिति थी। पुण्णक यक्ख के (राक्षस) साथ कुरु-नरेश की द्यूत-क्रीडा को मत्स्यो या मच्छो ने देखा था (जातक, VI, विधुरपण्डित जातक)।

मनुसहिता (II, 19-20; वही, VII, 193) के अनुसार मत्स्यदेश ब्रह्मर्षि, देश का एक भाग था, जिसमे पटियाला (भूतपूर्व एक रियासत) का पूर्वी भाग, दिल्ली, अलवर और राजस्थान के आसन्न क्षेत्र तथा गगा-यमुना के मध्यवर्ती क्षेत्र एवं उत्तर प्रदेश के मथुरा जिला समिलित था (तुलनीय, रैप्सन, ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 50-51)। प्राचीन काल मे यमुना नदी एव राजस्थान की अरावल्ली

पहाड़ियों के मध्य स्थित संपूर्ण प्रदेश पश्चिम में मत्स्य एवं पूरब में शूरसेन में विभक्त था, दशार्ण जिसकी दक्षिणी या दक्षिण-पूर्वी सीमा पर स्थित था। मत्स्य देश मे जयपुर एव भरतपुर के कुछ भाग समेत सपूर्ण आधुनिक अलवर क्षेत्र समिलित था। वैराट भी मत्स्यदेश मे था (कनिंघम, रिपोर्ट आ० स० इं०, भाग, XX, पृ० 2)। कालांतर में मत्स्यदेश को विराट या वैराट कहा जाने लगा था। युवान-च्वाङ के अनुसार, जो सातवीं शताब्दी ई० मे वैराट आया था, वैराट की राजधानी की परिधि 3000 ली या 500 मील थी। यहाँ की भेडें एव बैल विख्यात् थे। किंतु यहाँ पर फल-फूल नहीं होते थे। उसके अनुसार बैराट की परिधि 14 या 15 ली थी और यहाँ के निवासी वीर एव निर्भीक थे और इनका राजा युद्ध में अपनी वीरता एव साहस के लिए विश्रुत था (कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रफी ऑव इंडिया, पृ० 393 और 395)।

विराटनगर को मत्स्यनगर भी कहा जाता था (महाभारत, IV, 13.1) यह पाण्डवों के मित्र, महाभारत के राजा विराट की राजधानी थी। राजा विराट एव त्रिगर्तों मे एक सघर्ष हुआ था जिसके फलस्वरूप राजा विराट बदी बनाये गये थे किंतु द्वितीय पाण्डव भीम ने उनको मुक्त किया था (एम० एन० दत्त, महाभारत, विराटपर्व, अध्याय, XXII, XXXI) । मत्स्य राज्य मे ही पाण्डवो ने अपने अज्ञातवास का एक वर्ष व्यतीत किया था। तदनतर उन्होंने अपना परिचय प्रकट किया और अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु एव राजा विराट की पुत्री उत्तरा मे विवाह हुआ (महाभारत, अध्याय, LXXII)।

वैराट का वर्त्तमान नगर तलहटी की निचली वनस्पतिहीन पहाड़ियों से परिवृत्त एक वृत्ताकार घाटी के मध्य स्थित है जो सदा से ताँबे की खानो के लिए विख्यात रही है। यह दिल्ली से 105 मील दक्षिण-पश्चिम मे एव जयपुर से 41 मील उत्तर मे स्थित है। यहाँ की भूमि साधारणतया अच्छी है और यहाँ वृक्ष, विशेषतया इमली के वृक्ष अति सुदर एव प्रचुर है। बैराट लगभग एक मील लबी एवं आधे मील चौड़े खडहरो के एक टीले पर स्थित है। वैराट का प्राचीन नगर कई शताब्दियो तक विजन रहा जबकि सभवत. अकबर के शासनकाल मे यह पुन आबाद हुआ था।

जिस समय यह मत्स्य देश स्वतत्र था, इसका सविधान सभवत· राजतत्रात्मक था। शायद किसी समय यह निकटवर्ती चेदि राज्य मे और सदैव के लिये मगध के साम्राज्य मे मिला लिया गया था (रायचौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव ऐंश्येंट इंडिया, पंचम सस्करण, पृ० 66 और आगे, विंसेंट स्मिथ, अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया, चतुर्थ संस्करण, पृ० 413, रा० दा० बनर्जी, बागालार इतिहास,

पृ० 158)। यहाँ के आधुनिक इतिहास के लिए द्रष्टव्य इंपीरियल गजेटियर्स ऑव इंडिया, जिल्द, XIII, 382 और आगे, द्रष्टव्य, वैराट।

मऊ—यह झाँसी जिले में है जहाँ से मदनवर्मनदेव का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इं०, I, 195)।

मयूरगिरि—भरहुत पूजा-पट्ट (स० 28) मे मयूरगिरि का नाम आता है जो चरणव्यूह भाष्य मे उल्लिखित मयूरपर्वत है। ल्युडर्स तालिका (सख्या, 778, 796, 798, 808, 860) मे मोरगिरि (मयूरगिरि) नामक एक स्थान का नाम आता है। कुछ लोगों ने इसे मध्य प्रदेश मे स्थित बतलाया है।

मयूरखण्डी—कुछ लोगों के अनुसार इसकी पहचान महाराष्ट्र मे चाँदा से 56 मील दक्षिण-पूर्व मे वेनगगा के तट पर मरकडी नामक गाँव से की जा सकती है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 13)। राष्ट्रकूटों के काल मे मरकडी एक समृद्धिशाली नगर था। यह गोविन्द तृतीय के कई दान-पत्रो में राजा के निवास-स्थान के रूप मे वर्णित प्राचीन मयूरखण्डी रहा होगा।

माहिस्सति (माहिष्मती)—यह दक्षिण अवन्ती की राजधानी थी। माहिषक महाभारत में वर्णित माहिष्मक ही थे (अश्वमेघपर्व, LXXXIII, 2475)। वे माहिष्मती या माहिस्सती के निवासी थे। यह क्षेत्र विन्ध्य एव ऋक्ष के मध्य नर्मदा नदी के तट पर स्थित प्रतीत होता है और इसकी पहचान सुरक्षित रूप से आधुनिक मान्धाता क्षेत्र से की जा सकती है। पुराणो के अनुसार (मत्स्य, XLIII, 10-29, XLIV-36, वायु, 94, 26; 95,35) माहिष्मती की स्थापना यदुवश के एक राजकुमार ने की थी। यहाँ पर बलराम आये थे। यहाँ पर कार्त्तवीर्य ने कर्कोटक के पुत्र का वध किया था। कार्तवीर्यार्जुन ने यहाँ पर रावण को बंदी बनाया था। इसकी स्थापना माहिष्मान ने की थी और यह कार्त्तवीर्यार्जुन की राजधानी थी (भागवत, IX, 15 22; मत्स्य, 43, 29, 38; विष्णु, IV, 11.9.19)। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 386-387)।

मालव देश—मालव देश जिससे स्पष्टत उज्जयिनी एव भिलसा (आधुनिक मालवा) के परिवर्ती क्षेत्र का बोध होता है, का वर्णन कई बाद के अभिलेखों मे हुआ है—यथा गुर्जर प्रतीहारों के सागरतल अभिलेख एव गोविंद तृतीय के पैठन अभिपत्र आदि। क्षत्रप नहपाण के दामाद, शक उषवदात (ऋषभदत्त) के नासिक गुहालेख में राजस्थान से जयपुर के समीप नगर क्षेत्र पर मालवों के अधिकार का वर्णन है (एपि० इं०, VIII, 44)। जयसिहदेव के शासन-

काल के चेदिसंवत् 929 के तेवर प्रस्तर लेख में मालव देश का वर्णन है (एपि० इ०, II, 18-19)। विक्रमादित्य षष्ठम् के एक दण्डनायक अनंतपाल ने हिमालय पर्वत तक सप्त-मालव देशों को पराजित किया था (एपि० इ०,V, 229)। इलाहाबाद स्तंभ-लेख में वर्णित मालवों का अधिकार जयपुर के दक्षिण-पूर्वी भाग में स्थित वगरचाल नामक एक प्रांत पर था। उनका अधिकार दक्षिण-पूर्वी राजस्थान मे मेवाड एव कोटा तथा इससे आसन्न मध्य प्रदेश के कुछ भूभागो पर प्रतीत होता है (इ० ऐ०, 1891, पृ० 404)। परबल के पथरी स्तभ-लेख मे नवी शती ई० के पूर्वार्द्ध मे माल्वा मे एक राष्ट्रकूट कुल के अस्तित्व के प्रमाण मिलते है (एपि० इं०, IX,/248)।

मालव क्षेत्र का ठीक ठीक स्थान निर्धारण करना कठिन प्रतीत होता है। सिकदर के काल में मालव-जन पजाब मे स्थित थे। स्मिथ का मत है कि इनका अधिकार झेलम और चेनाब नदियो के सगम के आगे वाले क्षेत्र पर था जिसमे झग एव माटगोमरी जिले का (सप्रति पाकिस्तान मे) एक भाग समिलित था (ज० रा ०ए० सो०, 1903,पृ० 631)। मैक्रिंडिल के अनुसार उनका अधिकार अपेक्षाकृत एक विशाल क्षेत्र पर था जिसमे रावी एव चेनाब के आधुनिक दोआब और सिन्धु एव चिनाब (अकेसिनीज) के सगम तक के क्षेत्र समिलित थे जिनकी पहचान आधुनिक मुल्तान जिले एव माटगोमरी जिले के कुछ भाग मे की जा सकती है (इनवेज़न ऑव इडिया, अपेडिक्स, टिप्पणी, 357)। कुछ लोगो ने उन्हे अवर रावी की घाटी मे स्थित बतलाया है। मो-ला-पो की पहचान जहाँ चीनी तीर्थयात्री युवान-च्वाङ आया था, अनेक वल्भी दानपत्रो मे वर्णित मालवक या माल्वक-आहार से की जा सकती है जो वल्भी के मैत्रकों के राज्य मे समिलित था। हर्षवर्द्धन के मधुवन एव बासखेडा अभिलेखो मे उल्लिखित महासेनगुप्त एव देवगुप्त के मालव राज्य की पहचान सभवतः पूर्वं मालव से की जा सकती है जो प्रयाग एव भिलसा के मध्य स्थित था। युवान-च्वाङ के अनुसार इस देश की परिधि 6000 ली थी। यहाँ की भूमि उर्वर एवं सुदर थी ; यहाँ पर अनत झाडियाँ एव वृक्ष थे, फल-फूल प्रचुर थे। यहाँ के निवासी विलक्षण प्रतिभा सपन्न, गुणवान एव वश्य थे , यहाँ पर अनेक सघाराम एव देवमदिर थे (बील,बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, II, 260 और आगे)। अधिक साहित्यिक विवरण के लिए बि० च० लाहा कृत ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, अध्याय, VIII, दृष्टव्य।

मांधाता—यह मध्य प्रदेश के निमाड जिले से सलग्न, नर्मदा के बाँएँ तट पर स्थित एक द्वीप है। यहाँ पर दो पत्रो पर उत्कीर्ण एक अभिलेख उपलब्ध

हुआ है (एपि० इं०, III, 46 एवं आगे; वही, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939)। इस द्वीप के समीप नर्मदा के दक्षिण तट पर अमरेश्वर नामक प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान स्थित है जिससे अर्जुनवर्मन् के शासनकाल का तृतीय अभिलेख संबधित है। मांधाता मे सिद्धेश्वर मदिर के समीप तीनो अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इं०, 103)।

माण्डुकिग्राम—इस गाँव का वर्णन प्रवरसेन द्वितीय के कोठुरक-दानपत्र में प्राप्य है। इसकी पहचान नागपुर जिले मे मनगाँव से दो मील उत्तर मे आधुनिक माडगाँव से की जाती है। अनुश्रुतियो के अनुसार मांडगाँव का नामकरण माण्ड ऋषि के नाम पर हुआ है जिनके विषय मे कहा जाता है कि उन्होने नागपुर जिले मे वुम्रा नदी के तट पर तपस्या की थी (वर्धा डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1906, पृ० 250)।

मोराझरी—यह विन्ध्यवल्ली (बिझोली) का एक अन्य नाम है। चाहमान सोमेश्वर के बिझोली शिलालेख मे (विक्रम सवत्, 1226) उल्लेख है कि किसी चाहमान राजकुमार ने यह गाँव पार्श्वनाथ को दान दे दिया था (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941, पृ० 84 और आगे)।

आबूपर्वत (अर्बुदाद्रि या अर्बुदपर्वत)—*यहाँ नेमिनाथ के मदिर की प्राचीर* पर सोमसिह के दो अभिलेख उत्कीर्ण है (एपि० इ०, VIII, 208 और आगे)। आबू पर्वत राजस्थान के सिरोही की अरावल्ली पर्वतमाला मे स्थित है। यह 5650 फीट ऊँचा है। यहाँ पर पाँच जैन मदिर है और उनमे से दो अत्यन्त सुदर है। विमल साह ने एक मदिर मे ऋषभ देव की एक प्रतिमा स्थापित की थी जिन्होने आबू पर्वत पर ग्यारह हजार भक्तो सहित अनेक शिवालय देखे थे। आबू पर्वत पर किसी समय वशिष्ठ महर्षि का आश्रम एवं अबा भवानी का प्रसिद्ध मदिर था। इस पर्वत पर एक झील है। मेगस्थनीज़ एव एरिअन के अनुसार पुण्य अर्बुद या आबूपर्वत जिसे कैपिटेलिया से समीकृत किया गया है, अरावल्ली पर्वतमाला के किसी अन्य शिखर मे कही अधिक ऊँचा है (मैक्रिंडिल, ऐंश्येट इडिया, पृ० 147)। पहले इस पर्वत को नदिवर्धन कहा जाता था। अर्बुद नामक सर्प का निवास-स्थान होने के कारण कालांतर मे इसका नाम अर्बुद पड़ा। इसके चारो ओर बारह गाँव है। यहाँ पर मदाकिनी नामक एक नदी प्रवाहित होती है। यहाँ पर अचलेश्वर, वशिष्ठाश्रम एव श्रीमाता जैसे तीर्थ-स्थल है। इस पर्वत के शिखर पर चालुक्य वशीय कुमारपाल ने श्रीवीर के मंदिर का निर्माण करवाया था। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, सम जैन कैनॉनिकल सूत्राज़, पृ० 184-185.

मुक्मुरा—यह रायपुर जिले की धमतरी तहसील मे है जहाँ से दो प्रस्तर लेख उपलब्ध हुये थे (आर्क० स० इं०, एनुअल रिपोर्ट, 1916,17; भाग, I, पृ० 21)।

नड्डुल—यह राजस्थान के जोधपुर मे आधुनिक नदोल है (एपि० इं०, IX, 62-64)।

नंदिपुर—यह नर्मदा तट पर आधुनिक नदोद है (एपि० इं०, XXIII, भाग, IV)।

नंदिवर्धन—प्रवरसेन द्वितीय के कोठुरक दान-पत्र मे इसका वर्णन है (एपि० इं०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941, पृ० 155 और आगे)। प्रवरसेन द्वितीय द्वारा प्रवरपुर की स्थापना के पहले यह वाकाटकों की प्राचीन राजधानी मानी जाती है। इसकी पहचान महाराष्ट्र के नागपुर जिले मे रामटेक के निकट नदरधन या नगरधन से की गयी है (एपि० इ०, XV, 41, एपि० इ०, XXIV, भाग, VI, पृ० 263; एपि० इ०, XXVIII, भाग, I, जनवरी, 1949.) एक पुण्य तीर्थ के रूप मे वर्णित इस स्थान का महत्त्व भोसलो के काल तक यथावत् बना हुआ था। कृष्ण तृतीय के दिउली अभिपत्रो मे भी इसका वर्णन है (एपि० इ०, V, 196)।

नरवर—यह अजमेर से लगभग 15 मील दूर पर किशनगढ़ क्षेत्र मे स्थित प्राचीन नरपुर है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 101, ज० रा० ए० सो०, 1913, पृ० 272, पा० टि०)।

नर्मदा—यह मध्य प्रदेश एव पश्चिमी भारत की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नदी है। टॉलेमी के अनुसार इसे नेमेडोस कहा जाता था। पद्मपुराण (स्वर्गखण्ड छठाँ अध्याय, श्लोक, 15) भागवत पुराण (V, 19, 18, VI, 10 16, VIII, 18.21) एव योगिनीतत्र (2.5, पृ०, 139) मे इसका वर्णन है। मत्स्य-पुराण (अध्याय, 193) के अनुसार वह स्थान जहाँ यह नदी समुद्र मे गिरती है यामदग्नितीर्थ नामक एक महान् तीर्थ-स्थान के रूप मे विश्रुत है। इस नदी के तट पर भृगुतीर्थ स्थित है। भृगु ऋषि ने यहाँ पर तपस्या की थी (मत्स्य-पुराण, 193, 23-49)। इसके तट पर कन्यातीर्थ भी स्थित है (मत्स्य, 193-194)। यह नदी मैकाल पर्वतमाला से निकलती है और न्यूनाधिक दक्षिण-पश्चिम की दिशा मे मध्य प्रदेश एव गुजरात से होकर प्रवाहित होती है। कुछ लोगो का विचार है कि यह अमरकटक पर्वत से निकलती है और खभात की खाड़ी मे गिरती है। तत्पश्चात् यह नदी इदौर एव बबई के रेवाकण्ठ से गुजरती हुयी भड़ौच मे समुद्र मे मिलती है। विन्ध्य एव सतपुड़ा की दो बड़ी पर्वत-

मालाओं के बीच इसके प्रवाह मार्ग मे इसमे अनेक सहायक नदियाँ मिलती हैं। इंदौर में प्रविष्ट होने के पूर्व इसमे कुछ उपनदियाँ मिलती हैं। इस नदी को रेवा, समोद्भवा एवं मेखलसुता भी कहते हैं। रेवा एव नर्मदा नदियाँ मांडला के थोडा पहले सगमित होकर दोनो नामो से आगे प्रवाहित होती है। कालिदास ने अपने रघुवंश में (V, 42-46) इसे जबु एव रक्तमाल वृक्षों के वन से प्रवाहित होते हुये बतलाया है। यह कवित्व पूर्ण-अभिव्यक्ति है। दशकुमारचरितम् (पृ० 197) के अनुसार विन्ध्यपर्वतवासिनी देवी का मदिर रेवा नदी के तट पर स्थित था। महाभारत (अध्याय 85, 9, तुलनीय, कूर्मपुराण, 30, 45-48; अग्निपुराण, अध्याय, 109, सौरपुराण, 69.19,) के अनुसार नर्मदा अवन्ती के प्राचीन जनपद की दक्षिणी सीमा थी।

जातक (II, 344) मे इस नदी मे प्राप्त होने वाले केकडो का उल्लेख है। इस नदी के तट पर जाने वाली पायी कुररियो को व्याध पकडते एव मारते थे (जातक, IV, 392)।

नरोद—इसे रनोद भी कहा जाता है जो मध्यप्रदेश मे एक प्राचीन एवं भग्न नगर था। यहाँ से एक प्रस्तर-लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, I, 351; लुअर्ड, ग्वालियर स्टेट गजेटियर, पृ० 271)।

नरवर—कनिघम ने इस नगर को पद्मावती से समीकृत किया है जो पुराणो के अनुसार नागो द्वारा अधिकृत एक नगर था। यहाँ से गणपति नाम धारण करने वाली मुद्राएँ एव अभिलेख, जिसे समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तभ-लेख में एक नाग राजा बतलाया गया है, प्राप्त हुयी हैं (इ०, ऐ०, XII, 80, सं० 2 और 4; कनिघम, आर्क० स० रि०, II, 314, लुअर्ड, ग्वालियर स्टट गजेटियर, पृ० 272)। परपरानुसार इस स्थल को निषधराज नल का निवास-स्थान माना जाता है। महाभारत मे वर्णित दमयती के प्रति जिसके रूमानी प्रेम मे सभी सुपरिचित है।

नवपत्तला—इसकी पहचान तिखारी से लगभग आठ मील पश्चिम मे स्थित नयाखेडा से की जा सकती है (एपि० इ०, XXV, भाग, VII, पृ० 311)।

नाडोल—(296, विक्रमी, 1213,), ओसिया (स० 384 विक्रमी, 1236) एव फलोदी (850, विक्रमी, 1535) राजस्थान मे जोधपुर में है (दे० रा० भंडारकर द्वारा पुनरावृत्त इंस्क्रिप्शस ऑव नार्दर्न इडिया)।

नान्दसा—यह गाँव उदयपुर के सहारा मे स्थित है। यह भिलवारा रेल स्टेशन से लगभग 36 मील पूरब मे, एव ग्वालियर के अधिकार क्षेत्र के अतर्गत् गंगापुर नामक शहर से लगभग चार मील दक्षिण मे स्थित है। यहाँ पर यूप

पर उत्कीर्ण किसी मालव-नरेश के दो अभिलेख उपलब्ध हुय थे (एपि० इं०, XXVI, भाग, VI, पृ० 252)।

नाराणक—इसकी पहचान राजस्थान मे जयपुर शहर से 41 मील पश्चिम और अजमेर से 43 मील पूर्वोत्तर मे साँभर निज़ामत मे नारायण से की जा सकती है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 101)।

नाथद्वार—उदयपुर नगर से लगभग 30 मील उत्तर एव उत्तर-पूर्व में, एव मौली रेलवे स्टेशन से 14 मील पश्चिमोत्तर मे, बनास नदी के दाहिने तट पर स्थित इस स्थान पर भारत का एक प्रसिद्ध वैष्णव मदिर है। यहाँ पर कृष्ण की एक प्रतिमा है। इस प्रतिमा को कालातर में वल्लभाचार्य ने मथुरा के एक लघु मदिर मे स्थापित किया और बाद मे इसे गोवर्धन को स्थानांतरित कर दिया गया।

निकटगिरि—इसे भोजपुर पहाड़ी कहते है। भोपाल मे भिलसा के दक्षिण में भोजपुर तक फैली हुयी नीची पर्वतमाला को भोजपुर पहाडी कहते है (कालिदास कृत मेघदूत, I, श्लोक, 26)।

निर्व्विन्ध्या—कालिदास के मेघदूत मे (I, 28-29) इस नदी को उज्जैन एव वेत्रवती (बेतवा) के बीच मे स्थित बतलाया गया है। वायुपुराण (XLV, 102) मे इसको निर्ब्बन्ध्या कहा गया है। वस्तुत यह नदी विदिशा एव उज्जयिनी दशार्ण (वेत्रवती की एक सहायक नदी धासन) एव शिप्रा नदियों के मध्य स्थित थी। इसको आधुनिक कालीसिध से समीकृत किया जाता है जो चर्मण्वती की सहायक नदी है (जर्नल ऑव द बुद्धिस्ट टेक्स्ट सोसायटी, V, पृ० 46)। कालीसिध विन्ध्यपर्वतमाला से उत्तर की ओर दाहिनी ओर से चबल मे मिलने को प्रवाहित होती है। चूंकि कालीसिध सभवत कालिदास मेघदूत मे वर्णित सिन्धु ही है, अतएव चबल की एक अन्य सहायक नदी नेवाज से निर्व्विन्ध्य का समीकरण अधिक तर्कसगत प्रतीत होता है (थार्नटंस गज़ेटियर, ग्वालियर, भूपाल)।

निषध—वह देश जिसका उल्लेख पाणिनि ने अपनी अष्टाध्यायी मे नैषध के रूप मे किया है (4 1. 172) नल की रानी दमयती के देश विदर्भ से अधिक दूर पर नही था। विल्सन[1] का विचार है कि यह विन्ध्य एव पयोष्णी नदी के पास था और यह उन सडको के निकट था जो यहाँ से, ऋक्ष पर्वत के पार अवन्ती और दक्षिण तथा विदर्भ एव कोसल तक जाती थी। लास्सेन इसे सतपुड़ा

[1] विष्णु पुराण, जिल्द, II, पृ० 156-90.

पहाड़ियों के आश्रय में स्थित बरार के पश्चिमोत्तर क्षेत्र तक फैला हुआ मानते हैं। बर्गेस ने भी इसे मालवा के दक्षिण मे स्थित बतलाया है (ऐंटिक्विटीज ऑव काठियावाड़ ऐंड कच्छ, पृ० 131)। महाभारत में गिरिप्रस्थ को निषधों की राजधानी बतलाया गया है (III, 324.12)। विष्णु पुराण मे (IV, अध्याय, 24, 17) निषधो के नवराजाओ का उल्लेख है जबकि वायुपुराण मे निषध देश के राजाओ का वर्णन है जिन्होने मनु के अंत तक राज्य किया था। वे सभी राजा नल के वशज थे और निषेध देश मे रहते थे।[1] निषधराज नल एक कुशल सारथि थे और इनको घोडो की प्रकृति के विषय मे बहुत ज्ञान था (नैषधीय-चरित्, सर्ग, 5, श्लोक, 60)।

ओसिया या ओसियाम—यह छोटा गाँव जोधपुर से 32 मील पश्चिम-पश्चिमोत्तर मे एक मरुस्थलीय भाग में स्थित है। यहाँ पर मदिर है (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1908-09, पृ० 100 और आगे)।

पद्मावती—यह मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले मे आधुनिक नरवर है (एपि० इ०, I, 147-52)। यहाँ पर प्रसिद्ध कवि भवभूति उत्पन्न हुये थे (मालती-माधव, प्रथम अंक)। कुछ लोगो के अनुसार यह नगर विदर्भ मे सिन्धु एव पारा (पार्वती) नामक दो नदियो के सगम पर स्थित था। इसकी पहचान आधुनिक विजयनगर से की गई है जो नलपुर या नरवर से 25 मील आगे विद्या नगर का एक भ्रष्टरूप है। विंसेंट स्मिथ के अनुसार पद्मावती गणपति नाग की राजधानी थी। इसे आजकल नरवर नगर से 25 मील पूर्वोत्तर मे पद्म-पवाया कहा जाता है। यह किसी समय सिंधिया के राज्य मे समिल्लित था (कै० हि० इ०, 300, एनुअल रिपोर्ट, आर्क० स० वे० स०, 1914-1915, पृ० 68)। स्कन्दपुराण (अवन्तीखण्ड, I, अध्याय ,36, 44) के अनुसार पद्मावती उज्जयिनी का एक अन्य नाम है (न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 143, आर्क० स० रि०, जिल्द, II, पृ० 308-18, ज० ए० सो० ब०, 1837, पृ० 17)। पद्मावती को पदमपुर भी कहा जाता है।

परसदा या परसबी—यह मध्य प्रदेश के रायपुर जिले मे बलोदा बाजार तहसील मे स्थित एक गाँव है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 3)।

पयाहारी—यह मध्य प्रदेश मे एक महत्त्वपूर्ण नगर है जहाँ से राष्ट्रकूट

---

[1] वायु पुराण, अध्याय, 99 376.

वंशीय परबल का एक स्तंभ-लेख (विक्रम संवत् 917 में कालांकित) उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, IX, 248 और आगे)।

पट्टन—यह मध्य प्रदेश के बेतूल जिले की मुल्ताई तहसील में एक बड़ा गाँव है जिसकी जनसंख्या 1500 है। यह मुल्ताई-अमरावती मार्ग पर मुल्ताई से लगभग 10 मील दक्षिण मे स्थित है (एपि० इं०, XXIII, भाग, III, जुलाई, 1935, पृ० 81, प्रवरसेन द्वितीय के पट्टन अभिपत्र)।

पौनी—यह महाराष्ट्र के भडारा जिले के मुख्यावास, भडारा से लगभग 32 मील दक्षिण में वैनगगा के दाहिने तट पर स्थित एक प्राचीन नगर है। यहाँ से भार राजा भगदत्त का अभिलेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXIV, भाग, I, पृ० 11)।

पवाया—यह ग्वालियर से लगभग 40 मील दक्षिण-पश्चिम मे पार्वती एव सिघु नदियो के संगम पर स्थित है। इसकी पहचान भवभूति की नगरी एव नागो की तीन मे से एक राजधानी प्राचीन पद्मावती से की जाती है (आर्क० स० रि०, 1915-1916)।

पयोष्णी—महाभारत (वनपर्व, LXXXVIII, 8329-35) एव मार्कण्डेयपुराण (अध्याय, LVII, 24) मे इस नदी का वर्णन है जिसे वैदूर्य पर्वत नर्मदा से पृथक करता था। महाभारत (CXX, 10289-90) के अनुसार यह विदर्भ की नदी थी। मत्स्यपुराण के अनुसार पयोष्णी नदी तमर एव हसमार्ग नामक दो जातियो मे निवसित देशो से होकर प्रवाहित होती थी। कनिंघम ने इस नदी को सिघ एव बेतवा के मध्य, जमुना की एक सहायक नदी पहोज से समीकृत किया है (आर्क० स० रि०, VII, फलक, XXII)। यह समीकरण अमान्य प्रतीत होता है।

पारा—मार्कण्डेयपुराण (अध्याय, LVII, 20) मे मध्य प्रदेश की इस नदी का उल्लेख है। वायु पुराण के अनुसार इसे पारा कहा जाता है (XLV, 98)। यह आधुनिक पार्वती नदी है जो भूपाल से निकलती है और चबल में मिलती है जो जमुना की सबसे बडी सहायक नदी है (पार्जिटर, मार्कण्डेय-पुराण, पृ० 295, कनिंघम, आर्क० सं० रि०, II, 308)।

पारिपात्र पर्वत—बौधायन धर्मसूत्र (I, 1, 25) के अनुसार यह आर्यावर्त्त की दक्षिणी सीमा है। स्कन्दपुराण के अनुसार यह भारतवर्ष के केंद्र कुमारी-खण्ड की सबसे दूरवर्ती सीमा है। इस पर्वत से उस देश का नामकरण हुआ है जिससे यह सबद्ध था। पार्जिटर ने पारिपात्र पर्वत को विन्ध्य पर्वतमाला के उस भाग से समीकृत किया है जो भूपाल के पश्चिम मे अरावली पर्वत के साथ

स्थित है (लाहा, माउटेस आंव इडिया, पृ० 17-18; लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, 115 और आगे)।

पेण्ड्राबंध—यह मध्य प्रदेश के रायपुर जिले की बलोदा बाजार तहसील मे स्थित एक गाँव है जहाँ से कल्चुरि-सवत् 965 मे अकित प्रतापमल्ल के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1925, पृ० 1)।

पीपरडुला—यह गाँव प्रवरराज के एक दानपत्र के प्राप्ति-स्थान ठाकुरदिया से लगभग 20 मील दूर और मध्य प्रदेश मे छत्तीसगढ के अन्तर्गत् सारगगढ़ की पश्चिमी सीमा से कुछ ही मील पर है। इस गाँव का वर्णन शरभपुर के राजा नरेन्द्र के पीपरडुला ताम्रपत्र मे है (इ० हि० क्वा०, भाग, XIX, स० 2)।

पिपलियानगर—यह ग्वालियर के शुजालपुर परगना मे एक गॉव है जहाँ से एक ताम्रपत्र उपलब्ध हुआ है। अर्जुनवर्मन ने इसका प्रचलन मण्डप दुर्ग मे अपने राज्याभिषेक के अवसर पर किया था (ज० ए० सो० ब०, V, 378)।

पोक्षर—यह ल्युडर्स की तालिका, स० 1131 मे वर्णित राजस्थान मे अजमेर से सात मील पर स्थित पुष्कर ही है। इसे पोखरा भी कहा जाता है। हिंदू लोग इसे अत्यत पवित्र मानते है (द्रष्टव्य, पुष्कर)।

पोतोदा—इसकी पहचान हिंदोल मे पोतल से की जा सकती है (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941, पृ० 78)।

प्रार्जन—इलाहाबाद स्तभ लेख मे इनका वर्णन है। ये मध्य प्रदेश मे नरसिंह गढ के समीप कही पर निवास करते थे। विसेंट स्मिथ ने प्रार्जुनो को मध्य प्रदेश के नरसिहपुर जिले मे स्थित बतलाया है (ज० रा० ए० सो०, 1897, पृ० 892) किंतु उनको अधिक तर्कसम्मत रूप से मध्य प्रदेश के नरसिंहगढ मे स्थित बतलाया जा सकता है (इ० हि० क्वा० ,भाग, I, पृ० 258) क्योकि उनके साथ वर्णित तीन अन्य जातियाँ—सनकानिक, काक एव खरपरिक न्यूनाधिक मध्य प्रदेश की सीमाओ के अतर्गत् ही किन्ही क्षेत्रो मे रहती थी। बृहत्सहिता के लेखक ने उन्हें भारत के उत्तरी सभाग मे स्थित बतलाया है। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तभलेख मे प्रार्जुनो सहित अन्य जातियो के समूह का वर्णन है जो समुद्रगुप्त की राज्याज्ञाओ का पालन करते थे एवं सभी प्रकार के कर देते थे। कुछ लोगो की धारणा है कि प्रार्जुनो का कुछ सबंध महाभारत के नायक अर्जुन के नाम से था किंतु यह सदिग्ध है।

पूर्ण—पद्मपुराण (अध्याय, XLI) में इस नदी का वर्णन है जिसकी प्राचीन

पहचान अभी तक बनी हुयी है। यह विन्ध्यपर्वत माला की सतपुडा शाखा से निकलती है और बुरहानपुर के थोड़ा आगे ताप्ती मे मिलती है।

पुष्कर—यह अजमेर मे आधुनिक पोखर है। यह एक तीर्थ स्थल है (स्कन्दपुराण अध्याय, I, 19-23)। अजमेर से सात मील उत्तर मे स्थित पुष्कर हिंदुओ का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहाँ पर एक सरोवर है जिसका जल अत्यत पवित्र है। हिंदू परपरा के अनुसार महानतम पापी भी केवल इसमे स्नान करके स्वर्ग प्राप्त करता है। यहाँ पर ब्रह्मा, सावित्री, बद्रीनारायण, वराह एव शिव को समर्पित पाँच प्रमुख मदिर है। ब्रह्मपुराण (अध्याय, 102)मे सावित्रीतीर्थ का उल्लेख है जो एक पहाडी पर स्थित है जहाँ प्राय हिंदू तीर्थयात्री जाते हैं। पद्मपुराण (उत्तरकाण्ड, श्लोक, 35-38) मे इसका वर्णन है। यह नगर रमणीयरूप से तीन ओर से पहाड़ियो से परिवृत एक झील के तट पर स्थित है (वाटसन, राजपूताना डिस्ट्रिक्ट गजेटियर्स अजमेर-मेरवाड, पृ० 18-20)। बृहत्सहिता (XVI, 31) एव योगिनीतत्र (2.4, 2 6) मे इसका वर्णन हुआ है।

पुष्करण (पोखरन)—यह पोखरण ही है जिसे हर प्रसाद शास्त्री ने राजस्थान मे मारवाड मे स्थित बतलाया है। यह जैसलमेर की सीमा पर स्थित है (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट्स, 1930-34, पृ० 219)। हर प्रसाद शास्त्री ने मेहरौली लौह स्तभलेख (का० इ० इ०, जिल्द, III, पृ० 141 और आगे) मे वर्णित राजा चन्द्र को इलाहाबाद स्तभ लेख के राजा चन्द्रवर्मन और पोखरणा के उसी नाम के राजा से समीकृत किया है। शक्तिशाली राजा चन्द्र को 'वग देश मे युद्ध मे, अपने विरोध मे आये हुये शत्रुओ के सगठित मोर्चे को अपने वक्ष से पीठ मोडते हुये' बतलाया गया है। कुछ लोगो ने पोखराणा या पुष्करण को सुसुनिया पहाडी से कोई 25 मील पूरब मे पश्चिमी बंगाल के बाँकुडा जिले मे दामोदर नदी के तट पर स्थित उसी नाम के एक गाँव से समीकृत किया है जिसमे चन्द्रवर्मन् का एक अभिलेख उपलब्ध हुआ है (रायचौधरी, पो० हि० ऐं० इ०, चतुर्थ सस्करण, 448, सु० कु० चटर्जी, द ओरिजिन ऐड डेवेलपमेंट ऑव द बगाली लैंग्वेज, II, 1061, इ० हि० क्वा०, I,भाग, II, 255)। चौथी शताब्दी ई० मे राजस्थान मे पुष्करण का राजा चन्द्रवर्मन् समुद्रगुप्त का समकालीन था जो 404-05 ई० के मदसोर अभिलेख मे वर्णित नरवर्मन् का भाई था। ये दोनों भाई मालवा के राजा थे (एपि० इ०, XII, 317)। पुष्करण मारवाड मे एक सुप्रसिद्ध नगर है (इं० ऐं०, 1913, पृ० 217-19)। टॉड, अनल्स ऑव राजस्थान, द्वितीय संस्करण, जिल्द, I, पृ० 605)। जोधपुर के पुरातत्व विभाग

द्वारा पुष्करण से उपलब्ध दो स्तभलेखो के विवरण के लिए द्रष्टव्य, आर्क० सं० इं०, एनुअल रिपोर्ट्स, 1930-34, पृ० 219-220.

रहतगढ़—यह मध्य प्रदेश मे सागर जिले के मुख्यावास सागर से 25 मील पश्चिम में एक नगर है जहाँ पर एक दुर्ग स्थित है। जयवर्मन द्वितीय के सब से पुराने अभिलेख इसी दुर्ग से उपलब्ध हुये है (इ० ऐं०, XX, 84)।

रतनपुर—यह मध्य प्रदेश के बिलासपुर जिले मे बिलासपुर से 16 मील उत्तर में है जहाँ पर काले पत्थर पर उत्कीर्ण पृथ्वीदेव द्वितीय का एक अभिलेख रतनपुर दुर्ग के भीतर उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, I, 45, तुलनीय, एपि० इं०, XXVI, भाग, VI, अप्रैल, 1942, पृ० 256 और आगे)।

राजिम—राजा तीवरदेव के राजिम ताम्रपत्र मे मध्य प्रदेश के रायपुर जिले के मुख्यावास रायपुर से कोई 24 मील दक्षिण-पश्चिम मे महानदी के दाहिने तट पर स्थित राजिम नामक नगर का वर्णन है (का० इ० इ०, जिल्द, III; तुलनीय, एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941)। पद्मपुराण मे इसे देवपुर भी कहा गया है। नल-राजा विलासतुग के राजिम प्रस्तर-लेख के अनुसार, पैरी एव महानदी के संगम पर, महानदी के पूर्वी तट पर स्थित, रायपुर से 28 मील दक्षिण और पूरब मे यह एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। यहा पर माघ-पूर्णिमा से एक पक्ष तक राजीवलोचन के सम्मान मे मेला लगा करता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, पृ० 49)।

राजोरगढ़—यह राजस्थान मे अलवर जिले मे अलवर शहर से लगभग 28 मील दक्षिण-पश्चिम मे एक गाँव है (एपि० इ०, III, 263)।

रामनगर—यह मध्य प्रदेश के मॉडला जिले मे है (दे० रा० भडारकर द्वारा पुनरावृत्त इस्क्रिप्शस ऑव नार्दर्न इडिया, न० 1017, विक्रम, 1724)।

रामटेक (रामगिरि)—यह महाराष्ट्र के नागपुर जिले मे उसी नाम की एक तहसील का मुख्यावास है (एपि० इ०, XXV, भाग, I, पृ० 7)। यह नागपुर से 24 मील उत्तर मे स्थित है। यहाँ पर रामायण के शबुक ने तपस्या की थी जैसा कि मिराशी एव कुलकर्णी ने एपि० इ०, XXV, भाग, I, में प्रकाशित रामचन्द्र के काल के रामटेक अभिलेख विषयक अपने निबध मे माना है।

राणीपद्र—इसकी पहचान मध्यप्रदेश के गुणा में, झाँसी जिले (उ० प्र०) एव गुणा के (एपि० इ० XXIV, भाग, VI, पृ० 242) प्रायः बीचोबीच नरवर से ठीक 45 मील दक्षिण मे स्थित राणोद नामक एक प्राचीन भग्न नगर से की जाती है (एपि० इ०, I, पृ० 351)।

रायपुर—सतना रेलवे स्टेशन से कोई 30 मील और कालञ्जर से कोई

30 मील दक्षिण-पूर्व में कोठी के अंतर्गत् स्थित यह एक विशाल गाँव है (ज० बा० ब्रां०, रा० ए० सो०, जिल्द 23, 1947, पृ० 47-48)।

रायता—यह गाँव बिझौली से लगभग 11 मील दक्षिण-पूर्व में स्थित बेगून के अंतर्गत् है (एपि० इ०, XXVI, XXVI, भाग, III, जुलाई 1941)।

रेवणा—यह गाँव बिझौली से लगभग चार मील पूर्वोत्तर में आधुनिक रघोल्पुर के समान प्रतीत होता है। राजकुमार सोमेश्वर ने इसे पार्श्वनाथ को दान दे दिया था (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 101)।

रेवती—यह बिझोली मे पार्श्वनाथ-मंदिर के बगल से प्रवाहित होने वाली एक लघु नदी है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941)। इसका नामकरण रेवती कुंड के आधार पर हुआ है।

रेवा—यशोधर्मन् एवं विष्णुवर्धन् के मंदसोर शिलालेख (मालव संवत् 589) मे वर्णित यह एक नदी है। भागवत पुराण (V, 19, 18, IX, 15, 20, X, 79, 21) मे भी इसका वर्णन है। इस अभिलेख के अनुसार इस नदी का पीनाभ जलसमूह विन्ध्यपर्वत के शिखरो के ढाल से प्रवाहित होता है (का० इ० इ०, जिल्द, III)। कालिदास के मेघदूत मे भी इसका वर्णन है (पूर्वमेघ, 19)।

ऋक्षवत—ऋक्षवत आधुनिक विन्ध्य पर्वत का प्राचीन नाम था। टॉलेमी ने इसे औक्सेंटेन (Quxenton) कहा है। टॉलेमी ने इस पर्वत को तूडिस, दोसारन एवं अदमस का स्रोत बतलाया है। टॉलेमी के अनुसार दोसारन ऋक्ष पर्वत मे निकलती थी। ऋक्ष से उसका तात्पर्य नर्मदा के उत्तर मे आधुनिक विन्ध्य पर्वतमाला के मध्यवर्ती क्षेत्र से था (लाहा, माउंटेंस ऑव इंडिया, पृ० 17)।

शैलपुर—भरहुत-पूजा-वेदिका (संख्या, 41) मे शैलपुर का वर्णन हुआ है (बरुआ ऐंड सिन्हा, भरहुत इंस्क्रिप्शंस, पृ० 16)।

सकराई—यह राजस्थान मे जयपुर के अंतर्गत् खण्डेला से 14 मील पश्चिमोत्तर मे शेखावती मे एक गाँव है। शर्करा नामक एक छोटी नदी के तट पर शाकंभरी देवी के मंदिर के लिए प्रसिद्ध यह हिंदुओ का एक तीर्थ स्थान है। यहाँ से एक प्रस्तर लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, XXVII, भाग, I, पृ० 27)।

सल्लईमाल—इसका प्रतिनिधित्व अब दो गाँव करते हैं जो मध्य प्रदेश में

अञ्जनवती से ढाई मील पश्चिम मे सलोरा एवं लगभग पाँच मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित अमला नामक ग्राम है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935)।

सलोनी—पुरुषोत्तम द्वारा प्रदत्त इस गाँव की पहचान सरोनी से की जा सकती है जो कोनी से लगभग डेढ मील दक्षिण एवं पश्चिम मे स्थित है (एपि०, इ०, XXVII, भाग, VI, पृ० 280)।

समुद्रपाट—सभवतः यह जबलपुर से चार मील दक्षिण मे स्थित समद पिपरिया है (एपि० इ०, XXV, VII, पृ० 311)।

सताजुना—यह माधाता से लगभग 13 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित सताजुना नामक गाँव है (एपि० इ०, IX, 106)।

सत्यवान—यह पर्वत ऋक्ष एव मञ्जुमान के मध्य स्थित है (पद्म पुराण, 140)।

साभ्रमती—इस नदी मे सात सरिताएँ है। नदीतीर्थ एव कपालमोचन-तीर्थ नामक दो स्थान इस नदी के तट पर स्थित है (पद्मपुराण, अध्याय, 136)। यह नदी ब्रह्मवल्ली नदी मे मिलती है (वही, अध्याय, 144)।

शाकंभरी—यह जयपुर मे एक स्थान है। साँभर के भग्नावशेषो का अन्वेषण 1936-1938 मे किया गया था (द० रा० साहनी, आर्क्यॉलॉजिकल रिमेस ऐंड एक्सकेवेशस ऐट साँभर)।

सामोली—यह राजस्थान मे उदयपुर मे है।

साँची—साँची का प्राचीन नाम काकनाद था (का० इ० इ०, जिल्द, III, 31, ब्यूलर्स की तालिका, सख्या, 350)। यह अपने प्राचीन बौद्ध स्तूपो के लिए प्रसिद्ध है। साँची के स्तूपो मे पूजा-अभिलेखो की एक बडी सख्या प्राप्त होती है (एपि० इ०, II, 87 और आगे)। साँची मध्य प्रदेश मे भूपाल से 20 मील पूर्वोत्तर मे स्थित है (विस्तार के लिए द्रष्टव्य, कनिघम, भिलसा टोप्स, पृ० 183)। चन्द्रगुप्त द्वितीय के साँची शिलालेख मे साँची गाँव का वर्णन है जो मध्य प्रदेश मे भूपाल की दीवानगज तहसील से लगभग 12 मील पूर्वोत्तर में स्थित है (का० इ० इ०, जिल्द, III)। साँची के स्तूपो के निर्माणकाल के विषय मे मतभेद है। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, मु० हामिद कृत एक्सकेवेशस ऐट साँची, आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1936-37 (1940); सर जान मार्शल एव अल्फ्रेड फाउचर, मानुमेंट्स ऑव साँची)।

साँचोर—यह राजस्थान मे सिरोही जिले के अतर्गत् इसी नाम का नगर है (एपि० इ०, XI, पृ० 57)।

सारंगढ़—यह मध्य प्रदेश में रायगढ़ से 32 मील दक्षिण में छत्तीसगढ़ मंडल मे स्थित है (एपि० इ०, IX, 281 और आगे)।

सेवाडी—यह राजस्थान के जालोर जिले मे बली नामक तहसील में एक गाँव है (एपि० इं०, XI, पृ० 304)।

शेरगढ़—यह राजस्थान के कोटा जिले मे एक विजन नगर है। यह अत्रू रेलवे स्टेशन से लगभग 12 मील दक्षिण-पश्चिम में है जहाँ से दो अभिलेख उपलब्ध हुये है (एपि० इ०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935; पृ० 131)।

शिप्रा—इस नदी का उद्गम-स्थल हिमालय पर्वत के पश्चिम में स्थित शिप्रा नामक झील मे है और यह दक्षिण समुद्र मे गिरती है (कालिका पुराण, अध्याय, 19, पृ० 14,17) । इसका वर्णन मेघदूत (पूर्वमेघ, 31) मे है। कालिदास ने इसे एक ऐतिहासिक नदी के रूप मे अमर बना दिया है जिसके तट पर उज्जयिनी स्थित थी (तुलनीय, रघुवश, VI, 35)। यह ग्वालियर की एक स्थानीय नदी है जो सितमन के थोडा आगे चबल (चर्मण्वती) मे मिलती है। । यह दो उपनदियों द्वारा आपूरित है (लाहा, रिवर्स ऑव इडिया, पृ० 40)। हरिवश (clxvii, 9509) मे इस नदी का वर्णन है। पौराणिक सूची के अनुसार यह पारिपात्र पर्वत से निकलती है। स्कन्दपुराण के अवन्त्यखण्ड से विदित होता है कि अवन्ती मे शिप्रा को उत्तरवाहिनी कहा जाता था जिसका अर्थ उत्तर की ओर प्रवाहित होने वाला था। जब रेवा नदी के जल ने पृथ्वी को आच्छादित कर दिया था, विन्ध्यपर्वत ने पृथ्वी की रक्षा की थी। रेवा, चर्मण्वती एव क्षाता नामक तीन नदियाँ विन्ध्य के निकट अमरकंटक पहाडी से निकलती थी। विन्ध्य को चीर क्षाता रुद्रसरोवर के निकट शिप्रा मे मिलने के लिये महाकालवन या उज्जयिनी की ओर प्रवाहित होती थी। शिप्रा एव क्षाता के सगम को क्षातासगम कहा जाता था जो एक महत्त्वपूर्ण तीर्थस्थान है (स्कन्दपुराण, अध्याय, 56, 6-12; पृ० 2868-69, वगवासी सस्करण)। जैन आवश्यकचूर्णि (पृ० 544) में भी इस नदी का वर्णन है।

सिरोह—यह नरवर से लगभग तीन मील पश्चिमोत्तर मे है।

सिरपुर—यह मध्य प्रदेश के रायपुर जिले की महासमुद तहसील मे महानदी के दाहिने तट पर स्थित एक लघु ग्राम है। यह रायपुर से 37 मील पूर्वोत्तर और आरग से 15 मील दूर है। किसी समय यह महा-कोशल की राजधानी थी और तब इसे श्रीपुर कहा जाता था (एपि० इ०, XI, पृ० 184)।

श्रीमालपट्टन—यह आबू पर्वत से लगभग 50 मील पश्चिम मे स्थित,

गुर्जरत्रा के प्राचीन प्रांत की राजधानी—सुप्रसिद्ध भिनमाल है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941)। स्कन्दपुराण के अनुसार इसे श्रीमाल कहा जाता था।

श्रीमार्ग—चाहमान सोमेश्वर के बिझोली शिलालेख मे (विक्रमसंवत् 1226) श्रीमार्ग का वर्णन आता है जहाँ पर यह श्रीपथ या श्रीपथा के पाठातर के रूप मे प्रयुक्त हुआ है जिसे फ्लीट ने भरतपुर के आधुनिक बयाना से समीकृत किया है (एपि० इ०, XXVI, भाग, II, अप्रैल, 1941, पृ० 84 और आगे)।

श्रीपुर—यह मध्य प्रदेश के रायपुर जिले मे आधुनिक सिरपुर है (एपि० इं०, XXII, 22, द्रष्टव्य शिरपुर)।

सुनारपाल—यह बस्तर के नारायणपाल से लगभग 10 मील दूर पर एक गाँव है जहाँ से जयसिंहदेव का एक शिलालेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, X, 35 और आगे)।

सुनिक—शरभपुर के महासुदेवराज के एक नये राजपत्र मे धकरिभोग मे स्थित इस गाँव का वर्णन है (इ० हि० क्वा०, XXI, न० 4)।

सुप्रतिष्ठ—यह उस आहार का मुख्यावास था जिसमे अब नागपुर जिले की हिंगनघाट तहसील मे सम्मिलित क्षेत्र सम्मिलित थे (एपि०इं०XXVI, 157-58)। इस आहार का वर्णन प्रभावती गुप्ता के पूना अभिपत्रों मे भी है (एपि० इं०, XV 39 और आगे)।

श्वेता—यह नदी साभ्रमती से निकलती है (पद्मपुराण, अध्याय, 137)।

तलहारी—इसमे बिलासपुर तहसील मे मल्लार के परिवर्ती क्षेत्र सम्मिलित प्रतीत होते है (एपि० इं०, XXVII, भाग, VI, पृ० 280)। इसका प्राचीन नाम तरडमशकभुक्ति प्रतीत होता है जो मल्लार है निकट उपलब्ध महाशिवगुप्त बालार्जुन के एक पुराने दान ताम्रपत्र मे वर्णित है।

तलेवाटक—यह अञ्जनवती से लगभग 10 मील दक्षिण-पश्चिम मे आधुनिक तालेगाँव है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० । 3

तापी (ताप्ती)—निस्सदेह यह ताप्ती नदी है किंतु आश्चर्यजनक रूप से इसका वर्णन महाकाव्यो मे, यहाँ तक कि महाभारत मे भीष्मपर्व की तालिका मे भी नही हुआ है (ल्युडर्स तालिका, न० 1131)। भागवतपुराण (V, 19, 18, X, 79, 20) एव पद्मपुराण (उत्तरखण्ड, श्लोक, 35-.38 मे उस नदी का वर्णन है जिसका उदगम स्थल महादेव पहाडी के पश्चिम मे मुल्ताई पठार मे हैं और जो मध्य प्रदेश एवं बरार (महाराष्ट्र) के पश्चिमोत्तरी सिरे की

प्राकृतिक सीमा अंकित करती हुयी पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है। यह बुरहानपुर से गुजरती और मध्य प्रदेश की सीमा पार करती हुयी सूरत (गुजरात) मे समुद्र मे मिलने के लिए महाराष्ट्र मे प्रवेश करती है। इसे अनेक महत्वहीन उप-नदियाँ आपूरित करती है। विष्णुपुराण (II, 3, 11) के अनुसार यह नदी पहाडी से निकलती है। यहाँ पर बलराम आये थे (वायु, 45, 102, ब्रह्माण्ड, II, 16.32)।

टॉलेमी ने ननगौनस नदी का वर्णन किया है जो अवश्य ही ताप्ती है। ननगौनस नाम भारतीय स्रोतो मे नही उपलब्ध होता है। टॉलेमी ने तटीय देशो के अपने विवरण-क्रम मे इस नदी के मुहाने को ताप्ती के वास्तविक मुहाने से बहुत दूर बबई से कोई 33 मील उत्तर मे उसी ऊँचाई पर स्थित बतलाया है जिस पर आधुनिक नगर सोपारा (सूप्पारा) स्थित है। टॉलेमी ने ननगौनस के स्रोत को विन्ध्य के पूर्वी भाग मे स्थित बतलाया है। ताप्ती विन्ध्य से नही निकलती है (जे० पीएच० फोगेल, नोट्स ऑन टॉलेमी, बु० स्कू० ओ० अ० स्ट०, XIV, भाग, I, पृ० 84)।

टेकभरा—इसे जबलपुर मे पाँच मील दक्षिण एव पश्चिम मे तिखारी से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXV, VII, पृ० 311)।

तेमरा—यह मध्य प्रदेश मे बस्तर मे कुरुस्पाल से मिला हुआ एक छोटा गाँव है (एपि० इ०, X, 39 और आगे)।

तेरंबि—इसे राणोद से पाँच मील दक्षिण-पूर्व मे तेराही से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इ०, XXIV, भाग, VI, पृ० 242)।

तेवार—यह मध्य प्रदेश मे जबलपुर के लगभग छह मील दक्षिण मे स्थित एक गाँव है जहाँ चेदिसवत् 928 का जयसिंहदेव के शासनकाल का एक शिला-लेख उपलब्ध हुआ था (एपि० इ०, II, 17 और आगे)।

ठाकुरदिया—यह गाँव मध्य प्रदेश मे छत्तीसगढ मे सारगढ से छह मील दूर पर है (एपि० इ०, XXI1, पृ० 15)।

टिहरी—यह जामिनी नदी के लगभग 5 मील पूरब मे छतरपुर को ललितपुर से मिलाने वाली रेखा से थोडा आगे और सुराई से लगभग 30 मील उत्तर में स्थित आधुनिक टिहरी है। ये सभी बुदेलखड मे हैं (ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, जिल्द, 23, 1947, पृ० 47)।

तिमिस—यह मध्य प्रदेश मे अज्जनवती के पश्चिम मे स्थित पहाडियो का प्राचीन नाम है (एपि० इं०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 13)।

तोसड्ड—इस गाँव को अरग से लगभग 30 मील दक्षिण-पूर्व में द्रुमरपल्ली के समीप तुसदा से समीकृत किया जा सकता है (एपि० इं०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1925, पृ० 20)।

त्रिपुरी—यह जबलपुर से 6 मील दूर है (एपि० इ०, XXI, 93)। यह जबलपुर के समीप आधुनिक तेवर है। बृहत्संहिता मे (XIV, 9) मे एक नगर के रूप मे इसका वर्णन है।

तुमैन—पचार रेलवे स्टेशन से लगभग 10 मील दक्षिण-पूर्व मे मध्य प्रदेश के गुणा जिले मे स्थित यह एक विशाल गाँव है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 115)।

तुंबवन—साँची के महान् स्तूप के 6 पूजा-अभिलेखों मे तथा गुप्त संवत् 116 में अंकित कुमारगुप्त और घटोत्कचगुप्त के तुमैन-अभिलेख में इसका वर्णन है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941)। वराहमिहिर की बृहत्संहिता (XIV, 15) मे इसका उल्लेख है। इसकी पहचान तुकनेरी रेलवे स्टेशन से 6 मील दक्षिण मे और एरण (प्राचीन एरिकिण) से लगभग 50 मील पश्चिमोत्तर मे तुमैन से की जाती है।

तुम्मान—इसे तुमान भी कहा जाता है जो बिलासपुर जिले मे रतनपुर से लगभग 45 मील उत्तर मे स्थित है (एपि० इ०, XXVII, भाग, VI, पृ०, 280)।

तुण्डरक—महानदी के तट पर स्थित सेओरी नारायण से लगभग 6 मील दक्षिण में और सारंगढ से लगभग 35 मील पश्चिम मे स्थित आधुनिक तुण्ड्रा मे इसकी पहचान की जा सकती है। सम्प्रति यह रायपुर जिले की बलोदा बाजार तहसील मे सम्मिलित है (एपि० इ०, IX, पृ० 283)।

उदयपुर—यहाँ पर, जगन्नाथराय का मंदिर है जहाँ अभिलेख प्राप्त हुये है (एपि० इ०, XXIV, भाग, II, अप्रैल, 1937)।

उदयगिरि—यह एक सुनसान बालुकाश्म-पहाडी मे उत्खनित गुहा-मंदिरो के लिए विश्रुत है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के उदयगिरि गुहालेख मे इस सुप्रसिद्ध पहाड़ी का वर्णन है जिसके पूर्व की ओर मध्य प्रदेश मे रायसेन जिले मे विदिशा तहसील के मुख्यावास भिलसा से लगभग दो मील पश्चिमोत्तर मे स्थित इसी नाम के एक छोटे से गाँव का उल्लेख है (का० इ० इ०, जिल्द, III)। कुछ लोगों के अनुसार यह पहाड़ी भिलसा रेलवे स्टेशन से 4 मील पश्चिमोत्तर में स्थित है। यह प्राचीन स्थल भिलसा से चार मील दूर बेतवा एव बेश नदियों के बीच स्थित है। यहाँ पर बीस गुफाएँ हैं। यह क्षेत्र जिसमे वह पहाड़ी स्थित

है, प्राचीन काल मे प्राचीन बौद्ध आगम मे दशार्ण या दसण्ण के नाम से विश्रुत है। दस्सण्ण को साधारणतया आधुनिक भिलसा के परिवर्ती क्षेत्रो से समीकृत किया जाता है। उदयगिरि पहाडी लगभग डेढ मील लबी है और इसकी सामान्य दिशा दक्षिण-पश्चिम से पूर्वोत्तर की ओर है। वेदिसगिरि, जहाँ अशोक का पुत्र महेन्द्र सिहल प्रस्थान करने के पूर्व अपनी माँ के साथ एक विहार मे रुका था, सभवतः उदयगिरि पहाडी ही हो सकती है। मूर्तिकला की दृष्टि से पाँचवी गुहा उदयगिरि की सब से अधिक महत्त्वपूर्ण गुहा है। इसमे वराह अवतार का दृश्य अकित है। छठवी गुहा मे दो द्वारपालों, विष्णु, महिषमर्दिनी एवं गणेश का मूर्ति निरूपण है। उदयगिरि गुहा मे बारह अभिलेख है जिसमे से चार अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। छठवी गुहा के अभिलेख से प्रकट होता है कि इस क्षेत्र पर सनकानिकों का अधिकार था (द्रष्टव्य, रा० कु० मुकर्जी द्वारा सपादित विक्रम वाल्यूम में प्रकाशित डी० आर० पाटिल का लेख, 'द मानुमेंट्स ऑव उदयगिरि हिल्स, 1948, पृ० 377 और आगे, लुअर्ड, ग्वालियर स्टेट गजेटियर, I, पृ० 296)।

उदयपुर—यह मध्य प्रदेश मे ग्वालियर मे है। यहाँ पर निर्मित्त उदयादित्य के शिव मंदिर में एक शिलालेख उपलब्ध हुआ है (इं० ऐ०, XVIII, 344 और आगे)। उदयादित्य ने उदयपुर के महान नीलकठेश्वर मदिर का निर्माण कराया था (ज० ए० सो० ब०,IX, 548)।

उज्जैन—पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (3 1 21, पृ० 67-68) मे इसका उल्लेख किया है। योगिनीतत्र (2 2 119) मे इसका वर्णन है। अशोक के द्वितीय लघु शिलालेख मे उज्जयिनी (उज्जेनी) का वर्णन है।* अवन्ती या पश्चिमी मालवा की राजधानी उज्जयिनी चर्मण्वती (चबल) की एक सहायक नदी शिप्रा के तट पर स्थित थी। यह मध्य प्रदेश मे आधुनिक उज्जैन है। दीपवस (पृ० 57) के अनुसार इसका निर्मण अच्चुतगामी ने कराया था। चीनी तीर्थयात्री युवान च्वाङ-के अनुसार इसकी परिधि, 6,000 ली थी। यहाँ पर कई सघाराम थे जो अधिकाशत भग्नप्राय है। यहाँ पर कोई 300 पुरोहित थे जो हीनयानियो एव महायानियो के सिद्धातो का अध्ययन करते हैं। यहाँ का राजा ब्राह्मण था जो विधर्मियो के ग्रथो मे निष्णात् था किंतु जो बौद्ध-धर्म मे विश्वास नही करता था (बील, बुद्धिस्ट रिकार्डस ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, भाग,

---

*वस्तुतः उज्जयिनी का उल्लेख अशोक के द्वितीय लघु शिलालेख में न होकर उड़ीसा से प्राप्त द्वितीय पृथक शिलालेख में है। —अनूदक

II, पृ० 270-271)। लगभग चौथी शती ई० मे उज्जयिनी के प्राताधिपति की राज-सभा के समक्ष बसतोत्सव के अवसर पर कालिदास के नाटक अभिनीत होते थे (रैप्सन, ऐश्यॆंट इडिया, पृ० 175)। ज्योतिषी अपने अक्षाश की गणना यही से करते थे (मैक्रिडिल, एंश्येंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलिमी, पृ० 154)। 'पेरिप्लस ऑव एरिथ्रियन सी' नामक ग्रंथ मे (खण्ड, 48) इस पुर को ओजीनी कहा गया है जहाँ से प्रत्येक माल स्थानीय उपभोग के लिए बैरीगाजा (भृगुकच्छ) लाया जाता था। यह व्यापार का एक महान् केंद्र था जो कम से कम तीन प्रमुख व्यापारिक मार्गों के मिलन विंदु पर स्थित था।

मगध नरेश बिम्बिसार के उज्जयिनी की एक नगर-वधू पद्मावती से एक पुत्र था (थेरीगाथा कामेंट्री, पृ० 39)। यहाँ राजा चण्डपज्जोत के पुरोहित के कुल मे महाकच्चायन उत्पन्न हुये थे जिन्होने तीनो वेदो का अध्ययन किया एव अपने पिता के उस पद के उत्तराधिकारी हुये। जैन मत के प्रवर्तक महावीर ने यहाँ पर तपश्चर्या की थी। चौथी शती ई० पू० मे उज्जयिनी मगध के अधीन हो गया। तीसरी शताब्दी ई० पू० के प्रारभ मे अशोक यहाँ का कुमारामात्य नियुक्त था। जब वह यहाँ पर कुमारामात्य था, यही पर तब उसका पुत्र महेंद्र उत्पन्न हुआ था। उज्जयिनी के सुविख्यात राजा विक्रमादित्य ने जिसकी पहचान सामान्यतया चन्द्रगुप्त द्वितीय (लगभग 375 ई०) से की जाती है, शको को निष्का-सित किया एव भारत के एक विशाल भूभाग पर अपना अधिकार स्थापित किया था।

भारत का अपेक्षाकृत आधुनिक लोक-साहित्य उज्जयिनी के विक्रमादित्य एव उसकी सभा को अलकृत करने वाले नवरत्नो से सबधित अनेक रोचक एव हास्यप्रद कहानियो से ओत-प्रोत है। परपरा से कुल मिलाकर यह प्रति-ध्वनित होता है कि उदार राजकीय सरक्षण मे उज्जयिनी सस्कृत विद्या का एक महान् केंद्र बन गया था।

दशकुमारचरितम् (पृ० 31) के अनुसार पुष्पोद्भव ने एक व्यापारी के चन्द्रपाल नामक पुत्र से मित्रता करके उसके साथ उज्जयिनी मे प्रवेश किया था। वह अपने माता-पिता को भी इस महा नगर मे ले आया था।

उज्जयिनी के समीप प्राप्त दो पत्रो पर अकित अभिलेख मे महायक की पत्नी आसिनी के निवेदन पर वाक्पतिराज ने उज्जयिनी मे भट्टेश्वरी देवी को सेबलपुरक नामक ग्राम दान मे दिया था (इ० ऐ०, XIV, 159 और आगे)।

प्राचीन भारतीय ताम्र-मुद्राओ मे उज्जयिनी की मुद्रा का अपना विशिष्ट स्थान है। यहाँ पर तीसरी शती ई० पू० से प्रथम शती ई० के मध्य की आहत एव ढली हुयी मुद्राएँ उपलब्ध होती है। उज्जयिनी के उत्खनन से 2 शती ई०

पू० से दूसरी शताब्दी ई० तक के काल-क्रम मे मिट्टी के पदक एवं अभिमुद्राएँ उपलब्ध हुयी है। दूसरी शताब्दी ई० पू० से पाँचवी शती ई० तक के कुछ मृण्पात्र भी यहाँ प्राप्त हुये है। यहाँ से एक प्रस्तर-मजूषा भी उपलब्ध हुयी है (लगभग दूसरी शताब्दी ई० पू०)।

उज्जयिनी मे महाकाल का मदिर बनवाया गया था जो भारत के अत्यंत प्रसिद्ध बारह शैव मंदिरों में से एक था। सौर पुराण (अध्याय, 67, I) मे उज्जैयिनी के महाकाल का उल्लेख है। यह लिङ्गायत सम्प्रदाय का एक प्रसिद्ध तीर्थस्थान भी है। लिङगायत परिव्राजक मुनि सपूर्ण भारत में विशेषरूप से पाँच लिङगायत क्षेत्रो मे प्रायः विचरण करते है। जहाँ तक हिंदू-मदिरों का प्रश्न है, कालिदास देवगिरि पर्वत पर स्थित कार्त्तिकेय के महामदिर से परिचित थे। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इडिया, अध्याय, LX; वि० च० लाहा, उज्जयिनी इन ऐंश्येंट इडिया, (ग्वालियर आर्कयॉलॉजिकल डिपार्टमेंट)।

उमा—प्रवरसेन द्वितीय के कोठुरक दानपत्र मे वर्णित इस नदी की पहचान नागपुर जिले मे वुन्ना नदी से की गयी है (एपि० इ०, XXVI, भाग, V, अक्टूबर, 1941, 155 और आगे)। यह प्रदत्त गाँव कोठुरक की पूर्वी सीमा थी।

उंवरणीग्राम—(एपि० इ०, VIII, 220)—यह दक्षिण राजस्थान मे है और इसकी पहचान देलवाडा से सात मील दक्षिण-पश्चिम मे उमरणी से की जा सकती है।

उन—यह बबई-आगरा मार्ग के समीप सनवड स्टेशन से साठ मील दूर नर्मदा के दक्षिण मे है। यह मध्य प्रदेश के निमाड जिले मे है जहाँ पर कुछ मदिर है (आर्क० स० इ०, एनुअल रिपोर्ट, 1918-19, भाग, I, पृ० 17)।

उपप्लव्य—यह राजा विराट के राज्य मे एक नगर था जहाँ से पाण्डव अपना वनवास समाप्त करके दूसरे स्थान पर चले गये थे (महा०, IV, 72, 14)। धृतराष्ट्र ने कुरुओ के सदेशवाहक सञ्जय को इस नगर मे भेजा था (वही, V, 22, 1)। महाभारत के टीकाकार नीलकण्ठ ने बतलाया है कि उपप्लव्य विराट नगर के समीप एक नगर था। किंतु इसका ठीक स्थान अनिश्चित है (महाभारत, IV, 72, 14 पर नीलकण्ठ की टीका)। यह मत्स्यों की राजधानी नही प्रतीत होती है जैसा कि कैंब्रिज हिस्ट्री आँव इडिया (पृ० 316) मे बतलाया गया है, किंतु यह मत्स्य देश का केवल एक नगर मात्र था।

उत्तमाद्रिशिखर—यह उत्तर मे जहाजपुर के दक्षिण मे बोरोल्ली और मैंसरौर से फैले हुये सब से ऊपरी पठार का प्राचीन नाम प्रतीत होता है जिसका

लोकप्रिय नाम उपरमाल है (एपि० इं०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 101)।

बड़पुर—इसे वडनगर भी कहा जाता था। संत मार्टिन ने वल्लभी से 117 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित आनंदपुर नामक नगर को वडनगर से समीकृत किया है (कनिंघम, एं० ज्यॉ० इ०, 565; तुलनीय, इंपार्टेंट इस्क्रिप्शस फ़ॉम द बड़ौदा स्टेट, भाग, I, पृ० 78)।

बडउवा—यह बिझोली से लगभग 3 मील दक्षिण मे आधुनिक बडउवा है (एपि० इं०, XXVI, 102 और आगे)।

बैराट—वैराट या वैराटनगर मत्स्यदेश की राजधानी थी, जो इन्द्रप्रस्थ के दक्षिण या दक्षिण-पश्चिम में एवं शूरसेन के दक्षिण मे स्थित था (ऋग्वेद VII, 18, 6, गोपथ ब्राह्मण, I, 2 9, बिब्ल्योथेका इडिका सीरीज़)। मत्स्यराज-विराट की राजधानी होने के कारण उसे वैराटनगर कहा जाता था। यह जयपुर मे एक तहसील का मुख्यावास है जहाँ अब दिल्ली को जयपुर से मिलाने वाली 52 मील लबी एक सुदर पक्की सडक से पहुँचा जा सकता है। परंपरानुसार इसकी पहचान मत्स्यदेश के राजा विराट की राजधानी विराटपुर से की जा सकती है जहाँ द्रौपदी-सहित पाँचो पाण्डवो ने अपने बनवास का तेरहवाँ अज्ञात-वास का वर्ष व्यतीत किया था। जब उन्होने अपना परिचय प्रकट किया तब अर्जुनपुत्र अभिमन्यु ने राजा विराट की पुत्री उत्तरा से विवाह किया (महाभारत, LXXII)। वैराटनगर अपनी ताँबे की खदानो के लिए प्रसिद्ध नीची पहाडियो से परिवेष्टित एक वृत्ताकार घाटी के मध्य स्थित है। यह दिल्ली से 105 मील दक्षिण-पश्चिम एव जयपुर से 41 मील उत्तर मे स्थित है। यह लगभग एक मील लबे एव आधा मील चौडे, या और अधिक लगभग ढाई मील परिधि वाले खंडहरो के एक टीले पर स्थित है जिसके $\frac{1}{4}$ भाग से अधिक पर वैराट नही है।

वैराट के प्राचीन अवशेषो का वर्णन आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट्स, भाग, II, एवं VI मे दिया गया है, (31 मार्च 1910 मे समाप्त होने वाले वर्ष की, डा० दे० रा० भडारकर द्वारा लिखित प्रोगेस रिपोर्ट ऑव द आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव इडिया, वेस्टर्न सर्किल भी द्रष्टव्य; डा० भडारकर ने 1909-10 वैराट की यात्रा की थी)।

वर्तमान वैराट नगर पूरब से पश्चिम लगभग पाँच मील लंबी एवं तीन या चार मील चौडी एक घाटी के मध्य स्थित है जो तीन वर्तुलाकार पर्वतमालाओं से परिवेष्ठित है जिनकी सब से बाहरी सर्वोच्च एव सब से भीतरी सबसे नीची

है। दिल्ली-जयपुर मार्ग इस घाटी मे पश्चिमोत्तर के एक कोने से एक संकरे दर्रे से घुसता है। यह क्षेत्र दो नालो—यथा बैराट नाला जो उत्तर की ओर प्रवाहित होकर बानगगा मे मिलता है, तथा दक्षिण मे बंदरोल नाला से अभिसिंचित है। बैराट अशोक के रूपनाथ एव सहसराम-शिला के बैराट सस्करण के लिए प्रसिद्ध है जिसको कार्लाइल ने भीम-जी की दुगरी नामक एक पहाडी के पाद मे एक विशाल शिलापर अकित खोजा था। यह पहाड़ी बैराट नगर से लगभग एक मील पूर्वोत्तर मे स्थित है। यहाँ पर एक विशाल कदरा मिलती है जिसे द्वितीय पाण्डव बधु भीम का आवास माना जाता है।

बैराट मे एक जैन मदिर है जो तहसील के निकट स्थित है और यहाँ पर एक देवालय है जिसके पहले एक विस्तृत सभा-मडप है जो तीन ओर से चौडे परिक्रमा-पथ से परिवेष्टित है (विस्तार के लिए द्रष्टव्य, द० रा० साहनी, आर्कॅयॉलॉजिकल रिमेस ऐंड एक्सकेवेशस ऐट बैराट, पृ० 16-17)।

बीजक-की-पहाडी के शिखर से उत्तर मे भीम जी की दुगरी पहाड़ी और उसके परिवर्ती स्मारको तथा चारो ओर से इस ऊँचे नगर को घेरने वाले पूर्ण समतल मैदान सहित बैराट की सपूर्ण घाटी का एक रमणीक दृश्य दिखलायी पड़ता है। निस्सदेह बैराट अशोक के एक शिला-शासन के लिए प्रसिद्ध है जो शिला-थब से भिन्न शिला-फलक पर उत्कीर्ण अशोक का एकमात्र ज्ञात शिलाशासन है। इस शिला-शासन से बौद्ध धर्म मे अशोक की निष्ठा का निश्चित प्रमाण मिलता है। तदनतर इसमे भिक्षु-भिक्षुणियों एव उपासक-उपासिकाओ को बौद्ध शास्त्रो के सात सकलित उद्धरणो के अध्ययन एव श्रवण के लिए उद्बोधन है। बुद्ध द्वारा प्रवर्तित करुणा के धर्म (Law of piety) की निरन्तर प्रगति के लिए वह इन्हे अत्यत हितकर मानता था और इनके प्रति स्वयं उसके मन मे विशेष आग्रह था।

बैराट के प्राचीन स्थल के उत्खनन से मौर्य-युग एव उसके तत्काल बाद के अनेक पुरावशेष प्राप्त हुये है। यहाँ से ज्ञात प्रमुख स्मारको मे अशोक के अन्य ज्ञात स्मारक स्तंभो के समान ही उसके दो स्तभो के अवशेष, पूर्णतः एक नयी शैली का मदिर और अशोक द्वारा निर्मित एक विहार है। बिहार का सर्वाधिक सुरक्षित भाग पूर्व की ओर था जहाँ छः-सात कोठरियो की दुहरी पक्ति अवशिष्ट है। इन कोठरियो से प्राप्त सवहनीय पुरानिधियो मे मृण्भांड, विभिन्न आकार और विविध प्रकार से अलकृत पात्र संमिलित है। यहाँ से आहत रजत एव कुछ यूनानी एव इडो-ग्रीक रजत मुद्राएँ भी उपलब्ध हुयी है। सूती कपड़े के एक टुकड़े की उपलब्धि से प्रथम शती ई० मे प्रयुक्त होनेवाले कपड़ो पर रोचक

प्रकाश पड़ता है। यहाँ से प्राप्त संवहनीय पुरानिधियो मे एक नर्तनशील लड़की या शिर-पैर विहीन एक यक्षी की प्रतिमा का वर्णन किया जा सकता है। उसका बाँयाँ हाथ नितंब पर है जबकि दाहिना हाथ वक्षस्थल पर बाँएँ उरोज को सहारा दिये था। यह आकृति प्राय. नग्न है। इस प्रकार की आकृतियाँ लगभग पहली शताब्दी ई० पू० के मथुरा के वेदिका स्तभ (Railing Pillars) पर भी प्राप्त होती हैं। यहाँ पर प्राप्त गोलाकार मदिर अशोक के स्तभों के समकालीन सर्वाधिक मनोहर भवन है। आग लगने के कारण यह नष्ट हो गया था। दयाराम साहनी ने वैराट के उत्खनन की यह एक रोचक विशेषता बतलाई है कि यहाँ पर किसी रूप मे या किसी उपकरण पर बुद्ध की मानवाकार प्रतिमा बिलकुल नही मिलती है जो इस मत मे पूर्णत सगत है कि दूसरी शती ई० के पूर्व बुद्ध की प्रतिमा नही विकसित हुयी थी (डिपार्टमेंट ऑव आर्क्यॉलॉजिकल ऐंड हिस्टॉरिकल रिसर्च, जयपुर स्टेट द्वारा प्रकाशित द० रा० साहनी कृत आर्क्यॉलॉजिकल रिमेंस ऐंड एक्सकेवेशस ऐट वैराट, पृ० 19 और आगे)। मत्स्यदेश भी द्रष्टव्य ।

वणिका—इसकी पहचान अलवर से 15 मील पश्चिमोत्तर मे बेनका नामक गाँव मे की जा सकती है (एपि० इ०, XXIII, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 102)।

वरदाखेट—यह सभवत: पट्टन से लगभग 12 मील दक्षिण मे अमरावती जिले के मोरसी तालुक-मे वरुड है (एपि० इ०, XXIII, भाग, III, जुलाई, 1935, पृ० 84)।

वरलायक—बिझौली के समीप यह एक सरोवर का नाम है जिसके किनारों पर प्राचीन मदिरो के खडहर बिखरे पडे है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 101)।

वरतु—इस नदी की पहचान वरत्रोयी नदी से की जा सकती है (एपि० इं० ,XXVI, भाग, V, जनवरी, 1942, पृ० 204) जो देवलिया गाँव से दूर पूरब एव उत्तर मे है।

बसन्तगढ—यह राजस्थान में सिरोही मे है जहाँ से पूर्णपाल के प्रस्तर लेख उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, IX, 10 और आगे)। यह एक अति प्राचीन स्थान है। ग्यारहवी शताब्दी ई० के अंत तक इसे वट, वटकर एव वटपुर कहा जाता था। यहाँ पर एक पहाडी पर स्थित एक प्राचीन दुर्ग मिला है। अधिक विवरण के लिए, द्रष्टव्य एर्सकाइन द्वारा संकलित राजपूताना गजेटियर्स, भाग III, पृ० 302 और आगे)।

वशिष्ठाश्रम—यह आश्रम अमरावती पर्वतमाला मे आबू पर्वत पर स्थित

था। कालिदास ने अपने रघुवंश मे वशिष्ठ के आश्रम को हिमालय में स्थित बतलाया है (रघुवश, II, 26)। यहाँ पर विश्वामित्र आये थे। यह आश्रम रमणीक, ऋषि सकुल तथा विविधप्रकार के पुष्पो लताओ एव वृक्षो से मुसज्जित था (रामायण, आदिकाण्ड, सर्ग, 51, श्लोक, 22-23)। कहा जाता है कि वशिष्ठ ने अपने अग्नि-कुंड से विश्वामित्र का विरोध करने के लिए परमार नामक एक योद्धा की सृष्टि की थी जिस समय वह उनकी प्रसिद्ध कामधेनु का अपहरण कर रहे थे। परमार राजपूतो के परमार-कुल का प्रजनक था। पुत्रकाम दिलीप एव उसकी पत्नी ने इस आश्रम के लिये प्रस्थान किया था (रघुवश, सर्ग, I, श्लोक, 35)।

वटपद्रक—यह कोशीर-नदपुरविषय मे स्थित था। इस गॉव की पहचान बारड्डूल से लगभग 14 मील दूर आधुनिक बटपदक मे की जा सकती है। नंदपुर विषय के मुख्यावास की पहचान मध्य प्रदेश के बिलासपुर जिले के दो सलग्न ग्रामो से की जा सकती है (एपि० इ०, XXVII, भाग, VII, जुलाई, 1948, पृ० 289 और आगे)।

वटपुर—मध्य प्रदेश मे कुरहा से लगभग एक मील पूरब मे यह आधुनिक वडुर है (एपि० इ०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935, पृ० 13)।

वटाटवी—आटविक राज्यो के अतर्गत् वटाटवी एव सहलाटवी का वर्णन किया जा सकता है (एपि० इ०, VII, 126; ल्युडर्स की तालिका, न० 1195)।

वटुवारि—स्थूल रूप से इसकी पहचान भूतपूर्व भारतीय रियासत चरखारी मे की जा सकती है (ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, भाग, 23, 1947, पृ० 47)।

वाटोदक—गुप्त संवत् 116 मे अकित कुमारगुप्त एव घटोत्कचगुप्त के तुमैन अभिलेख मे इसका वर्णन है जिसकी पहचान एरण से लगभग 10 मील दक्षिण मे, मध्य प्रदेश के रायसेन जिले मे भिलसा के आधुनिक बदोह नामक एक छोटे गॉव से की जा सकती है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जुलाई, 1941, पृ० 117)।

वेबिस (विदिशा)—प्राचीन काल मे विदिशा एक महत्त्वपूर्ण नगर था जिसे कालिदास ने अपने मेघदूत में अमर बना दिया है। विदिशा[1] के निवासी वैदिक लोग थे इसे वैश्यनगर भी कहा जाता था जो बेसनगर का एक प्राचीन नाम था। रामायण (उत्तरकाण्ड, अध्याय, 121) के अनुसार रामचन्द्र ने शत्रुघ्न

---

[1] मेघदूत, I, 24, 25 एवं 28.

को यह पुर दिया था। गरुडपुराण[1] मे इस नगर को धन एवं सुख-सपन्न बतलाया गया है (सर्वसम्पत्समन्वितम्)। यहाँ पर नाना प्रकार के जनपद (नानाजनपदाकीर्णम्), मणि, (नानारत्नसमाकुलम) सपन्न एवं शोभनीय (शोभाढ्यम्) भव्य इमारते एव प्रासाद थे। यह अनेक धर्मों का केन्द्र था (नानाधर्मसमन्वितम)।

विदिशा या वेदिस (सस्कृत वैदिश, वैदश) भिलसा के 2 मील के भीतर ही मध्यप्रदेश मे बेतवा[3] (बेत्रवती) एव बेस या विदिशा नदी के काँठे मे स्थित बेसनगर का प्राचीन नाम है जो सप्रति खडहर हो चुका है। पुराणो के अनुसार वैदिश विदिशा नदी के तट पर स्थित था जो पारिपात्र पर्वत से निकलती थी।[3] ल्युडर्स की तालिका सख्या, 254, 273, 500, 521-24, 712, 780, 784, 813, 835 एव 885) मे वर्णित विदिशा के प्राचीन नगर की पहचान भूपाल से 26 मील दूर पूर्वोत्तर मे स्थित रायसेन जिले मे भिलसा से की जा सकती है। यह पाटलिपुत्र से 50 योजन[4] की दूरी पर स्थित था।[5]

अशोक के पालि आख्यान के अनुसार पाटलिपुत्र से उज्जयिनी का मार्ग विदिशा नगर से होकर था[6]। यह मानने के लिये अनेक कारण है कि विदिशा अवन्ती के राज्य मे संमिलित था।[7] मार्कण्डेयपुराण मे विदशा का वर्णन अवन्ती के एक अपरान्त पड़ोसी के रूप मे हुआ था। यह निश्चित रूप से ज्ञात है कि शुङ्गवश के संस्थापक पुष्यमित्र का राज्य नर्मदा नदी तक फैला हुआ था एव उसमे विदिशा, पाटलिपुत्र एव अयोध्या समिलित थे।[8] यदि हम अवन्ती को शुङ्ग साम्राज्य मे समिलित मान ले, तब यह मानना पडेगा कि उज्जयिनी के स्थान पर विदशा कुमारामात्य का मुख्यावास बना था।

विदशा पूर्वी मालवा की राजधानी थी।[9] बाण की कादम्बरी के अनुसार

---

[1] सदाशिव सेठ द्वारा प्रकाशित बंबई, संस्करण, अध्याय, 7, श्लोक, 34-35.

[2] मेघदूत, पूर्वमेघ, 25वाँ श्लोक।

[3] लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 3

[4] एक योजनलगभग सात मील।

[5] महाबोधिवंस, 98-99

[6] समन्तपासादिका, पृ० 70, उज्जेनिम गच्छन्तो वेदिसनगरम पत्वा।

[7] लाहा, उज्जयिनी इन एंश्येंट इंडिया, ग्वालियर आर्कयॉलॉजिकल डिपार्टमेंट प्रकाशन, पृ० 4.

[8] रायचौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री, चतुर्थ संस्करण, पृ० 308.

[9] भंडारकर, कार्माइकेल लेक्चर्स, 1921, पृ० 85.

शूद्रक नामक एक महान् पराक्रमी राजा विदिशा पर राज्य करता था जिसकी आज्ञाएँ ससार के सभी राजाओ द्वारा मानी जाती थी। यह शुङ्गवशीय पुष्यमित्र एवं अग्निमित्र की पश्चिमी राजधानी थी।[2] मेघदूत (श्लोक, 25-26) के अनुसार यह दशार्ण[3] देश की राजधानी थी जो जम्बुद्वीप के 16 जनपदो मे से एक था।[1] विन्ध्यपाद के मेघदूत को दशार्ण देश की ओर जाना था जिस दिशा में सुप्रसिद्ध राजधानी विदिशा वेत्रवती के तट पर स्थित थी। महाभारत[4] मे दशार्णों को कुरुक्षेत्र-युद्ध मे पाण्डवों के साथ लडने वाली एक जाति बतलाया गया है जो दशार्ण नदी के क्षेत्र मे रहते थे जिसकी पहचान आधुनिक धसन[5] नदी से की जा सकती है जो भूपाल से निकलकर बुदेलखंड से प्रवाहित होती हुयी बेतवा नदी या बेत्रवती[6] मे मिलती है। दशार्ण नाम के दो देश थे: पश्चिमी दशार्ण (महाभारत, अध्याय, 32) जिसमें पूर्वी मालवा एव भूपाल थे, और पूर्वी दशार्ण (महाभारत अध्याय, 30) जो मध्य प्रदेश मे छत्तीसगढ मडल का एक भाग था (ज० ए० सो० ब०, 1905, पृ० 7, 14)। मार्कण्डेयपुराण मे दशार्ण नदी का उल्लेख है जिसके आधार पर इसके प्रवाह क्षेत्र का नाम दशार्ण पड़ा है।[7] सागर के समीप आधुनिक धसन (जिसे दुशान नदी भी कहा जाता है), जिससे दशार्ण की पहचान की गयी है, बेतवा (वेत्रवती) एव केन नदियो के मध्य बहती है, जो वेत्रवती के आगे यमुना की एक उल्लेखनीय सहायक नदी है। एरियन ने इसे कैनस (Cainas) नदी कहा है। इसी पुराण (57, 19-20) में पारिपात्र पर्वत से निकलने वाली अन्य नदियो के अन्तर्गत् विदिशा एव

[1] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, पृ० 523.

[2] महाभारत, आदिपर्व, CXIII, 4449; वनपर्व, LXIX, 2707-8; उद्योगपर्व, CXC-CXCIII; भीष्मपर्व, IX, 348, 350, 363; तुलनीय, मार्कण्डेय पुराण, 57, 52-55; मेघदूत, I, 24, 25 एवं 28.

[3] महावस्तु, I, 34; ललितविस्तर, लेफमान संस्करण, पृ० 22, सर्वस्मिन् जम्बुद्वीपषोडश जनपदेषु।

[4] कर्णपर्व, अध्याय, 22-3; भीष्मपर्व, अध्याय, 95, 41, 43; द्रोणपर्व, अध्याय, 25, 35.

[5] यह ऋक्षवन्त (ओक्सेंटन Ouxenton) से संबंधित है—लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 108.

[6] लाहा, ट्राइब्स इन एंश्यंट इंडिया, पृ० 375.

[7] तुलनीय, महाभारत, II, 5-10.

बेत्रवती[1] का वर्णन किया है। निश्चय ही विदिशा[2] नदी वेत्रवती के तट पर स्थित विदिशा नगर से सबधित थी जो मिलिन्दपञ्हो[3] के अनुसार हिमालय से निकलने वाली 500 नदियो मे से एक थी। भूपाल से 34 मील एवं साँची से 8 मील पर स्थित मध्य प्रदेश मे रायसेन जिले के अतर्गत् भिलसा में वेत्रवती के तट पर स्थित भैलस्वामी के मंदिर के कारण निश्चय ही भिलसा नगर का नाम पड़ा होगा।[4] पार्जिटर के अनुसार विदिशा उन अनेक लघु राज्यो में से एक था जिनमे यादव लोग विभिक्त थे।[5] विदिशा के पडोस मे एव निश्चय ही कपास एव कपास-उद्योग के लिए प्रसिद्ध आकरावन्ती के अतर्गत् कार्पासीग्राम[6] नामक एक स्थान था (जिसका वर्णन साँची स्तूप I, के प्राकार (Railing) की तीन अभिलिखित वेदिकाओं मे है। अशोक के काल मे यह बौद्ध-धर्म का एव कालातर मे वैष्णव-मत का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया था। बौद्ध-मत मे यह प्रथम बार अशोक के कुमारामात्यत्व के सबध मे महत्त्वपूर्ण बना था। पश्चिमी-तट के पत्तनों एव पाटलिपुत्र तथा प्रतिष्ठान एव श्रावस्ती के सचार-मार्गों पर इसकी केंद्रीय स्थिति के कारण दशार्ण के मुख्य नगर विदिशा का महत्व था।[7] विदिशा (वेदिसनगर या वेस्सनगर) दक्षिणा-पथ पर एक पडाव था।

विदिशा का हाथीदाँत कलाकारी के लिए प्रसिद्ध था[8]। साँची की एक मूर्ति

---

[1] इस नदी का जल पीने की दृष्टि से अच्छा था। इसकी लहरें आनंद से तरगायित रहती थीं जैसा कि इसके कलकल नाद से गुंजरित होता था (मेघदूत V, 26; तुलनीय, जातक, IV, पृ० 388)। यह नदी यमुना में मिलती थी। इसका बहुत प्रयोग होता था। यहाँ पर अवगाहन के पश्चात् स्नानार्थियों द्वारा परित्यक्त बहुत सी दातौने मिलती थीं (जातक, सं० 497) उज्जयिनी एवं इस नदी के बीच निर्बिन्ध्या नदी थी (लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 114; थार्नटन कृत गजेटियर, ग्वालियर, भोपाल; मेघदूत, I, 28-29; तुलनीय, भागवत पुराण IV, 14-15)।

[2] मार्कण्डेय पुराण, LVII, 20

[3] ट्रेंकनर संस्करण, पृ० 114; हिमवन्त पब्बता पंचानदी सतानि सन्दन्ति

[4] एपि० इं०, XXIV, भाग V, जनवरी, 1938, पृ० 231.

[5] एंश्यंट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन, पृ० 273, एवं पा० टि० 7

[6] ल्युडर्स की तालिका, सं० 260, 515; लाहा, उज्जयिनी, पृ० 8

[7] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, पृ० 523

[8] वही, पृ० 632

विदिशा के हाथीदाँत के शिल्पियो की रचना थी।[1] पेरिप्लस मे दोसरेने को हाथीदाँत के लिए विख्यात् बतलाया गया है।[2] यह नगर तीक्ष्ण-धार वाली तलवारो के लिए भी प्रसिद्ध था।[3]

बावरी के सोलह ब्राह्मण शिष्यो ने अन्य स्थानों के साथ विदिशा का भी भ्रमण किया था।[4] स्कन्दपुराण[5] मे विदिशा का उल्लेख एक तीर्थ स्थान के रूप मे हुआ है जहाँ सोमेश्वर की यात्रा के बाद जाना चाहिए।

विदिशा के अट्ठारह दाताओ ने प्रचुर रूप से भिलसा मे बौद्ध-स्तूपो के निर्माण के लिए दान दिया था।[6] भरहुत स्तूप के पहले स्तभ की पूजा-वेदिका से प्रकट होता है कि यह विदिशा की एक महिला, रेवतीमित्र की पत्नी चम्पादेवी द्वारा प्रदत्त था[7]। इसमे विदिशा से प्रदत्त वेणिमित्र की पत्नी वशिष्ठी[8], फगुदेव, अनुराधा[9] आर्यमा[10] एव भूतरक्षित[11] के दानो का उल्लेख प्राप्य है।

भिलसा मे उदयपुर के नीलकण्ठेश्वर मदिर का उल्लेख एक प्रस्तर-पट्ट पर अकित उदयपुर-प्रशस्ति मे है।[12] अशोक की पत्नी देवी द्वारा अपने पुत्र[13] के निवासस्थान के लिए निर्मित वेदिस गिरिमहाविहार, सभवत प्रथम बौद्ध विहार था जिसके बाद भिलसा से 5½ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित साँची के स्तूपो का निर्माण हुआ था। देवी

---

[1] कै० हि० इं०, पृ० 643.

[2] शॉफ, पेरिप्लस ऑव द इरिथ्रियन सी, पृ० 47, 253.

[3] जातक, III, 338, दसण्णकम तिक्खिणधारम असिम्।

[4] सुत्तनिपात, श्लोक, 1006-1013.

[5] वगवासी संस्करण, पृ० 2767-68.

[6] ल्युडर्स की तालिका, उद्धरणों के प्रतिभौगोलिक अनुक्रमणी।

[7] बरुआ ऐंड सिन्हा, भरहुत इंस्क्रिप्शंस, पृ० 3, वेदिसा चापादेवाय (चापदेवाय) रेवतीमितभारियाय, पठमो थभो दानम्।

[8] बरुआ ऐंड सिन्हा, भरहुत इंस्क्रिप्शंस, पृ० 35—वेदिसा वासिठिया वेणिमितभारियाय दानम्।

[9] वही, पृ० 14—वेदिसा फगुदेवस दानम्; वेदिसा अनुराधाय दानम्।

[10] वही, पृ० 17, वेदिसा अयमाय दानम्।

[11] वही, पृ० 20, वेदिसातो भूतरक्खितस दानम्।

[12] एपि० इं०, I, 233.

[13] थूपवंस, पृ० 44.

द्वारा उत्पन्न अशोक का पुत्र महिद इस विहार मे एक मास तक रुका था।[1] वह वहाँ पर अपनी माँ से मिलने आया जिसने अपने प्रियपुत्र का स्वागत किया था और उसे स्वय अपने द्वारा बनाया हुआ भोजन खिलाया था।[2] वेदिस-गिरि से वह सिंहल गया।[3] वेदिस मे हत्थाल्हकाराम[4] नामक एक विहार भी था।

विदिशा अपने स्तूपो के लिए सुविख्यात है, जिसमे (1) भिलसा से 5 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित साँची के स्तूप, (2) साँची से 6 मील दक्षिण-पश्चिम मे सोनारी स्तूप; (3) सोनारी से तीन मील दूर सतधार स्तूप; (4) भिलसा से 6 मील दक्षिण-दक्षिण-पूर्व मे स्थित भोजपुर स्तूप; (5) और भिलसा से 9 मील पूरब-दक्षिण-पूर्व मे स्थित अधेर स्तूप सम्मिलित है।[5] रेवतीमित्र संभवत. विदिशा मे नियुक्त शुङ्ग-मित्र कुल का एक सदस्य था।

भारतीय पुरातत्व-सर्वेक्षण के तत्कालीन महानिदेशक जे० एच० मार्शल को बेसनगर से पाषाण-स्तभ पर अंकित एक अभिलेख उपलब्ध हुआ था। इस अभिलेख मे दिओन के पुत्र, यूनानी राजदूत हैलियोडोरस द्वारा इसके अभिषेक के बारहवे वर्ष मे कृष्ण-वासुदेव के सम्मान मे गरुड-मडित एक स्तभ के निर्माण का उल्लेख है।[6] तक्षशिला-निवासी हेलियोडोरस को यूनानी नरेश अतियाल-सिडास ने कौत्सी-पुत्र भागभद्र की सभा मे भेजा था जो स्पष्टत विदिशा मे राज्य करता था। यद्यपि वह यूनानी था तथापि उसे भागवत कहा गया है जिसने वी० ए० स्मिथ के मतानुसार 32 वर्षो की एक दीर्घ अवधि तक शासन किया था[7]। इस पर स्वय उसने अपने नूतन धर्म की कुछ शिक्षाएँ उत्कीर्ण करवायी थी जिसका वरण सभवत. उसने विदिशा मे किया था। ये शिक्षाएँ स्तभ के दूसरी ओर उत्कीर्ण दो पक्तियो मे सन्निहित है। पुराणो मे वर्णित भागवत भागभद्र का एक भ्रष्ट रूप हो सकता है जो विदिशा मे युवराज की हैसियत से राज्य

---

[1] दीप, VI, 15; XII, 14; 35; समन्तपासादिका, I, 70, 71; तुलनीय, महावंस कॉमेंट्री, पृ० 321.

[2] महावंस, अध्याय, 13 श्लोक, 6-11, दीप, अध्याय 6, 15-17; अध्याय, 12, श्लोक, 14.

[3] महाबोधिवंस, 116; थूपवस, 43

[4] वही, पृ० 169.

[5] कनिंघम, भिलसा टोप्स, पृ० 7

[6] आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट I, 1913-1914, भाग, II, पृ० 190.

[7] अर्ली हिस्ट्री ऑव इंडिया, चतुर्थ संस्करण, पृ० 214.

करने वाला कोई शुङ्ग राजकुमार हो सकता है जैसे कालिदास के मालविकाग्निमित्र के अनुसार उसका एक पूर्वज अग्निमित्र अपने पिता पुष्यमित्र के शासनकाल मे था। बी० ए० स्मिथ ने भागवत जो कि भागभद्र है, की तिथि 108 ई० पू० बतलाया है।[1] जे० एच० मार्शल जिन्होने इस प्राचीन स्थल का निरीक्षण किया था, का ध्यान प्रमुख स्थल से थोडा पूर्वोत्तर मे और बेतवा नदी की एक शाखा द्वारा विभक्त एक विशाल टीले के समीप स्थित एक प्रस्तर स्तभ की ओर आकर्षित किया गया था। इस स्तभ का नाल एकाश्म है जिसका आधार अष्ठकोणीय, मध्य षोडशकोणीय एव शीर्ष बत्तीस कोणीय है जिसमे एक माला ऊपरी एव मध्यवर्ती भागो को विभक्त करती है। इसका शीर्ष पर्सीपोलिस की घटाकार शैली का है जिसको एक विशाल शीर्ष-फलक मडित करता है जो अद्भुत अपरिचित आकार वाले एक ताल-पत्र के अलकरण से सुशोभित है। तीर्थयात्री इस स्तभ की पूजा पीढी दर पीढी मे करते थे। मार्शल का विचार है कि यह स्तभ गुप्त सवत् से कई शताब्दियो अधिक प्राचीन था।[2] इस अभिलेख मे वर्णित राजा भागभद्र काशी की एक महिला का पुत्र था (काशीपुत्रस)। फ्लीट ने काशीपुत्रस का अर्थ काशी जनो की किसी महिला का पुत्र अथवा काशी नरेश की पुत्री का पुत्र माना है।[3]

विडूडभ[4] से भयान्वित शाक्यो ने विदिशा मे शरण ली थी। जब अशोक अवन्ती के मौर्य उपराजा के रूप मे कार्यभार सँभालने उज्जयिनी जा रहा था, तब वह विदिशा नगर मे रुका था।[5] यहाँ पर उसने विदिशा के देव नामक एक श्रेष्ठिन् की तरुणी कन्या[6] देवी से विवाह किया था जो महान् व्यक्तियो के लक्षणों से युक्त थी। महाबोधिवस (पृ० 98, 110) के अनुसार उसे वेदिस-महादेवी के रूप मे सम्मानित किया जाता था एव इसे शाक्य राजकुमारी बतलाया जाता

---

[1] ज० बां० ब्रां० रा० ए० सो० भाग, XXIII, पृ० 104-106.

[2] ज० रा० ए० सो०, पृ० 1053-56.

[3] ज० रा० ए० सो०, 1910, पृ० 141-142

[4] महाबोधिवंस, पृ० 98

[5] संमतपासादिका, I, पृ० 70.

[6] महावंस कामेंटरी I, पृ० 324—वेदिसगिरिनगरे देवनामकस्स सेठ्ठिस घरे निवासम उपगन्त्वा तस्स सेठ्ठिस्स धितरम लक्खणसम्पन्नम यौब्बनप्पत्तम वेदिसदेवीम नाम कुमारिकम दिस्वा ताय पाटिबद्धचित्तों मातापितुनम कथापेत्वा तम तेहि दिन्नम पतिलभित्वा ताय साधिम्र समवासम कप्पेसि।

था। देवी उज्जमिनी ले जायी गई जहाँ उसने महिद नामक एक पुत्र एवं तदनंतर दो वर्षों के बाद संघमित्ता[1] नामक एक पुत्री को जन्म दिया था। देवी विदिशा मे रुक गयी थी किंतु उसके बच्चे अपने पिता के साथ पाटलिपुत्र आये जब उसने पाटलिपुत्र पर अधिकार कर लिया। सघमित्ता का विवाह अशोक के भानजे (भागिनेय्यो)[2] अग्निब्रह्मा के साथ हुआ था और सुमन नामक उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ था। डा० बरुआ ने ठीक ही बतलाया है कि इस विषय में संस्कृत आख्यान एव अशोक के अभिलेख मौन है।[3] अशोक के राज्याभिषेक के समय वेदिसमहादेवी उसके बगल में थी।[4] डॉ० बरुआ का विचार है कि देवी के विदिशा निवास से इस विचार को बल मिलता है कि निजी पत्नियाँ विभिन्न नगरो[5] मे अपने अलग पारिवारक सस्थान रख सकती थी।

बेसनगर अभिलेख से तक्षशिला के यवन् राजा एव विदिशा नरेश मे कूट-नीतिज्ञ सबधो की पुष्टि होती है।[6] रघुवश (XV, 36) मे कहा गया है कि शत्रुघातिन एव सुबाहु नामक शत्रुघ्न के दो पुत्र मथुरा एवं विदिशा के अधिपति नियुक्त किये गये थे। विदिशा-नरेश के साथ वैशाली के राजा करधम के पुत्र अवीक्षित की प्रगाढ शत्रुता थी और अवीक्षित बदी बनाया गया था। करधम ने अपने पुत्र को छुडाया था। पार्जिटर की धारणा है कि मार्कण्डेय पुराण के अनुसार (121-131) विदिशा के एक स्वयवर से झगडे का सूत्रपात हुआ था।[7] प्राय: करधम के काल मे यादव शाखा के राजा वैशाली-नरेश परावृत ने अपने सबसे छोटे दो बच्चो को विदिशा भेज दिया था, विदेह नही।[8]

[1] महाबोधिवंस, 98-99; थूपवंस, 43.

[2] महावंस, V, पृ० 169.

[3] अशोक ऐंड हिज इंस्क्रिप्शंस, पृ० 51-52

[4] वही, पृ० 53

[5] वही, पृ० 53.

[6] कैंब्रिज हिस्ट्री ऑव इंडिया, पृ० 558

[7] ऐंश्येंट इंडियन हिस्टॉरिकल ट्रेडिशन, पृ० 268, पा० टि० 4.

[8] वही, पृ० 268-69; मार्कण्डेयपुराण, सर्ग, CXXII, श्लोक, 20-21, में इस तथ्य का और अधिक स्पष्टीकरण किया गया है। यह बतलाया गया है कि जब वेदिश-राजा विशाल की पुत्री वैशालिनी अपने स्वयंवर में उपयुक्त क्षण की प्रतीक्षा कर रही थी, करंधम के पुत्र अवीक्षित ने उसका अपहरण कर लिया। इसी पुराण में और आगे बतलाया गया है कि अवीक्षित बंदी बनाया गया था। राजा विशाल के साथ सभी राजाओं ने उसे बंदी बनाकर प्रसन्नतापूर्वक वैदिशनगर में प्रवेश किया।

साहित्य एव अभिलेखो मे शुङ्ग लोग विदिशा के राज्य से विशेष रूप से संबद्ध हैं।[1] मालविकाग्निमित्र मे अपने पिता पुष्यमित्र[2] के उपराजा एव विदिशा के राजा अग्निमित्र का विदर्भ (बरार) की राजकुमारी मालविका के प्रति प्रेम का उल्लेख है जो उसकी राज-सभा मे प्रच्छन्न रूप से रहती थी। 170 ई०पू० मे विदिशा एवं विदर्भ मे एक युद्ध हुआ था जिसमे विदिशा की विजय हुयी थी। यज्ञसेन के एक चचेरे भाई एवं अग्निमित्र के समर्थक माधवसेन को बंदी बनाया गया था और उसे यज्ञसेन के प्रांतपाल के यहाँ बदी रखा गया जबकि वह (माधवसेन) विदिशा जा रहा था। इससे शुङ्ग-नरेश अग्निमित्र ने वीरसेन को विदर्भ पर आक्रमण करने के लिए कहा। यज्ञसेन पराजित हुआ एव विदर्भ का राज्य उसके दो चचेरे भाइयों मे बाँट लिया गया।[3] विदिशा मे अपने पिता के उपराजा के रूप मे शासन करने के अनतर अग्निमित्र ने उसके उत्तराधिकारी के रूप मे आठ वर्षों तक राज्य किया था।[4] विदिशा-नरेश काशीपुत्र (काशी की एक राजकुमारी का पुत्र था)।[5] शुङ्गो ने विदिशा मे मूलरूप से मौर्यों के सामन्तों के रूप मे राज्य किया था।[6] पुष्यमित्र एव अग्निमित्र दोनो ही विदिशा के थे।

पुराणो मे एक अनुश्रुति मिलती है जिसमे शुग-सत्ता की समाप्ति के पश्चात् विदिशा मे शिशुनन्दि नामक व्यक्ति के शासन का प्रारभ बतलाया गया है। उनसे हमे यह ज्ञात होता है शुङ्गो की अवशिष्ट सत्ता विदिशा मे काण्वो की सत्ता के साथ-साथ चलती रही। साधारणतया यह माना जाता है कि पहले विदिशा एव तदनतर उज्जयिनी चन्द्रगुप्त द्वितीय का सरकारी मुख्यावास था।[7]

प्राचीन विदिशा मे मौर्यो के उत्कर्ष के थोड़ा पहले से कम से कम गुप्त सत्ता के प्रारभ तक—कोई 600 वर्षों से अधिक—ताम्र-कार्षापण परिनिष्ठित सिक्का था।[8] बेसनगर (प्राचीन विदिशा) से पचाहत मुद्राएँ प्राप्त हुयी थी। इन मुद्राओं

---

1 ज० रा० ए० सो० 1909, पृ० 1053-56.

2 मालविकाग्निमित्र, पंचम अंक, 20

3 लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 50.

4 कै० हि० इं०, पृ० 520.

5 वही, पृ० 522.

6 वही, पृ० 522

7 रायचौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री, चतुर्थ संस्करण, पृ० 468.

8 भंडारकर, कार्माइकेल लेक्चर्स, 1921, पृ० 88.

पर उनका निजी चिह्न अंकित होता था। उनके चौथी शताब्दी ई० तक के स्तर थे।[1] बेसनगर से उपलब्ध कार्षापण नदी तट पर टंकित प्रतीत होता है। उनके ऊपर एक वक्र चिह्न होता था जिससे नदी का तट संकेतित होता था।[2] डा० भंडारकर का अभिमत है कि ताँबेके मूल्य की वृद्धि के कारण प्राचीन विदिशा नगर के कुछ युगो में ताम्र कार्षापणो का वजन घटा दिया गया था।[3]

वेदिशगिरि—यह एक पर्वत था जिस पर महिद की माता ने वेदिशगिरि-महाविहार का निर्माण कराया था। समन्तपासादिका (पृ० 70) के अनुसार महिंद यहाँ रुके थे और वह यही से तवपण्णी गये थे।

वेत्रवती (पालि, वेत्तवती)—इस नदी का वर्णन मार्कण्डेयपुराण (पृ० 20, 57) एव मिलिन्दपञ्ह (पृ० 114) मे भी हुआ है। निस्सदेह यह कालिदास के मेघदूत मे वर्णित (पूर्वमेघ, श्लोक, 25) वेत्रवती के समान है। यह आधुनिक वेतवा है जो भूपाल के निकट से नि मृत होती है और यमुना मे मिलती है। पुराणो के अनुसार यह पारियात्र पर्वत से निकलती है। बाण ने अपनी कादम्बरी मे बतलाया है कि यह नदी विदिशा से होकर बहती है (एम० आर० काले द्वारा सपादित, बबई, पृ० 14)। साँची से आठ मील एव भूपाल से 34 मील दूर मध्य प्रदेश मे रायसेन के समीप भिलसा मे इसके तट पर भैलस्वामी का मदिर स्थित था। इससे ही इस नगर का नाम भिलसा पडा होगा।[4] वेत्रवती नदी के तट पर वेत्रवती नगर स्थित था।[5] वेत्रवती नगर के निकट ही एक ब्राह्मण रहता था जो अपने वंश पर अत्याधिक गर्व करता था किंतु उसका दर्प चूर्ण कर दिया गया था।[6]

वेयघन—यह अञ्जनवती से तीन मील दक्षिण मे वैगाँव है।[7]

विदर्भ—यह आधुनिक बरार है। दण्डिन् के अपने काव्यादर्श (I, 40) मे विदर्भ के निवासियो का उल्लेख किया है। पुराणो[8] के अनुसार यहाँ के लोग

---

[1] वही, पृ० 185.

[2] वही, पृ० 100-01.

[3] वही, पृ० 161.

[4] एपि० इं०, XXIV, भाग, V, जनवरी, 1938, पृ० 231.

[5] जातक, IV, पृ० 388.

[6] जातक, IV, पृ० 388 और आगे।

[7] एपि० इं०, XXIII, भाग, I, जनवरी, 1935.

[8] मत्स्यपुराण, 114-46-48; वायु, 45, 126, मार्कण्डेय, 57, 45-48.

पुलिन्दों, दण्डकों, विन्ध्यों एवं अन्य जनों के साथ दक्षिणापथवासी थे। पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य (I, 4 1, पृ० 634) में वैदर्भ का वर्णन किया है। योगिनी-तंत्र में (2.4) भी इसका एक उल्लेख है। भागवतपुराण (IV, 28, 28; IX, 20, 34; X. 52, 21, 41, X, 84, 55) में एक देश के रूप में इसका वर्णन हुआ है। बृहत्संहिता (XIV·8) में भी इसका वर्णन है। महाभारत के अनुसार विदर्भ नल की रानी दमयती का राज्य था। विदर्भ देश मे भोज राजवश का एक रत्न पुण्यवर्मन रहता था जो साक्षात् गुण का अशावतार था। वह मनसा-कायसा शक्तिशाली, सच्चा, आत्म सयमी, शानदार, उन्नत एवं पुरुषार्थी था। वह लोगो को अनुशासित बनाता था और श्रेष्ठ जनो को ही अपना आदर्श बनाता था। वह बुद्धिमानो का संरक्षक, भृत्यो को प्रभावित, अपने सबधियो को सौख्य एव शत्रुओं को सताप देता था। वह तर्कहीन वार्ताओ के प्रति वधिर था एव उसकी गुण-पिपासा अशमनीय थी। वह आचारपरक एव आर्थिक विषयो का गभीर आलोचक था। वह सजगतापूर्वक सभी अधिकारियो पर नियत्रण रखता था एव विवेकशील व्यक्तियो को दान एव सम्मान देकर प्रोत्साहन देता था। वह मनुष्य के जीवन को योग्य कर्मो से सपन्न बनाता था।[1] कालिदास ने अपने मालविकाग्निमित्रम् (V अक, 20) मे हमे यह बतलाया है कि शुङ्गवंश की स्थापना विदर्भ मे एक नये राज्य की स्थापना के साथ हुयी थी। अग्निमित्र के मंत्री ने उक्त राज्य को अचिराधिष्ठित एवं इसकी समानता एक नये सरोपित वृक्ष से की है (नव सरोपणशिथिलस्तरु)। विदर्भ के राजा को मौर्य-मत्री का सबधी एव शुङ्गो का सहजशत्रु (प्रकृत्यमित्र) बतलाया गया है।[2] बृहद्रथ मौर्य के राज्यकाल मे मगध-साम्राज्य में दो दल थे जिनमे एक का नेता राजा का मत्री एव दूसरे का उसका सेनापति था। मत्री द्वारा समर्थित यज्ञसेन को विदर्भ का राज्यपाल नियुक्त किया गया था। जब सेनापति ने राज-सिंहासन का अपहरण कर लिया तब उसने (यज्ञसेन) अपनी स्वतत्रता घोषित कर दी एव अपहर्त्ता कुल के साथ सघर्ष प्रारभ किया। यज्ञसेन के चचेरे भाई एव अग्निमित्र के समर्थक कुमार माधवसेन को, जब वह विदिशा जा रहा था, यज्ञसेन के प्रातपाल ने बदी बनाकर कैद कर लिया। इससे शुग-नरेश अग्निमित्र ने वीरसेन को विदर्भ पर आक्रमण करने को कहा। यज्ञसेन पराजित हुआ

---

[1] दशकुमारचरितम, पृ० 180

[2] हे० चं०, रायचौधरी, पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव ऐंश्येंट इंडिया, चतुर्थ संस्करण, पृ० 309.

और विदर्भ-राज्य को दोनो चचेरे[1] भाइयो मे बाँट दिया गया और वरदा नदी इन दोनों राज्यों की सीमा बनी। नासिक-गुहालेख के अनुसार रानी गौतमी बलश्री के पुत्र ने विदर्भ पर विजय प्राप्त की थी (रायचौधरी, पो० हि० ऐं० इ०, चतुर्थ संस्करण, 309 और आगे; बि० च० लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, I, पृ० 50)। अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 49, 100, 123, 174 एव 389

विलापद्रक—इसकी पहचान शेरगढ से लगभग 11 मील दक्षिण दक्षिण-पूर्व में स्थित बिलंडि से की जा सकती है। कुछ लोगों ने इसे शेरगढ से लगभग 25 मील पूरब मे स्थित बिलवारो नामक गाँव से समीकृत किया है (एपि० इं०, XXIII, भाग, IV, अक्टूबर, 1935, पृ० 135)।

विन्ध्यवल्ली—यह बिझोली का प्राचीन नाम है। लोकप्रिय रूप से इसे बिजोलिया या बिजोलिआ कहा जाता है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, 101)।

वोढग्राम—(एपि० इ०, X, 78-79)—यह दक्षिण राजस्थान के सत्यपुर-मण्डल में है और अतिसभवत. इसकी पहचान बोदन मे की जा सकती है।

व्याघ्रेरक—इसकी पहचान अजमेर से लगभग 47 मील दक्षिण-पूर्व मे आधुनिक बाघेर से की जा सकती है (एपि० इ०, XXVI, भाग, III, जलाई, 1941)।

वडगाँव—यह चाँदा जिले की वरोरा तहसील मे है जहाँ से वाकाटक प्रवरसेन द्वितीय के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे (एपि० इ०, XXVII, भाग, II, पृ० 74)।

यौधेय—यौधेयगण एक गणतत्रात्मक जन थे जो प्रसिद्ध व्याकरणी पाणिनि के काल मे भी थे (पाणिनि का सूत्र, 5 3. 116-117)। उनका जातीय संघटन बाद मे चौथी शताब्दी ई० तक यथावत बना रहा जबकि समुद्रगुप्त के इलाहाबाद स्तंभ-लेख मे मालवो, अर्जुनायनो, मद्रकों, आभीरो एवं अन्य गणतत्रात्मक प्रजातियो के समकक्ष उनका वर्णन हुआ है। छठी शती ई० मे भी इनका वर्णन इसी प्रकार से मिलता है जैसा कि हमे वराहमिहिर की बृहत्संहिता (XIV, 28) से ज्ञात होता है।

इस जन का सभवत. सर्वप्राचीन उल्लेख पाणिनि ने किया है। पाणिनि के न प्राच्य भर्गादि यौधेयादिभ्य:, (IV, 1, 178) मे यौधेयादि शब्द मे दो कबीले

---

[1] **मालविकाग्निमित्रम, एस० एस० अय्यर द्वारा संपादित, पृ० 14 और आगे।**

यौधेय एवं त्रिगर्त्त संमिलित है। सूत्रों मे अन्यत्र कही (V, 3.117) त्रिगर्त्तों समेत यौधेयो को एक आयुधजीवीसंघ कहा गया है जो प्रमुखरूप से शस्त्रजीवी एक वीर जाति थी। इस कबीले की ऐतिहासिक परंपरा और अधिक प्राचीन है। पुराणो में[1] यौधेयों को उशीनर से अवतरित बतलाया गया है। हरिवंश मे भी (हरिवंश, अध्याय, 32, तुलनीय, पार्जिटर मार्कण्डेयपुराण, पृ० 380) यौथयो को उशीनरो से सबधित बतलाया गया है। पार्जिटर का विचार है कि राजा उशीनर ने पजाब की पूर्वी सीमा पर यौधेयो, अंबष्ठो, नवराष्ट्रो के पृथक राज्यो एव कृमिल नगर की स्थापना की थी और उसके प्रसिद्ध पुत्र शिवि औशीनर ने शिवियो को शिवपुर मे उत्पन्न किया था (ऐं० इ० हि० ट्रे०, पृ० 264)। त्रिगर्त्तों, अम्बष्ठों एव शिवियों के साथ यौधेयो के सबध से पजाब में उनके सन्निवेश की पुष्टि होती है। महाभारत मे बतलाया गया है कि (द्रोणपर्व, अध्याय, 18, 16; कर्णपर्व) अध्याय, 5, 48) अर्जुन ने मालवो एव त्रिगर्तों समेत यौधेयो को पराजित किया था। सभापर्व (अध्याय, 52, 14-15) मे शिवियों, त्रिगर्तों एव अबष्ठों के साथ उन्हें एकत्रित होकर युधिष्ठिर के प्रति सम्मान निवेदित करते हुये बतलाया गया है। महाभारत मे अन्यत्र कही (द्रोणपर्व, अध्याय, 159, 5) इस कबीले का वर्णन अद्रिजो (यूनानियों के अद्रैस्टाई ?), मद्रको एव मालवों के साथ किया गया है (यौधेयानाद्रिजान राजन मद्रकान मालवानपि)।

बृहत्संहिता मे यौधेयों को आर्जुनायनो के साथ भारत के उत्तराखण्ड मे स्थित बतलाया गया है। वे टॉलेमी द्वारा वर्णित पजाब मे निवास करने वाली पेंडनोई या पाण्डव जाति से सबधित रहे होंगे (इंडियन एटिक्वेरी, XIII, 331, 349)। महाभारत मे यौधेय युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम प्रतीत होता है (आदिपर्व, अध्याय, 95, 76)[2]।

यौधेय जाति की मुद्राओ के साक्ष्य के आधार पर कनिघम ने[3] यौधेयों को जोहिया राजपूतों एव उनके देश को मुल्तान के परिवर्ती जिले जोहियाबार (यौधेयवर) से समीकृत किया है।[4] उनके अनुसार जोहिया तीन जातियो मे विभक्त

[1] ब्रह्माण्डपुराण, III, अध्याय, 74; वायु पुराण, अध्याय, 99; ब्रह्मपुराण, अध्याय, 13; मत्स्यपुराण, अध्याय, 48; विष्णुपुराण, अध्याय, 17 आदि।

[2] रायचौधरी, पो० हि० ऐ० इं०, चतुर्थ संस्करण, पृ० 457.

[3] ऐ० ज्यॉ० इं०, पृ० 281-282.

[4] अलन, क्वायंस ऑव इंडिया, पृ० cli,

है और वह अपने इस समीकरण का एक सबल प्रमाण यौधेयजाति की मुद्राओं में प्राप्त करते हैं जिनमे तीन विभिन्न जातियो के अस्तित्व का परिचय मिलता है।

रुद्रदामन के जूनागढ़-शिलालेख[1] मे यौधेयो का भी वर्णन है जहाँ शक-राजा ने यौधेयो का उन्मूलन कर देने का दभ भरा है। उनके विषय मे हमे बिजयगढ़ शिलालेख मे ज्ञात होता है (का० इं० इं०, जिल्द, III, पृ० 250-51) कि इन्होंने भरतपुर के समीप बिजयगढ़ क्षेत्र पर अधिकार कर लिया था।[2] इससे सभवत: यह प्रकट होता है कि इस शक्तिशाली कबीले का अधिकार सुदूर दक्षिण तक था, अन्यथा शक-क्षत्रपों से इनका सघर्ष सभव न होता। किंतु शक-आक्रमण के प्रवाह मे यह गणतत्रात्मक कबीला नही बह सका जो कम से कम समुद्रगुप्त के काल तक अस्तित्वशील रहा। समुद्रगुप्त के इलाहाबाद-स्तभलेख मे आर्यावर्त्त के पश्चिमी एव दक्षिणी-पश्चिमी सीमात पर स्थित जातीय राज्यो की सूची मे यौधेय भी समिल्लित है जो समुद्रगुप्त को आदर करते थे।[3] कुछ लोगो के अनुसार, यौधेय लोग उस क्षेत्र मे रहते थे जिसकी पहचान मोटे तौर पर पूर्वी पजाब से की जाती थी।[4] अधिक विवरण के लिए द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, इडोलॉजिकल स्टडीज़, भाग, I, 56 और आगे।

येक्केरि—यह गाँव बेलगाँव जिले के परासगढ तालुक के मुख्य नगर मौन्दत्ति से लगभग चार मील उत्तर एव पूरब मे स्थित है (एपि० इ०, V, पृ० 6)।

---

[1] एपि० इं० भाग, VIII, पृ० 36 और आगे।

[2] पुरालिपि की दृष्टि से यह अभिलेख पुराना है। इसकी लिपि तथाकथित इंडो-शक प्रकार की है। इस अभिलेख में उल्लिखत यौधेय कबीले के नेता को 'महाराज' एवं 'महासेनापति' की उपाधि दी गयी है। तुलनीय, ज० रा० ए० सो०, 1897, 30

[3] तुलनीय, रायचौधरी, पो० हि० ऐं० इं०, चतुर्थ संस्करण, पृ० 457.

[4] मोतीचन्द्र, ज्यॉग्रेफ़िक ऐंड इकॉनॉमिक स्टडीज़ इन द महाभारत, पृ० 94.

VI

परिशिष्ट

●

* प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल (परिशिष्ट)

ले० · डॉ० बि० च० लाहा

अनुवर्ती पृष्ठो मे विविध साधनों मे उपलब्ध अतिरिक्त भौगोलिक सामग्री को क्रमबद्ध एव वर्णक्रमानुसार विभिन्न क्षेत्रो के अनर्गत् जिनसे वे सबधित है, व्यवस्थित करके सकलित करने का प्रयास किया गया है। वे पूर्णत· सप्रमाणित है और उन्हे सोसायटी डी पेरिस से 1954 मे प्रकाशित मेरी पुस्तक, 'हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रेफी ऑव ऐश्येट इडिया' का परिशिष्ट मानना चाहिए। हमारा विश्वास है कि इस पत्रक मे समाविष्ट अतिरिक्त सामग्री प्राचीन भारत मे अभिरुचि रखने वाले भूगोलवेत्ताओ एव इतिहासकारो के लिए अतीव सहायक होगी। प्राचीन यूनानियो के भारत विषयक विवरण बहुत मूल्यवान है। हमने इस विषय का विशद् विवेचन अपनी नवीन पुस्तक 'इडोलॉजिकल स्टडीज' भाग, IV, अध्याय, I) मे किया है।

उत्तरी भारत

अचिरवती—जैन धर्म ग्रथ, थानङग (5 470) मे इस नदी को जैन आवी या आदी कहा गया है। यह एरावे, अचिरावती या अजिरवती ही प्रतीत होती है। हमने इस नदी का विशद विवरण पी० के० गोड कम्मेमोरेशन वाल्यूम, पृ० 233 और आगे मे किया है। मेरी पुस्तक इडोलोजिकल स्टडीज, भाग, IV, अध्याय, IX, भी द्रष्टव्य है।

अद्विस्तान—यह काश्मीर की राजधानी है जिसे श्रीनगर[1] से समीकृत किया जाता है।

*** यह अंश जर्नल ऑव इंडियन हिस्ट्री, जिल्द XLI भाग, I, अप्रैल, 1963 क्रम सं०. 121, से पुनर्मुद्रित है।**

[1] लाहा, अलबिरुनीज नॉलेज ऑव इंडियन ज्यॉग्रेफी, पृ० 10.

अहिच्छत्र—अ० घोष एवं के० सी० पाणिग्रही कृत 'पॉटरी ऑव अहिच्छत्र, डिस्ट्रिक्ट बरेली, उ० प्र०; आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव इंडिया का मुख पत्र ऐंश्येंट इंडिया, न० 1, जनवरी, 1946, पृ० 37 और आगे; और वा० श० अग्रवाल कृत टेराकोटा फिगरिंस ऑव अहिच्छत्र, डिस्ट्रिक्ट बरेली, यू० पी०, आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव इंडिया का मुख पत्र ऐंश्येट इंडिया, न० 4, जुलाई, 1947, जनवरी, 1948, पृ० 104 और आगे भी द्रष्टव्य है।

ऐरावती—कुछ लोगो ने इसे कबिस्थोली (कपिस्थल) राज्य से प्रवाहित होने वाली रावी नदी से (एरिअन की हाइड्राओटीस) समीकृत किया है। एरिअन एव डायोडोरस को विज्ञात हाइफेसिस, प्लिनी एव कर्टिअस की हाइपेसिस, स्ट्रैबो, की हाइपैनिस तथा अन्य क्लासिकल लेखको की बिपासिस (संस्कृत, विपाशा) को आत्मसात करके केकियन (उत्तर पजाब के केकय देश) देश से निकलकर अस्ट्रिबाई तथा सरगीज देशो से प्रवाहित होती हुई यह अकेसिनीज (आधुनिक चेनाब) नदी मे गिरती थी।[2]

अवकस्थली—जैन निशीथचूर्णी, II, पृ० 23 के अनुसार यह मथुरा मे थी।

अङ्गद पुर—कालिदास ने परोक्षत अपने रघुवश (XV, 90) मे उसका उल्लेख किया है।

अरवाल—यह काश्मीर-गन्धार मे स्थित एक झील है।[3]

अरिष्टपुर (अरिट्ठपुर)—जैन पण्हा-वागरनैम (4 पृ० 88) की टीका मे वर्णित यह एक नगर है।

अष्टावक्र-आश्रम[4]—यह आश्रम हरिद्वार से चार मील पहले स्थित था। कुछ लोगो की धारणा है कि यह गढवाल मे श्रीनगर के समीप पौडी मे स्थित था।

अत्रि-आश्रम—रामायण (II, 117 5) मे इसका वर्णन है। यह आश्रम दक्षिण भारत मे था। यहाँ पर राम, लक्ष्मण एव सीता आय थे जबकि अत्रि ऋषि अनुसूया के साथ यहाँ रहते थे। वहाँ पर अनेक तपस्वी अध्यात्मिक तपश्चर्या मे लीन रहते थे।

अविमुक्त—यह वाराणसी मे एक सुप्रसिद्ध तीर्थस्थान था।[5]

---

[2] रामायण, II, 68, 19-22; VII, अध्याय, 113 और 114.

[3] समन्तपासादिका, पा० टे० सो०, I, 65.

[4] महाभारत, अनुशासनपर्व, 25.41.

[5] एपि० इं०, XXXII, भाग, VI, अप्रैल, 1958.

आदित्यतीर्थ—यह सरस्वती नदी के तट पर स्थित था।[6]

आलवी—यहाँ पर जैन धर्म के प्रवर्त्तक महावीर आये थे।

आमलकप्प—यहाँ पर महावीर आये थे। इसकी पहचान अल्लकप्प से की जाती है जो वेठदीप के समीप था। बील (सी-यू-की) के अनुसार दोण नामक ब्राह्मण का जन्मस्थान वेठदीप शाहाबाद जिले में मसार से वैशाली जाने वाले मार्ग पर स्थित बतलाया जाता है।[7]

आपया—यह कुरुक्षेत्र की सात या नौ पवित्र नदियो मे से एक है।[8] आपया दृषद्वती एव सरस्वती नदियो के साथ कुरुक्षेत्र की सीमाओं मे प्रवाहित होने वाली नदी थी।[9] ऋग्वेद (III, 23 4) मे इस नदी का वर्णन केवल एक बार हुआ है। पिशेल ने इस नदी को कुरुक्षेत्र मे बतलाया है। महाभारत मे इस नदी का वर्णन आपगा के नाम से हुआ है (वनपर्व, LXXXIII, 6038-40, कनिंघम, आर्क० सर्वे० इ०, रि०, XIV, 88; पार्जिटर द्वारा अनूदित मार्कण्डेय पुराण, पृ० 293)। महाभारत[10] के अनुसार सिद्धात्माएँ इस पवित्र नदी का प्रयोग करती थीं। लुडविग (ऋग्वेद का अनुवाद, 3 200) इसे आपगा से समीकृत करने के पक्ष मे है किंतु त्सिमर ने इसे ठीक ही सरस्वती के समीप स्थित बतलाया है।[11]

आर्जीका—(अर्जीकीय)—हिलेब्रान्त के अनुसार यह कश्मीर मे या उसके समीप स्थित एक देश था।[12] कुछ लोग आर्जीकीया को एक नदी का नाम मानते हैं। त्सिमर नदी की स्थिति नही बतलाते और पिशेल ने इसके समीकरण की सभावना अस्वीकार की है। हिलेब्रान्त इसे ऊपरी सिन्धु मानते है।

आत्रेयी—आत्रेयी नदी दिनाजपुर जिले से होकर प्रवाहित होती है। यह तिस्ता नदी की एक शाखा है। उत्तर से बहने वाली लघु यमुना और यह नदी

---

[6] महाभारत, शल्यपर्व, 49 17.

[7] धम्मपद कामेंटरी, हार्वर्ड ओरियंटल सीरीज, 28, पृ० 247; लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० 25; न० ला० दे, ज्यॉग्रेफिकल डिक्शनरी, पृ० 30.

[8] महाभारत, वनपर्व, 83, 68; वामनपुराण, 34. 7.

[9] महाभारत, III, 83, 68; पिशेल, वेदिशे स्टूडियेन, 2 218.

[10] वनपर्व, 88, श्लोक, 68;—आपगा नाम विख्याता नदी सिद्धनिषेविता।

[11] वेदिक इंडेक्स, I, पृ० 58.

[12] वेदिक इंडेक्स, I, 62-63; वेदिशे माइथॉलोजी, I, पृ० 126-137.

राजशाही जिले (बगला देश) मे परस्पर मिलती है। इस संयुक्त प्रवाह में दो छोटी उपनदियाँ मिलती है, एक दाईं ओर से और दूसरी बाँई ओर से। यहाँ से नतोर के पूर्व मे यह दो शाखाओ में विभक्त हो जाती है।[13]

बभ्रुतीर्थ—यह उस स्थान पर स्थित है जहाँ माही नदी समुद्र मे मिलती है।[14]

बदरिकाश्रम—यह आधुनिक बद्रीनाथ है जो श्रीनगर के 55 मील पूर्वोत्तर मे परगनामहल्ला पैनखण्डा मे स्थित एक गाँव है।[15] आनदभट्ट के बल्लालचरित (II 7) के अनुसार यह आश्रम गढ़वाल मे केदार के निकट गगातट पर स्थित देवदारुवन या दारुवन मे स्थित है।[16]

बाल्हीक—अथर्ववेद (V, 22 5 7 9) मे वर्णित यह एक कबीले का नाम है। बाल्हीक एक उत्तरी जन थे। त्सिमर के अनुसार इस मामले मे ईरानी प्रभाव का अनुमान नही करना चाहिए।[17]

बल्ख—(फो-हो)[18]—यह देश कुदुज़ के निकट पश्चिम या उत्तर-पश्चिम मे स्थित था। यह प्राकृतिक उत्पादनो मे सपन्न था। यहाँ पर सौ से अधिक विहार थे जिनमे 3,000 से अधिक हीनयान सप्रदाय के भिक्षु थे। राजधानी के बाहर दक्षिण-पश्चिम की ओर एक नया विहार था जो हिन्दुकुश के उत्तर मे स्थित अकेला बौद्ध सस्थान था जहाँ पर धर्म के भाष्यकारो की अविच्छिन्न परपरा थी।[19] यह अपने भव्य भवन के लिए उल्लेखनीय था। हीनयान अभिधम्म मे निष्णात् प्रज्ञाकार नामक एक भिक्षु इस विहार मे रहता था।[20]

---

[13] लाहा, रिवर्स ऑव इंडिया, पृ० 28.

[14] स्कन्दपुराण, 1, 2, 13, 107.

[15] एपि० इं०, XXXI, भाग, VI, अप्रैल, 1936.

[16] रामायण, किष्किन्ध्याकाण्ड, अध्याय, 43; कूर्मपुराण, II, अध्याय, 37-38; लाहा, अर्ली इंडियन मानेस्टरीज, द इंडियन इंस्टीट्यूट ऑव वर्ल्ड कल्चर, ट्रांजैक्सशन नं० 29, पृ० 5.

[17] आल्टिंडिशेज लेबेन, 130; वेदिक इंडेक्स, II, 63; लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, अध्याय, XI.

[18] इत्सिग ने इसे फो-को-लो लिखा है।

[19] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 108.

[20] बील, लाइफ ऑव युवान-च्वाङ्, I, पृ० 49-51.

बामियन—एक पहाड़ी पर स्थित यह बल्ख के आधे आकार का एक नगर है। यहाँ पर कुछ बौद्ध विहार थे जिनमे हीनयान सप्रदाय के भिक्षु रहते थे।[21]

बनगर—यह काबुल एवं सिन्धु के सचार मार्ग पर स्थित एक नगर एवं जिले का नाम था। पाँचवी एवं सातवी शताब्दी ईस्वी मे क्रमशः वहाँ फाह्यान् एवं युवान-च्वाङ आये थे।[22]

बाहुका (बाहुदा)—सुदरिका एवं सरस्वती[23] नदियो की भाँति यह नदी आंतरिक शुद्धि के लिए उपयुक्त नही समझी जाती थी।

भरद्वाज-आश्रम—कालिदास के अनुसार[24] यह आश्रम शत्रुघ्न के मार्ग मे था जब वह लवणासुर को मारने के लिए अयोध्या से आधुनिक मथुरा के 5 मील दक्षिण-पश्चिम मे स्थित मधुपघ्न जा रहे थे।

भिड या भिर या भेर—यह पश्चिमी पजाब के शाहपुर जिले में झेलम के तट पर स्थित था।[25]

ब्रह्मपुर—यहाँ पर पाँच बौद्ध विहार किंतु थोड़े ही भिक्षु थे।[26]

ब्रह्मावर्त्तजनपद—कालिदास ने अपने मेघदूत मे इसका वर्णन किया है (पूर्वमेघ, 48)। यह सरस्वती एव दृषद्वती नदियो के मध्य स्थित देश था।

चन्द्रभागा—विष्णुस्मृति (85. 48) मे इस नदी का वर्णन है जिसके तट धार्मिक अनुष्ठान आदि के सपादन के लिए पवित्र माने जाते थे।

गंभीर—यह चबल नदी (चर्मण्वती) के पहले यमुना की एक सहायक नदी है। कालिदास के मेघदूत (पूर्वमेघ, 40) मे इसका वर्णन है।

गण्डकी (गण्डक)—शतपथ ब्राह्मण (I, 4, 1, 14 और आगे) में वर्णित इस नदी को वेबर ने गण्डकी से समीकृत किया है।[27]

---

[21] वाटर्स, आन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 116.
[22] टॉलेमी कृत ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 141.
[23] पपंचसूदनी, I, पृ० 178.
[24] रघुवंश, XV, 11-5.
[25] कनिंघम, ऐंश्येंट ज्यॉग्रफी ऑव इंडिया, पृ० 177-78.
[26] वाटर्स ऑन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 329
[27] इंपीरियल गजेटियर ऑव इंडिया, 12, 125.

गंवरी (गवराइतिस)—यह खोस्पीस एव सिन्धु के बीच मे तथा काबुल नदी के तट पर स्थित था।[28]

गन्धमादन—कालिदास के विक्रमोर्वशीय (पृ० 87) मे भी इस पर्वत का वर्णन है।[29]

गन्धार—इस क्षेत्र मे पेशावर एव रावलपिंडी (सप्रति पाकिस्तान मे) के आधुनिक जिले समिलित हैं। इसमे अफगानिस्तान मे स्थित काबुल भी समिलित है। भडारकर का कथन है कि इसमे पश्चिमी पजाब एव पूर्वी अफगानिस्तान समिलित थे।[30] कनिंघम के अनुसार गन्धार की निम्नलिखित सीमाएँ बतलायी जा सकती है पश्चिम मे लमगान एव जलालाबाद, उत्तर मे स्वात एव बुनिर की पहाडियाँ, पूर्व मे सिन्धु नदी और दक्षिण मे कालबाग की पहाडियाँ।[31]

गगा—कुमारसम्भवम् (I, 30, 54, VI, 36, VII, 36, 70, तुलनीय, मेघदूत, 50 63) मे इस नदी का वर्णन हुआ है। कालिदास के विक्रमोर्वशीय (पृ० 121) मे गगा-यमुना के सगम का उल्लेख है (गगा-यमुना-सगम)। मेघदूत (50, 63) मे बतलाया गया है कि गगा दक्षिण-पूर्वाभिमुख प्रवाहित होती हुयी बगाल की खाडी मे गिरती है।

गर्ग-आश्रम—यह आश्रम रायबरेली जिले मे असनी के सामने गगा के उस पार स्थित था। कुछ लोगो का मत है कि यह कुमायूं के एक जगल मे स्थित था।

गोमती—विष्णुस्मृति (85, 43) मे इस नदी का वर्णन है।

गोरैय्या—यह घोर नदी (गौरायस) द्वारा सिंचित प्रदेश का नाम है।[32] सिकदर गोरैय्या से होकर गुजरा था और घोर नदी को पार करके अस्सकेनोई के देश मे प्रविष्ट हुआ था।

गोविसना—(कु-पि-सग-ना)—यहाँ पर दो बौद्ध विहार थे जिनमे 100 से अधिक हीनयान भिक्षु रहते थे।[33]

हड़प्पा—विस्तार के लिए दृष्टव्य, आर्क्यॉलॉजिकल सर्वे ऑव इडिया के

---

[28] टॉलेमीकृत ऐंश्येंट इडिया, 115.

[29] रैप्सन, ऐंश्येंट इडिया, पृ० 81.

[30] कार्माइकेल लेक्चर्स, 1918, पृ० 54

[31] मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 116.

[32] टॉलेमी, ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 109-110.

[33] वाटर्स ऑन युवान-चुवाङ्, I, पृ० 330-31.

मुखपत्र, ऐंश्येंट इंडिया, न० 3, जनवरी, 1947, पृ० 59 और आगे पर प्रकाशित आर० ई० एम० ह्वीलर का लेख, हड़प्पा, 1946.

हरियूपिया[34]—यह अभ्यावर्त्तिन चायमान द्वारा वृशिवन्तो की पराजय का स्थल था। लुडविग के अनुसार यह यव्यावती के तट पर स्थित एक नगर था।[35] हिलेब्रांत की धारणा है कि यह कुरुम (कुमु) की एक सहायक नदी इर्याब (हलियाब) थी किंतु यह संदिग्ध है।[36]

हस्तिनापुर—यह कुरु जनपद की प्राचीन राजधानी थी। इसका और अधिक विस्तृत विवरण मेरी पुस्तक इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, IV, अध्याय, III, में दिया गया है।

हिमवंत—हिमालय पर्वत पाँच योजन विस्तृत था। यह 84,000 शिखरों से मंडित था जिसके चारो ओर 500 नदियाँ प्रवाहित होती थी। हिमालय क्षेत्र मे सात बडी झीलें थी जिन्होने 150 योजन का क्षेत्र आवृत कर रखा था।[37] कालगिरि,[38] दद्दर[39] एव रजतपब्बत[40] सभी हिमालय क्षेत्र से सबधित थे। रघुवश (IV, 71) के अनुसार रघु हिमालय पर चढे थे।

हूण देश—रघु वक्षु (या आक्सस) तथा इसकी सहायक नदियो के तट पर स्थित हूणो के देश मे गये थे। रघु ने हूणो को पराजित किया था। वंक्षु की घाटी सिन्धु घाटी के समीप थी जो अपने केसर के लिए प्रख्यात थी।[41]

इंदपत्त—विधुर-नरेश ने यहाँ के एक ब्राह्मण को जो वाराणसी के राजा का पुरोहित था, एक जटिल प्रश्न के समाधान के लिए भेजा था। वह अनेक स्थानो का भ्रमण करता हुआ धीरे-धीरे वाराणसी गया।[42] इदपत्त-नरेश कोरव्य ने अपने पुत्र को एक प्रसिद्ध गुरु द्वारा कलाओ की शिक्षा प्राप्त करने के लिए तक्कसिला

---

[34] **ऋग्वेद**, VI, 27. 5.
[35] **ऋग्वेद, अनुवाद**, 3. 158.
[36] **वैदिक इंडेक्स**, II, 499.
[37] **पचसूदनी**, III, पृ० 35.
[38] **जातक**, VI, 302.
[39] **वहीं**, II, 67; III, 16.
[40] **वही**. II, 67.
[41] **रघुवंश**, IV, 67.
[42] **जातक**, V, 59.

भेजा था।[43] राजा धनञ्जय ने अपने पुराने सैनिको को अवमानित करके नवागंतुको के प्रति अनुकूलता प्रदर्शित की थी। वह एक अज्ञात सीमात प्रांत में युद्ध करने गया था। उसके पुराने एवं नवीन सैनिको ने उसकी कोई सहायता नही की, फलतः उसकी पराजय हुई। इद पत्त लौटने पर उसने अनुभव किया कि उसकी पराजय नवागतुको के प्रति अनुकूलता प्रदर्शित करने के कारण हुयी थी।[44] धनंजय कोरव्व इंदपत्त (इन्द्रप्रस्थ) का राजा था। विधुरपण्डित जिन्होने सपूर्ण कलाओ का ज्ञान तक्कसिला मे प्राप्त किया था, उसके कुल-गुरु और मत्री बने थे और उसे सांसारिक एव आध्यामिक विषयो मे शिक्षाएँ दिया करते थे।[45]

इसधर—यह सिनेरु (मेरु पर्वत) को परिवृत्त करने वाली सात पहाडियो में से एक है।[46]

जालंधर—चीनी इसे शी-लान-ता-लो कहते है। वहाँ पर पचास से अधिक विहार थे जिनमे 2,000 से अधिक भिक्षु रहते थे।[47]

कैलास—जम्बुदीवपण्णत्ति, सु० 70, पृ०2 के अनुसार इस पर्वत को अठ्ठाव्य कहते थे। कालिदास के अभिज्ञान-शाकुन्तलम (पृ० 237) के अनुसार इसे हेमकूट भी कहा जाता था।

कंबोज—ऋग्वेद मे कबोजो का वर्णन नही है। परोक्ष साक्ष्य द्वारा इस अनुमान को पुष्ट किया जा सकता है कि इन लोगो की गणना ऋग्वेद-युग के वैदिक आर्यो मे की जाती थी।[48] कबोज भारत के सुदूर पश्चिमोत्तर मे था जिसकी राजधानी द्वारका थी।[49] मैक्रिंडिल के अनुसार कबोज अफगानिस्तान था जिसे युवान-च्वाङ ने काओ-फु (कम्बु) कहा है।[50] कुछ विद्वानो की धारणा है कि काम्बोज सभवत. तिब्बत था। ईलियट ने बतलाया है कि कबोज लोग एक अज्ञात जन थे जो संभवतः तिब्बत या इसके सीमात देशो के निवासी

---

[43] वही, V, पृ० 457.

[44] जातक, III, पृ० 40.

[45] वही, VI, पृ० 255; तुलनीय, धूमकारी जातक, नं० 413, भाग, III.

[46] जातक, VI, पृ० 125.

[47] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 296.

[48] तुलनीय, ऋग्वेद, I, पृ० 102; वैदिक इंडेक्स, I, पृ० 138.

[49] रीज डेविड्स, बुद्धिस्ट इंडिया, पृ० 28.

[50] अलेक्जेंडर्स इनवैजन, पृ० 38.

थे।[51] कुछ लोगों ने इन्हें राजपुर[52] मे अवस्थित बतलाया है। रघु ने कंबोजों को पराजित किया था[53] और उन्होने कंबोज से सुदर घोडे और मणि-कंचन उपहार-स्वरूप प्राप्त किया था।[54]

कंसभोग—इसे कंस राज्य से समीकृत किया जाता है, असितंजना जिसकी राजधानी थी।[55]

कनरवल—विष्णुस्मृति (85, 14) में इसका वर्णन है। कालिदास ने अपने मेघदूत (पूर्वमेघ, 50) मे इसका उल्लेख किया है।

कण्णमुण्ड—यह हिमालय की एक झील है।[56]

कपिश—इसकी परिधि 4000 ली से अधिक थी। यहाँ पर इमारती लकडी और विविध प्रकार के फलो के वृक्ष एव अन्न उपजते थे। कपिश मे 100 से अधिक विहार थे जिनमे 6000 से अधिक भिक्षु थे जो मुख्यतया महायान संप्रदाय के थे।[57] कपिश कफिर हो सकता है जो आधुनिक काफिरिस्तान के रूप मे सुरक्षित है। वहाँ पर एक विशाल विहार था जिसमे तीन सौ से अधिक हीनयान भिक्षु थे।[58]

कालञ्जर—यह उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले मे स्थित एक सुप्रसिद्ध पहाडी किला है जो चदेलो का एक केंद्र था।[59]

काम्पिल्य (पालि कंपिल)—इसका वर्णन वाजसनेयी सहिता (XXIII, 18) मे भी है।

काञ्चनगुहा—यह हिमालय की एक गुफा है।[60]

काण्व (कण्व)—कुछ लोगो की धारणा है कि यह आश्रम हरिद्वार (आधुनिक

---

[51] ईलियट, हिंदुज्म ऐंड बुद्धिज्म, I, पृ० 268; फाउचर, आइकोनोग्रेफी बुद्धिके, पृ० 134.

[52] महाभारत, VII, 4-5 कर्ण, राजपुरमगत्वा कंबोजा निर्जितास्तया।

[53] रघुवंश, IV, पृ० 69-70.

[54] रघुवंश, IV, 70; रोचक विवरण के लिए दृष्टव्य, ज्यॉग्रेफिकल आस्पेक्ट ऑव कालिदासज वर्क्स, सेक्शन, I.

[55] जातक, IV, पृ० 79.

[56] जातक, II, पृ० 104.

[57] वार्टर्स, आन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 123.

[58] वही, I, पृ० 124.

[59] एपि० इं०, XXXII, भाग, III, जुलाई, 1957.

[60] जातक, I, पृ० 491-92.

हरद्वार) से 30 मील पश्चिम में स्थित था। कुछ लोगों ने इसे राजस्थान में कोटा से 4 मील दक्षिण-पूर्व मे चंबल नदी के तट पर स्थित बतलाया है। कुछ लोगों का मत है कि यह नर्मदा के तट पर स्थित था।[61]

कान्यकुब्ज—पाँचवी शती ई० मे फा-ह्यान ने कान्यकुब्ज मे दो बिहार देखे थे जिनके अंतवासी हीनयान संप्रदाय के थे।[62]

कारपकव—यह यमुना-तट पर स्थित एक स्थान था।[63]

कारापथ—कालिदास ने अपने रघुवंश (XV, 90) मे इसका वर्णन किया है। यह मल्लों के देश में स्थित प्रतीत होता है।[64]

कारोती—यह शतपथ ब्राह्मण (IX, 5, 2, 15) मे वर्णित एक स्थान या संभवतः एक नदी है जहाँ पर तुरकावषेय ने अग्नि-चयन किया था।[65]

काशी—विष्णुस्मृति (85. 28) मे इसका वर्णन है। काशी का एक विशद विवरण मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित मेरी 'ऐंश्येंट इंडियन ट्राइब्स' (1926) नामक पुस्तक के प्रथम अध्याय में दिया गया है।

काश्मीर (कश्मीर)—यह ऊँचे एव दुरारोह पर्वतो से परिवृत्त एक पठार पर स्थित है। इस देश का दक्षिणी एव पूर्वी भाग हिंदुओ और पश्चिमी भाग विविध राजाओ के अधीन था। इसका उत्तर एव पूरब का एक भाग खोतान के तुर्कों एव तिब्बत का था। भोटेश्वर-शिखर से तिब्बत होकर कश्मीर की दूरी लगभग 300 फरसख है[66]। अलबेरुनी का मत है कश्मीर के निवासी पदयात्री थे। उनके पास कोई वाहन—पशु या हाथी नही थे। उनमे आभिजात्य

---

[61] लाहा, अर्ली इंडियन मॉनेस्टरीज़, पृ० 5; अग्निपुराण, अध्याय, 109; पद्मपुराण, अध्याय, 99.

[62] लेग्गे,-ट्रावेल्स ऑव फाह्यान, पृ० 53-54.

[63] पंचविंश ब्राह्मण, XXV, 10,23; तुलनीय, अश्वलायन श्रौतसूत्र, XII, 6; शांखायन श्रौतसूत्र, XIII, 29. 25; कात्यायन श्रौतसूत्र, XXIV, 6; 10; वेबर, इंडिशे स्टूडियेन, I, 34; वैदिक इंडेक्स, I, पृ० 149.

[64] रघुवंश, संपादक, नन्दर्गिकर, तृतीय संस्करण, 1897; नोट्स, पृ० 322.

[65] वैदिक इंडेक्स, I, पृ० 151.

[66] 1 फरसख-4 मील; अलबेरुनी ने अपने फरसख को चार अरबी मीलों के बराबर-771.। 1093 अँग्रेजी मीलों को बराबर माना है। विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, अल्बेरुनीज़ नालेज ऑव इंडियन ज्यॉग्रेफी, पृ० 6, पा० टि० 1.

वर्ग के लोग मनुष्यों के कंधों पर ढोयी जाने वाली पालकियों में यात्रा करते थे। वे अपने देश की प्राकृतिक शक्ति के लिये विशेष व्यग्र रहते थे और इसीलिए वे उसके प्रवेश-द्वारों की सुरक्षा के लिये बहुत सावधानी रखते थे। उसने आगे बतलाया है कि प्राचीन काल में वे अपने देश में एक या दो विदेशियों, विशेषरूप से यहूदियों को प्रवेश करने की आज्ञा दिया करते थे किंतु उस समय वे किसी अपरिचित हिंदू को प्रवेश करने की आज्ञा नहीं देते थे।[67] कश्मीर मे प्रवेश करने का सबसे अच्छा ज्ञात मार्ग सिन्धु एवं जैलम (झेलम) के बीचों-बीच स्थित बब्रहान नगर से है। अद्धिस्तान इसकी राजधानी थी। इसका आशय श्रीनगर से है।[68] कश्मीर शहर चार फरसख क्षेत्र पर झेलम नदी के दोनो तटो पर स्थित है। अल-बेरूनी को गाजना एवं पंजाब मे अपने दीर्घ कालीन प्रवास की अवधि मे कश्मीर के विषय मे सूचना सकलित करने का अवसर मिला था। कश्मीर की सीमा पर स्थित लौहूर किले से उसने अपने व्यक्तिगत परिचय का उल्लेख किया है जिसका तादात्म्य लोहारा महल से किया जा सकता है। इसकी स्थिति पीरपजल पर्वत-माला[69] के दक्षिणी ढाल पर स्थित वर्तमान लोहारिन से लक्षित की जा सकती है। अल्-बिरूनी ने कश्मीर का वृत्तात अपनी पुस्तक तहकीकी-हिन्द के XVIII वे अध्याय (I, पृ० 206 और आगे) मे दिया है।

केदार—विष्णुस्मृति मे (85.17) इसका वर्णन हुआ है। गणपति के काल के दो अभिलेखो मे भी इसका वर्णन है।[70]

किटागिरि—समन्तपासादिका, पा० टे० सो०, पृ० 613 के अनुसार यह एक देश है।

कोतेर—इस पर्वत के तल मे किसी प्राचीन दुर्ग के कोने मे सकुलित बारह मंदिर के अवशेष है। जैसा कि कनिंघम ने बतलाया है[71], यह उत्तरी भारत का एक जीर्ण दुर्ग था।

क्रौञ्च—यह तैत्तिरीय आरण्यक (1.31.2) मे वर्णित एक पर्वत है।

क्रुमु—यह ऋग्वेद (V, 53 9; X, 75 6; लुडविग, कृत ऋग्वेद का

---

[67] अल्बेरुनी, इंडिया, I, पृ० 206-207.

[68] लाहा, अल्बेरुनीज नालेज ऑव इंडियन ज्यॉग्रेफी. पृ० 10.

[69] ज० ए० सो० बं०, 1899, एक्स्ट्रा नं० 2, पृ० 22.

[70] एपि० इं०, XXX II, भाग, VII.

[71] एं० ज्यॉ० इं०, पृ० 145, 682-683.

अनुवाद 3.200) में वर्णित एक नदी है जिसे सिन्ध की एक पश्चिमी सहायक नदी आधुनिक कुरुम से समीकृत किया जाता है।[72]

कुब्जाम्रक—यह हरिद्वार या इसके समीप स्थित कोई पुण्य स्थल है। यहाँ पर रैम्य का आश्रम था।[73]

कुलिन्द्राइन (किलिन्द्राइन)—कनिंघम ने इसकी पहचान जालन्धर से की है।[74] इसमें विपाशा की द्रोणी के ऊपरी भाग द्वारा निर्मित कुलूट देश सम्मिलित था।[75]

कुलूट (कि, यु-लु-टो)—यहाँ पर लगभग 20 विहारों मे 1000 भिक्षु थे जिनमे अधिकाश महायान धर्म का अध्ययन करते थे।[76]

कुरु-जांगल—रामायण (अयोध्याकाण्ड, LXXII; तुलनीय महाभारत, सभापर्व, XIX, पृ० 793-94; आदिपर्व, CIX, 4337-40) मे इसका उल्लेख है। पाण्डव भी यहाँ आये थे जिन्होने यहाँ पर स्थित काम्यक वन को भी देखा था।

कुरुक्षेत्र—कालिदास (मेघदूत, पूर्वमेघ, 48) ने कुरुक्षेत्र का रणक्षेत्र के रूप मे वर्णन किया है जहाँ पर कौरव-पाण्डव लड़े थे।

कुसावती—कालिदास ने अपने रघुवश (XV, 97) मे इसका वर्णन किया है।

लमगान—काबुल नदी के उत्तरी तट पर स्थित यह एक छोटा सा प्रदेश था।[77]

लंपाक—लप, टॉलेमी द्वारा वर्णित लबटाई[78], लैन, पो)—कनिंघम[79] ने इसे काबुल के पूर्वोत्तर मे कपिसेने से 100 मील पूर्व मे स्थित आधुनिक लमगान से समीकृत किया है। इससे व्यावहारत आधुनिक काफिरिस्तान मे हिंदुकुश के

---

[72] रॉथ, निरुक्त, एर्लाटुरेंगेन, 43; त्सिमर, आल्टिंडिशेज लेबेन, 14.

[73] महाभारत, वनपर्व, 84, 10; मत्स्यपुराण, 22, 65; पद्मपुराण, I, 32, 5.

[74] एं० ज्यॉ० इं०, 157.

[75] टॉलेमी, ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 109-110.

[76] बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, पृ० 177.

[77] मैक्रिंडिल, ऐंश्येंट इंडिया ऐज डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, (मजूमदार संस्करण), पृ० 106.

[78] वही, 1927, पृ० 106.

[79] एं० ज्यॉ० इं०, 1924 संस्करण, पृ० 49-50.

दक्षिण में लंबगाई (Lambagai) से लास्सेन द्वारा प्रस्तावित इस स्थान का समीकरण पुष्ट होता है। युवान-च्वाङ यहाँ आया था और उसने यहाँ दस से अधिक बौद्ध विहार और कुछ महायान भिक्षु देखे थे।[80]

लोहरकोट्ट—यह कश्मीरी ग्रंथ राजतरंगिणी मे वर्णित लोह-कोट दुर्ग ही है। कुछ लोग इसकी पहचान लौहुर नामक किले से करते हैं।[81]

महावृष—यह एक कबीले का नाम है और इसका वर्णन अथर्ववेद (V, 22, 4.5.8) में मूजवंतो के साथ हुआ है। ब्लूमफील्ड का सुझाव है कि यह नाम अपनी भौगोलिक स्थिति की अपेक्षा अधिकतर अपनी ध्वनि एवं अर्थवत्ता के कारण चुना गया था।[82] महावृष देश मे[83] रैक्वपर्ण नामक एक स्थान स्थित बतलाया जाता है। हृतस्वाशय महावृषो का राजा था।[84] बौधायन श्रौतसूत्र (II, 5) मे महावृषों का वर्णन है।[85]

मैनाकगिरि—तैत्तिरीय आरण्यक (1 31.2) मे इसका वर्णन है।

मनोर अवसर्पण—महाकाव्य मे इसका नाम नौबधन है। यह उस पर्वत का नाम है जिस पर मनु की नाव रुकी थी।[86]

मनोसिला—यह हिमालय मे अनोतत्त झील के पास स्थित एक पर्वत है।[87]

मंदार—कालिदास ने इस पर्वत को हिमालय मे स्थित बतलाया है। उन्होने इसे कैलास और गन्धमादन के समीप अवस्थित बतलाया है।[88] मेगस्थनीज़ एव एरिअन इसे मल्लुस नाम मे जानते है जो भागलपुर मे 30 मील दक्षिण मे और बसी से तीन मील उत्तर मे भागलपुर जिले की बका तहसील मे स्थित था। पार्जिटर ने बतलाया है कि किरातो का मुख्य देश कैलास, मंदार और हैम नामक तीन पर्वतो मे था।[89]

---

[80] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 181.

[81] इं० ऐं०, 1897, द कासेल ऑव लोहर।

[82] हिम्स ऑव द अथर्ववेद, 446.

[83] छान्दोग्य उपनिषद्, IV, 2. 5.

[84] जैमिनीय उपनिषद ब्राह्मण, III, 40. 2.

[85] वैदिक इंडेक्स, II, 142-143 भी द्रष्टव्य।

[86] शतपथ ब्राह्मण, 1 8. 1. 8; वैदिक इंडेक्स, II, 130.

[87] जातक, I, 232; III, 379.

[88] कुमारसंभव, VIII, 23, 24, 29, 59.

[89] मार्कंडेयपुराण, पृ० 322, पा० टि०, मैकिंडिल कृत एंश्येंट इंडिया ऐज़ डिस्क्राइब्ड बाई टॉलेमी, पृ० 110 भी द्रष्टव्य।

मरुद-वृधा—रॉथ एव त्सिमर के अनुसार यह नदी अकेसिनीज (असिक्नी) और हाइडैस्पीज (वितस्ता) का संयुक्त प्रवाह है जो परुष्णी (रावी) से अपने संगम तक प्रवाहित होती है।[90]

मतिपुर—(मो-ति-पु-लो)–यह बिजनोर जिला या इसका पूर्वी भाग है।[91] यहाँ पर 10 से अधिक बौद्ध विहार थे जिनमे 800 से अधिक भिक्षु थे जो अधिकांशतः सर्वास्तिवाद संप्रदाय के थे।[92] यहाँ पर एक लघु विहार था जहाँ पर गुणप्रभ ने सौ से अधिक भाष्य लिखे थे। युवान-च्वाङ यहाँ आया था।

मानस-सरोवर—यह पश्चिमी तिब्बत में कैलास पर्वत मे स्थित है।

मानिकयाल—यह वह स्थान था जहाँ बुद्ध ने अपना शरीर एक भूखी बाघिनी को खाने के लिये दे दिया था। तक्षशिला के दक्षिण-पूर्व मे यह दो दिन की यात्रा और उद्यान की राजधानी के दक्षिण-पूर्व मे 8 दिन की यात्रा की दूरी पर स्थित था।[92अ]

मेहतनू—यह सिन्धु की एक सहायक नदी रही होगी जो सिन्धु मे क्रुमु (कुरुम) एव गोमती (गुम्ती) के पहले इसमे मिलती थी।[93]

मेरु—तैत्तिरीय आरण्यक (I, 71.3) मे एक पर्वत के रूप मे इसका वर्णन है। इसकी पहचान सर्वोत्तम पर्वत-शिखर सिनेरु से की गयी है। यह सात दिव्य पर्वतमालाओ से परिवृत्त था।[94] यह 68,000 लीग ऊँचा था।[95]

मुचलिन्द—यह हिमालय की एक झील है।[96]

---

[90] ऋग्वेद, X, 75. 5; त्सुर लिटरेटुर उंड गेशिस्टे डेस वेद, 138 और आगे; आल्टिंडिशेस लेबेन, 11.12; ऑन सम रिवर नेम्स इन द ऋग्वेद नामक स्टाइन का शोध-पत्र जो कमेमोरेटिव एसेज प्रेजेंटेड टु आर० जी० भंडारकर, पृ० 22 में प्रकाशित है।

[91] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, 338.

[92] वही, I, पृ० 322.

[92] (अ) वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, , पृ० 255.

[93] ऋग्वेद, X, 75. 6; वैदिक इंडेक्स, II, 180.

[94] लाहा, ज्यॉग्रेफी ऑव अर्ली बुद्धिज्म, पृ० XVI.

[95] धम्मपद कामेंट्री, I, पृ० 107; जातक, I, पृ० 202, इसमें इसे एक पर्वत कहा गया है।

[96] जातक, VI, पृ० 518.

मुनि-मरण—यह एक स्थान का नाम है जहाँ बैखानसों की हत्या की गयी थी।[97]

नगर—यहाँ पर अनेक बौद्ध विहार थे किंतु भिक्षु कम ही थे। यहाँ पर एक विशाल स्तूप था जिसमें बुद्ध का एक दंतावशेष था।

नगरहार (न-की-लो-हो)—यह पूर्व से पश्चिम में लगभग 600 ली एवं उत्तर से दक्षिण मे 250 या 260 ली था।[98]

नैमिषारण्य—विष्णुस्मृति (85.13) मे इसका वर्णन है। कालिदास ने अपने रघुवश (XIX, 2) मे नैमिष का वर्णन किया है।[99] इसे उत्तर प्रदेश मे वर्त्तमान नीमसार से समीकृत किया जाता है।

नन्दिग्राम—कालिदास ने अपने रघुवश (XII, 18) में इसका वर्णन किया है जो अयोध्या का एक उपकठ था जहाँ राम के वनवास-काल मे भरत रहते थे।

नेपाल—काली नदी नेपाल की पश्चिमी सीमा है। काली-गण्डकी नदी कश्मीर को नेपाल से पृथक करती है।[100]

नील पर्वत—महाभारत के अनुशासनपर्व मे (25 13) एक तीर्थस्थान के रूप में इसका वर्णन है। यह वह टीला है जिस पर पुरुषोत्तम का मंदिर स्थित है।[101]

पण्डुकेश्वर—यह उत्तर प्रदेश के कुमायूँ मडल के गढवाल जिले मे श्रीनगर से 54 मील दूर पूर्वोत्तर मे स्थित है।[102]

पावा—विविधतीर्थकल्प (पृ० 44) के अनुसार मज्झिमपावा को अपावापुरी कहा जाता था। चूंकि यहाँ पर महावीर की मृत्यु हुयी थी इसलिए इसका नाम बदलकर पावापुरी कर दिया गया था।[103]

---

[97] पंचविंश ब्राह्मण, XIV, 4 7.

[98] बील, बुद्धिस्ट रिकार्ड्स ऑव द वेस्टर्न वर्ल्ड, I, पृ० 91.

[99] द्रष्टव्य, पा० वा० काणे, हिस्ट्री ऑव द धर्मशास्त्र, भाग, IV, पृ० 783.

[100] एस० के० आयंगर, ऐंश्येंट इंडिया ऐंड साउथ इंडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर, भाग, I, पृ० 343.

[101] पद्मपुराण, IV, 17. 23 35.

[102] एपि० इं० जिल्द, XXXI, भाग, VI, अप्रैल, 1956.

[103] ज० चं० जैन, लाइफ इन ऐंश्येंट इंडिया ऐज डिपिक्टेड इन द जैन केनन, 268.

प्लक्ष-प्राश्रवण (प्लक्ष प्रश्रवण)—यह उस स्थल का नाम है जहाँ सरस्वती नदी अदृश्य हो जाती है।[104]

प्रकाश—यह ताप्ती एवं गोमती नदियों के संगम पर धुलिया से 25 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित है।[105]

प्रयाग—बौद्ध टीकाकार बुद्धघोष के अनुसार यह गंगा-तट पर स्थित एक घाट है।[106]

पुष्कलावती—कालिदास ने अपने रघुवश (XV, 89) मे बतलाया है कि इस नगर की स्थापना पुष्कल ने की थी और यह उसकी राजधानी थी।

राश (वंतवर)—कनिंघम के अनुसार इस जिले को अर्श (संस्कृत उरश) जिले से समीकृत किया जा सकता है। यवान-च्वाङ यहाँ आया था और उसने इसे तक्षशिला एव कश्मीर के मध्य स्थित बतलाया है। इस चीनी तीर्थयात्री ने इसे उ-ला-शी कहा है।[107]

सरभू (सरयू)—विष्णुस्मृति (85 32) मे इसका उल्लेख है। हॉपकिंस ने इसे पश्चिम की एक नदी माना है।[108]

सरस्वती—विष्णुस्मृति (85.27) मे इस नदी का वर्णन है। मेघदूत (पूर्वमेघ, 49) मे भी इसका वर्णन है।

सरावती—रघुवश (XV, 97) मे इसका उल्लेख है। इसका तादात्म्य श्रावस्ती (आधुनिक साहेठ-माहेठ) मे किया जा सकता है जो बहराइच एव गोडा जिले मे स्थित है।

शतद्रु—शतद्रु या आधुनिक सतलज नदी का तट, जिसका वर्णन विष्णुस्मृति (85.47) मे हुआ है, धार्मिक अनुष्ठानो के लिए पुनीत माना जाता है। ऐतिहासिक युगो मे इस नदी ने अपना प्रवाह-पथ अत्यधिक बदला है।[109]

---

[104] **पञ्चविंश ब्राह्मण**, XXV, 10. 16 22; **जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण**, IV, 16. 12.

[105] **जर्नल ऑव द न्युमिस्मेटिक सोसाइटी ऑव इंडिया**, XVII **भाग**, II, 1955.

[106] **पपञ्चसूदनी**, पा० टे०सो०, I, पृ० 178.

[107] **टॉलेमी ऐंश्येंट इंडिया** पृ० 118.

[108] **रिलीजंस ऑव इंडिया** पृ० 34.

[109] **इंपीरियल गजेटियर्स ऑव इंडिया**, 23 179; **तुलनीय**, **त्सिमर आल्टिंडिशेज लेबेन**, 10. 11.

सागल—सौ से अधिक हीनयान भिक्षुओं वाले यहाँ के विहार में वसुबधु ने अभिधर्मकोषव्याख्या (शॅग-यी-ति-लुन) की रचना की थी।[110]

सारनाथ—युवान-च्वाङ के समय में यह एक विहार-केंद्र था क्योंकि उसने यहाँ कोई 1500 बौद्ध भिक्षु देखे थे जो सभी समतिय संप्रदाय के थे।[111] सारनाथ विहार वरणा नदी से 10 ली पूर्वोत्तर मे स्थित था।

सिक्किम—यह दार्जलिंग जिले के उत्तर मे स्थित है। इस समय इसका क्षेत्र 3000 वर्ग मील है जो उत्तर से दक्षिण मे लगभग 80 मील और पूरब से पश्चिम लगभग 40 मील है। यह हिमालय मे स्थित है। यह एक छोटा देश है जिसमे विश्व के कतिपय सर्वोच्च पर्वत स्थित है। इसके प्राकृतिक भूगोल एवं जलवायु की विविधता को देखकर किसी को यहाँ के विशालकाय अवधाव एव भूमि-स्खलन पर आश्चर्य नही करना चाहिए। नेपाली सीमा के पश्चिम मे कंचनजगा के उत्तर मे एक बहुत ऊँचा गिरि-कूट है। कचनजगा सिक्किम मे सर्वोच्च अगम्य ऊँचाई है।[112]

सिन्धु—सिन्धु नदी या इण्डस का वर्णन अथर्ववेद मे (III, 13.1, IV, 24 2, X, 4 15; XIII, 3 50) हुआ है। ऋग्वेद मे भी इसका उल्लेख है (I, 97.8, II, II. 9; III, 53.9)। कालिदास ने अपने मेघदूत (पूर्वमेघ, 29) एव मालविकाग्निमित्र (पृ० 102) मे इसका उल्लेख किया है।

श्रुघ्न—श्रुघ्न जिसे चीनी लोग सु-लु-कि, न-न कहते है, देहरा जिले और अबाला जिले के पूर्वोत्तरी भाग का वाचक था जिसमे सभवत. सहारनपुर जिले का एक भाग एव देहरा का प्रतिस्पर्श करते हुये कुछ प्रदेश समिलित थे।[113]

सुभगवन—यह उकट्ठा का एक सुरम्य जगल था। यहाँ के परिवेश का रूमानी वातावरण होने के कारण लोग वहाँ उत्सव मनाने जाया करते थे। यह एक प्राकृतिक कुज नही थी।[114]

सुसर्तु—ऋग्वेद (X, 75.6) मे वर्णित यह एक नदी है। यह सिन्धु की एक सहायक नदी है।

---

[110] **वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, I, पृ० 291**

[111] **वही, II, पृ० 48**

[112] **विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, इंट्रोड्यूसिंग इंडिया, भाग, 1, (रायल एसियाटिक सोसाइटी द्वारा प्रकाशित), पृ० 136 और आगे।**

[113] **वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, 337-38.**

[114] **पंपचसूदनी, I, पृ० 11.**

सुवास्तु—ऋग्वेद मे (VIII, 19. 37; निरुक्त, IV, 15) में इस नदी का वर्णन है। यह आधुनिक स्वात नदी है।

श्वेत्या—ऋग्वेद (X, 75.6) में इसका वर्णन है। यह सिन्धु की एक सहायक नदी प्रतीत होती है।[115]

तक्षशिला—जैनग्रंथ आवश्यक चूर्णी (पृ० 180) के अनुसार यह गन्धार जनपद की राजधानी थी। कालिदास के रघुवश (XV, 89) के अनुसार तक्ष ने तक्षशिला की स्थापना की थी। तक्षशिला के भीर टीले से जो यहाँ के तीन नगरो मे सर्वप्राचीन था, 1924, ई० मे 300 ई० पू० के एक मुद्रा-कोष एव आभूषण कोष की उपलब्धि यहाँ से प्राप्त तिथिपरक प्रथम निश्चयात्मक साक्ष्य था। 1945 मे इसी स्थान से इसी प्रकार का एक और कोष प्राप्त हुआ था। इनमे स्थानीय उत्पत्ति के तत्त्व और पश्चिमी एशिया से गृहीत शैली मे दो विचक्षण रत्न मिले हैं और जो इस भारतीय सीमात क्षेत्र के सास्कृतिक तत्वों की एक मिश्रित उत्पत्ति अभिव्यजित करते है। जनवरी-फरवरी, 1945 मे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (आर्क० स० इंडिया) द्वारा किये गये उत्खनन मे 18 मुडी हुयी छड़दार रजत-मुद्राएँ, कुछ सोने चाँदी के आभूषण, दो आयोनिया की यूनानी मणियाँ, एक एक नीलम या नीलमणि और स्फटिक के मनके उपलब्ध हुये थे।[116]

तमसावन बिहार (त-मो-सु-फ-न)—युवान-च्वाङ यहाँ आया था। यहाँ पर सर्वास्तिवाद सप्रदाय के 300 से अधिक भिक्षु थे। वे हीनयान मत के गभीर अध्येता थे।[117]

त्रिकूट—सभवतः यह पजाब मे स्थित एक पर्वत है।[118]

टोकेरोइ देश—टॉलेमी ने टोकेरोई जनों का वर्णन किया है जिनकी पहचान बाख्त्रीजनो के एक महत्त्वपूर्ण वर्ग—तुखारो से की जाती है।[119]

---

[115] त्सिमर, आल्टिंडिशेज लेबेन, 14.15.

[116] द्रष्टव्य, ऐंश्येंट इंडिया भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का मुखपत्र, नं० 1, जनवरी, 1946, पृ० 27 और आगे पर प्रकाशित, जी० एम० यंग का लेख 'ए न्यू होर्ड फ्रॉम तक्सिला (भीर माउंड)'; ऐंश्येंट इंडिया, नं० 4, जुलाई, 1947, जनवरी, 1948, पृ० 41 और आगे में अ० घोष का लेख, तक्सिला (सिरकप), 1944-45 भी द्रष्टव्य।

[117] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्; I, पृ० 294.

[118] जातक, IV, पृ० 438.

[119] लाहा, ट्राइब्स इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 396.

त्रिककुद (त्रिककुभ)—यह हिमालय मे स्थित तीन शिखरों वाला एक पर्वत है जिसकी पहचान आधुनिक त्रिकोट से की जाती है।[120]

त्रिपलक्ष—यह उस स्थान का नाम है जहाँ दृषद्वती यमुना के निकट अदृष्ट होती है।[121]

तूर्घ्न—तैत्तिरीय आरण्यक (V, 1) मे इसका वर्णन कुरुक्षेत्र के उत्तरी भाग के रूप मे किया गया है।[122]

उच्चशृंगविषय—इसे बेलारी जिले के हरपदकी तालुक मे स्थित उच्चंगी दुर्ग नामक वर्तमान गॉव से समीकृत किया जाता है।[123]

उपदकपब्बत—यह हिमालय का एक पहाड है।[124]

उक्कट्ठ—यह मुख्य कोशल मे था। शुभघडी के भीतर बनकर पूर्ण हो जाने के लिए इसका निर्माण रात मे मशालो के प्रकाश मे किया गया था और इस कारण इसका यह नाम पड़ा है।[125] कोशल-नरेश पसेनदि ने यह नगर पोक्खरसाति या पोक्खरसादि को उसकी विद्वत्ता के लिए दिया था।[126]

उपकारी—उत्तर पञ्चाल से गगा-तट के मार्ग पर स्थित यह पञ्चालराष्ट्र का एक नगर था।[127]

ऊर्णावती—यह ऋग्वेद मे वर्णित (X, 75 8) सिन्धु की एक सहायक नदी है।

उत्तरकौशल—यह रघु एव उनके उत्तराधिकारियो की राजधानी थी[128]। कालिदास ने अपने रघुवश (IV, 70; IX, 17) मे इसे कोशल भी कहा है।

---

[120] **अथर्ववेद**, IV, 9. 8.

[121] **पंचविंश ब्राह्मण**, XXV, 13. 4.

[122] **वेबर, इंडिशे स्टुडियेन**, I, पृ० 78; **वैदिक इंडेक्स**, I, पृ० 318.

[123] **एपि० इं०**, XXXII, भाग, V.

[124] **जातक**, V, 38.

[125] **पपंचसूदनी**, I, पृ० 10.

[126] **सुमंगलविलासिनी**, 4, 1, 44–45.

[127] **जातक**, VI, 450, 458, 427, 430.

[128] **रघुवंश**, V, 31; XIII, 61; 79; XIV, 29; XVI; 11-29; XVIII; 36.

वंक—यह हिमालय मे एक पर्वत है।[129] कुछ लोगो ने इसे वेपुल्ल पर्वत का एक प्राचीन नाम माना है।

वरणावती—अथर्ववेद (IV, 7.1) मे इसका उल्लेख है। लुडविग ने इसे गंगा नदी ही माना है।[130]

वाल्मीकि-आश्रम—रामायण (उत्तरकाण्ड, अध्याय, 58) में इस आश्रम में वाल्मीकि के सम्मान मे निर्मित एक मंदिर का उल्लेख है।

वेत्रवती—यह नदी पारिपात्र पर्वत से निकलती थी। कालिदास ने अपने मेघदूत (पूर्वमेघ, 24) मे इसका वर्णन किया है।

वेत्तवती—चारुदत्त ने इस नदी को वेत्र-लता से पार किया था।[131]

वेय्यड्ढगिरि—यह पहाड़ी गंधमादन के पास स्थित थी (आवश्यकचूर्णी, पृ० 165)।

विनीता—इसे अयोध्या भी कहा जाता था और यह हिंदुओं के सात तीर्थ-स्थानों मे से एक था।[132]

विपाशा (वि-पाश, बंधनरहित)—ऋग्वेद (III, 33.1.3, IV, 30. 11) मे विपाश का वर्णन है। निरुक्त (IX, 26) के अनुसार इस नदी का प्राचीन नाम उरुञ्जिरा था। इस नदी ने प्राचीन काल से अपना प्रवाह-पथ बहुत अधिक बदला है।[133]

वृन्दावन—यह यमुना-तट पर गोवर्धन के पास है।[134] कालिदास ने अपने रघुवंश (VI, 50) मे इसका वर्णन किया है।

---

[129] **जातक, VI, पृ० 491.**

[130] **ऋग्वेद (अनुवाद) 3, 201; तुलनीय, आल्टिंडिशेज लेबेन, 20; वैदिक इंडेक्स, II, पृ० 244.**

[131] **तुलनीय, जैन सूयगडंगचूर्णी, पृ० 239.**

[132] **विस्तृत विवरण के लिए दृष्टव्य, लाहा, हिस्टॉरिकल ज्यॉग्रेफी ऑव ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 69 और आगे।**

[133] **इंपीरियल गजेटियर ऑव इंडिया, 7, 138; त्सिमर, आल्टिंडिशेज लेबेन, 11; स्टाइन, ऑन सम रिवर नेम्स इन द ऋग्वेद, पृ० 22; कमेमोरेटिव एसेज प्रेजेंटेड टु आर० जी० भंडारकर; पूर्वोक्त ग्रंथ के पृ० सं० 93 और आगे पर प्रकाशित सरदेसाई का लेख, लैंड आव सेवन रिवर्स।**

[134] **भागवत पुराण, VI, 11, 28, 36.**

यामवाग्नि-आश्रम—यह आश्रम उत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर जिले मे ज़ॅनिया मे स्थित था।

दक्षिणी भारत

ऐवरमलाई—यह मदुराई जिले के पलनी तालुक मे ऐयमपालैयम नामक गाँव मे स्थित एक पहाडी है।[135]

अमुदालपाडु—यह आलमपुर तालुक मे है जहाँ से विक्रमादित्य प्रथम के अभिपत्र उपलब्ध हुये थे।[136]

अण्डवरम्—यह अण्डनात्तुवेलान का सक्षिप्त रूप है। इसमे पेरुमनलुर चेल्लुर, तिरुमाडवनूर, कुवलैयसिंगनल्लूर और पेरुमुर ममिलित है।[137]

अंधपुर[138]—यह एक नगर है। कुछ लोगो का मत है कि यह आंध्रो की राजधानी थी और कुछ लोग इसे सभवत: बेजवाड़ा का प्राचीन नाम मानते है।

अंधवरम्—यह आंध्र राज्य के श्रीकाकुलम जिले मे स्थित एक गाँव है जहाँ से इन्द्रवर्मन के ताम्रपत्र उपलब्ध हुये थे।[139]

आंध्रमण्डल—(अन-तो-लो)—यहाँ पर 20 बौद्ध विहार थे जिनमे 3000 से अधिक भिक्षु निवास करते थे। राजधानी के निकट यह सुरुचिपूर्वक नक्काशा एव अलंकृत किया हुआ, मीनारों एव आहातो से युक्त एक विशाल विहार था जिसमे बुद्ध की एक सुदर प्रतिमा थी।[140]

अरिकमेडु—यह भारत के पूर्वी समुद्र तट पर पांडिचेरी से दो मील दक्षिण मे, उष्णकटिबधीय कोरोमडल तट पर स्थित है। यहाँ के कुछ स्थानों पर 1945 मे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने उत्खनन किया था। यहाँ के उत्खनन के परिणाम बहुत महत्त्वपूर्ण है।[141]

---

[135] एपि० इं०, XXXII, भाग, VII.

[136] वही, XXXII, भाग, IV.

[137] वही, XXXII, भाग, VI, अप्रैल, 1958.

[138] जातक, I, 111.

[139] एपि० इं०, VI; XXX, भाग, I, पृ० 37.

[140] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 209.

[141] द्रष्टव्य, आर्क्योलॉजिकल सर्वे ऑव इंडिया, ऐंश्येंट इंडिया, नं० 2, जुलाई, 1946, पृ० 17 और आगे।

आभीर देश—यह दक्षिणापथ मे स्थित था। यहाँ पर वैरसामी आये थे।[142]

बादामि (वातापि)—640 ई० के लगभग यह चालुक्यों की राजधानी थी। नरसिहवर्मन ने बादामी को नष्ट किया था।[143]

भञ्जभूमि—इसकी पहचान उड़ीसा मे मयूरभज से और मिदनापुर मे इसी नाम के एक परगना से की जाती है। इसकी प्राचीनता अज्ञात है।[144]

चन्द्रगिरि—यह पहाडी सेरिंगपतम के समीप है।

चोल—युवान-च्वाङ के अनुसार यहाँ के बौद्ध विहार जीर्ण हो गये थे। कुछ विहारो मे भिक्षु रहते थे।[144a]

दद्दुर—जैन ग्रथ नायाधम्मकहाओ (पृ० 98) के अनुसार यह देश अपने चदन के लिए प्रसिद्ध था।

दक्षिणापथ—(या दक्खिणावह)—यह जैनियो का एक महान केंद्र था। यहाँ पर वैरसामी[145] आये थे। दक्षिणापथ उस सपूर्ण क्षेत्र का नाम था जो गगा के दक्षिण मे एव गोदावरी के उत्तर मे स्थित था जिसमे वह गये थे।[146]

दर्दुर (दुर्दर)—वेलुवन या मलय पर्वतमाला के मध्य यह एक पहाडी थी। सभवत. यह नीलगिरि है दोदाबेट्टा जिसका सर्वोच्च शिखर है।[147] महाभारत के अनुसार (II, 52, 34) यह पहाड़ी चोल एव पाण्ड्य राजाओ से सबधित थी।[148]

द्राविड—युवान-च्वाङ के अनुसार द्राविड की परिधि 6000 से अधिक थी और इसकी राजधानी कान-चिह्-पु-लो की परिधि 30 ली से अधिक थी। वहाँ पर सौ से अधिक बौद्ध विहार थे जिनमे स्थविर सप्रदाय के 10,000 से अधिक भिक्षु निवास करते थे।[149]

---

[142] बृहत्कथाकोष, 138 और आगे; आवश्यक चूर्णी, पृ० 397.

[143] एस० के० आयंगर, ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 371.

[144] इंडियन कल्चर, XII, पृ० 41.

[144a] वाटर्स ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 224.

[145] आवश्यक चूर्णी, पृ० 404.

[146] विनय महावग्ग, V, 13; विनयचुल्लवग्ग, I, 18.

[147] ज० रा० ए० सो०, 1894, पृ० 231 और आगे; तुलनीय, पार्जिटर, ज्यॉग्रेफी ऑव रामाज एक्जाइल, ज० रा० ए० सो०, 1894, पृ० 263.

[148] दृष्टव्य, महाभारत, XIII, 165, 32; रामायण, लंकाकांड, 26-42, रघुवंश IV, 51.

[149] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 226.

एडेवोर—यह उत्तर में कृष्णा और दक्षिण मे तुगभद्रा नदी के मध्य स्थित भू-खंड था और इसमे रायचूर जिले का एक बड़ा भाग समिलित था।[150]

गंगवाड़ी—प्राचीनकाल मे दक्षिण भारत मे विकसित यह एक जैन राज्य था। यह अत्यत रुचिकर था और इसने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। इसका नामकरण गंगवंशीय राजाओं के आधार पर हुआ है जिनके राज्य का यह एक अंग था और जिसके अतर्गत् वर्तमान मैसूर प्रदेश का एक विशाल भाग था। यह 96,000 वाला देश था। इसकी पहली राजधानी कुवलाल थी जिसका नाम कालातर मे बदलकर कोवलाल और फिर कोलाल कर दिया गया था। यह मैसूर के पूर्वी भाग और पालार नदी के पश्चिम मे स्थित वर्तमान कोलार है। कावेरी गगवाडी की प्रमुख नदी है।[151]

गोदावरी—विष्णुस्मृति (85.42) मे इस बड़ी दक्षिण-भारतीय नदी का उल्लेख है। यह खनिज धातुओं मे सपन्न बतलायी जाती है।[152] रावण ने इसी स्थान से सीता का अपहरण किया था। आवश्यक चूर्णी मे वर्णित (पृ० 547) बेण्णा इसकी एक सहायक नदी थी। मदाकिनी, जिसे मञ्जीरा भी कहा जाता था, गोदावरी की दक्षिणी सहायक नदी थी।[153]

गोकर्ण—कालिदास ने गोकर्ण का वर्णन दक्षिणी-भारत के एक तीर्थ स्थान के रूप मे किया है।[154]

गोली—यह गुटुर जिले के पलनाड तालुक मे कृष्णा नदी की एक सहायक गोल्लेरु नदी के तट पर स्थित एक गॉव है। इस गॉव मे एक स्तूप के भग्नावशेष है और इसकी वेदिका पर जातक-मंदिरो एव बुद्ध के जीवन की कहानियो को प्रदर्शित करने वाले अनेक उच्चित्र है।[155]

गुहेश्वरपाटक—यह भौमकार राजाओ की राजधानी थी। इसे अति संभवतः आधुनिक जयपुर से समीकृत किया जा सकता है।[156]

---

150 एपि० इं०, जिल्द, XXXIV, भाग, IV, पृ० 165.

151 राइस, गंगवाड़ी, कमेमोरेटिव एसेज प्रेजेंटेड टु आर० जी० भंडारकर, पृ० 237 और आगे।

152 रामायण, अरण्यकाण्ड, अध्याय, 7 व 8.

153 वही, अरण्यकाण्ड, अध्याय, 73.

154 रघुवंश, VIII, 33.

155 द्रष्टव्य, बि० च० लाहा, माई इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, II, पृ० 145.

156 एपि० इं०, XXIX, भाग, IV, अक्टूबर, 1951.

हौनेहल्ली—यह मैसूर राज्य के उत्तरी कनारा जिले के सिरसी तालुक में है।[157]

जंबुकेश्वर—त्रिचिनापल्ली के समीप जबुकेश्वर मदिर में अनेक नक्काशियों से युक्त एक मंडप है। इसके गोपुरम् सब से पुराने है जो 1250 ई० मे उत्तरकालीन चोल या प्रारंभिक पाण्ड्य राजाओं के शासनकाल मे बने प्रतीत होते हैं।[158]

जयंतमंगल—आलवायी नदी की दोनो प्रशाखाओं के मध्य स्थित यह आधुनिक चेन्नमंगलम है।[159]

कलिंगनगर—चीनी इसे क-लेंग-के नाम से जानते थे। यह अतिसंभवत. नगर ही है।[160] कालिदास ने कलिग एव उत्कल को दो पृथक राज्य माना है।[161] उत्कल की सीमा पूर्व में कपिशा नदी तक और पश्चिम मे मेकलो के राज्य तक फैली हुयी थी।[162] यहाँ पर 10 से अधिक बौद्ध विहार थे जिनमें 500 भिक्षु रहते थे जो महायान स्थविर सप्रदाय के विद्यार्थी थे।[163] सुक्म की स्थिति के वर्णन से, जिसमे मगध प्रदेश के पूर्व के क्षेत्र और दक्षिण मे गगा के दक्षिण की ओर कलिग की सीमा तक के क्षेत्र समिलित प्रतीत होते है, कलिग की सीमा स्पष्ट होती है जो गगा से पश्चिम की ओर कम से कम गगा की रूपनारायण बाहु से प्रारंभ होती है जिसके मुहाने पर ताम्रलिप्ति (आधुनिक तामलुक) का प्राचीन बदरगाह स्थित है।

कण्डराड—यह पूर्व मे गोदावरी जिले मे पिठपुरम के समीप स्थित एक गाँव है जहाँ पर प्रोलयनायक का विलास दानपत्र उपलब्ध हुआ था।[164]

कण्णपेण्णा (वेण्णा)—यह महिष्मक राज्य में एक नदी थी।[165]

कप्टियूर—यह प्राचीन काल मे पश्चिमी समुद्रतट पर स्थित एक सपन्न

---

157 एपि० इं०, जिल्द, XXXIV, भाग, IV, पृ० 205.

158 रॉयल एसियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा 1947 में प्रकाशित इंट्रोड्यूसिंग इंडिया, भाग, I, पृ० 8.

159 बि० च० लाहा वाल्युम, I, पृ० 302.

160 एपि० इं०, भाग, XXX, भाग, I, जनवरी, 1953, पृ० 26.

161 रघुवंश, IV, पृ० 38.

162 वही, IV, पृ० 38.

163 वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 198.

164 एपि० इं०, जिल्द, XXXII, भाग, VI, अप्रैल, 1958.

165 जातक, V, पृ० 162-63.

नगर था। यह कार्यकुलम राजाओं की राजधानी थी जो यादव वंश के थे।[166]

करडिकल—यह लिङ्गसुगूर के समीप करडकल ही है।[167]

कौरालक—फ्लीट ने इसका रूप कैरलक और केरल परिवर्तित कर दिया है।[168]

कवाटपुर—कुछ लोगों ने इस नगर को कोरकई से समीकृत किया है। यह उत्कृष्ट मोतियों के लिए विख्यात् है।[169]

कविट्ठ—यह गोदावरी-तट पर एक वन है।[170]

कावेरी—यह नदी मलय-गिरि से निःसृत है जो अगस्त्य के लिए पवित्र था। निर्मल जल से परिपूर्ण यह एक दिव्य नदी थी।[171] रघु ने इसे पार किया था।[172]

काविरिपट्टिनम (कावेरीपट्टिनम)—करिकल नामक एक उत्साही राजा ने कावेरी-तट पर स्थित इस स्थान को अपनी राजधानी बनाया था और उसने इस नदी के तटों को ऊँचा तथा नहरें निकलवा करके बाढ से इस नगर की रक्षा की थी।[173]

केरल देश—कालिदास ने अपने रघुवंश (IV, 54) में इस देश का वर्णन किया है जहाँ पर रघु की सेना का आगमन सुनकर स्त्रियों ने अपने आभूषण उतार कर फेंक दिये थे।

कीलूर—यह दक्षिणी अर्काट जिले में तिरुक्कोरिलूर तालुक में है।[174]

किष्किन्ध्या—धुलेव से लगभग 4 मील दक्षिण-पूर्व में कल्याणपुर नामक

---

[166] बि० च० लाहा वाल्युम, I, पृ० 298.

[167] एपि० इं०, XXXIV, भाग, IV, पृ० 165.

[168] एस० के० आयंगर, ऐंश्येंट इंडिया ऐंड साउथ इंडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर, I, पृ० 219.

[169] इंडियन कल्चर, I, पृ० 584.

[170] जातक, V, पृ० 123, 133.

[171] रामायण, किष्किन्ध्याकाण्ड, 41, 15.

[172] रघुवंश, IV, पृ० 45.

[173] लाहा, ट्राइब्स ऑव ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 189; एस० के आयंगर, ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 93.

[174] एपि० इं०, XXXII, भाग, III, जुलाई, 1957.

आधुनिक गाँव के पास एक प्राचीन नगर के विस्तृत भग्नावशेषप्राचीन किष्किन्ध्या नामक स्थल को लक्षित करते हैं।[175] बाल्मीकि ने किष्किन्ध्या का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है जिसमें सुसज्जित एवं सुनिर्मित भवन थे जिनमे वानर स्त्रियाँ एक उच्च जीवन स्तर व्यतीत करती थी।[176]

कोलत्तिरि—यह मलाबार का एक अत्यत महत्त्वपूर्ण प्राचीन राज्य था। यह इलायची के लिए प्रसिद्ध था।[177]

कोलुपर्तनी—इसकी पहचान आधुनिक श्रीकाकुलम जिले से की जाती है।[178]

कोंकन—चीनी इसे कुग-कन-न-पु-लो कहते थे। युवान-च्वाङ के अनुसार वहाँ पर सौ से अधिक बौद्ध-विहार और 10,000 से अधिक बौद्ध भिक्षु रहते थे जो हीनयान एव महायान संप्रदायो के छात्र थे।[179]

कोट्टयम—यह राज्य उत्तरी मलाबार के पूरब की ओर स्थित है।[180]

कौञ्चालय—यह दक्षिण भारत का एक उल्लेखनीय वन था।[181]

कुम्भकोनम्—इसका प्रसिद्ध नाम तिरुक्कुडमुक्कु है।[182] कुम्मकोनम के मदिर मे दक्षिण-भारत के अन्य मदिरो की भाँति एक सरोवर और एक गोपुर है।

महाबलिपुरम्—इसे मामल्लपुरम या मावलिवरम भी कहते है। पल्लव-युग मे यह धार्मिक एवं सास्कृतिक पुनरुद्धार का एक महान केंद्र था। इसका नामकरण महामल्ल नरसिंहवर्मन नामक एक पल्लव-नरेश के आधार पर हुआ था जो सातवी शती ई० मे काञ्ची का एक शक्तिशाली राजा था।

महाराष्ट्र—(मो-हा-ला-च,आ)—इस देश की परिधि 6000 ली थी और इसकी राजधानी की परिधि 30 ली से अधिक थी। राजधानी के बाहर एव भीतर पाँच अशोक स्तूप बनवाये गये थे।[183]

महेन्द्राचल—बाण कृत हर्षचरित (सप्तम उच्छ्वास) के विवरण की पुष्टि

---

[175] एपि० इं०, भाग, I, XXX, जनवरी, 1953, पृ० 4.

[176] इंडियन कल्चर, I, पृ० 584.

[177] बि० च० लाहा वाल्यूम, I, पृ० 306.

[178] एपि० इं०, XXXIV, भाग, VI, पृ० 190.

[179] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, पृ० 237.

[180] बि० च० लाहा वाल्यूम, I, पृ० 306.

[181] इंडियन कल्चर, भाग, I, पृ० 584.

[182] एपि० इं०, XXXII, भाग, VI, अप्रैल, 1958.

[183] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ, II, पृ० 239.

जिसमें महेन्द्रपर्वत को मलयपर्वत से सबधित बतलाया गया है—चैतन्यचरितामृत से भी होती है।[184]

महिस्सक—यह एक राज्य है जिसकी राजधानी सकुल है।[185]

महोदयपुर—इसे अलवाई नदी के तट पर स्थित आधुनिक तिरुवन्चिकुलम से समीकृत किया जाता है। यह पेरुमलो का केंद्र था।[186]

मलकेटक—यह गाँव मैसूर राज्य के गुलबर्ग जिले मे वर्तमान मलखेद के समान प्रतीत होता है।[187]

मलयगिरि—कालिदास ने अपने रघुवश (IV, 46) मे इसका वर्णन किया है।

मुसुनिक—यह देवेन्द्रवर्मन तृतीय (शुग सवत् 306) के मुसुनिक दानपत्र द्वारा प्रदत्त एक गाँव है जिसे मुसुनूरु से समीकृत किया गया है।[188]

नागार्जुनिकोण्ड—यह पहाडी आध्र-राज्य के गुटुर जिले के पलनाड तालुक मे स्थित है। यह कृष्णा नदी के दाहिने तट पर छायी हुयी है। नागार्जुन-पहाडी, जो एक विशाल चट्टानी पहाडी है, मचेरिया रेलवे स्टेशन से 16 मील पश्चिम मे स्थित है। इस उल्लेखनीय स्थान का अन्वेषण 1926 मे हुआ था। यहाँ पर ईंटो के कई टीले एव सगमरमर के स्तभ उपलब्ध हुये थे। कुछ स्तभो पर प्राकृत भाषा मे एव दूसरी तथा तीसरी शताब्दी ई० की ब्राह्मी लिपि मे अभिलेख उत्कीर्ण है। यहाँ से उपलब्ध वस्तुओ मे बहुसख्यक भग्न विहार अर्धवृत्ताकार मदिर, स्तूप, अभिलेख, मुद्राएँ, पुरावशष, मृण्भाड, मूर्तियाँ और अमरावती शैली मे 400 से अधिक भव्य अध्युच्चित्र है। नागार्जुनिकोण्ड से प्राप्त अभिलेखो से यह प्रकट होता है कि दूसरी एव तीसरी शताब्दी ई० मे विजयपुरी नामक प्राचीन नगर अवश्यमेव दक्षिण भारत का एक सबसे बडा एव अत्यत महत्त्वपूर्ण बौद्ध सन्निवेश रहा होगा। स्तूप, विहार एव मदिर बडी ईंटो से बने थे, ईंटे मिट्टी के गारे से चुनी गई थी और दीवालो पर पलस्तर था। इन पक्के भवनो का अलकरण एव गढाई या सचकन सामान्यतया गचकारी से किया गया था और ये भवन सिर से पैर तक चूने से पुते हुये थे। नागार्जुनिकोण्ड का प्रत्येक विहार स्वय मे पूर्ण था। विहार मे ईंटे की दीवाल से आवेष्टित एक आयताकार प्रागण होता था। केंद्र मे पत्थर

---

[184] विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, इडियन कल्चर, भाग, I, पृ० 581.

[185] जातक, I, पृ० 356, V, पृ० 163.

[186] बि० च० लाहा वाल्यूम, I, पृ० 303.

[187] एपि० इं०, जिल्द, XXXII, भाग, VII.

[188] वही, भाग, XXX, खण्ड. I, जनवरी, 1953, पृ० 26.

की फर्श वाला एक महाकक्ष होता था जिसकी छत पत्थर के स्तंभों पर आधारित थी। घेरे के चारो ओर बाहरी दीवालो पर अंत्याघृत भिक्षुओं के लिए कोठरियों की एक पंक्ति थी जिसके सामने प्रायः एक दलान होती थी। कुछ कोठरियाँ भंडार कक्ष और कुछ चैत्यों के रूप में प्रयुक्त होती थी और वहाँ पर यथार्थतः एक विशाल कमरा था जो भोजनशाला के काम आती थी। इस प्रकार के छः विहार खोदे गये थे। मदिर के पूर्व में एक विस्तृत क्षेत्र मे विहारो के तीन स्कध खोदे गये थे जिनमे प्रत्येक स्कध मे पाँच कोठरियों की सामान्य व्यवस्था थी। इन स्कधो के केद्र मे एक सुनिर्मित मंडप था। पहले कोठरियो के दक्षिणी स्कंध का उत्खनन किया गया था। प्रत्येक कोठरी मे एक द्वार था। पाँचवी कोठरी के पूरब मे एक कमरा विशेषतः एक स्नानागार था। विहार के पूर्वी स्कध या बाजू मे भी पाँच कोठरियों की इसी प्रकार की व्यवस्था दृष्टिगत होती है। मदिर के पश्चिम मे पाँच कोठरियों की पंक्ति स्थित है। दीवालो पर यत्रतत्र एक जैसे पलस्तर के चिन्हो से यह व्यंजित होता है कि मूलतः इस पर सर्वत्र पलस्तर था।[189]

नेलकुण्ड—इसकी पहचान चित्रदुर्ग जिले में स्थित नलकुण्ड से की जाती है जहाँ पर चालुक्य अभिनवगुप्त का नलकुण्ड दानपत्र उपलब्ध हुआ था।[190]

नील—यह महाजव नदी एव पञ्चाप्सर झील के मध्य स्थित एक वन था।[191]

नीला—इसे पोनानि नदी से समीकृत किया जाता है जो मलाबार की एक प्रसिद्ध नदी है।[192]

पक्षितीर्थ—यह वेदगिरीश्वर देवता के मदिर एव उस पहाड़ी के लिये सुविख्यात है जो निकटवर्ती क्षेत्रो का सब से प्रसिद्ध भूचिह्न है। पहाड़ी पर स्थित मदिर जिसके समीप पवित्र चीलो को नित्य मध्याह्न वेला मे चुगाया जाता है, पल्लवयुगीन है।

पम्पा—ऋष्यमुखपर्वत के सन्निकट यह एक झील थी।[193]

---

[189] विस्तृत अध्ययन के लिए दृष्टव्य, ए०एच०लांगहर्स्ट, द बुद्धिस्ट ऐंटिक्विटीज आॅव नागार्जुनिकोण्ड, मद्रास प्रेसीडेन्सी, (मे०आर्क० सं० इं०, नं० 54 और आर्क० स०इं०, मेमायर नं० 71, 1938)।

[190] एपि०इं०, XXXII, भाग, V.

[191] रामायण, III, अध्याय, 14 और आगे।

[192] ब्रि०च० लाहा वाल्यूम, I, पृ० 305.

[193] रामायण, अरण्यकाण्ड, अध्याय, 73, पृ० 10 और आगे।

पञ्चाप्सरस—यह एक झील थी जो उत्तर की ओर दण्डक-वन के प्रारंभिक छोर पर स्थित थी।[194]

पाण्ड्य—रघुवंश (VI, पृ० 59-65) मे पाण्ड्यो का उल्लेख है जिनकी राजधानी उरगपुर थी।

पारावत—यह दक्खन मे एक विहार था जहाँ पाँचवी शताब्दी ईस्वी में फा-ह्यान गया था। यह विहार एक विशाल चट्टान को तराश कर बनाया गया था। यह पाँच मंजिल का था। पहली मंजिल गजाकार थी जिसमे शिला मे 500 कक्ष, दूसरी सिंहाकार थी जिसमे 400 कक्ष, तीसरी अश्वाकार थी जिसमे 300 कमरे, चौथी वृषाकार जिसमे 200 कमरे और पाँचवी कबूतर या पारावत के आकार की थी जिसमे 100 कमरे थे।[195]

पेद्द-बम्मिडि—यह आंध्र मे श्रीकाकुलम जिले के नरसन्नपेत तालुक मे स्थित था।[196]

पेरुबलि्ल—यह रामनाथपुरम से लगभग नौ मील उत्तर-पर्व मे स्थित है। यह मद्रास के मदुराई जिले के डिंडिगुल तालुक मे है।[197]

प्रश्रवन-गिरि—यह बालि की राजधानी के ठीक बाद स्थित था। इसकी एक गुहा मे बालि-वध करने के बाद राम ने विश्राम किया था।[198] यह पहाडी आधुनिक बेलारी जिले मे और हापी के निकट कहीं पर स्थित हो सकती है।[199]

पुष्पगिरि—यह आंध्र-राज्य मे कुड्डापा जिले मे कोटलूरु का एक ग्राम था जहाँ से यादव सिंघन के काल के पुष्पगिरि अभिलेख उपलब्ध हुये थे।[200]

राजराजमण्डलम्—इसमे कम से कम पाण्ड्य एव केरल देश (मदुरा एवं त्रावणकोर के भाग) का एक भाग समिलित है।[201]

रामनाथपुरम्—यह दक्षिण-रेलवे की तिरचिरपल्ली-मदुराई लाइन पर स्थित

---

[194] इडियन कल्चर, भाग, I, पृ० 582.

[195] लेग्गे, ट्राबेल्स ऑव फा-ह्यान, पृ० 96-97.

[196] एपि० इ० जिल्द, XXXI, भाग, VI, जुलाई, 1956.

[197] वही, जिल्द, XXXII, भाग, VI, अप्रैल, 1958.

[198] रामायण, किष्किन्ध्याकाण्ड, पृ० 27.

[199] इडियन कल्चर, भाग, I, पृ० 581.

[200] एपि० इं०, जिल्द, XXX, भाग, I, पृ० 32.

[201] एस० के० आयंगर, ऐंश्येंट इंडिया ऐंड साउथ इंडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर, I, पृ० 685.

डिंडिगुल रेलवे स्टेशन से छ मील ठीक पूर्व मे स्थित है जहाँ से एक पाण्ड्य अभिलेख उपलब्ध हुआ था।[202]

रेयूरु—इस गाँव को मेल-मुण्डराष्ट्र मे स्थिन बतलाया जाता है। मुण्डराष्ट्र मे कोवूरु तालुक का अधिकाश भाग और आन्ध्रप्रदेश राज्य के नेल्लोर जिले के उत्तरी एव दक्षिणी क्षत्र के समीपवर्ती भाग समिलित थे।[203]

ऋष्यमुख—इसकी एक गुहा मे अपने भाई बालि के भय से सुग्रीव ने स्वय अपने को छिपाया था।

सह्याद्रि—रघु ने सह्याद्रि पर्वत को मलय एव दर्दुर पर्वतो के मध्य स्थित पालघाट-रिक्ति से होकर पार किया था।[204] कुछ लघु पहाडियाँ यथा, त्रिकूट, ऋष्यमुख और गोमत इससे सबधित है।

सॅगलूद—(**सॅगलद**)—यह अकोला जिले मे है।[205]

सिद्धेश्वर—यह गाँव कटक जिले मे वैतरणी के तट पर जैपुर (प्राचीन विरजातीर्थ) के समीप स्थित है। इस गाँव का नाम देवता के नाम से ग्रहण किया गया है। [206]

सिंहपुर—तमिल ग्रथ सिलप्पधिकरम एव मणिमेखलाई के अनुसार यह स्थान कलिंग की दो राजधानियो मे से एक था जिसे अरिपुर भी कहा जाता था। इसे उत्तर कलिंग मे काञ्ची विषय की दक्षिणी सीमा पर अवस्थित बतलाया जा सकता है।[207]

सिररबकम—यह चिगलपुत जिले के तिरुवल्लूर तालुक मे स्थित एक गाँव है जहाँ पर परमेश्वरवर्मन का अभिलेख उपलब्ध हुआ था।[208]

श्रावण-बेलगोल—यहाँ पर चन्द्रबेट्ट नामक पहाडी के शिखर पर जैन देवता गोमतेश्वर की एक बडी प्रतिमा है।

---

[202] एपि० इ०, XXXII, भाग, VI

[203] वही, XXIX, भाग, IV, 1951

[204] रघुवंश, IV, 51, 52

[205] एपि० इ०, XXIX, भाग, I, अक्टूबर, 1951.

[206] वही, XXIX, भाग, IV, अक्टूबर, 1951

[207] एस०के० आयगर, ऐंश्यंट इडिया ऐंड साउथ इडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर, I, पृ० 269, पा० टि०।

[208] एपि० इ०, XXXII, भाग, V.

तंजोर (तंजई)—यह एक गाँव का नाम है।[209] तजौर के मदिरों में चण्डेश्वर का एक मंदिर है। यह चोल नरेशो, नायक शासको एव महाराष्ट्र के राजाओं की राजधानी थी। यह अपने महान् ब्रहदीश्वर (बृहदेश्वर) मदिर के लिये विख्यात् है जो भारत का सब से ऊँचा मंदिर है। तजौर के राजराजेश्वर या श्री बृहदीश्वर मदिर का निर्माण राजराज महान् (985-1014 ई०) ने कराया था।[210] बृहदेश्वर मदिर मे एक बहुत बडा शिवलिंगम है। यह 216 फीट ऊँचा है और भारतीय स्थापत्य का एक अद्‌भुत नमूना है। चारो ओर से यह एक बड़ी परिखा से परिवेष्ठित है। विशालकाय पाषाण-निर्मित नदि वृष इस बडे मंदिर के सामने बैठा हुआ प्राप्त होता है। मदिर मे पाषाण-निर्मित भीमकाय तोरण एवं मडप है। मदिर का निर्माण राजा राजेन्द्र चोल के काल मे हुआ था।[211] तजौर का यह भव्य मंदिर दक्षिण भारतीय शिल्पकला की शैली के ग्यारहवी शताब्दी के विकास का प्रतिनिधित्व करता है।[212] लगभग 1000 ई० मे निर्मित तंजौर का यह मंदिर (200 फीट ऊँचा) द्रविड कला की पराकाष्ठा है।[213] पर्सी ब्राउन ने लगभग 1750 ई० के तजौर के सुब्रह्मण्य मदिर का एक चित्र प्रकाशित किया है।[214]

होयसल नरेश सोमेश्वर एव रामनाथ के अभिलेख सुदूर दक्षिण में तंजौर तक पाये जाते है।[215] पुञ्जई को (तजोर जिले) किडारमगोण्डान कहा जाने लगा था।[216] तंजोर का प्राचीन नगर, मद्रास से लगभग 218 मील दक्षिण-पश्चिम मे कावेरी नदी पर स्थित है।

---

[209] सा० इं० इं, I, पृ० 92; एपि० इं०, XXVII, भाग, VII, जुलाई, 1948, चतुरानन पंडित का तिरुवोरियूर अभिलेख।

[210] जे० एम० सोमसुंदरम, द ग्रेट टेंपुल ऐट तंजोर, 1935, प्रस्तावना।

[211] पी० वी० जगदीश अय्यंर, साउथ इंडियन श्राइंस, पृ० 87-88; लाहा, होली प्लेसेज आॅव इंडिया, पृ० 41.

[212] इंट्रोड्यूसिंग इंडिया, भाग, I, रॉयल एशियाटिक सोसायटी बंगाल द्वारा प्रकाशित, पृ० 8.

[213] ओ० ब्रुहल, इंडियन टेंपुल्स, नोट्स।

[214] इंडियन आर्किटेक्चर, इंग्लिश ऐंड हिंदू, प्लेट, LXVI,

[215] मद्रास आर्क्यॉलॉजिकल रिपोर्ट, 1896-97.

[216] वही, 1925, 188, 191, और 196.

तिरुमलि-शै—यह पूनामल्ली के समीप स्थित है जो इसी नाम के एक वैष्णव अलवर के कारण पुनीत माना जाता था।[217]

तिरुप्परुट्टिकुनरम—यह काञ्ची के निकट एक गाँव है। यह किसी समय प्रसिद्ध एक जैन केंद्र का अवशेष है। यहाँ पर अब महावीर को समर्पित एक रुचिर जैन मंदिर है।[218]

तिरुसूलम—यह एक गाँव है। यहाँ का शिव-मंदिर चोल-युग का है और इसमें ग्यारहवी शताब्दी ई० के अभिलेख है।[218अ]

तिरुवदतुराई—यह दक्षिण अर्काट जिले मे है।

तोण्डमण्डलम्—काञ्ची एव वेगडम (तिरुपति) दोंनो ही इसमें सम्मिलित है।[219]

त्रिकूट—कालिदास ने सह्य पर्वतमाला से सबधित इस पहाडी का वर्णन किया है।[220] भागवतपुराण मे इसका वर्णन मेरु या सिनेरु पर्वत के नीचे स्थित एक पर्वत के रूप मे हुआ है (V, 16.26)।

वैतरणी (वेतरिणी)—जैन साहित्य मे इस नदी का वर्णन वेतरिणी के रूप मे हुआ है।[221]

वनवासी—जराकुमार के पौत्र, जियसत्तु ने इस नगर पर शासन किया था।[222]

वरदा—कालिदास ने अपने मालविकाग्निमित्र (V, 1, 13) मे इसका वर्णन किया है।

वानमयी—कोट्टयम के पूरब की ओर यह एक नदी है। इसके तट पर एक मदिर स्थित है।[223]

---

[217] श्रीनिवासाचारी, हिस्ट्री ऑव द सिटी ऑव मद्रास, XXIII,

[218] वही, XXII.

[218अ] श्रीनिवासचारी, हिस्ट्री ऑव द सिटी ऑव मद्रास, XXIII.

[219] एस० के० आयंगर, ऐंश्येंट इंडिया ऐंड साउथ इंडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर I, पृ० 522.

[220] रघुवंश, IV, पृ० 59.

[221] सूयगडंग चूर्णी, पृ० 159 एवं उत्तराध्ययन सूत्र, 19, 59.

[222] निसीथ-चूर्णी, 8, पृ० 502.

[223] बि० च० लाहा वाल्यूम, I, पृ० 307.

वेंकितंगु—यह त्रिचूर के पश्चिम में एक गाँव है। यहाँ पर शंकरनारायण का प्रसिद्ध मंदिर है।[224]

विलिञ्जम—कुछ लोगो के अनुसार इसे दक्षिण त्रावणकोर में इसी नाम के एक मछवारे गाँव से समीकृत किया गया है।[225]

वडगेरी—यह भूतपूर्व हैदराबाद राज्य मे था। यह चालुक्य विक्रमादित्य चतुर्थ के शासनकाल से सबंधित था।[226]

पूर्वी भारत

अङ्ग—कालिदास ने अपने रघुवश मे इस राज्य का उल्लेख किया है (VI, 27-29)।

बल्लभपुर—यह हुगली जिले की सेरमपुर तहसील मे है। यह एक गाँव है जहाँ पर राधावल्लभ का मदिर है।[227]

भद्दिलपुर—इसे हजारीबाग जिले मे हटरगज से लगभग 6 मील दूर कुलुहा पहाडी के निकट भडिया नामक एक गाँव से समीकृत किया जाता है। यहाँ पर अरिष्टनेमि आये थे।[228]

भोगनगर—बुद्ध यहाँ पर रहते थे। वहाँ से वह पावा गये। यह स्थान पावा के समीप है।[229]

चन्द्रनाथ—इसके निकट अन्य पुण्य मदिरो मे यहाँ से तीन मील उत्तर में लबनाख्या का मदिर और तीन मील दक्षिण मे बरबकुंड का मदिर है।

च्यवन-आश्रम—यह आश्रम बिहार मे शाहाबाद मे स्थित था[230] किंतु कुछ लोगो के अनुसार यह पयोष्णी नदी के समीप सतपुडा पर्वतमाला में स्थित था।[231]

दुर्वासा-आश्रम—ग्रियर्सन की धारणा है कि यह गया जिले की नवादा तहसील

---

[224] वि० च० लाहा वाल्यूम, I, पृ० 304.

[225] एपि० इं०, XXXII भाग, VI, अप्रैल, 1958.

[226] वही, XXXIV, भाग, IV, पृ० 193.

[227] लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 2.

[228] अंतगडदसाओ, 34, पृ० 7 और आगे।

[229] दीघ, II, 123, और 126.

[230] स्कन्दपुराण, अवन्तीखण्ड, अध्याय, 57.

[231] पद्मपुराण, अध्याय, 8.

मे रजौली से सात मील पूर्वोत्तर मे दुवौर मे स्थित था (ग्रियर्सन कृत, नोटस ऑन द डिस्ट्रिक्ट ऑव गया)।

गंगा (गैन्जीज)—गगा की प्रथम एव महती पश्चिमी सहायक नदी विष्णु-स्मृति (85.9) मे वर्णित मुख्य यमुना नदी है।

गया—इसका वर्णन विष्णुस्मृति (85, 4, 66) मे है।

हरिकेल—यह एक पूर्वी देश है जिसे कुछ लोगो ने वङ्ग से समीकृत किया है।[232]

जह्नु-आश्रम—यह पूर्वी भारत मे भागलपुर के पश्चिम मे सुल्तानगज मे था। गैवीनाथ महादेव का मदिर जो इस तपोवन मे है गगा के तल से निकली हुयी एक शिला पर सुल्तानगज के सामने स्थित है।[233]

कलुहा या कौलेश्वरी पहाड़ी—यह हजारीबाग जिले मे हटरगज थाने के अतर्गत् है। यह हटरगज से लगभग छ मील दूर पर स्थित है।[234]

कर्णसुवर्ण—यहाँ पर 2000 से अधिक भिक्षुओ से युक्त दस से अधिक बौद्ध विहार थे। ये भिक्षु समतिय सप्रदाय के थे।[235]

कौशिकी—कालिदास ने अपने कुमारसम्भव मे (VI, 33) महाकौशिकी नदी का वर्णन किया है।

कामरूप—इसे प्राग्ज्योतिष भी कहते है।[236]

केंदुलि—यहाँ पर जयदेव का मदिर है जिसका निर्माण बर्दवान के महाराज कीनिचन्द बहादुर की माता ने कराया था।

किरातदेश—कालिदास ने अपने रघुवश (IV, 76) मे किरातो का उल्लेख किया है जो ब्रह्मपुत्र की पूर्वी घाटी मे रहते थे। टॉलेमी के अनुसार वे उत्तरापथ मे रहते थे।[237] उनका सन्निवेश पूर्वी क्षेत्र मे भी था। टॉलेमी ने किरातो के देश

---

[232] **इडियन कल्चर, XII, पृ० 89.**

[233] **लाहा, अर्ली इंडियन मानेस्टरीज, पृ० 5; मार्टिन, इंडियन इंपायर, III, पृ० 37; ज० ए० सो० बं० XXXIII, पृ० 360; आर्क० स० रि०, XV, 21**

[234] **एपि० इ०, XXX, भाग, III, पृ० 84**

[235] **वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 191; तुलनीय, बील, लाइफ ऑव युवान-च्वाङ्, पृ० 131**

[236] **एपि० इं०, XXXII, भाग, VI, अप्रैल, 1958; विस्तृत अध्ययन के लिए द्रष्टव्य, इंडियन कल्चर, II, पृ० 153-54**

[237] **मैंकक्रिडिल, ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 277.**

को किर्रहेडिया कहा है। श्रीमद्भागवत (11 4 18) मे उन्हे आर्यावर्त्त के बाहर रहते हुय बतलाया गया है।

कोटुबर—यह मलमल के लिए प्रसिद्ध एक देश है।[238]

कुक्कुटाराम—यही पर अशोक ने 1000 भिक्षुओं को बुलाया था और उन्हे सघ की आवश्यक वस्तुएँ दी थी। युवान-च्वाड ने बतलाया है कि यह विहार स्पष्टत एक प्राचीन विहार था जिसमे घण्टाकार एव आमलक स्तूप थ।[239]

मगध—कीकट[240] मगध का पर्यायवाची था (सट पीटसबग डिक्शनरी)। यास्क के अनुसार यह अनार्यो के एक देश का नाम था।[241] त्सिमर का यही मत है।[242] वेबर का मत है कि कीकट लोग मगध म[243] रहने वाले आयजन थ। कीकट की पहचान निश्चित रूप से नही की जा सकती।[244]

मवारन—यह हुगली जिले मे स्थित एक गाँव है जहाँ पर एक प्राचीन हिद्रू दुग के अवशष उपलब्ध होते है जो पत्थर की दीवालो से घिरा हुआ और परिखा स परिवृत्त मिट्टी का वृत्ताकार एक विशाल टीला है। दक्षिण से होने वाले आक्रमणो से देश की प्रतिरक्षा करने वाला यह एक सीमान्त दुग था।

नवद्वीप—यह भागीरथी के पश्चिमी तट पर जग्गी से इसके सगम के ठीक सामने स्थित है। वत्तमान नवद्वीप नगर नदिया जिले मे कुलिया नामक प्राचीन गाँव के स्थल पर स्थित है। यह 3½ वग मील क्षत्र पर फैला हुआ है।[245] 1485 ई० श्री चैतन्य यहाँ पर उत्पन्न हुय थ।

नालवा—पपञ्चसूदनी (III 52) मे इसका उल्लेख एक नगर के रूप मे हुआ है जो अधिक्तर भिक्षाटन के लिय था।

---

[238] जातक, VI, पृ० 47

[239] वाटर्स, ऑन युवान च्वाड II पृ० 98 और 101, तु० दीपवस (सपादक बि० च० लाहा, अध्याय, 7, 57-59)

[240] ऋग्वेद, III, 53, 14

[241] निरुक्त, VI, 32

[242] अल्टिडिशेज लेबेन, 31, 118

[243] इडिशे स्टुडियेन, I, पृ० 186

[244] ओल्डेनबग, बुद्ध, पृ० 402-403, हिलेब्रात, वेदिशे माइथॉलॉजी, I, पृ० 14-18, वेदिक इडेक्स, , पृ० 159

[245] विस्तृत विवरण के लिए द्रष्टव्य, लाहा, होली प्लेसेज ऑव इडिया, पृ० 5-6

निश्चीरा—वाराहपुराण (85) में निश्वीर पाठ है। अतिसंभवतः यह कौशिकी नदी से संबधित है जिसके साथ प्रायः इसका वर्णन किया जाता है।[246]

पौण्ड्रवर्धनभुक्ति—पुण्ड्रवर्धन में बंगाल के दीनाजपुर, माल्दह, राजशाही और बोगरा तथा रंगपुर(बागला देश)के पश्चिमी भाग संमिलित थे।[247] करतोया नदी अब भी जलपाईगुडी एवं पूर्णिया की सीमा है।

पार्श्वनाथ—दतर परगना की कुलुहा पहाडी पर बौद्ध और जैन अवशेष स्थित हैं। उल्लेखनीय अवशेषो मे महुदी पहाडी पर स्थित चार उल्लेखनीय मदिर है।[248]

पाटलिपुत्र—कालिदास के अनुसार पुष्पपुर अज के समय मे स्थित था।[249]

प्राग्ज्योतिष—कालिदास के अनुसार यह लौहित्य नदी या ब्रह्मपुत्र के तट पर स्थित था।[250] कामरूप के बलवर्मन तृतीय के हावडा घाट अभिपत्रों में कामरूप, प्राग्ज्योतिषपुर और लौहित्यवारिधि—सभी का वर्णन है।[251]

राजगृह—इसे उसभपुर भी कहा जाता था जहाँ महावीर आये थे।[252] निम्नलिखित उल्लेख द्रष्टव्य हैं : ज० बि० उ० रि० सो०, IV, 1918, पृ० 113-135, ज० ए० सो० बं०, (लेटर्स), XV, 1949, पृ० 65 और आगे; राजगिर, 1950, ले० अ० घोष—ऐश्येंट इडिया (बुलिटिन ऑव द आर्कियॉलॉजिकल सर्वे ऑव इंडिया, न० 7, जनवरी, 1951, पृ० 66 और आगे। प्रसिद्ध बौद्ध भाष्यकार बुद्धघोष ने राजगह के अतोनगर एव बहिनगर का वर्णन किया है।

शान्तिपुर—यह नदिया जिले की रानाघाट तहसील मे स्थित एक कस्बा है। वर्ष पर्यंत विशेषतः कार्तिक-पूर्णिमा (अक्टूबर-नवबर) पर होने वाली रास-जात्रा पर्व के अवसर यहाँ तीर्थयात्री आया करते है। कुशल बुनकरो द्वारा सुनिर्मित धोतियो एव साडियो के लिए प्रसिद्ध यह एक व्यापारिक नगर है।[254]

---

[246] लाहा, ज्यॉग्रेफिकल एसेज, पृ० 93.

[247] इंडियन कल्चर, भाग, I, पृ० 426.

[248] लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 49.

[249] रघुवंश, VI, पृ० 24.

[250] वही, IV, 81.

[251] एपि० इं०, XXXII, भाग, VI.

[252] विवागसुय, II, पृ० 2.64

[253] सारत्थप्पकासिनी, पा० टे० सो०, I, 313.

[254] लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 6-7.

सीताकुण्ड—यह कुंड अब नही है किंतु इस स्थान पर अब भी शंभुनाथ का मंदिर है।

तपोबा—यह बेभार पहाडी के नीचे एक विशाल झील थी। झील से निकलने वाली सरिताओ का जल गरम था। यह नागो का क्रीडा स्थल था। इसका जल इसलिए गरम था क्योंकि यह राजगह के नीचे स्थित लोहकुभी नामक पहाड़ी से होकर बहता था।[255]

तारकेश्वर—यह हुगली जिले की सेरमपुर तहसील में स्थित एक महत्त्वपूर्ण गाँव था। यहाँ पर आकर्षण की प्रमुख वस्तु रेलवे स्टेशन से लगभग 500 गज की दूरी पर स्थित शिव-भगवान या तारकेश्वर का लिंग मंदिर था। वर्ष पर्यंत हिंदू तीर्थयात्री इस मदिर मे आते रहते हैं। यहां पर समय-समय पर कई धार्मिक पर्व होते है।

ताम्रलिप्ति—यहाँ भी युवान-च्वाङ आया था। उसके अनुसार यहाँ पर दस से अधिक बौद्ध विहार थे जिनमे 1000 से अधिक भिक्षु रहते थे।[256]

उत्तराप—यह मही नदी के उत्तर मे स्थित क्षेत्र था। इसे अगुत्तराप भी कहा जाता था क्योंकि यह मही नदी के उस पार स्थित अगदेश का भाग था।[257]

वंशावाटी—वस्तुत: वहाँ पर तीन मदिर है जिनमे विष्णु-मदिर सर्वप्राचीन है। यहाँ की अधिष्ठातृ देवी हंसेश्वरी हैं जिसकी प्रतिमा नीम की लकडी की है[258] जो नीले रग मे पुती हुयी है। वह एक कमल-पुष्प पर बैठी हुयी है जिसका नाल लेटे हुये शिव की नाभि से निकलता है।[259]

वङ्ग—कालिदास ने वङ्ग को गगा एव ब्रह्मपुत्र के डेल्टा मे स्थित बतलाया है।[260]

वर्धमानपुर (वद्धमानपुर)—इसकी पहचान आधुनिक बर्दवान से की जाती

---

[255] समन्तपासादिका, II, 512.

[256] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 190.

[257] लाहा, इंडोलॉजिकल स्टडीज, भाग, II, पृ० 334-35.

[258] नीम Melia Azadirechta Linn है जो अपनी कठोरता के लिए विश्रुत है तुलनीय, विनय, I, 152; अंगुत्तर, I, पृ० 32; जातक, II, पृ० 105-106.

[259] लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 2-3.

[260] रघुवंश, IV, 36.

है। यहाँ पर महावीर आये थे। वहाँ पर विजयवढ्ढमान नामक एक उपवन था।[261]

वरेन्द्र—इसे वरेन्द्री भी कहा जाता है। यह उत्तर बंगाल का नाम था। संध्याकरनदी द्वारा विरचित रामचरित में इसका उल्लेख है।[262]

बसंतपुर—यह मगध का एक गाँव था।[263] कुछ लोगों ने इसे पूर्णिया जिले मे स्थित बसंतपुर नामक गाँव से समीकृत किया है।[264] अपनी रानी धारिणी के साथ जियसत्तु यहाँ शासन करता था।[265]

वेदेह-(विदेह)—कालिदास ने अपने रघुवश (XII, 26) मे इसका वर्णन किया है। यह राज्य एव राजधानी दोनो का नाम था।[266] विदेह देश आर्यावर्त्त का सब से पूर्वी छोर था। इसकी राजधानी मिथिला थी।

विक्रमशिला—द्रष्टव्य, ज० ए० सो० ब०, V, न्यु०सप्ली०, न० I, पृ० 1-13.

विश्वामित्र-आश्रम—कुछ लोगो की धारणा है कि यह कौशिकी नदी या आधुनिक कोसी के तट पर स्थित था। रामायण मे बतलाया गया है (बालकाण्ड, अध्याय, 26) कि बक्सर का चरित्रवन विश्वामित्र ऋषि का आश्रम था। महाभारत के अनुसार (शल्यपर्व, अध्याय, 43) यह आश्रम सरस्वती नदी के तट पर स्थित था।

पश्चिमी भारत

अगस्त्य-आश्रम—यह आश्रम गढवाल मे रुद्रप्रयाग से लगभग 20 मील दूर पर स्थित था। कुछ लोगो का मत है कि यह वैदूर्यपर्वत या सतपुडा पहाड़ी पर स्थित था।[267]

अनूपनिवृत—कालिदास ने अपने रघुवश (VI, 43) मे इसका उल्लेख किया है जिसकी राजधानी माहिष्मती थी।

---

[261] विवागसुय, 10, 56.

[262] एपि० इं०, XXXII, भाग, VI, अप्रैल, 1958.

[263] सूय निर्युक्ति, II, 6, 190 और आगे।

[264] डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, पूर्णिया, 1911, पृ० 185.

[265] आवश्यकचूर्णी, पृ० 334.

[266] रघुवंश XI, पृ० 36.

[267] महाभारत, वनपर्व, अध्याय, 88; लाहा, अर्ली इंडियन मानेस्टरीज़, पृ० 6.

अपरान्त—रघु की सेना पश्चिमी-घाट तक भारत के सपूर्ण पश्चिमी समुद्र-तट पर विजय प्राप्त करने के लिये आयी थी।[268]

अशोकतीर्थ—महाभारत के वनपर्व (88 13) मे इसका वर्णन है। यह सूर्पारक आधुनिक सोपारा के निकट स्थित है।

भरुकच्छ—चीनी इसे पो-लु-का-चे-पो कहते है।

चित्रकूटवन—यह चित्रकूट के समीप एक जगल था और कालिदास के रघुवश (XII, 9) के अनुसार यह दण्डकारण्य का एक भाग था।

दण्डक-वन—कालिदास ने दण्डकारण्य का उल्लेख किया है जो कलिग देश की सीमाओ तक फैला हुआ एक विस्तृत जगल था।[269] कालिदास के रघुवश (XII, 15 24, XIII 47) के अनुसार जनस्थान दण्डकारण्य का एक भाग था। इसकी स्थिति आदि के लिय द्रष्टव्य, ज० बा० ब्रा० रा० ए० सो०, 1917, पृ० 14-15

दशपुर—कालिदास ने अपने मेघदूत (पूर्वमेघ 47) मे इसका वर्णन किया है।

देवराष्ट्र—इसकी पहचान महाराष्ट्र के सतारा जिले से की जाती है।[270]

द्वारावती—द्रष्टव्य, महाभारत का शान्तिपर्व CCCXLI, 12955, हरिवश, CXIII, 6265-66, पार्जिटर द्वारा अनूदित मार्कण्डेय पुराण, पृ० 340, पाद टिप्पणी। कुछ लोगो के अनुमार द्वारका के आसपास का क्षेत्र आनर्त्त कहा जाता था, जब कि अन्य लोगो की धारणा है कि यह बडनगर का परिवर्ती जिला है।[271] कहा जाता है कि राजा शल्व ने द्वारावती पर आक्रमण किया था किंतु कृष्ण ने उसकी हत्या कर दी थी।[272]

एरण्डपल्ल—द्रष्टव्य, एस० के० आयगर ऐश्येट इडिया ऐड साउथ इडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर, I पृ० 163 अभी हाल मे इसका तादात्म्य विशाखापटनम

---

[268] रघुवश, IV, 53

[269] वही, XII, 9.

[270] एस० के० आयगर, ऐंश्येंट इडिया ऐंड साउथ इडियन हिस्ट्री ऐंड कल्चर, I, 163.

[271] लाहा, ट्राइब्स ऑव ऐंश्येंट इडिया, पृ० 389; बाबे गजेटियर, I, 1, 6.

[272] महाभारत, वनपर्व, अध्याय, 14, पार्जिटर कृत मार्कण्डेय पुराण का अनुवाद, पृ० 349.

जिले के एलमाचिलि और कलिंग नगर के साथ स्थापित किया गया है (वही, पृ० 219)।

जेरखेड—यह महाराष्ट्र मे पश्चिमी खानदेश जिले के शतदल तालुक मे एक गाँव है। यह ताप्ती की सहायक नदी गोमी के किनारे स्थित है।[273]

कच्छ (आधुनिक कच्छ)—यहाँ के जल-दस्यु समुद्र मे जल-पोतो पर डकैती डालते थे।[274]

कौब—साधारणतया इसे गवा या गोआ माना जाता है।[275]

कुभवती—यह दण्डकी की राजधानी है।[276] कुछ लोगो ने इसे नासिक मे स्थित बताया है।

लारान—अल्बेरुनी के अनुसार यह भारत का एक तटवर्ती स्थान है।[277]

महाबल—इसे सतारा जिले मे महाबलेश्वर से समीकृत किया जाता है।[278]

मोटा माचियाला—यह महाराष्ट्र मे मोटा माचियाला विषय मे ऐवरेली से लगभग 6 मील पूर्वोत्तर मे स्थित एक गाँव है।

पञ्चवटी—कुछ लोगो ने इसकी पहचान आधुनिक नासिक से की है।[280]

रैवतक पहाडी—यह गुजरात मे जूनागढ के निकट थी। यह प्रभास के पास था।

रामतीर्थ—पा० वा० काणे की हिस्ट्री ऑव धर्मशास्त्र, पृ० 795 भी दृष्टव्य है।

सोमनाथ (सोमेश) तथा सोमनाथदेवपट्टन—एपि० इ०, XXXII मे भाग, VII, भी दृष्टव्य।

सुराष्ट्र—यह आधुनिक काठियावाड है। युवान-च्वाङ के अनुसार इसकी परिधि 4000 ली से अधिक थी। इसमे 50 से अधिक विहार थे जिनमे 3000

---

[273] एपि० इ०, XXXII, भाग, III, जुलाई, 1957.

[274] अल्बेरुनीज इंडिया, I, पृ० 208-209.

[275] टॉलेमी कृत ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 181.

[276] जातक, III, पृ० 463.

[277] लाहा, अल्बेरुनीज नालेज ऑव इंडियन ज्यॉग्रफी, पृ० 1.

[278] पद्मपुराण, VI, 113, 29.

[279] एपि० इ०, XXXI, भाग, VI, जुलाई, 1956.

[280] इंडियन कल्चर, I, पृ० 584.

से अधिक भिक्षु रहते थे जो अधिकांशतः महायान स्थविर सम्प्रदाय के थे।[281] कई जैन ग्रथों मे वर्णित बारवी सुराष्ट्र या सुरट्ठ की राजधानी थी।[282]

ऊर्जयत—श्रीनेमि द्वारा इस पर्वत के पवित्रीकरण का उल्लेख कल्पसूत्र (174, पृ० 182) मे हुआ है। इस पर्वत पर जल-प्रपात थे और प्रतिवर्ष लोग यहाँ दावतों का आयोजन करते थे। इस पर्वत पर क्रीडाएँ होती थी।[283]

वडनगर—इसकी पहचान आनदपुर से की जाती है जो जैन मुनियों का केंद्र था।[284] जैन पिण्डनिर-टीका (83, पृ० 31) के अनुसार यह विन्ध्य के समीप स्थित था।

वैजयंत—यह दण्डकवन के क्षेत्र मे एक नगर था। रामायण के अनुसार (II, 9, 12-13) कैकेयी के साथ दशरथ इन्द्र की सहायता करने के लिए इस नगर मे गये थे और उन्होने शबर के क्षेत्र को पराधीन बनाया था।

विन्ध्यपादपर्वत—कालिदास ने अपने मेघदूत (पूर्वमेघ, 19) मे इसका वर्णन किया है।

मध्य प्रदेश (भू० पू०, मध्य भारत)*

अचलपुर—इस नगर के समीप कण्हा और बेण्णा नामक दो नदियाँ प्रवाहित होती थी।[285] अचलपुर आभीर मे स्थित था।

अर्बुद (जैन अब्बुय)[286]—यह जैनियो की एक पुण्य पहाडी है।

आबू—यह अर्बु, 'बुद्धिमत्ता की पहाडी' है जिसे प्लिनी द्वारा वर्णित माउट कैपिटेलिया से समीकृत किया जाता है। यह राजस्थान मे सिरोही के दक्षिण में राजपूताना-मालवा रेल-पथ पर आबू रोड स्टेशन से सत्रह मील पश्चिमोत्तर मे और बबई से 442 मील उत्तर मे स्थित एक प्रसिद्ध पहाडी है। यहाँ पर पाँच

---

* मध्यभारत का प्राचीन प्रांत वर्तमान मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात एवं दक्षिण-पश्चिम उत्तर-प्रदेश में समाविष्ट हैं। —अनुवक

[281] वाटर्स, ऑन युवान-च्वाङ्, II, पृ० 248.

[282] नायाधम्मकहाओ, 5, पृ० 68.

[283] जैन, लाइफ इन एँश्येंट इंडिया, पृ० 346.

[284] सूयगडंगचूर्णी, पृ० 253.

[285] आवश्यक-टीका, पृ० 514.

[86] बृहत्भागवत, I, 3150.

मंदिर हैं जिनमें दो विशेषरूप से यथा—विमलशाह का मदिर एवं वतुपाल तथा तेजपाल का मदिर उल्लेखनीय है।

बांगला—एपि० इ०, जिल्द, XXXI, भाग, VII, जुलाई, 1956 द्रष्टव्य।

बार्ल—यह अजमेर से लगभग 7 मील पूरब मे स्थित एक गाँव है।[287]

भिलसा—(भैल्लस्वामीपुर)—द्रष्टव्य, एपि० इ०, XXXII, भाग, III, जुलाई, 1957

बिलैगढ़—यह मध्य प्रदेश के रायपुर जिले मे है।[288]

चित्रकूट—इसका वर्णन महाभारत के वनपर्व (85.58) एव रामायण (II, 54, 28-29, 93.8) मे भी हुआ है। वामनपुराण (45, 99) एव मत्स्य-पुराण (114 25) मे भी इसका उल्लेख है।

देवपालपुर—मऊ से 27 मील पश्चिमोत्तर मे स्थित अतिसभवतः यह आधुनिक दिपालपुर है।[289]

दशार्ण—इसे स्थूल रूप से मालवा से समीकृत किया जाता है जिसकी राजधानी विदिशा थी।

दोसरोन—यह दशार्णों द्वारा निवसित क्षेत्र की एक नदी है।[290]

दुगौड—यह ओरछा-टीकमगढ मार्ग पर टीकमगढ से कोई 15 मील दूर पर स्थित आधुनिक डिगौरा है। ओरछा-टीकमगढ का राजकुल डिगौरा, प्राचीन दुगौड़ से आया था।[291]

जुराहखो—1335 ई० मे इब्नबतूता यहाँ आया था और उसने इसे खजुर कहा है। उसने झील को लगभग एक मील लंबा बतलाया है जिसके चारो ओर मूर्तियों के मदिर थे। दसवीं शती ई० के चदेल्ल राजाओ के मदिर यहाँ पर बुदेलखड के घने जगलो मे निकटतम रेलवे स्टेशन से 85 मील दूर पर पाये जाते है।

कुरुद—यह मध्य प्रदेश के रायपुर जिले व तहसील मे रायपुर से लगभग 27 मील पूर्वोत्तर मे स्थित है।[292]

---

[287] एपि० इं० जिल्द, XXXII, भाग, VII.

[288] एपि० इं०, जिल्द, XXIX, भाग, IV, अक्टूबर, 1951, कल्चुरि प्रतापमल्ल के बिलैगढ़ अभिपत्र।

[289] एपि० इं०, XXXII, भाग, III, जुलाई, 1957.

[290] मैक्रिडिल, टॉलेमीज़ ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 71, मजूमदार संस्करण।

[291] एपि० इं०, XXX, भाग, III, पृ० 89.

[292] वही, XXXI, भाग, VI, अप्रैल, 1956.

मांधाता (मानधातरि या मांधातृदुर्ग)—द्रष्टव्य एपि० इं०, XXXII, भाग, III, जुलाई, 1957.

नर्मदा—विष्णुस्मृति (85.8) मे इसका वर्णन है। शतपथ ब्राह्मण (xii, 8.1.17; 9.3.1) के अनुसार इसे रेवा कहा जाता था। इस नदी का वर्णन कालिदास के मेघदूत (पूर्वमेघ, 19) मे भी है।

नागह्रद—इसे एकलिङ्गी के समीप नागदा से समीकृत किया जाता है।[293]

निषध—कालिदास ने निषध को बरार के पश्चिमोत्तर मे स्थित बतलाया है।[294]

पद्मावती—कुछ लोगों के अनुसार यह पदम-पवाया है जहाँ से कुछ दुर्लभ रजत-मुद्राएँ प्राप्त हुयी थी।[295]

पल्ली—यह राजस्थान के जोधपुर मे स्थित आधुनिक पालि नामक शहर ही है।[296]

पर्णाशा—यह नदी पारियात्र पर्वत से निकलती है। पर्णाशा या वर्णाशा को चर्मण्वती (चबल)की सहायक नदी आधुनिक बनास से समीकृत किया जाता है।[297]

पारिपात्रपर्वत—ब्युलर का मत है कि पारिपात्र पर्वत मालवा मे विन्ध्य पर्वत माला का एक अग है।[298]

रखदेव—यह राजस्थान मे उदयपुर (रियासत) के मगरा के अतर्गत् उदयपुर शहर से लगभग 40 मील दक्षिण मे और खेरवाडा छावनी से10 मील पूर्वोत्तर मे स्थित एक गाँव है। यहाँ पर आदिनाथ या रखभराथ का पवित्र प्रसिद्ध जैन मंदिर है।[299]

---

[293] वही, XXXI, नं० 33.

[294] रघुवंश, XVIII, 1.

[295] जर्नल ऑव द न्युमिस्मेटिक सोसायटी ऑव इंडिया, जिल्द, XVII, 1955, भाग, II.

[296] एपि० इं०, जिल्द, XXXI, भाग, VI, नं० 33.

[297] लाहा, ट्राइब्स ऑव ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 379; पां० वा० काणे, हिस्ट्री ऑव द धर्मशास्त्र, IV, पृ० 789.

[298] सै० बु० ई०, 14, 2, 3, 146, 147; वेदिक इंडेक्स, II, पृ० 126, पा० टि०।

[299] लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया, पृ० 53.

रनपुर—राजस्थान में जोधपुर के (रियासत) देसुरी के अतर्गत् जोधपुर शहर से लगभग 88 मील दक्षिण-पूर्व मे और राजपूताना-मालवा रेल पथ के फलना स्टेशन से लगभग 14 मील पूर्व-दक्षिण -पूर्व मे स्थित यह एक विख्यात जैन मंदिर है।[300]

रामटेक (**रामगिरि**)—कालिदास ने अपने मेघदूत (पूर्वमेघ, I) मे रामगिरि का वर्णन किया है जिसकी पहचान रामटेक से की जाती है।

शंबूक-आश्रम—यह नागपुर के उत्तर मे रामटेक मे था। शंबूक तपस्या करने वाला एक शूद्र था और इसीलिए राम ने उसका वध किया था।

शिप्रा—इस नदी को विशाला भी कहते थे।[301] इस नदी के तट पर उज्जयिनी नगर स्थित था।[302]

श्रीपुर—अधिक उल्लेखों के लिए द्रष्टव्य, एपि० इ०, जिल्द, XXXI, भाग, VII, जुलाई, 1956.

तुंबवन—यह जैन वज्रस्वामी का जन्म स्थान था।[303] यह अवन्ती में स्थित था।

उदयगिरि—उदयगिरि की गुहाओ एव उनके स्थापत्य की विशेषताओं का पूर्ण विवरण विक्रम वाल्यूम, 1948, पृ० 377 और आगे पर प्रकाशित डी० आर० पाटिल के निबध "द मानुमेटस ऑव उदयगिरि हिल्स" मे दिया गया है।

उज्जैन—कालिदास ने परोक्षतः उज्जयिनी का उल्लेख किया है जहाँ पर महाकाल का मंदिर था।[304]

वैराट—वैराट के जैन मदिर मे ऊँची दीवाल से परिवृत्त एक आयताकार उन्मुक्त प्रागण और पूर्व मे प्रवेशद्वार के सम्मुख सुदर नक्काशीदार खभो का एक अलिंद है। आँगन की दक्षिणी दीवाल मे भीतर की ओर एक विशाल उत्कीर्ण पट्ट था जिसे सर्वप्रथम डा० दे० रा० भडारकर ने देखा था। वैराट अशोक के ज्ञात अकेले शिला पट्ट अभिलेख, जिसे भाब्रू शिलालेख कहते हैं, के लिए प्रसिद्ध है, जो एसियाटिक सोसायटी, कलकत्ता मे सुरक्षित है।

---

[300] लाहा, होली प्लेसेज ऑव इंडिया पृ० 54.

[301] मेघदूत, पूर्वमेघ, 27-29.

[302] मेघदूत, पूर्वमेघ, 27, 29, 31.

[303] ज० च० जैन, लाइफ इन ऐंश्येंट इंडिया, पृ० 344.

[304] रघुवंश, VI, 32, 36. विस्तृत विवरण के लिए विक्रम वाल्यूम (1948), पृ० 281 और आगे भी द्रष्टव्य।

वशिष्ठ-आश्रम—कुछ लोगो ने इस आश्रम को बरिपद से 32 मील दूर कुर्तिग में स्थित बतलाया है।[305]

वेदिस (विदिशा)—इस प्राचीन नगर को कालिदास ने मेघदूत के पूर्वमेघ (24-25) के माध्यम से अमर बना दिया है। जैन अनुयोगद्वार (30, पृ० 137) मे इसका वर्णन वैदिश के रूप मे हुआ है।

विदर्भ—कालिदास ने अपने रघुवश (V, 39; VII, 2, 13, 20) मे इसका वर्णन किया है जिसके ऊपर भोजवश का शासन था। अपने सूयगडग-चूर्णी मे (पृ० 240)। जैनियो ने इस देश का उल्लेख किया है (पृ० 240)।

विन्ध्य—वशिष्ठ धर्मशास्त्र (I,9) में विन्ध्य पर्वत को आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा बतलाया गया है। विन्ध्य पर्वत, जिसे जैन जबुद्वीवपण्णति मे वैताढ्य कहा गया है, भारत को दो भागो मे विभक्त करता है : उत्तरार्ध जिसे आर्यावर्त्त कहते हैं और दक्षिणार्ध जिसे बाद मे दक्षिणात्य कहा गया है।[306] यह वशिष्ठ-धर्मशास्त्र में प्राप्त वर्णन से असगत है।

---

[305] एपि० इं०, XXV, भाग, IV, अक्टूबर, 1939.

[306] I, 12. भारहे वासे वेय्यढढे नामम पव्वये; पण्णत्ते: उत्तरद्ध भारहवासस्स दहिणेणम दहिणभरहवासस्स उत्तरेणम।

VII

पारिभाषिक शब्द

A

Ambassador	राजदूत
Accredited	प्रत्यायित
Acute Angle	न्यूनकोण
Arched	मेहराबदार, डाटदार
Apex	शीर्ष, चोटी, शिखर
Aisles	परिक्रमा-पथ, पार्श्व
Autonomous	स्वायत्तशासी (गणतंत्र-जन)
Ally	सश्रित राष्ट्र
Archer	धनुर्धर
Architecture	वास्तुकला, स्थापत्य, वास्तु-शिल्प
Astronomers	ज्योर्तिविद
Altitude	ऊँचाई, उन्नतांश
Afluent (River)	सहायक सरिता
Abacus	शीर्ष-फलक, फलक
Antechamber	उपकक्ष, उपशाला
Architectural	स्थापत्य सबंधी
Artisan	दस्तकार, कारीगर
Arched-roof	डाटदार छत
Arch	चाप, डाट, मेहराब
Agent	अभिकर्त्ता

B

Base	आधार, पेंदा
Bed (River)	नदी-तल
Bead	मनके

Bas relief	अभ्युच्चित्र
Bay	खाड़ी
Buffer state	अन्त:स्थ राज्य
Balustrade	जगला, वेदिका
Bulla	बुल्ला
Bulge	उभार
Bolts	काबले
Back-doors	पृष्ठद्वार
Bowl	कटोरा
Boulder	गोलाश्म, गोला पत्थर
Belt	कटिबध, मेखला

C

Coast	समुद्र-तट
Cosmology	ससृनि-विज्ञान
Convex	उत्तल
Consumer	उपभोक्ता
Coast-line	तटरेखा
Circular Arc	वृत्ताकार चाप
Convexity	उन्नतोदरत्व
Corridor	गलियारी, सपथ
Cones	शकु
Creed	पथ, मत
Causeway	सेतु
Constituted	गठित
Cluster	झुड, गुच्छा
Course (River)	प्रवाह-पथ
Confines	परिरोध
Compendia	सार-सग्रह, सग्रह
Chronicle	इतिवृत्त
Confederation	प्रसघक-कुल, गण, संघ
Clan	कुल
Corporation	पौरसघ, निगम

Chapel	पूजागृह
Commodity	माल, पण्य
Compilation	सकलन
Circular	वृत्ताकार
Charter	शासपत्र
Cell	कोशिका
Cells	कोठरी
Capital	शीर्ष
Crystaline	मणिभ
Cliff	भृगु चट्टान, खडी चट्टान
Craftsman	शिल्पी
Classic	अभिजात
Cubical	घातीय

D

Delta	डेल्टा
Diameter	व्यास
Door-jamb	चौखट का बाजू
Detached	विश्लिष्ट, पृथक
Dysentry	पेचिश
Document	दस्तावेज, प्रलेख
Duties	उत्पादन-शुल्क
Doab	दोआब
Dome	गुबद
Delegates	प्रतिनिधि
Depression	धसकन
Drainage	जलनिस्तारण-प्रणाली
Design	नमूना

E

Endowment	धर्मस्व, धर्मदाय
Equilateral triangle	समबाहु त्रिभुज
Epigraphical	पुरालेख संबंधी, पुरालिपि संबधी
Ethnography	मानवजाति-शास्त्र

Emporium	पण्यशाला, मंडी, भंडार
Enclosure	अहाता, घेरा, बाड़ा
Etymology	व्युत्पत्ति
Elevation	उठान, उत्थापन
Equilateral	समबाहु
Estuary	सागर-सगम, बेलासगम
Edge	किनारा
Edit	सपादन करना

F

Fossiliferrous	प्रस्तरिल तल, जीवाश्म युक्त
Floral designs	फुलकारी
Fall (of a river)	उद्गम
Foot hills	तराई
Fault	भ्रश, विभग
Fold	स्तरभ्रश
Fresco	भित्ति चित्र
Facade	मुहार
Forearms	प्रबाहु, हाथ
Fork	द्विशाख भूमि, दुशाख-भूमि, काँठा
Flat	सपाट, चपटा मैदान
Frontier	अतस्थ
Foot-track	पगडडी
Foot	पाद

G

Granite	स्फटिक प्रस्तर, ग्रेनाइट, कणाश्म
Gorge	कृशधारायुक्त दर्रे, नदकन्दर, तगघाटी
Glacier	हिमनद
Gate	द्वार, फाटक, कपाट
Geographical area	भौगोलिक क्षेत्र
Gulf	खाडी, आखात
Gallery	दीर्घा
eGological time	भू-वैज्ञानिक काल

Guild	श्रेणी
Governor	राज्यपाल

H

Hall	हाल, महाकक्ष
Hordes	ओर्दु
Highway	राजपथ, महापथ
Horizontal line	पड़ी रेखा
Hamlet	पल्ली
Harbour	बन्दरगाह, पत्तन
Handbook	पुस्तिका
Heretical	विधर्मी
Heresy	अपधर्म
Heterodoxy	बामपंथी

I

Island	द्वीप
Inverted angle	उलटा त्रिभुज

J

Jaundice	पाडुरोग

K

Khondalite	खोंडलाइट

L

Lime stone	चूर्ण प्रस्तर
Laterite	मखरला
Lapis-lazuli	लाजावर्द
Label	लेखपाल, नाममत्र
Legend	आख्यान
Lower	अवर, निचला
Lily seeds	खाद्य-कुमुदिनी

M

Mesozoic	मध्यजीवकल्पीय
Metamorphic	परिवर्तनशील चट्टान
Manner	शिष्टाचार

Mythological	पौराणिक
Meridian of longitude	देशातर कयाम्योत्तर
Mortar	गारा, मसाला
Moulding	ढलाई, गढाई
Medal	लामबदी, युद्धसन्नाह् पदक
Metal-road	पक्की सडक
Merchandize	व्यापारिक माल
Mines	खान
	N
Nux-vomica	कुचला
	O
Official	सरकारी, अधिकारिक, राजकीय
Oblong	आयताकार
Overseas	समुद्रान्तर, समुद्रपार
Onyx	मुलेमानी पत्थर
Octagonal	अठपहल, अष्टभुज, अष्ठकोणीय
	P
Palaeozoic	पुराजीवकल्पीय
Plateau	पठार
Postern	पृष्ठद्वार
Primogeniture	ज्येष्टाधिकार
Polish	ओप
Plate	फलक
Peninsula	प्रायद्वीप
Plaster	पलस्तर
Painting	चित्रकला, चित्रण
Polished	ओपदार
Perpendicular	लबवत्
Pedastal	पादपीठ, आधार
Pillar	स्तभ,खंभा
Portico	ओसारा, प्रमुख, ड्योढी
Porch	द्वार-मंडप

Pottery	मृद्भांड
Perforated Pottery	छिद्रिल मृद्भांड
Producer	उत्पादक
People	जन, लोग
Pent-roof	एक ओर ढालू छत
Punch Marked Coins	आहत मुद्राएँ
Pinnacled Buildings	कलश-मंडित भवन, कंगूरेदार भवन

Q

Quadrilateral	चतुर्भुज
Quadrangular	चतुःकोणीय
Quarter	चतुर्थक

R

Ridge	कूटक
Rock	शिला
Rock island	शैल द्वीप
Reptile	सरीसृप
Railing	वेदिका
Recite	पाठ
Rhomoboid	समप्रतिभुज
Relief	उच्चित्र
Rock salt	खनिज नमक
Race	प्रजाति
Royalty	अधिशुल्क
Roof	छत, पृष्ठ
Reclamation	भूमि उद्धरण
Rib	मेहराबदार छत की डाट
Relic-casket	अस्थि मंजूषा
Region	प्रदेश, क्षेत्र, इलाका
Rock-basin	चट्टानी तलैय्या
Relevant data	संबद्ध दत्त सामग्री

S

Supplement	परिशिष्ट

Sheets (of water)	जल-विस्तार
Shelf	परिकक्ष
Shaft	नाल
Stucco	गचकारी, गच
Statue	मूर्ति
Shrub	झाडी
Spire	शिखर
Support	अवलंब
Strip	पट्टी
Slab	पटिया, शिलापट्टी
Sub-himalayan	अधःहिमालय
Sepulchural	समाधि-परक
Stone	बालुकाश्म, बलुआ पत्थर
Sculpture	मूर्तिकला
Scroll	मरगोल
Sovereignty	प्रभुसत्ता
Sedimentary origin	कल्कयुक्त उत्पत्ति वाले
Steep	दुरारोह, ढालू, सीधा ढाल, खड़ा ढाल
Spurs	पर्वत-प्रक्षेप
Subordinate servants	अधीनस्थ कर्मचारी, अनुचर
Sediment	अवसाद, तलछट
Sandy	रेतीला
Supersede	अधिक्रमण करना
Set of	कुलक
Square	वर्गाकार
Shrine	चैत्य, गर्भगृह

T

Tangential thrust	स्पर्शरेखीय सभंग
Tertiary	तृतीय जीवकल्प
Tope	स्तूप
Trap	फदा
Table land	अधित्यका, उच्चसम भूमि, पठार

Triangular	त्रिभुजाकार
Topography	स्थानवृत्त
Topographical	स्थानवर्णन संबंधी
Triangle	त्रिभुज, त्रिकोण
Tectonic	विवर्तनिक
Threshold	देहली, प्रवेशद्वार
Transfer (of property)	हस्तान्तरण
Terracotta plaques	मृण्फलक
Towers	अट्टालक, बुर्ज
Territorial division	क्षेत्रिक संभाग
Tribe	जन, कबीला
Tribal	जन या कबीले से संबधित
Typical	प्रकारात्मक

U

Unequal quadrilateral	विषम चतुर्भुज
Upper	ऊपरी, उच्चतर

V

Vassal	सामन्त
Vase	कलश
Vaults	मेहराब
Verandah	बराम्दा
Votive label	पूजापरक लेपपत्र या नामपत्र
Vinegar	सिरका

W

Wall	दीवाल
Watch tower	प्रहरी स्तंभ
Wing	पक्ष, स्कंध, बाजू

Z

Zone	प्रदेश

शब्दानुक्रमणिका

ख

फ

ब

य

ल

व

ह

●●